



INTRODUCTION

10

THE BENGÁLÍ LANGUAGE.

въ

THE LATE REV. W. YATES, D. D.

IN TWO VOLUMES.

EDITED BY J. WENGER.

VOL. II

CONTAINING SELECTIONS TROM BENGALI LITERATURE

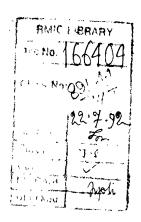
CALCUTTA

PRINTED AND PUBLISHED AT THE BAPTISE MISSION PRESS, CIRCULAL ROAD

10 BY HAU ALSO OF MESSES, THACKER AND CO., MESSES, OWLETE

AND TEPAGE, AND MISSES, DI ROZARIO AND CO.





CALCUTTA.
Printed by J. Thomas, Baptist Mission Press.

PREFATORY NOTE.

In the preface to the first volume the Editor intimated that the following pages contained the pieces selected by Dr. Yates himself. This statement is correct, excepting so far as the Appendix is concerned, which has been substituted for a contemplated chapter of Proverbial and Moral Sayings, translated partly from the English and partly from the Persian. The reasons which induced the Editor to make this change are the following. On the one hand, among the papers referring to this work, none furnished any satisfactory indications as to what proverbial and moral sayings the lamented Author intended to introduce. On the other hand, the preceding pieces contain not a small number of such sayings, more original, and therefore better adapted to the object of the work, than a collection derived from the English and the Persian could have been. It was therefore thought preferable to subjoin an Appendix, containing some specimens of poetry, and of the periodical literature of the day. In his selection of the latter the Editor was guided by accidental circumstances: he gave extracts from those papers which happened to be at hand; but he believes them to be pretty fair specimens of the average staple of native periodicals.

In preparing this volume, it was the Author's intention to give specimens of Native composition only, to the exclusion of all pieces translated from the English, or composed under the influence either of Christianity or of an English education. The Editor felt strongly tempted to deviate from this rule at least so far as to give, in the Appendix, a few extracts from the Rev. K. M. Banerjea's Encyclopedia Bengalensis: but on second thoughts he abstained from overstepping the limits traced by his late revered friend.

CONTENTS.

v 111231 111111

SELECTIONS FROM BENGALI LITERATURE.

| | Page |
|---|------|
| 1.—Tales of a Parrot, (Totá Itihás.) | |
| 1. The history of Maimun and Khojestá, | 1 |
| 2. Story of the Sentinel, | 4 |
| 3. Story of the Goldsmith and the Carpenter, | 7 |
| 4. Story of the Soldier's wife, | 9 |
| 5. Tale of the Fowler and Parrot, | П |
| 6. Tale of the Tiger and Bráhman, | 12 |
| 7. Tale of the Cat and the Mice, | 13 |
| 8. Tale of the Frog and the Snake, | 14 |
| 9. Tale of the Black Rabbit and Tiger, | 15 |
| 10. Tale of the Weaver, | 17 |
| 11. Tale of the Four Friends, | 18 |
| 12. Tale of the Jackal made king, | 19 |
| 13. Tale of the low man employed by a king, | 19 |
| 14. Tale of the compassionate Tiger, | 20 |
| 15. Tale of the Serpent preserved, | 21 |
| 16. Tale of the Soldier and Goldsmith, | 22 |
| 17. Tale of the Elephant, | 2-1 |
| 18. Tale of the Ass and Deer, | 25 |
| IILetters,-from the Lipi Málá or the Garland | OF |
| WRITING. | |
| 1. Letter of one King to another, | 26 |
| 2. Reply—Death of Parikhyita, | 28 |
| 3. Letter of a King to a subject,—of Dakhya, | 31 |
| 4. Letter of a Son to his Father,—Account of Chaitanya, | 34 |
| 5. Letter of a Teacher to his Disciple, | 36 |
| 5ª. Letter of a Teacher to his Disciple,—of Rávana, | 38 |
| 6. Letter to a Teacher by his Pupil, | 40 |
| | |

| | Letter of a Teacher to his Disciple,—of Jaban, |
|---------|--|
| | Letter of a Father to his Son,-Narad and Parbat, |
| 9. | Another,—Account of Bhágirathi, |
| 111.—Вл | trish Singhásan, or Stories of Vikramáditya |
| 1. | Finding and disposing of the Throne, |
| 2. | Account of the Throne, |
| 3. | Vikramáditya's liberality to a Beggar, |
| 4. | Liberality to a Yogi, |
| | Liberality to a Bráhman, |
| 6. | Liberality to a Scholar, |
| 7. | Liberality to a Devotee, |
| 8. | Romantic Self-denial, |
| | Liberality to a Lover, |
| | Liberality to the Poor, |
| | Liberality to Subjects, |
| | Liberality to a Pandit, |
| | Liberality to an Enemy, |
| 14. | Liberality to All, |
| IV.—Fre | om the History of Indian Kings, (Rájávali.) |
| 1. | Introduction, |
| 2. | Of the Aucient Kings, |
| 3. | Of Vikramáditya, |
| 1. | Of Prithu, |
| 5. | Of Akbar, |
| | Of Jehángir, |
| 7. | Of Shah Jehán, |
| 8. | Of Aurangzeb, |
| VFrom | 4 THE LIFE OF RÁJÁ KRISHNA CHANDRA RÁY. |
| 1. | His Birth, |
| 2. | Ilis Marriage, |
| | His Sacrifice, |
| | His Residence, amusements, &c |
| 5. | His acquaintance with the Nawab |
| | His joining a conspiracy, |
| | His Negociations with the English, |
| 8. | His Posterity, |
| | m the Trial of Man, (Purushpari'khyá.) |
| | The Hero of Kindness, |
| | The Hero of Truth |

| | The Miser, |
|-----|---|
| 1. | The indolent Man, |
| ă. | The ready-witted Man, |
| 6. | The quick-witted Man, |
| | The intelligent Man, |
| 8. | The Deceiver, |
| 9. | The mean Man, |
| 10. | The gentle Devotee, |
| | The enthusiastic Devotee, |
| 12. | The repentant Man, |
| | The generous Rich, |
| 11. | The foolish Rich, |
| 15. | The covetous Man, |
| 16. | The Man resigning all things, |
| | ROM THE HITOPADESHA, (SALUTARY INSTRUCTION.) |
| | Introduction, |
| | Of Friendship, |
| | Of Discord, |
| | Of War, |
| | Of Peace, |
| | ROM THE LIGHT OF KNOWLEDGE, (GYÁNCHANDRIKÁ |
| | Attention necessary to success, |
| | Five means of increasing knowledge, |
| | Learning to be acquired by diligence, |
| | Difficulties overcome by resolution, |
| | Humility necessary in learning, |
| | Importance of an early education, |
| | Triumphs of perseverance, |
| | Politeness, |
| | Faithfulness in promises, |
| | • |
| | om the Sea of Knowledge, (Gyánárnaba.) |
| | Advantages of learning, Method of sharpening the intellect, |
| | , , |
| | Good Company, |
| | Bad Company, |
| | Kindness in speech, |
| | Mastery of the passions, |
| | Seeking the welfare of others, |
| | Evil of injuring others, |
| 9. | Steadfastness, |

| | Page |
|---|------|
| X From the Light of Intelligence, (Prabodichandr | iká) |
| 1. A King's advice to his son, | 274 |
| 2. Impulse an unsafe guide, | 279 |
| 3 Mind the test of a man's value, | 286 |
| 1. Contentment, | 294 |
| M.—From the Manifestation of the Truth, (Tathya kásha.) | PRA- |
| 1. An address to Idolaters on the folly of idolatry, | 301 |
| 2 The duty of forsaking idolatry enforced, • | 313 |
| | |
| APPENDIX. | |
| 1.—From the Mahábhárat.—History of Nala | |
| 1. Introduction, | 339 |
| 2. Damayanti's marriage, | 342 |
| 3. Nala possessed by Kali, | 347 |
| 4. Nala forsakes Damayanti, | 350 |
| 5. Damayanti's sojourn at Subáhu, | 351 |
| 6. Nala's transformation, | 360 |
| 7. Nala's sojourn at Ayodhyá, | 361 |
| 8. Damayanti's return to her parents, | 362 |
| 9. Nala discovered, | 365 |
| 10. Nala's arrival at Vidarbha, | 370 |
| 11. The recognition, | 374 |
| 12. Nala reinstated, | 375 |
| 11.—Specimens of Hymns, (From Rám Mohan Ráy's | |
| Selection,) | 378 |
| III.—Specimens of the Periodical Literature of the da | Υ. |
| 1. Secular, from the Purnachandroday newspaper, | 381 |
| 2. Philosophical, from the Satyasanchárini Patriká, | 389 |

SELECTIONS FROM BENGA'LI' LITERATURE.

TALES OF A PARROT.*

তোতা ইতিহাস।

I.—The history of Maimun and Khojestá.

ময়মুনের জন্ম ও থোজেস্তার প্রেমগ্রস্ত হওয়ার বিবরণ।

পুর্বকোলের ধনতানদের মধ্যে আমদ সূল্যান নামে এক জন ছিলেন; তাঁহার প্রচুর ধন ও এখর্ঘ্য এবং বিশুর দৈন্যদামন্ত ছিল; একসহসু অখ পঞ্চশত হন্তী মবশত উষ্টু ভাবের সহিত তাঁহার দারে হাজীর থাকিত। কিন্তু তাঁহার সন্থান সন্থতি ছিল না, এই কারণ তিনি দিবারাত্রি ও প্রাতে ও সন্ধ্যাতে ঈশবপুজকীদের নিকটে গমন করিয়া দেবার দারা সন্তানের বর প্রার্থনা করিতেন। কতক দিবদ পরে ভগবান সৃষ্টিকর্ত্তা সূর্য্যের ন্যায় বদন চন্দ্রের ন্যায় কপাল অতি সুন্দর এক পুজু তাহাকে দিলেন। আমদ সুলতান্ ঐ সন্তান পাইয়া বড় প্রফুলচিত পুঞ্পবং বিকশিত হইয়া দেই নগর্ম প্রধান লোক আরু মন্ত্রী ও পণ্ডিত এবং শিক্ষাপ্তরু আর ফকির্দিগকে আন্তান পূর্বক আনয়ন করিয়া বছ্মুল্য থেলাৎ বন্তাদি দিলেন। যথন দেই বালকের সপ্তম বংসর বয়ংক্রম হইল, তথন আমদ সূল্তান এক জন বিদ্বান লোকের স্থানে পড়িবার জন্যে সেই পুলকে সম-পুন করিলেন। কতক দিবদেতে দেই বালক আরক্ষী ও পার্সী শাস্ত্রের সমদায় পস্তুক পড়িয়া সমাপ্ত করিয়া রাজসভার ধারামতে কথোপকথন আরু বসন উঠন শিক্ষা করিলেন। তার পর রাজার আরু সভাস্থ লোক-দের পদন্দেতে উত্তম হইলেন।

^{*} The style of these tales, which are translated from the Persian or the Urdu, is by no means pure, but deserving of attention as a very fair specimen of the colloquial language and its almost unbounded negligence.

আমদ সূল্তান দেই বালকের নাম ময়মুন রাখিয়া খোজেয়োনামে সৃদ্দরী সুষ্ঠামুখী চল্ডের ন্যায় শরীর এক কন্যার সহিত বিবাহ দিলেন। ভাঁহাদের জ্রী পুরুষ দুটি জনেতে যথেকী প্রীতি হইল। প্রতি দিন ভাঁহারা একতা আছলাদ ও আমোদে থাকেন ও ভোজন করেন ও নিদুাযান। এক দিবদে ময়মুন পাল্কিতে আরোহণ করিয়া বাজারের কৌহুক দে-থিতে গেলেন; বাজারের মধ্যে এক ব্যক্তি তোভাবিক্রেতা ভোভার পিঞ্জর হত্তে করিয়া দাঁড়াইয়াছিল। ময়মুন তাহাকে দেখিয়া কহিলেন যে এই ভোতার মুল্য কত হইবে? ভোতা বিক্রেতা উত্তর করিল, ইহার মূল্য মব্লগে এক সহসু হুন। ইহা খনিয়া ময়মূন জবাব দিলেন, যে জন বড় নির্বোধ অজান ক্ষিপ, দেই জন এই এক মুক্তি পাখা বিড়ালের এক গুলি कि এত মূল্য দিয়া ক্রয় করে? তৎক্ষণে ভোতা নিবেচনা কঁরিল, যদি এই धनवान वर्ष भनुषा आभारक क्रम ना करतन, उरत आभात वर पुलंगा इहे-বে; জানী ও উত্তমদের সভাতে থাকিলে বুদ্ধির বৃদ্ধি হয়। ভোতা ইহাই ভাবিয়া জবাব দিল, ওহে যুবা রূপবান উপযুক্ত ধনবান, খন, আমি ডো-মার দৃষ্টিতে এক মুফি পাথা এবং বিড়ালের এক গ্রাম বটি, কিন্ত বুদ্ধি ও জানেতে আকাশে উড়িতে পারি, এবৎ সংকর্থকেরা আমার মিফ ভাষা শুরণ করিয়া চমংকৃত থাকেন, আরে আগত কল্য যে কার্য্য হউবে তাহা আমি অদ্য বলিতে পারি, তাহার প্রমাণ এই শুন। কাবল দেশহইতে সওদানর এই দেশে সমূল ক্রয় করিতে আসিবেন; অতএব তুমি এই দেশের সমুল সমস্ত কিনিয়া এক গৃহে জমা করিয়া রাখহ, তবৈ এই বাণিজ্ঞোতে বিস্তর লাভ পাইবা। ময়মুন ভোতার এই দব বাক্য শুনিয়া এক সহসু ছুন দিয়া ভোতাকে ক্রয় করিয়া আপন বাটীতে লইশ্বা গেলেন। পরে ময়-মুন ঐ দেশের সমন্ত দ্যুলবিক্রেতাকে ডাকাইয়া জিলাসা করিলেন যে मञ्च ममृत्लत मृषा कि इडेरत । ममूल विद्वादा करिल रा अ मकल সমূলের দর দশ সহসূতৃন হইবে। ময়মুন তৎক্ষণাৎ আপেন ভাণ্ডার-ছইতে দশ সহসূত্ন দিয়া সকল সমূল ক্রয় করিয়া এক বাটীতে একত্র রাখিলেন। তৃতীয় দিবদের পর ভোতার কথনানুষায়ী কাবল দেশহইতে সওদাগরেরা পঁছছিয়া সকল স্থানেতে সমুলের বিস্তর অন্বেষণ করিলেন, কিন্ত কোথাও সন্থলের চিহ্ন না পাইয়া সেখানকার সওদাগরদের প্রমুখাৎ জাত হইয়া ময়মুনের সাক্ষাতে আসিয়া পঞাশ সহসুহূন দিয়া সেই সমস্ত সমূল ক্রয় করিয়া লইয়া আপনাদের দেশে গমন করিলেন। ময়মূন ভোতার বাক্য যথার্থ পাইয়া বড় হুষ্ট হইয়া তোতার শরীরের একাকীর ভয় দূর হইবার জন্যে এক সারী পক্ষিণী ক্রয় করিয়া দুই পক্ষিকে একত্র রাখিলেন। জানিরা কহিয়াছেন যে আপন ২ জাতিতে প্রণয় হয়; তাহার নিদশন এই, 'কপোত কপোতের এবং বাজ বাজের সহিত উড়ে'; অতএব তোতা আর সারী একত্র থাকিয়া উভয়ে তুফী রহিল।

এक निवम भग्नम्त तथा एक छा एक किए ला स्व के क् कारल इ करना ननी আর বিদেশে ভূমণ করিতে ইচ্ছা করি, কিন্তু যাবৎ আমি বাছডিয়া না আইিদি, তাবং যখন ভোমার যে কার্য্য প্রয়োজন হয়, তথন তুমি তোতা আর সারীকে জিজাসা করিবা; ইহাদের প্রামর্শ আর অনুমন্তি ব্যতিরেক কোন কৰ্ম করিও না। এই কপ কএক কথা কহিয়া ময়মন বিদিশ<mark>ে গমন</mark> করিলেন। ময়মুনের যাওনের পর খোজেন্তা আপন প্রিয়তমের বিচ্ছে-দেতে বড় দৃঃখিতচিত্ত হইয়া দিবারাতি নিদ্য ঘাইতেন না, আরু ভোজন করিতেন না। তোতা প্রতাহ উত্তম উপন্যাস কহিবার দ্বারা পোলেস্তার মনের দৃঃখ দ্র করিত, এই মতে ষষ্ঠ মাস গত হইল। পরে এক দিবস থোজেন্তা স্থান এবং শরীরের লাবণ্য করিয়া অট্টালিকার উপরে দাঁড়া ইয়াগবাকের দারহইতে পথের কৌতুক দেখিতে ছিলেন, ইতিমধ্যে অন্য দেশহউতে এক রাজকুমার ভুমণার্থে ঐ সহরে উপস্থিত হউয়াছিলেন, খোজেন্তার সুর্যাত্রা বদন দেখিয়া কিপ্ত চইলেন, এবং খোজেন্তাও রাজ-পুত্রকে দৃষ্টি করিয়া তদনুরূপ হইলেন। ভাহার পর রাজার বালক এক কুট্টনীর দ্বারা গোপনে খোজেস্থার নিকট বাক্য প্রেরণ করিলেন যে এক . রাজি চারি দত্তের কারণ আমার বাটাতে আইসেন, তাহার বদ**লে লক্ষ ত্**ন মুলোর এক অঙ্গরীয়ক তাঁহাকে দিব। খোজেন্তা প্রথম স্বাকার করিলেন না, পরে কুট্টনীর বহুবিধ ভূঙ্গানেতে সমত হইয়া উত্তর করিয়া পাঠাই-লেন, দিবদে গন্তুব্য নয়, অর্জরাত্তি গতে রাজকুমারের নিকটে আমি পঁস্তু-ছিত। পরে রজনীতে খোজেস্তা উত্তম বস্ত্র পরিধান করিয়া সারীর সম্মু**রু** আসিয়া চৌকির উপরে বসিয়ামনের মধ্যে বিবেচনাকরিলেন যে আমি खी এव॰ मावी ९ खी. এ मन कार्याट मावी आभाव कथा चनिया वाजनन-নের নিকটে আমাকে যাইতে অনুমতি দিবে; ইহা বুঝিয়া সমস্ক বিস্তারিত मात्रीरक शाहत क्रिल्म । পर्य मात्री मीडि नाकानातारंड क्रिन य अ কর্মা স্ত্রীজাতির অতি অকর্ত্রা, ইহাতে বড় দুনাম হইবে আর লক্ষ্যা পাইবা। খোজেন্তা প্রাতিতে ক্লিপ্রৎ হইয়াছেন, অতএব সারীর নিষেধে অতি ক্রোধিত হইয়া দুই পদে অতিবৃঢ় করি ধরিয়া সার্রাকে ভূমিতে এমত আছাড়িলেন, যে সারীর প্রাণ শরীরহুইতে ত্যাগ করিলেক। সেই সারী মরিলৈ পরে সারীর পিঞার থালি পড়িয়া রহিল। পরে থোজেন্তা সেই কোপ থাকিতে ২ তোতার নিকট পঁহুছিয়া আপন মনের কথা আর সা-রীর মর্ণের কথা বিস্তারিত করিয়া ভোতাকে জাত করাইলেন। তোতা জানী জ্ঞাত হইয়া মনে বিচার করিল, ঘদ্যপি আমি দারীর মত বারণ করি, তবে নিশ্যু মরিব; এই শঙ্কা প্রযুক্ত অতি কোমল বাক্যে থোজেন্তাকে তোভা কহিভেছে, খন থোজেন্তা, সারী জ্রী পক্ষিণী, কেন ट्री विराध कथा जाहारक कहिया जिला? रम अन्हिर कविया छ। खानिदा ক্ছিয়াছেন যে বিস্তুর স্ত্রীজার্তি নির্মোধ হয়, বিশেষ কথা সকল ইহাদের

নিকটে প্রকাশ কর। উপসূক নয়। কিন্ত তুমি এখন এই জানো ভাবিত হটও না। যাবং আমার প্রাণ শরীরে আছে, হাবং তোমার কার্যোতে আমি চেটা করিব। *

II .- Story of the Sentinel.

এক জন চৌকিদার রাজা তেবরস্থানের দহিত হিতকর্ম করিয়া-ছিল তাহার প্রদম্প এই।

পুরেরে মন্যোরা এবং মলিরা এমত কহিয়াছেন যে রাজা তেবর্স্তান এক দিবস আপন সভা স্থগের ন্যায় সাজাইয়া উত্তম অন্ধ ব্যঞ্জন এবং নানা প্রকার মদ্য মাংস ভক্ষা দ্ব্য সভামধ্যে রাথিয়া ঐ দেশীয় রাজ-পত্ত ও মুর্যাদক ও পণ্ডিত ও শিক্ষাগুরুদিগকে সেই স্থানে উপস্থিত করিয়া রাজা তেব্রস্থান দেই দব উত্ম দ্ব্য হাঁহাদিগকে ভোজন করাইতেছিলেন, ইতিমধ্যে অক্সমাং দেই স্থানে এক জন বিদেশী উপস্থিত হইল। চদনবুর বাজসভাস্থ প্রধানেরা তাহাকে জিজাসিলেন যে ত্মি কে? কোথাইইতে আসিয়াছ ? কি কাৰ্য্য কর ? সেই ব্যক্তি উত্তর করিল যে আমি তলওুয়ার মারিতে আর ব্যাঘ ধরিতে পারি; ইহা ব্যতিরেক আর ২ রূপ শিপ্প-কর্ম জাত আছি, এবং তীর এমত মারিতে পারি, যে আমার তীর কটিন প্রস্তুবেতে ছিদ করিয়া নিগত হয়। এবৎ খজেন্ত্র নামা এক জন ধনবান আছেন, আমি কিছ দিবদ ভাঁহার নিকটে চাকর ছিলাম, কিন্তু খড়েন্দর আমার কিছ ধণ বিবেচনা করিয়া ব্রিলেন না, অতএব আমি তাঁহার চা-করি ত্যাপ করিয়। মহারাজ তেবর স্থানের নাম খনিয়া তাঁহার নিকট চা-করি করিতে আদিয়াছি। মহাবাজ তেববস্তান এই কথা খুনিযা বাজদ্ববা-বের লোকদিগকে আজা দিলেন যে এই ব্যক্তিকে চৌকিদাবি কর্মে नियुक्त कव। भट्ट कर्म्मक बांदा दाजा जानुमाद्द राशदक हो किनादि हाक-রিছে নিযুক্ত করিলেন। দেই জন প্রতাহ রাত্রিতে এক পদে দাঁড়াইয়া রাজার অট্টালিকার দিগে দৃটি করিয়া থাকে; এক দিবস অর্করাত্রের পরে রাজা উপর ঘরের ছাতে বেড়াইয়া সকল দিগে দৃষ্টি করিতেং নীচেতে দেখি-লেন, যে এক জন এক পদে দাঁড়াইয়া রহিয়াছে। রাজা তাহাকে দেখিয়া জিজাসিলেন, তমি কে বট? অর্জনিশাতে কি কারণ এক পদে দাঁডাইয়া আছ?

^{*} The parrot, after thus professing a willingness to aid Khojesta in attaining her wicked object, goes on to give her some advice, illustrated by a long tale. Khojesta listens to the tale, which is spun out to such a length that when it is concluded, the dawn appears, and compels her to delay her visit to the next night, when the parrot keeps her at home by the same expedient, which is resorted to every night, until at length her husband returns.—In the stories which follow, the introduction and conclusion are omitted.

চৌকিদার কহিল যে রাজদর্শনার্থে আকাঙ্কিত ছিলাম, অন্য আমার ভা-গোরে সহকারেতে দর্শন করিয়াবড় আহ্লাদিত আমোদিত হইলাম। রাজা আর চৌকিনারেতে এই কথোপকথন হইতেছিল, ইন্তিমধ্যে মাঠের দিগ-হউতে এক শন রাজার কর্ণকুহরে পঁহুছিল; সে শন এই,এক জন কহিতেছে ষে আমি ষুটিতেছি, কে এমত মনুষ্য আছে যে আমাকে ফিবাইবে? ইহা खनिया ताका विभिन्न इहेया होकिनात्रक कहिल्लन य अहर होकिनात्, व শব্বে বৃত্তার ভূমি কিছু জান? চৌকিনার উত্তর করিল, ও মহারাজ, কএক দিবস রাত্রিয়োগে এই রূপ শব্দ শুনিতেছি,কিন্তু চৌকিদারি কর্মেতে থাকি,এ কারণ গমন করিয়া জাত হউতে পারি না যে এশন কাহার। যদি আপনি আজা দেন, তবে অতি শাঘু গমন করিয়া শদের নিশ্চয় জানিয়া रहाभात मामरमत माक्कारङ विखातिङ निरंतमन कतिरह शाहि। ताका करि-লেন, শীঘু ঘাইয়া সম্বাদ আন। চৌকিবার রাজাজা পাইয়া তৎক্ষণাৎ গমন করিলেন। পরে রাজা কৃষ্ণবর্ণ এক কম্বলেতে শরীর ঢাকিয়া চৌকি-দারের পশ্চাথ গেলেন। চৌকিদার মে স্থানে পঁছলিয়া দেখিল যে পথি-মধ্যে এক সন্দ্রী দাঁড়াইয়া কহিতেতে যে আমি যাইঙেজি, আমাকে কে ফিবাইবে? ইহা শুনিয়া চৌকিদার প্রশন করিল যে ও দ্রীলোক, তমি এমত কথা কেন কহিতেছ? মে জীলোক উত্তর করিল, যে আমি রাজা তেবরস্থানের প্রমায়ুর প্রতিষ্তি, রাজার আয়ুর শেষ হইয়াছে, অতএব আমি যাইতেছি। চৌকিদার ইহা শুনিয়া কহিল, তুমি রাজার প্রমায়; এখন তৃমি কি রূপে বাহুড়িয়া থাকিবা? প্রতিবিদ্ধ কহিলেন, শুন হে চৌকি-দার, যদ্যপি ভূমি আপন পুজকে রাজার প্রমায়্র বনলেতে আমার मयुर्थ विनाम (मंड, उर्व आभि अवभा कितिया थाकिव, ताजांड कडक কাল বাঁচিয়া থাকিবেন, কদাচ শীঘু মরিবেন না। চৌকিদার উহা শুনিয়া ভূফী হইয়া উত্তর করিল যে যদি আমার প্রাণ আরু আমার পভের প্রাণ এই দুই দিলেও রাজা রক্ষা পান, তবে অবশ্য দিব ; কিন্তু হুমি মুহু-তেঁক বিলম্ব কব; আমি বাটী ঘাইয়া আপন সভানকে আনিয়া ভোমার সাক্ষাতে বলিদান করি। ইহা বলিয়া চৌকিদার আপন গৃহেতে যাইয়া এই সমস্ত কথা বড় পুত্রকে অবগত করিল। তদন রর দেই পুত্র সংবিদেচক जानी, इंशाई खनिया उठत कतिल, भारताका (उनतत्त्वान जाठि निहातक उ প্রজ্ञাপালক দৈন্য দুংখ দূরকর্তা, যদি আমাকে বলিদান করিছে তিনি রক্ষা পান, এ বড় উত্তম প্রকরণ; কেননা আমার মরণেতে ক্ষতি নাছি। এ রাজার মদদ হ'ইলে আরে কোন দুর্জন ব)কি রাজা হইবেন, তাহার দুকী তাতে সহসু ২ লোক নাশ হইয়া দেশ ওএরাণ ১ইবে। রাজা তেবরস্তান বাঁচিলে সহসু > প্রজা লোকদিণের সুখ এবং দেশের আবাদ হউবেক ; ও আমি শিক্ষাপ্তরুর খানে শুনিয়াছি, তিনি এক দিস্স চৌরাটীর প্রভারাদি-গকে কহিছেছিলেন যে রাজসমভিব্যাহ্রত লোকেরা যদি বিচার্ক রাজার

প্রাণ রক্ষার্থে এক জন প্রজাকে নফ করে, ইহাতে পাপ হয় না। ঈশর করেন সে এমত রাজানা মরেন, আর অবিচারক রাজা রাজ্য না করে; অতএর শীঘু আমাকে প্রতিমার নিকট লইয়া যাও এবং ছেদন করে। তার পর চৌকিদার প্রতিমার দাক্ষাতে পুত্রকে আনিয়া হন্তপাদাদি বন্ধন করিয়া ডীক্স ছোরা আপন করে লইয়াহেঁটমুও হইয়াছেদ্ধন করিছে উদ্যুত হইল। প্রতিবিশ্ব ইচা দেখিয়া শীঘু চৌকিদারের হস্তে ধরিয়া নিষেধ করিলেন যে তুমি তোমার পুজের গলা ছেদন করিও না; ঈশর সর্বকিতা হোমার যোগাতা আরু উত্মতাতে বড় ভূফী হইয়া অনুগুত করিয়া আমাকে ফিরিয়া ষ্টি শত বংসর থাকিতে আজা দিলেন। চৌকিদার এই মঙ্গ*ল* সমাচার শ্বনিয়া বড় আছলাদিত হউল। চৌকিদারে আর প্রতিমাতে এবং চৌকিলারের পুত্রতে যে কথোপকথন হইয়াছিল, রাজা দেই সমন্ত গুনিয়া এবং দেখিয়া ঢৌকিদারের আগমনের পূর্বের গৃহে আদিয়া অট্টালিকার উপরে পৃশ্ধবং ভূমণ করিতে লাগিলেন। গৌকিনার অর্ফনও গতে রাজার সমূপে আসিয়া উপস্থিত হুট্রা প্রণাম করিয়া মঙ্গল প্রাথনা করিল নে মহারাজার আয়ঃ ও ঐখর্যা এবং রাজ্য আর দৈন্যের বৃদ্ধি হউক। তার পর রাজা জিজাদিলেন,ও হে চৌকিদার, কহ, শব্দের বৃতান্ত কি জানিলা? চৌকিদার কহিল, মহারাজ প্রবণ করিতে আজা হউক; এক স্থী সর্বাঙ্গ মূলরী আপন স্বামির সহিতকলহ করিয়া বাটীহউতে বাহিরে আসিয়া পথমব্যে বসিয়ামনোদ্ঃখেতে শব্দ করিতেছিল ঘে আমি ঘাইতেছি, এমত কোন ব্যক্তি আছে আমাকে ফিবাইবে? আমি সেই দ্রীর সাক্ষাতে পঁছছিলা কোমল বাকাদারা ভূষিলা ভাষাদের ক্রী পুরুষে মিলন করিয়া দিলাম ; এখন দেই ফ্রা স্থাকৃত হউলেন দে আমি স্থামির বাটাইইতে আর ষ্ঠি শত বংসর কোথাও ঘাইব না। রাজা চৌকিদারের উত্তম ধারাতে আবে জানেতে বড তৃষ্ট হইয়া কহিলেন, ওহে চৌকিদার, যে কালে ছুমি আমার বাটীর বাহির হইলা, সেই সময় আমিও তোমার পশ্চাং গমন করিয়া দূরহইতে ভোমার আর প্রতিমার এবং ভোমার ভনয়ের উত্তর প্রভাতর স্থানিয়াছি, আর তোমরা যাহা করিয়াছিলা তাহাও দেশিয়াছি; ঈশর ডোমার ভাল করিবেন। এবং আমিও ভগবানের প্রার্থনার দারা ভোমার দৈন্য দূর করিব ও ধনবান করিব। তার পর রাজা রাজদি৲হাসনে উপবিষ্ট হইলে দেশের প্রধানেরা এবং সকল বিচারকেরাও হাজীর হটলেন, এট সময় রাজা ঠাঁহাদের সাক্ষাতে চৌকিদারকে প্রধান মন্ত্রী আর ধনভাগারির কর্মে নিযুক্ত করিয়া চাবি ও কুলুপ সকল তাহাকে সমর্পণ করিলেন।

ম্বর্ণকার আর সূত্রধর দুই জন ম্বর্ণের বিগ্রুহ চুরি করিয়া গোপনে রাথিয়াছিল তাহার কথা।

এক দেশে এক স্বর্ণকারেতে আর এক সূত্রধরেতে এমত প্রণয় ছিল, যে সকল লোকেরা ইহাদিগকে দেখিয়া ইহারা দুট ভা্ছা এই অনুমান করিত। পরে স্বর্ণকার আর সূত্রধর একত্র বিদেশ গমন করিয়া এক সহরে পঁজ্ছিয়া থর্চপত়্হীন হইয়া আপনারা ঠাও্রাইল যে এই নগরের মধ্যে এক দেৱালয় আছে, সেই দেৱালয়েতে অনেক স্থাবিপুহ আছেন; অতএব প্রামর্শ এই যে আম্রা ব্রাহ্মণের বেশ ধরিয়া সেই দেবালয়েতে ঘাইয়া দেবতাদের পূজা অর্চনা করি; সখন অবকাশ পাইব, তখন কএক বিগুহ চুরি করিব। এই মন্ত্রণাদুই জনে স্থির করিয়া দেবালয়েতে গিয়া রাধনা দেখিয়া লজ্জিত হউলেন; দুউ এক জন বাুক্সণ দেউ দেবালয়েতে গমন প্নরায় করিলেন না; যদি কেহ উাহাদিগকে জিজাসিত যে তোমরা কি কারণ দেবালয় ত্যাগ করিলা? তাঁহারা উত্তর করিতেন যে দুই বুাহ্মণ আসিয়া যে রূপ দেবভাদের দেবা ও অর্চনাকরিভেছেন, ভেমন আমরা করিতে না পারিয়া লজ্জিত হইয়া দেবালয় তাগি করিয়াভি। এই প্রকার ক্রমে ২ পুর্বের সমস্ত ব্রাহ্মণেরা দেবতার প্রাসাদ ত্যাগ করিলেন। পরে এক দিবদ রাত্রিতে স্বৰ্ণকাৰ আরু সূত্রপর সেই দব বিপুত লইয়া আপুন দেশের দিলে প্রস্থান করিয়া যথন আপন নগরে পঁত্তিলেন, তথন বিগ্র-হদিগকে এক বৃক্ষের তলে পৃতিয়া রাখিয়া আপন > বাটীতে আসি-লেন। এক রাত্রে স্বর্ণকার একাকী ঘাইয়ৄ সমন্ত বিপুত মৃত্তিকাহউতে উঠাইয়া আপন গৃহে আনিল। পর্দিবদ প্রাতে দূত্রধবের কাছে ণিয়া কহিল যে ও হে সূত্রধর, পূর্বের প্রীতি ভূলিয়া আমার অংশ-সুদ্ধ চুরি কেরিয়া লইলা; সে ধন কত কাল ভোগ করিবা? ইহা শুনিয়া সূত্রধর চমৎকৃত হইয়া মনে করিল দে স্বৰ্ণকার এই মত আমাকে বঞ্চনা क्रिया मकल विश्व लंडेल। इंदाट मृज्यत विरुठना क्रिया উত্তর ক্রিল যে ওহে স্বর্ণকার, যাহা তুমি করিয়াছ তাহা আমি বুঝিলাম, কিন্তু তুমি ঈশর্দিণে দৃষ্টি না করিয়া আমার উপর মিথ্যা অপবাদ দিলা; ভাল, ষ্ট্রমর আছেন। ইহাই বলিয়া চেফীস্বর পাইতে লাগিল। তারপর সূত্রধর বড় সুবোধ হণিকারের সহিত কলহ করাতে কিজুলভা না দেখিয়া নিরস্ক রহিল। কতক দিবস গতে সূত্রধর স্বর্ণকারের আবয়ব এক কার্ছ পুতলিকা গঠন করিয়া স্বর্ণকারের বেশের ন্যায় পরিচ্ছদ সেই পুতলিকাকে পরা-हैल, এर छालुकरूरम मुहेरि जानिया मिहे रूपमान जाना मुठा खे পুরলিকার জামার দামনে আরু আক্রিনে রাখিত। ভালুকবৎদেরা ফুপিত

হইয়া দেই দামন আর আস্তিনহইতে ভক্ষণীয় বদ্ধ লইয়া ভোজন করিত। সূত্রধর দেখিল যে বংদদের অতাত প্রাতি পুতলিকার দহিত ছইল, তাহার পর সূত্রধর এক দিবস সন্ত্রীক মর্ণকারকে এবং আর্থ প্রতিবাসী নারীগণকে আহ্বান করিল। হুর্ণকারের পক্তনী আপনার দুই বালক সুদ্ধ সূত্রধরের আলয়ে আইল। অনন্তর সূত্রধর ঐ বালকদিগকে এক স্থানে গোপনে রাথিয়া সেই দুই ভালুকবৎসকে বাহির করিয়া চেঁচাইয়া কহিতে লাগিল, এ কি আশ্চর্যা দেখিতেছি? স্বর্ণকারের দুই নদ্দন অকমাৎ ভালুকবৎসের ন্যায় হইল; এ বড় খেনের বিষয়। মুর্কার এই वाका अनिया मिन साम्य वाहेया प्रतिथा मृज्यत्रक करिल पर अरह मृज्यत्, মনুষ্য কথন ভালুক হয় না; এ ভোমার মিথ্যা কথা। শেষে স্বৰ্ণকারে আর সূত্রধরে কলছ করিয়া সেই দেশের বিচারকর্তা কাজির নিকটে গেল । তার পর কাজি সূত্রধরকে জিজাসিলেন, যে মনুষ্য কি ক্পে ভাল্ক হইল ডাছ কহ। সূত্রধর উত্তর দিল যে ধর্ণকারের বালকের। একত ক্রীড়া করিছে-ছিল; অকুমাৎ ভূমিতে পড়িয়া ভালুক্রংদের ন্যায় হইল। ইহা খনিয়া কাজি কহিলেন যে ভোমার এ কথার প্রমাণনা পাইলে কি মতে প্রভায় করি । সূত্রধর কহিল যে পূর্বের পূত্তকে আমি দেখিয়াছি, এক জন্ত অন্য এক জাতুর ন্যায় আকৃতি হইয়াছিল; কিন্তু তাহার পূর্বমত বৃদ্ধি ছিল। বালকেরা যদি ভালুক হইয়া থাকে, তবে স্বৰ্ণকারকেও চিনিবে, এবং আমার কথাও সভ্য হইবেক; যদ্যপি না হইয়া থাকে, তবে ধর্ণকারকেও চিনিবে নাও তাহার নিকট ঘাইবে না। সূত্রধরের এই কথা কাজি গ্রাহ্য করিয়া বৎসদিগকে আনিতে আজা দিলেন। পরে সূত্রর কালির আজানুসারে ভালৃকবৎসদিগকে আনিয়া কাছারিতে সকল লোকের মধ্যে ছাড়িয়া দিল। দেখানে বিস্তর লোক ছিল, কিন্তু ভালুকবৎদের। আর কাহারো নিকট না য়ুাইয়া কাষ্ঠপুত্তলিকার অবয়ব এবং পরিচ্ছদ শ্বিকারকে দেখিয়া তাহার পায়েতে আপনাদের মস্তুক ল্যয়িয়া খেলা করিতে লাগিল। কাজি ইহা প্রত্যক্ষ দেখিয়া স্বর্ণকারকে কহিলেন, ও হে বর্ণকার, আমার প্রতায় হইল যে তোমার পুত্রেরা ভালুকরৎদের আকৃঙি হইয়াছে; উহাদিগকে ভূমি বাটীতে লইয়া যাও; দৃথা কেন সূত্রধরের সবিভ কলহ করিতেছ? অনম্ভর স্বর্ণকার অনুপায় বৃথিয়া সূত্রধরের বাটীতে আসিয়া সূত্রধরের পাদাবনত হইয়া কবিল যে তেমার অংশ দিই নাই, একারণ তুমি এই প্রকার করিয়াছ। এখন তুমি আমাকে ক্ষা করিয়া আপন অৎশ লও, এবৎ আমার ছাওয়ালদিগতে আমাতে দেও। সূত্রধর কবিল যে তুমি বিশাসঘাতকের কর্মা করিয়াছিলা, ভেকারণ তোমার বড় পাপ হইয়াছে; আর কখন তুমি এমত কার্য্য করিও না; ইহাছইডে মন ফিরাও, তবে কিছু আশ্চর্য নহে যে তোমার বালকেরা ভালুকমূর্ত্তি ভাগি করিয়া পুর্বাকার ছউবে। পরে সূত্রধর বর্ণের অৎশ ব্রিয়া লইয়া সেই সম্ভানদিগকে **হ**র্ণকারের সাক্ষাতে আনিয়া দিল।

IV .- Story of the Soldier's wife.

এক জন প্রধান লোকের সন্তান এক দাপায়ের স্ত্রীর চরিত্র বিচার করিয়াছিল তাহার কথা।

এক নগরেতে সীপায়ের এক অতি বড় স্করী ব্রী জিল, কিন্তু সীপাই আপন ব্রীকে সর্বাক্ষণ সাবধানে রাখিত,পাজে সেব্রী ভুটা হয়। এই সন্দেহ প্রযুক্ত সীপাই আপন পানীকে কোখাও রাখিয়া কর্ম কার্য্য করিছে ঘাইত না। এই প্রকারে কিছু কাল গতে সীপাই বড় দৃংস্থ হইল, একারণ এক দিবস সেই ব্রী কহিল যে স্বামি, কেন হুমি বিদেশ যাও না? এবং কি জন্যে চাকরি ব্যবসায় ভ্যাগ করিলা? স্বামী জনাব দিল যে পাছে আমি কার্যার্থে গেলে খুমি দুল্ট ক্রিলা কর, এই ভাবনা করিলা ভোমাকে ক্রাপি রাখিয়া চাকরি করিতে ঘাইতে পারি না। ইহা শ্বনিয়া ব্রী কহিল যে আপনি এমত বিচার করিতে দেন, ও ভাল নতে; কেননা যে স্ত্রী সাধ্বী হয়, হাহাকে কেহ ভুলাইয়া দুল্টা করিতে পারে না; এবং যে নারী ভুটা হয়, ভাহার স্বামী ভাহাকে সাবধানেতে কথন রাগিতে পারে না।

তথন দীপাট প্রশন করিল গে এখন চুমি আমাকে কি বল? দেট ভাষ্যা কহিল, খন স্থামি, আমার প্রাম্প এই লে গুমি বিদেশে ঘাইয়া চাকরি করছ, এবং আমি গোমাকে এক পৃষ্পাপ্তক্ষ দিব; নদব্ধি দেট প্ৰশাস্ত ভাজা থাকিবে, তদৰ্ধি ত্মি নিশ্চম জানিও মে আমি কোন মূল ক্ষা করি নাই; যথন পৃষ্পপ্তত স্থক্ষ হইতে, তখন জানিতা লে আমা-তউতে কিছ মল ক্রিয়া হটয়া থাকিবে। সীপাট ইতা শ্রিয়াবিলেশে ঘাইতে ইচ্ছাকরিল। দীপায়ের ত্রী স্বামিকে বিদেশ গ্রম কালে ত্যাপন এক পৃষ্পপ্তক দিয়া বিদায় করিল। অনুধ্র সীপাই আরু এক মহরে পঁত্ছিয়া ওদেশীয় এক জন প্রধান লোকের পুত্তের নিকটে চাকর হইল, কিন্ত জ্ঞাদত পৃষ্পপ্তক সক্ষা আপন মঙ্গে রাখিত। হেমন্ত কাল উপদ্বিত হউলে পর সেই বড মানুষের তনয় সভাস্থ সোকদিগকে কবিল যে এট সময় কোন প্ষেপাদ্যানে নবীন ফুল দৃষ্টিতে আইসে না, এবং ধনবান-দেরও হন্ত প্রাপ্ত হয় না, কিও এ বড় আশ্চর্য্য দে এই দৈন্য দীপাই প্রভ্যাবধি নুহন পৃষ্পপ্রক কোথাছইতে আনে? সভাস্থ ব্যক্তিরা কহিল যে আমরাও ইহাতে চমৎকৃত হইতেছি। তার পর মেই ধনবানের প্র দীপাইকে জিজাসিলেন যে ভূমি এ পৃষ্পগুচ্ছ কোথাচইতে এবং কি প্রকারে আন ? দীপ।ই কহিল যে এই পৃষ্পপ্তিত আমার গৃহিণী আমাকে উহা বলিয়া দিয়াছে যে যাবৎ এই পৃহপণ্ডচ্ছনবীন থাকিবে, তাবৎ তৃমি নিশ্চয় জানিবা আমি মাধবী আছি,কোন মতে ভূফী হট নাট; যথান चक्क मिथिना, मिडे काल सानिना घ आप्रि मुक्ते किया कतिए हि ; डेटा বলিয়া পুষ্পাপ্তচ্ছ আমাকে দিয়া বিদায় করিয়াছে। আমিরের পুত্র ইহা

खिनिया होत्रा कृतिया कृहिस्सन य छात्रात बी साहिनी स्नातन, व्यख्धत পৃষ্পপ্ত হল নবান দশাইতেছে। পরে সেই ধনবানের পুত্রের নিক্ট দুই জন পাচক অভান্ত জানী এবং বোদ্ধা ছিল, ভাহাদের মধ্যে এক জন পাচককে ধনবানের নন্দন আজা করিলেন যে তুমি দীপায়ের বাটীতে যাইয়া ছলের ছারাতে সীপায়ের ক্রীর সহিত সাক্ষাৎ করিয়া শীঘু ফিরিয়া সকল অবগত কর। সূপকার সেই ধনবানের পুজের আজামত দীপায়ের সহরে গেল; দেস্থানে পত্তছিয়া এক কুট্টনীকে দীপায়ের স্ত্রীর সমীপে প্রেরণ করিল। কুটুনী দীপায়ের পক্তনীর নিকট ঘাইয়া কোন প্রকারে পাচকের সমাচার পঁত্তছাইল। সীপায়ের ব্রী শুনিরা কুট্টনীকে কিছু কথা কহিয়া এই উত্তর দিল যে দে পুরুষকে আমার নিকট আনহ, প্রথম আমি দে পুরুষকে দেখি, আমার উপযুক্ত কটে কি না। পরে কুটুনী সেই সূপকারকে সঙ্গে করিয়া সীপায়ের বাটী লইয়া গেল। পরে সীপায়ের ক্রী সূপকারের কর্ণেতে কহিলেন যে তুমি এক্ষণে এ বাটীহউতে গমন কর এবং কুটুনীকে এই রূপ কহ, যে ঐ ক্সী লোক আমার উপযুক্ত নতে, এমত স্ত্রীর সহিত আমি প্রীতি করিব না। ভার পর তুমি একাকী আমার গৃহে আউস, কেননা কৃট্নী জাতি বিশেষ জাত হইলে তার পরে প্রকাশ হয়; অতএব কৃট্টনীকে এ সৎবাদ কহিও না। সুপকার এই কথা পদন করিয়া ভদনুদারে কার্য্য করিল। দীপায়ের বাটীতে এক শুক্ষ কুপ ছিল ; দীপারের ক্সী দেই কুপের উপর ভগ্ন রজ্জুতে ছাওয়া এক খট্টা, ভাহাতে এক চাদর বিভাইয়া সূপকারের আইসনের পূর্কের সেট কুপোপরে সেট শহ্যা রাখিল। দূপকার আমিবামাত্র দীপা-হের স্ত্রী সে খাট্টাতে বসিতে বলিল। পরে সূপকার ভাষাতে বসিবামাত্র একবারে কুপমধ্যে পড়িয়া চেঁচাইতে লাগিল। তদনমূর দীপায়ের পক্তনী জিজাসিল, কহ, হে মনুষ্য, ভূমি কে বট ? কোথাহইতে আসিয়াছ? সূপকার অনুপায় দেখিয়া দীপায়ের আর আমিরের পুত্রের দক্ত কথার বিস্তার বলিল। পরে মূপকার এইরূপ আপদগুস্ত হইয়া যাইতে পারিল না। আমি-রের তনয় সূপকারের যাওনের বিলম্ব হওয়াতে দিতীয় সূপকারকে বিস্তর ধন দিয়া সওদাগরের ন্যায় সাজাইয়া সীপায়ের স্ত্রীর নিকট প্রেরণ করিলেন। পরে দিতীয় দূপকার দীপায়ের বার্টীতে পঁত্ভিয়া পূর্ব পাচ-কের দশার মত কুপের ভিতর পড়িয়া দুই জনে একত রহিল। ইহাদিণের এক জনেরও ফিরিয়া না যাওয়াতে আমিরের পুত্র কহিলেন যে ইহারা দুট ব্যক্তি গেল, তাহার মধ্যে এক জনও ফিরিলনা, টহার কারণ কি? বুঝিতে পারি না; অতএব এইক্লণে আমি গেলে ভাল হয়। উহা মনে বিচার করিয়া এক দিবস মৃগরার নাম করিয়া দীপাইকে সঙ্গে লইয়া বাটীছইতে গমন করিয়া দীপায়ের দেশে পঁত্তিলেন। পরে সীপাই আপন আলয়ে যাইয়া সেই ভালাপুফ্পওচ্ছ আপন ব্রীর সন্মুখে

রাপ্রিল। এবং ব্রীকে যে সব বিষয় ঘটিয়াছিল,তাহা বিশেষিয়া ব্রী আপন ৰামিকে কহিল। প্রদিবস সীপাই আমিরপুত্রকে নিমন্ত্রণ করিয়া বাটীতে লইয়া অতিথি দেবা করিল। দীপায়ের ব্রী দেই দুই দপকারকে কুপুহইতে বাহির করিয়া কহিল যে আমার আলয়ে অদ্য অতিথিরা আসিয়াছেন. অভএব ভোমরা ব্রীলোকের বেশ ধারণ করিয়া অল্লাদি খাদ্য দ্ব্য তাহা-দের সমূথে রাথ আর দেবা কর, ভবে ভোমাদিগকে মুক্ত করিব। দৃষ্ট জন সূপকার নারীর বস্তু পরিয়া খাদ্য দামগুরী দেই আমিরের নন্দনের সাক্ষাতে লটয়া গেল; কিন্তু পাচকদিগের কুপে থাকাতে আরু মদ্দ আ-হার করাতে মস্তক আর দাড়ির চুঙ্গ উঠিয়া গিয়াছিল, এ জনেয় আমি-রের পুত্র প্রথম চিনিতে না পারিয়া দীপাইকে জি্জাসিল যে ভোমরা কি অপরাধে এই দাদীদের মস্তক মুখন করিয়াছ? দীপাই জবাব দিল যে ইহার। যে ঘাইট কর্ম করিয়াছিল, তাহা পশ্চাৎ নিবেদন করিব। পরে আমিরের পত্র অতি নির্কিণ করিয়া চিনিলেন যে সেই দুপকারেরা। ভাহারাও আমিরপুজের দাক্ষাতে বিস্তর রোদন করিসাএবৎ আমির-প্জের পাদাবনত হউল। উত্যবসরে সীপায়ের পতনী ঘরহউতে কছিল যে ওছে আমিরনন্দন, শুন, ভূমি আমার স্থামির হত্তে প্রপথক দেখিয়া शमा कतिया এक वाकिमिनाक आभाव मठीख वित्वहनार्थ भाषाकृताः ছিলা; এইক্ষণে দাক্ষাতে দেখিলা আমি কি প্রকার স্থা। আমিরপ্ত সকল দেখিয়া আর কথা এবণ করিয়া লঙ্জিত হইয়া কহিলেন যে আমার অপবাধ ক্ষমা কর ৷

V.—Tale of the Fowler and Parrot.

এক ব্যাধ এক ভোতাকে বাচ্চাসুদ্ধা ধরিয়াছিল তাহার কথা।

এক সময়েতে এক ব্যাধ এক ভোতার বাদাতে ফাঁল পাতিয়া যখন বাচাসুদ্ধা ভোতাকে ধরিল, তখন ভোতা অনুপায় হইয়া বাচাদিগকে কহিল, এখন এই যুক্তি যে ভোমরা দকলে মৃত্র নায় হও, তবে ব্যাধ ভোমাদিগকে মৃত দেখিয়া ফাঁলহইতে বাহিরে ফেলাইয়া দিরে; আমাকে একাকী লইয়া গেলে ফতি নাই, ফেননা আমি কোন উপায়ের ক্লাপাইয়া ভোমাদের নিকটে পভাছিব। পরে বাচারা তদনুক্প করিল। ব্যাধ ভাহাদিগকে মৃত জানিয়া ফাঁলহইতে বাহিরে ফেলিবামাত্রেই তাহারা উড়িয়া এক বৃক্তের শাখাতে বদিল। পরে ব্যাধ ইহাই দেখিয়া বড় জুছ হইয়া ভোচাকে ভূমে আছাড় দিতে উল্যত হইল এবং কহিল, বাচারা ভার প্রামশ্তে পলাইয়াচে অভএব ভোকে নক্ট করিব। তখন ভোতা কহিল যে ওহে ব্যাধ, আমাকে হত্যা করিলে ভোমার কি লাভ

হটবে? তুমি আমাকে রক্ষা কর, আমি আপনার মূল্য ভোমাকে এত (मशाहेत, यहकाल वाँहिता इड मित्रम आत कान व्यवसा कतिए इडेरिक না, কেননা আমি বৈদ্যক শান্তেতে অতি নিপ্ৰা ব্যাধ এট সকল কথা শ্বনিয়া তৃষ্ট হইয়া কহিল, শুন ভোঙা, আমার দেশের রাজার নাম রায় কামরূপ; তিনি অনেক দিবস অবধি বড় পীড়িত, খুমি তাঁছাকে সৃষ্ করিতে পারিবা। ভোভা কহিল, এ বড় কুদু বিষয়; আমি এমত চিকিৎসক, যদি এক স্পানের শ্রীরে দৃষ্ট সহস্ব্যাধি থাকে, ভাহাও আমি সহজ ঔষধে দ্র করিছে পারি; কিন্তু তুমি আমাকে রাজার নিকটে লইয়া গিয়া আমার ৰিদ্যার পরিচয় দেও, তবে ভূমি আমাকে বহুমুল্যেতে বিক্রয় করিতে পারিবা। তার পর ব্যাধ ভোতাকে পিঞ্রমধ্যে করিয়া রায় কামরূপের স্মীপে স্টয়া গিয়া কহিল, মহারাজ, এই তোতা চিকিৎদাশাস্ত্র বড় ভাল জ্ঞাত আছে। রায়কামরূপ ইহা শ্রেণ করিয়া কহিল যে এক জন শাস্ত্রজ চিকিৎসকে আমার বড় প্রয়োজন আছে ; যদি এ তোতা বড় ভাল চিকিৎসক হয়, তবে ইহার মূল্য কি লইবা? তাহা বল। ব্যাধ কহিল যে এ তোভার মুলা দশ সহসুমৃদা। রায় তৎক্ষণাৎ দশ হাজার তকা ব্যাধকে দিয়া ভোতাকে একয় করিয়া লউলেন। প্রদিবদ তোতা রায় কামরুপের ঔষধ প্রদত্ত করিয়া অমপে দিবদের মধ্যে রাজার পীড়া অর্ক্লেক উপশম করিয়া কহিল, ও রায় কামরূপ মহারাজ, আমার নিবেদন শুন, আমার ঔষধে ভোমার অর্কেক ব্যামোহ দূর হইয়াছে; যদি অনুগুহপুর্বক আমাকে পিঞ্রহইতে বাহির কর, তবে আরু যে ঔষপেতে প্রয়োজন আছে, তাহা অম্বেষণ করিয়া আনিয়া ভাল করিতে পারি; নতুবা পিঞারে থাকিয়া कि श्रकाद्य (इकी कहिन? ताग्रकामकुल এই कथा मटा जान कहिया ভোভাকে পিঞার্হইতে বাহির করিয়া দিলেন। ভোভা পিঞারের লাহিব হেইবামাত উড়িয়া গালে, আরু আইল না।

VI-Tule of the Tiger and Bráhman.

এক ব্যান্থের কাছে এক ব্রাহ্মণ লোভ করিয়া প্রাণ হারাইয়া-ছিল তাহার কথা।

এক নগরে এক ব্রাজণ ধনতান ছিলেন; অক্সাৎ সে ব্রাজণ দৈন্য ছইয়া অনুপায় দেখিয়া বিদেশে গমন করিলেন। পরে এক দিবস সেই বিপ্র বনমধ্যে পঁছছিয়া দেখিলেন যে এক সরোবরের পাড়েতে এক ব্যাঘু পড়িয়া রহিয়াছে, ভাহার সমূধে এক থেঁকশিয়ালি আর এক ছরিণ দাঁড়াইয়া রহিয়াছে। বিপ্র ইহা দেখিয়া ভর পাইয়া দাঁড়াইলেন, ইতিমধ্যে দেই থেঁকশিয়ালির আর মূগের দৃষ্টি ব্রাজ্ঞের উপর পড়িবা-

মাবে ভাছারা প্রামশ করিল, যদি নামু এই দুঃথি ব্যক্তিকে দেখে, তবে নন্ট করিবেক; অভএব কোন উপায় কর্ত্য, যেন ব্যাঘু উহাঁকে নন্ট না করিয়া কিছু দেয়। মূল আর পেঁকশিয়ালি এই মুক্তি দ্বির করিয়া ব্যাঘুকে কহিছে লাগিল যে ভোমার দান এমত প্রকাশ হইয়াছে, যে ইলা শুনিয়া আদ্য এক দুঃথি সুক্ষেণ ভিক্ষা করিছে আদিয়া দাঁড়াইয়ার হিয়াছেন। ইলা শুনিয়া ব্যাঘু বুক্ষণকে দেখিয়া ভাঁহাকে আপন নিকটে ডাকিয়া বিদ্তর অনুগুছ করিয়া পুর্বে যে সব ব্যক্তিদিগকে ভক্ষণ করিয়াছিল, ভাহাদের অলকার সকল সেই স্থানে পড়িয়া রহিয়াছিল, দে সমস্ক অভরণ বিপ্রকে দিয়া বিদায় করিল। পরে বুক্ষণ স্থানের লোভেতে পুনরায় সেই ব্যাঘ্রের নিকটে গেলেন। সে দিবস এক গোবাঘা আর এক ক্ষক্র সেই ব্যাঘ্রের নিকটে গেলেন। সে দিবস এক গোবাঘা আর এক ক্ষক্র সেই ব্যাঘ্রের নিকটে ভিল; ভাহারা বুক্ষণকে দেখিয়া ব্যাঘুকে কহিল, এই মনুযোর এহ আসপ্রিয়া যে হুমি না ডাকিতে আপনি ভোমার সমীপে আসিত্তে, কিছু ভয় করে না। ব্যাঘু ইহাদের কথা শ্বনিয়া বিরক্ত হইয়া লম্ফ দিয়া আসিয়া সেই বুক্ষণকে চিরিয়া খানহ করিল।

VII-Tale of the Cat and the Mice.

এক বৃদ্ধ ব্যায়ের নিকট এক বিড়াল মূষিকদিগকে নইট করিয়া আপন কার্যাহইতে অপদস্থ হইয়াছিল তাহার কথা।

এক বনেতে এক অতি বৃদ্ধ ব্যাসু থাকিচ; দেই ব্যাসুর বার্দ্ধকোর কারণ সমস্ক দদ্ধেতে ভিদু হইয়।ভিল ; স্যাযু যখন মাৎদ ভোজন করিত, তখন মাৎস্থাও দেই দত্তের ছিদ্রেতে কিঞ্ছিৎ লাগিয়া থাকিত; অপর দেই বনে বিশ্বর মৃষিক ভিল, ভাহাতে ব্যাসু নিশা গেলে ভাহারা ঐ সকল মাৎস্থাও দত্ত উত্তে টানিয়া লউত; এ জন্যে ব্যান্থের সুখের নিসুত্তে দুঃশ इडेड। ट्यांच् डेन्स्त्निशत्क मृत कतियात कात्र आत्र ता मत मछामन अनु ছিল, ভাহাদিগকে প্রামশ জিলাসিল; ভাহাতে থেঁকশিয়ালি নিবেদন করিল যে ভোমার প্রজা এক বিড়াল আছে, ভাহাকে আজা কর যে সমস্ক রাত্রি এখানে চৌকেদারি করে। ব্যাঘ্ থেঁকশিয়ালির মন্ত্রায় নিক্ষমান্ত্রিত এক বিড়ালকে ডাকাইয়া কোটালের কর্মা করিতে আজা করিল। পরে বিড়াল তদাজানুসারে কোটালি কর্মেতে নিযুক্ত হউলে **ইন্দুরেরা বিড়ালকে দেখি**য়া পলাইল। সেই দিবসাবধি ব্যায় **যুক্তন্দে** নিদ্রা যাইড, এ কারণ ত্যায়ু সেট বিড়ালকে বিস্তুর অনুগুহ করিয়া ভাছার পদবৃদ্ধি করিল। কিন্তু বিভাল ইন্দুর্দিগতে কেবল ভয় দেখা-ইড, কেননা ইন্দুর্দিগকে নট করিলে ব্যাঘূর দহিত আমার কোন প্রয়োজন থাকিবেক না এবং আমাকেও এ কর্মে নিযুক্ত রাখিবেক না,

ইছা বিবেচনা করিয়া কখন একটি ইন্দুব্বেও নায় কবিত না। পরে এক দিবদ বিড়াল আপন বংশকে স্যাদ্রের নিকট আনিরা কবিল যে আমি আদ্য কোন ছানে এক কার্দ্যে যাইতে চাহি; যদি আজা হয়, ভবে আপন বংশকে এ কর্মে নিযুক্ত করিয়া যাই, কল্য আদিয়া পঁছছিব। পরে ব্যাছু বিদায় করিলে বিড়াল আপন বংশকে কার্যাছানে রাথিয়া অন্যত্র বিদায় করিলে বিড়াল আপন বংশকে কার্যাছানে রাথিয়া অন্যত্র গেল। অনন্তর বিড়ালের বংশ গেইন্দুব্বকে দেখে তাহাকেই নস্ট করে; এই রূপে সকল ইন্দুব্বে নন্ট করিল, এক দিন ও এক রাত্রির মধ্যে সকল ইন্দুব্ব নন্ট হৈ বিড়াল বিড়াল পঁছছিয়া ইন্ব্রদিগকে নন্ট দেখিরা আপন বংশকে তির্ক্ষার করিয়া কহিল গে ভুই কেন ইন্ব্রদিগকে নন্ট করিয়া জিনিন বংশকে বিড়াল গে ভুই কেন ইন্ব্রদিগকে নন্ট করিয়াছিদ ? বংশ বলিল গে ভুমি গমন সময়ে কেন আমাকে বার্ণ কর নাই? ইহাতে বিড়াল ও বিড়ালবংশ দুই জনেই অপ্রন্থত হইলে কএক দিবশ পরে ব্যাঘু কোটালি কর্মহেইতে বিড়ালকে ভণির করিল।

VIII.—Tale of the Frog and the Snake.

সকল মণ্ড্কের প্রধান সাপুর নামে এক মণ্ড্ক ছিল, তাহার এবং এক ভুজঙ্কের কথা।

আরেব্দেশে এক বড়গভীর কুপমধ্যে বিস্তুর মণ্ডকের সরদার সাপ্র নামে এক মঙুক ছিল। পরে দাপুর দমস্ত মঙুকের উপর দৌরাক্স্য করিতে লাগিলে মণ্ডকেরা ব্যতিবাস্ত হইয়া প্রদপ্র কহিল যে সাপুরের উৎপাতেতে আমাদের প্রাণ শেষ হইল, অতএব এই উচিত যে আমার এক মণ্ডককে প্রধান করি। ভাহারা এই প্রামর্শ স্থির করিয়া আর এক ভেককে সরদার করিয়া সাপ্রকে সে স্থানহইতে বাহির করিয়া দিল। অনস্তর সাপুর অনুপায় দেখিয়া এক মর্পের সূড়ক্ষের নিকট ঘাইয়া অপ্পে২ শব্দ করিতে লাগিল। দর্প ঐ শক শুনিয়া দৃড়ক্লহইতে আপন মস্তক বাহির করিয়া সাপুর মণ্ডককে দেখিয়া বিস্তর হাস্য করিয়া কহিল যে ও মণ্ডক, তুমি আমার ভক্ষা দুবা, অভএব কেন আপন প্রাণ দিতে আমার নিকটে আসিয়াছ লাপুর উত্তর করিল যে আমি তোমার নিকটু কিঞিৎ প্রার্থনা করিতে আসিয়াছি। সপ জিজাসিল যে সে কি ? ভাহা কহ। সাপুর মগুক আপনার দশা জানাইয়। বলিল যে মণুকদিগকে ত্মি ন্যট করিয়া আমার স্থান আমাকে দেও। সর্প ইহা শ্বনিয়া তৃষ্ট হইয়া সাপ্রকে অনু-পুহ করিয়া কহিল, সে কুপ আমাকে দেখাও, তবে তাহাদিনকে হস্তবশ করিয়া ভোমার বাসস্থান ভোমাকে দিয়া আসিব। পরে সাপুর ভুলককে সজে লইয়া গমন করিয়া দেই কুপ দেখাইলে দর্প ভাহার মধ্যে ঘাইয়া কিছু দিবদেতে সাপুর ব্যতিরেক সে সকল মঞ্ককে ভক্ষণ করিল। পরে

এক দিবস সেই সর্প সাপুরকে কছিল যে আর্তো একটি মণ্ডুকও কুপমধাে নাই; এখন আমি বড় ক্ষ্পিত আছি, অতএব শীলু ভূমি আমার আহারের আরোজন কর, কদাচ অভূক রাখিও না। সাপুর সর্পকে কছিল যে আনকে অনুপুহ করিয়া মণ্ডুকদিগকে নক্ট করিয়া আমার বাসস্থান লইয়াছ, এখন আমার স্থান আমাকে দিয়া ভূমি আপন বাটাতে যাও। ইহাতে সর্প বিলিল যে ভোমাকেও ভাগা করিয়া মাইব না। ইহা শ্রেবণমাত্র সাপুর ভয় পাইয়া ভাবিতে লাগিল যে হায়! কেন মপের স্থানে উপকার চাহিয়াছিলাম? ভাল করি নাই। পরে সাপুর বিবেচনা করিয়া সর্পকে কছিল যে এ স্থানইতে কিছু দূরে মণ্ডুকেতে পরিপূর্ণ এক কুপ আছে; যদি আমাকে আজা কর, ভবে আমি স্থানে যাইয়া কোন রূপে ভাহাদিগকে ভূলাইয়া ভোমার নিকটে আনি। ইহা শ্রনিয়া সর্প ভূফী হইয়া সাপুরকে বিদায় দিল। পরে সাপুর সেই কুপ্হইতে বাহিরে আসিবামাত্র পলাইয়া এক বড় পৃক্করিণীতে লুকাইয়া রহিল। কএক দিবসাববি সাপুরের না আসাতে সর্প কুপ্হইতে বাহির হইয়া আপন স্থানে গমন করিল।

IX .- Tale of the Black Rabbit and Tiger.

এক শিয়াগোদ এক ব্যাঘের স্থান লইয়াছিল তাহার কথা।

এক গহনে এক ব্যাঘ্ আরু তাহার সভাসদ এক বানর ছিল : পরে এক দিবস ব)াযুভ্মণ করিতে গেলে এক শিয়াগোস সেই স্থান ভাল দেখিয়া তাহা অধিকার কবিয়া লইলে দেই বানব তাহাকে কহিল নে ও শিয়া-গোদ, এ স্থান ত্যাঘেত ; ভোমার এমন কি ক্ষমতা যে ত্মি দিনা আজায় ব্যাঘের স্থানে বাস করিবা? শিয়াগোস উত্তর করিল যে এই খান আ-মার পৈত্রিক, অভএব আমি লউলাম; ভুট কি জানিস যে আমাকে এমত विनित्र ? वानव हें इनिया निवस्त इहेल महें भियालाम्बद्धी भिया-গোসকে কহিল যে আমাদের এ স্থানে থাকা কোন প্রকারেই পরামর্শ নয়, কেননা আমরা কুদু জন্ত হটয়া তাাঘের দহিত আপনাদিগকে সমান ক্রিতেছি এ কেবল ন্ট চইবার কারণ। ইহা খনিয়া শিয়াগোস জ্রীকে কহিল যে প্রিয়ে, তুমি উদ্বিগ্ন হইও না; যে কালে ব্যাসু আদিবে, সেই কালে আমি কোন ছলেতে তাহাকে এ স্থানহটতে দূর করিব। পরে কিছ কালানস্তরে দেই বানর ব্যাপ্যের আগমনের সংবাদ পাইয়া অগ্রে গিয়া শিয়াগোদের সহিত যেমত২ কথোপকথনের ভারা কলহ হইয়াছিল, তাহার বিস্তারিত ব্যাঘ্কে জাত করাইল। ব্যাঘু এহা খনিয়া কহিল, সে শিয়াগোসের সাধ্য নয় যে আমার হান লয়; অতএব বৃক্তি সে আমা-হটতে কোন বলবান জন্ত হটবেক। বান্ত্রলিল, সে ভোমাইটতে কোন

মতে বড় নয়। ব্যাঘু পুনর্কার উত্তর করিল যে এ কি কথা ? আমাহইতে বহু জন্ত বলবান এবং বড় আছে। ইহা বলিয়া ব্যাঘু ভীত হইয়া আপন স্থানের নিকট গমন করিয়া গোপনে রহিল। শিয়াগোদ ব্যায়ের আগম-নের পুর্বের আপন ব্রীকে কহিল, আমি অনুমান করিঙেছি, বানর ব্যাঘুকে আনিতে গিয়াছে; কি জানি কথন্ আইদে। অতএব এক্লণে এই প্রামর্শ, যখন ব্যাঘু নিকট পঁছছিতে, তখন ভূমি বৎদদিগকে ক্রন্দন করাইও; ভাছা-তে আমি ভোমাকে জিজাসা করিব, যে কেন বংসেরা রোদন করিছেছে? সেই সময় তুমি কহিও, ঘরে যে মাৎস আছে, তাহা ভোজন না করিয়া ব্যাঘের টাট্কা মাৎস ভোজন করিতে চাহিয়া রোদন করিতেছে। ভাহার পর শিয়াগোদের খ্রী ব্যাঘুকে বাটীর নিকট আসিতে দেখিয়া বৎসদিপকে রোদন করাইতে লাগিল; তাহা শুনিয়া শিয়াগোস আপন স্ত্রীকে জিজা-मिल, त< रात्रा कि साता क्रमान कतिएउए ? श्री कहिल एव त< रात्रा था है एड না পাইয়া রোদন করিভেছে। শিয়াগোস কহিল, কেন? কালিকে বিশ্বর ব্যাঘের মাৎস আনিয়া ভোমাকে দিয়াছিলাম, তাহা কিছু নাট ? স্ত্রী উত্তর করিল যে বাদি মাৎস ভক্ষণ না করিয়া টাট্কা মাৎস থাইতে চাহে। তথম শিয়াগোস বৎসদিগকে সাস্ত্রনা করিয়া কহিতে লাগিল মে তোমরা রোদন করিও না, কিঞিৎ অপেক্ষা কর, আমি শুনিয়াছি যে এখানতার ব্যাঘু অদ্য পঁহুছিবে, অতএব কিছু ভাবনা নাই, ঐ ব্যাঘুকে নম্ট করিয়া টাট্কা মাৎস ভোজন করাইব। পরে ব্যাঘু শিয়ালোদের এই কথা শুনিয়া ভাছাকে চিনিতে না পারিয়া দুরে পলাইয়া বানরকে কহিল যে আমি পূর্বের শুনিবামাতেই বলিয়াছিলাম, সে শিয়াগোস নয়, ভাহার এমত যোগ্যভা কি? আর কোন শক্তিমান পশু হইবেক। বানর প্রভাতর করিল ध जाश्रीत मन्ना कृतिरवन ना, ও শिशास्त्रामह वर्षे, रहाभारक छन्न प्रशीह-ভেছে। এই কথায় বাাঘু ফের শিয়াগোদের বাদার দমীপে গেল। ভাছা দেখিয়া শিয়াগোসের ব্রী পুনর্কার বংদদিগকে রোদন করাইতে লাগিল। শিয়ালোস কহিল যে ও স্ত্রী, বৎসদিগকে চুপ করাও, অদ্য ব্যাঘের মাৎস অবশ্য পাইব,কেননা বানর আমার অতি প্রিয়ত্তম, অতএব আমার নিকট দিবি করিয়া কবুল করিয়াছে যে কোন প্রকারে ব্যাঘুকে ভূলাইয়া আমার নিকটে আনিবেক; অতএব ভূমি বংসদিগকে চুপ করাও, নাবা ব্যাঘু আমাদের কথার শব্দ শুনিয়া এখানে আদিবে না। ব্যাঘু এই সকল বাক্য শুনিয়া ক্রুছ হইয়া বানরকে ধরিয়া থানং করিয়া পলায়ন করিল, পুনর্বার আর আইল না।

X .- Tale of the Weaver.

জরির নামে এক জন জাঁতি ছিল, দে আপনার কপাল সহকারি করে নাই, তাহার কথা।

এক নগরে জরির নামে এক জন তন্ত্রবায় ছিল, সে সর্বাদা পট্টবন্ত্র বুনিত, এক দণ্ডও অবকাশ ছিল না, তথাচ তাহার কিছু লভ্য হইভ না। এক জন মন্দবস্তাবুনক জরিবের বন্ধুছিল। পরে এক দিবস জরি**র সেট** বন্ধুর স্বর্ণাদি পরিপূর্ণ অট্টালিকাময় বাটীতে গাইয়া মনে ২ বিবেচনা করিল যে আমি রাজাধিরাজের উপযুক্ত বস্ত্র বুনি, তথাচ আমার কটি তে লবণ হয় না; এই ব্যক্তি এমন মৃদ্ধ বস্ত্র বৃনিয়া এত অর্থ কোথাইইতে পাইল / ইহা বিবেচনা করিছে ২ আপন বাটীতে আদিয়া ব্লীকে কহিল যে এই নগরমধ্যে আমার তৃল্য বন্ত্র বুনিতে কেহ পারে না, কিন্তু সকলে আ-মার ব্যবসাকে অতি ভুচ্ছ জান করে; অতএব উচিত হয় যে আমি অন্য সহরে যাই, সে খানে আমার বিস্তর সন্মান এবং মর্যাদা হইবেক। পরে জারিরের স্ত্রী উত্তর করিল, যাহা তোমার অদৃক্টে আছে, যে খানে যাইবা তাহাট হইবে, এক দিবসও কপালের অধিক কিছুই তুমি পাইবা না; অতএব কেন বিদেশ ঘাইয়া কর্মাভোগ করিবা? জরির ইহা না শুনিয়া গমন করিয়া এক দহরে পঁত্ছিয়া কিছু কাল দেই স্থানে থাকিয়া ব্যবদার ছারা বিস্তর মৃদা পাইল; পরে আপন বাটীতে গমন করিতে ২ পথ-মধ্যে রাত্রি হইলে এক স্থানে থাকিয়া অর্দ্ধরাত্রি পর্যাত্ত জাগিয়া রহিল। পরে জরিবের নিদা হইলে এক চোর তাহার সকল টাকা চুরি করিয়া পলাইতেই জরির গাতোত্থান করিয়া চোরের পশ্চাৎ দৌড়িয়া গেল; কিন্ত ধরিতে না পারিয়া অত্যন্ত উদ্বিগ্ন হইয়া পুনর্বার দেই দেশে ঘাইয়া কিছু কাল ব্যবসা করিয়া অনেক মৃদ্যু একত করিয়া পুনর্বার বাটী প্রস্থান করিল। যে স্থানে রাত্রি হয়, অতি সারধানে সেই স্থানে থাকে, তথাচ তাহার মৃদা চোরে লয়। ইহাতেই অভাও উদিগ্ন হইয়া রিক হয়ের বাটী পঁহুছিয়া এই সব কথা আপন দ্রীকে কহিল। দ্রী ইহা খনিয়া উত্তর করিল যে প্রথমেতেই আমি হোমাকে বলিয়াছিলাম যে যাহা কপালে আছে, কোন স্থানে গেলে তাহার অধিক হইবে না: কিন্ত তুমি ইহা না শুনিয়া বিদেশ গিয়াছিলা। কহ, কি লভ্য করিলা? এই কথায় জারির বড় লেজিজেত হটল।

XI .- Tale of the Four Friends.

চারি জন ধনবান নির্ঘন হইয়াছিল তাহার কথা।

বলক নামে এক সহরে চারি জন বন্ধনবান ছিল, ভাহাদের অভান্ত প্রীতি ছিল। কতক কাল পরে সেই চারি জন দৃঃখী হইয়া বহুশাস্ত্রজ এক পৃতিতের নিকটে যাইয়া আপুনাদের দশার বিস্তারিত কহিলেন। সেই পণ্ডিত তাহাদিগকে অনগৃহ করিয়া দেই চারি জনকে চারি মণি দিয়া কহিলেন যে এই চারি মণি ভোমরা চাবি জন আপন > মন্তকে বাথিয়া প্রস্থান কর। কিন্তু যাহার মন্তকহউতে মণি যে স্থানে পড়িবেক, দেই ভূমি খনন করিলে যাহা বাহির হইবে, সে ব্যক্তি ভাহাই লইবে। পণ্ডিত এই রূপে সকলকে বিদায় করিলে তাহারা পণ্ডিতের আজানুসারে কিছু দূরে গমন করিতে এক জনের মস্তকের মণি খুলিয়া স্থৃমিতে পড়িলে ঐ বাকি দেই স্থান খনন করিয়া তামু দেখিয়া আর তিন জনকে কহিল যে আমার প্রাক্তনে তাম্ভিল, তাহা বাহির হইল, অতএব আমি এ তামুকে স্বৰ্হইতে উত্তম জানিয়া লইলাম; যদি তোমরা চাহ, তবে এই স্থানে থাক। তাহারা জিন ব্যক্তি মীকৃত না হইয়াকিছুপথ ঘাইতে দিঙীয় জনের মাথার মণি মৃতিকায় পতন হটলে দে তাকি দেই স্থান খুদিয়া রূপার আকর দে-থিয়া অন্য দৃই জনকে বলিল যে আমার কপালহইতে রূপা বাহির रहेशाल्य, अञ्चव लामवां अवह सात्न था किया लंख; धवर जारावा मुहे পুরুষ সম্মত না হইয়া সেই স্থানহইতে কিঞিং দুরে গমন করিতেই ভূতীয় ব্যক্তির মন্তকের মণি মাটিতে পড়িল। পরে সেই জন ঐ স্থান খুদিয়া স্বর্ণের আকর দেখিয়া চতুর্থ জনকে কহিল, সুর্ণইটতে অধিক আর কোন বন্ধ নাই; অতএব আইস, দুই জনে এই স্থানে থাকি। চতুর্থ ব্যক্তি তাহা না শুনিয়া মনে করিল যে আরও অণ্রে গেলে রক্তন পাইব; ইহা ভাবিয়া এক ক্রোশ পথ গমন করিতেই সেই মণি ভুমিতে পড়িলে সে জন দেই স্থান থানন কবিয়া লোহার আকর দেখিয়া লজ্জিত হইয়া কহিল যে হায়! কেন মুণ্ ত্যাপ করিলাম! যদি বন্ধুর কথা শুনিতাম, তবে ভাল হইত। ইহা বলিয়া দেই স্থানে আদিয়া বস্কুর এবং স্বর্ণের আন্ধে-ষণ করিল। তাহা দেখিতে না পাইয়া পুনর্বার দে লোহা লইতে আদি-য়া বিস্তুর অন্বেষণ করিলে তাহাও পাইল না। অনন্তর সেই দৃ:খী অনু-পায় দেখিয়া দেই পণিতের নিকট গমন করিলে তাছাকেও দে স্থানে না দেখিয়া অতি খেদিত হইল।

XII .- Tale of the Jackal made king.

এক শৃগাল রাজা হইয়া নষ্ট হইয়াছিল তাহার কথা।

এক শৃগাল সর্বদা এক নগরে লোকদের বাটী ঘাইয়া সকল বন্ধতেই गुर्श रिछ। পরে এক রাত্রিতে আপন সময়ানুসারে এক নিলকারের বাটা গিয়া নিলের জালাতে মন্ত্রক প্রবেশ করাইলে দেই জালামধ্যে পড়িয়া শরীর নীলবর্ণ হটয়া বহুঞামে জালাহটতে বাহির হটয়া বনে গেল। আর্থ জন্ত্রা তাহার চমৎকার মূর্তি দেখিয়া জ্ঞান করিল যে এ কোন বৃহৎ এন্ত হ^টবে। পরে সকল পশ্বরা তাহাকে আপনাদের প্রধান করিয়া সেই শুগালের আজাকারী হইয়া রহিল; কিন্তু তাহার শকেতেও তাহাকে কেহ চিনিতে পারিল না। পরে সেই শুগাল অন্য ফুদু পশাদিগকে আপন নিকটে দরবারের সময় দাঁড় করাইত; শিবারা প্রথম দারিতে, এবং থেঁকশিয়ালিরা বিচীয় দারিতে, ও ছরিণেরা তৃতীয় मातिए, वानरत्ता हर्श मातिए, लावाघाता पक्षम मातिए, वार्युता ষষ্ঠ मারিতে, হত্তিরা সপ্তম সারিতে, সকলে এই প্রকার দাঁড়াইয়া থাকিত। যখন শিবারা রব করিত তখন সেই সঙ্গে ঐ শূনাল শব্দ করিত, একার্ণ তাহার রব কেহ অনুমান করিতে পারিত না। কতক দিবদ পরে দেই শৃগাল অন্য শিবাদের সহিত কলছ করিয়া তাহাদিগকে দুর করিয়া ব্যাঘ্ আর হস্তিকে আপন নিকটে স্থান দিল; রাত্রি হইলে সেই শিবারা শক করিত, সেই শক শুনিয়া স্রদার শুগাল তাহাদিগকে চুপ ক্রাইতে না পারিয়া আপনিও রব করিতে লাগিল, তখন নিকটম্ব জন্তরা দেই রব **তানি**য়া লজ্জিত হউয়া সেই শুগালকে ধরিয়া বধ করিল।

XIII .- Tale of the low man employed by a King.

এক রাজা এক শুণ্ডিককে দেনাপতিকমের্যতে চাকর রাথিয়াছিলেন, শেষে তাহাহইতে যুদ্ধকার্য্য নির্ফাহ হইল না, তাহার কথা।

এক দিবস এক শৌণিক মনিরাপানেতে মত হইয়া কুজা আর বোভ-লের উপর পড়িয়া তাহার গাতে স্থানে ২ ক্ষত হইয়াছিল; কিছু দিবদের পর সে সকল ক্ষত শুষ্ক হইয়া ভাল হইল, কিন্তু সকল গাতে তলোয়া-রের চোটের ন্যায় চিক্ষ থাকিল। অকস্মাৎ সেই শৌণিতকের দেশেতে বড় কুর্তিক্ষ হইল, একারণ শৌণিক চাকরির জন্যে বিদেশ গমন করিয়া এক বিগ্র মধ্যে পঁত্ছিয়া সেই নগরের রাজার সহিত সাক্ষাৎ করিল। রাজা ভাঁজার গাতেতে তলোয়ারের চিক্ষ দেখিয়া অনুমান করিলেন যে এ ব্যক্তি বড় বীর হইবে, কেননা অব্রাদির চিক্ত সকল গাত্রে আছে। রাজা ইছাই বিবেচনা করিয়া সেই শৌণিককে চাকর রাখিয়া মর্য্যাদাবান করি-লেন। কএক দিবসের পর রাজার অকস্মাৎ এক রিপু উপস্থিত হইল। তথন রাজা সেই শৌণিককে সকল দৈনোর সেনাপতি কার্য্যেতে প্রবর্ত্ত করিয়া আপন শলুর দহিত যুদ্ধাথে পাঠাইতে চাহিলেন।শৌণিক সমরের কথা শুনিয়া অভিভীত হইয়া রাজার অগ্রে নিবেদন করিল, মহারাজ, আমি জাতিতে শৌণিক, আমাহইতে কথন যুদ্ধ কর্মা নিক্সাল্ল হইবে না, এবং আমি যুদ্ধ জানিও না। রাজা ইহা শুনিয়া হাস্য করিয়া অন্তঃকরণে বিবেচনা করিলেন যে আমি কুক্ত্রকে সিংহের কর্মোতে নিযুক্ত করিয়াছিলাম, এ আমার বড় লজ্জার বিষয়। ইহা ভাবিয়া আর এক জনউপযুক্ত মনুষ্যকে সেনাপতি করিয়া যুদ্ধের জন্যে প্রেরণ করিলেন

XIV .- Tale of the compassionate Tiger.

এক ব্যাঘু দয়া করিয়া এক শ্নালবৎদকে আপন বৎদদের দহিত প্রতিপালন করিয়াছিল তাহার কথা।

अक वान अक वार्ष आत अक वार्षी अहे मूहे वाकि मुहे वश्रमत সহিত থাকিত। এক দিবদ ব্যাঘু দেই বনের পার্ম্পে মূগয়ার্থে বহু ভূমণ করিয়া কিছুনা পাইয়া বহু শুমযুক্ত হইয়া পুনর্ধার দে স্থানে আর্ফি-ভেছিল, ইতিমধ্যে এক দিবদের এক শৃগালবংদ দেই পথের মধ্যে পড়িয়াছিল; তাহাকে দেখিয়া ব্যাঘু লইয়া আপন স্ত্রীর নিকটে উপস্থিত হইয়া কহিল, অদ্য এই বংদ আমি পাইয়াছি, কিন্তু ইহাকে ভক্ষণ করিতে দয়া হয়, বরঞ্জ দুই এক দিবস অনাহারে থাকিব, তথাচ এমন বৎসকে আহার করিতে পারিব না; কিন্তু তুমি উপবাদী থাকিতে পারিবা না, ইহাকে যদি ভক্ষণ কর, ভবে আমার গোচরে এই বৎসকে ভোজন করিও না। ব্যাঘ্রী ইহা শুনিয়া কহিল, তুমি পুরুষ, ভোমাদের অন্তঃকরণ বড় কঠিন, তাহাতে ভোমার দয়া জন্মিল; ব্রীজাতির অন্তঃকরণ বড় কোমল; আমিও ক্ত্রী; কি প্রকারে এই বংসকে আহার করিব? যদি তুমি আজ্ঞা কর, তবে এই বংসকে পালন করি, যে প্রকার উহার মাতা পালন করিত। ব্যায়ু কহিল, ভাল। পরে ব্যাঘুী আপন বংদদের সহিত ভাহাকে প্রতিপালন করিতে লাগিল। দুই তিন মাদ পরে ব্যাঘুের দুই বৎদ এবং শৃগালবংস এই তিন বংস বড় হইল; কিন্তু ব্যাঘুবংসেরা ঐ শৃগাল-বংসকে আপনাদের জ্যেষ্ঠ ভূাতা জান করিয়া একত খেলা করিত। এক দিবস সেই তিন বৎস মূগয়া করিতে গমন করিয়া এক ছব্তিকে দেখিয়া

ব্যাদ্রের দুই বংস হস্কির দিলে দৌড়াইল। শৃগাল ক্ষুপু পশু, হস্কিকে দেখিয়া পলায়ন করিয়া এক ভত্তর গল্পরে গোপন হইল। যখন ব্যাদ্র বংসেরা দেখিল জ্যেষ্ঠ ভাঙা পলাইয়াছেন, ভখন তাহারা বাটীর দিলে গমন করিয়া এক দও পরে বাটী পঁত্তিয়া আপন মাতাকে আপনাদের সমস্ক কথা গোচর করিল। বাাদ্র শিনিয়া কহিল যে তোমরা ব্যাদ্রবংস, দে শৃগালপুল, কি প্রকারে তোমাদের ন্যায় দাহস করিয়া ছুয়ির সহিত ফুয় করিবে পর পুলেরা, শুন; যে জন বড় ভাহার বড় দাহস, দেই উত্তম কর্মা করিতে চাহে; যে কুদু ভাহার অপ্প দাহস, দে কদাচিং বড় কার্য্য করিতে পারে না এবং বৃহৎ ব্যাপার করিতেও উদ্যত হয় না।

XV.—Tale of the Serpent preserved.

এক প্রধান লোকের পুত্র তিনি আপন জামার আস্তিনের মধ্যে দর্পকে লুকাইয়া রাথিয়াছিলেন তাহার কথা।

এক প্রধান লোকের পুত্র এক দিবস মৃগয়া করিতে গিয়াছিলেন, অক্সাৎ এক দর্প ঘাইয়া দেই বড় মনুষ্যের দ্বানের অন্যে উপস্থিত ছইয়া কহিল, ও বড়মনুষ্যের পুত্র, আমার এক শতু্যফী হয়ে, লইয়া আমাকে নেট করিতে আমার পশ্চাং ২ আদিতেছে, অতএব ভূমি আশ্রয় দিয়া আমাকে রক্ষা কর। ইহা শুনিয়া আমিরপুত্র দেই নাগকে অনুকৃ**ল** হইয়া আপন জামার আন্তিনেতে খান দিলেন, দর্পও দেই আন্তিন মধ্যে নোপন হইল। এক দও পরে এক ব্যক্তি লাঠি লইয়া সেইখানে পঁছছিয়া সেই উত্তম লোকের প্রতে জিজাসিল, এক কৃষ্ণবর্ণ সর্প আমার অব্যে পলাইয়া আসিয়াছে, তুমি তাহাকে দেখিয়াছ কি না? আমির-नमन कहिएलन, आप्रि मर्भ मिथ नाहै। পরে দেই ব্যক্তি দেই স্থানের আমাশপাশ দৃষ্টি করিয়া সর্পের অবেষণ নাপাইয়া বাজড়িয়া বাটী গেল। उरभात जाभित्रभूख कहिएलन, उमर्भ, छाभात रैनती वाषी भमन कतियाए है, তুমি এখন বাহির হও। ভুজঙ্গ ইহা খনিয়া কহিল, ও আমিরপুত্র, প্রথম ভোমাকে দম্ভাঘাতে নফ করিব, তবে আমি বাহির হটয়া মাইব। ইহা শুনিয়া আমিরপুত্র কহিলেন,ও দর্প, আমি ভোমার প্রাণ রক্ষা করিয়াছি, তুমি আমাকে নস্ট করিবা, এ কোন মতে ভাল নহে। দর্প উত্তর করিল, তুমি বড় মূর্থ ও নির্ফোধ; ইহা জান না, আমি দর্প খল জাতি? নখন তুমি জ্মামাকে হান দিয়াছ,তখন আপনার মন করিয়াছ। জানিরা কহিয়াছেন, ষাছাদের উপকারবোধ মাই, তাহাদের উপকার করা অতি অকর্ত্তর এব৲ অতি অজ্ঞানের কর্মা। আমিরপুত ইহাই এবণ করিয়ামনে ভয়

পাইয়া ভাবিতে লাগিলেন, এখন কি প্রকারে ইহার হস্কংইতের কলা পাই? পরে আমিরপুদ্র দর্পকে চাহুরির দারা কহিলেন, ও দর্প, অন, আর এক দর্প আদিতেছে, ভূমি বাহির হইয়া আমার দক্ষে আইদ, তাহাকে এই দব কথা দুই জনে জাত করাই; দে হোমার জাতি, কিন্তু দে যদি বলে যে ইহাকে দংশন করা উচিত হয়, তবে ভোমার স্বেচ্ছা ঘাহা হয় তংক্ষণাং ভূমি ভাহাই করিও। দর্প ইহাই শুনিয়া জামার আদ্ধিনহইতে মুখ বাহির করিয়া আন্য ভূজককে দেখিতে লাগিল। ইতাবদরে আদিরের পুদ্র এক বড় প্রস্তুর হত্তে লইয়া এ দুন্ট সর্পের মন্তুকে দেই প্রস্তুরাঘাত করিলেন; দেই প্রস্তুরাঘাতে দর্প প্রাণত্যাণ করিল এবং আমিরনন্দন রক্ষা পাইলেন।

XVI .- Tale of the Soldier and Goldsmith.

এক দিপাই আর এক স্বর্ণকার অর্থের কারণ নষ্ট হইয়াছিল তাহার কথা।

এক मिপांडे এক ধনবান धर्गकारत्त्र महिछ वक्ष्ण कतिया मर्स्वरण-ভাবে তাঁহার মথেক ভর্মা রাখিত এবং মথেক প্রতায় করিত, আপন কোন বিষয়ের কথা ভাহাকে গোপন করিত না। এক দিবদ দিপাই নগর ভ্রমণ করিতে যাইতেছিল, অক্সাৎ পথমধ্যে দেখিল যে একটা থলি স্তিয়া রহিয়াছে। দিপাই দেই থলি হস্তেকরিয়াভাহার মুধ-খুলিয়া দেখিল যে অনেক ৰণ্মুদা আছে।পরে তাহাই দেখিয়া অতিহাট হইয়া থলিহইতে দার্ক দিশত মর্ণমূদ্য গণনা করিয়া পুনর্ফার দেই থলির মধ্যে রাখিয়া থলি বন্ধ করিল। পরে দেই থলি সৃদ্ধা আপেনার বন্ধ ষর্ণকারের নিকট গমন করিয়া কহিল, ও বন্ধু, এখন আমার প্রাক্তন ভাল হইয়াছে, বিনাশ্রমেতে এত স্বর্ণমূদা পথমধ্যে পাড়য়া পাইলাম; কিড আমার স্থানাভাব, অতএব তোমার গৃহমধ্যে রাথ। এই কথা বলিয়া সিপাই মুণ্যুদা সৃদ্ধা সেই থলি মুণ্কারের নিকট গচ্ছিত করিল। কএক দিবদের পর সিপাই স্বর্ণকারের স্থানে দেই স্বর্ণমৃদ্য চাহিল। স্বর্ণকার ম্বৰ্মুদ্ৰ না দিয়া তাহাকে কহিল, ও সিপাই, এতকাল ভোমাকে বন্ধু জান করিয়াছিলাম, কিন্তু এখন বৃথিলাম যে তৃমি আমার শত্রু, কেননা আমাকে ধনবান দেখিয়াছ, এই হেতু মিথ্যা স্বৰ্ণমূদার দাওয়া আমার উপর করিতেছ; তুমি কোন্ কালে আমাকে ধর্মুদা দিয়াছিলা? এ বড় মদ্ कथा य आमात निक्षे बर्गमुना ठाइ; यनि कान टाकि खान, उत्व मठा কহিবে। সিপাই ইছাই শুনিয়া অনুপায় হইয়া কাজীর নিকট গিয়া সমন্ত

বৃত্তাৰ কহিল। পরে কালী সকল বৃত্তাৰ আত হইয়া সিপাইকে জিলাস। করিলেন, ও সিপাই, ভোমার কেচ সাক্ষী আছে? সিপাই বলিল, আমার যদি সাক্ষী থাকিত, তবে সে কখন মিথ্যাকথা কহিতে পারিত না। পরে কানী মনে বিচার করিলেন, স্বৰ্কার জাতি বড় বিখাস্ঘাতক ও অধার্মিক এবং চোর, এ সিপায়ের স্থাপিত ধন অবশ্য হরণ করিয়া থাকিবে, স্বৰ্ণকাৰের এ ক্রিয়া বড় আম্চর্য্যনহে। কাজী এই বিবেচনাকরিয়া সেই স্বৰ্ণকাৰ আৰু ডাহাৰ স্ত্ৰীকে ডাকিয়া আনিয়া এই বিষয় জিজাদ। করিলেন: ভাছারাও একান্ত মানিল না যে দিপায়ের স্বর্ণমৃদা জ নি। কাজী স্বর্ণকার-কে কহিলেন, ও বর্ণকার, আমি বিলক্ষণ জানিতেছি. তুমি সিপায়ের বর্ণ-মুদু। लाजे बाछ, रकन करूल कर ना । खन, यमि जूमि मिलारबर सर्वम् माना দেও, ভবে কল্য প্রাতে ভোমার মন্ত্রক ছেদন করিব। এই কথা কহিয়া কাজী আপন বাটীর মধ্যে গিয়া এক দিন্দুকের মধ্যে দৃই জন মনুষ্য বসা-ইয়া সিন্দুকের মুখ বন্ধ করিয়া এক কুঠরির মধ্যে রাখিয়া বাহিরে আন দিয়া পুনর্কার দেই মর্ণকারকে কহিলেন, ও মর্ণকার, যদি এখন ও দিপা-(य़द मृपू) (नर, उदव छाल रय़; किस जाना यिन ना (नर, उदव दिशासन मुद्दे जनरक कला नक्षे कतित। देदांदे तलिया स्मृद्ध सर्गकात ও डाहात खी এই দুই জনকে যে গৃহে দিন্ক রাখিয়াছিলেন, দেই গছে তাহাদেব আটক্ করিতে আজা দিলেন; দূতেরাও তাহাদের দুই জনকে দেই গুছে चारिक कतिल। পরে অর্ধ্রাতের সময় স্বর্ণকারের ক্রী মর্ণকারকে কहिল. ও নাথ, যদি তৃমি দিপায়ের স্বর্ণাুদা লইয়া থাক, তবে তাহা আয়-মাকে বল, এবং কোথায় রাখিয়াছ ভাহাও কহ। স্বৰ্ণকার কহিল, আমি ৰৰ্ণমৃদা লইয়াছি সতা বটে, এবং ফলনা স্থানে ভূমির মধ্যে রাখিয়া-ছি। এই কথোপকথনের পর যখন রাত্রি প্রভাতে দূর্য্যোদয় হটল, তখন কাজী বিচার করিতে বদিয়া স্বর্ণকার আর স্বর্ণকারের স্থাকে আ-পন সাক্ষাতেডাকাইলেন। তাহার পর সিন্দুক আনাইয়া ভাহাহইতে সেই দৃই জনকে বাহির করিয়া জিজাসিলেন, যে মর্ণকার রাত্তিতে আ-পন পতনীকে কি কহিয়াছিল ? তাহা কহ। তার পর দেই দুই জন যে কিছু কথোপকথন শুনিয়াছিল, সে দকল কাজীকে কহিল। কাজী আপন লোক বর্ণকারের বাটীতে পাঠাইয়া যে স্থানে দেই থলিসূদ্ধা বর্ণমূদ্য পোঁতা ছিল, দেই স্থানহইতে থলিসুদ্ধা স্থামুণু আনাইয়া দিপাইকে मिश्रा वर्गकात्रक मृत्लाट वमारेशा नक्षे कतित्लन।

XVII .- Tale of the Elephant.

এক মণ্ডুক এক ভুমর এক পক্ষী ইহার। এক হস্তিকে নক্ট করিয়াছিল তাহার কথা।

এক নগরের মধ্যে এক কৃক্ষ, তাহার শাথা ছত্রের নাায়,ভাহার উপর এক ক্ষুদুপক্ষী অও রাখিয়াছিল। তার পর এক দিবদ এক হস্কী দে স্থানে গমন করিয়া দেট বৃক্ষেতে আপন গাত ঘর্ষণ করিতেং শ্রীরের চেনেতে বৃক্ষ লড়িয়া দেই সকল অও ভূমে পড়িয়া নফী হইল। পরে দেই কুদু পক্ষী মনোদুংৰোতে দুঃখিত হইয়া সেই তক্তর শাখাতে শরীর আছা-ড়িয়া সর্বাদা রোদন করিত। কিন্তু এক দিবস সেই ফুদুপক্ষী মনে বিবে-हमा कतिल, आग्नि भमात जूला रुखित कि कतित? পরে দেই পক্ষी रुखित्क অভিশাপ দিয়া মনে বিবেচনা করিল যে এই হস্কী আমার বড় শতু; কোন ছল করিয়া ইহাকে দূর করিব; কিন্ত ইহাকে দূর করা আমার সাধ্য নতে; আমার এক দীর্ঘচঞু পক্ষী বন্ধু আছে, ভাহার নিকট গমন করি। ইহাই শ্বির করিয়া ভাহার সমীপে গমন করিয়া আদেয়াপাল্তের সমস্ত বৃত্তান্ত কহিয়া কহিল, ও বন্ধ, এক হন্ধী আমার দুঃখনায়ক হইয়াছে, আছেএব আমার এই দুঃসময় উপথিত; হুমি আমার বন্ধু; যদি হুমি কোন উপায় না কর, তবে ভোমার দহিত আমার কি প্রীতি / বন্ধুতা করা কিছ পরকালের কারণ নহে, কিন্তু বন্ধু তাহারে বলি যে দুঃসময়ে উপকার করে। ইহাই শুনিয়া দীঘচঞ্ পক্ষী উত্তর করিল, এ বড় বিষম কর্মা; আমি একাকী হস্তিকে দূর করিতে কথন পারি না; আমার এক বন্ধু ভ্যার আছেন, তিনি অতি দুবোধ এবং বিবেচক; চল আমরা ওাঁহার महिड পরামর্শ করি। ইহা কহিয়া মেই দুই পক্ষী ভূমরের নিকট যাইয়া এই স্তাত জাত করাইল। ভুমর ইহা শ্রনিয়া ভীত হইয়া কহিল, এ কর্ম আমার সাধ্য নছে; চল, আমার এক বন্ধু মণ্ডুক আছেন, আমরা সকলে ভাছার সমীপে যাইয়। পরামর্শ করিয়া যাহা দ্বির হয় ভাছাই করিব। পরে তিন প্রাণী মণুকের নিকট পঁছছিয়া তাহাকে ঐ সকল কথা জানা-ইল। ডিম্ম ভালিয়াছে গুনিয়া মণুক বিস্তর খেদ করিয়া কহিল, তুমি কিছু ভাবনা করিও না, নিরুদ্রেগে থাক; আনেকে পরামর্শ করিয়া চেন্টা করিলে অতি উচ্চ পর্বাহকেও নীচ করিতে পারে। তাহার পর মণুক ছদ্ভিকে দে স্থান ত্যাগ করাইবার কারণ মনোমধ্যে বিবেচনা স্থির করিয়া ভ্মরকে কহিল যে তুমি হন্তির নিকট গমন করিয়া ভাহার কর্ণে মধুর শব্দ কর যেন তাহা শুনিয়া দে মত হয়; তদনস্তর এই দীর্ঘচঞ্পক্ষী আপন চোঁচের দারা তাহার দুই লোচন উৎপাটন করিলে হস্তী পৃথিবীতে অস্ক হইয়া ভুমণ করিবে; এই প্রকার কিছু কাল ভুমণ করিলে হস্কী

বড় কুধিত ও ত্যিত ছইবে; যখন এই প্রকার ছইবে, তখন তাহার অগ্রে আমি শব্দ করিতেই ঘাইব; হঞ্জী আমার শব্দ শুনিয়া মনে বিবেচনা করিবে যে মণ্ডুক জঙ্গ বিনা থাকে না, ইহা ভাবিয়া আমার পশ্চাৎ ই যাইবে; আমি তাহাকে এমত হানে ক্লেপণ করিব, যে সে দানহইতে কখন উঠিতে পারিবে না এবং তাহার শব্দ কেহ শুনিতে পাইবে না, সে অনাহারে থাকিয়া মরিবে। এই প্রামশ দ্রি করিয়া তিন ব্যক্তি ছঞ্জিকে ছলের হারা নাই করিয়াছিল।

XVIII .- Tale of the Ass and Deer.

এক নর্দভি আর এক মৃন এই দুই প্রাণী বন্ধনযুক্ত ইইয়াছিল তাহার কথা।

এক গদ্ভ আর এক মূগেতে অত্যন্ত প্রণয় ছিল, একারণ সর্বাদা একত্র ভ্ৰমণ করিত ও এক স্থানে থাকিত। কতক দিবসের পর বসস্থকাল উপস্থিত ছইলে এক রাত্রিতে খর ও হরিণ এই দুই পশতে আহারার্থে এক উদ্যানের মধ্যে গমন করিয়া গর্দত আজ্লাদিত হইয়া হবিণকে কহিল. **श्रद ह**र्तिन, এ वर्ड मुम्मस्स, रक्तना शृष्ट मक्न विक्रिण हरें साह्य, अवर मन र ममीत्व विदिश्लेष्ट, लाहाट केखतीत मीत्छ आमिया मिक् मकन আমোদিত করিতেছে, এখন গান করাতে মনের বড় তৃষ্টি হয়, এই ছেড আমি গীত গাইতে চাহি। হরিণ ইহা শুনিয়া হাস্য করিয়া গর্মভকে কছিল, ও ছে গর্মত, তমি গীতের কি জান? তোমার গান অনিয়া কেবল রক্তক ভাল বলিবে, আরু কোন ব্যক্তিরা ডোমার গান খনিয়া হাস্য করিবে: অভএব ভোমার গীতেতে কোন প্রয়োজন নাই; ভূমি আমি চোরের নাায় এই উদ্যানে আদিয়াছি, যদি তুমি আপন ৪৭ প্রকাশ কর, তবে উन्।ान्दक्राकृतां साधुर रहेशा छोपाटक वावर आमाटक कवन कृतिहत। কোণে এক বোডল সূরা পাইয়®বড় আনন্দিত হ€য়া সেই বোডল मन्द्रि दाशिया भदायम कविल य आहेम, मकल अथय मृताभान कवि, ভাছার পর চুরি করিব; ইহাই দ্বি করিয়া চোরেরা স্রাপানে মত इहेब्रा উक्तिः बद्द नाम कृतिए नानिन, वामेत् कृता हैहा समिया मानुर হইয়া আপন ভ্রাদিগকে লাগাইয়া দেই চোরদিগকে ধরিয়া বন্ধন क्रिल। এই कथ्रा सिनिया गर्मछ क्रिल, ଓ हत्नि, सन, सामि नगरत थाकि. ज्मि त्रान थाक, व्यवक्षत भीव कि तक वादा वृत्ति खाव नह ; ब्यामि शामात् बाद्रम अकास स्नित ना। देशोर दिना शर्मक शीउ आद्रक कदिन। सन्दर् উদ্যানরক্ষকেরা ভাগুৎ হইয়া তাহাদের দুই পদ্তকে বন্ধন করিল।

LETTERS—FROM THE LIPI MALA OR THE GARLAND OF WRITING.

লিপিমালা।

1.—Letter of one King to another.

রাজা অন্য রাজাকে লেথেন।

পবিত্রপুর প্রগনায় আপনকার পিতামহ বাপী খননেতে দৈবক্রমে কে ওঞ্জি ধন প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, তথন রাজাধিরাজ তার প্রতি মনোযোগ করিলেন না। সেই ধনোপলক্ষো তাহার পুত্র কএক জন সেনা
সংগুহ করিয়া শির্মী প্রগনার রাজা নিঃস্থান বিয়োগ হইলে তাহার কিঞিৎ ভূমি অন্যায় ক্রিয়া করিয়া অধিকার করিয়াছিলেন।
পিতাহইতে পুত্র ভাগাবদ্ধ ও ক্ষমতাপন্ন ছিলেন হটে, তথাচ এই
মারের অপেক্ষিক, কথন অহঙ্কারে মত হইতেন না, এবং অন্যের
হিংসাহীন ছিলেন। এখন শুনি আপনি দৈবপ্রাক্রান্ধ, লোক দান
শোর্য্য করি বির্যা রাজ্য সম্পদ্দে মহা অহঙ্কুত, এবং দেবীসীমার
চর যাহা চিরকালীবিধি এ মহারাজ্ঞ কুক, শির্মীর সহিত তাহার কোন
অংশাংশী নাই, তথাচ আপনকার ইচ্ছা নিজ প্রাক্রমে তাহা অধিকার করেন, এ কি আফ্রাণ্ট ভালং এও ভাল। আপনকার এমত ২
প্রাক্রম হইল, এ একটা আনন্দের বিষয় বটে; কিন্তু শুন কহি, অরধান
কর; এ কি? তুমি কোন্ মানুষ যে তুমি কটক পাঁচনী কর এ অঞ্লের
উপর? এ ভোষার কি প্রকার ইতর বিবেচনা? কোথা শুনিয়াছ? "শুনি

[•] The Lipi málá was printed in 1802, when Bengáli prose was in its infancy. The extracts from it which follow here, contain numerous disjecti membra poeta, and some of them are very difficult.

আহারে শার্ল?" স্থগিত হও; এ সামান্য বিষয় প্রযুক্ত এখানকার কো-পের বাজ্লাহয় না; "শুগালের গজ্জনে কেশেরী নাহি রোমে।" যদিতৃ চুটুল ভবে ভোমার কি গতিক চুটুরে? কোথায় ঘাইবা? তোমার সহায় বা কে ? এবং বৃক্ষা বা কে করিতে পারে? এখানকার ক্রোধ যদি হয়, তবে "প্রতিইন্দ্র স্থা করিলেও না পাবে রক্ষা," বৈরিদ্যা দেনা ঘোর ষদ্যপি কোপে স্নৈন্তে স্হার করিবে। স্কৃট্রে সাবধান; আপনার পিতৃ পিতামহের দুখ্যাতিতে দুখ্যাতান্তিত হইয়া কোন ক্রমে দিনপাত করিতেছ, ইছাতে বিরুষ কেন হয়? এখানকার সহিত প্রতিযোগিতা করিয়া তুমি कि खित कतिता? निमानारिश दाजा न्लत्य दाय, गाराद जमधा मना, এবং দর্প মান কত বড়, তাহার পরাক্রমের দীমা কি? "যমসম বৈরী হউলে দুফৌ করে ভেন।" যাহার রাজ্য পঞ্রিংশতি দিবদের পথ বিশ্বার, ও দেনার কোলাহল সিদ্ধান্দ্রন প্রায়, এমত মহারাজা নরপরী নগরের আশে আপন শক্তি প্রকাশ করিয়া রণ করিল। বংসবাবধি দে বিরোধ উপশ্বিত ছিল; অসশেষে বৈরিদম্য দেনা আপনাদের প্রাক্রেমে দ্যাল্মান হউলে সহজে বল্লব্রকে স্থহার করিয়া এবং ভাহার প্রতিবাদী যে কেহ আদিয়া হইল সমস্তকে নিবারণ করিল. क्षप्रकात भ्रांनि मुक्तं व्याभिक क्यांक्रेस । अर्थन स्म निमान वाक्षा अ অধিকার ভুক্ত। ইহাতে তোমার এ কি বৃদ্ধি? "শিবা হইয়া কর বাদ সিংহের সহিত।" ভূমি কাঙ্গাল এ প্রসূক্ত ভোমাকে কহি, সাবধানং, এমত২ দুঃসাহস আর কখন করিও না। তুমি দীন, এখানকার সেথায় দরিদু, সহায়হীন ; যদি দেবীসীমার চেরে ভোমার সেনার পমন হইয়া থাকে, তবে দেখানকার প্রজারা মাহাতে এ পর্যান্ত আন্দোলন না করে, এই জ্ঞানো ভাষাদের যে কিছ ক্ষতি হউয়া থাকে, ভাষার বিধণ করি-য়া দিয়া ভাহাদিগকে পরিভোষ করা ভোমার উচিত। তাহা না করিলে রুক্ষা পাওয়া ভার। যাহাহউক, এমত ২ করিয়া দ্রাপ্দের গেওঁ দুদৈনে। একত হইয়। বৈরিদ্মা দেনার সাধনা করিলে বৃক্ষি রক্ষা হইতে পারে। একারণ ক্ষীণ হীন দীন অকিঞ্চন লোকদের স্যামোহেতে আমার অন্তর मना काउत अवर सुरत्त तम, औड अत डेहांडे कत कि धन, ভোমার ভাগ্যোদয়ক্রমে জানের বাজ্লা হ্য, তবেই সে ভোমার রক্ষা, নত্রা নয়। কিন্তু যদি দৃষ্টমতি তোমার প্রকৃতির দথা হটয়। থাকে, তবে আরু হিভোপদেশের আবশাক নাই, দৈনা সাজনা বাহির হট্রা সমাচার লিখিলেই বৈরিদমা প্রদত হউবে। ইহার ঘাহাতে অভি-क्रि, किन्तु अमाने (मर्तामाधाननेटन लाक उंहानेशा लग्न, रागत विक्रम গৌণ করিবা না। তোমার দশা গৌড়াধিপ ও এক্বর দাছের মত হবে। উপায় কি? ইভি।

II.—Reply—Death of Parikhyita. রাজা অন্য রাজাকে।

বটে, আপনি যে প্রকার লিথিয়াছেন দে প্রমাণ। পূর্বাকালে আমার পিতামহ দৈবানুপুতে ধনপ্রাপ্ত হইয়াছিলেন, পরে পিতা মহারাজা দৈব-পরায়ণ, এতদর্থে দেখ ভগবান তাঁহার সন্থান প্রণমাগর রূপে সৃষ্টি করিয়াছেন। আমি দৈবানুগৃহীত এবৎ আমার সামন্তও দৈবশিক্ষিত, ভবে দৈবের সহিত অন্যের ত্লাতা কি? "নচদৈবাৎ পর্থ বলং।'' আপনি কি আপনাকে বাখানিয়া অহস্কার করেন? দৈব গতিক এই, এব তাহার সৃষ্টি এই মত; দেখ মান্ধাতা দগর দিলীপ প্রভৃতি যতং দিক্পতি ছিলেন তাহারা কোথায়? ইদানীত দুর্ঘ্যাধন কুরুপতি একা-দশ অকেটিংণীর কর্তা, ভীমা দুোণ তাহার সহায়, এবং ভলদতাদি অনেকং মহারাজানুগত বনবাদী, পাঞ্পুল পঞ্জাই দপ্ত আক্লোহিণীতে কি মত দৈবক্রমে সমস্তকে সংহার করিয়াছেন আসম্দু অধিকার সৃধি ষ্ঠির নূপবর, দথা তার দেব নারায়ণ, অতএব দৈব বড় সভাহইতে হয় দৃঢ়, ইথে বিধা না কর রাজন্। এখন আপনকার উচিত দেবীসীমার চর यां हा आत्माली च सित्मीत तमत ताल जाहा निशा देनता नुगृशी जिल्लात পূজা করেন, এবং কদাচ ভাবান্তর না করেন, তবে রক্ষা হইতে পারে। যদি আপনকার অনেক দেনা, এখানকার অলপ, তাহাতে কি করে? সহস্যাবধি মৃগমঙলীতে এক সিৎহ প্রচুর। কতগুলা কাকের পাল সেনা গোট করিয়াছেন, তাহার মধ্যে এখানকার দুউ চারি পরাক্রান্ত বীর যথেফী; দামত্ত্র কার্য্য থাকৃক। এ জন দৈবভাজন, দেবদত্ত পরাক্রম, সজ্জমান হইলে কাহার সাধ্য সৃষ্ধী হইবে? তোমার যোত কি? এবং কত বড় সাধ্য? আপনকার কার্য্য কি? যদি আপনকার বান্ধববর্ণ রাজ্ঞগণ একতা হইয়া সজ্জমান হয়েন, দৈব প্রাদুর্ভবে একা আমার সুসাধ্য।

একার প্রতাপ এই শুনহ রাজন।
একা সিংহে কি করিবে ছাগ পশুগণ॥
একা ভীম শত ভাই কুরু পুত্র শাসে।
একেশর পুরন্দর দানব বিনাশে।)
একেলা বামন বলি পাতালে লইল।
এক নরহরি হির্ণ্যাক্ষ বিদারিল।।
একার প্রতাপে ভয় কর মহাশয়।
তাপ্প হেতু সবংশেতে না হও নিক্ষা।।

বিবেচনা করিবা দেবীদীমা শির্দী রাজ্য, সে আপনার মহে, অতএব প্রথন লেচ বিজ্ঞিত হও; নীতি শাস্ত্রোক্ত দুর্নীতি আকাঙ্ক্তিত না হই-বেন। লোভে পাপ, পাপে মৃত্যু, সারোদ্ধার দ্ধানিবেন; দেখ কুরুপতি ধৃত- রাষ্ট্র পরধনে লোভ করিয়। উত্তরকালে ওঁছোর কি গতি ছইল? আপনিও রুদ্ধ, সেই দশা না হয়; দৈবের সহিত সাবধান হইবেন, বিবাদে প্রাধান্য ঘাইতে পারে। দেখ জানবান দৈবের সহিত বিবাদ করে না, তাছার সাক্ষী কস্যপ পরিক্ষিত; দে বিষ প্রতিকার বিদ্যাতে অতি পারক ছিল, তথাপি দৈব বিরোধার্থে বাহুড়েল। ভাহার বিশেষ কুরিয়া বলি, আপনি মনোযোগ করুণ, এ মহাভারতের এক অধ্যায়।

ছাপর যুগাতে ভারতবংশে অভিমন্যু দন্তি মহারাজা পরিকিত সাধু সভ্যবাদী জিতেন্দ্রিয়, সর্ব প্রকারেতে শিফট। এক দিবস মৃগ-য়াতে কার্য্যক্রমে অমাভা ও দেনাগণের দঙ্গহইতে ভিন্ন হইয়া দৈবে দুর বন প্রবেশ করিয়াছিলেন; অত্যন্ত আন্ত স্ফার্ত হট্যা জল না পাওনেতে বিবৃত জল অবেষণ করিতেং দেখেন এক রম্য দ্বল, কিন্ত জল নিকটের মধ্যে দেখেন না; এক জন মৌনবুতে বসিয়াছে, তাহা-কে বার্থ জিজাসা করিলেন, তাহাতে উত্তর না পাইয়া কোপাছিত হইয়া সেই স্থানে মৃত সর্প ছিল, তাহা সেই মুনির গলায় বেফীন করি-য়া দিয়া প্রস্থান করিলেন। দে মনির পুত্র আদিয়া পিতার বিগতি দেখিয়া উহ্মায় উহ্মান্তিত হইয়া জল হত্তে করিয়া শাপ দিল, যে জন মৃত সর্প আমার পিতার গলায় জড়াইয়াছে, অদাহইতে সপ্তম দিবদে ভাছাকে তক্ষক কালসর্প দংশ্বক। পশ্চাৎ কাল বিদিত হইল মে ব্যক্তি ছিল রাজা পরিক্ষিত। মহাম্নি মৌন ভঙ্গ হইয়া বিবরণ জাপনেতে অতান্ত শোকাত্র হইয়া প্রকে কহিলেন, পূত্র, মহারাজা পরিক্ষিতকে শাপগুরু করিলা ? এ অনুচিত ক্রিয়া; আমার আশ্রমে অতিথি হট্টরাছিল. আমরা তাহার আতিথ্য করিতে অভাজন হইলাম; দে আমাকে জাত ছিল না। ভাহাতে যদিতৃ কিছু অপরাধ করিয়া থাকে,তাহাতে এ মহাশাপ ঘাতি কর্ণ অভি অহিচার; অতএব তাহাকে শাপার কর। মুনিপ্ত নিবেদন করিল, পিতঃ, আমি মহাকোপে এ শাপ দিয়াছি, ইহার বিমোচন আমার সাধ্য নহে, ইহা জানিয়া যে কর্ত্তব্য হয় আজো হউক। ইহাতে সে থি विश्वर्ष इहेश्रा विश्वद द्वामन कतित्लन এवर जानित्लन, जारमाय नुजामान মোচন হইতে পারে না। তাহার এক শিষ্য দিয়া রাজাকে সন্থাদ দিলেন। রাজা সপরিবারে ব্লাশাপার্থ ভীত হউয়া এক মুক্তিয়ানের মধ্যে এক মঞ্চরচনা করিয়া তাহার উপর রক্তন মঞ্চিত বিরাজের স্থান রচনা করিয়। ভাছাতে অবস্থিতি করিলেন, এবৎ অনেকং দর্পবিদ্যার ওঝাগণ স্থানেং আপনাদের ঔষধ ও ওণ মন্ত্র স্থাপনা করিয়া রহিলেন। এই মতে বন্ধ দিবদ গভ হটলে সপ্তম দিবদে তক্ষক সর্পরাজ বান্ধবগণের দহিত প্রস্তুত হইয়া গতি করিতেছিল। ইতিমধ্যে ক্সাপ বাজাণ দরিদু, ধন ও সুখ্যাতি পাওনের আশায়ে রাজা পরিক্ষিতকে দর্প বিষজবালে রক্ষা করণার্থে र्घिटिख व्यक्तिम् गिष्ठ कविष्ठि हिला। পথের মধ্যে কামরূপী নাগরাজ

राकार व तराम शिव करिए छिल, विकारक प्रतिशा किछामा करिल, कह ৰিজ, কোথায় গমন করিতেছা কদ্যপ বলিলেন, খনিয়াছি আদ্য ও**ক্ষক** নাপ রাজা পরিক্ষিতকে দৎশন করিবে, আমি গুরুমন্ত্র বলে ভাহাকে রক্ষা করিব; ইহাতে আমার ঐহিক পারতিকের দুরেরি ফল হইতে। ইহা श्वनिया नाभ विलल, दूमि निर्दाध वृक्ति। "कात माध्य तक्का करत उक्तक मूर-শনে?'' দিলে বেলিল, এমত কেন কছ? ভক্ষক কোন ছার? আমি গুরুমনু প্র-ভাবে অবাধে বাজাকে বৃক্ষা করিব। এ কথা শ্বনিয়া নাগ কোপান্বিত হই-য়া বলিল, আমি ভক্ষক, শুন, ভূমি কি মন্ত ওঝা দেখিব ; দেখ, আমি বৃক্ষে দংশন করি রক্ষা কর দেখি। এমত কহিয়া নিজ মৃত্তি ধরিয়া যাঈয়া বৃক্ষকে দেশন করিল, ভাহাব মহাবিষানলে দৃক্ষ সমূলে ভক্ম হইয়া গেল। তৎক্ষণাৎ ওঝা দ্বিজ উল্লম্ফন করিয়া তাহারি এক মৃষ্ঠি ভক্ষ ধারণ করিয়া পুনর্কার দেই গতে মহামন্ত্রভিষিক্ত করিয়া স্থাপনা করিলে ভাছাতে একটা অস্ব হট্যা সেই দতে সৃদ্ধি পাইতেং পুনর্বার সেই পুর্বা মত বৃক্ষ হইল, ডাহার কিঞিং বিভেদ হইল না; বিশেষতঃ কাষ্ঠাছরণ কারণ যে এক ব্যাধ তাহাতে আব্রোহণ করিয়া দুক্কের দহিত ভদ্ম হইয়া-ছিলি, সেওে আর্বার জীকন পাইল। এ সমসু দেখিয়া নাগ্রাজা বিমর্ষ হ'ই-য়া বান্ধণকে কহিলেন, বিজ, আমি জানিলাম হোমার শক্তি আছে আমার দেশন বৃহ্ণা-করিতে, কিন্তু বিপ্রশাপ দৈব ক্রিয়া, তাহাতে কিমতে বৃহ্ণা করিবা? " কার শক্তি রক্ষা করে দৈব নির্বন্ধনে ? যদি ত ভাহাতে কেহ হয় শক্তিমান, দৈব বিব্রোধে কাহারো নাহিক কল্যাণ।'' শুন দ্বিজ, এমি দ্রিজ, কিঞ্ছিৎ ধনার্থে দৈবের বাধা জন্মাইতে চাহ ? ইহা করিও না; আমি ভোমা-কে এক মহাধন দিব যাহাতার ভাঙারে নাই। এত বলি নাগ্রাজ আপে-নার মস্তকহইতে মণি কাড়িয়া দিল, শওয়া মোন দোণা প্রতিদিন প্রদর ছয়। ৰিজ ভাবিলেন, ধন পাউলাম, বুক্নশাপ দৈব বটে, অভএব দৈ-বের সহিত বিরোধ অনুচিত; ধন পাইয়া বাহুড়িয়া পুনর্বার নিদ্ধালয় भमन कतिरलन। अष्ट्रभुव ज्ञानवान लाक आरन देनव विद्वार्थ छन् नाह, विद्ववना कति छ। १६६५०५

পরে সে দর্প কি কর্ম করিলেন, তাহা যদি জানিতে চাহ, তবে বলি শুন। নাগ দৃত্যুথে দহাদ পাইয়া জানিল, রাজার সমীপে বুাক্ষণ বাউরেক কেহ যাইতে পারে না, অতএব তাহার পরিবার দমস্কট ছিল্লংক হইয়া কতওলীন ফল ও পুঞা রাজাকে আশীর্রাদ কারণ হাতে করিয়া লইলেন; কামজ্পী নাগরাজ তাহারি এক ফলের মধ্যে কটিরূপ হইয়া প্রবেশ করিয়া রহিলেন। নাগ কিঞ্জিৎ বেলা ব্রি থাকিতে যাইয়া রাজার সমীপে উপদ্থিত হইয়া দেই ফল ও পুঞার রাজাকে আশীর্রাদ করিয়া বুক্তিনম্ভলীর মধ্যে বদিলে রাজাকহিলেন, এ কি হইল? দুর্ঘ্য অন্তন্ত হইল আদিয়া, অমোঘ বুক্তাশাপ বার্থ হইল, এ কি চমংকারী ইহাতে

আমার বছ পাপ জামিবে। এই কহিতেং সেই আশীর্কাদীয় ফল ভদ্ন করিতেং ভাহারি এক ফলের মধ্যে দেখেন এক কটি অতি কুদু কৃষ্ণ-বর্ণ, ভাহার মুখ রক্তবর্ণ। দেখিয়া রাজা কহিতেছেন, শুন ভোমরা দদে, বুক্ষশাপ ব্যভার হয়, এত ভাল নহে, অতএব এ কটি তক্ষক হইয়া আমাকে সংহার করেক। এত বলিয়া সুক্ষণালতে কটি গুইয়া বলিলেন, এ তক্ষক হউক, সকলে বলিল, হউক না! কামরপৌ নাগ নিজা মৃত্ধিরিয়া রাজাকে নাশ করিয়া অস্থরীকে গতি করিয়া প্রস্থান করিল, রাজার শ্রার বিষানলেল দাহন হইয়া গেলা।

আর আপনি যাহা লিখিয়াছিলেন দেনা সাজান করিয়া সম্বাদ দিতে, ভাছাতে ধমকানের অনভব হইল, আপনি আপনাকে যে জান করিয়াছেন তাহা এখন ত্যাগ করণে; এখন সে কাল গত হইল; এখন বাতাস ফিরিয়া বহিতেছে জানিবেন। আর এও বাস্তব্য বটে; যদি সর্মাকাল এক জন দুর্ভাগার্ম্ভ থাকে, তবে অনোর গতারর হইবে না। ভগবানের সূক্ষা বিচার, বর্ষাকাল গতে শীতের সমাগম হইবেই। অতএব কালক্রমে এক জনের বৃদ্ধি, ভাহাতে শোকিত কেন? নিগ্ঢ বিবেচনা করিলে জানিতে পারিবেন। আমার বিবেচনা এই আইদে, এই আপনকার ভদু, অনেক कालाविध तास्रख कतिया आंशिराटाइन, अथन देवत देव्हा अक सन्दर्भ স্ক্রাধিপ ক্রিতে, এবং আপনিও আপন মনে ব্রিয়াছেন আমি দৈব পরাক্রান্ত। এমত হটলে পরিবারের সহিত প্রাণ রক্ষা করিয়া থাকি-বার আটক হয় না, নতুবা বৃঝি আপনকার শেষদশা উপস্থিত, কেবল দেবীদীমার চরের কারণ সবৎশে সংহার হয়েনি বা। এ দুইতেই আমি সমত, যাহাতে আপিনকার ইচ্ছা হয় সেই মত করিবেন। অন্য এখান-কার সামস্ত প্রস্তুত মতে দেবাদীমায় প্রস্থান করিল; দাবধান পুর্বক জাপনমিতি।

III.—Letter of a king to a subject—of Dakhya.

রাজা চাকরকে লেথেন।

অথ বিবরণঞ্জ বিশেষ, তোমার ও অঞ্জের মধ্যে মহাপীঠ জরালামুখী দে অতি চমৎকৃত স্থান। শুনিলাম দেখানকার দেবাদি এখন পুর্স্বমত হয় না, ভোমার বড় একটা মনোযোগ দে বিষয় প্রতি নাই, এ বড়ই বিষয়ে কথা। আমি বুঝি তুমি ভাহাতে জাত নহ, অতএব দে বিবরণ লিখিতেছি, মনোযোগ করিবা। মহাদেব বিবাহ করেন দক্ষের দুহিতা, মহাশক্তি অবজীণী দক্ষের গৃহহ, ভাহার নাম সতী। দক্ষ মহাব্যক্তি প্রজ্ঞাপতি বক্ষার মানসপুত, শিব ভাহার যামাতা বটে; কিন্তু ইনি অনাদি, কত

কোটি সুন্ধা ইহার জাজাবহ; ভাহাতে দক্ষ কোন্ ব্যক্তি। ভাহার পুর্বা দাধনাক্রমে মহাশক্তি ভগবভী তাহার কন্যারপে অবভার্গ। হইছেন। মহাদেব দক্ষকে স্বর্ত্তর ভাবে প্রণাম করেন না, ইহাতেই দক্ষ মহাদেবের প্রতি আনন্দিত কথন নহেন, বর্ৎ কুপিত হইয়। কথন কুৎসা বাক্তা মহাদেবের বিপরীতে কহেন। এই মতে কতক কাল গত হয়।

এক সময় ভ্ধ মহামুনি যজে বিভুবন নিমন্ত্রণ হইলে সমস্ক দেবগণের আগমন, দক্ষ প্রজাপতি ইত্যাদিসমন্তই সভাস্থ, এই কালে মহাদেবের আগমনে সকলেই উত্থান করিয়া অভ্যর্থনা করিলে প্রজাপতি দক্ষ অহঙ্কারে অহঙ্কুত, হইরা মহাদেবের প্রণাম না করাতে উত্থান করিলেন না, এবং আলাপও না করিয়া অন্য লোকের সহিত্ত শিবনিন্দায় প্রবর্তা সেই হইতে দক্ষের দেয বিদ্বেষ এবং শিবনিন্দায় প্রবর্তা সেই হইতে দক্ষের দেয বিদ্বেষ এবং শিবনিন্দায় পরে দক্ষ মহাকোপে নিজ্ঞালয় যাইয়া আপনি যজারত্ত করিলেন, বিবেচনা এই যে আমার যজে মহাদেবের নিমন্ত্রণ করিয়া সমস্ক আন্ধান করিলেন, মহাদেব ভাঁহার যামাতা, তাহার কন্যা মহাশক্ষি সঙ্গী শিবের ঘরণী, তথাচ ভাহার প্রতি দৃষ্টি না করিয়া রোষযুক্ত সমস্কই বিন্দৃত্তি কন্যা কি যামাতা কাহাকেও নিমন্ত্রণ করিলেন না।

এই মতে দক্ষের যজ হইতেছে, ইতি মধ্যে নতী পিতৃগৃহে উৎসৱ শ্রনিয়া উৎকণ্ঠ চিত্তা হইয়া অত্যন্ত কাত্রা নিবেদন করিতেছেন, মহাদেব প্রভো, পিতৃগৃহে মহোৎসব, আমার চিত্ত একান্ত ব্যাক্স হইয়াছে, পিতৃ গুছে ঘাইতে ইচ্ছা দেশী প্রাণনাথ, চিরকাল গত হইল মল্লসুত্র করে ভোমার ঘরে আসিয়াছি, পরে কথন পিতৃগৃহে যাই নাই, এবং মাতা পিতাকে দেখি নাই; আমি আমার মাতার কন্যা, মাতা আমাকে বছ ভাল বাদেন, আমিও সেই মত, আমার ইচ্ছা পিতৃগৃহে যাইতে, ভুমি আজা কর। এ কথা কহিয়া মহাদেবের চরণে ধরিয়া সাধনা করিলে মহাদেব বিমর্যচিত্তে কহিতেছেন, শুন, ভোমার পিতা পাষ্ড, আমাকে মানে না। দেখ, দে আমাকে অমান্য করিবার নিমিত্ত আমাকে নিমন্ত্রণ করিল না, বিনা নিমন্ত্রণে তুমি গেলে সম্মান পাইবা না, এবং আমার নিদ্দাতে ভোমার দুঃথ হইবে, পশ্চাৎ তাহার বারণ হইবে না। অভএব অনিমন্ত্রিত স্থানে যাওয়া উচিত নছে। সতী কহিতেছেন, প্রাণনাথ, আপ-নার মাতা পিতার নিমন্ত্রণ অনিমন্ত্রণে কি হয় ≀ ওাঁহাদের কাছে পুত্র কন্যার সম্মান অসম্মান কি / আমার পিতা আমাকে বড়ই ভাল বাসেন, আমি বুঝি আমার অসমান করিবেন না।

সভী যাওনের উদ্যুক্তা, নিভার শিবাজা নহিলে সভী খিলামানা রোম্মন করিতে ২ মহাক্রোধেতে ক্রোধিতা হইয়া পদবুলে গতি করিলে মহাদের ক্লিম্মহাকাল শিব্যেবককে আজা করিলে মহাকাল মহায়ান কুইয়া

भका ९वर्षिड। कतिया कडक मृत्य (शल। प्राची (म यानार्याहरण मक्कानम উপশ্বিতা হইলে প্রসূতী সভী কন্যাকে দৃষ্টমাত্রেই প্রেমানন্দে পুলকিতা हरेंग्रा शमशम ठिट यारेग्रा कनात मूर्थ हुमन कतिया त्यकार कितिया নৃত্য করিতে লাগিলেন। এই মতে প্রেমাসক দহী মাতাকে পুণাম করিয়া আর ২ সমস্ত ভাগনী ও অমাত্যগণকে সদ্ভাষ করিয়া যজস্থানে পিডার निकटिं राडेशा পुनाम कविटल नक्क डाहाटक मिथियामाट इहटकाटन कुलिङ इंडेंग्रांट मिविनिकाय शूवर्ड इंडेंग्रा करिन, करना, कृषि कियर्थ এখানে আদিয়াছ? তোমার স্বামী ভূডের পতি, মশানে মদানে তাছার অবন্ধিতি, হাড় মালা গলায়, দাপ লইয়া তাহার থেলা, বাদিয়ার বেশ; ভোলার কপাল মন্দ, অতএব এমত ঘটনা তোমাকে হইয়াছে, আমি তাহাকে নিমন্ত্রণ করিলাম না। এ দেবসভা, আমি বুক্ষার পুভ্র, বাদিয়ার নিমন্ত্রণ দেবসভায় হউতে পারে না। সতী কহিলেন, পিতা, এমত কৃৎ-मा মहारमरतत् পुछि कह रकने । भहारमत रनतरमत, तुका तिक्कृ डेलामि যাঁছার পদযুদে শরণাগত, যে হর মহাবীর ত্রিপুরাসুরকে সংহার করিলেন, যে হর কালকুট পান করিয়া সৃষ্টি রক্ষা করিলেন, ওাঁছাকে কুৎদা বাক্য ভোমা বাতিরেক কেহ কহে না; ভূমি এ অনুচিত ক্রিয়া কেন কর? নদি কহিল, দক্ষ, নিন্দার প্রতিফল পাইবা; যে মুখে শিবনিদা করিলা, তাহা তোমার নাশ হইয়া ভাগলবদন হইবে। এই সকল বাক্যে দক্ষ পুনর্বার শিবনিনা করিতে পুরত হইলে দতী মহাক্রোধে উত্থান করিয়া কহিছেছেন, পিতা, দকলের উপযুক্ত धेरुनिका आदर्श लाक निकरकत नित छित्र कतिरदक, न्यूदा निक পাণ ত্যাগ করিবেক, কিম্বা দে স্থান ত্যাগ করিবেক। আমি আপন পুঁ। ত্যাগ করিব, তোমার আত্মজা তনু আর রাখিব না। এই কহিয়া বসন আঁটিয়া পরিয়া মধ্যস্থানে বসিয়া শিবরূপ ধ্যানে পুণিভ্যার করিলেন। সভার মধ্যে দানাগণে কোলাহল করিলে দক্ষ তাহাদিগকে মারিয়া থেদিয়া দিল। নদি দানাগণ সমুদায় ল'ইয়া রোদন করিতে > শিব সাক্ষাৎ নিবেদন করিবামাত্রেই মহাদেব ক্রোধারিস্ট, শিবের সো-মাঞ্জিত হউতে ২ মহাক্রোধাবেশ কালান্তকানল সম হউয়া মস্তক্তইতে এক জাটা ছেদন করিয়া ফেলিলেট তাহাতে মহাবীর বীরন্তনু উৎপন্ন **ट्टेंटल**न। वीरत्त मस्रक भगत्। मन्न कृतिस्त महामर्भवान वीत मृष्टे চকুরক্তবর্ণ সদা ক্রোধযুক্ত জন্মিবামাতেই করপুটে নিবেদন করিলেন, দেবদেব, আমি কি কর্ম করিব? শিব কহিলেন, দক্ষকে সংহার করছ, এবং নফ কর তাহার যজ। আজানুসারে বীর **সাত কোটি** দানা সহিত সজ্জমান হইয়া ক্লণমাতেই দকালয় উত্তিয়া নথেতে দক্ষকে ছেদন করিয়া যজকুণ্ডে সমর্পণ করিলেন, এবং দানাগণে পুসাুব করিয়া ষজ্ঞকুও পরিপূর্ণ করিল; ব্রাহ্মণদিগকে পুথির রজ্জু দিয়া করবদ্ধ

कब्रिज्ञा नाना मड नुनीं कि कतिल, काहात नाम उर्शाहेन करत, का-হার দ্ব ভাঁগিয়া ফেলে। এই মত অবহা সকলকে করিয়া যজ্ঞ নাশিয়া याहेक्सा निरंतमन कतिन ब्लाइएएव मिल्रियान । शरत महारमय मञी আলে দর্শনার্থে দক্ষের ভবনে উপস্থিত হইয়া সভীর মৃতাক মস্কুকে করিয়া নৃত্য করিতে পুবর্ত, এই মতে মহাদেবের নৃত্যে পৃথিবী ভারা-ক্লান্তা হইয়া আরু সহিষ্ণুতা করিতে পারিলেন না, ব্যন্তসমন্ত হইয়া ৰুক্ষার গোচর নিবেদন করিলে বুক্ষা কহিলেন, বিজু ব)ভিরেক ইহার উপার আমাদিয়া কিছু হউতে পারে না। পরে বিষুব স্কব করিয়া কহিলেন, পভো, পৃথিবী আরু ভার সহিতে পারে না, এই মতে বুজা বিশ্ব সেই যজন্তানে ঘাইয়া বিবিধ প্কারে মহাদেবের স্তব করিয়া विक् ठाउन की अन एलान कतिए र मम्माशिक एलान व्हेशी খণ্ড২ ছইয়া পতন ছইল। দাকলো একাল ভাগ হইয়া একাল ভানে পতন হইল: সেই একাল স্থান হউল পৃথক ২ এক ২ পীঠৰান, তাহাতে মহাশক্তির এক ২ এবৎ এক ২ ভৈর্ব অধিষ্ঠান, চড়ামণি ডব্লে ভাহার বিশেষণ গিয়াছে, অতএব এমত মহাস্থান তাহার দেবা চর্যা পুকৃত মত করিবা, ভাহার ইভ্যাদির উপর অতিক্রম করিবা না। সাবধান ইতি।

IV .- Letter of a Son to his Father -- Account of Chaitanya.

পরম পুজনীয় ত্রীযুত অমুক ২ মহাশয় ত্রীচরণ কমলেষু |

শ্বীচরণ নিকটহটতে প্রস্থানের পরে চহুও দিবদে এ দ্বানে পৌজিয়া দেখি, এখানকার সমস্ত লোক টেডনা দেবের মেলার গিয়াছে। টেডনা দেবের বিবরণ এই। বৈজ্ঞবেরা কহে, পূর্বকালে বিজু উপাসক বৈজ্ঞব পৃথিবীতে অতি অপপ ছিল, হরিভক্তি বাতিরেক জীবের মুক্তাভান, এচনর্থে আপনি কৃষ্ণ বংসর শত চারি হইল নবছীপ প্রিমধ্যে শ্রীজনরাথ সিশ্রা বান্ধণের ঔরদে সচি বাল্ধণার উদরে অবভার হইলেন, ভাহার নাম থুইলেন গৌরাল চন্দ্র। পরে এই মতে বাল্যক্রিয়া অপপ কাল যাপন করিয়া নবছীপের প্রধান ভট্টাচার্যা শ্রীবাসুদেব সার্বভৌমের চভুম্পাটীতে পড়েন; যেমত আরং পড়্রারাও পড়েন, উনিও সেই মত পাঠ করেন বটে, কিন্তু ভট্টাচার্য্য যাহা একবার অধ্যয়ন করান ভাহা ওংক্ষণাৎ অভ্যাস হয়, এমত উৎপদ্ধমেধা; এবং যাহা পাঠের মধ্যে আইলে নাই, ভাহাও শ্রনিয়া অবগত, এমত শ্রুতিধর; আর রূপবান এবং কোমলাল, বাক্য অমৃত ভকুল্য। ইহাতে সার্বভৌম বিন্মরাপন্ন হইয়া বিবেচনা করিলেন, এ বালক কলাচ সামান্য নহে, ইহার তদন্ত আর কিছু খাকিবে, ভাহার সন্দেহ নাই। এই চিন্নাতে ভট্টাচার্য সদা সর্বাদা

हैहडरमात् अपि डाउँच थारकन; इहात প्रतिकात निश्चि छाउँ। हार्य नमस পড়রাদের আজা করিলেন, ভোমরা এক জন প্রতি দিবদ প্রাতে আমার প্রতিঃরানের সময় ধৃতি বত্র এবং পুঞ্পের শাজি যাটে লইয়া যাইও। এই নিয়ম থাকিল। তদনদ্বরে পড়্যার। প্রতি দিবস সেই নিয়ম মত এক জন বন্ত ও পৃষ্প ঘাটে লইয়া যান, এই মত চৈতনোর পালার দিন ছইলে তিনিও সেই মত করিলেন। ভট্টাচার্য্য গৌরাঙ্গগমন আনিয়া কটি পর্যান্ত জলে দাখাইয়া বস্ত্রের কারণ চৈতন্যের দিলে হস্ত বিস্তার করিলে ভিনি জলে তিন চারি পাদার্পণ করিলেন। ভাহার পদবিক্লেপের ছলে এক ২ পদ্ম প্রক্ষটিত প্রতি পদের তলে হইল, ইহা দেখিয়া স্ট্রটাচার্য্য চমৎকৃত হইলেন, কিন্তু তখন কিছুই বলিলেন না। পরে সম-शांखदत छाष्ठीठार्था कहिरलन, शोतान, धन आमात निरवनन, अड निवन পর্যান্ত ত্মি আমার পড়য়া ছিলা বটে, আদ্ধি অবধি আমার স্থানে আর আবিশ্যক নাই পাঠ করিতে। যাহা হউক আমার সমন্ত পূথি প্রস্তুত আছে; যদি আবেশ্যক হয় তাহা দৃষ্টি কর, ইহাতেই সমন্ত অভ্যাস ছইবে; তুমি কেটা তাহ। আমার সুগোচর হইল; তুমি সামান্য মনুষ্য नह, जारा आमात रख अमान्तित ममस अकाम रहेशारक। हेरा सनिया গৌরাঙ্গ কুণ্ঠিত হট্য়া কহিতেছেন, মহাশয়, আমি আপনকার পড়য়।; যাহা আজা করিবেন ভাহাই আমার কত্রা। অত্এব সেট দিবস্হইতে টেডনা ভট্টাচার্য্যের সমস্ত পুস্তক আপনিং আবৃত্তি করিতেং **অংপ** কালেই মহামহোপাধ্যায় হইলেন। দেশেতে প্রকাশ হইল যে গৌরাঞ্ সামান্য মনুষ্য নহেন, ইনি কোন অবভার হইবেন ভাহার সন্দেহ নাই। এট क़र्त्य कडक काल गड रहा, डेडिमर्था डेरीत विवार क्रामर अरकत विस्तारत अना इहेन, तम्रक्तमा भेंतिम तथ्मत इहेन ; छातथ मुक्तत क्रम প্রকাশ হয় নাই ৷ ইউমধ্যে কেশ্ব ভারতী নামে এক জন দণা পশ্চিম-হইতে আসিয়া টেচনাকে প্রপ্রেড ডাকিয়া কহিলেন, কহ,তুমি নিশিদ্ধ আছে, ভোমার বৃঝি কিছু মনে নাই। বে কারণ ভোমার আগমন, বৃঝি তাহা বিষয়ত হইয়াছ। এমত কথনের পরে তিনি কহিলেন, আমি প্রকাশ হওনের অসঙ্গতিতে নিরন্ত আছি, এবং আপনকার আপেক্ষিক। পরে দুই জন নবলীপত্ইতে প্রস্থান করিয়া শালিপুর যাইয়া আরে দুই জন অহৈত আর নিত্যানদ্ধ তিন জন সন্ন্যাস পুহণ করিলেন। এখানে চৈত-ন্যের মাতা এবং তাহার বাহ্মণী এ সম্বাদ প্রবণেতে নিতাম্ব শোকাবৃতা हेरेश क्लिंगगृत्मु प्रथ्ना। भटत कारेबड अव९ निज्ञानत्मत म९मात আকাঞ্জা দুর হয় নাই, চৈতন্য আপনার ঐশিক প্রণে ইহা জাভ रहेता मुद्रे समत्य कहिलान, खांडादा, आमि वृत्थि ट्रामारमद मरमारदद माम्रा चारकः; चड अव हति नाम श्रकाण कत्राव सूल छामता ६ छा-बालित मखारमता इहेरिंग, अहे बरमा रहामता घाडेगा विवाह कत अव-

গৃহস্থাপ্রমে থাক, যতনপুর্বাক হরি নাম প্রকাশ করহ। ইহাঁদিগতে अभाज करिया रिज्जारिक मध शुरुण कतिराम ; हेरीता पृष्ट जान शृह्या-আমে থাকিলেন। চৈতন্য দেবের আর্থ অনেক শিষ্য হটল; শত দুট শভ লোক পারমার্থিক সাথে করিয়া সমস্ত ভূমি র্টন করেন, এবৎ লোকদিগকে ভক্তি জন্মাইয়া হরিমন্ত্র প্রদান করেন। কতক কাল এমত ২ করিতে ২ অনেক ২ লোক বৈষ্ণৱ হটল। হরিনাম পৃথিবী ব্যাপ্ত हरेल आंभित टैठवना नीनाष्ट्रल गाउँना अमुर्यात हरेलन। साह टैठव-ন্যদেবের প্রতিমৃতি নবদীপে আছে, তাহার মহোৎদর বংসরং হয়: ভাহাতে সমস্ত লোক দর্শনার্থে গিয়াছে; তালাদের আগমন পর্যান্ত আ-মার এ স্থানে নিরুপলক্ষ থাকিতে হইল, কার্য্য সাধনা ত্যভিরেক প্রত্যাগ্র-মন করিলে কি হটবে? অতএব লোকদের আগমনাপেক্ষিক আছি. জ্ঞাতকারণ জীচরণে নিবেদন করিলাম। এখানকার যাবদীয় লোক প্রায় বৈষ্ণাব, শাক্ত শৈব সৌর গাণপত্য প্রায়নাই। বাহ্নণ যাহারা আছেন, তাঁহারাও স্বধর্ম ত্যাগী বৈষ্ণবপথাশ্রয়ী। এখানকার মোহও এক জন বৈষ্ণ্যব তাহার শিষ্য সকলে বাজাণেরা, ও তাহার পাদোদক ইত্যাদি গৃহণ ক্রিতেছেন, এবৎ অধ্রামূত লইতেছেন, বৈষ্ণাবকে আফাল প্রণাম ক্রিতে-**ছেন, তাহাতে কোন** দ্বিধা করেন না। ইহাতে যাহারা অধ্যাপক ভাহা-দিগকে জিজাসা করিলাম, এ প্রকার অসঙ্গত জিয়া কর কেন? ভোমরা ব্রাহ্মণশরীর; তোমাদের শাস্ত্রে কহে ব্রাহ্মণ সকলের প্রধান; তবে বৈষ্ণ বের ভজন কর কেন ? তোমাদের এক জন বাহনণ ভ্র নামে বিজ্ বক্ষ-দলে প্রাঘাত করিয়াছিল, তাহার চিক্ত অন্যাপি সালগামের মধ্যে আমাছে, এখন ভোমরা এমতং আচরণ কর কেন? ইহার প্রত্যন্তর কাহা দিয়া হয় না; কহেন " বৈষ্ণৱ ভক্তি নহিলে দকলি বিফল," তাহার কার্ণ এই, জাঙি অজাতি বিভেদ কর্ণাকর্ত্ব্য, হরিতে ভক্তি যার সেই মহাজন লানিয়া শাল্তে বলে "চঙালোপি মুনি শ্রেষ্ঠো হরিভক্তি পরায়ণঃ। হরিভক্তি বিহীনশ্চ ছিজোপি খাপিচাধমঃ।" অতএব হবি ভক্তিতে বর্ণের ভেদাভেদ করিবে না, এই এক আশ্চর্য্য এ দেশে দেখিতেছি, বিশেষ এচরণ নি-কট পৌছিয়া নিবেদন করিব। ইতি।

V .- Letter of a Teacher to his Disciple.

গুরু লঘুকে।

অনেক দিবসাবধি ভোমার ওথানকার সমাচার পাই নাই, ডলিমিত উদ্ধিঃ; লোক যাভায়াতে মললাদি সমাচার লিথিয়া নিরুদেগ করিবা। ভোমাদিগের অধিকারের কি ধারা হইভেছে ভাহার বিশেষ বিশেষণ

लिथिया: मुगांमिड य श्रकाद्ध हज्ञ, ठाहा कदिया; ठाहाटड य यात्र यामन আবশ্যক হয় আমাকে লিখিবা; তাহা এখানহইতে পাঠাইব। ভোমার ছোট পুড়া কোনু স্থানে আছেন? এবং তাহার কার্য্য কর্ম হইয়াছে कि ना? यमि कान सारन ना निया थारकन, उरव এ सारन आमिए कहिवा: এক কাৰ্য্য উপস্থিত আছে, অতএব শীঘু পাঠাইবা। এ কাৰ্য্য বড় ভাল, তিনি এখানে আদিয়া চেন্টা করিলে হইতে পারে: এ কার্য্য হইলে তাছার সাতে আর দৃষ্ট এক জন প্রতিপালন হইতে পারিবে। আমাদীপুরের রাজ্য কোন পর্যায় হন্তগত হইয়াছে তাহা লিথিবা, এবং তাহাতে মনোযোগ অতি বিষারিত আবশ্যক। প্রজালোক শত পঞ্চাশ ঘর পত্তন যে প্রকারে হয় করিবা। বায় বাদনের যে আবশাক হয় লিখিলে এখানহইতে পাঠান ঘাইবে, কোন বিষয় ভাবনা করিবা না; দুর্গা প্রভুল করিবেন। বাটীর সংবাদ শীঘু ঘাহাতে পাই তাহা করিবা; নাল-ভাক্রমে যদি ভূমি একবার এ অঞ্জে আদিতে পারহ, চেষ্টা পাইবা; আবেশ্যক আছে জানিবা৷ এবং এখানকাব জন্য এক জন সেবাতি সেই স্থানহইতে আনিলে ভাল হয়, এ স্থানে সেবাতি লোক বিস্তারিত বেতনা-কাওক্ষা করে, ওখানহইতে আনিলে অম্প বেতনে পাইবে। সৎপ্রতি শ্বনি-লাম তোমাদিগের ওখানে এক জন রাজক্রিয়াধ্যক্ষ আদিয়া ভূপাল লোক-কে বহু উৎপাত করিয়াছেন; কি নিমিত্ত তাহার বিশেষ লিখিবা; এবং প্রজা লোককে ধরাধরি করিতেছেন। যদিত সতা হয় তবে তমি একবার শীঘু এখানে পৌছিবা, আমি এখানকার করার এক লিপি করিয়া দিলে আরু কোন উৎপাত করিতে পারিবেন না। যদি ওখানে সুগতিক বৃদ্ধিতে পারহ, তবে আইমনের আবশ্যক নাই। জগদীশপুরের জীমত রভিকান্ত রায় কার্য্যান্তরে আমার এখানে আদিয়াছেন, এইক্ষণে ইনি এখান-হইতে কিছুকাল ঘাইতে পারিতেছেন না। ইহার কি চেফায় কথোপ-কথন তোমার সহিত জিল তাহার বিষয়ে যথেট মনোযোগ করিবা। এ বাকি নিতার সজ্জন; ইহাঁর বিষয় যাহা কিছ করিতে পারহ, তা-হাতে পণ্য প্রতিষ্ঠা উত্তর লাভ। তমি সন্বিবেচক এ বিষয় বিস্তারিভ লিখনাধিক। আর্থ বিষয় পুর্রাথ পত্রে সমস্তুই লিখিয়াছি, তাহাতেই জাত আছহ, সেই মত করিবা। ঘোষ বাবু কি ধারায় কার্য্য করিতেছেন তাহার বিশেষ লিখিবা; তিনি বড় কার্য্যক্ষম নহেন। যথনকার যে বিষয় ভাঁছাকে সাবধান করিয়া দিবা। ভোমাদিনের অনুগত লোক ঘাছাতে কার্য্য শিক্ষা হয়, ভাহা করিবা। এ সকল লোককে ভাল করিলে ঘোষণা थांकिएत, अव अधिक পात्जिएकत् मुर्था । शक्ति तरहे, विरतहना कित्ता। অবিষ্ত গোরাচাদ ঘোষের বৃঝি জীপুরের কর্তৃত ভার হইবে, এমত শ্বনা साहेट उट्टा यो कि नजा हम्, उटव आक्लाटन विषय वटने : आमानिट शव এক আদ কাষ্ট ভাল হইতে পারিবে। ইহার নিশ্য জানিয়া সমাচার

পশ্চাৎ লিখিব। বাটীর ছালিয়াদের পড়িবার মিনিষে এক জন গুরু রাখিবা; তাহাতে যে বায় হইবে তাহা আমি মাদেং পাঠাইব। নে বিষয় যথেকী মনোযোগ করিবা। বালকদিগকে নীত্যভাগ না করাইলে থে প্রকার তাহা বুঝিতে পারহ। অতএব এক জন নীতিজ মানুষ যভাপুর্বাহ্ব রাখিয়া বালকদিগকে নীত্যভাগ করাইবা, অবশ্যং ইহার অন্যথা করিবানা। কিমাধিকমিতি।

V.-Letter of a Teacher to his Disciple-Of Rávana.

धक्र मध्रक।

প্রাণাধিক প্রাযুক্ত অমুক ২ প্রমকল্যাণবরেষু। তোমার পার পাইয়া
সমাচার জানিলাম। লিখিয়াছ ওথানকার লোকেরা তোমাকে বৈদ্যনাথ
দেবের বিবরণ জিজাসা করিয়াছে, ভাহার উত্তর করিতে পারহ নাই,
এ আশ্রুমা। বিশিষ্ট লোকের সন্তানের এ সকল জানন অভ্যাবশ্যকের
মধ্যে; এখন আপনার বালকদিগকে এ সমস্ত শাস্ত্র শ্বনায় এমত পণ্ডিত
এক জন চাকর রাখিয়া দিবা, যে বালকদিগকে নানা মত পুরাণ ইত্যাদি
প্রস্তাব অভ্যাস করাণ। পূর্বে আমার এখানে সর্ব্ব পুরাণবেলা পণ্ডিত
এক জন নিযুক্ত থাকিতেন; ইদানীন্ড কিছু কাল হইল আমাদের
সময়ের মন্দতা প্রযুক্ত ভাহার তুটি হইয়াছে। ঈশরেক্ছা এখন ভামাদির
সময়ের মন্দতা প্রযুক্ত ভাহার তুটি হইয়াছে। ঈশরেক্ছা এখন ভোমাদিবের কোন বিষয়েতে নুমতা নাই, অভএব এ সময়তে এ সকল চালনা
না করণে নিন্দার কথা। অভএব অভ্যাবশ্যক জানিয়া এ বিষয়েতে
প্রত্বলের মনোযোগ করিবা। সে বিবরণ আমি লিখিতেছি; মনোযোগ
করিয়া অবণত হইয়া লোকদের কাছে প্রকাশ করিবা।

পূর্বাকালে রাম রাবণের যুদ্ধের সময়ে রাবণ বিবেচনা করিল রাম বিজ্

অবতার, ডাহাকে ক্লয় করণ মহাদেবের আরাধনা ব্যতিরেক সংশায়, অতএব হিমালয় পর্বতে যাইয়া কঠোর তপস্যায় আশুটোয মহাদেবকে দিছ্
করিয়া সহায়ার্থ এক শিবলিল সেই স্থানহইতে ললায় স্থাপনার্থে লইয়া যাইতেছে। মহাদেবের সহিত নিয়ম এই, আমি ললায় স্থাপিত হইলে ভোমার
পরাকায় হইবে না; কিন্তু বে স্থানে আমাকে নামাইবা, আমি দেই স্থানেতেই থাকিব, তথাহইতে কদাচিৎ উঠিব না; তাহা বুঝিয়া যে হয় করহ।
রাবণ ভাবিল এক বিল্ প্রস্তুর কোন ভার নহে, ইহা অনায়াদে ললায়
লইয়া যাইব; মহাদেবের প্রস্কুরাতে আমার ক্লয় হইবে; মহাদেবের
বাক্যে কোন সন্দেহের বিষয় নহে; রামকে মারিতে পারিলে সীতা আন
মারি হইবে; ভাহাকে মোক্লারাণী করিব, মন্দোদরী আমার পাটরাণী
আলে, ডাহাকে ভ্যাগ করিতে পারিব না, ভরণ পোষণ করিতে হইবে।

দে অন্য আমার বড় ভাবনা নহে, মহাবীর ইন্তরিভ ভাহার পুত্র, সে একটা সামান্য নছে; আমার শেষকালের রাণী ঘটলেন দীড়া, তাহার সম্ভান কেছ নাই; আমার আর সমস্ত যাউক, সীতা আমার এবং আমি मी**जात, এইक्रां काल यालना कतितः এই मक्ल ति**राहिना कहिए ३ ঘাইতেছে। দেবভারা দেখেন বাবণ মহাদেবকে মন্তকে করিয়া লামিধ্য হটল আসিয়া, উপায় কি হটবে? সকলে প্রামর্শ করিয়া মেছ ও প্রনকে আজা করিলেন, "তোমরা রাবণের পীড়া জন্মাইয়া, মহাদেব লওনের বাধা জন্মাও ঘাইয়া।" দেবাজাতে মেঘ ও পবন তাহাদের সাধ্য মত ঝড় বৃষ্টি করিল, তথাচ রাবণ তাহাতে পরিআত হটল না; সকলেই নিরপায় কি করিবেন ভাবিয়া পান না। বুকা বলিলেন বরুণকে, তুমি সম্দুরণতে উহার উদরে প্রবিষ্ট করাও, তাহাতে রাবণ প্রসাব পীড়া-তে ব্যস্ত হইবে, তাহাতে সে ভক্ত লোক মহাদেবকৈ নামাইলে মহাদেব নেই স্থানে রহিবেন, ইহাতে দন্দেহ নাই; অতএব বরুণ, তোমরা ঘাইয়া এই সমস্ত কর। বরুণের আজায় সমুদুরাবণের উদরে প্রবেশ করিলে রাবণ অতিশয় পীড়িত হটয়া বাস্ত হটল, কিন্তু শিবকেও মৃবিকাতে ত্যাগ করিতে পারে না, নিরপায় হইল। এই কালে ইন্দ্র দেবরাজ মায়া করিয়া বৃদ্ধ ব্রাহ্মণের বেশে সেই স্থানে উপস্থিত হইজেন। রাবণ ভাহাকে দেখিয়া পরমাজ্ঞাদে আদর পূর্বক ব্রাহ্মণতে কহিলেন, ঠাকুর, ভূমি আ-মার এই উপকার করহ। আমি রাবণ রাজা, ইহার পরে আমি ভোমার ষথেষ্ট প্রতুল করিয়া দিব। ব্রাহ্মণ বলিলেন, মহারাজ, আমি ব্রাহ্মণ ক্ষীণবল এব বৃদ্ধ, অভি ব্যাপককাল রাখিতে পারিব না। রাবণ বলিল, তাহার বিষয় কি? তুমি এক দণ্ড পর্যান্ত শিব ধারণ কর, তবে আমি প্রসাব করিয়া আদি। ব্রাহ্মণ বলিলেন, ভাল, আমি আপনকার আজায় দুই দণ্ড পর্যান্ত ধারণ করিব, ইহার অধিক আর পারিব না। রাবণ তথান্ত বলিয়া ব্রাহ্মণের মন্তকে শিবলিক রাখিয়া প্রসাব করিতে বসিলে দৃষ্ট দণ্ডের পরে ব্রাহ্মণ কহিলেন, মহারাজ, আমার আর সাধ্য হয় না, আপ-নিও আসিতে পারিলেন না, আমি শিবলিক মৃত্তিকায় ভাগে করি। ইহা বলিয়া শিবলিক মৃত্তিকাতে থুইয়া প্রস্থান করিল। এক প্রহর গতে রাবণ পবিত্র হইয়া আসিয়া শিবকে তুলিতে ইচ্ছা করিয়া আপন পরাক্রম মত লাড়া চাড়া করিল, এক ভিলও লাড়িতে পারিল না। ইহাতে অভিদঃখিত इहेग्रा निस हात्म श्रहान कतिल। পরে সেই ছানে বন হইয়া অনেক কাল পর্যান্ত মহাদেব প্রপ্ত ছিলেন; পরে কলিযুগের প্রথমে বৈদ্য নামে এক জন গোয়ালাকে প্রভ্যাদেশ করিলে ভাহাহইতে প্রকাশ হইয়াছেন, অভএব ভাছার নাম হইল বৈদ্যনাথ। সে ভান সামান্য নহে; সে ভানে বিনি यांचा ताश्वा कृतिया यान छांचा निक रय, नर्सव विशांज अरे रैतमानार्थत विरुद्ध । अञ्जाद मकलाक अहेर मछ कहिता, अद आभावा मार्था र সভাতে পুরাণ অধ্যয়ন করাইবা, যাহাতে এমত ২ কথা অবগত হইতে পারহ। ও দেশ লবনাযু, অভি বড় সাবধান হইয়া থাকিবা, আর কোন লোকের সহিত বিবাদ করিবা না। ও দেশের লোক সকল দুর্জন আসু-রিক স্বভাব, যাহাতে সর্বতি রহলা হয় তাহা করিবা।

আমি শুনিয়াছি ঐ দেশে এক বৃহৎকায় অখল বৃক্ষ আছে, তাহার তলায় ভরিতাবা রাজার হাতের হাত্যাদলি পড়িয়াছিল, তাহা প্রকাশ হওনেতে এক জন জীর মর্ণ হইল তাহার বিশেষণ লিখিতেছি; জাত হইয়া অত্যেষণ করিবা। ঐ দেশে এক হাটে এক জন মাছ্য়া ও তাহার জী মাছুয়ানী মৎস্য বিক্রয় করিতেছিল। ইতিমধ্যে একটা চিল্লপক্ষী তাহার দোকানহইতে একটা শকুল মৎদ্য ছোঁ দিয়া নিয়া যায়; মৎদ্যটা ভার ওষ্টানে করিয়া যাইতেছিল ইহাতে মাছ্য়ানী, হাঁসিয়া উঠিলে মাছ্য়া হড় ক্রেমা বলিল, এ কিরে হারামজাদী, ভোর মাচ লইয়া যায়, আর उँ हाँ मिम ? उँ है कि পाशनी ना कि ? रम दलिल, आभि ठाहाद कादन हाँ मि নাই। মাছ্য়া বলে, তবে হাসিলি কেন? সে বলিল, হাঁসিলাম, দেখ এখানকার চিল এখন এমত দ্বলৈ হইয়াছে যে একটা শকুল মৎস্য নিয়া যাইতে পারে না। মাছুয়া কহে, বল, তুই ইহাহইতে অধিক শক্তিমন্ত চিল কোথায় দেখিয়াছিন? দে বলে, না, আমি দেখি নাই। তবে হাঁ-সিলি কেন? ইহাতে ভাহাকে বিস্তারিত প্রহার করিল। জ্রীটা বলিল, হেদেরে, আমারে ও কথা জিজাদা করিদ না, যদি আমি তাহার বিবরণ কহি, তবে মরিব। বেটা বলিল, তুই মরিদ কি বা কিছু হইদ, বলিতেই ছইবে, এবং আরবার তাড়না করিল। মাভ্য়ানী বলে, শুন, আমি পুর্ব জমে চিল ছিলাম, ভারত সংগামে অজ্জন ভ্রিসুবা রাজার হস্ত বাণেতে कार्षिया फिलिल, जामि रम रस्त निया से दृद्क्कत माथाय विभिन्ना था है सा-ছিলাম, তাহাতে একটা মাদলি ছিল, তাহা ঐ গাছের তলায় পড়িয়া আছে, দেখ যাইয়া। এই কহিতে ২ সে মানী ভূমিতে পড়িয়া প্রাণত্যান করিল। পরে তাহারা সেই ভলা খনন করিয়া এক হাতমাদূলি পাইল চারি মোন স্বৰ্ণ; তাহাতে সে মাছ্য়া ধনবান হইল। অতএব লিখিতেছি, ইহার তদন্ত জানিয়া সমাচাব লিখিবা। ইতি।

VI.—Letter to a Teacher by his Pupil.

লঘু পোষ্য গুরুকে।

প্রণামাবিজ্ঞাপন্ঞ তদিশেষ: ত্বাশিষ অতানন্দ প্রং। ওথানকার সমাচার অনেক দিবস না পাইয়া একান্ত ভাবিত ছিলাম, এখন জ্ঞীজয়গোপাল ঘোষের হাত পত্র পাইয়া সমস্ত সমাচার জাত

হটয়া নিশ্চিত হটলাম। লিখিয়াছ আপন কন্যার বিবাহের সম্বন্ধ প্রায়ত রাজনারায়ণ রায়ের পুলের সহিত হটয়াছে, তাহার কুলম্ম্যাদা একশত টাকা দিতে হইবে। এসম্বন্ধ ভাল বটে, কিন্তু টাকার সাংগত্য বৃহৎ ব্যাপার। এই ক্ষণে তাহার সংখাপনার্থে একশত টাকা পণ দিতে হই বে. ভদ্তিয় আপনাদের বায় তিন চারি শত টাকার নানে হইতে পারিবে না, ভাহার সকল সঙ্গতি এইক্লণে হইতে পারিবে না। আমার এখান-হউতে একশত টাকার স্মার হউতে পারিবে, ইহার অধিক কপর্দ্ধক হটবে না; বক্রি চার শত অন্য কোন্ স্থানহটতে সঙ্গতি করিতে পার, এমত স্থান আমি দেখিতে পাই না। অতএব সূত্রাং এ সম্বন্ধ এই ক্লণে হুটতে পারিল না। যদি কোন ভানহুটতে টাকার সাংগতা কবিতে পার, তবে প্রবর্ত হইবা; আমি পশ্চাৎ তাহা পাচাইয়া দিব, তাহার ভাবনা কিছু করিবা না। এ ীনুত রাজা মহাশয় অদ্য তিন দিবস হউল ফলনা প্রগনায় যাত্রা করিয়াছেন; আমিও দুই এক দিনের মধ্যে যাতা কবিব। যে স্থানে যাইয়া কার্যো প্রবর্তনা হইলে টাকাব সকল সাৎপতা কি প্রকারে হয় ? কিন্তু পশ্চাৎ হওনের বাধ হউবে না; যদি এ সম্বন্ধ মাদেক দৃই মাদ পরে হয়, তবে কোন ব্যামোহ হয় না; প্রাণ্ড কৃষ্ণ রায় মহাশয়কে লিখিতেছি, এ সম্বন্ধ এইক্লণে না হইয়া পশ্চাৎ অগহায়-ণাদিতে হয়, তিনি এমত করিয়া দিবেন। প্রীয়ত রামসনদর বসজাকে আ;-খিনাদিতে সে স্থানে পাঠাইবেন, এক আদ কার্য্য অবশ্য করিয়া দিতে পারিব। আমার প্রতি দাহেবের নিহার অনুগুহ আছে, ইহাতে যখন যাহা সাহেবকে কহি, তাহা প্রামাণ্য করেন। কার্য্য অতি বড হইয়াছে, ইহাতে যদি কিছু কাল এই কার্য্যে নির্বিল্পেতে থাকিতে পারি, তবে ঈশবেচ্ছাতে যথেক লোকের প্রতিপালন হইতে পারিবে। সংপ্রতি এক কাৰ্য্য উপস্থিত আছে, বড় মন্দ নহে; বসুলাকে যদি শীঘ পাটাইতে পারেন, তবে ইহাতেই প্রবর্ত করিয়া দিতে পারি: নহবা ঈশরীপজাব সময় আমি বাটী আসিব, সাক্ষাতে সমস্ত কহিয়া শুনিয়া প্রামশপুর্ব্ধক যাহা হয় করিব। কিন্তু ইহার মধ্যে যদি কোন আবশাক হয়, তবে আপনি এ পর্যান্ত আসিবেন। বিশেষ বিদিত হইয়া যাহা কর্ত্তব্য ভাচার চেফী চরিত্র করা ঘাইবেক, কিমা কোন কৌশলে কার্যা চলে, ভবে তাহাই করিব। এীয়ত রামগোবিন্দ রায় মহাশয় এখানে আসিয়াছিলেন, অদ্য দুই দিবস হইল বারাণশী প্রস্থান করিয়াছেন; তাঁহার পত্র এখানে ছিল তাহা পাঠাইতেছি, শীঘু তাঁহার বাটীতে পাঠাইয়া দিবেন। আমি তাঁহাকে এক শত টাকা পথি বায় নিমিত্ত দিয়া শ্রীষত রামানদ বাবুর সহিত পাচাইয়াছি; পাটনা পর্যান্ত স্বচ্ছদে পৌছিতে পারিবেন: मिथानहरूट वार् माठि मक्षि कतिया मिरवन, रम जना कान जातन বিষয় নছে। এ সকল সমাচার তাহাদিগের বাটীতে আপনি ঘাইয়া

বিশেষ বিশেষণ করিয়া কহিবেন, বাটীর কেহ ব্যস্ত না হয়েন; যাতা-য়াতে মঙ্গলাদি লিখিবেন। কিমধিকমিতি।

VII .- Letter of a Teacher to his Disciple. - Of Jaban.

ধরু প্রতিপালক লঘুকে।

পোন্টাবর প্রায়ত অমুক ২ রায়চৌধুরী মহাশয় পরম কল্যাণবরেষ।

কএক দিবস গত হইল জীয্ত অমুকের বাটীতে মহাভারত প্রসঙ্গ সভাতে ষ্ট্রন বিবর্ণ প্রশন করিয়াছিলেন, সে সময় নির্বকাশ ক্রমে বাজ্ল্য মতে নিবেদন করিতে পারি নাই; এখন দেই বিবর্ণ লেখা ঘাইতেছে, অবধান করিবেন। তেতাযুগে কেতিয় কুলে দুর্ঘ্যবংশলাত তালজ্ঞয হাহা হৃতু প্রভৃতি কএক জন রাজা বুক্লার পুত্র বশিষ্ঠ মহামূনির সহিত কদল করিয়া শাপ ভয় প্রযুক্ত পলায়ন করিয়া অতি দ্রদেশ পশ্চিম সমুদুতীরে যাইয়া বদতি করিল। চিরকাল এই মতে গত হয়, তাহাদের मसात्नाश्रमसान गरमाविध रहेल, किस विगिष्ठ गाल्यत स्टाइट निस्ह হইতে পারে না। কর কাল পরে নারদ মূনি ভূমণ করিতে**২ সেই শ্বানে** উপস্থিত হইয়া দেখেন ক্ষেত্রিবংশীয় কতপ্রলি লোক সভয় হইয়া বস্তি করিতেছে, থবির আগমনে অধিক সন্ধানুল হইল, ইহাতে নারদ বিস্ময়া-পন্ন হইয়া খানে জানিলেন যে ইহারা তালজঙ্য হাহা হুহুর সন্তান, বশিষ্ঠ শাপ ভয়ে প্রস্তাবে এখানে বসতি করিভেছে। তিনি তাহাদিগকে আশাস क्रिया क्रिलन, छत्र क्रिंड ना, आमि नावन, विश्व निह। ইहाट डा-হারা নারদকে অতি আদর গৌরবে রক্তাসিংহাসনে বসাইয়া পাদ্যার্ঘ্য দারায় পূজা করিয়া কৃতা ধলি হইয়া নিবেদন করিল, প্রভো, আমাদিগের কি উপায় ? পূর্ব্বপুরুষেরা বশিষ্ঠ শাপ ভয়েতে দেশভূষ্ট হইয়া এই স্থানে বদতি করিয়াছেন, আমারাও সেই মত আছি; ইহাহইতে কি রূপে ত্রাণ পাইতে পারি ? তাহার আজা হউক। নারদ কহিলেন, শুন, বশিষ্ঠ মহাথ্যি, তাহার কোপহইতে এ ধর্ম থাকিতে কদাচ মুক্ত হইতে পারিবা না; কিন্তু উপায় আছে, করিতে পারিলে হয়। তাহারা বলিল, আপনি যে রূপ আজা করিবেন, আমরা তাহাই করিব। নারদ কহিলেন, ভবে বিধর্ম আচরণ করহ, আচার ও ব্যবহারের বিপর্যায় কএক পুরুষে করিলে ভবে বৃক্ষশাপে কিছু করিতে পারিবে না তোমাদিগের সন্তানদিগকে। তাহারা নারদোপদেশে সেই মত করিল, এবৎ তাহাদের বৃদ্ধিমান লোক নেই ব্যবহার মত এক শান্ত্র প্রকাশ করিল; সেই হইল ধ্বনশান্ত্র; অতএব তালজভ্য হাহ। হৃহুর সম্ভানের।ই যবন। সেই জাভিতে মহাবীর

কাল্যবন উদ্ভব, যে কৃষ্ণবিৎসাতে মুচুকুদ রাজার কোপদ্যেট ভন্ম ছইল, দে বিবরণও লেখা যাইতেছে অবধান করিবেন।

ৰাপর্যুণে জ্ঞীবিজ্ঞুকৎস বধার্থ দৈবকীগর্ট্তে অবভার ছইয়া কৎসকে वध कहित्स्त्र । ताका कतामस कर्मनत चचत, कनाम् अ चिन्न रव कृषा কৎস বধ করিয়াছে; ভাহা অবণমাত্র মহাক্রোধান্তিত হইয়া নিজ সেনা এবং অন্তর্ক রাজাগণকে সজজ্মান করিয়া কৃত্ত দমনার্থে মণুরা গমন করিল। ইভিমধ্যে জ্বাসভ্তের স্থা কাল্যবন আপন দৈন্য স্মেত অগুগামী হইয়া মথুরাপুরী বেক্টন করিলে উগুদেন প্রভৃতি মহাক্রোধে সসজ্জ হইয়া ভাহার সহিভ ঘোরতর যুদ্ধ করিলেন। যতন আভি বল-বান, উগুদেনাদি তাহার স্থানে পরাভূত হইলে কৃষ্ণ ভাবিলেন, এ দ্রস্ত কাল্যবন আমার বধ্য নছে; অভএব প্রকারায়রে ইছাকে নাশ कतिएक रहेरत । हेरा विरवहना कतिया कृष्ण वलताम मुद्दे छाहे उटेक सूत्र প্রাচীরের উপর উঠিলেন। কাল্যবন ভাষা দেখিয়া মনে ২ বুঝিল, ইছারা **स्टाइटड भलाग्न, এडे दिला धिति। डेहा दिद्दिल्या कृतिग्ना मृडे समस्क धितिएड** গেল। কৃষ্ণ বলরাম প্রাচীরহইতে উলম্ফন করিয়া ক্ষত বেগেতে পলা-यन कति तलन, कालयवन अ महारवर्त भणार शिष्ठ कतिल। अ कर्ण नाना স্থান ভূমণ করিতে ২ কৃষ্ণ বিবেচনা করিলেন, পূর্দের তারকাসুরের যুদ্ধে দেবগণ প্রাভব হইয়া রাজা মৃতুকুন্দকে যুদ্ধার্থ দেনাপতি করিয়া-ছিলেন; রাজা মুচুকুল মহাবল পরাক্রম, চিরকালাবধি অস্র সহিত যুদ্ধ করিয়া দেবতাদিগের সাহায্য করিল; ইহাতে বুদ্ধা ভাহাতে ভুষ্ট হুট্যা বরদানে যুক্তবান হুটুলে দে কছিল, পিতামুহ, আমি চির্কা-लाठिथ अनिनित्र आहि, राभिककाल निन्। याहेर, हेराटा या निन्। छन कतिरत, रम आयात मृक्षियारवंडे स्था इडेर्टर; এवर अक निस्तृत हान আমাকে দেহ, দেই স্থানে যাইয়া শয়ন করি। বুক্ষা বলিলেন, তথান্ত, ডুমি হিমালয় পর্বাত ওঁহা মধ্যে যাইয়া শয়ন করহ। এবং সে সেই নিদাতে আছে, তাহারি ছারা এ দুস্টের নিপাত করিতে হইবে। ইহা दिव कतिया मुटे छाटे याटेया दिमालरात् माटे थेटा প্রেশ করিয়া অন্তর্ধ্যান হইলেন। কাল্যবনও দেই গুহা প্রবেশ করিয়া দেখে, এক জন পুরুষ শয়নে আছে। মহাকোপে বলিল, অরে পাপিছ, এখন বড় শুন্তি হটয়া নিদাতে মন দিয়াছ? পশাৎততী যম আছে, তাহা জানহ না? ইহা বলিয়া ভাহার বক্ষস্থলে দডেতে পদাঘাত করিল। রাজা মুচুকুল পদাঘাতে নিদা ভঙ্গ হইয়া দৃষ্টি করিবামাত্র কালয়বন ভক্স-রাশি হইল। এই প্রকারে কালয়বন ক্ষয় হইল; এই শাব্রোক্ত ঘরন विवर्ग सानित्तन। इंडि ।

VIII.—Letter of a Futher to his Son.—Nárad and Parbat.

পিতা পুত্রকে এবং পুত্রতুল্য সমস্তকে।

প্রাণপ্রতিম প্রাণ্ড অমৃক পর্ম কল্যাণবরেষ।

চির্কাল গতে ওখানকার সমাচারপত্রদারা জাত হইলাম, রঘুনাথের আাত্মবিষ্মৃতি কারণ লিখিতে লিখিয়াছিলা, তাহার বিশেষ লিখিতেছি, অবগত হইবা। পুর্বেকালে সতামুগে সূর্য্যবংশীয় রাজা অম্বরীশ নামে মহাপণ্যবান দাতা সভাবাদী প্রম বৈষ্ণ্যব ছিলেন; আপনি লক্ষ্মী তাহার কন্যা হইরাজনিয়াছিলেন, তাহার নাম গ্রীমতী প্রমস্করী পশ্মিনী কন্যা, ভাহার রূপের প্রতিযোগিতা পৃথিবীতে কাহার সহিত ছিল না। রাজা অতিথিতক বড়, প্রতিদিবস যত অতিথি আইনেন বিশিট রূপে সকলের সেবা করেন; বাৃক্সণ অতিথির পদ প্রকালনের জল জীমতী আনিয়া দেন। এই মতে কত কাল গতহয়। এক দিবস নার্দ ও পর্বাত দৃই থযি আছে-রীশ রাজার বাটীতে অতিথি হইলে রাজা মহা আমোদে আমোদিত হইয়া তাহাদিগকে অভ্যৰ্থন। করিয়া চর্ণ বন্দনা করিয়া দিংহাসন দিলেন, জীমতা জল আনিয়া মুনিদিগের চরণ ধৌত করাইতেছেন, এই সময় কন্যার মুখাচন্দ্রিমা আলোকন করিয়া মুনিরাদুট জনেট মদনাসক্ত হটয়া টচ্ছা ক্রি**লেন এ**ট কন্যাকে বিবাহ করি। মহাঞ্যি নারদ মনে২ বিবেচনা করিলেন, আমি পূর্বের বুন্ধার দাক্ষাৎ নিয়ম করিয়া দারা পরিত্যাগী হই-য়াছি,এখন এ কন্যাকে দেখিয়া অশক হইলাম ; অতএব নিয়মচ্যুত হইয়া এ কন্যাকে বিবাহ করিতে হউবে; উহাতে আমার নিয়মভঙ্গ জন্য মহাপাপ্ত ৰীকার। পর্য়ত মূনিও মনে ২ এই মত বিবেচনা করিলেন। এই ভাবনাতে দুই জনে সমন্ত রাত্রি যাপনা করিয়া প্রাভারানের পর রাজার সল্লিকট উপস্থিত হইলেন। প্রথমে নার্দ মূনি রাজাকে ডাকিয়া নিজ্জনে কহিলেন, শুন মহারাজ, দকলই জানহ; আমি দারত্যাগী দেবঞ্ষি, এইক্লণে তোমার কন্যাকে দেথিয়া আমার দারগৃহণ ইচ্ছা হটল; তোমার কন্যাকেট বিবাহ করিব, তুমি তাহার আয়োজন করহ। ইহার পশ্চাৎ পর্ব্বত মুনিও তথার যাইরা নারদের সাক্ষাং রাজাকে কহিলেন, মহারাজ, পুর্বের আমি পণ করিয়াছি হোমার এমিহী নামা কন্যাকে বিবাহ করিব, তল্মিনিত আগমন করিয়াছি; বিবাহের উদ্যোগ করহ। রাজা এ কথা খনিয়া বিস্ময়াপন হইয়া কহিলেন, চাক্র, আমার এক কন্যা প্রামতী, তাহার অভিলাষী আপনারা দুই জন, কেহ দামান্য নহ, আমি কাহা-কে প্রদান করিব? এক জন ক্রোধ করিলেই রক্ষা নাই। রাজা ইহা হলিয়া মৌনাবলম্বী হইলেন। পরে মুনিরা কহিলেন, মহারাজ, ইহার এক বিবেচনা আছে; প্রীমতীকে শ্বরম্বরা করাও; তাহার যাহাকে ইচ্ছা হইবে তাহাকে বরণ করিবেন, ইহাতে তুমি আমাদিগের কাহারো কাছে অপ- বাধী হইবা না, পরে বিধিমতে সেই বর্ণীয় পাত্রকে দান করিবা, বাজা শুনিয়া কহিলেন, যে আজা; হবে আপনারা কল্য আগমন করি-বেন, যে আজা করিলেন, উহাই হইবেক। মুনিরা বলিলেন, তথাশ্ড। পথে যাইতে ২ পরদপর অধ্যকরণে বিবেচনা করিতেভেন, আমরা महे अन श्वि, कना कि इस ना जानि। नादम वित्वहना कतिरहरणन, आ-মার নাম কিছু ব্যাপ্ত কটে, কিন্তু পর্যভহইতে কয়োধিক এবৎ ক্রুপ; পর্বত যুবা এবং রূপবান; স্ত্রীলোকের প্রথমে স্থামির রূপাকাঙ্কা, গুণের विद्यान। পশ्চাৎ क्रिक् करत, उद्दार हुआ यात्र कमाहिए असे उदक छात করিয়া আমাকে বরণ করে, অতএব ইছার একটা উপায় করিতে হইবেক। পরে বিষ্ণালোকে উপদ্বিত চইয়া নারায়ণ সহিত আলাপ সম্ভাষ কতক্ষণ इडेल; उपसन्तरत निर्वापन कतिरलन, প্রভো, আমি দার্তাগী তাহা अवश्व আছেন; কিন্তুরাজা অম্ববিশের কন্যা শ্রীমতীর মুখ দশন করিয়ামো-हिड, आत रेश्यावलयन एडेएड भारत ना; आणि निराम छन्न करिलाम; দেই কন্যা বিবাহ করিব, এমত বাসনা হইয়াছে; এবং প্রত মুনিও দেইমত; আম্রা দুই জন কলা দে খানে ঘাইব, রাজার পণ কন্যা স্বেচ্ছাধীন যাহাকে বর্ণ করিবে ভাহাকে সম্প্রান করিবেন। ভাহাতে আমি বিবেচনা করিয়াছি, পর্মাত মুবা এবং রূপবান, আমি বুড়া এবং কুৎসিত, অতএব আমাকে কদাচিৎ বরণ করে, উপায় ব্যতিরেক ইন্ট সিদ্ধ হওয়া ভার; আজা করুন কন্যা যেন কল্য পর্বতের মুখ দেখে বানরের মুপের ন্যায়। বিজ্বলিলেন, তথান্ড। এই বরপ্রাপ্ত হট্যা আ-হলাদক্রমে প্রস্থান করিলেন। পর্বাত বিবেচনা করিতেছেন, বান্ধার অনু-মতিতে আমরা কল্য প্রাতঃকালে দে স্থানে যাইব, তাহাতে কি হবে? নার্দ মহাতপা, আমি তাহার শতাৎশের তুলা নহি; তাহাকে তাাগ করিয়া আমাকে কোনু ওণে বরণ করিকে? অতএক ইহার উপায় নারায়ণ বিনা দেখি না। এইমত ভাবিতেছিলেন, তথান নার্দ ফিরিয়া ঘান। পর্মত কহিলেন, নারদ, তৃমি এই স্থানে হলণ কাল ডিষ্ঠ, আমার একট। নিবেদন অপেক্ষা আছে, তাহার প্রহুল করিয়া আদি। পর্যাতও দেউ মত প্রভার সাক্ষাৎ হটয়া সমস্তুনিদেন করিলেন, প্রভো, এই ২ মত হট-য়াছে, ইহাতে উপায় কেবল আপনি; আজা করুন কলা যেন কনা। না-রদের মথ দেখে ভলকের মুখের নাায়। বিজ্ বলিলেন, তথাদ্য এই মতে দুই জন দে দিবস যাপন করিয়া প্রদিন প্রাতঃকালে প্রাতঃয়ানাদি সমাপন করিয়া শুক্ল বস্ত্র পরিধান করিলেন, গঙ্গামৃতিকার তিলক করি-लन, शक्कां होते इहेता छे हतीय वस्त्रपा कत निनिष्ठे कतिया वास्पूर्तीएड ষাইয়া উপস্থিত হইলে রাজ। কন্যাকে বন্ত্রালক্ষারাদি ভবিতা করিয়া চতুর্দোলারোছণে মুনিরাজ্বদের সমূথে উপস্থিত করিলেন। কন্যা দে-খে এক জন ভল্ক, আর জন বানর। কন্যা ইহার কিছু বিবেচনা করিয়া

পান না, ভাবিতে লাগিলেন, পিতা কহিলেন, নারদ মূনি আর পর্বত मुनित आंगमन रहेशाएए, हेराता किला? डाँराता काशाय कालन? हेरा ভাবিয়া হবিত হইয়া দাখাইল। সকলে দেখে শুনাহইতে এক জন দ্বিসূজ র্থারোহে বায়ু গতিতে আসিয়া কন্যার হন্ত ধারণ করিয়া নিয়া পুনর্বার উদ্ধে গতি করিল এবং রাজসভাতে হাহাকার শব্দ হইল। নার্দ মূনি ও পর্বত মূনি মহাক্রোধে প্রজবলিত হইয়া ত্রিভূবন স্থানে অবে-ষণ করিয়া বৈকুঠে যাইয়া নারায়ণের সাক্ষাতে শাপ দিল; কহিল, প্রভো, খন, আমাদের এই ২ গতিক হইয়াছে; কোনু বেটা আমাদের এমত মন-স্তাপ দিল? ইহা আর কাহারো দাধ্য হয় নাই,দেবতা বেটারাই করিয়াছে; কে করিল বিশেষ জানিতে পারিলাম না। ভাল, এই কহিতেছি,যদি আমর। বাহ্মণ হই,ভবে যে দেবতা ইহা করিয়াছে, সে নরঘোনি প্রাপ্ত হউক, এবং যেমত রাক্ষণবৃত্তি করিল, তাহার জ্ঞা রাক্ষণে হরণ করিবে; সে আত্ম নিমৃতি হইয়া পৃথিবীতে জন্ম লউক। অভিসম্পাত শুনিয়া বিষ্ণু करिस्मिन, अ कि कर्म्म कदिला? असरोर्गद कना। श्रीमधी मक्ती अवठाद হইয়াছিলেন, তাহাকে আমি আনিয়াছি; অতএব এখন কি হইবে? নারদ কহিলেন, তবে কেন আপনি পূর্বেক কহিলা না? যাহা হউক, আ-মাদের শাপ অন্যথা হউবে না, তোমার আবশ্যক আছে রামরূপে আজা বিষ্ঠি হইয়া রাজা দশর্থের গৃহে জন্ম লইবার; তাহার বিব-রণ বাল্মীক রামায়ণে বাল্লা আছে, আবশাক হয় দৃষ্টি করিবা। ইতি।

IX.—Another.—Account of Bhágirathi.

পুল্রকে ও পুল্রতুলা সমস্তকে।

পরম কল্যাণবর প্রীযুত অমুকং পরম কল্যাণবরেষ্। তোমাদিগের মঞ্লাদি সমাচার অনেক দিবদ পাই নাই, তাহাতেই ভাবিত আছি; সমাচার বিশেষ লিখিবা। চিরকাল হইল তোমার খুলতাত গলা পৃথিবীতে আগমন হেতু সমাচার প্রশন করিয়াছিলেন, তথন তাহার বিশেষণ প্রাপ্ত ইইতে পারেন নাই। এখন আনুপুর্বক লিখিতেছি, তাহাকে দিয়া সমাচার লিখিবা। এক কালে মহাদেব বিস্কুর সাক্ষাতে বীণা যয়েগান করিতেং মহাবিষ্কু মহাদেবের গানে আমোদিত হইতেং মহানিদ্দেব হইলেন, সেই দুবের নাম হইল গলা; বুজা পরম যতেনতে সেই জল কমগুলু করিয়া রাখিলেন। শাস্তে বলে তিনি মহাবিষ্কুর শক্তিশক্তিরপা দুবময়ী পতিতপাবনী, তিনি বুজা লোকের কমগুলুতে আছেন, তাহা অন্য কেছ জানে না বিষ্কুতিয়। পৃথিবীতে সগর রাজা মহাবল পরাক্ষম দানে মহাদাতা মহা প্রাবান, তাহার যশের সীমা নাই, তাহার

ষাটি সহসু পুত্র। রাজা ধর্মাচারকার্য্য অসমেধ যজ্ঞ আরম্ভ করিলেন, বুড়ী হইয়া অখ ছাড়িলে অন্যং বিস্তুর লোক ও আপনার ষাটি দহসু পুত্রকে অখের রক্ষার্থে নিযুক্ত করিলেন। আপনি ইন্দ্র অখ হরণ করিয়া পাতাল পুরীতে কপিল সন্নিকটে বন্ধ করিয়া রাশিলেন। এখানে সগর পুত্রেরা সৈন্যসামন্ত সমেত পৃথিবীর চতুর্দিন বেন্টন পূর্বাক ঘোটকের অনুসন্ধান করিয়া ফিরেন, উদ্দেশ কোথাই পান না, ইহাতেই বিবুত কত কাল গত ছইতেছে। ইতিমধ্যে নার্দ মহামূনি নর্লোক ভ্রমণে ছিলেন, সগর পুত্রদিগকে কহিলেন, তোমাদের বরিত ঘোড়া চোরে নিয়া পাতালপুরীতে রাখিয়াছে। ইহা শুনিয়া সগরপুত্রেরা সেই স্থানে বসুধা খনন করিয়া পাতাল প্রবেশ করিল, দেই খাতের নাম হইল সাগর, তাহার অর্থ এই সগরদের কৃত সাগর। সগরপুত্রেরা পাতাল প্রবেশ করিয়া দেখে এক স্থানে ভাহাদের দৈস্কর অখ বন্ধ আছে, এবং এক জন তাহার নিকটে বিদিয়া তপদ্যা করিতেছে। দগরপুভেরা অনুমান করিল এই বেটা চোর, আমাদের হয় চুরি করিয়া আনিয়াছে, এখন আমাদের আগমন জাত হইয়া ভও তপদ্যা আরম্ভ করিয়াছে, অত-এব ইহাকে প্রথমে সংহার করহ। সে তপদ্মী কপিল মহামুনি তপদ্যাতে আছেন; তাহারা বিবেচনা না করিয়া চোর ভুমে কপিলকে ডাড়না আরম্ভ করিল, পরে কপিলের নেতানলে তাহারা ষাটি সহসু পুত্র ও সমস্ত দেনা শুরু হইয়া গেল, অতএব ঘোড়ার উদ্দেশ হইল না। ঘোড়া ব্যতিরেক যজ পূর্ণ হয় না। সগরের আর এক পুত্র অতি ধার্মিক, দেই যাইয়া অন্থেষণ করিতে ২ নার্দোপদেশে পাতাল প্রবেশ করিয়া আ-পন ঘোড়া কপিলাশ্মে পাইল, এবং বহুমত প্রকার স্তব করিয়া কপিল মুনিকে বশীভূত করিল। তুট হইয়া মুনি কহিলেন, তোমার ভাতার। দুষ্টতা প্রযুক্ত আমার কোপানলে ভদ্ম হইয়া গিয়াছে, বুলকোপে তাহাদের অধোগতি হইয়াছে, তাহাদের মুক্তির উপায় আর নাই, কেবল পতিতপাৰনী গলা তিনি বুদ্ধলোকে আছেন, তাঁহাকে আনিতে পা-রহ, তবে ইহাদের উদ্ধার হইবেক, নতুবা আর উপায় নাই। তিনি ইহা খনিয়া ঘোড়া লইয়া যাইয়া যজ্ঞ পূর্ণকরিলেন;পরে গলা আনয়ন চেষ্টায় ব্যস্ত এবৃৎ কপিলের আগে প্রকাশ করিলে বশিষ্ঠ তাহাদের পুরোহিত তিনি বলিলেন, তবে বুক্মার প্রদন্নতা ব্যতিরেকে কার্য্য সিদ্ধি **হইতে পারে না; অতএব আমি তোমাকে বুল্গার মন্ত্রপ্রদান করি,তুমি** হিমালয় পর্বতে ঘাইয়া নুক্ষার সাধনার্থে তপস্যা করহ। তিনি সেই মত করিতেং প্রাণত্যাগ করিলেন, কার্য্য দিন্ধি হইল না। তাহার পুক্ত রাজা ডিনিও সেই মতে প্রাণভ্যাগ করিলেন। সগর নির্বংশ হইলেন, মহারাক্ষ্য রক্ষা পায় না, কেবল দুই বিধবা রাণীমাত্র শেষ। সমস্ত वाख कांत्र रेनववानी इहेन, मुहे तानीटक वन, छाहाता मुहे झटन मन

করুক, তাহাতে এক জন গর্ৱবতী হটয়া পুত্র প্রদাব হটবে; দেট পুত্র সমস্ত রক্ষা করিবে; সেই হউবে কুলের দীপক। এই মতে দুই রাণী করিলে কনিষ্ঠ রাণী গর্ত্তবতী হ'ইল, দশম মাদে পূর্ণ চল্রের ন্যায় সুন্দর পুত্র জন্মিলে দৈববাণী জয় ২ কার হইল, এবং বালকের উপর পৃত্প বৃষ্টি হইল; দর্বত দকলেই হ্যাতঃকরণ পুত্রের জাত কর্ম বিধিমতে করিয়া আমোদযুক পুলের প্রতিপালন করিতে ২ মহারাজ ভগীরথ মর্ম ওণেডেই তৎপর হইলেন; মহাবলবান উনুতপা প্রজার প্রতিপালন বিধিমতে করেন। পরে শুনিলেন তাহার পূর্কপুরুষেরা পাতালে কপি লাশ্রমে বুদ্ধ শাপে ভাগ হ'টয়া র্টিয়াছেন, ভাহাতে থিদামান হটয়া পিতৃলোকের উদ্ধারার্থ সচেন্ট হইলেন, শ্বনিলেন তাহার পিতা ও পি-তামহ পিতৃলোক উদ্ধার জন্য তপ্যযায় প্রাণত্যাগ করিয়াছেন, কিন্তু কার্য্য সিদ্ধি করিতে পারেন নাই। ভগার্থ বিবেচনা করিলেন, ভবে তা-हारमत य गिष्ठ हहेगारक, आभाव ९ मिहे गिष्ठ, उरव मिवडा यांहा कल्ला। ভিনিও সেই মত হিমালয়ে ঘাইয়া মহাতপদ্যা করিয়া বুদ্ধাকে ত্ঠী করিয়া গন্ধার অনুসন্ধান ভাঁহার স্থানে পাইলেন। বুক্লা কহিলেন, কহ, গঙ্গানাম এখন পঘার আমার প্রবণে প্রবিষ্ট হয় নাই, আমি ভাহার তদস্ত কি জানিব ? তুমি যাইয়া বিফুর তপদ্যা করিয়া তাহাকে দিদ্ধি কর্হ, তাহার প্রসন্নতা হউলে দর্ম দিদ্ধি হউবে, নতুবা উহার আরে উপায় নাই। তদনতরে ভগীরথ বুকার আজাতে সহসু বংসর অনাহার তপস্যা कतिरल विख् धामन रहेशा वत्नारन यञ्जवान रहेरल छ्तीत्थ विधि-মতে ছতি করিয়া কহিলেন, প্রভো, পিতৃগণ উদ্ধারার্থ পতিতপাবনী দুব-ময়ী গঙ্গা প্রাপ্তি বর আজা হউক। বিজু কহিলেন, তথাস্ত; কিন্তু গঙ্গা বুক্সলোকে আছেন, আমি তথা ঘাইরা ভোমাকে গঙ্গা প্রদান করিব; ভাবনা নাই, তুরি স্থির থাকহ। পরে বিফু ভগীরথকে সহিত লইয়া বুদ্ধা-लाटक यांचेशा এक कालीन भाग कतिया नुकाए ३ व जल इत्व किटलन। বুক্সা বিচ্ছুর আগমনে কোটী ২ প্রণাম করিয়া রক্তনাসন বসিতে দিলেন, পাদ্য দেওনের জল পান না, ইহাতে অতিবাস্ত হইয়া বুদ্ধলোক বিষ্ট্ লোক সমস্ত মর্গ ও পৃথিবী ও পাতাল ত্রিভুবন ভূমণ করিলেন; কোথাও জল পাইলেন না। অতি অপরূপ কি করিবেন, ভাবিয়াুপান না। সর্বতে রটন করিয়া পুনর্কার বিচ্ছু সমুখে আদিয়া দাভাইবামাত সৃতি হইল, আমার কমওলুতে না জল আছে, তবে আমি জলাভাবে এমত বাগু হই কেন? কমওলু সমেত দেই মহাবারি আনয়ন করিয়া বিফুর যুগলপদ ধৌত করিলেন, ভাহাতে তিন ধারা বেগবতী হইলেন, এক ধারা স্বর্গে স্থিত করিলেন, তাহার নাম মন্দাকিনী হইল, তিনি মুর্গগঙ্গা; দ্বিতীয় পাতালে, ভাহার নাম ভোগবতী, তিনি পাতালগঞ্চা; তৃতীয় ধারা ভগীর্থকে প্র-দান করিয়া কহিলেন, এই মহাবন্ধ পতিতোদ্ধারিণী দুবময়ী, তুমি পৃথিবীতে

লটরা যাও, ভোমার পূর্রাপুরুষ উদ্ধার করত, এবং তাবং পাপী ইহাঁর भारत के भाक्त भन भाजितक। किन्छ उमि किया छ लहेशा घाइरा? हेहाँ व বেগ ধারণ করিছে পৃথিবীর সাধ্য নহে; তিনি পতন হইলে পৃথিবী রুসা-उटल श्रमान कतिरवन, उरव मृष्टि नाम बन्दत। नेबाद रवन धादन करत এমত আর কেহ নাই, কেবল মহাদেব, অতএব তমি ঘাইয়া শিবাবা-ধনা করহ, তাঁহার প্রসন্নতা ব্যতিরেক ইহার উপায় নাই। ভগীর্থ নি-রূপায় কতকাল হরের তপদ্যাতে নিযুক্ত হইয়া তাহাকে প্রদল্প করিলেন। মহাদেব হিমালয় পর্কতে বসিয়া মন্তকে গঙ্গার বেগ ধার্ণ করিয়া মত হট্যা গেলেন, মন্তক্ষটতে ত্যাগ করিতে চাহেন না, এবং গঞ্চা চির্কা-লাবধি শিবজটার মধ্যে ভ্রণ করেন, বাহির হউতে পথ পান না। গঞা এই সময় বিজ্ঞা পালোদক হইলেন, ইহাতে ভাহাকে শাস্ত্রে বলে বিষয় পাদোন্তবা গঞ্চা। ভগারথ মহাদেবের মাধনা করিলে আশুভোষ মহাদেব প্রমল্ল হট্যা আপনার জটা বিদার করিয়া দিলেন; দেই ছিলে ভাগীর্থী বাহির হইয়া হিমালয়ে পড়িলে পর্বতহইতে বাহির হওনের পথ না পাওনে ভগীর্থ নিফুপায় হইয়া থাঁনিতে লাগিলেন গঙ্গা আপনি ভালাকে কহিলেন, পূত্র, হিমালয় বিদার করে এমত ব্যক্তি অন্য কেছ নাই, কেবল এরাবত, অতএব তুমি ইন্দ্রের স্কর করহ, তথাতিরেকে উপায় নাই। ভগীরথ গলার আজার ইন্দ্রের স্তব করিলে সূরপতি ममग्र बड़ेगा खेतादड कत्वक अर्थाड विनात कतिया निस्त रवश वाहित रहेशा श्रुक्तंगृत्थ फरत्ता याहेत्। हिल्लन। हेराट छतीत्थ करिल, মাগ্র, আমি শুনিয়াছি আমার পিতৃলোক দক্ষিণে। ইহা শুনিয়া বেগ পুর্বেষ যাইতেছিলেন, তাহারি কিঞ্ছিং রাজমহলের নীচে দিয়া দক্ষিণ মুখে বেগবতী হইলেন; বড় ধারা পুরুর দেশে গেল, তাহার নাম হইল পদা। এ দিনে বেগ হাতিয়াগড পর্যাত আইলে গলা জিজামা করিলেন. ভগার্থ, ভোমার পিত্লোক কোথায়? সে বলিল, মাতঃ, আমি স্থানি-साछि এই मिर्ता, निक्य वलिए शादि ना। हेशाए शंभा मह खारन अक मह ধারা হইয়া অন্বেষণ ক্ষিতে ১ সকল সাগরে পড়িয়া সগর্থনিত খাত দিয়া পাতাল প্রবেশ করিয়া সগর বংশ উদ্ধার করিলেন। তাহারা সমস্ত র্থারোছে মুর্গে পতি করিল। ভূগীর্থ আনীতা পঙ্গা ইহাতে তাহার নাম হটল ভার্নার্থী। গঙ্গার পৃথিবাতে আগমন প্রদল্প এট লানিবা। ইতি।

বত্রিশ সি॰হাসন ৷

1 .- Finding and disposing of the Throne.

দক্ষিণ দেশে ধারা নামে এক পুরী জিল, সেই নগরের নিকটে দল-দকর নামে এক শাসাক্ষেত্র থাকে; ভাহার কৃষকের নাম যজাদত। দেই কৃষক শ্দ্যক্ষেত্রের চ্ছুদিলে পরিখা করিয়া শাল তাল তমাল পি-য়াল হিম্বাল বক্ল আমু আমুহেক চম্পক অশোক কিংশুক বক প্রবাক माहिष्कल मान्यक मान्यों मालशे गृशे खांशे प्रवती कनली नांजियी তগর কুন্দ মলিকা দেবদায়ে প্রভৃতি নানা জাতীয় কুক্ষ রোপণ করিয়া এক উদ্যান করিয়া আপনি দেই উদ্যানের মধ্যে থাকেন। দেই উপ-বনের নিকট নিবিড় ভয়ানক বন ছিল, নে বনহউতে হন্ত্রী স্যাহ মহিষ গাঙার বানর বনশ্কর শসক ভাল্ক হরিণ আদি অনেক পশ্ম জন্ত প্রতাহ আদিয়া শ্যা নফ করে। এজনা যুদ্ধর অতাদ উলিগু হইয়া শ্যা রক্ষার কারণ ক্ষেত্রের মধ্যে এক মঞ্চ করিয়া আপেনি তথাতে থাকিল। মঞ্জের উপরে যভক্ষণ ব্যারা থাকে, ভভক্ষণ রাজাধিরাজোর যে মত প্রভাপ ও শাসন ও মন্ত্রণা, সেই মত প্রতাপ ও শাসন ও মন্ত্রণা কৃষক করে। যথন মঞ্চটতে নামে, তথান জড়ের প্রায় থাকে। ইহা দেখিয়া কৃষকের পরিজন লোকেরা বড়ট বিশিত হইয়া প্রস্পার কহে, এ কি আ হ্রাই্যা এই বৃত্তান্ত পোক প্রস্প্রাতে ধারাপুরীর রাজা ভোজ খনিলেন।

[•] The style of this work is far superior to that of the two preceding. King Vikramaditya is supposed to have been a contemporary of Casar. He was the Augustus of India, being the patron of Sanscrit poets.

The title hterally means the thirty-two thrones; it should rather be the thirty-two images of Vihramadilya's throne. Each of these images is introduced as relating a story descriptive of the princely character of that king, and showing that a prince worthy of succeeding him cannot be found.

অন্তুর রাজা কেত্রকাবিষ্ট হটয়া মন্ত্রি সামল্প সৈন্য সেনাপতির সহিত মঞের নিকটে গিয়া কৃষকের বাবহার প্রহাক্ষ দেখিয়া আপনার অহাও বিশাসপাত্র এক মন্ত্রিকে মঞের উপরে বদাইলেন। দেই মন্ত্রী যাবং মঞের উপবে থাকে তাবং রাজাধিরাজের প্রায় প্রভাপ ও শাসন ও মন্ত্রণা করে। ইহা দেখিয়া রাজা চমংকৃত হইয়া বিচার করিলেন যে এ শক্তি মঞ্জের নর এবং ক্যকেরও নর এবং মার্রও নর, কিন্তু এ স্থানের মবেট চমংকার কেনিহ বাদ আছে, তাহারি শক্তিতে ক্ষক রাজাবিরাজ প্রায় হয়। ইহা নিশ্চা করিয়া দুবে।ব উদ্ধার পার্থ মেই শ্বান খনন করিতে মহারাজ আজা দিলেন; আজা পাইবা ভুতারগেরা খনন করিল। তথপর দেই স্থানহটতে প্রবাধ মূকা মানিকা হীরক সুগাকাত্ত চল্রকার নীলকার পদারাগ মণিগণেতে দ্রাতি ব্রেশ প্রালকাতে শো-ভিত তেজোমর এক দিবা রজনদে৲হামন উঠিল। মেট মি৲হামনের হেজে রাজা ও রাজার পরিজন লোকেরা মিংহামন প্রতি অবলোকন করিছে পারিলেন না। তৎপর রাজা লাফটিত হইয়া আপনার রাজ-ধানীতে সিংহাসন আনয়নের ইচ্ছা করিয়া ভূচাবগ্রু আজা করি-লেন। আজা পাইয়া ভ্রাংগেরা দিংহাদন চালন কারণ অনেক যতন করিল, সে স্থানহউতে দিংহাদন লড়িল না। তৎপর আকাশবাণী इडेल, या एइ तालन्, नानाविध वख जलकातानि उपकर्ण निरा अ निर-ছাসনের উদ্দেশে পূজা বলিদান ছোম কর, হবে সিংহাদন উঠিবে। ভাষা খনিয়া বাজার সেই রূপ করাতে সিৎহাসন অনায়াসে উঠিল।

তংপর ধারা নামে নিজ রাজধানীতে সিংহাসন আনিয়া ধর্ণ রূপ্য প্রবাল সফটিকময় হয়েতে শোভিত রাজসভাষানের মধ্যে স্থাপিত করিলেন। পরে রাজা দেই সিংহাসনে বসিতে ইচ্ছা করিয়া পণিত লোকদিপকে আনাইয়া খুভক্ষণ নিক্পণ করিয়া সূত্যবগকে অভি-ষেক সামণী আয়োজন করিতে আজা করিলেন। ভূতাবণেরা আজা পাইমা দ্বি দ্বা চন্দ্ৰ পূক্ষ অগোর কৃত্য গোরেটনা তত তরাম চামর ময়ুরপুক্ত অস্ত্রশন্ত্র পতিপুত্রবতা স্ত্রাগণের হত্তেছে দর্পণাদি অধি-ताम मामनी मश्रतीला अधितीत हिएक एड डिजिड अक त्याघ हमा, अहै সকল শাস্ত্রোক ব্রজাভিষেক সামগ্রী আয়োজন করিয়া বাজার নিকটে নিবেদন করিল। তথপর জ্রাভোজরাজ ধরু পুরোহিত বাজা। পণিতবর্গ মন্ত্রী সামস্থ দৈনা সেনাপতিতে বেন্টিত হটনা সিংহাসনে বসিয়া অভি-ষিক্ত ছইবার নিমিত্তে সিংহাসনের নিকটে উপথিত হউলেন। ইথাবনুরে मिरहामानत প्रथम প्रतिका तालाक कविटा माधितन, व ताकन, ন্তন, যে বাজা ওণবান অত্যন্ত ধনবান অতিশয় দাতা অত্যন্ত দয়াল चाउ तफ गुरु माखिकदछात मना छेश्मादमील প्रतल প্रधाल इन, मिहे बाक्षा अहे मिश्हामत्म विगवीत धाला, खना मामाना बाक्षा उप-

যুক্ত নয়। ইহা শ্বনিয়া রাজা কহিলেন, হে পুরুলিকে, আমি গাচ্ঞা মাত্রে উপযুক্ত পার বুনিয়া দার্ক লক্ষ সুবর্গ দি, অতএব আমাহইতে অধিক দাতা পৃথিবীতে অন্য কে আছে? ইহা শ্বনিয়া পুরুলিকা উপহাদ করিয়া কহিলেন, হে রাজন্ শুন, যে লোক মহং হয় দে আপনার ধণ আপনি বর্ণনা করেনা; হুমি আপন ধণ আপনি ব্যাখ্যা করিলা> ইহাতেই বুনিজাম হুমি অতি ক্ষুণ। বড় লোক সেই, যার ধণ আনো বর্ণন করে; আপনার ধণ আপনি বন্ন করেণতে কিছু ফল নাই, পর্ভু লোকেরা নিল্লাজ্ব বলে। যেমত যুবতী জার আপন স্থান মর্লন আপনি করিলে কিছু দুখ নাই, কিন্তু লোকেরা নিল্লাজ্ব বলে। পুরুলিকার এই বাক্য শ্বনিয়া রাজা অত্যাধ লাজিত হইরা কহিলেন, হে পুরুলিকা কহিলেন, মহারাজ, দিৎহাদনের ব্রাফ্রন।

II .- Account of the Throne.

আবস্তা নাম নগরেতে ভঙ্হরি নামে এক রাজা ছিলেন; ওাঁহার আছেষেক কালে প্রীবিক্রমাদিতা নামে ওাঁহার কনিষ্ঠ ভাুতা কোনহ অমপমান পাইয়া মদেশ ত্যাগ করিয়া বিদেশে গেলেন। এভ ইহরি অভিষিক্ত হটয়া পুততুলা প্রজা পালন দুফৌর দমন এই রূপ পৃথিবী পালন করেন। অনঙ্গদেনা নামে রাজার পট্রাণী আপন রূপ ওণেতে রাজাকে অতাত্ত বশীভূত করিলেন। দেই নগরে এক ব্রাহ্মণ ভুবনে-খরী আরোধনা করেন, আরাধনাতে সভ্যটা হটয়া দেবী প্রত্যক্ষ হট-লেন ও কহিলেন, হে ব্রাহ্মণ, বর প্রাথনা কর। ব্রাহ্মণ আনেক স্কর বিনয় করিয়া কহিল, হে দেবি, আমার প্রতি যদি প্রসল্পা হইয়াছেন, **उटत आभारक अन्रतामत कल्लन। हेटा धनिया स्तरी मस्तरी ट्रेया नाम्मण्टक** এক ফল দিলেন ও কণিলেন, এ ফল ভক্ষণ করিলে অজার অমর ছটবা। দেৱী এট রূপ বর দিয়া অন্তৰ্ধ্য:ন হটলেন, ব্ৰাহ্মণ আপন গুছে আইলেন। প্রদিবস স্থান পূজাদি নিত্য ক্রিয়া করিয়া ফল ভক্ষণ করিতে বদিয়া মনে বিচার করিলেন, আমি অতি দরিদ ভিক্ক, আ-মার দীর্ঘকাল জীবনে প্রয়োজন কি? রাজা ভর্তহরি পরম ধার্মিক, ওাঁছার দীর্ঘকাল জীবনে অনেকের ভাল হইবে। এই বিচার করিয়া दाक्रमञ्चाद्य आमिशा दाक्षादक आमीर्खान कृतिया स्म कल मिलन, এবং দে ফলের বৃত্তান্ত কহিলেন। রাজা ফল পাইয়া আহ্লাদিত হইলেন, বুক্ষিণের অনেক পুরস্কার করিলেন। ব্রাহ্মণ আপন ঘরে গেলেন; রাজা অন্তঃপুরে গিয়া রাণীকে অন্তান্ধ ভাল বাসেন, এই প্রযুক্ত রাণীকে সেই ফল দিলেন এবং ফলের বৃতাত কহিলেন। রাণী প্রধা**ন মুদ্রি**র সটল

তাকেন, এই জন্যে দেই ফল প্রধান ম্বিকে সৃত্তি কৃত্তি। দিলেন। প্রাম মন্ত্রী এক বেশ্যাতে অনুব্রু ছিলেন, সেই বেশ্যাকে বৃত্তাৰ क हिन्। मंडे कल निल्लन। (तणा। मंडे कल भाडेगा विष्ठांत क तल, এই ফল যদি আমি রাজা ভতুহরিকে দি, থবে অনেক ধন পাইব। এই প্রামশ করিয়া দেই ফল রাজাকে দিল। রাজা দে ফল পাইয়া আহিশ্য তিনিত হউলেন। এই ফল আমি বাণীকে দিয়াভিলাম, এ র্ণিকার স্থিত রাজীর আত্যবিক প্রীতি কি রূপে হটল? অনুস্কান कावहा ममञ्जू तृताचु स्नानिस्नन। अन्यत् मरमात् विषया नित्क दहेगा ক্লা পদ্রাদি বিষয়ে দোষ বিবেচনা করিলেন। আমি লে স্থাকে প্রাণ-তইতে অবিক প্রিয় করিয়া জানি, সে আমাতে বিরক্ত হট্যা ম্থিতে অনুবক্তর; সে মন্ত্রির রানীতে বিরক্ত হট্যা বেশ্যাতে অনুরক্ত্যা, সে দেশ্যাবও মন্ত্রিতে অনুবাগ নাই, ডেবল ধনেতে অনুবাগ; ভাতএব को প্রাদি বিষয়েতে প্রাতি করা ভ্রমাত। এই সকল বিবেচনা করিয়া বাজা শ্বাজ্য ভাগে কবিষা দনে গেলেন, ভথাতে নেতীৰও ফল ভক্ষণ ক্রিয়া যোগাক্ড হট্যা থাকিলেন। রাজা ভ গুঁপ্রির স্থান ছিল না; বাজ্য অবাজক হটল চোর দমার ভয় দিনে দিনে অভিশয় হটল, জাল্লি নামে বেতাল দে দেশে আত্রা করিলেন। ইহাতে মল্লিগণেরা আতাম উলিগু হইয়া রজ্যে রকার কাবণ রাজলফন্যুক এক ক্ষতিয় বালককে আনিয়া মেই দেশের রাজা যে দিবম করিলেন, মেই দিবস বাত্রিযোগে অগ্নিবেতাল আমিয়া মে রাজাকে নক করিয়া গেল। এট রূপ মন্ত্রিগণেরা মথন যাচাকে আনিয়া রাজা করেন, তথন ভাছাকে অগ্নিবেতাল নফ করেন, উচাতে নেশে রাজা ধির ১৯৫১ পারিলেন না। দুটে লোকের দৃষ্টভাতে দেশ দিনে দিনে নট হউতেলালাল; মন্ত্রিগণেরা রাজ্য রক্ষার্থে অহাত ভাবিত চইলেন, কে.নহ উপায় ধির ক্রিতে পারিলেন না।

এক দিবদ মন্ত্রিগণেরা চিডিত হউবা বনিয়া আতেন, উত্যবদরে প্রীবিক্রমানিতা আনা বেশ ধারণ করিয়া দভার মধ্যে প্রবিট হউলেন, মন্ত্রিদিগকে কহিলেন, এ রাজ্য অরাজক কেন ই মন্ত্রিরা কহিলেন, রাজ্য কন প্রবেশ করিয়াছেন; আমরা রাজ্য রক্ষার করেণ বর্থন যাহাকে রাজ্যা করি, রাত্রি হউলে ভাহাকে অগ্রিবেভাল নদ্ট করেন। ইতা খনিবা প্রীবিক্রমানিতা কহিলেন, অদ্য আমাকে রাজ্য করে। মন্ত্রির প্রিক্রিমানিতাকে রাজ্যার উপযুক্ত পাত্র কেথিয়া কহিলেন, অদ্য প্রভৃতি আপনি অবস্ত্রী দেশের রাজ্য হউলেন। আপনকার আজানুদাবে আমরা আপন আপন কর্মা করিব। এই রূপে প্রীবিক্রমানিতা অবস্থী দেশের রাজ্য ইইয়া সমস্ত্র নিবদ রাজ্যোপযুক্ত সুক্তোগ করিবা রাত্রিকালে অগ্রি- মাল্ল আল্ল ব্যশ্বন দৰি দুগ্ধ ঘৃত নবনীত চল্দন পুষ্পমালা নানা প্ৰকার স্গন্ধি দুব্য প্রভৃতি সামগ্র গৃহের মধ্যে রাঝাইয়া সেই গৃহেতে আ পনি উত্তম শ্যাতে জাগিয়া থাকিলেন। তার পর অগ্লিবেতাল খড়্গ হস্তে করিয়া দেই গৃহের মধ্যে আদিয়া প্রতিক্রমাদিতাকে মারিতে উদ্যন্ত হউলোন। রাজা কহিলেন, অগ্নিবেহাল, খন; আপনি যখন আমাকে নউট করিতে আাদয়াছেন অবশ্য ন্ট করিবেন, কিন্তু আপনকার নিমিত্তে যে সকল খাদ্য সামগু করিয়াছে, সে সকল সামগুঁ। ভক্ষণ করিয়া পশ্চাতে আমাকে নট করিবা। আলুবেতাল ইহা শ্বনিয়া যে সক**ল** সামগুঁ ভক্ষণ করিয়া সন্তুট হট্যা কাজকে কহিলেন, আমি ডোমার প্রতি অংতার সভ্যট হইলাম; এই অবর্থা দেশ তোমটক দিলাম; প্রম দুখে ভোগ করহ, কিন্তু আমাকে এই রূপ প্রভাহ ভোজন কর।ইবা। রালাকে ইহা কাহয়া আগ্রবেডাল দে খান্হইতে ব্যানে গেলেন। রাজা প্রাতঃকালে নিত্য জিয়া করিয়া সভাতে বসিলেন। মন্ত্রী প্রভৃতিরা রাজাকে দেখিয়া আপন্থ মনে নিশ্চয় করিলেন, ইনি অগ্নিবেডাল-হউতে যথন রকা পাইয়াছেন, অতএব কোন মহাপুরুষ হইতেন। টিছা মনে বিচার করিয়া রাজাতে ভাকেণুক হটয়া এবং অতাও সা বধান হট্যা আপুনং কার্য্য করিতে লাগেলেন। রাজা ভয় ও প্রীতিতে মন্ত্রি প্রভৃতিকে আপন আজার অধীন করিয়া দওনীতি শাল্তের মতে রাজকর্ম করেন। প্রতিদিন রাতি হউলে আগ্নিবেহালকে পূর্বের মত ভোষান করান। এই রূপে উপায়েতে অগ্নিবেহালকেও বশ করিলেন।

অন্তর এক দিবস রাত্তিকালে অগ্নিবেতাল তে:জন করিয়া আন-ন্দিত হটরা বসিবা আছেন, দেই সমরে রাজা জিজাসা করিলেন, হে বেতাল, তুমি কি করিতে পার ? কি বা জান ? বেতাল কহিলেন, আমি যাহা মনে করি ভাষাই করিতে পারি, এবং সকলি জানি। রাজা কহিলেন, বল দেখি, আমার প্রমায়ু কঙা বেতাল কছিলেন, তোমার এক শত বৎসর আয়ু। রাজা কহিলেন, আমার বয়:ক্রমেতে দুই শূন্য পড়িয়াছে, দে ভাল নয়, অতএব শতের উপর এক বংসর অধিক করিয়া, কিন্তা শতহইতে এক বংসর নান করিয়া দেও। বেতাল কহিলেন, হে রাজন্ তুমি অংতি বড দালিকে দাতা দয়ালু ধার্মিক জিতেন্দ্রিয় দেব বুলিগণ পুজাক; তোমার আযুর্কার সম্পূর্ণ ভোগ হইবে, নাুনাতিরেক করিতে কেছ পারিবে না। ইহা শ্রনিয়া রাজা ওফট হইলেন, বেতাল আপন খানে গেলেন। পর রাত্রিতে বেতালের ভোজনের সামগুী না করিয়া যুদ্ধসজ্ঞাতে থাকিলেন। বেডাল আসিয়া ভোজন সামগুী কিছুনা দে-থিয়া রাজার যুক্ষসজ্জা দেথিয়া জুক্ষ হইয়া বলিলেন, ওরে শঠ রাজা, অদ্য আমার খাদ্য দুবা কেন কিছু করিস নাই / রাজা কহিলেন, যদ্যপি তুমি আমার বয়ঃক্রম ন্যুনাধিক করিতে পারিবানা, তবে নির-

র্থক ভোমাকে নিতাং কেন ভোজন করাই? বেতাল কছিলেন, হাঁ, এখন ভোরে এমন কথা; আয় আমার সঙ্গে যুদ্ধ কর, আজি ভোকেই খাব। এই বাকা খনিয়া রাজা জোধেতে মৃদ্ধ করে, আজি ভোকেই খাব। এই বাকা খনিয়া রাজা জোধেতে মৃদ্ধ করিতে উঠিলেন। অনন্ধর সেতালের মহিত রাজার অনেক ক্ষণ প্যায় অনেক প্রকার যুদ্ধ হইলা। বেতাল যুদ্ধেতে রাজার বল প্রাক্রম দেখিয়া সন্থাই হইলা কহিলেন, হে রাজন্, হুমি বড় বলবান, ভোমার যুদ্ধ প্রাক্রমে সন্থাই হইলাম; বর প্রার্থন করে। রাজা কহিলেন, মুমি যদাপি প্রসন্ধ হইয়াছ, ভবে আমারে এই বর দেও, মুখন ভোমাকে ক্ষরণ করিব, তখন আমার নিকটে আসিবা। বেতাল রাজাকে এই বর দিয়া আপন স্থানে গেলেন। প্র দিনে প্রভাতে মন্ত্রির রাজার প্রমুখাং সমস্ক স্তায় জানিয়া এবং রাজার পরিচয় পাইরা বড় ঘটা করিয়া রাজার অভিষেক করিলেন। এই রেপে রাজা অভিষিক্ত হইয়া প্রমুখ্ণ নিক্ষণতির রাজা ভোগি করেন।

ইতোমধ্যে এক দিবস এক যোগী আধিয়া রাজাকে কহিলেন, হে মহারাজ, ভূমি যদি আমার প্রার্থনা ভঙ্গ না কর, তবে আমি কিছ ভোমাকে যাজ্যা করি। রাজা কহিলেন, হে যোগি, আমার যত সম্পতি আছে, দে সকল সম্পতিতে কিলা আমার এই শ্রীরেতে যদি ভোমার মনোর্থ পূর্ণ হয়, তথাপি আমার অবশা কর্ত্রা। যোগী কহিলেন, আমি এক মন্ত্র দাবন করিয়াছি, তুমি তাহাতে উত্তর্দাধক হও। রাজা चीकात कतिरलन। उात्रशत साधी ताजारक मरक लहेशा भागारन धन-লেন, মাশানে গিয়া যোগী কহিলেন, হে রাজা, এখানহ উতে দৃত জোশে শিংশপা বৃক্ষে এক শব বাঁধা আছে, ভাহা শীঘু আন। এই মতে রাজাকে শ্ব আনিতে পাঠাইয়া আপনি শ্মশানের প্রস্তিরে ঘ্যবা নদীব তীরে আকলিকার মন্দিরে মন্ত্র জপ করিতে লাগলেন। রাজা শিৎ-বন্ধন কাটিলেন, শব বৃক্ষের তলে পড়িল। রাজা বৃক্ষহউতে নামিবা-মাত্র শব বৃক্ষের উপর গিয়া পূর্দ মত থাকিল। রাজা কিলিৎ বিঝিত হটয়া পুনর্বার রুক্ষে উঠিয়া শব লট্যা নামেন। এট সময়ে অগ্নি বেতাল রাজার বিপৎকাল জানিয়া তথাতে রাজার প্রতাক চট্যা পঞ্জবিংশতি কথা কহিয়া রাজার আম দ্র করিয়া দিলেন। এট পঞ্রিংশতি কথার বিশ্বার বেডাল পঞ্বিংশতিতে আছে। বে-डान कहिएलन, एर महाताम, এ गांशी अद्युद्ध माताती, हामारक উত্তম পুরুষ জানিয়া আনিয়াছে, সুবর্ণ পুরুষ দিলির কারণ ভোমাকে विन निर्देश, अहे भरन कृतिहार्ष्ट्र, अञ्चत दृषि अद्युख माद्यान था-किया। এ যোগी यथन यादा कांत्ररंड दलिया, अदादिस्वहना कांत्र्या করিবা। দৃজ্জনের উপকার করাতে উত্তর কলে ভাল হয় না। রাহা हैहा छनिया विश्विष्ठ हहेटलन, এवर मन्न विठाव कविटलन, अ याशी

ন্ত্রী পু্সাদি ভাগে করিয়া উদাদীন হউয়াছে; আমি দেশের রাজা, অনে-কের প্রতিপালক, আমাকে বলি দিয়া স্বর্ণপুরুষ সিদ্ধ করিতে ইচ্ছা করিয়াছে। স্বর্ণপুরুষ সিদ্ধ হউলে কেবল ধন হয়, প্রমার্থের লেশ নাহি, এ দৃট যোগী কেবল আপনারি সুখের কারণ অনেকের আত্যন্তিক মন্দ বাহাতে হর, এমত পাপকর্মে উদ্যত হইয়াছে। মুর্থেরা লোতেতে এক জন্মের যৎকিঞিং সুখের জন্যে এমত পাপ করে, যে দেই পাপের ফলে সহসু জন্ম পর্যান্ত নানা প্রকার দৃঃখ পায়। দুস্ট লোক যদি পুণ্যের সমূদে থাকে, তথাপি আপন দৃষ্টিতা ত্যাগ করে না। যেমত ক্লারসমদে मर्का मुक्ष পान कहिशा रा मर्भ थात्क, रम मल दिरवान्तात वार्ध-রেকে অমৃত বমন কলাচ করে না। আর মর্পের বিষের দমন মন্ত্র মহৌষধিতে যেমত হয়, তেমত নীতি শাস্তানুদারে বিচার করিয়া কর্মা করিলে দুষ্ট লোকের দুষ্ট্ডা অকিঞিংকর হয়; কিন্তু এ অতি বড় मुखे याती, डेरात तत ताजनमा । এडे क्रथ भतामर्भ कतिया अपून হত্তে শীঘু আদিয়া গোণির মধুক ছেদন করিলেন। মুখুক ছেদন করিবামাত্রে মর্ণপুরুষ প্রথাক্ষ হট্যা রাজার প্রভাব প্রশংসা করি-লেন, এব∿ ভদববি রাজার প্রতি প্রমন্ন হইয়া থাকিলেন। রাজা প্রভাতে প্রমাননে স্বৰ্পুর্য লইয়া আপন রাজগানীতে আইলেন, স্বৰ্পরুষের প্রসাদে কুবেরের হুল্য ধনবান হউয়া নানা প্রকার স্থা বিলাস করেন।

ইতাহসরে সিদ্ধসেন নামে এক ব্রাহ্মণ কাণ্যকুজ দেশহইতে রাজ-সভাতে আদিয়া রাজাকে আশীর্ঝাদ করিয়া কাইলেন, হে রাজন্ मम्लाहि खी हन; रामात् এ मन्लाहि यमि रामाहहै रा हहेगा थारकन, उर्प ভোমার কন্যা হইলেন; যদি ভোমার পিভাহইতে হইরা থাকেন, ভবে তোমার ভাগিনী হউলেন; যদ্যাপি অন্য কাহারোহউতে তুমি পাইয়াছ, তবে পর্ব্রী হউলেন। অতএব বিবেচনা করিয়া ব্যু, সর্বাদা সম্পতি ভোগের উপযুক্ত হন না, এই নিমিত্তে সজ্জনেরা সম্পত্তি পাইয়া বিতরণ করিয়া থাকেন। তুমিও সজ্জন, তোমাকে দান করিবার উচিত অট্টালিকাতে বসিলে দিব্য হস্তী উত্তম অখের উপরে চড়িলে কিয়া অপুর্বে দুন্দরী সড়োগ করিলে লোক বড় হয় না, কিন্ত আপন थरनरेड भरत्त थरनत नात मगरा छ। व कतिया राधन मान करत, দেই বড় লোক এবং প্রশংদার পাত। ইহা মনে স্থির করিয়া এমত দান সর্বদা করিতে লাগিলেন যে পৃথিবীমণ্ডলে দরিদুকেহ থাকিল না; দেবলোক পর্যান্ত রাজার মুখ্যাতি হইল। দেবলোকে দেবভাদের রাজা ই ন্ত্র, তাঁহার সভাতে দেব হারা গ্রীবিক্রমাদিতোর সদা প্রতিষ্ঠা করেন।

এক দিবদ জ্রীবিক্রমানিত্যের কীর্ত্তি শ্রনিয়া ইন্দ্র অন্তান্ত স্থান্ত হাই-লেন, কহিলেন, মনুব্যলোকে জ্রীবিক্রমাদিতা রাজা শিরোমণি আমার তল্য, অতএব ছাত্রিংশং পুত্লিকাযুক্ত র্ভনময় আলার সিংছালন আমি প্রসন্ন হইরা প্রীবিক্রমাদিতাকে দিলাম। হে বায়ুদেবতা, তুমি দিয়া আইন। ইত্রের আভাষাত্র প্রন দেবতা আপ্রন বেগে রাজস্ভা মধ্যে সিৎহাসন আনিয়া দিলেন। জীবিক্রমাদিতা সিৎহাসন পাইয়া বড় ঘটাতে অভিষিক্ত হইয়া সি৲হাসনে বসিলেন। যখন সি৲হাসনে रेटरमन, उथन इटलाद नाम स्मीया दीया रिवर्ग शासीया माहम उम्रवान বৃদ্ধি পাণ্ডিত্য 🕮 বিক্রমাদিত্যের হয়। তদনস্তর সিদ্ধদেন ব্রাহ্মণের উপদেশে বিতরণ করাতে আমার এ দিব্য সিংহাসন লাভ হটল, রাজা মনে এই নিশ্চয় করিয়া সিদ্ধদেন বু৷ক্ষণের প্রতি সত্তকী হইয়া ভাহাকে সভাসং পণ্ডিতদের প্রধান করিলেন। রাজসভাতে প্রতাহ শত ২ বেদজ বেদামী মীমাৎসক তার্কিক সাংখ্যবেতা পাতঞ্জসবেতা বৈশেষিক শিক্ষা কণ্প ব্যাকরণ নিরুক্ত জ্যোতিষ কৃতি সাহিত্য নাটক নাটিক। অলকার নীতি-শাব্র দণ্ডশাব্র আয়ুর্কেদ প্রভৃতি নানা শাব্রবেতা শ্রীকালিদাস বরক্টি ভবজুতি কলপণক আমরসিংহ শঙ্গু বেড়ালতট্ট ঘটকর্পর বরাহমিটির ধন্ব প্রত্তি বৈদেন। পণ্ডিতবর্গের সহিত রাজা নানা শাক্তের প্রসঙ্গে ও বিবিধ প্রকার কবিতার আমোদে পরম সুৰে রাজ্য ভোগ করেন।

প্রথমা পুরলিকা কচেন, হে ভোজরাজ, এ সকল কথাতে তুমি সন্দিওছ ছইও না। পৃথিবী বহুবতনা পুরুষের তপ জপ দান আন প্রস্তৃতি ধর্মবলেতে দুর্লত কিছু নাহি। জ্ঞাবিক্রমাদিতোর কীর্তি প্রভাপের নানা প্রকার কথা আছে, তাহা কহা যায় না।

এই রূপে রাজার কিঞিৎ ন্যুন এক শত বংসর প্রমায়ু হইল। বেতা-লের কথা ঝরণ করিয়া আপন মৃত্যুর সময় হইল, টহা বুঝিলেন। বিবেচনা করিলেন ক্ষতি জাতির স্মুথ যুক্তে মরণ হইলে অনায়াসে ষর্গপ্রাপ্তি হয়, ইহা নিশ্চয় করিয়া প্রতিষ্ঠান পুরের শালিবাহন নামে রাজার সহিত যুদ্ধ করিতে ইল্ছা করিয়া ময়িগণকে সেনাসজ্জা করিতে আজা দিকেন। আজা পাইয়া ময়িরগণেরা সহসূহ রথী অযুত্হ গজাক্ত লক্ষং অংখাক্ত নিযুহং উন্ট্রাক্ত কোটীং অংখতরাক্ত অবুদ্ধ ধানুফক বৃদ্ধং অগ্নিয়ন্ত থকাং অড্গচর্মধোরী শভং কশ ভূণ বাণ ধনু ছ⊫ল তরোয়ার ঋড়্গ বড়*শা কাটার টালি বন্দুক কামান নানা প্রকার অক্তশক্ত পূরিয়া চালান করিলেন। ডেরা দঙা তাৰু কানাত রাউটি পাল বান নিশান এ সকল চালান করিয়া ঢককা জয়-ঢকক1 ডকা ঢোল ডম্ফ তাসা মুরফা ভেরী তৃরি নফেরী রণসি**ং**ল জয়সিৎ লা মৃদজ কর্ডালাদি বাদ্য চালান করিলেন। মরিগণেরা রাজার আজানুসারে ব্যাপার করিয়া রাজার নিকটে নিবেদন করিলেন। রাজা **এ**বিক্রমাদিত্য অখযুক্ত নান<mark>!</mark> রক্তেন **খ**চিত উত্তম রথে আহোহণ করিয়া চহুরজ সেনাতে বেঞ্চিত হইয়া শালিবাহন রাজার স্থিত যুদ্ধ করিতে গেলেন। পরে যুদ্ধছানে গিয়া ঘোরতর সংগ্রাম করিয়া সমুখ যুদ্ধেতে শালিবাছন রাজার অন্ত্র প্রছারেতে রাজা বিক্রমানিতা প্রাণতাগি করিয়া বর্গলাকে গেলেনা। অবদ্ধী দেশ অরাজক হইল, রাজপক্ষী অনাথা হইলেন। রাজার মন্থ শুনিয়া পাটরাণী মন্নিবর্গকে আখাদ করিয়া কছিলেন, তোমরা উদ্বিগ্ন হইও না, আমার গর্ত্ত আছে, ইহাতে অবশ্য পুত্র হইরে, ঐ রাজা হইয়া হোমাদের প্রতিপালন করিবে। অনজর কিছু কাল পরে রাণী পুত্র প্রদাব করিলে পুত্রকে মন্নিদিগকে সমর্পণ করিলেন, আপনি অগ্নি প্রসেশ করিয়া বর্গলোকে রাজা বিক্রমানিত্যের সহিত উত্তম সুপ্তোগ করিছে লাগিলেন। রাজা বিক্রমানিত্যের পুত্র বিক্রমদেন রাজ্যেতে অভিষক্ত হইমা পিতার ভুল্য প্রজার পালন করেন. কিন্তু ইন্দ্রন্ত সিংহাসনে সংস্থান না।

শ্বন হে রাজা ভোজ, দেই অবধি পরম সিৎহাসনে কেহ সদেন নাই। ইতামধ্যে আকাশবাণী হইল, এ সিংহাসনে বসিবার উপযুক্ত পৃথিবীমণ্ডলে কেহ নহে, অতএব পবিত্র স্থানে গর্তু করিয়া পৃতিয়া রাখ। ইহা শুনিয়া মন্ত্রিগণেরা সিংহাসন পৃতিয়া রাখিলেন। পুত্রীকা কহেন, শুন মহারাজ; দেই সিংহাসন এই তুমি পাইয়াছ।

III.—Vikramáditya's liberality to a Beggar.

প্রথম পুত্তলিকার কথা।

পুনশ্চ পুত্তলিকা কছেন, বিক্রমাদিত্যের মহস্ত শ্বন।

এক দিবস রাজা অবস্থী প্রীতে সভামধ্যে দিবা সিৎহাসনে বসিরাছেন, ইতোমধ্যে এক দরিদু পুরুষ আসিরা রাজার সক্ষুথে উপস্থিত হইল, কথা কিছু কহিল না। তাহাকে দেখিরা রাজা মনের মধ্যে বিচার করিলেন, যে লোক যাজ্ঞা করিতে উপস্থিত হয়, তাহার মরণ কালে যেমন শারীরের কম্প হয় এবং মুখহইতে কথা নির্গত হয় না, ইহারও সেই মত দেখিতেছি, অতএব বুরিলাম, ইনি যাজ্ঞা করিতে আসিয়াভেন, কহিতে পারেন না। এই পর্মশ করিয়া রাজা হাজার হুন দেওয়াইলেন। হাজার হুন পাইয়াও দে তথাহইতে গেল না, কথাও কৈছু কহিল না। তথান রাজা কহিলেন, হে যাচক, কেন কথা কহ না? ভিজুক কহিল, লজ্জা প্রযুক্ত কহিতে পারি না। ইহা শুনিয়া রাজা পুনর্বার দশ হাজার হুন দেওয়াইলেন। পুন্নত রাজা জিজাসা করিজেন, হে যাচক, আশ্চর্যার কথা কিছু বদি জান, তবে কহ। ভিজুক কছিলেন, মহারাজ, ভোষার শতুর কীর্ষি হার্ইতে কনাটিং কোণাও

হাহিরায় না, ভাহাকে পণিতের। অসভী কছে। ভোমার কীর্মি ৰগ মঠা পাতালে সর্বাদা ভূমণ করে, ইহাকে কবিরা সতী বলেন, এই আশ্চর্যা। রাজা এই কথা শুনিয়া তাহাকে লক্ষ হুন দেওয়াইলেন। তৎপর যাচক क्टिलन, एर ताजन, निध्वनन कति; यर ताजा धेवतान लाक निक्छि বাথে তাহার মন্দ কথন হয় না, এবং অনেক বিপাতহইতে উতীর্ণ হয়। ইহার বৃত্তার খন। বিশালা নামে এক পুরী ছি**ল,** হাহার রা হার নাম নন্দ, যুবরাজের নাম বিজয়পাল, মন্ত্রি নাম বহু শত, ওরুর नाम मादनानम, दानीद नाम छःनुमछी। दाजा दानी छानमधीद क्रभ গুণে অহার বশহাপর হইরা রাজ্যের ভদুভিদ্চিতা করেন না; মাদ কলাচিং রাজকার্য্য করেন, তবে ভানুমতীর সহিত সভামধ্যে সিংহা-সনে বসিয়া রাজকমা করেন। এক দিবস মন্ত্রী কহিলেন, মহারাজ, আমি এক নিবেদন করি; রাজসভাতে রাণীর আগমন উচিত নছে। রাজা কহিলেন, মন্ত্রী, ভাল কহিলা, কিন্তু রাণী ব্যতিরেকে আমি এক ক্ষণ থাকিতে পারি না। মন্ত্রী কহিলেন, পটে ভান্মতীর রূপ চিত্র করিয়া আপন নিকট রাখ। রাজা চিত্রকরকে ভানুমহীর রূপ দেখাইয়া পটে চিত্র করিতে আজা দিলেন। চিত্রকর দেই চিত্র করিয়া রাজার সাক্ষাতে দিল। রাজা শারদানদ প্রকৃতে চিত্র দেখাইয়া কহিলেন, চিত্র কেমন হইয়াছে? শার্দানন্দ কহিলেন. রাণীর রূপ এই বটে, কিন্তু ভানুমহীর বাম উরুতে একটি তিল আছে. ইহাতে তিল নাটি, এইমাত্র বিশেষ। ইহা শুনিয়া রাজা মনে করিলেন, শারদানদ্দ ভান্মতীর উরু দেশের তিল কি রূপে জানিলেন? কিছ কারণ থাকিবে। রাজা ক্রন্ধ হইয়া মন্ত্রিকে করিলেন, শার্দামদ্দকে मके कत्। मन्नी सात्नामलाक आलम शुरू लहेशा विश्वा कतिलाम. ताका गातमानत्मत ताय निभिष्ठ ना कतिया वध कतिए। आजा कति-लान, निर्मय ना कदिया उदय পूरु (वत नव कता उभयक न दर, नमे করিলে রাজার পাপ হবে। মনের মধ্যে এই সকল বিচার করিয়া আপন ঘরে মৃত্তিকার ভিতর ঘর করিয়া শারদানন্দকে রাগিলেন। কিছু দিন পরে রাজপুত্র বিজয়পাল মৃগয়া করিতে সনে গেলেন, वरन श्रादम कतिया এक मुक्त प्रिथलन, मुक्तरक मातियात कात्र পাছে ২ গিয়া গছন বন মধ্যে উপস্থিত হউলেন, দৈন্য সামৰু সকল কমনে গেল। রাজপুত্র হুফাতুর হুইয়া জল প্জিলেন, অন্তর্ এক পুষ্করিণী পাইয়া ভাহাতে জল থাইয়াবসিয়া থাকিলেন। এই কালে এক ব্যাঘু দেখানে আইল, ব্যাঘুকে দেখিয়া বিজয়পাল গাছের উপরে চড়িলেন। সেই গাছে এক বানর ছিল, সেই বানর রাজপুলকে কছিল, ए वाङ्ग्ल, किङ् छয় नाहि, উপরে আইम। वानत्त्र कथा धनिয়ा वाङ. পুত্র উচ্চেতে গেলেন। সন্ধ্যাকাল হইলে রাত্তিতে রাজকুমারের আলস্য

দেখিয়া বানর কহিল,হে রাজপুত্র,বৃক্ষের নামতে ব্যাস্ আছে,তুমি আমার ক্রোড়ে নিদা যাও। রাজপুত্র দেই রূপ নিদা গেলেন। ব্যাঘু বানরকে কহিল, ওবে বানর, মনুষাজাতিতে বিখাস করিও না, রাজপুত্রকে ফে-निशा (मह, रहाभाद ও आभात आहात हरेक। तानत कहिन, खन रत ठार्घु, রাজপুল আমাকে বিখাদ করিয়াছেন, ভাহাকে আমি নউ কবিব না। বানরের কথা খনিয়া ব্যাঘু চুপ করিয়া থাকিল। কিঞিৎ কালের পর রাজপুত্র শয়ন ভাগে করিয়া বসিলেন। বানর রাজপুত্তের উরুদেশে মন্ত্রক দিয়া নিদা গেল। তাাঘু পুনর্বার রাজপুত্রকে কবিল, হে রাজ-কুমার, বানরজাতিকে বিখাদ কি ৈ হুমি বানরকে ফেলিয়া দেহ, ভাহাতে আমার আহার হইলে আমাহইতে হোমার আর কোন ভয় থাকিবে না। **ব্যাঘুের কথা শ্বনি**য়া রাজপুল বানরকে ফেলিয়া দিলেন। বানর পড়িয়া কুক্ষেক্ মধ্যে ডাল ধরিয়া রহিলে নামতে পড়িল না। তাহা দেখিয়া রাজ-কুমার অতায় লেজিরত হইলেন। বানর কহিল,রাজপুত্র,ভয় করিও না। তার পর প্রাতঃকাল হইল, ব্যাঘু দে স্থানহইতে গেল, রাজপুল 'বিদে-মিরা ২' কহিয়া বাতুল হইয়া বনে ভূমণ করিতে লাগিলেন। রাজপুত্রের ঘোটক নগর মধ্যে আপন স্থানে গেল; রাজা যুবরাজের অম্পেথি-লেন, যুবরাজকে না দেখিয়া অভান্ত উদিল হটয়া দৈনাসামস্তের সহিভ আপন পুজের আম্বেষণ করিছে বনে গেলেন; বনে গিয়া দেখিলেন युक्तां का बरनत् मरधा 'विरममिता २' विलिया सुमन कतिर उरहान। ताला যুবরালকে ঘরে আনিলেন, অনেক মন্ত্র মহৌষধি করিলেন, কোন প্রকারে ভাল হটল না। রাজা কহিলেন, যদি শারদানন্দ গুরু থাকি-তেন, তবে আমার পুত্রের কি চিন্তা? শারদানদ্দকে আপনি নষ্ট कविद्याद्य। এই काल्य मन्नी कहिल, महादांख, निरंतमन कवि, स्य जि-য়াছে তার শোক করিলে কি হউবে? সম্পুতি সহরে টেড়ি সর্বতে ঘোষণা দেয়াও, যুবরাজকে যে ভাল করিবে, তাহাকে রাজ্যের আর্ছেক দিব। ইহা শুনিয়া রাজা নগবে ঘোষণা দেওয়াইলেন। মন্ত্রী আপন গুহে গিয়া শারদানন্দকে এ সকল কহিলেন। শারদানন্দ মন্ত্রিকে কহিলেন, ভূমি রাজাকে কছ, আমার সাত বংসরের এক কন্যা আছে, সে আপন-কার পুত্রকে দেখিলে ভাহাকে ভাল করিবে। মন্ত্রী এই সকল কথা রা-কার নিকটে কহিলেন। রাজা শুনিবামাত পুত্তকে লইয়া মন্ত্রির গৃছে ष्ट्राइटलन, यर थान गाउमानम थाक्नन, छाराव निकटि यवनिका प्रविद्या-ইলেন, যতনিকার তাহিরে রাজা পুজের সহিত তসিলেন। শারদানন্দ ঘত-निकात छिडरत थाकिया कहिरड लाशिस्त्रन, विश्वाम कृतिया रच याचात জোড়ে শয়ন করিয়া থাকে, ভাছাকে যে বঞ্চনা করে ভাছার কি পুরুষার্থ? এই অর্থের এক শ্লোক পড়িলেন। তাহা খদিয়া রাজপুত্র 'বি' অক্ষর कांभ क्रिया 'मिन्रा र' क्रिटि लाबिलन । शूनक मात्रमानम क्रिलन,

দেত্বক গেলে কিলা গলাসাগরে গেলে রুক্ষহতাদি মহাপাতক নফী হয়, মিত্রহত্যার পাপ কোনহ প্রকারে নই হয় না। ইহা খনিয়া রাজকুমার 'সে' অক্ষর ত্যাগ করিয়া 'মিরা ২' বলিতে লাগিলেন। শার-দানন্দ পুনর্কার বলিলেন, মিত্রহিংসক কৃত্যু বিখাস্থাতক এই সকল লোকেরা নরক ভোগ করে, যাবৎ কাল চন্দ্র দুর্ঘ্য থাকেন। এই কথা খনিয়া যুবরাজ 'মি' ভাড়িয়া 'রা ১' করিছে লাগিলেন। পুনশ্চ শা-রদানন্দ কহিলেন, রাজা, ভূমি মুবরাজের যদি মঙ্গল ইচ্ছা করু, ভবে নানাবিধ দুব্য বুংক্ষণদিগকে দেও, গুরুষ সোকের দানেতে পাপ এতে। এ সকল কথা অনিযা রাজপুল সুস্থ চইলেন। তারপর রাজপুল ব্যাঘুরা-নরের বৃত্তান্ত সমস্ত রাজার সাক্ষাতে কহিলেন, বৃত্তান্ত শুনিমা সকলের আশ্চর্য্য জ্ঞান হইল। রাজা স্বিক্ষয় হইয়া কন্যাকে কৃতিলেন, হে কন্যে, তুমি ঘর্ছইতে কখন যাওনা, বনের মধ্যে বানর ব্যাঘুমানুষ ইহাদের বৃত্তান্ত ঘরে থাকিয়া কি কপে জানিলা? ইহামনিয়া শারু-मानन करिएलन, धेरुपनवडाव जानुश्रद्ध आमात् जिल्लाव जार्ग मत्-ৰহী আছেন, এই প্ৰযুক্ত আমি সকল জানি, যেমত ভানুমতীর উক্ত-দেশের ডিল জানিয়াছিলাম। এই কথা শুনিয়া রাজা ব্ঝিলেন, টনি প্রক্ত শার্দানন্দ। তৎপর রাজা যবনিকা উঠাইয়া পুজের সহিত প্রকৃতে প্রণাম করিলেন; রাজা আনন্দিত হইয়া মন্ত্রিক অনেক প্রশৎসা করিয়া কহিলেন, মাত্রি, তুমি ধন্য, ভোমাহইতে গুরুর এবং পুলের প্রাণরক্ষা इडेल। এই সমস্ত কথা যাচক বিক্রমাদিতাকে কহিয়া কহিলেন, ছে রাজন্ অতএব কহি, সজ্জন নিকটে থাকিলে অনেক দাল হয়। এট কথা রাজা বিক্রমাদিতা ব্রাক্তণের স্থানে খনিয়াসভাকী হইয়া ব্রাক্ষণকে কোটি হুন দিলেন; যাচক হুন পাইয়া আপন ঘরে গেলেন। রাভা কোষাধীশকে কহিলেন, তুমি দরিদু আইলে হাজার হুন দিবা; যে যাজ্ঞা করিবে, তারে দশ হাজার হুন দিবা; যে শান্ত্রের আলাপ করিবে, ভারে লক্ষ দিবা; আমি আজা করিলে কোটি দিবা।

প্রথম পুত্রনিকা কহিলেন, খন, হে রাজা ভোজ রাজা, বিজনাদি-ভোর মহতর ও দান ও প্রতাপ ভোমাকে কহিলাম; যদি ভোমার এ সকল থাকে, তবে এ সিংহাসনে বসিবার উপযুক্ত হও।

IV .- Liberality to a Yogi.

দিতীয় পুত্তলিকার কথা।

ক্রভোজরাজা অন্য এক দিবস নিরূপণ করিয়া অভিযেক কারণ স্পরিবারে সিৎ্হাসনের নিকটে উপস্থিত হইলেন। ইতারস্বে সিংহাদনের বিভীর পুতলিকা কহিলেন, খন হে রাজা ভোজ, **এ**বিজ-মানিতাের তুলা যার মহজ থাকে, সে এট সিংহাদনে বসিতে পারে। রাজা কহিলেন, বিজ্মাদিতাের মহজ কি রূপ / পুতলিকা কহিলেন, রাজা, খন খন।

তারস্কী নগরে জীবিক্লমাদিতা রাজা করেন, এক দিবস আশ্চর্য্য দেখিবার জনো রাজা ভূথবর্গকে নানা দেশে প্রের্ণ করিলেন। ভূত্য-বর্গেরা নানা দেশে ভূষণ করিয়া রাজার নিকটে আসিরা কহিল, ছে মহারাজ, নিবেদন করি, চিত্রকুট পর্বতে দেবতার এক মন্দির,তার নিকটে এক পুষ্পোদ্যান জাছে, এবং মন্দিরের স্মুখে এক নদী আছে, দেই নদীতে নিফকলয়ে পুণাবান লোক যদি য়ান করে, ভবে ভাহার শ্রীরে দেই জল দুঞ্জের ন্যায় দৃষ্ট হয়; যদি কেহ পাপী भकलक (लाक सान करत, उत्त उ।वात मतीरत मिडे छल कष्फालात স্থান দৃষ্ট হয়; সেই স্থানে এক গোগী জপ প্যান হোম নির্শ্বর করিতেছেন, কিন্তু দেবতা প্রদন্ন হন নাহি। এই সকল কথা রাজাবি-অক্যাদিত্য আংবণ করিয়া সেই ভানে গিয়া সেই নদীতে লান করিয়া আমাপনাকে নিফলক করিয়া জানিলেন; তৎপর দেবতাকে নমস্কার করিয়া ঘোগির নিকটে গমন করিলেন। রাজা সন্ন্যাসিকে জিজাসা করিলেন, হে যোগি, বুমি তপ্স্যা কত কাল করিতেজ? তপ্রা কহিলেন, শুন, বৈশাৰ জৈচিত আহাঢ় আবণ ভাদ আখিন কাতিক অগুহায়ণ পৌষ মাঘ ফাল্ওণ টৈত এই বার মাদে এক বংসর হয়, এমন এক শত বংসর তপ্রা করিতেভি, তথাপি দেবতা প্রসল্ল হন নাই। এই কথা শ্বনিয়া রাজা চিন্তা করিলেন, শরীর ধারণ করিলে মরণ অবশা হয়, কিন্তু যদি পরের উপকারের নিমিত্ত প্রাণত্যার হয়, তবে দে মৃত্যু উত্তম বটে। রাজা এই বিচার করিয়া অন্তঃকর্ণে দেবভাকে ভাবনা করিয়া খড্গ লউয়া আপনার ময়ুক ছেদন করেন, এই কালে দেবী সাহলাৎ হউয়া রাজার হয়, ধরিয়া কহিলেন, তুমি মন্তক ভেদন করিও না, ভোমারে সন্তুষ্ট হউলাম, বর যাজ্ঞ। কর। রাজা কহিলেন, ছে ভগবঙি, এই যোগী অনেক কাল তপ্স্যা কৰিতেছেন, ইহাবে প্ৰসন্ধ না হইয়া অতি শীঘু আমারে প্রসন্ন হইলা, ইহার কারণ কি? দেবী কহিলেন, இবিক্রমাদিত্য, অন, মন্ত্র তীর্থ দেবতা কিচিৎসক প্রক্র এই সকলে ষার যে রূপ ভাবনা তার সেই রূপ সিদ্ধি হয়, এই সন্ন্যাসির আমাডে দৃঢ় ভাবনা নাহি। উহা শুনিয়া রাজা চিদ্বা করিলেন, কা**ষ্ঠ কি**ৰা প্রস্তুর ইহাতে দেবতা নাহি, কিন্তু দেবতা ভাবেতে থাকেন, অতএব ভাব সিদ্ধির কারণ। অন্তর রাজা পরের উপকারের জন্যে দেবীকে কহিলেন, হে দেবি, যদি আমারে ভুট হইলা, ভবে এই যোগী অনেক কাল তপদ্যা করিয়া যথেষ্ট ব্যামোছ পাইয়াছেন, অতএব এই বর যোগিকে দেহ। দেবী সেই বর সন্ন্যাসিকে দিলেন। **এ**বিক্রমাদিত্য দেবীদত্ত বর তপৰিকে দিয়ানিক স্থানে আইলেন।

V.—Liberality to a Bráhman.

ত্তীয় পুত্তলিকার কথা।

প্রিভোজরাজ অভিষেকের জনে। অপর এক সময় নিরূপণ করিয়া। সিংহাসনের সমাপে যাইবামাত হৃতীয় পুতলিকা কহিতেছেন, হে ভোলবাছ, আঘার কথা খন, এই সিৎহাদনে সেই লসিতে পারে, যার মহতর রাজা বিক্রমাদিত্যের সমান হয়। রাজা ভোজ বলিলেন, বিক্রমা-দিতোর মহস্ত কি প্রকার ? স্থীয়া পুতলিকা কহিল, খন > , রাজা ভোজ। উদ্যম সাহস দৈয়া বল বুলি প্রাক্রম এই ছব যাহার থাকে ৩া-ছাকে দেবতাও শক্ষা করেন। রাজা বিক্রমানিতোর এই ছয় আছে; এক দিবস তিনি বিচার করিলেন, ধন আরু মেঘ ইচারা যথন হয়, তথন কোথাহইতে আইদে, একং যখন যায় তখন কোথায় যায়, ইচা বুঝিতে পারা যায় না; দম্পুতি আমার অনেক দম্পতি আছে, পরে কি রূপ হলে ইহার নিশ্চয় নাই। রাজা এই সকল ভাবনা করিয়া ব্রাহ্মণ দরিদু ব্রী বালক অনাথা অক্ষম প্রভৃতিদিগকে প্রভাহ যথোচিত দান করিতে আর্ড করিপ্রেন, এবং প্রভাদের স্থানে কর আভ্যতপ গুহণ করিতে লাগিলেন, নানাবিধ যজ জপ হোম বলি পূজা বিষয়ে मबुद्ध दिष्ठ तुष्कि। देव निगुक कृतिया मकल प्रतिशत मध्याय कृतिलान, অপর এক ব্রাহ্মণকে জলদেবতার উপাসনার নিমিতে সমৃদ্রের নিকটে পাঠাইলেন। বুক্সিণ গিয়া কৃতাঞ্চলি হট্যা সম্দুকে স্কুব করিলেন; করিলে পর সমৃদু দাক্ষাং হটয়া কহিলেন, হে ব্লাকণ, আমি বিক্রমানিত্যের ভাবেতে প্রসন্ন হইলাম, তিনি দূরে থাকিলেও আমার মতান্ধ প্রিয়; ভুমি এই চারি রক্তন রাজা বিজ্ঞানিতাকে দিবা, এই রক্তেনর গুণ কহি-বা। এক রভেনর প্রভাবে খাদ্য সামগুলি যথন ঘাছা মনে করিবেন ভৎক্ষণে তাহাই উপধিত হটবে। বিঠায় রতনহটতে যথেকীধন হয়। তৃতীয় বজেনর স্থানে রথ ছস্তী ঘোটক পদাতি দৈন্য দামস্ত এ দমস্ত মিলো। চতুর্থ রক্তেনর গুণে ভাবৎ অলক্ষার হয়। ব্রাক্ষণ চারি রক্তন জইয়া बास्रात निकटि चामिया ठाति त्रा तास्राहक निरमन, अवर मानित প্রভাবও কহিলেন। রাজা দক্ষিণার কারণ ঐ চারি মণির মধ্যে এক মণি ব্যক্ষণকৈ নিতে বলিলেন। ব্যক্ষণ কহিলেন, আমার ব্রীপুত্র ৪ পুত্রবধ্ चार्छन, उारामिनाक बिजाना किंद्र; डाराद्रा स मिन नरेट विनादन महे মণি লইব। ব্ৰহ্মণ রাজাকে এই কথা কছিয়া আপন গৃহে গিয়া জী পুতা ও পুতাবধু ইহাদিগকে সকল দ্বাস্থ কহিলোন। বৃহান্ত আনিয়া পুতা কহিলোন, যাহাতে হয় ঘোটক হয় সেই রক্তা আনা প্রা কহিলোন, যে মণিতে থাদা সামণী হয় হাই লও। পুতাবধু কহিলোন, যে রক্তোতে আল-কার হয় সেই ভাল। বুলাগ বলিলোন, যাহাতে ধন প্রামবে সে মণি উত্তম। এই রূপে চারি জানাতে প্রদার কলহ করিয়া রাজার সাক্ষাতে বুলাগ গিয়া এ সকল দ্বাস্থ কহিলো রাজা শানিয়া চারি জানের সন্থোষের জানো ঐ চারি রক্তা বুলাগতক দিলোন। বুলাগে তুই হৈইয়া গুতে আইলোন।

VI .- Liberality to a Scholar.

চ্তুর্থ পুত্তলিকার কথা।

পুন্দ অভিদেক কারণ অন্য লগুনিরপণ করিয়া ভুদাদনের নিকটে রাজা ভোজ গেলেন। এই সময়ে সিংহাসনের চহুর্থ পুর্বলিকা কহি-লেন, রাজা ভোজ, আমার কথা খন। এই সিংহাসন রাজা বিক্রমাদি-ভোর, তার হুল্য মহত্র বার থাকে সে এই সিংহাসনে বসিবার উপযুক্ত। রাজা কহিলেন, বিক্রমাদিভোর মহত্র কি প্রকার? পুর্বলিকা কহিলেন, অন্য, রাজা ভোজ।

আবন্তী পুরীতে জ্রীবিক্রমাদিতা সামুাজ্ঞা করেন; সেই নগরে শিক্ষা কম্প ত্যাকরণ নিত্তক জ্যোতিষ ছন্দ শ্রাক্ত এই ছয় অঙ্গের সহিত ঞ্ক মঞ্সাম অথকা চারি বেদ পুর্কমীমাৎসা উত্তরমীমাৎসারূপ মীমাৎ-সাশাস্ত্র, তর্ক বৈশেষিক সাংখ্য পাতঞ্জরপ নাায়, বিশ্বর শৃতিশাস্ত্র প্রাণশাস্ত্র এই চতুদ্দশ বিদ্যা আগুর্কেদ ধনুর্কেদ গান্ধকশাস্ত্র শিশ্প শাস্তাদিরূপ অর্থশাস্ত্র, এই চারি বিদ্যা দৃষ্টার্থ প্রধান, পূর্বাক্ত চতুদ্দশ বিদ্যা অদৃত্তার্থ প্রধান, এই সমুদয়ে অফীদশ বিদ্যা। ইহাতে পূর্কোক চতুর্দশ বিদ্যাতে পণ্ডিত এক ব্রাহ্মণ থাকেন, তিনি অপুত্রক। এক দি-वम वे পणिरवत की পणिरवरत कहिएलन, रह चामि, आमात गर्छ याशाद পুত্র হয়, এমত দেবতার আন্রাধনা কর। বুক্ষিণ বলিলেন, বুক্ষিণি, ভাল কহিলা, প্রকৃষ্ডক্ষমা ব্যতিরেকে বিদ্যা হয় না, পুণ্য ব্যতিরেকে পুল ছয় না। ব্রাক্ষণ এই কথা কহিয়া পতনীর অনুরোধে কুলদেবতার আরাধনা করিলেন। সেই পুণোর ফলে ব্রাহ্মণীর গর্ব্তে ব্রাহ্মণের এক পুত্র হইলেন, ভাছার নাম দেবদত হটল। অনভর দেবদতের পিডা দেবদত্তকে তাবৎ শাস্ত্র অধ্যয়ন করাইলেন; দেবদত্তকে বিবাহ দিয়া সৎসারের তারে নিযুক্ত করিয়া আপনি তীর্থ ভূমণ করিতে গেলেন। (मियम छ शृहकर्म्म कृतिया शृह्द शांदकत। अक नियम प्रतम्छ ह्याप्यत् নিমিত্ত কাষ্ঠ আনিতে বনে গেলেন। রাজা বিক্রমাণিতা আখের উপরে

আরোহণ করিয়া মৃগয়া করিতে দেই বনে গিয়াছিলেন; বনের মধ্যে মূল অভ্যেষণ করিতে ২ দৈন্যসামন্ত সকল নানা স্থানে গেল; রাজা বিজ-মাদিতা তৃষার হটয়া বনের মধ্যে ভুমণ করিতে ২ ঐ দেবদত নামা ব্রাহ্মণের সহিত সাক্ষাৎ হইল। রাজা ব্রাহ্মণকে দেখিয়া বিনয় পূর্বাক কহিলেন, হে ব্রাহ্মণ, আমি ভূষাত হ⁸য়াছি, আমাকে জল পান করাও। বুকিল এই কথা অনিয়া সুৰাদু সুপক উত্ম ফল সুশীঙল জল লটয়া রাজার নিকটে দিলেন। রাজা সেফল খাইয়া এবং জল পান করিয়া প্রমাপ্যায়িত হউলেন। তার প্র ব্রাহ্মণ পথ দেখাইয়া দিলেন, রাজা আপন স্থানে গেলেন। অন্য এফ দিবস রাজা মন্ত্রিগণের সহিত কথা প্রদক্ষে দেবদত শুক্ষাণ যে উপকার করিয়াছিলেন, দেই উপকার ইহা শুনিয়া বুলেণ মনের মধ্যে বিচার করিলেন, উত্তম লোকের उपकात कतिरल रम उपकारत उठम लाक यावण्जीवन वश्व इडेग्रा থাকে, উপকার বিষ্ণুত কখন চয় না; দেখি রাজার উপকারজভা কি পঘান্ত। এই পরামর্শ করিয়া কোনহ উপায়েতে রাজার পুদ্রকে চুরি করিয়া আপন বাটীর মধ্যে লইয়া রাখিলেন। তদনন্তর রাজা আংা-পন পুত্রকে না দেখিয়া পুত্রের অবেষণ কারণ নানা স্থানে দূতগণ প্রেরণ করিলেন, দূতগণ কুতাপি রাজপুত্রের তারু পাইল না। রাজা সপরিবারে পুত্রের নিমিত্ত অতার ব্যাকুল হইলেন। ইতোমধ্যে এক দিবস দেবদত ব্যাক্তণ রাজপুত্রের এক অলস্কার বিক্রয়ের নিমিত্ত আ-পন ভূত্যের হস্তে দিয়া বাজােরে পাঠাইলেন। ভূতা বণিকের দােকানে অলপ্তার দেখাইতেছে, ইতাবসরে রাজার লোকেরা দেখিয়া সে অলস্নার সমেত সুক্রিংগের ভূতাকে বাদ্ধিয়া রাজার সাক্ষাতে লইয়া গেল। রাজা তাকে দেখিয়া জিজাসিলেন, এ অলক্ষার আমার পুত্রের; তুই কোথায় পাটলি? আমার পুত্র বা কোথায়? সে লোক কহিল, মহারাজ, এ অলকার দেবদত ব্রাকাণ বিক্রায় করিতে দিরাছিলেন, আমি বিক্রের করিতে গিয়াছিলাম, আমি আর কিছু জানি না। রাজা এই কথা শুনিয়া দৃত পাঠাইয়া দেবদতকে আপন মাহলতে আনাইয়া তা-হাকে জিজাসিলেন, এ তালকার তুমি এই লোকের হাতে বিজন্ম করিতে দিয়াছিল। ? ব্রাহ্মণ বলিলেন, বটে, আমি দিয়াভি। রাজা কছি-লেন, তুমি এ অলক্ষার কোথায় পাইলা? বুাকণ বলিলেন, তোমার পুত্রের স্থানে পাইয়াছি। রাজা বলিলেন, আমার পুত্র কোথায়? বুলিকণ কহিলেন, তোমার পুত্র মরিয়াছেন। রাজা বলিলেন, কি কপে মরিয়াছেন ? ব্রাহ্মণ কহিলেন, আমি মারিয়াছি। ওদনত্ত রাজা কছি-লেন, তুমি ব্রাহ্মণ পণ্ডিত জানী ধার্মিক নিরপরাধি রাজবালককে কেন ন্ট করিলা? বুলিল বলিলেন, আমার ধনলোতে এ পাপবুদ্ধি

হটল, এই প্রযুক্ত নফ করিয়াছি। অনন্তর রাজা মন্ত্রিগণের প্রতি অব-लाकन कतिलन। मञ्जिपत्ता किटलन, महातास, य लाक तास-কীয় লোকদিগকে নফ করে, তাহাকে রাজা তৎক্ষণে নফ করি-বেন। ইনি রাজপুলকে নফ করিয়াছেন, ইহাঁকে নফ করা উপযুক্ত হয়; কিন্তু ইনি ব্রাহ্মণ, অতএব ইহাঁর বৃত্তিচ্ছেদন করিয়া সপরিবারে পকার মরণ করিয়া মন্ত্রি সোকদের বাক্যে আদর না করিয়া বাহ্মণ-কে ছাড়িয়া দিতে আজা করিলেন। ব্রাহ্মণ রাজার বৈশিষ্ট্য দেখিয়া অত্যন্ত সভ্যট হট্যা আপন ঘরে আসিয়া রাজপুত্রকে স্নান ভোজন করাইয়া বস্ত্র অলক্ষারে ভূষিত করিয়া রাজসভাতে লইয়া গেলেন। রাজা পুত্রকে দেখিয়া অতিশয় আনন্দিত হইয়া পুত্রকে ক্রোড়ে করি-য়া বুলিলণকে কহিলেন, হে বুলিলণ, হুমি কি আশবেয় এ ব্যবহাৰ করিলা । আমি বুঝিতে পারিলাম না। ব্রাহ্মণ কহিলেন, আমার পূর্ব-কৃত উপকারে তুমি কি রূপ বন্ধ আছে, ইহা ব্রিবার কারণ আমি এরপ তাাপার করিয়াছিলাম। অনত্তর রাজা বালাণকে অনেক ধন দিয়া পরিভোষ করিলেন। ব্রাহ্মণ আপন গৃহে গেলেন।

VII.—Liberality to a Devotee.

পঞ্মী পুত্তলিকার কথা।

শ্রী ভোজরাজা পুন্ধার অন্য সময় নিরপণ করিয়া অভিষেক কারণ মারিগণের সহিত সিংহাসনের সমীপে গিয়া উপদ্বিত হইলেন। ইতো-মধ্যে পঞ্চমী পুত্রলিকা কহিলেন, খন হে রাজা ভোজ, রাজা বিক্রমা-দিত্যের তুলা উদার্গ হাহার থাকে সেই এই সিংহাসনে বসিতে পারে। রাজা কহিলেন, হে পুত্রলিকে, রাজা বিক্রমাদিতাের উদার্যা কি রূপ? পঞ্চমী পুত্রলিকা কহিলেন, ভোজরাজ, খন।

অবস্থী নগরে মত্রিগণের মধ্যে রাজা বিক্রমাদিতা ভদুদিনে বিদিয়া রাজকার্যা করিতেছেন, ইতোমধ্যে ক্রীড়াবনের রক্ষক রাজহারে আসিয়া হারিকে কহিলেন, আমি রাজার সাক্ষাৎ যাইব, তুমি মহারাজের নিকটে সমাচার দেহ। ইহা শুনিয়া ছারী রাজার সমীপে গিয়া
নিবেদন করিয়া বনরক্ষককে রাজ সন্ধিধানে লইয়া গেল। উদ্যানপালক কপালে দুই হস্ত দিয়া রাজাকে প্রণাম করিয়া কহিল, হে মহারাজ, নিবেদন করি; আপনার ক্রীড়োদ্যানে আমু নারিকেল প্রবাক
জ্বীর নাগরক চম্পক অশোক কিংশুক মল্লিকা ভাল তমাল শাল
পিয়াল কদলী ককেকাল লবক এলাবভী কেতকী কুদ্দ দ্মনক আদি

সকল বৃক্ষ লগা নূতন প্লব পুশপ ফলে শোভিত ইইরাছে; এই বসস্ত কাল বনক্রীড়ার সময়। রাজা ইছা শ্বনিয়া রাণীগণের সহিত দাসী ও নর্ত্কীতে পরিবৃত হইয়া আরামে গেলেন। ক্রীড়াবনে গিয়া শ্লেষোক্তি বক্রোক্তিতে নিপুণ হাস্য লাস্য ভাব হাব বিলাস বিভূম ইলিতাদিতে চতুরা সুর্তিতে পণ্ডিলা পন্মিনী চিত্রিণী স্ত্রীগণের সহিত রাজা কোন স্থানে পুশপ চয়ন করিতেছেন, কোথাও জলক্রীড়া করিতেছেন, কোন স্থানে কাল গ্রহে প্রবেশ করিতেছেন, কোথাও দুলিতেছেন, কোন স্থানে কদলী গৃহে প্রবেশ করিতেছেন। এই রূপে বস্থকালে প্রী বিক্রমাদিতা নানা প্রকার সাৎসারিক সূথানুভোগ করিতেছেন।

ইতারসরে সেই বনের এক প্রদেশে এক তপমী বহুকাল পর্যান্থ বিবিধ প্রকার কঠোর তপদ্যা করণে ফ্লিণশরীর রাদ্যার বনবিহার দশনে বিকারপ্রাপ্তিত হইনা চিন্তা করিছে লাগিলেন, আমি উত্তম বস্ত্র ধারণে দিব্য অলক্ষার পরণে দিব্য গদ্ধদুব্য লেপনে অপূর্য্য মিন্টান্ন ভক্ষণে উত্তম পালক্ষ শ্যানে মৃগন্ধি দুব্য ঘুণে জাতীকল লবক এলাচী কর্পুরাদি মিশ্রিত ভাদুল চর্বণে গীত বাদ্য প্রবণে নত্তক নত্তকী নর্ত্রন দশনে উত্তম সুক্রী জী মহিত হান্য কৌহুক করণে যে প্রশুক্ষ সাক্ষাংকার হয় ভাহা না করিয়া, তপদ্যা করিলে ম্বর্গমুখ হবে, এই ভাবি সন্দিগ্ধ অপ্রহাহ্ম মুখের কারণ এহাবং তপদ্যা করিয়া কেবল আত্মবঞ্চনা করিয়া করিয়া ভ্রমি মুখিত হন মুগিত ভারা না করিয়া ভ্রমিত মুখাতোগের নিমিতে মুগিত হন মুর্বাদ্যে ভাষা লোগ না করিয়া ভ্রমিত মুখাতোগের নিমিতে মুগিত হন মুর্বাদ্যে আপনারা করেন, এই মাত্র লোকে প্রকাশ করেন, ভ্রমিত মুখ্ হতনের প্রমাণ কি? এই রূপ নাস্তিক মহাবলম্বনে যোগভূষ্ট হইয়া যোগী সাৎসারিক মুখ সিদ্ধির নিমিতে রাদ্যার নিকটে আগিলেন।

রাজা যোগিকে দেখিরা বহু মান পূর্পক প্রথাম করিয়া আগমন কারণ জিজাদা করিলেন, হে ঘোগি, কিমর্থে আপনকার আমার নিকটে আগমন ? যোগী কহিলেন, হে মহারাজ, আমি অনেক কাল অবধি এই বনে তপদ্যা করিতেছি, অদ্য আমার আরোধিত দেবতা আমাকে দুপ্রদা হইয়া আজা করিলেন, তুমি প্রিরাজা কিজমাদিত্যের নিকটে যাও, তিনি ভোমার দকল অভিলায পূর্ণ করিবেন। এছদর্থে আমার আপনকার নিকটে আগমন। রাজা ঘোগির এই কথা শুব্ণ করিয়া বুমিলেন এ যোগী অনিশিত্ত শাস্ত্রার্থ যোগছুই সাৎসারিক দুবার্থে আহুর হইয়াছেন। অত্রব আতেরি বাঞা পূরণ কর্ব্য হয়। এই মনের মধ্যে বিচার করিয়া বছ এক নগরের মধ্যে উত্তম বাটী নির্মাণ করিয়া যোগিকে দিলেন, নানালকারেতে ভূবিছা একশত গুমা অনেক ধন দাদ দাদী গো মহিষী হঞ্জী ঘোটক

প্রভৃতি যোগিকে দিয়া আপনি যোগপাদুকাতে আরোহণ করিয়া আক্ কাশপথে বারুবেগে রাজধানীতে আইলেন। যোগী বাঞ্ছিতইউতে অধিক সুথ সজোগ করিয়া থাকিলেন।

VIII.—Romantic self-denial.

ষষ্ঠী পুত্তলিকার কথা।

শ্রীভোজরাজা পুনশ্চ অন্য সময় নির্ণয় করিয়া অভিষেকের জন্যে সিংহাসনে আরোহণ করেন, এই সময় ষষ্ঠা পুত্রনিকা হাসিয়া কহিলেন, শ্বন রাজা ভোজ, রাজা বিক্রমাদিত্যের হুল্য যে পরোপকারক হয়, সে এই সিংহাসনে বসিবার গোণ্য। ইহা শ্বনিয়া রাজা কভিলেন, রাজা বিক্রমাদিত্যের উপকারকতা কি / পুত্রলিকা কহিলেন, বিক্রম চরিত্রে মনযোগ কর।

অवसी প্রীতে রাজা বিক্রমাদিতা মর্বা দেশের আধিপতা করেন, রাজার অধিকারস্থ লোকেরা সর্বদা স্বস্বর্থের আচার কদাটিৎ লঙ্ঘন करत्वन ना, नित्युत भाख दिहात करत्वन, ज्यथस्म मृष्टि कनाह करत्वन না, পরোপকার করিতে সর্মদা চেটিত থাকেন, প্রাণান্তেও মিথ্যাবাক্য বলেন না, আত্ম শরীরকে অনিতা করিয়া জানেন, প্রমান্থার চিন্তা নিরন্তর করেন। ঐ পুরীতে ধনদত্ত নামা এক বণিক থাকেন, দেই धनमरहत थड धन रा जिने आलनात धरनत लितियां आलिन जारनन ना; যে ২ সামগুরি কোন নগরে নাহি তাহা ধনদত্তের গৃহে আছে। এক দিবস ধনদত্ত বিচার করিলেন, প্রলোকে উপকার হয় এমত পুণ্য করিলাম না, আমার গতি কি হবে? এই বিবেচনা করিয়া নানা প্রকার অনেক দান ধর্মা করিয়া তীর্থ দশন কারণ দেশান্তরে গেলেন। নানা তীর্থ ভুমণ করিয়া সমূদ্ের মধ্যে এক দ্বীপে উপস্থিত হইলেন, সেই স্থানে দেব-তার এক মন্দির আছে,মন্দিরের নিকটে এক সরোবর থাকে, দেই সরো-বরের চারিদিগে চারি ছাট চল্রকান্ত মণিতে পচিত আছে, ঐ স্থানে এক পরম সৃন্দরী ক্রী ও দিব্য সৃন্দর এক পুরুষ থাকেন, কিন্তু দুই জনের দুই মস্তক ছিন্ন হইয়া পৃথক্ আছে। মন্তকের সমীপে এক প্রস্তুরে এইরূপ কতকণ্ডলি অক্ষর লেখা আছে, উত্তম পুরুষ কেহ যদ্যপি আপনার মস্তক ছেদন করিয়া বলি দিবে, তবে এই ক্সা পুরুষের জাবন্যাদ হবে। এই সকল দেখিয়া ধনদতের আশ্চর্যা জান হইল, তৎপর ধনদত্ত তীর্থ দর্শন করিয়। আপন গৃহে আইলেন। এক দিবস ধনদত্ত কথা প্রসঙ্গে রাজার সমাপে এ সমস্ত বৃত্তান্ত রাজার কাছে নিবেদন করিলেন। वासा धनिया विकाशाश्रम रहेया कहित्सन, धनम्छ, त्महे सात आधाव

স্হিত চল, কৌতুক দেখিব। এই প্রাম্শ করিয়া রাজা বিক্রমাদিত্য धनमञ्जूक माम लहेशा मिहे दान शिलन; शिशा धनमञ পुर्स्त रा সকল কহিয়াছিলেন, দে সমন্ত রাজা আপনি সাক্ষাতে দেখিয়া বি-চার করিলেন, পরের যৎকিঞ্ছিৎ উপকারের নিমিত্তে উত্তম লোকে প্রাণপণ করে; আমি প্রাণ দিলে ইহারা ব্রী পুরুষ দট জনে জীবং-শরীর হটবে, অতএব এ উত্তম কর্ম অবশ্য কর্ত্ব্য; শ্রীর ধার্ণে অবশ্য মত্য আছে, পরোপকার করিয়া মরিলে পরলোকেও উত্তম शिष्ठ रहा। डेरा जानिया वाजा विकासानिका मद्वावदव स्नान कविया (म-বীর দাহলতে আমাপন মস্কুক ছেদন করিতে উদ্যত। ইতোম্ধ্যে দেৱী প্রসন্না হইয়া রাজার হয়, ধরিয়া কহিলেন, হে রাজন, তুমি উত্তম পুরুষ, ভোমাকে সন্তুটা হইলাম, বর প্রার্থনা কর। রাজা কহিলেন, হে দেবি, যদি প্রসন্না হইলা, তবে এই দুই জ্রী প্রুষের প্রাণদান করিয়া এই দেশের ताज्ञ ब्लंड। प्रती हेंहा श्रांसिया कहिएलन, एह तिक्क्यां निर्छा, हुनि उत्य পুরুষ, পরোপকারের নিমিত্তে আপনার প্রাণ ভাগে করিতে উদ্যত। ইহা কহিয়া দেবী ঐ স্ত্রী পুরুষের জাবন্যান করিয়া এবং দে দেশের অধিকার দিয়া অন্তর্ধ্যান হউলেন। নিদুত লোক যেমন নিদু। ভঙ্ক हरेल উঠে, এই রূপ স্ত্রী পুরুষ দুই জন গাত্রোপান করিলেন, দেবীর অনুগুহে স্ত্রী পুরুষ দুট জনা দেট দেশে রাজা রাণী হইলেন। রাজা বিক্রমাদিতা আপন বাজধানীতে আইলেন।

IX.—Liberality to a Lover.

অষ্টমী পুত্তলিকার কথা।

ভারপর এক দিবদ প্রভোজরাজা দকল অভিষেক সামগুলী লাইয়া
দি৲হাদনের নিকটে উপস্থিত হইলেন। ইতাবদরে অফমী পুরলিকা
কহিলেন, হে ভোজরাজ খন, প্রবিক্রমাদিতোর ন্যায় যে প্রবাঞ্চাপূরক,
দেই এ দি৲হাদনে বসিবার উপযুক্ত। ইহা খনিয়া রাজা কহিলেন,
রাজা বিক্রমাদিতা কেমন প্রবাঞ্চাপূরক ছিলেন? পুরলিকা বলিলেন,
হে রাজন, খন।

অবঙীপুরে প্রবিক্রমানিতা সামাজ্য করেন। ঐ পুরে ত্রিপুরাকর নামে রাজপুরোহিত বাদ করেন, উাহার পুদ্র কমলাকর নামে, তিনি অত্যন্ত মূর্য। ত্রিপুরাকর আপন পুদ্রকে মূর্য দেখির। দর্মদা ভাবিত থাকেন, এক দিবদ আপন পুদ্রকে নিকটে বদাইরা অনুযোগ করিতে লাগিলেন, হে পুদ্র, খন, সংসারে জীব মনুষ্যক্ষম অনেক পুণ্যের ফলে পায়। জীব মনুষ্যক্ষরি পাইয়া যদি বিদ্যা উপার্জন করেন,

ভবে মনুষ্যজন্ম সাথক, নতুবা দে মনুষ্যরূপী পশ্ব। বিবেচনা করিয়া আপেন মনে বুঝ, শয়ন আসন ভোজন প্রভৃতি ব্যবহার মনুষ্যের পশ্তর অবিশেষ, তবে পশুচ্টতে মনুষোর এই তর্তম যে পশুর বিদ্যা হয় না, মনুষ্যের বিদ্যা হয়। ইহাতে যে মনুষ্যের বিদ্যা না হইল সে পশুকেন নয়? আহো দেখ, রাজস্তহইতে পাণ্ডিত্য বড়, কেননা রাজার बरमरण यामृगी মर्यामा अवरमरण यामृगी नय, अधिराव बरमरण अवरमरण তুল্য মর্যাদা। আরে দেখা, ষত ধন সংসারের মধ্যে আছে, সকল ধনহউতে বিদ্যা উপাদেয় ধন; অন্য ধনের দ্বারা চোর অগ্নিরাজাদি-ভীতি আছে, বিদ্যাধনের দে ভয় নাই; এবং আর ধন ব্যয় করিলে ক্ষণি হয়, বিদ্যাধনের ব্যয়েতে বৃদ্ধি হয়; এবং অন্য ধন সর্বাদা সজে থাকে না, বিদ্যাপন সক্ষদ। সঙ্গে থাকে। আর দেখা, যত ভূষণ আছে, সকলহইতে বিদ্যা বড় ভূষণ, কেননা অন্য অলক্ষার বাল্য যৌবন অবস্থাতেই শোভা পায়, জ্বাবস্থাতে শোভা পায় না, বিদ্যা সর্বাবস্থাতে শোভা পায়। হে পুত্র, এ বিদ্যা তুমি উপার্জন করিলা না, অতএব তোমার জীবন মর্ণ তুলা। ফল বিবেচনা করিয়া বুঝ, পুত্র না হওয়া এবং হটয়া মরা এবং বাঁচিয়া থাকিয়া মূর্থ হওয়া, এ তিনের মধ্যে বর্ঞনা হওয়া কিশা হইয়ামরা ভাল,মূর্থ হইয়া জীবদ-শাতে থাকা কদাচ ভাল নয়, যেহেতুক পুত্র না হইলে আপনার অদৃষ্ট ভাবিয়া লোক নিবৃত্ত থাকে, হ³য়া মরিলে বড় মাদেক দুমাদ লোক শোক করে, মূর্থ পুত্র পিতা মাতার সর্বাদা দুঃখের নিমিত হয়। অতএব বলি, মুর্থ পুত্রের মরণই ভাল । কমলাকর পিতার এই সকল বাকা धनिशा विमा। উপায় করিতে বিদেশে প্রশান করিলেন, অনেক দিবদে কামার দেশে উপস্থিত হউলেন, সে দেশে চন্দ্রমৌলি নামে সর্কাশাস্ত্রে পণ্ডিত এক ব্রাহ্মণ ছিলেন, কমলাকর বিদ্যার নিমিত্ত দেই ব্রাহ্মণের উপাসনা করিতে লাগিলেন। চল্রমৌলি ব্রাহ্মণ কমলাকরের শুঞ্ঘাতে অমতান্ত সভাষ্ট হুইয়া সর্স্বতীর সিদ্ধ মন্ত্র দিলেন। কমলাকর সিদ্ধ মন্ত্র প্রভাবে অফীদশ বিদ্যাতে পণ্ডিত হইলেন। ভাহার পর কমলা-কর কাঞ্চীপুরীতে গেলেন, কাঞ্চীপুরীতে এক বাটীর মধ্যে নরমোহিনী নামে এক কন্যা থাকেন, সে বাটীতে আর কেহ থাকে না, সর্বাদা ছার मूक थारक; तम वाषीत कर्छा मूर्ड्ज नारम अक ताक्रम, तम ताजिरसारम वां हो आहेरम; य कह विष्मां म वाहीत मध्य गांग, वे कनारिक দেখিয়া মৃধ্য হইয়া থাকে, রাত্রিযোগে রাক্ষন আসিয়া তাহাকে ভক্ষণ করে, এই রূপে অনেক পথিক তথাতে মরিয়াছে। কমলাকর এই সকল বৃত্তান্ত গুনিয়া মদেশে আদিয়া এক দিবদ প্রীবিক্রমাদিত্যের নিকট এ সকল বৃত্তান্ত কহিলেন, আর কহিলেন, হে মহারাজ, এ পদ্মিনী ব্রীকে আমাকে দেও। রাজা তাহা শ্বীকার করিয়া কমলাকরকে সঙ্গে লইয়া

কাঞ্চীপুরে নরমোহিনী কন্যার নিকটে উপস্থিত ছইলেন, রাজার সে কন্যা দেখাতে কিছুমাত্র মোহ হইল না। রাজা অত্যন্ত ধৈয়াশালী জিন্তেল্রিয়। তারপর রাক্ষদ নিশাতে রাজাকে থাইতে উদ্যুত্ত হইবামাত্র রাজা খড়গ চর্মা হরের লইয়া যুদ্ধার্থে উদ্যুক্ত হইলেন, তদনন্তর রাজা ঐ রাক্ষদের দহিত নানা প্রকার যুদ্ধ করিয়া তাহাকে নইট করিলেন। রাক্ষদ নইট হইবাতে নরমোহিনী কন্যা সন্তুইটা হাজার অনেক প্রশামা করিয়া কহিলেন, হে রাজান, তুমি আমাকে রাক্ষদহইতে ত্রাণ করিয়া প্রাণদান দিলা, অতএব আমি ভোমার শ্রণাপন্না হইলামা। রাজা কন্যার এই কথা শুনিয়া কহিলেন, হে কন্যে, হুমি যদি নিভান্ত আমার শ্রণাপন্না হইলা, তবে আমি যাহা বলি তাহা প্রতিপালন কর। এই যে কমলাকর, ইনি বড় পণ্ডির, আমার অন্তিশয় প্রিয়, ইহাকে তুমি পন্ডিভাবে ভজ। রাজার এই কথাতে কন্যা সম্মতা হইলান। এই রূপে প্রি বিক্রমাদিত্য কমলাকরকে পদ্মিনী কন্যাকে দিয়া আপান রাজারনিতে আইলেন, কমলাকর পদ্মিনী কন্যাকে লইয়া আপান বাটিতে গেলেন।

X.—Liberality to the Poor. নব্মী পুত্তলিকার কথা।

ভোজ রাজা পুনর্সার এক দিবস নিরপণ করিয়া অভিষেক কারণ দিংহাদনে বদিবার উপক্রম করিতেছেন, ইতোমধ্যে নবমী পুত্রিক। কহিলেন, হে ভোজরাজ, শুন; রাজা বিক্রমাদিতের বুলা মহন্দ যার থাকে, দে এই ভদাদনে বদিতে পারে। ইহা খুনিয়া রাজা বলিলেন, হে পুত্রিকে, রাজা বিক্রমাদিতোর মহন্দ কিরপ। পুত্রিকা কহিলেন, ভোজরাজ, শুন।

অবস্থা পুরীতে জ্রীক্রিমাদিতা রাজ্য করেন, ঐ নগরীতে এক যোগা আদিয়া উদ্যানের মধ্যে থাকিলেন, সে যোগা দর্মজ এবং বাক্সিদ্ধ নিরাকাপ্তক্ষ পরম বৈরাগ্যমুক্ত, যাহাকে যাহা বলেন তার তাহাই সিদ্ধ হয়। যোগির এই দকল বৃত্তাম্ব রাজা লোকের প্রমুখাৎ শুনিয়া যোগিকে আনিবার কারণ সভাসং পণ্ডিতদিগকে পাঠাইলেন। যোগা পণ্ডিতের প্রমুখাৎ রাজার আহ্রান শুনিয়া আইলেন না, কহিলেন, আমার রাজার নিকট গিয়া প্রয়োজন কি? যে পুরুষ নিফ্রাম সে তৃণের নাায় অপুর্ক সুন্দরী প্রীকে দেখে; যে নিক্সাপ সে তৃণতুল্য যমকে জানে; যে নিজ্লোভ সে রাজ্যম্যাক্র তৃণপ্রায় জানে, যে নিক্সায়েজন সে রাজাকে তৃণ সমান মানে। গোগির এই সকল কথা পণ্ডিতেরা শুনিয়া রাজার সাক্ষাতে আদিয়া কহিলেন। রাজা শুনিয়া বৃথিলেন,

যোগী ভাল বটে। লোক রাজার নিকটে আসিতে প্রার্থনা করে, আমি ডাকিয়া পাঠাইলাম, তথাপি আইলেন না, অতএব বুঝিলাম এ যোগী নিতান্ত নিস্পৃহ বটেন। রাজা এই বিচার করিয়া আপনি যোগির নিকটে আইলেন, যোগা রাজার রাজচিহু ও মহাপুরুষ লক্ষণ দেখিয়া অত্যন্ত সন্তুস হইয়া রাজাকে দিব্য এক ফল দিলেন, এবং সে ফলের প্রভাব কহিলেন, যে এ ফল খায় সে অজর অমর নিরোগ হইয়া থাকে। রাজা সে ফল পাইয়া আপন বাটাতে আসিতেছেন, ইউমধ্যে পথে এক ব্যক্তিকে অত্যন্ত রোগার্ত দেখিয়া ভাহার প্রতি দয়া করিয়া সে ফল দিলেন।

XI.—Liberality to Subjects.

দশমী পুত্তলিকার কথা।

তৎপর অন্য এক মুহ্রে অভিবেক কারণ প্রভোজরাজ দি৲হাসন সমাপে আদিলেন। দশমী পুত্রলিকা ভোজরাজকে দেখিয়া উপহাস করিয়া কহিলেন, হে ভোজরাজ, তুমি এ দি৲হাসনে বসিবার উপযুক্তনহ। শ্রীবিক্রমাদিভ্যের সদৃশ যে রাজা দে এ দি৲হাসনে বদিতে পারে। ভোজরাজা কহিলেন, রাজা বিক্রমাদিভ্য কাদৃক্ছিলেন? দশমী পুত্রলিকা শুনিয়া কহিলেন, হে ভোজরাজ, শুন, শ্রীবিক্রমাদিভ্য যে রূপ প্রণবান্ছিলেন, তাহা কহি।

এক দিন জীবিজ্ঞাদিত্য ভূমণ্ডল অবলোকন কারণ যোগপাদুকা আারোহণ করিয়া চলিলেন; নানা দেশ ভূমণ করিতে ২ এক স্থানে পর্বতে
অতি বড় গস্তারের মধ্যে এক অপূর্ব্ধ মনোহর বৃক্ষ দেখিয়া দে
বৃক্ষের তলে গিরা বদিলেন; ভারপর দে বৃক্ষের উপরে চিরজাবী নামে
এক পক্ষী থাকেন, সেই পক্ষির পরিবারগণ নানা দেশে আহার প্রচারণ করিয়া সন্থা সময়ে ঐ বৃক্ষের উপরে আদিয়া পক্ষিরা প্রস্পার
কথোপকথন করিতে লাগিলেন। ইত্যবসরে এক পক্ষী কহিলেন, আজি
আমার অতি বড় দুংগ হইমাছে। পক্ষি সকল ঐ পক্ষিকে জিজাসা
করিতেতেন, তোমার কি দুংগ । পক্ষী কহিলেন, তোমরা আমার অতঃকরণের দুংখের বৃত্তান্ত মনোযোগ করিয়া শুন।

সমুদ্দুর মধ্যে এক দ্বীপ আছে, সেই দ্বীপের রাজা এক রাক্ষদ, প্রজা মনুষ্য লোকেরা। এক দিবদ ঐ রাক্ষদ সকল মনুষ্য থাইতে উদ্যত হইল, এই ভয় প্রযুক্ত সকল প্রজাতে প্রামর্শ করিয়া কছিলেন, হে রাক্ষদ, তুমি আমাদের রাজা, আমরা ভোমার প্রজা। প্রজা পালন রাজধর্ম। তুমি রাজা হইয়া প্রজাদিগকে ভক্ষণ করিতে উদ্যত হও এমত উদাযুক্ত নহে:। আমরা ভোমার আহার কারণ প্রতি দিন এক মন্য্য পর্যায়ানুসারে দিব। রাক্ষন দেই দিন অবধি প্রত্যাহ এক্ ২
মনুষ্য আহার করিয়া সন্তাই থাকে, প্রজাদিনের অধিক উপদুব করে
না। আমি আজি দেই দেশে চরণে নিয়াছিলাম, দেই ছানে আমার
এক মিত্র আছে, তাহার এক পুত্র। আমার মিত্রকে অদ্য এক মনুষ্য
দিতে হইকে, অতএব আমার মিত্রপুত্রকে রাক্ষন ভক্ষণ করিবে, এই
নিমিত্তে আমি অত্যস্ত দুঃথিত হইয়াছি।

রাজা বিক্রমাদিতা কৃক্ষের তলে থাকিয়া পক্ষির কথা খনিয়া যোগ-পাদুকাতে আরোহণ করিয়া রাক্ষম রাজার দেশে গেলেন। পক্ষির মিত্র-পুল আপন শরীর রাক্ষসকে ভক্ষণ করিতেদিবার কারণ মরণ ভয়ে অত্যন্ত কাত্র হইয়া বসিয়াছেন। রাজা বিক্রমাদিতাঐ স্থানে উপস্থিত হইয়া কহিলেন, হে বালক, হুমি নিজ গৃহে যাও, আমি ভোমার হইয়। নিজ শরীর রাক্ষদকে ভক্ষণ করিতে দিব। বালক কহিলেন, ছে পুণ্যাত্মা, ভূমি কে? আমাকে পরিচয় দেহ। রাজা কহিলেন, আমার পরি-চয়ে ডোমার কি প্রয়োজন ? বালক বিক্রমাদিতোর এই কথা ভানি-য়া আনন্দিত হইয়া আপেন গৃহে গেলেন। রাজা বিক্রমাদিতারাক্ষ-সের আহার্ধানে হাস্যবদনে নিভয় ছইয়া বসিয়া থাকিলেন। রাক্ষস আহারের কালে দেই খলে আদিয়া উত্তম পুরুষ দেখিয়া কহি-লেন, হে মনুষা, ভোমার মৃত্যুকাল উপবিত হইল, ইহাতে ভয় না করিয়া হাস্য করিতেছ? তুমি কে? আমাকে পরিচয় দেহ। বিক্রমা-দিত্য কহিলেন, আমি ভোষার আহারের কারণ আগিয়াছি, পরিচয়ে কি প্রয়োজন? আমাকে ভহল কর। রাক্ষদ তুষ্ট হটরা কহিল, ছে উত্তম পুরুষ, তুমি বড়ই পুণ্যালা, আমি হোমাকে তুফী হইলাম; আমার স্থানে তোমার যে অভিলয়িত থাকে তাহা যাক্র। করে। রাজা কহিলেন, ঘদি আমার প্রতি তুট্ট হইলা, তবে অদ্য অবধি প্রজার হিৎসা করিবা না। অনন্তর রাক্ষম তথাশ্ভ বলিয়া রাজার বাক্য স্থাকার করিলেন। রাজা गোগপাদুকাতে আরোহণ করিয়া নি**জ রা**জধানীতে আইলেন। দে অহধি রাক্ষদের প্রজা লোকেরা সুস্থ হইয়া থাকিল।

XII .- Liberality to a Pandit.

পঞ্চশী পুত্তলিকার কথা।

পুনর্বার এক দিবস অভিষেকার্থ সিংহাসন সমীপোপ ছিত প্রভোজ-রাজাকে দেখিয়া পঞ্দশা পুতলিকা কহিলেন, হে ভোজরাজ, অন, এ সিংহাসনে বসিবার যে উপযুক্ত তাহার বৃত্তীত্ত অন। রাজা কহিলেন, কহ, সে বৃত্তার কিরপ।

প্তলিকা কহিলেন, এক সময়ে এবিক্রমাদিত্য হন্ত্রী অখ রথ পদাতিক রূপ চতুর জিনী সেনাসমভিব্যাহারে সর্কাদিগ্রিয়য় করিয়া এবং রাজা-সমূহকে স্বৰশীভূত করিয়া ধীসচিব কর্ম্মাচিব সভাস্থ পণ্ডিত প্রভৃতির সহিত সভামপ্যে বদিয়াছেন। ইত্যবসরে জ্রীড়াবনাধ্যক্ষেরা রাজদাক্ষাৎকারে আসিয়া কৃতা ঋলি হইয়া বিনয় পূর্বক নিবেদন করিলেন, হে মহারাল, দকল থ্রুরাজ বদত্ত আপনকার বিলাদবিপিনসমূহে প্রবেশ করিলেন, বনরাজি নবীন পল্লব ফল পুফপ স্তবক মঞ্চরী ভারেতে পর্ম শোভাবি-শিষ্ট হইয়াছেন, সকল সরোবরে সর্সীরুহ প্রকাশ হইয়াছে, ভূমর্মালা মধুপানে মত হইয়া মনোহর শব্দ করিতেছেন, কোকিলমিথুন মধুর রব করিতেছেন। উদ্যানপালদের এই বাক্য শ্রুতণ করিয়া রাজা দপরিবারে ক্রীড়াবনে গমন করিলেন, নানা স্থানে নানাবিধ সুখান্তব করিয়া বন-মধ্যবন্তী বিচিত্র মণ্ডপ মধ্যস্থিত মণিমণ্ডিত কণকময় দিৎহাদনে উপবিষ্ট হইয়া পণ্ডিতদের সহিত শাস্ত্র প্রসঙ্গ করিতে লাগিলেন। ইত্যবদরে রাম্কার ধর্মাধিকারি পণ্ডিত জানশান্তের এক প্রদক্ষ করিলেন, হে মহারাজ, শ্বন, রাজলক্ষ্মী কথন কাহাতেও স্থির হইয়া থাকেন না। রক্ত মাৎস নানাবিধ ব্যাধিময় এ শরীরও স্থির নয়, এবং পুত্র মিত্র কলত প্রস্তৃতি কেহ নিতা নয়, অতএব এ সকলে আতান্তিক প্রীতি করা জানি জনের উপযুক্ত নয়। প্রীতি যেমন স্থাদায়ক, বিচ্ছেদ তভোধিক দৃঃখ-माग्नक इग्न; अड्यत निडा तख्ट मत्नाजिनित्तम कर्ना जानित कर्वता। নিত্য বন্দ্র সচিদানন্দ বিগৃহ পর্মপুরুষ ব্যতিরেকে কেছ নয়; ওাঁহাতে মন সৃত্তির হইলে জীব অ্যার সংসার কারাগারহইতে মুক্ত হয়। রাজা ধর্মাধিকারির এই বাকা প্রবণ করিয়া কিঞিৎ কাল আত্মমনে বিবেচনা করিয়া কহিলেন, হে ধর্মাধিকারি, তুমি যাহা কহিলা তাহা युक्त वरहे। वद्ध वह जिनुविशिष्ठे शतीरत्व श्रागवायुत सि जिलादत्व জীবন, তাদৃশ প্রাণবায়র শরীরহইতে নির্গম জীবের মরণ। অতএব জীবের জীবন বড় আশ্চয্য, মরণ সহজ। সাৎসারিক যাবৎ বিষয় शांवर जीवन जांवर भगान ; भव्राना हुत् काहात महित मसन्न शांदक না, ইহা প্রভাক্ষ; দকলে জানিয়াও বিষয়েতে মত থাকে। ইহার প্র অজ্ঞান বাকি ? এ জান নই না হইলেও প্রমপ্রুষেতে শ্বিত্রানুরার হয় না। অজ্ঞান নাশ যৎসঙ্গ করণে হয়, সেই পর্ম সাধু; অতএব ত্মি পরম সাধু বট। বিক্রমাদিতা এই রূপ নানা প্রকার জানকথা কহিয়া ধর্মাধিকারিকে পরিভোষার্থ অন্ট লক্ষ বর্ণমূদ্রা দিলেন।

XIII.—Liberality to an Enemy.

ত্রয়োবিৎশতি পুত্তলিকার কথা।

পুনরপর দিবদে অভিষেকার্থ সিংহাসন নিকটোপস্থিত প্রভোজ-রাজকে দেখিয়া ত্রোবিংশতি পুত্রলিকা কহিলেন, হে ভোজরাজ, প্রক্রিমাদিত্যের তুল্য শৌষ্য ধৈর্য্য উদায্যশালী যে হয়, দে এ সিংহা-সনে বৈসুক। রাজা কহিলেন, প্রীবিক্রমাদিত্যের শৌষ্যাদি কি রূপ? প্রলিকা কহিলেন, হে ভোজরাজ, খন।

অববী নগরে জ্রীবিক্রমাদিতা সামাজ্য করেন: ঐ নগরে ধনপতি নামে ত্রিংশং কোটীখর এক বণিক থাকেন, তাহার চারিপুত্র। ঐ বণিক আপন মৃত্যসময়ে চারি পুলকে করিলেন, হে পুলেরা, ভোমরা আমার মৃত্যুর পর একত থাকিবা, বিভক্ত কদাচ হইবানা; সহবাসের ৪৭ বিশুর; ইভরেতর মাহাম্যে ক্রু লোকেরাও আসাধ্য কার্যা সিদ্ধ করিতে পারেন; যেমন তৃণ সমূহ একত হট্যা দৈবি বৃষ্টি নিবারণ করেন; ঐ তুণেরা বিভক্ত হউলে সে বৃটি নিবারণ করিতে পারেন না, পরত্ত ঐ বৃঠির জলে আপনারা ভাদিয়া যায়; অতএব মিলিয়া থাকা ভাল। যদি দৈবাং সমূলিত হুট্যা থাকিতে নাপার, তবে আয়া-মার শয়নভানে ভোমাদের নামাস্কিত করিয়া ঢারি কলস পুঁঙিয়া রাখিয়াছি, তাহা আপেন ২ নামানুসারে লউবা। এই রূপ পুত্রদিগকে শাসন করিয়া ধনপতি দেহতাগ করিলেন। কিয়ৎ কালাওর বণিকপজেরা প্রস্পর কলহ করিয়া বিভক্ত হউয়ায় ২ নাম চিকিত চারি কল্স মৃত্তিকাছইতে উদ্ধার করিয়া দেখিলেন, জ্যেতের কলদে মৃত্তিকা, ৰিভীয়ের ঘটে অন্ধার, সুখীয়ের কুন্দে অভি, চহুথের কল্পে ভূষ; ইহার অভিপ্রায় না ব্ঝিয়া অনেক বিচক্ষণ লোকদিগকে জিজাদা করিলেন; ইছার অভিপ্রায় কেহ কঠিতে পারিলেন না। এই রূপে অনেক দি-दम পর্য্যস্ত চারি সংহাদরে বিভক্ত হট্যা দুঃখেতে কাল যাপন করিলেন। এক দিন ঐ ঢারি বণিকপুলেরা জ্রীবিক্রমানিতে র সভাতে গিয়াসভা লোকদিগকে জিজাদা করিলেন, ততাপি কলদের তকা নিরূপণ হটল না। কিন্তু ঐ প্রতিষ্ঠান নগরে দুই ব্রাহ্মণ থাকেন, তাহাদের এক বিধবা ভণিনী প্রম রূপ্রতী, তাহাকে পাতাল্ডউতে এক নাগপুল আসিয়া সল্লোগ করিয়াছিল, তৎপ্রাকুল গার্ত্তা হইলেন। ভালার ভালা দুই জন বিধবা ভূগিনীর গার্র কেথিয়া শক্ষামিত চুট্টা দেশাখুরে গেলেন। ঐ বিধবা বাৃহ্মণী কিছু দিনের পর এক পুত্র প্রদৰ করিলেন, তাহার নাম শালিবাহন, ঐ শালিবাহন আপন মাতার সহিত এক কৃষ্টকার-গৃছে থাকেন। তিনি দেই ঘটচতুষ্টয়ের বৃত্তান্ত এবণ করিয়া প্রতি-

ষ্ঠান নগরন্থ রাজসভাতে আসিয়া কহিলেন, হে সভাবর্গ, এ ঘটত্যুটয়ের ঘথার্থ নিরপণ আমি করিব। ইহা শ্বনিরা সকল সভা লোকেরা
দে নাগপুত্রের মুখ নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। বালক কহে, মৃত্তিকা
পূরিত ঘট ঘাহার নামে, ভূমি ধন তাহার। অলার পূরিত কলস
যাহার নামে, স্থা রজত কাংসা পিতল তামু এপু শীশক লোহরপ অন্ট
ধাতু দুবা তাহার। অথি পূরিত কুদ্ যাহার নামান্ধিত, তাহার হন্ধী
ঘোটক গো মহিষ ভাগ মেষ দাস দাস্যাদিরপ দিপদ চ্মুম্পদ ধন।
ত্য পূরিত গর্গরী যাহার নামে, ধানা যব গোধুম কলাই মুদ্গ চনক
তিল সর্ধপাদিরপ শাস্থন তাহার। নাগপুত্রের এই বাকা শ্বনিয়া চারি
ভূযাতে আনন্দিত হইয়া পিতৃক্তাংশানুমারে স্থাই ভাগ লইরা পর্ম
মুখে কাল ক্রেপণ করিলেন।

নাগপুত্র কৃত নির্ণয় লোক পরস্পরাতে জীবিক্রমাদিতা খনিয়া নাগপুত্রের আনয়ন নিমিত্ত প্রতিষ্ঠান নগরে দূত প্রেরণ করিলেন। কিন্তু শালিবাহন আছিলেন না, কহিলেন, বিক্রমাদিত্যের নিকটে যাওনের কি প্রয়োজন? যদি তাঁহার কিছু প্রয়োজন থাকে, তবে তিনি আমার নিকটে কেন না আইদেন । দুতের। এই বাক্য এবিক্রমাদিতোর সাক্ষাতে গিয়া কছিল। রাজা বালকের এই বাক্যে বিধিতে এবং কিঞিৎ জুদ্ধ হইয়া চতুর কিনী সেনাপরিবৃত এীবিক্রমাদিতা ধর পথতিষ্ঠান পুরে উপন্থিত হইলেন। তথাপি শালিবাহন রাজার মন্তাষার্থে বিক্রমাদিত্যের নিকট আইলেন না। জীবিক্রমাদিতা ক্রম হইয়া স্থ নীয় লোক প্রেরণ করিয়া শালিবাছনের পুরী গৃহ রোধ করিলেন। তদনগুর শালিবাহন মগৃহাবরোধন দেখিয়া মৃত্তিকানির্মিত গজ তুর্গ পদাতিকাদি স্বপিতৃপ্রভাবে সজীব করিয়া মুদ্ধার্থে আজা দিলেন। শালিবাহনের দৈনোরা এ। বিক্রমাদিতোর দৈনোর সহিত অনেক দিবস পর্যাও বিবিধ প্রকার মুদ্ধ করিলেন। তথাপি জ্ঞাবিক্রমাদি-ভোর প্রভাবে ডংগৈনোরা ভঙ্গ হটল না। এক দিবস রাত্রিযোগে শা-লিবাছনের পিতা পাতালপুরস্থ নাগপুল আসিয়া বিক্রমাদিত্যের সকল দৈন্যকে দংশিয়া বিষজবালাতে মূর্জিত করিয়া গেলেন। এই বিক্রমা-দিতা দ্বকীয় দকল দেনাকে মূচ্ছিত দেখিয়া অমৃত দেচনে দৈনাদের জীবনার্থে নাগরাজ বাসুকির মন্ত্রজাপ করিলেন। বাসুকি ভূষ্ট হইয়া রাজাকে অমৃত দিয়া গেলেন। রাজা ঐ অমৃত লট্যা বাঁচাইতে যা-ইতেছেন, পথিমধ্যে শালিবাহন প্রেরিত পুরুষদর রাজার সন্মুখে আনিয়া ঐ অমৃত প্রার্থনা করিল। এতিক্রমাদিত্যের এই নিয়ম,যে যাহা প্রার্থনা করিবে, ভাহাকে ভাহাই দিব। অতএব মনিয়ম ভঙ্গ ভায়ে এ পুরুষদ্বয়কে অমৃত দিলেন। মহতের মহত্র এই যে ধ্বাক্যের আন্যথাচরণ কদাচ না হয়। এই রূপে প্রীবিক্রমাদিতা একাকী পথি-মধ্যে চিন্তা করিলেন, শুভ কর্মা কর্ণাজ্জিত পুণাবলে পুরুষ দম্ভর

বিপৎসাগর তরে, এই শাত্ত্রে প্রমাণ আছে। অতএব ধর্ম আমাকে অবশ্য রক্ষা করিবেন। রাজা এই ভাবনা করিতেছেন, ইতাবসরে পাতালনগরীহইতে বাসুকি বয়ং আসিয়া অমৃত বৃষ্টি করিয়া প্রিক্রিমাদিত্যের সকল সৈন্যকে সজীব করিয়া গেলেন, সৈন্যেরা স্থোজিত প্রায় কোলাহল করিতে লাগিল। রাজা বিক্রমাদিত্য সৈন্যক্রে জাবন দানে প্রম সভ্সী হইলা সকল সেনার সহিত্যপুরীতে আইলেন। অন্যোন্য প্রভাতে অন্যোন্য বিস্তিত্ত ইউলেন।

XIV.—Liberality to all.

দ্বাতিৎশৎ পুত্তলিকার কথা।

অন্য এক দিবস সিংহাসনারোহণোদ্যত আভিডোজরাজকে নিহারণ করিয়া ছাতিংশত্মী পুতলিকা কহেন, হে ভোজ রাজ, এতদ্দাসন উপ-বেফা আহিজেমাদিতোর কিঞিৎ ওণোপাথ্যান শুবণ কর।

এক সময়ে অবগুহ প্রবুক্ত প্রায় ভাবদেশে কোন শদ্য না জন্মিবাতে দকল দেশের প্রজা লোকেরা শদ্য মাহার্য্য প্রযুক্ত দৃষ্টিক্ষব্যাকৃল হট্যা বিচার করিলেন, মহার জাধিরাজ জীবিক্রমাদিতা প্রম ধার্মিকে, উাহার দেশে দুর্ভিক্ষ হয় নাহি, অতএব দে দেশে গিয়া সকলে প্রাণ রুক্ষা করি। এই রূপ প্রামশ ক্রিয়া অনা২ রাজার দেশছইতে 🕮 বি-ক্রমানিত্যের দেশে আইলেন। এই সন্থাদ গ্রীনিক্রমানিতা দৃত প্রম্থাৎ युनिया ब्रामरण मर्या जाजा निर्लान, निर्माशक अबार्थिता स्य सान যে ভক্ষাদুবা পাটবেন, তাহা হচ্ছেদে ভক্ষণ করিবেন; ইহাতে কেছ প্রতিবন্ধকভাচরণ না করিছে। যাহার যত টাকার দুব্য এডদর্থে বায় হইবে, সে তত টাকা আমার ভাণারহইতে পাইবে। এইরূপ ঘোষণাতে মকলে রাজাজানুদারে বাবহার করিলেন। ইহাতে নগরস্থ ভদু লো-কেরা আনহারোপযুক্ত দুব্য ক্রয় করিতে না পাটয়া রাজার সাক্ষাতে নিবেদন করিলেন, হে মহারাজ, আমরা নগরস্থ বিশিষ্ট সোক, কৃষি-কর্ম কখন করি নাহি, ক্রীত শদামাতোপর্জাদী; দম্পুতি এক মৃদা লভা শদা শত মুদুাতেও পাই না; এতলিমিতক দপরিবারে আনমা-দের প্রাণ্রক্ষা হয় না। জীবিক্রমাদিতা বিশিষ্ট লোকদের এই বাকা ন্তনিয়া অভ্যন্ত চিকালিত হইলেন। মনে বিচার করিলেন, যদাপি বিদেশাগত বৃভুকুদিগকে বারণ করি, তবে বাক্য মিথা। হয়। যদি গুছেকদিগতে জ্বানার্থে নিবারণ করি, তবে সর্বোপকারিতাপুত ভঙ্গ হয়। এই রূপ চিস্তাখিতচিত হইয়া প্রমেখরীর আরাধনা করিলেন। পর-

মেশ্বী সাক্ষাৎ হট্য়া আজা করিলেন, হে মহারাজ, বর প্রার্থনা কর। রাজা কৃতাঞ্চলি হইয়া গদ্য পদ্য বিবিধবাক্য প্রবন্ধে দেবীর স্কর করিয়া বর প্রার্থনা করিলেন, হে দেবি, যদ্যপি আমার প্রতি সন্ত্র্টা হইয়াছ, ভবে এই বর দেও, আমার দেশের সকলের গৃহে অক্ষয় ভক্ষণীয় দ্ব্য হউক। দেবী তথাদ্য বলিয়া রাজার প্রোপকারকভাধর্মে অভ্যন্ত --সক্তটা হইয়া রাজাকে চিডামণি নামে এক রতন দিয়া অন্তর্হিতা হই-লেন। রাজা প্রজাবর্গের স্বাস্থ্যে সৃস্থাতঃকর্ণ হট্যা সভামধ্যে দিংহাসনোপবিষ্ট হইয়া মন্ত্রী সামন্ত মহামাত্র প্রভৃতিদের সহিত বি-চার করিয়া ভীর্থযাত্রার কর্ত্রতা নিশ্চিত করিয়া সামগী সমবধানার্থ আজা দিয়া বসিয়াছেন। ইতোমধ্যে এক ধূর্ত কপট সন্মাসী দেহাত্ম-বাদী প্রত্যক্ষমাত্রপ্রমাণবাদী রাজসভাতে আসিয়া উপস্থিত হইয়া কৃষ্ণাজিনোপবিষ্ট রাজাকে জিজাদা করিল, হে মহারাজ, এ দকল সামগ্রী সমবধান কি নিমিতে হইয়াছে? রাজা কহিলেন, আমি তীর্থ-याजा कतित, उनर्था এ मकल मामशीत आर्याजन रहेगाएए। ठाउँगाक कहिन, डीर्थ वा कि? डीर्थगाजा कतितन वा कि इस? तांजा कहितन, तक्रांनि छीर्थ; उरबानांनिएड পূर्णारभानन इश, उरभूरण कलाका अक्तित ষর্গ হয়, ফলাভিদন্ধিরহিতের চিত্তম্বলাদি প্রণালীক্রমে তত্তত্তান ছইয়া মুক্তি হয়। চার্মাক এই বাকা শুনিয়া অত্যন্ত উপহাদ করিয়া কহিলেন, প্রহারক কম্পিত মিথ্যা প্রমাণেতে অজ্ঞানিরা নফী হউক। কিন্ত মহারাজ, তুমি জানবান সার্গাহী, ভোমার উপগুক্ত এ বাকা নহে। পারমার্থিক জানিদের যে কথা তাহা রন। যে অজ্ঞান প্রুষেরা ষ্বর্গার্থে কর্মা করে, তাহাদের এ বড় বৃদ্ধি ভূম। যে কর্মের বিনাশ প্রত্য-ক্ষতো দেখে, সেই বিন্ফ কর্মাকে দেহারুরে স্বর্গাদি ফলের জানক कतिया तटल। रिध्वस्र कार्व कथन कार्यात् जनक इस ना ; स्यमन দক্ষ সত্র পটের জনক হয় না। অতএব স্থগ মিথ্যা, এবং এই যুক্তিতে নুরুক্ত মিথাা; আরু বতুমান দেহপাডোত্র ভাবি দেহান্তর্সম্বন্ধ আত্মার হয়, এ কথা নিভান্ত অন্তপরস্পরাসিদ্ধ কথার ন্যায়। অভএব আত্মার শরীরাত্তপ্রাপ্তি মিথ্যা, এ প্রযুক্ত মর্গ ও নরক ও মর্ত্য এবং অপ্রত্যক্ষ যে ধর্মাধর্ম দেও মিথাা; দেহাতিরিক আত্মা আছেন এ যে কথা গগণকৃষ্ম প্রায়; মহার্ণাস্থ বৃক্ষাদির ন্যায় শ্বতঃ স্থিতু। পেতি-প্রলয়শালি দৎসারের কর্তা পাতা হতা ঈখর, এই যে কম্পনা সে কম্পনা-মাত্র; অতএব প্রত্যক্ষাতিরিক প্রমাণে যে প্রামাণ্যবৃদ্ধি দে অপ্রামাণিক; কিন্তু অন্তর্গোলাঙ্গুলের ন্যায় অজানান্ত লোকের ব্যামোহ কারণ অস-দুপদেশমাত্র। প্রীবিক্রমাদিতা চার্ব্বাকের এই রূপ নানা প্রকার বেদ-বিরুদ্ধ বাক্য শুনিয়া কিঞিৎ কোপাবিষ্ট হট্যা কহিলেন, অরে নাত্তিক, প্রত্যক্ষাতিরিক প্রমাণ নাই, এ বাকা কহ যে তৃমি, তৃমি এই স্থল

মতাবলন্থনে অনুমানাদি প্রমাণ যদ্যপি না মান, প্রত্যক্ষমাত্র প্রমাণই মান, তবে মহামহোপাধাায় পণিত যদি দৈবাৎ অতান্ত বধির হন, তবে ভাছার নিজ বাক্যের প্রামাণ্যগৃহ কি রূপে হয় ? যদি না হয়, ভবে ভা-হার কোন ব্যবহার দিল্ধ হউতে পারে না। কিন্তু লোকে দেখিতেছে, এতাদৃশ পণ্ডিত পরোপদেশও করিতেছে এবং আল্লব্যবহার নির্মাহ করিতেছে। আর যদি কথন তুমি ধশিরশ্ছেদন ধ্পে প্রতাক্ষ দেখ, ভবে ভূমি নিদুভিলোত্র আপিনাতে কি মৃত বাবহার কর, কিলা জীব-हातकात कत? यनि मृडतातकात कत, उत्त जूमि विलक्षण विष्ठकण वरे। যদি জীবদাবহার কর, তবে প্রতাক্ষ প্রমাণের বাধ হটল। আতএব ভোমাকে প্রভাকাতিরিক দর্ম শাস্ত্র দিদ্ধ অনুমান প্রমাণ অবশা মা-নিতে হউবে। আর সম্পুতি তোমাকে এক কথা জিজাসা করি। তৃমি কি আকাশপতিহাগত, কিলা যংকিঞিং বংশজাত? যদি বল, আকাশ-প্রভাগত, তবে তুমি উঅত। যদি বল, যংকিঞিং বংশজাত, তবে ভোমার তদৎশজাততের প্রমাণ কি? ইহাতে বলিবা, আমার পূর্বরপুরুষেরা অমৃক বংশজাত, ইহা আমি প্রামাণিক লোকদের স্থানে শুনিয়াছি; অতএব অনিচ্ছাতেও ভোমাকে প্রামাণিক বাকারূপ শব্দ প্রমাণ মানিতে হইল। যদি এই রূপ অনুমান শব্দ প্রমাণ মানিলা, তবে অনুমানদিদ্ধ এবং শনপ্রমাণদিদ্ধ যাবরন্ধ অবশ্য মানিবা। কিন্তু অর্পন্ধরতীয় ন্যায়বৎ বাক্য উপযুক্ত নয়। সে দকল কথা যা হউক, প্রতিনিয়ত দেশ কাল কারণ জাত গুভাগুভকর্মফল সূথ দুঃখাত্মক শিল্পকর ম্বপাচিস্তা রুচনাত্মক যে সংসার, ইহার কারণ প্রমেশ্রকে অবশ্য মানিতে হউবে। আত্মচিত্তে বিবেচনা করিয়া বুঝ ন্যুনাধিকাভাবে বর্তমান यर रुफ, म नकल रुफ़्त मीमासान अरुगा कह আছে। समन मध्यायत दुन ननी ननानिष्ठ नानाथिकाछात्यक खिठ दहेशाएक स्य জল তাহার দীমাঝান দমুদু। তহুৎ প্রায় এখর্য্য বীর্ঘ্য শাঁলোভা জান বৈরাগ্যাদি ন্যনাতিরেক ভাবে প্রাণিবর্গে আছেন, অভএব भैत्रयानि यावनु हम छ १० व मी मास्रान का शाक छ जावना विनिष्ठ हहे रव। ইহাতে যাহাকে বলিবা তিনি এক প্রমেশর; তাহার স্বরূপ এই नर्सक मर्स्सभत मस्तिमञ्जा, कार्याक्राप এवर कात्रवक्राप अखिताकः, मकल्लत অन्तःकत्व व्याभात माक्की, भामशेन अथष्ठ मर्खावन, वातर भा-ণিছীন সর্ব্যাহী, নেত্রছীন সর্বাদশা, শোত্রছীন সর্বশো্ডা, তিনি সকলকে कारनन, डाँशास्क रकश कारन ना ; गर्सवस्थि, किस गकरलाते मूर्लछ ; डाँ। হার কেহ আধার নয়, তিনি সকলের আধার; সচিচদানন্দমাত্রশ্বরূপ, ভাঁহার শক্তি দুর্ঘটঘটনপটুত্রা, অতএব তাহাকেই মহামায়। করিয়। শাত্রে বলেন। তিনি দকল জগতের মূলকারণস্কপা, অতএব তাহাকে मृल अकृष्ठि रालन। वेथंद्र उत्तरखदा वेथंद्र मक्तिद कार्या स्तरक স্বপ্রের ন্যায় জানেন; অতএব ঈশ্রশক্তিকে মহানিদুা করিয়া বলেন। এতাদৃশ শক্তিসহকারী নির্প্তণ নিফকর্ম সচ্চিদানন্দমাত্রস্করপ প্রমেশর সর্ব্যক্তরাদি ৪৭ক হন। এবদ্বিধ প্রমেশর বিষয়ক আদর নৈরন্তর্য্য দীর্ঘকাল দেবিত জান মোক্ষের কারণ হয়। প্রীবিক্রমাদিতা এই রূপে চার্ব্বাককে কহিয়া কহিলেন, হে চার্ব্বাক, দকল শান্ত্রের ছানয়ার্থ তো-মাকে বলি শুন। যেমন মাহা স্থানের রোগনিবৃত্তি নিমিত্তক কটু তিক ক্ষায়োষধি পান করাইবার সময়ে সাস্ত্রনা নিমিত্তক ক্ছেন, ছে পুজ, ঔষধি পান করিলে ভোমাকে মিউমোদকাদি দিব, এই **রূপ ফল** দশ্টিয়া ঔষধি পান ক্রান; ডৰং প্রায় মাতৃক্পা শুতি কাম জোধ লোভ মোহ মদ মাংস্ফা রূপ রোগ নিবৃত্তি কার্ণ স্বর্গাদিরূপ ফল দশ্টিয়া ব)রায়াম মাধ্য কর্মকাঙে প্রবর্তান। যেমন রোগ নিস্তির ফল সুম্বতা, তেমন কামাদি নিত্তির ফল ঈগরনিষ্ঠা। অতএব সকল কর্মকাণ্ডের পরম ফল ঈখর্নিষ্ঠা। বাহার ঈখর্নিষ্ঠাহইল, ভাহার কর্মাদির অপেক্ষা নাহি। যাহার ঈগুর্নিষ্ঠা নাহি, ভাহার কর্ম মিথ্যা-ফলক। অতএব তুনি ঈগর্নিতা না করিয়া পলবুরুছো পাণিতেয় বৃথা কাল ক্ষেপণ কেন কর় ? রাজার এই সকল বাক্য শুবণ মহৌ-ষ্ঠি পানে চার্স্বাকের চিত্তম নাশ্তিকতা পিশাচী পলায়ন করিলেন; চার্কাক জীবিক্রমাদিতাকে ওরুর নার মানিরা তাহার সকল বাক্য মা-নিলেন। উহাতে রাজা মন্ত্রট হইয়া চাধাককে নানাপ্রকার ধন দিয়া পরিসুষ্ট করিলেন।

দাতিংশতি পৃতলিকার এই কথা সমাপ হইসামাতে সকল পৃতলিকা একত হইয়া কহিলেন, হে ভোজরাজ, প্রমহারাজাবিরাজ বিজ্ঞমাদিত্যের প্রণোপাখ্যানোপন্টদে রাজাবের যে সকল উত্তম প্রণ, তাহা বিস্তার করিয়া কহিলাম; এ সকল প্রণ যার থাকে সেই উত্তম রাজা এ সিংহাসনে বিস্বার উপসুক্র, অন্য রাজা বসিলে তাহার সমূহ অমঙ্গল হয়; অতএব আমরা গোমার হিত্রকাম্যাতে তোমাকে এ সিংহাসনে বসিত্ত বারণ করিলাম; ইহাতে আপনি অসন্তন্ত ইবনে না। তুমি আমাদের মহোপকারী; ভোমার প্রসাদে আমরা মুনিশাপপ্রাপ্ত স্থাবহুইতে মুক্র হইয়া জন্মভাব প্রাপ্ত ইইলাম; ভোমার মঙ্গল হউক; প্রম সূথে রাজ্য করে। আমরা সিংহাসন লইয়া স্থানে করি। পুতলিকারা প্রাভাজরাজকে এই কথা কহিয়া সিংহাসন লইয়া স্থানে প্রস্থান করিলেন।

FROM THE HISTORY OF INDIAN KINGS.

त्राजावनि।

I .- Introduction.

পিতৃকপ্পাদি বিংশং কপ্পের মধ্যে ঘটীয়াত্তের ন্যায় কালচক্ষের ভূমণবশতো বর্তমান খেতবারাহ কপ্পে যাইতেছে; একৈক কপ্পেতে চতুর্দশাং
মনুহয়; তাহাতে খেতবারাহ কপ্পের মধ্যে বৈবন্ধত নামে সপ্স মনু
যাইতেছেন। একৈক মনুতে ২৮৪ দুই শঙ্ক চৌরাশি যুগ হয়। তাহার
মধ্যে বৈবন্ধত নামে সপ্তম মনুতে ১১২ এক শঙ্ক বার যুগের যুগ এই
কলি যুগ ঘাইতেছে। ইহার পরিমাণ ৪১২০০০ চারি লক্ষ ববিশ হাজার
বংসর। ইহার মধ্যে ১৭২৬ সভের শঙ্ক ছারিশে শকাল * প্র্যান্ত গঙ্ক
৪৯০৫ চারি হাজার নয় শত্ত পাঁচ বংসর, বাঁকি ৪২৭০৯৫ চারি
লক্ষ সাতাইশ হাজার প্রচানকাই বংসর।

আকাশ বায়ু তেজো জল ভূমি এই পঞ্চ সূতের মধ্যে পৃথিবীর আট আনা অন্য হ আকাশাদি চারি ভূতের দৃই ২ আলা এ সমুদার বাল আনাতে মিশুড, ও চন্দ্র বুধ শুক্ত রবি মলল বৃহসপতি শাদি এই স্থা পুরের সথ ককাতে ও নক্ষরমণলককাতে উপরিভাগে আবৃত্ত পাঞ্চেটীতক এই ভূমিপিও কেবল শুনোর উপরে আছে। ভূমিপিওের ধারণকর্তা মুর্তিমান কেহ নাই। অনম্ভ প্রভৃতি শারীরী এই ভূমিপিওের ধারণকর্তা, ইহা পৌরাধিকেরা বর্ণনা করেন, সে কেবল বর্ণনামান। এই ভূমিপিওের উপরে অবোতে ও পার্থেতে সর্বান্ধ দেব মনুষ্য সানব বৈদ্য পশ্ব পক্যাদি ও পর্বত গ্রাম নগর বন নদী নদাদিতে কৌন্বিকরেতে কদৰক্ষ্যের গুছির নাার গুণিত আছে।

এই জুমিপিঙের আর্থেকেত লবণসমুদ্দের উত্তর, এই অধুবীপ। ঐ জুমিপিঙের আরু আর্থেকেতে অধুবীপের দক্ষিণ ভাগে শাক শালমল বৌশ ক্রেই গোমেদক পুষ্কর এই ২ নামে ছয় দীপের ও লবণ ক্ষীর দধি ঘুত্র ইক্ষরস মদ্য শ্বাদুল্ল নামে সপ্য সমুদ্দুর সন্ধিবেশ

^{*} i. e. A. D. 1804.

ছইয়াছে; এই ক্রপে এই পৃথিৱী সপ্তদীপা। এ সপ্তদীপের মধ্যে জমুদ্বীপ নামে এই দ্বীপ। এই জমুদ্বীপ নবএও; তাহার প্রত্যেকের নাম, ভারতবর্ষ, কিন্তবর্ষ, হরিবর্ষ, কুরুবর্ষ, হির্লায়বর্ষ, র্মাক্রবর্ষ, ইলাবৃতবর্ষ, ভদুাশবর্ষ, কেতুমালবর্ষ, এই নব বর্ষের মধ্যে ভারতবর্ষ নামে পৃথিবীর নব ভাগের এক ভাগ এই। ভারতবর্ষের নব ভাগ; দে সকল ভাগের নাম এই, এন্দ্র, ক্রেন্স, তামুপর্গ, গভাস্তিমং, নাগ, দৌম্য, বার্ণ, গান্ধর্ক, কুমারিকা; এই নব খণ্ডের মধ্যে বর্ণাশ্রম ব্যব্দা বাহাতে আছে দে কুমারিকা। খণ্ড এই। আরু ২ খণ্ড সকলের মধ্যে অধ্যাত লোকের বসতি।

প্রমেখর এই পৃথিবীর পালন নিমিত ইকাকুনামে অখণস্ক্রপেরাজাকে সভা মুগে প্রথমত আবেরাপিত করিমাছিলেন। ঐ রাজার ক্ষেশাখালররূপ সূর্যাবংশ ও চজুবংশ। এই দুই বংশের ধারাবাহিক সন্তানপ্রক্লারে চার্রি মুগে এই পৃথিবীমঙল অধিকৃত ছিলেন। এই উত্য় বংশীয় রাজাদের মধ্যে মহত্রম ধ্মতপোবলপ্রভাবে কেহং সপ্থিপি পৃথিবীর শাসন করিয়াছেন; কেহং মহত্র ধ্মতিপ্রাারের প্রথমিতির করিয়াছেন; কেহং মহাধ্মতিপোক্রবশতো ভারতব্যমাত্রের অধিকার করিয়াছেন; কেহং মহাধ্মতিপোক্রবশতো ভারতব্যমাত্রের অধিকার করিয়াছেন; কেহং বাকুমারিকা ধ্রুমাত্রের রাজা ছিলেন। এই দুই বংশের রাজাদের মধ্যে একত্র স্মুটি হইলে অন্যত্র মঙ্লেখর হইতেন। ইহাদের বিবর্গ পুরাণে- তিহাদাদি শাত্রে বিস্তারিত আছে।

এই উভয় বংশীয় রাজাদের অধিকারে ১৭১৮০০ সতের লক্ষ আটাইশ হাজার বংসর সভা সুগের, ও ১১৯৬০০ বার লক্ষ জিয়ান্মই হাজার বংসর ত্রেভাগুগের, ও ৮৬৪০০ আট লক্ষ চৌষ্টি হাজার বংসর দ্বাপর যুগের অবসান হউলে পর বর্তমান কলি যুগের আরম্ভ অবধি ৪৯০৫ চারি হাজার নয় শত পাঁচ গত বংসর প্যাও যে ১ রাজা ও বাদশাহ ও নবাব হউয়াছেন, ভাহাদের বিবর্ণ ১৮০০ আঠার শত ইৎরাজি সনে গৌড়ীয় ভাষাতে র্চিত হউল।

এই বর্তমান কলিলুগে শকপ্রবর্ত্তক ৬ ছয় রাজা। কলির প্রথমাবধি ৩০৪৪ তিন হাজার চৌয়ালিশ বংদর পর্যান্ত মুধিছির রাজার শক গত হইয়াছে। তাহার পরে উজ্জয়নীতে বিক্রমাদিতা রাজার ১০৫ এক শত পয়ত্তিশ বংদর পয়ান্ত শক গত হইয়াছে, এই দুই শক গত। বর্তমান নক্ষদা নদীর দক্ষিণ তীরে শালিবাহন নামে রাজার শক ঘাইতেছে, এ শক বিক্রমাদিতা রাজার শকের পর ১৮০০০ আঠার হাজার বংদর পয়ান্ত থাকিবে। তাহার পর চিত্রকূট পর্বত প্রদেশে বিজয়াতিনন্দ নামে রাজা হইবেন; তাহার শক শালিবাহন রাজার শকের পর ১০০০০ দশ হাজার বংদর পয়ান্ত হইবে। তাহার পর পরিনাগার্জন নামে এক রাজা হইবেন, তাহার শক এই কলির ৮২১ আট

LVTRODUCTION.

শত একইশ বংসর শেষ থাকা পর্য্যন্ত থাকিবে। ভাষার পর সন্তল দেশে গৌড় ব্যুক্তণের ঘরে কল্কি দেবের অবভার হইবে। এই মতে ৬ ছয় শক-কর্ত্যা রাজাদের মধ্যে ২ দুই গভ, ১ এক বর্ত্যান, ৩ তিন ভাষী।

এই ভারতবর্ষের পূর্বা দক্ষিণ পশ্চিম উত্তর চারি দিক্, অগ্নি নৈঞ্ত বারু ঈশান চারি কোণ, আরু মধা, এই ক্রেপে নর ভাগ। এই নয় ভাগের মধ্যভাগে যে২ দেশ সকল, ভাছাদের নাম সার্স্ত মংস্য স্রুসেন মণ্রা পঞ্চাল শালু মাখবা কুফকেত হতিনা নৈমিষ বিভাগিৰু পাখা ঘোষ যামুন কাশী অবোধ্যা প্রয়াগ গরা নিখিলা ইত্যালি। পক্ষ ভাগে মগদ শোণ বরেন্দ্র গৌড় রাচ বদ্ধমান মনোলিও প্রাগ্জ্যোতিষ উদয়ার্নি ইত্যাদি দেশ। অগ্নিকোণে অঙ্গ বন্ধ উপবন্ধ তৈপুর কোশল कलिक उरकल आकृ तिमर्छ भत्त है ग्रांति दिन। मिकिस्न अवधी स्थापि মলয় থাষ্যসূক চিত্রকট মহারণ্য কাঞ্চী শিংহল কোক্ষন কাবেনী ভাষ্পণী লক্ষা ত্রিক্ট ইতাাদি দেশ। নৈথৎ কোণে দুবিড জানও মহারাফুট রৈবত যবন প্রলব মিকু পারশাক ইত্যাদি দেশ। পশ্চিমে হৈহয় অস্তাদ্রি ফ্রেজবাদ শক ইত্যাদি দেশ। বায়ু কোণে ওজনাট নাট জালকর ইত্যাদি দেশ। উত্তে চীন নেপাল হন কেক্য় মন্দ্র গান্তার হিমালয় ক্রেলিও গ্রমাদন মাল্প কৈলাদ মদুকামার মেল দেশ খদ ইত্যাদি দেশ। ঈশান কোণে স্বৰ্ণভৌম গলাৱার টক্ষন বাহলীক বুজপুর কিরাত দরদ উত্যাদি দেশ। এই সকল দেশের মধ্যে মধ্যদেশস্থিত সমুটে রাজারা নরপতি, উত্তর দেশায় সমাট্রাজার। অগপতি, দক্ষিণ দেশীয় সমটে রাজারা গলপতি, এই তিন প্রকার সমাট রাজাদের মধ্যে নরপতি রাজাদের বিবর্ণ মামান্যতো লিখি।

এই কলির আর্ড অবধি ৪১৬৭ চারি হাছার দুই শত সাহস্কিটি বংশর প্রার ১১৯ এক শত উনিশ ছন নানাজাহীন ভিন্দু দিল্লার শিংহাদনে স্মাট হন। ইহার বিবরণ; রাজা গুরিছির অর্থার ক্ষেত্রকথার ২৮ আটাইশ ছন ক্ষত্রিন জাতি প্রথহেত ১৮১১ আটার শত বার বংশর। এই পর্যার কলিতে রাস্তর ক্ষত্রে শুরুরেও শুরুরি হলাত নন্দের বংশজ বিশার্দ অবধি রোগমল প্রায় ১৪ চৌল জনেতে ৫০০ পাঁচ শত বংশর। এই নন্দ অবধি রোগমল প্রায় ১৪ চৌল জনেতে ৫০০ পাঁচ শত বংশর। এই নন্দ অবধি রাজপুত জাতির দৃটি হয়। হাহার প্র গোত্র বংশার বংশার বির্বাত্ত অবধি আদিতা প্রায় বাস্তিক মতারক্ষি ১৫ প্রের জনেতে ৪০০ চারি শত বংশর। এই সমহের নাস্তিক মতারক্ষি ১৫ প্রের জনেতে ৪০০ চারি শত বংশর। এই সমহের নাস্তিক। হাহার পর ময়ুরবংশীর ধুরুক্কর অবধি রাজপাল প্রত্যার করেতে ১১৮ তিন শত আটার বংশর। হাহার পর ময়ুরবংশীর ধুরুক্কর অবধি রাজপাল প্রত্যার প্রথম অবধি হাজা এক জনেতে ১৪ চৌল বংশর। এই রূপে কলির প্রথম অবধি ১০৪৪

তিন হাজার চৌয়ালিশ বংসর গত হউলে মহারাজাধিরাজ যুধিষ্ঠির দেবের শকেরও নিবৃতি হউল।

ভাহার পর বিক্রমাদিতোর সম্বতের আর্ম্ন হউল। এই সম্বতের আর্ম্ব অবধি বিক্রমাদিত্যেরা পিতা পুলে দুই জনেতে ১০ তিরা-নকাই বংশর। তাহার পর সম্দুপাল অবধি বিক্রমপাল পর্যায় ১৬ বোল জন যোগিতে ১৪১। ৩ ছয় শৃত একচলিশ বংসর তিন মাস। তাহার পর তিলকচন্দ্র অবধি গোবিন্দচন্দ্রের ক্রী প্রেমদেবী পর্যায় ১০ দশ জ্ঞানেতে ১৪•।৪ এক শত চল্লিশ বংসর চারিমাস। তাহার পর হরি-প্রেম বৈরাগী অবধি মহাপ্রেম পর্যান্ত ৪ চারি জন বৈরাগিতে ৪৫। ৭ পঁয়তালিশ বংসর নাত মাস। তাহার পর ধীদেন অবধি দামোদর মেন পর্যান্ত বল দেশীয় বৈদ্য জাতি ২৩ তের জনেতে ২৩৭।১ এক শত সাঁইত্রিশ বংমর এক মাম। তাহার পর দ্বীপ্সিৎহ অব্ধি জীবন্সিৎহ পর্যান্ত চোহান রাজপুত জাতি ৬ ছয় জনেতে ১৫১ এক শত একায় বংসর। তাহার পর পৃগুরায় এক জনেতে ১৪।৭ টৌন্দ বংসর সাত মাস। এই রূপে বিক্রমাদিত্যের সম্বতের আরেম্ব অবধি ১২১৩ বারশত তেইশ বংসর গত হটল। এবং কলির প্রথম অববি ৪২৬৭ চারি হাজার দুট শত সাত্যটি বংসর গত হটল। এই পর্যান্ত হিন্দু রাজাদের সাম্ভিয়ছিল।

তাহার পর মুদলমানদের দামাজা হইল। যবনদের দামাজা হওয়। অবধি ১৭২৬ দতের শত ভাবিদশ শকান পর্যাও ৫১ একায় জানেতে ৬৫১। ৩। ২৮ ছয় শত একায় বংদর তিন মাদ আটাইশ দিন গত হইয়াছে।

II .- Of the Ancient Kings.

দুর্ঘ্য চল্লোভয় বংশের মধ্যে বাপর মৃথের অবসানে মৃর্ঘ্য বংশের অবসান হইল; চল্রবংশেরও ঔরস স্থানের উপরতি হইল; কিন্ত চল্রবংশের ক্রেজ স্থানদের রাজস্ত হইল। বাপর মুগের শেষভাগে বিচিত্রবার্য্য নামে চল্রবংশীয় রাজা হইয়ভিলেন। তিনি অহায় ব্রীসভোগে আসক হইলেন, এই প্রমৃক্ত রোগগুর হইয়া অপ্পকালে পরলোক গছ হইলেন। তাহার স্থান ছিল না, অহএব বেদবাস আপন মাহা সভাসতীর আজানুসারে ঐ বিচিত্রবার্য্য রাজার ক্লেত্রে তিন সন্ধানোংপাদন করিলেন। সে তিন স্থানের নাম ধৃত্রাক্ট ও পাণুও বিদূর। এই ভিন সন্ধানের মধ্যে পাণুর রাজস্ত্র হইয়া ব্রিপার বিচর হইলেন, তংপ্রমৃক তাহার ঔরস সন্ধান হইল না অভএব তাহার কৃথী ও মাদু নামে দুই প্রী আপন বামির আজামতে

ধর্ম বাষু ইন্স ও অধিনীকুমার এই চারি দেবতাহইতে পাঁচ পুল জন্মাইলেন । তাহার বিবরণ ; কুথীর পুচ্ মূপিটির <mark>ভীম অঙ্জুন নামে</mark> তিন; ও মাদুরি যমজ পুত নকুল ও সহদেব নামে দুট; এই কপে পাওু রাজার পাঁচ ক্ষেত্রজ সন্থান হটল; পৃত্রাফৌ্রে দুযোধন দুংশাসন প্রভৃতি এক শত মতান হটল। পাঙুরাজা বর্গাক্র হটলে পর ধৃতরাষ্ট্র মুধিস্ঠিরকে অভান্ত ধার্মিক ও সুশীল ওপর্ম সঃজিক ওদাভা ওসকা লোকানুরক দেখিয়া আপন এক শত পুল থাকিতেও রাজ্যা,ভবিক করিলেন। এই কপে যুধিতির রাজা হইযা দুয়েয়ালনাদি ভাতাদের ও ভাষাদি ভাষাদের একবাকো প্রম মূগে ৭৬ ছেহতার বংষর রাজ্য করেন। তাহার পর মুধিষ্টিরাদি পঞ ভাতার বনবাদ হউলে পর কেবল দুয়োধন ১০ তের বংসর রাজন্ত করিলেন। ভাগার পর মুধিটিরাদি পঞ্জুতারা বনবাসহইতে আদিয়া সদৈন্য সস্হায় দুসেয়া-ধনাদিকো যুদ্ধে নফী করিলেন। ডাহার পর যুবিষ্ঠির ৩৬ ছাত্রিশ বংসর রাজা। করিয়া দুৌপদী ও ভীমাদি চারি ভাতার সহিত্রগারোহণ করিলেন। ভাগার পর অজ্নের পৌল্রপরীক্ষিত্তত ষ⊧টি বংসর রাজ্য করিয়া বুক্সশাপনুস্ত হইয়া ওক্ষক দংশনে নফীহইজেন। ভদনধুর ওাঁহার পুস্ত জনমেজয় রাজা হইলেন; তিনি সপ্যজে অনেক সপ নমী করিয়া আখমেব যদ্ধ করণে বৃদ্ধহতা পাপাভিভূত হইয়া বেদ্যাদ শিষ্য বৈশাশ্পায়ন ম্নিচ্টতে মহাভারত শুবেণ করিয়া তংপাপহটতে মূক হটয়া পর-লোকগামী হউলেন। ভাঁহার রাজ্য সক্ষমুদ্ধ ৮৪ চৌরাশী বংষর। এ সকল রাজাদের কথা মহাভারতে অতিধিস্তা আছে, অতএব সংক্ষেপে লিখিলাম। তদন্ত্র তৎপুত্র শতানীক ৮১।২ বিরাশী বংসর দুট মাস রাজ্য করেন। তৎপর আঁহার পুত্র মহসুনিকি ৮৮।২ অফাশা বংসর দুট মাদ রাজ্য ভোগ করেন; তদন্তর অখ্যেপ্স ন'মে দহ্যানীকের। পুল ৮১। ১১ একাশী বংসর এগার মাস রজ্যে করেন। পরে তংপুল অসীম কৃষ্ণের রাজ্য ৭৫। ২ পঁচহতরি বংসর দুই মাস। অনেওর ৩ৎপুল নিচজু ৭৬। ১ ছেহতরি বংসর তিন মাস রাভা ভোগ করেন। ভাছার পর ওঁহোর পুস্র উপ্র ৭৮ আটহত্তরি বংমর পৃথিৱীপালন করেন। পরে উপ্তের পুদ্র চিত্রবেথের রাজ্য ৮০ আশী বংদর; তালার পরে চিত্রবেথের পুত্র ছাতিরথের রাজ্য ৬৫।> পঁয়ষট্টি বংসর নুই মাম থাকে। ওদনওর তংপুত্র ধৃতিমান্ ৬৯। ৫ উন্দত্তরি বংদর পাঁচ মাদ পর্যাও রাজ্যাবিকারী ছন। পরে তাহার পুল সুষেণ ৬৪।৭ চৌষটিুবংসর সাত্মাস রাজ্য करतमः। उपनष्टतः ५०। ১ तावां के तरमत् এक माम मृत्यत्वत् शृष्ट मुनीत्यत् রাজ্যে অধিকার থাকে। उपनयुत उरश्च नृष्ठकु ৫১।১১ একার বংসর এপার মাদ পর্যার রাজ্য করেন। তংপরে ওঁহার পুত্র পারিপল্স ৪২।১১ বিয়ালিশ বৎসর এগার মাস রাজ্যাধিকারী হন। ভাহার পর

তাহার পুত্র সূতপা ৫৮। ৩ আটান্ন বংসর তিন মাস রাজা হন। অনন্তর দূতপার পুত্র মেধাবী ৫৫।৮ পঞ্চার বংদর আট মাদ রাজ্যাধিকারী হন। পরে তৎপুত্র নৃপঞ্জয় ৫২।১ বায়ার বৎদর নয় মাদ পর্যাত্ত রাজ। হন। পরে তাঁহার পুত্র দর্ম ৫০।৮ পঞাশ বংনর আট মাস পর্যন্ত রাজ্যাধিকারী হইয়া থাকেন। তদনত্তর দর্কের পুত্র তিমি ৪৭।৯ লাতচল্লিশ বংসর নয় মাস রাজ্য করেন। তদনন্তর তিমির পুত্র বৃহদুথ ৪৫।১১ পঁয়তালিশ বংসর এগার মাস রাজ্য করেন। পরে তৎপুত্র দুদাস ৪৪।৯ চোয়ালিশ বৎসর নয় মাস পর্যায় রাজা হন। তাহার পরে ওঁহার পুত্র শতানীক নামে রাজা ৪৪।৯ চৌয়ালিশ বৎসর নয় মাস রাজ্যাধিকার করেন। তৎপরে শতানীকের পুত্র দুর্দ্মন নামে রাজা ৫১ একার বংশর রাজ্য পালন করেন। তাহার পর তৎপুত্র বহীনব রাজা হউয়া ৩৮।৯ আটতিশ বংসর নয় মাস রাজ্য প্রতিপালন করেন। অনন্তর ওাঁচার পুত্র দওপাণি ৪০।৩ চল্লিশ বংসর তিন মাস রাজা হন। তদনওর ভাঁচার পুত্র নিধি ৩৬। ৩ ছত্রিশ বংসর তিন মাস পর্যার রাজা। ধিকারী হইয়া থাকেন। তাহার পর নিধির পুত্র ক্ষেমক ৫৮।৫ আটায় বংসর পাঁচমাস রাজা হউয়া থাকেন। এই ক্ষেমক রাজা সদা রোগাদুর ছিলেন, এই প্রমূক পাত মিত্র দৈন্য সামত্ত্রে ভাল মন্দ দেখা শুনাতে অসমর্থ এবৎ নিঃস্ঝান ছিলেন। অতএব নদ্বংশজাত বিশাব্দ নামে তাঁহার মন্ত্রী রাজকীয় যাবং লোককে আত্মদাং করিয়া ঐ ক্ষেমক রাজাকে নদ্ট করিয়া আ পনি রাজা হটল। এই মতে এমিমহারাজাধিরাজ সৃধিষ্ঠির দেবের অধন্তন ২৮ আটাইশ পুরুষে বংশবিচ্ছেন হইল, ও মন্তান প্রস্প্রাক্রমে কলির আরম্ভ অববি ১৮১২ আঠার শত বারো বংসর পর্যান্ত সামাজ্য ছিল। তদনস্তর মূধিষ্ঠিরের বংশক্রপ চল্র অস্ত হইলে পর নন্দবংশক্রপ তারার উদয় হঈল, ভাহার বিষরণ।

বিশাবদের রাজ্য ১৭।৪ সতের বংসর চারি মাস। অনন্তর তংপুত্র শুরদেনের রাজ্যাধিকার ৪২।৮ বিয়ালিশ বংসর আট মাস। তাহার পর উাহার পুত্র বারশাহ নামে রাজা ৫২।২ বামাল্ল বংসর দুই মাস রাজ্য করেন। তংপরে তম্য পুত্র আনন্দ শাহ ৪৭।৯ সাহচলিশ বংসর নর মাস রাজা হন। তাহার পর তাহার পুত্র বর্জিং ৩৫।১ পঁয়্রিশ বংসর নর মাস রাজা হন। তাহার পর তাহার পুত্র বর্জিতের পুত্র দুর্কীর নামে রাজা ৪৪।৩ চৌয়ালিশ বংসর তিন মাস পর্যন্ত রাজ্য রক্ষা করেন। তাহার পর তাহার পুত্র স্কুল্পাণ ৩০।৯ ত্রিশ বংসর নয় মাস পর্যান্ত রাজ্য করেন। পরে তাহার পুত্র পুত্র হ১।১০ বিয়ালিশ বংসর দশ মাস রাজ্যাধিকারী হন। তদনন্তর তংপুত্র সঞ্জয় ৩২।৩ ব্রিশ বংসর তিন মাস রাজ্যাধিকারী হন। তদনন্তর তংপুত্র সঞ্জয় ত্ব আমর্যোধ ২৭।৪

সাতাইশ বংশর চারি মাস রাজ্য সন্থার ধারণ করেন। আনস্তর আমর্যোধের পুত্র ইনপাল নামে রাজা ২২।১১ বাইশ বংশর এগার মাস পৃথিবী পালন করেন। তংপর তম্য পুত্র বারধি নামে রাজা ৪৭।৭ সাত চল্লিশ বংশর সাত মাস রাজ্য রক্ষা করেন। তদনত্ব তাঁহার পুত্র বিদ্যার্থ রাজা ইইয়া ২৫।৫ পঁচিশ বংশর পাঁচ মাস রাজকর্ম করেন। তাহার প্র তাহার পুত্র বোধমল ৩১।৮ একত্রিশ বংশর আটি মাস রাজা হন। এই রূপে নন্দ বংশের চতুর্দশ পুরুষে পঞ্শত বর্ষীয় সামুাজ্য সমাপন ইইল।

এই বোধমল রাজা বড় ভাঁণী ছিল; অতএব রাজবাপারে সর্বাদা অনবহিত থাকিত; তংপ্রমুক্ত গৌতমবংশজাত বীরবাহ্ন নামে ওাঁহার মন্ত্রী ভাঁচাকে মারিয়া আপনি রাজা হটল। এই নলবংশীয় চতুর্দশ পুরুষের বীজপুরুষ নলা নামে মগব দেশের রাজা ছিলেন। তিনি মহানদের পুল, শুদুগার্ভজাত মহাবল পরাক্রম ভিটার পরস্থামের নায় যাবং ক্রিয়কে যুদ্ধে নফ্ট করিয়া প্রায় নিংক্ষতিরা পৃথিবী করিয়াছিলেন। ইনি মহাপালসংখ্যক দেনার পতি ছিলেন, এই প্রযুক্ত ইচার নামান্তর মহাপালস্থিত। সেই সকল ক্ষত্রিয় বংশ বিনাশকারি নন্দের বংশের বিনাশ এই কলির ২০১২ দুই হাজার তিন শত বাবে বংশরে হইল। তদনবুর গৌতম বংশজাত মায়াদেবীর পুল গৌতমহইতে নাজিকের বংশের প্রচার হইল। ঐগৌতম নাস্কিক ছিলেন।

নান্তিকদের মত এই। যাহা প্রহাক্ষ প্রমাণে পাই তাহাই আছে; অনুমানাদি প্রমাণসিদ্ধ যে দকল দে দকল কিছুই নাহি; অহএব এ জগতের কর্তা ঈশ্ব কেহ নাহি। মহাবন্ধ দৃক্ষের নায় এই দংশার আপনি হয়, কালক্রমে আপনি যায়। শুভাশ্বভ কর্মোর ফল স্বর্গ নরক নাই; এবং বর্তমান দেহে ক্রিয়মাণ ঈশ্বপুদাদিরপ কর্মোর ফল ভোগ যে দেহান্ত্র হয় তাহাও নাহি। ও দেহের যে পাত দেই মোক্ষ, এই শ্রীরপাতের পর জীবের আর দেহান্ত্র নাহি। এই রূপে দকলি নাহি নাহি বলে। অতএব তাহার নাম নাস্তিক। ইহাকে দকলে বৌদ্ধ করিয়া কছে। এই মতের মূল জলশ্রাব নামে বেদভাগে আছে, দে মূল এই।

দেবতাদের রাজা ইন্দ্র ও অসুরদের রাজা বিরোচন ঐ দুই জন একত হইরা বুজার নিকটে এক দিবস গেলেন। পরে দুই জনে এক কালে বুজাকে জিজাসা করিলেন, আমাদের আয়া বা কি? ও বুজা বা কি? ইহা খনিয়া বুজা আপনার সন্ধুথ জলপুর্থ এক পাত্রে শ্বশ-রীরের যে প্রতিবিদ্ধ পড়িয়াছিল, তাহার উপর দৃষ্টি করিয়া আপন শরীরে হাত রাঝিয়া কহিলেন যে এই আয়া বুজা। বুজার এ উত্তর জনিয়া বিরোচন বুজার অভিপ্রায় বুঝিতে না পারিয়া, এই ভুলাশরীর বে সেই আত্মা সেই বুক্ষ, এই নিশ্চয় করিয়া পাপবৃক্ষবীয়রপ দেহাল্লবাদের আরোপণ করিল। ইন্দ্র আপন হানে আদিয়া বুকার উত্তরের বিলক্ষণয়ণে বিবেচনা করিয়া পূন:পুন: বুক্লার নিকটে গিয়া অভিপ্রায় ভাল মতে বুয়িয়া এই নিশ্চয় করিলেন যে যেমন প্রকৃত শরীরের প্রতিবিহ্ন পাত্রছ মলের যে পর্যায় বিলামানতা সেই পর্যায় থাকে, ও প্রকৃত শরীরেইতে হয় ও প্রকৃত শরীরের মত, ও প্রকৃত শরীরে যে সত্তা ভাহার সেই সত্তা, ভছাতিরেকে তাহার সত্তা নাহি; অতএব সে বন্ধতা ভাহার সেই সত্তা, ভছাতিরেকে তাহার সত্তা নাহি; অতএব সে বন্ধতা ভাহার সেই সত্তা, তছাতিরেকে তাহার সত্তা নায় রুক্ষবন্ধ পথ। এই হির করিয়া মোক্ষপ্রতিপাদক গুল্প ধর্মের বীয়রপ আত্মতানের আরোপণ করিলেন। এই রূপে বিরোচন যে নায়িক মতের সঞ্চার করিয়াছিল, ভাহা বৈদিক ধর্মের প্রতাপে এই দিন প্রগাল্ড হইতে পারিয়াছিল না। কিন্তু শুদ্যাগর্ভলাত নন্দবংশের পাপেতে পৃথিবী পাপময়ী হইলে পর সেই নায়্তিক মতের প্রচার এই কলিতে গোতম করিলেন। ভাহার বংশের বিবরণ এই।

বোধমকের মন্ত্রী বারবাছ ৩৫ পঁর জিশ বৎসর সামাল্য করিলেন। তদনন্তর বারবাছর পুত্র যঘাতি সিৎছ ২৭। ৭ সাতাইশ বৎসর সাত মালা। তৎপর তাহার পুত্র শলুত্ব ২১ একুশ বৎসর। তাহার পর শলুত্বপুত্র মহীপতি ২৫। ৪ পঁচিশ বৎসর চারি মাল। তদনন্তর তাহার পুত্র বিহারমল ১৪।৩ চৌন্দ বৎসর তিন মাল। তাহার পর তৎপুত্র বরুপদত্ত ২৮।৩ আটাইশ বৎসর তিন মাল। তদনন্তর তৎপুত্র মিরদেন ২৭। ২ সাতাইশ বৎসর দুই মাল। তাহার পর তাহার পুত্র জয়মল ২৮। ২ আটাইশ বৎসর দুই মাল। তাহার পর তাহার পুত্র জয়মল ২৮। ২ আটাইশ বৎসর দুই মাল। তাহার পর তাহার পুত্র কলিল ৩৯। ৪ উনচল্লিশ বৎসর চারি মাল। তদনন্তর কুলমণি নামে কলেলপুত্র ৪৬ ছচল্লিশ বৎসর। তাহার পর কুলমণিপুত্র শলুমর্ঘন ৮। ১১ আট বৎসর এগার মাল। পরে তৎপুত্র জীবনলাত ২৬।১ ছার্মিশ বৎসর নর মাল। তৎপরে তৎপুত্র হারিযোগ ২৩। ২ তের বৎসর দুই মাল। তদনন্তর তৎপুত্র বারদেন ৩৫। ২ প্রজিশ বৎসর দুই মাল। তৎপর তৎপুত্র আদিত্য ২০।১১ ভেইশ বৎসর এগার মাল। এই রূপে পঞ্চদশ পুরুষে ৪০০ চারি শত বৎসর পর্যন্ত গোত্ম বংশীর সাম্যাল্য সমাপন হইল।

গৌতল বংশীর অধন্তন পঞ্চল পুরুষ আদিতা নামে মহারাজের লয়ুর বংশীর ধুরুত্বর নামে মন্ত্রী ছিল, দে আদিতা রাজাকে মারিরা আপনি দিলীর সিংহাদনে বসিরা ৪১ একচলিশ বংসর পর্যন্ত সামাল্য করিল। তদনত্ত্র তংপুত্র সেনোছত ৪৫ প্রতালিশ বংসর সামাল্য করিল। তাহার প্র তংপুত্র মহাকটক ৪১ একচলিশ বংসর। পরে তংপুত্র মহাকটক ৪১ একচলিশ বংসর। পরে তংপুত্র মহাকটক ৪১ একচলিশ বংসর। পরে তংপুত্র মহাবোধ ৩৩ তেত্রিশ বংসর। তদনত্ত্র নাথ নামে তাহার পুক্র ২৮

আটাইশ বংসর। তাহার পরে নাথপুত্র জীবনরাক্স ৪৫। ৭ পঁরডাজিশ বংসর সাত মাস। ডংপরে তংপুত্র উদয়সেন ৩৭।৫ সাঁই ব্রিশ বংসর পাঁচ মাস। ডাহার পর তংপুত্র বিজ্ঞাচল ২২ বাইশ বংসর। ডদনস্কর তংপুত্র রাজপাল ২৫ পঁচিশ বংসর সামাজ্য করিল। এই রাজপাল নামে রাজা সকল রাজকর্মা পরিত্যাগ করিল। নাচ দেখাতে ও গান খনাতে সদা আসক থাকিতেন; ইহা শুনিতে পাইয়া কামাউ পর্বত দেশের শকাদিত্য নামে এক পর্বতীয় রাজা রাজপালকে যুদ্ধে নফ্ট করিয়া আপনি সমাট হইল। ময়ুর বংশের নয় পুরুষেতে ৩১৮ তিন শত আটার বংসর সামাজ্য করিল।

এই রূপে কলির আর্ডাবধি শকাদিতা পাহাড়ীয়া রাজার সামাজ্য পর্যায়ঃ ৩°৪৪ তিন হাজার চোয়ালিশ বংসর গত হইল। এই পর্যায় এমম্মহারাজাধিরাজ মুধিষ্টির দেবের শকের নিবৃতি হইল।

III. - Of Vikramáditya.

শকাদিত্য পাহাড়ীয়া রাজার অধর্ম ব্যবহার শুনিয়া উল্লেখনীর রাজা विक्रमानिका मरेमना निल्लीरक व्यामिया सकानिका दालाद महिक सञ्च করিয়া ভাহাকে যুদ্ধে নফ করিয়া আপনি দিলীতে সমাুট্ হউলেন। এই বিক্রমাদিতোর জন্মাব্ধি মৃত্যুপর্যান্তের উপাধ্যান সংক্রেপে লিখি। বিক্রমাদিতা পঞ্চ বর্ষের বালক হইলে পর তাহার মাতামহ ধার-রাজ ভর্হরির ও বিক্রমাদিত্যের শিক্ষার্থে নানা বিদ্যাতে নিপণ অনেক পণ্ডিত লোকদিগকে নিযুক্ত করিলেন। বিক্লমাদিত্যেরা দুই ভাই নানা প্রকার বিদ্যার অভ্যাস করিতে লাগিলেন। এক দিবস ধার্রাজ विक्रमानिट्याक ও छर्ड्द्रिक आश्रम निकटि आनाइश उपरम्य कतिएंड लाशिलन, अद्व वाष्ट्रांद्रा, विमारीन य मनुषा म अधः অতএব নানা শাস্ত্রত পণ্ডিতদিগকে যতেনতে প্রদল্ল করিয়া ওাঁহাদের প্রমুধাৎ আপনার হিত শুনিয়া ও বেদ ও ব্যাকরণাদি বেদাঙ্গ ও धर्मां । उ जानगां उ नी जिगा इ उ धनु तर्रा ह शक्त विष्णा उ নানাবিধ শিপ্পবিদ্যা উত্তম ক্রপে অধ্যয়ন কর; এই সকল বিদ্যাতে বিল্ফণ বিচক্ষণ হও; ক্ষণমাত্র বৃথাকালক্ষেপ করিও না; ও হস্তি অখ विधादबाहरनरङ मुन्छ हु । बिडा वाशिय कव, इ सम्राहर उ उल्ल मर्काट अ थावरमण्ड अ अफ्डब्ल्टिएएड अ वृष्ट्वरमाएं अ वृष्ट्छ । ে নিপুণ হও, ও দায়ি বিগৃহ ঘান আসন বৈধ আশ্রে এই ছব রাজ-৪৭ে ও ভেদ দও সাম দান এই উপায় চত্তীয়েতে অভিশয় কৃশল হও। এই রপে নানা প্রকার উপদেশ করিয়া অধ্যাপক দকলকে আজা

তরিলেন, আমি যেমনং উপদেশ করিলাম, এইমত যে রূপে হয়, ইছাতে ভামরা সর্বাদা সাবধান থাকিবা, অন্যথা না হয়। এইরূপ ধাররাজ শাসন করিয়া বিক্রমাদিত্যাদিকে পাঠশালাতে বিদায় করিলেন। তাঁহারা দুই ভাতা অত্যন্ত মনোযোগে দিবারা প্রিপ্রথম করিয়ারাজা যেং আজা করিয়াছিলেন, দে সকলহইতেও অধিক বিবিধ বিদ্যাতে অপপাকালে বিদ্যান্ত হউলেন। অনন্তর ধাররাজ এক দিবস তাঁহাদিগকে সর্ব্ধ প্রকারে যোগ্য দেখিয়া মন্তিদের স্থিত মন্ত্রণা করিয়া মালুয়া দেশের রাজজ্ঞা দিতে বিক্রমাদিত্যকে আহ্বান করিলেন, ও কহিলেন, ছে বিক্রমাদিত্য, আমি ভোমাকে মালুয়া দেশের রাজজ্ঞা দিতে বিক্রমাদিত্যক আহ্বান করিলেন, ও কহিলেন, ছে বিক্রমাদিত্য, আমি ভোমাকে মালুয়া দেশের রাজজ্ঞা দিলেশ রাজা হও। যেমন তৈলকণা জলের এক প্রদেশ সপার্শ করিয়ামত্রে অনেক জলকে ব্যাপে, তেমনি যাহারা পুরুষসিংহ হন, তাঁহারা এই পৃথিবীর যংকিঞ্ছিৎ অধিকার করিয়া অপ্প্রকালে সকলি আক্রমণ করিতে পারেন। তুমিও পুরুষসিংহ বট, অনেক করিতে পারিবা।

তদনত্তর বিক্রমাদিতা ধার্রাজের বাকা শুনিয়া কৃতাঞ্চলি হইয়া তাঁহাকে নিবেদন করিলেন, হে মহারাজ, আপন প্রদাদলর যৎকিঞিং-ছইতে যে আমার অনেক হইতে পারিবে সে যথাথ বটে, এবং আপন-কার আজা আমার শিরোধার্য্য বটে, কিন্তু আমার জ্যেষ্ঠ ভাতা ভর্তু-ছরি আছেন; জোষ্ঠ সত্তের কনিষ্ঠের রাজা হওয়াধর্মবিরুদ্ধ; অতএব ভিনি রাজা হউন, আমি মন্ত্রী হই। বিক্রমাদিত্যের এই বাক্টেতে মন্ত্রি. वर्षात्। विक्रमानिट्यात माथूयान कतिएय लाशिएलम ও कशिएलम, रह বিক্রমাদিতা, তুমি পরম ধার্মিক বট, যেহেত্ক রাজ্যলোভ পরিত্যাগ করিয়া ধর্মনিষ্ঠাতেই থাকিলা। রাজ্যাদিবিষয় যে দে অর্থ, ধর্মহইতে অর্থ হয়, ইহা সকলে জানে; কিন্তু তদনুক্রপ ব্যবহার যে করা সে কোন ২ সাধ প্রুষের কর্মা, কিন্তু প্রুষমাত্রের নয়। এবং রাজাও বিক্রমাদিত্যের কথাতে পরিতৃষ্ট হটয়া সর্বাপ্তর উজ্জায়িনীতে গিয়া অভিবড় সমারোহ করিয়া মাল্যা দেশের রাজতের ভর্ত্রিকে অভিষিক্ত করিয়া রাজ-কীয় যাবদ্যাপারের ভার বিক্রমাদিতাকে দিয়া আপন রাজধানী ধারা নগরীতে আসিয়া থাকিলেন। এইরপে ভর্তরি মাল্রা দেশের রাজা ছইলেন। বিক্রমাদিতা ভাঁহার আজানুদারে দকল রাজকর্ম করিতে লাগিলেন। উজ্জয়িনী নগরী ভর্ত্রি রাজার রাজধানী হওয়াতে দীর্ঘে ১৩ ক্রোশ প্রয়ে ৯ ক্রোশ বসতি হইল। রাজা ভর্তরি অনকাও পिक्रमा नाम मृहे खोरक विवाह कतिस्मन, किन्त अनकात क्रभ मावगा कामकलारकोगारल जनकारल मिरन २ अमन जन्तक हहेरलन, रह पहे চারি দিনে কদাচিৎ কথন রাজসিৎছাসনে আসিয়া বসিতেন। রাজার এই ব্যবহার দেখিয়া বিক্রমাদিত্য এক দিন ওাঁহাকে সভাব মধ্যে

কহিতে লাগিলেন, হে মহারাজ, আপনি অশেষ শাব্রার্থবেতা; আপনি যে এইরূপ ব্যবহার করেন দে বড় আকর্ষ্য। রাজার ব্রৈণতা সর্বা-নাশের কারণ। পূর্বের সূর্য্যবংশীয় দশর্থ নামে এক রাজা হইয়াছি-লেন, ভাঁহার ব্রৈণতা ব্যবহারে যশ ও প্রাণ নফ হটল, অতএব রাজার ব্রৈণভা ব্যবহার অভাস্ত অনুচিত। আর রাজার ইন্দ্রুত ও সুর্যাবৃত ও বায়ুবুত ও যমবুত ও বরুণবুত ও চন্দ্রবুত ও পৃথিবাবুত এই সপ্ত বৃত অবশা কর্ত্ন। সে সপ্ত বৃত এই; যেমন ইন্দ্র বর্ষা চারি মাস क्षत्नट পृथिरीक मन्भूनं करत्न, उप्यति ताजा धरनट छानात् मन्भूनं করিবেন, এই ইন্দ্রবৃত। যেমন সূর্য্য আট মাস পৃথিব্যাঞ্জিত বৃক্ষাদি शाहाट नस्ट ना रह अपन कतिशा शृथितीरहेट इत्मत चाकर्न करतन, তেমনি রাজা প্রজাঞাত পরিজনাদির বাধা যাহাতে না হয়, তেমন করিয়া প্রজাদের হইতে কর গুহণ করিবেন, এই সূর্যাপুত। যেমন বায়ু দকল ভূতের বাহা ও অভায়র ব্যাপিয়। থাকেন, তেমনি রাজা চার-দারা দকল লোকের বাহ্যাভ্যন্তর ব্যবহার জানিয়া থাকিবেন, এই বায়বুত। যেমন যম নিয়মিত মৃত্যুকাল পাইয়া, এ আমার প্রিয়, ও এ আমার অপ্রিয়, এ বিবেচনা কিছুই করেন না, কিন্তু সকলকেই নফী করেন, তেমনি রাজ। ন্যায্য দওকাল পাইয়া প্রিয়াপ্রিয় বিবে-চনা কিছুই করিবেন না, কিন্তু ন্যায্য দণ্ড অবশ্য দিবেন, এই যম-বুত। যেমন বরুণ পাশেতে বদ্ধ করেন, তেমনি রাজা দৃদ্য চোর প্রভৃতি पृष्ठे लाकनिगदक कातागादत्व वस्त कतिदन्त, এই वस्नुव। त्यमन চল্র ষোড়শ কলাতে সম্পূর্ণ হইয়া আত্ম কিরণ বিতরণ করিয়া সকল लांक्वित यन आक्लां निष्ठ करत्न ও मकलरक विश्व करत्न, रण्यनि ताजा নানা ধনেতে সমৃদ্ধ হইয়া দান মানাদিতে মকলকে পরিভুষ্ট করি-বেন ৪ সকলকে দুঃথ সভাপর্হিত করিবেন, এই চন্দ্রুত। যেমন পৃথিবী मकनत्क ममछाद्य धाउँ। कद्द्रम, ও मक्टलू मक्लि महरूम, তেমনি রাজা দকল প্রজা লোকদিগকে সমস্তাবে আপন মনে ধারণ कतिरात, ও मकलात উপगूक मह मकलि महिरात, এই পৃথিतीतु ह। হে মহারাজ এই সপ্ত বুতের নিত্য অনুষ্ঠান করেন যে রাজা, সে রাজা ইহলোকে ও পরলোকে প্রম সুণে থাকেন; রাজা ক্রৈণ ^{হইলে} সর্বালোক কর্তৃক ভুচ্ছাকৃত হন। অতএব হে মহারাজ, আপনি শাবধান হউন, রক্ত মাৎস অহি পূর ক্লেব লালা ইত্যাদি দুর্গতি ৪ অপবিত্র পদার্থময় এ শরীরের চর্মামাত্রাচ্ছাদনে যে দৌন্দর্য্য দে কি? এবং ভাহাতে যে উপাদেয়ভাগুহ দেই বা কি ? ইহার অনু-শন্ধান করুন; ইতর লোকদের মত কেবল বাহ্যদর্শী না হউন, আন্ত-ৰক্ষদৰ্শী হউন। আমি আপনাকে এ সকল শিক্ষার্থে কছি না, কিন্ত শরণার্থে কহি; ইহাতে আপনি ঘাহা ভাল বুঝেন, তাহা করুন। ভর্ত-

হরি বিক্রমাদিত্যের এই সকল কথা শ্রনিয়া সে দিবস ভা্ভাকে কিছ্ কবিলেন না, কিন্তু মনেং ক্রুদ্ধ হইলেন, কেননা যখন যে জন যে বিবয়ে অভ্যন্ত রাগান্ধ হয়, তখন সে জন সে বিষয়ের প্রভাক্ষ দোষ সকল আপনি দেখিতে পায় না, অন্য কেহ বলিলেও ভাহাকে ভাল বাদে না। রাজা ভর্তহরির ব্রী অনঙ্গা বিক্রমাদিত্যের এই সকল কথা শ্রনিয়া অভ্যন্ত ক্রুদ্ধা হইল, এবং বিক্রমাদিত্যের প্রতি ভর্তহরির মনোভঙ্গ যাহাতে বাড়ে এইকপ চেন্টা দিনে ২ করিছে লাগিল। ভর্তহরিও ব্রীকৃত্তিব বিপরীত ভাবাপন্ন হইনা বিক্রমাদিত্যকে সভামধ্যে এক দিবস বলিলেন, হে বিক্রমাদিত্য, ভূমি আমার নিকটে আর আসিও না, আমি ভোমাকে দেখিতে চাহি না। বিক্রমাদিত্য এই কথা শ্রনিয়া কহিলেন, ভাল, পশ্চাৎ জানিবেন, সম্পৃতি আমাকে সহিতে হয়।

विक्रमानिका এই कथा करिय़ा वासारक श्रेनाम कदिया समा श्रीत-ত্যাগ করিয়া নানা দেশ ভূমণ করিয়া ওজ্জরাট দেশে এক মহা-জনের নিকটে আসিয়া থাকিলেন। বিক্রমাদিতাকে রাজা ত্যাগ ক্রিলে পাত্র মান্ত্রি প্রত্তি এবং প্রজা লোকেরা দকলেই বিমনা হইয়া থাকি-লেন, ও সর্বান্ত ভর্তহরির অপ্রতিষ্ঠা হইল, ও রাজা থাকিতেও দেশ আর্টারক প্রায় হইল, এবং রাজাও দিনে ২ উন্মনা হটতে লাগিলেন. রাজধানীতে দিগদাহ উল্লোপাত দিনে নক্ষত্র দর্শন ও শুগালদের ঘোর জুর রব পর্বাহকম্পন অকাল ফল পৃষ্পাদিরপ নানা প্রকার অন্তুহ লক্ষণ হইতে লাগিল। ভর্তিরি এই দকল দেখিয়া অত্যন্ত ভাবনাসক হইয়া বন ভ্মণ করিতে গেলেন, তথা গিয়া দেখিলেন, এক ভ্রা আপন মৃত ৰামিকে ক্রোড়ে করিয়া জবলদগ্রিতৃতের মধ্যে প্রবেশ করিয়া সহমরণ করিল। ভর্ত্রি অন্তঃকরণের স্বাস্থ্য কার্ণ বন্মধ্যে নানাবিধ পক্ষিগণের মধ্র ध्वनि छनिया ও নृতন तृक्कनामि প্ন:প্নরবলোকন করিয়া রাজধানীতে আইলেন। আর এক দিন অন্তঃপূরে গিয়া অনঙ্গাকে ও পিঙ্গলাকে নিকটে ডাকিয়া বনে যে এক ব্রীর সহমরণ দেখিয়া-ছিলেন, তাহা কহিতে লাগিলেন। অনঙ্গা দে কথাতে তাদৃশ আয়োদ कतिल ना, किन्छ भिन्नला छनिशा किल, खोलाकामत ए गतीत तम ভাহাদের নয়, কিন্ত ৰামির, এতাদৃশ জান যে জ্ঞীর আছে, ভাহার স্থামির শরীরের সহিত নিজ দেহের দাহ করা কর্ত্তর বটে। ভাহার পর আবে এক দিবদ রাজা আপনার কোন্ত্রী কেমন ইহা ভাল घट सानिवात निभिटत भूत्रश कतिए तिश मिन्दलाक मकलटक कहित्लन, त्य তোমরা বাটীতে গিয়া ইছা কছ, রাজা মৃগয়া করি-ভেছিলেন, ওাঁছাকে ব্যাঘ্ নষ্ট করিল। লোকেরা বাটীতে আসিয়া দেইমত কহিল। পিল্লা এ কথা শুনিয়া ঘরের থাম ধরিয়া ঘেমন দাঁড়াইয়াছিল, তেমনি প্রাণভ্যাগ করিল। অনলা মনে বড়ই আনন্দিত

চুট্যা বিচার করিতে লাগিল, ভাল হুট্ল, বিক্রমাদিভাকে দ্র করিয়া দিয়াছি, রাজা মরিলেন, সতীন এক বালাই ছিল, সেও গৌল: এখন আমি আপন প্রিয়তম উপপতিকে রাজা করিয়া নিক্ষণীকে রাজ্যভোগ করি। অনঙ্গা এইরপে মনোরাজ্য করিতেছে, ইতিমধ্যে রাজা ভর্তহরি আসিয়া বাটীতে উপশ্বিত হউলেন। অনুসা বাজাব আগ্মনবার্কা শ্রবণমাত্রে অত্যন্ত চমংকৃতা হট্যা পিঙ্গলার মর্ণেও সন্দিশ্ধা হট্যা নিশ্য কারণ পিল্লার মৃত শ্রীর লাড়িতেছে, ইতাবদরে রাজা ভুত্হরি পিকলার মর্ণ সন্ধাদ শুনিয়া অতান্ত উরিগু চুইয়া অন্তঃপুরে উপস্থিত হইলেন। অনকা রাজাকে দেখিল ও অতিবাস্তা হটয়া উঠিয়া বালাকে ধরিয়া রোদন করিতে লাগিল ও কহিল, আমি আপনকার অবুভ বার্তা তানিয়া অনুমর্ণ করিতে উদ্যতা ছিলাম, কিন্তু নাজানি পিঙ্গলার কি শুলবাাধি ছিল, কিন্তা আর কোন রোগ ছিল, অক্সাৎ এই অন্ত ধরিয়া যেমন দাভাইয়াছিল, তেমনি প্রাণত্যাণ করিয়াছে, এই প্রয়ক্ত এতক্ষণ পর্যান্ত আমি অনুমর্ণ করিতে পারি নাই; নত্রা এতক্ষণ অনুমর্ণ অবশা করিতাম; তবে আর তোমার মুখ চল্লামূত পান করিতে পারিতাম না। এই ২ রূপে নানা প্রকার প্রাতিসূতক বাক্য কহিয়া রাজার সহিত আনন্দ করিতে লাগিল। কিন্তু রাজা পিল্লার দাদীবর্গের প্রম্থাৎ তাহার মৃত্যুর বিশেষ প্রকার শুনিয়া পিঞ্জা যে পতিপ্রাণা সাধরী ছিল, তাহা নিশ্য় জানিয়া ডাহার নিমিত্তে অনেক শোক ক্রিয়া তাহার দাহাদি ক্রিয়া স্মাপন ক্রিলেন।

এক দিবস রাজা ভর্তবি সভামধ্যে পাত্র মল্লিগমেত ধসিয়াভেন, ইতাবসত্তে এক তপন্ধী বাজাণ দেবপ্রসাদলর অলোকিক এক ফল লইয়া वास्तात निकटि वामिया थे कन निया वासाटक आगीतान करिटनन, अद् कहिलान, (ह महादांख, अ कल शाहेल मनुषा (मदर्भा अखद আমর হইয়া থাকে। রাজা ঐ ফল পাইয়া বুলেগের সন্মান করিয়া এ ফল লইয়া অনঙ্গাকে বড় ভাল বাদেন, এই প্রযুক্ত ভাহাকে দি-लात। कातका आधित उपपिटिक तक छाल दारम अध्यत थे कल छेपा-পতিকে দিল। অনুসার উপপতি লক্ষানামে এক বেশ্যাকে বড় ভাল বাদিত, এতাবতা দেই ফল তাহাকে দিল। যে এ ফল পাইয়া রাজা ভর্তরেকে দিল।রাজা ভর্তরি দে ফল দেখিয়া অতিশয় বিশায়াপর हरेंग्रा काहारक 8 कि इ ना कहिया, এ कल दिना। कि क़र्प्स पाउँल, ইহার অনুসভান মনে২ করিতে লাগিলেন। কএক দিবসের পর সবিশেষ ভদস্ত করিয়া অনস্নার যে কেবল কপট প্রাতি ইংা বিলক্ষণ রূপে নিশ্চয় জ্ঞানিয়া এক কবিতা করিলেন, দে কবিতার অর্থ এট, যে অনুসাকে আমি মনে দর্বদা চিন্তা করি, দে অনুসা আমাতে বিরক্ত হইয়া অন্য প্রয়েকে ইচ্ছা করে, যে পুরুষ হাহাতে অনুরক

না হটয়। অন্য ক্রীতে অনুরক্ত হয়; আমাদের তিনে যে এই মিথা।
প্রীতি ইহাতে পিল্লাদি প্রীরা আমাদের উপরে ক্রুকা থাকিতেন,
অতএব এ সংসারে রাগ দ্বেম্লুলক যে আনুকুল্য প্রাতিকুল্য জান
দে কেবল ভ্রুমাত্র; অতএব দে অনলাকে ধিক্; তাহার উপপত্তিকে
ধিক্; ইহার ঘটক যে কাম তাহাকে ধিক্; এ বেশ্যাকে ধিক্; এবং
আমাকে ধিক্; এই ২ মতে রাজা ভর্তহির সদস্বিবেচনা করিয়া জান
শাস্ত্রের উপদেশানুসারে সাংসারিক যাব্বন্দ্ব বিষয়ক দোষ প্রত্যক্ত করিয়া সংসারে অত্যন্ত বিরক্ত হইয়া রাজ্য পরিত্যাগ করিয়া বনপ্রবেশ করিলেন। এই রাজা ভর্ত্হিরিকৃত অনেক কাব্যাদি শাস্ত্রের
প্রচার অদ্যাহিবি লোকেতে আছে। এবং ঐ ভর্ত্হিরি ঐ ফল ভক্ষণ
করিয়া যোগিরুপে চিরজীবী হইয়া আছেন।

এইরপে রাজা ভর্ত্রি বনপ্রবেশ করিলে পর মালুয়া দেশ অতাক অরাজক হইল, উজ্জয়নীর রাজধানী শাশানপ্রায় হইল; ইহাতে অগ্নিবেতাল নামে এক বেতাল ঐ দেশকে আক্রমণ করিয়া প্রজা লোকদিগকে ভক্ষণ করিতে লাগিল। ইহাতে পাত্র মান্তি প্রভৃতিরা অভি উদ্বিগ্ন হইয়া ঐ অগ্নিবেতালকে তৃষ্ট করিয়া তাহার সহিত এক নিয়ম করিলেন। সে নিয়ম এই প্রতাহ প্রাতঃকালে এক পুরুষ রাজা হইয়া সমস্ত দিন রাজক্ষ্য করে, রাতি হইলে অগ্নিবেতাল তাহাকে ভক্ষণ করে।

এইরপে কিছ্ দিন গেলে পর বিক্রমাদিতা ওজরাট দেশে যে মহা-জনের নিকটে ছিলেন, সেই মহাজন বিক্রমাদিত্যকে সঙ্গে কবিয়া ও নানাপ্রকার সামণ্টা লইয়া বাণিজ্ঞা জন্যে ঘাইতেছিল; পথঘটিত উজ্জ-য়নীর নিকটে আসিয়া উত্তরিল। বিক্রমাদিতা উজ্জায়নী শহর দেখি-বার নিমিতে প্রাত্তকালে ওপ্তরূপে শহরের মধ্যে প্রবেশ করিলেন। তথাতে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন শহর নিতার উচ্ছিন্ন প্রচিন্ন হইয়াছে, প্রজা লোকেরাও অত্যন্ত ব্যাকুল, রাজধানীও ভগুপ্রায় হইয়াছে; এই সকল দেখিয়া মনে ২ ভাবনাধিত হইয়া ইতস্ততো ভূমণ করিতেছেন। ইতিমধ্যে দেখিলেন যে এক কুম্ভকারের বাটীর নিকটে রাজকীয় পাত্র মন্ত্রি দৈন্য দামন্ত প্রভৃতি দকলে একত হইয়া ঐ কুন্তকারের বালককে রালোপযুক্ত বন্ত্র ভূষণাদি পরাইতেছে, ও ঐ কুম্বকার এবং তাহার স্ত্রী প্রস্কৃতি পরিষ্করের। অত্যন্ত ব্যাকুল হইয়া রোদন করিতেছে। বিক্রমাদিত্য ইহা দেখিয়া ঐ কৃদ্তকারকে জিলাদা করিলেন, এ দকল লোকেরা এ বালককে কি করিতেছে? ভোমরা বা কেন রোদন করিতেছ? কুদ্দকার কহিল, এ বালক আমার পূত্র, ইহাকে এই সকল লোকেরা আজি রাজা করিতে লইয়া যাইতেছে। বিক্রমাদিত্য কহিলেন, ভোমার পুত্র রাজা ष्टेरित, এ ভোমার আনদ্দের বিষয়; ইহাতে তুমি রোদন কেন কর? কুম্ভকার কহিল, এ দেশের রাজা ভর্তহির ছিলেন, তিনি বনপ্রস্থান

করিয়াছেন; অতএব এ দেশ অরাজক হওয়াতে অগ্নিবেডাল নামে এক দেবযোনি এ দেশ আক্রমণ করিয়াছে; সে প্রক্লা লোকদিগকে ভক্ষণ করিতেছে, অতএব মন্ত্রিবর্গেরা তাহার সহিত এই নির্ধারিত করিয়াছেন যে আমরা পর্যায়ক্রমে একং নূহন রাজা করিব, সে ব্যক্তি দিবদে রাজকর্ম করিবে, রাত্রিতে ভাহাকে তুমি ভক্ষণ করিবা। আজি আমার পালা হইয়াছে; আমি অতিবৃদ্ধ ও রোগাতর, অতএব আ-মাকে না লইয়া, আমার এক পুত্র এই, ইহাকে লইয়া আদ্ধি রাজা করিবে: রাত্রি হইলে ইহাকে বেতাল ভক্ষণ করিবে, অতএব আমরা রোদন করিতেছি। যদি রাজার ভাতা বিক্রমাদিত্য জীবদ্দশাতে থা-কিতেন, তবে আমাদের এতাদৃশ দুঃখ হইত না, বুঝি তিনিও নাই। কুম্বকার এই বলিয়া পুনর্বার রোদন করিতে লাগিল। বিক্রমাদিতা এই সকল কথা শুনিয়া অভান দয়াবিউচিত হইয়া কুন্তুকারকে কহি-লেন, হে কুন্ডকার, তোমার পুজের বদলে আজি আমাকে দেও; ইহা-তে ভোমাদের ও আমার উভয়থা ভাল; কেননা যদি আজি রাত্রি বেতাল আমাকে ভক্ষণ করিতে পারে, তবে তোমার পুলের প্রাণ রক্ষা হয়, ও আমার পরপ্রাণ রক্ষার্থে আয়প্রাণ দানরূপ পরম ধর্ম হয়। যদি ভক্ষণ করিতে না পারে, তবে আমি এ দেশের রাজা হই, তোমাদের এ দুঃথ হয় না। কুমুকার এ কথা শুনিয়া কহিল, ভূমি যাহা বলিলা, সে সভ্য বটে; কিন্তু যদি আজি বাত্তিতে বেভাল ভোমা-কে খার, তবে আত্মপ্ত প্রাণর্ক্ষার্থে, তুমি অতিথি, তোমার প্রাণনাশ জন্য অধর্ম আমার হইবে; এবং আর্বার যখন আমার পালা উপস্থিত হইবে, তখন পুত্র সমর্পণ করিতেই হইবে, অতএব আপন পুত্রের প্রাণ রক্ষার্থে পরপুত্রের প্রাণ হিনাশরূপ পাপে আমার কার্য্য নাই; আমার ভাগ্যে যে আছে তাহাই হউক। বিক্রমাদিত্য কুন্তকারের এই সকল কথা শ্রনিয়া কহিলেন, হে ক্লুকার, ভুমি দলিও হটও না; আমার কথার ফল পশ্চাৎ জানিতে পারিবা। বড় মন্দ হইলে ঈশর অবশ্য ভাল করেন, বৃঝি এখন অবধি ঈখর এ দেশের ভাল করিবেন। আমি ভোমার প্রের প্রতিনিধি হইয়া আজি অবশ্য ঘাইব, আপন পুলকে বেডালের ভক্ষণার্থে আরু কথনও ডোমাকে দিতে হটবে না, ইহা নিশ্যম জান। কৃত্তকার এই কথাতে বিক্রমাদিত্যকে লাইয়া রাজকীয় लाकरमत् निकटण ममर्भन कतिल, उ करिल, हेनि পथिक, ताजा हहैटड हैण्टा करतन; जानि हैटाँक नमसु विषय विवत् कतिया कहिलाम, তথাপি ইনি নিবৃত্ত হইলেন না; বেতালকে দেখিতে ইহাঁর বড়ইচ্ছা হইয়াছে, অতএব আমার পুজের বদলে উহাকে লইয়া যাও, আমার পুত্রকে দেও। রাজকীয় লোকের। কৃত্তকারের এই বাক্টেডে তাহার পুতা তাহাকে দিয়া বিক্রমাদিত্যকে লইয়া অক মার্কন ও রাজযোগ্য

বেশভ্যাদি করিতে লাগিল, তাহাতে বিক্রমাদিত্যের যে অঙ্গদৌন্দর্য্য হইল, তাহা দেখিয়া প্রায় পাত্র মন্ত্রি প্রভৃতি সকলেই ইনি যে বিক্র-মাদিত্য ইহা মনে ২ জানিল, কিন্তু কেহ কাহাকেও কিছু বলিল না। এই রূপে বিক্রমাদিতাকে লইয়া সিংহাসনে বসাইয়া তাঁহার আজা-নুসারে উপস্থিত রাজকর্মা সকল করিয়া বেতালের ভক্ষণীয় সামগ্রী প্রস্তুত করিয়া মন্ত্রিবর্গেরা আপিন ২ স্থানে গেল। তদনত্তর বিক্রমাদিতা সন্ধ্যা-কাল উপস্থিত হইলে পর সায়ৎকালীন নিত্য কৃত্য সমাপন করিয়া अড্গহস্ত হট্য়া সি৲হাসনের উপর বসিয়া থাকিলেন। কিছু রাতি হইলে পর অগ্নিবেতাল রাজধানীতে আদিয়া শুক্ষা দুবা মকল ভক্ষণ করিয়া বিক্র-মাদিতাকে ভক্ষণ করিতে উদ্যত হইবামাতে বিক্রমাদিতা ঐ বেতালের স্থিত অনেক ক্ষণ প্রয়ন্ত বাত্যুদ্ধ করিয়া তাহাকে অতিক্লান্ত করিয়া ভীক্ষ খড়গদারা ভাহার মস্কুক জেদন করিতে উদাত হইলেই ঐ বেতাল বিক্রমাদিতাকে কহিতে লাগিল, হে বিক্রমাদিতা, আমি নিশ্চয় বুঝিলাম ভূমি বিক্রমাদিত্য বট, কেননা সম্পুতি মনুষ্যলোকে এমন কেহ মনুষ্য নাই যে আমাকে পরাস্ত করে; ভূমি আমাকে পরাস্ত করিলা, অভএব ভূমি মনুষ্যশরীরমাত্র দেবরাজ ইন্দের পৌত্র বীর বিক্রমাদিতা বট, এ রাজ্য হোমার, এ রাজ্যের রাজা হউতে হোমাব্যতিরেকে কেহ যোগ্য নয়; অতএব যে যথন রাজ। হইত ভাহাকে আমি ভক্ষণ করিতাম: আমি আজি অংবধি তোমার আজোকারী হইয়া থাকিলাম। বেতালের এই কথাতে বিক্রমাদিতা ভাহাকে নফ করিলেন না, এবং পূর্কবিং সিংহাসনে আমিয়া বসিলেন। এইকপে বিক্রমাদিতোর বেঙাল সিদ্ধ হইল। বেতাল আপন ছানে প্রস্থান করিল; বিক্রমাদিতা প্রম সুথে নিদ্। গেলেন। ভাহার পর অতিপুতাষে গাভোগোন করিয়া শয্যার উপরে অবন্থিত বিক্রমাদিতাকে মন্ত্রিবর্গেরা দেখিয়া প্রম আহ্লাদিত হইয়া আপন্থ পরিচয় দিয়া বিক্রমাদিতাকে সকলে প্রণাম করিল ও কহিল, ছে মহারাজ বিক্রমাদিত্য, আপনকার রাল্য আপনি করুন; আজাকারি স্কৃত্য ঘাহাকে যে কর্মে নিযুক্ত করিবেন সে তাহা করিবে। রাজা বিক্রমাদিত্য এই বাক্য শুনিয়া পাত্র মন্ত্রি সৈন্য সামস্ত প্রভৃতির আ খাস ও সন্মান করিয়া অভিয়ত ক্ষণে আপনি অভিষিক হইয়া অর্থশাস্ত্র ও ধর্মশান্তানুসারে সাধু লোকদের প্রতিপালন ও দুউ লোক-দের দমন করিয়া পরম সুথে রাজ্য করিতে লাগিলেন। পরে বিক্রমা-দিত্য আপন ধর্মবলে ও বাহুবলে উংকল ও বঙ্গ ও কোঁচবিহার ও প্রক্ষরাট ও সোমনাথ এই সকল দেশ অধিকার করিলেন। এই সময়ে শকাদিভ্য নামে কামাউ পাহাড়ের পাহাড়ীয়। রাজা রাজপাল নামে দিলীখরকে নইট করিয়া আপনি দিলীর সি৲ছাসনে বসিয়া সামুজ্য করিতেছিল, ইহা বিজ্ঞলাদিতা শুনিতে পাইয়া ঔডু দেলাদি অনেক দেশ অধিকার করিয়া আপনি বিলক্ষণমতে বন্ধমূল হটয়।

ঐ শকাদিতা রাজাকে যুদ্ধে নই করিয়া দিলীতে সমুাট্ হটয়া পৃথিবীদ্ব বাবং রাজবর্গকে স্বাধীন করিয়া শুধিষ্ঠির দেবের ন্যায় ধর্মেতে পৃথিবী পালন করিতে লাগিলেন।

কিছু কাল পরে আপেন প্রমাযুর শেষ জানিয়া নর্মানা নদীর দক্ষিণ তীর্থ প্রতিষ্ঠান নগরের শালিবাছন নামে রাজার মহিত ধর্মানুষ্ধ করিয়া দেহ ত্যাগ করিলেন। পরে শালিবাছন রাজা বিক্রমানিটাকে যুদ্ধে নইট করিয়া ও ওাঁছাকে অত্যন্ত ধার্মিক জানিয়া ওাঁছার পদে আপনি অভিষিক্ত হউলেন না, এবং তাহার শকান্দেরও অন্যথা করিলেন না, এবং রাজা বিক্রমাদিত্যের মন্ত্রিবর্গকে কহিলেন, মহারাজ বিক্রমাদিত্যের যদি সন্তান থাকে, তবে তাহাকে পিতৃপদে তোমরা অভিষিক্ত করে। মন্ত্রিবর্গরি শালিবাছন রাজার এই বাক্যেতে বিক্রমাদিত্যের পুত্র বিক্রমদেনকে অভিবালক কালে অভিষিক্ত করিয়া আপনারা রাজ্যাদি করিছে লাগিলেন।

IV.—Of Prithu. (A. D. 1176—1192.)

দিলীর রাজা পৃথুর অধিকার সময়ে যবন জাতিরা যে প্রকারে দিলীতে অধিকার করিল, তাহালিখি।

কান্যকুজ দেশের রাজা জয়চন্দু রাচোর মহাবল পরাক্রম ছিলেন, এবৎ বড় ধনী ছিলেন; কাহাকে বলেতে, কাহাকে প্রীতিতে, এইরূপে প্রায় কুমারিকাথওম্ব সকল রাজাকে আপন বশীদৃত করিয়াছিলেন। তাঁহার অনক্ষমঞ্জরী নামে অপুর্যসুদ্দরী এক কন্যা ছিলেন। ভাঁহার বিবাহের নিমিতে যে > বর উপস্থিত হয়, তাহাদের মধ্যে কেহ তাঁ-হার মনোনীত হইল না। পরে রাজা এক দিবদ উদিগ্ন হটয়া কন্যা-কে জিজাসা করিলেন, আমি ডোমার বিবাহের নিমিতে যে বর উপস্থিত করি, সে ভোমার মনোনীত হয় না, ইহাতে ভোমার মনস্থ কি ? তাহা আমাকে কহ, আমি তদনুকপ করি। রাজকন্যা এট কথা শুনিয়া কহিলেন, হে মহারাজ, আপনি আমার কর্ত্তা, আপনকার যে মনস্থ তাহাই হউতে পারে; আমার মনস্থে কি করে? তবে আপন মনস্থ যাহা ভাহা আজান্সারে কবি। আপনি সম্পুতি অতিবড় রাক্ষা, याहा डेव्हा करत्न डाहाडे कतिएड পाद्नम: आगि आश्रमकात कना, ইহার মত বিবাহ হইলে বড় ভাল হয়। ইহাতে আমি এট মনে করি-য়াছি, আপনি এক রাজসূর যজ আর্ড করন, তাহাতে সকল রা-बारमञ् निমञ्जन कर्मन, उर्द मकल दोक्षात्। व्यवना व्यामिरतनः, सिष्टे

রাঞাদের মধ্যে আপন মনোনীত যে রাজাকে দেখিব, তাহাকে ব্য়ৎ বরণ করিব। রাজা কন্যার এই বাক্য শুনিয়া রাজসূয় যজের আ इस कृतिया मकल दाक्षात्मत निमञ्जभ कृतिरलन। तम निमञ्जरभ कृषाति-কাথওম সকল রাজারা আইলেন; কিন্ত দিলীর পৃথু রাজার আগমন কালে ওাঁহার প্রাচীন এক চাকর ওাঁহাকে কহিল, হে মহারাজ, রাজ-সূয় যজের নিমন্ত্রণে গেলে কর্রুপে কিছু দিতে হয়; আপনি দিল্লীর রাজা; আপনি যে অন্যরাজাকে কিছু কর দেন, দে ভাল নয়; তবে প্রীভিতে মজ সমাপনার্থে কিছু দিলেও লোকতঃ অপ্রতিষ্ঠা হইবে; স্মতএব এ নিমন্ত্রণে আপিনকার যাওয়াউপযুক্তনয়। রাজা এই কথাতে সেই নিমন্ত্রণে আইলেন না। কান্যকুজের রাজা জয়চনু এই কথা শুনিতে পাইয়া অবংকরণে অতিক্রুদ্ধ হইয়া সভাস্থ পণ্ডিত লোকদিগকে জি-জাদ। করিলেন, দিল্লীর রাজা আইলেন না, যজ সমাপন কিরুপে হয়? পঞ্চিতেরা কহিলেন, রাজসূয় যজের অঞ্চ রাজারা হন, অঞ্চের অভাবে প্রতিনিধিতেও প্রধান কর্ম সিদ্ধ হয়, অতএব দিল্লীর রাজার প্রতিনিধি এক মর্ণ প্রতিমা নির্মাণ করুন। পুরের সূর্য্যবংশীয় রামচনু নামে এক মহারাজ হইয়াভিলেন; তিনি নৈমিষারণ্যে যথন যজের আরম্ভ করিয়াছিলেন, তাহার পূর্বেক কিছু দিন কোন কারণেতে আ-পন স্ত্রী দীতাকে বনবাদ দিয়াছিলেন, অতএব যজকালে ওাঁছার স্ত্রী ছিলেন না, এই প্রযুক্ত বশিষ্ঠ জাবালি প্রভৃতি মহামুনিরা রামচন্ত্রের স্ত্রীর প্রতিনিধিরতেপ এক স্বর্ণপ্রতিমা নির্মাণ করাইয়া যজ করাইয়াছিলেন; আপেনিও দেই মত করুন; যজ আরম্ভ করিয়া সমাপন না করিলে বড়ই দোষ। রাজা পণ্ডিচদের এই বাক্যেতে পৃথু রাজার প্রতিনিধি-রূপে এক হর্ণ প্রতিমা করিয়া ঐ প্রতিমাকে দ্বারিরূপে দ্বাপন করি-লেন; কেননা রাজদূর যজে নিমন্ত্রিত যে ২ রাজারা আদিয়া থাকেন, তাহার। উপযুক্তমত কেহ কোন কর্ম করিয়া থাকেন। জয়চদু রাজা পৃথুরাজার না আসাতে জুদ্ধ হইয়াছিলেন, অতএব তাঁহার পুতিমাকে অনুপযুক্ত কর্মে স্থাপন করিলেন। ইহা পৃথু রাজা শুনিতে পাইয়া সলৈন্যে কান্যকুজ্ঞদেশে আদিয়া জয়চনুরাজার অনেক দৈন্য নইট করিয়া ঐ অংশ প্রতিমা লইয়া গেলেন। তদনত্তর রাজা হয়চন্দুকোন প্রকারে যজ সমাপন করিয়া অত্যন্ত অপমানিত হইয়া রহিলেন। এই পুকারে পৃথু রাজাকে বড় বলবান্ ও রূপবান্ দেখিয়া রাজ-কন্যা যে ২ রাজারা আসিয়াছিল, তাহাদের মধ্যে কাহাকেও স্বয়ন্ত্রণ না করিয়া কহিলেন, আমি পৃথু রাজা ব্যতিরেকে অন্য রাজাকে বরণ করিব না। জয়চনু রাজা আপন কন্যার এই নিশ্চয় জানিয়া কন্যার উপর অভ্যন্ত ক্রন্ধ হইয়া কন্যাকে আপন বাটীহইভে দূর করিয়া দিলেন ও কহিলেন, ভোর যাহা ইচ্ছা তাহাই কর গিয়া।

বার্ত্তকরা অন্য কোন অন্তরক্ক লোকের বাটীতে আদিয়া রহিলেন। এ সকল বিষয় পৃথু রাজা খনিতে পাইয়া চন্দ্র নামে এক ভাটকে জয়চন্দ্র রাজার নিকটে পাঠাইয়া দিলেন ও এক পত্র লিখিলেন; তা-হার পাঠ এই। হে মহারাজ জয়চন্দ্র, ভোমার কন্যা আমাকে বিবাহ করিতে মনস্থ করিয়াছেন, গাঁহার যে এ মনস্থাস উপসূক্ত বটে, কিন্তু ভুমি যে ইহাতে ভাঁহার প্রতি একুফ হইয়াছ দে অভান্ত অনুচিত করি-য়াছ; তোমার কন্যার মনস্থ অন্যথা কখনও হইবে না; ইহা নিশ্চয় জানিবা। এইরূপ পত্র দিয়া চন্দ্রভাটকে পাঠাইয়া আপনিও দদৈনেয কান্যকুক্ত দেশে প্রস্থান করিলেন। চন্দ্র ভাট রাজার কাছে গিয়া দে পত্র দিলেন, কিন্তু জয়চন্দ্র রাজা দে পত্রার্থাবগত হইয়া কিছু উত্তর দিলেন না। পূথু রাজা চল্রভাটের প্রমুখাৎ ইহা জাত হটয়। আপন যোগ্যতাতে রাজকনাকে লইয়া দিলীতে প্রস্থান করিলেন। পৃথু রাজার দৈন্য সকল কনোজেতে থাকিল। পশ্চাৎ জয়চন্দ্র রাজা ইহা ন্তনিতে পাইয়া সদৈনো আদিয়াপৃথুরাজার দৈনোর সহিত বড মুদ্ধ করিলেন। ঐ যুদ্ধে দুই দিগেতে ৭০০০ সাত হাজার লোক নফী হইল। জয়চন্দ্র রাজা আপনার আনেক লোক নফ হওয়াতে যুদ্ধহইতে বিরুত হট্যা প্রস্থান করিলেন। পূথু রাজার অবশিষ্ট দৈন্য দিলাতে আনিয়া পর্ছিল। এইর পে পৃথু রাজার ও জয়চন্দ্রাজার বড় শতুহা হইল। তদনত্তর পৃথু রাজা অনক্ষম-ধারী কন্যাকে বিবাহ করিয়া তা-

হার গুণ ও রূপ লাবণ্যাদি দেখিয়া আর্থ অনেক সুন্দরী স্ত্রীথা-किटिंड बे तां जकनाटिंड अभन आमक रहेटलन, य प्रतिस्ति उपत রাজকার্ফোর ভার দিয়া প্রায় অন্তঃপূরেতেই থাকিতেন। এইরূপে পৃথু রাজা জয়চতেন্ত্র সহিত ও সোলতান শাহাবুদীন যবনের সহিত শত্তা করিয়া রাজকর্মে অনবহিত হওয়াতে যেমন কেহ উচ্চতর তৃণরাশিতে অগ্নি সংযোগ করিয়া বায়ুসমুঝে তাহার সমীপে নিশ্চিত্ত হইয়া নিদা যায়, তেমনি নীতিবিরুদ্ধ আচরণ করা হইল। পূর্কে পৃথু রাজার সহিত মুদ্ধ করিয়া মুিরমাণ হইয়া পলায়ন করি-য়াছিল যে সোলতান শাহাবুদ্দীন, দে এই নকল নমাচার শুনিতে পাইয়া অনেক উত্তম সাম্গুী দিয়া রাজা জলচত্তের দঠিত মিলিয়া ভাঁহাকে মহায় করিয়া পূথু রাজার সহিত্যুদ্ধ করিতে অনেক সৈন্য লইয়া আসিয়া নারায়ণ গ্লামে উপস্থিত হইল। পৃথু রাজার মন্ত্রিবর্গ এ সম্বাদ পাইয়া বিচার করিতে লাগিলেন, রাজার আজা আছে যে আমার সাক্ষাৎ কেহ কোন কথা নিবেদন করিও না, রাজ-কর্মের ভার ভোমাদের উপর থাকিল, ভোমরাই করিও; সম্পুতি এ সমাচার রাজার দাক্ষাং কি প্রকারে দেওয়া যাইবে? চল্র ভাটকে রাজা বড় ভাল বাদেন, তিনি রাজার নিকটে বড় প্রশ্বত, মধ্যে ২ আনঃপরে

02

গিয়া থাকেন, ভাহার দারা এ সমাচার দেওয়া ঘাউক। সকলে এট বিচার করিয়া চন্দ্র ভাটকে সমাচার দিভে কহিলেন। চন্দ্র ভাট আন্তঃ-পূরে গিয়া রাজাকে সম্বাদ দিলেন, হে মহারাজ, যেমন বালির ভয়ে পলারিত সুগুীব বানর রামচন্ত্রকে সহায় করিয়া পুনরায় যুক্ষার্থে উপস্থিত হইয়াছিল, তেমনি মহারাজের ভয়ে কান্দিশীক শাহারুদীন যবন জয়চন্দ্রকে দহায় করিয়া পুনর্বার মুদ্ধার্থে নারায়ণ গ্রামে উপ-স্থিত হইয়াছে, বিহিত অবধান হউক। পৃথু রাজা চল্র ভাটের এই বাক্য শুনিয়া দে পূর্ব্বপরাজিত জানে সুমাধ্য জানিয়া ভাচ্ছীল্য করিয়া কহিলেন, নারায়ণ গ্রামে যে দৈন্য আছে, দেই দৈন্য তাহার পরা-জারেতে পর্যাপ্ত আছে, অতএব নারায়ণ গুামস্থ দৈন্যদিগকে যুদ্ধ করিতে আজা পাঠাইয়া দিতে মন্ত্রিদিগকে বল। তদনম্বর চন্দ্রভাট মস্ত্রিদিগকে রাজাজ। জানাইলেন, মন্ত্রির্গ রাজাজানুসারে নারায়ণ পামের দৈন্যদিগকে যুদ্ধ করিতে কহিয়। পাচাইলেন, এবং আর ২ অনেক দৈন্য পাঠাইলেন, কিন্তু মনে দকলেই রাজার প্রতি বিরক্ত হইলেন। কোন্থ মন্ত্রী কহিলেন, রাজার অনীত্যাচরণে রাজলক্ষ্মী কখনও থাকেন না; যে পরাজিত শত্র পুনর্কার যুদ্ধ করিতে আইদে, দে দৃঢ়তর উপায় সমবধান না করিয়া আইদে না। শাহাবৃদ্ধীন পূর্বের প্রাজিত হইয়া প্লাইয়াছিল, সম্পুতি জয়চন্দ্রাজাকে সহায় করিয়া যুদ্ধ করিতে আদিয়াছে। জয়চন্দ্র রাজার মহাবল পরাক্রান্ত আনেক যোদ্ধা আছে, মহারাজ এ সকল বিলক্ষণরূপে জানেন, তথাপি এইরপ নিশ্চিন্ত, না জানি ঈশরেছা কি আছে। আর এক মন্ত্রী कृशिलन, आरनक निन इडेल, এक ममाय ताला घरनामत श्रीभल्छा শুনিতে পাইয়া অনেক বেদজ পণ্ডিচদিগকে আনাইয়া কহিলেন, হে পভিতেরা, এমন কোন যজের আর্দ্ত কর, যাহাতে যবনদের প্রতিভা ও প্রাগল্ভা উত্রোত্র হ্রাস হয়। পণিতেরা আজা করিলেন, হে মহারাজ, এমন যজ্ঞ আছে, আমরা করিতেও পারি; কিন্তু আমরা যে সময়ে অবধারণ করিব, সেই সময়ে এ যজের যূপ স্থাপন যদি হয়, তবে দে মূপ যাবৎ থাকিবে, তাবৎ ঘবনেরা এ দেশে কখনও আসিতে পারিবে না। রাজা পণ্ডিতদের এই বাক্যে অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া বড় সমারোহ করিয়া যজের আরম্ভ করিলেন। মূপ স্থাপনের সময় ছইলে পণ্ডিতদের অনুমতিমাতে যুপ স্থাপন করিতে মৃপ উঠা-ইতে নানা যতন করিলেন, যূপ কদাচ উঠিল না। তদনত্তর পণ্ডিতেরা কহিলেন, হে মহারাজ, ঈশ্বরের যে ইচ্ছা দেই হয়, পুরুষ ঈশ্বরেচ্ছার উপর প্রবল নয়, কিন্তু তাহার সহকারী বটে; ঈশরেচ্ছা সহত্ত পুরুষ কাৰ্য)সাধক হয়, অহতএব নিবৃত হও, বুঝি এ সিৎহাসন যবনাক্ৰাৰ **ছইবে। বোধ হয়, মহারাজ পণ্ডিত লোকদের এই বাক্য সার্ণ করি**য়া

গুদ্ধে শৈথিলা করিলেন। এইরপে মদ্বিদ্রেরা নানা প্রকার কথোপ-কথন করিয়া অতান্ত বিষয় হইয়া আপন হ স্থানে গেলেন। তদনন্তর নারায়ণ প্রামে শাহাবুদ্দীন পূথু রাজার দৈনা সকল প্রায় নফ করিরা সদৈনা দিলীতে আদিয়া পহুছিল। তদনন্তর পূথু রাজা দখাদ পাইয়া অন্তঃপুরহইতে নির্গত হইয়া শাহাবুদ্দীনের সহিত ঘোরতর রণ করিলেন, কিন্ত ইখবেচ্ছাতে শাহাবুদ্দীন যদন ঐ রক্ষভূমিতে পূথু রাজাকে ধরিয়া পূথু রাজা করেচন্ত রাজার জামাতা হন, এই অনুরোধে ভাঁচাকে নফ করিলেন না, কিন্তু কএদ করিয়া থাড়াই আপন দেশে গ্রনেনে পাঠাইয়া দিলেন।

এট রূপে শাহাবৃদ্ধীন যবন যুদ্ধে জায়ী হইয়া দিল্লীতে কএক দিবস থাকিয়া চন্দ্রভাটকে পৃথু রাজার সকল বিষয়ের জাতা জানিয়া তা-হাকেও কএদ করিয়া সঙ্গে লাইয়া দিল্লীতে আপন পিভার দাসীপুত কোত्र फीन घरनाक दाथिया जाशनी जाद १ ताकारमद छाउट महमः সিৎহাসনে না বসিয়া ঋদেশ গজনেনে গেলেন। কোতবুদীন যবন কিছু দিন পরে দিল্লীতে আপন আম্লা বদাইল, এবং দোলতান শাহার্দ্দীনের নামে সিককা ও খোতবা জারি করিল। শাহার্দ্দীন ষবন হিলুদ্বানে সাত বার আদিয়া কিছু করিতে পারিয়াছিল না, অফীম বাবে জয়চন্দ্র রাজার আনুকুল্যে জয়ী হউল। সোলভান শাহা-त्मीन शक्तरत्त हस्त्र छाष्टिक जालन निकटि मध्यार जाकावेश शृथ् রাজার দকল বিষয় ও হিন্দুয়ানের আর্থ বিষয় দকল জিজাদা করিত। এক দিবদ চল্রভাট কহিল, হিন্দুখানের মধ্যে পৃথু রাজা অতি বড় তীরন্দাল। শাহাবুদীন এ কথা শ্রনিয়া পৃথু রাজাকে আ-পন নিকটে ডাকাইয়া এক নিশানা দেখাইয়া দিয়া নিশানা মারিতে কহিল। তদনন্তর পৃথু রাজা বড় শীঘুকর্মা ছিলেন, নিশানা মারিতে যে বাণ ধনুকে যোগ করিলেন, দেই বাণের ভাষাদা দেখিতে অনামনস্ক जिल रत माहातूकीन, डाहारक नके कतिरलन। उरक्ररा माहातूकीरनत লোকের। পৃথু রাজার ও চন্দ্রভাটের শিরস্তেদন করিয়া ফেলিল। এইক্সে এক দিনে পৃথুরাজা ও চন্দ্রভাট ও শাহারুদ্ধীন নফট হইল।

V.—Of Akbar. (A. D. 1556—1605.)

অকসরের জন্ম নগরকোঠেতে হউল। ডাহার পিডা অমায়ু এক কণ-মাত্র পুত্রকে অসলোকন করিয়া মনে > ঐ পুত্রকে প্রমেখরের প্রাতি মমর্পণ করিয়া ঐ বালকের ও ঐ বালকের মাতার গোগ ক্ষেমার্থে বয়র্ম শাঁ ধানথানাকে রাথিয়া আপুনি বাইশ জান পোকের সহিত

তথাছউতে প্রস্থান করিজেন। ভাহার পর মহমুদ হুমাযুর ভা্রা মীর্জা অষ্করি ভার্যের পরিত্যাণ করিয়া অতি অবরাতে নগরকোঠে উপস্থিত ছউয়া তথাকার উদূ বাজার লুঠ করিতে লাগিল। ইহার আনদিবার कि कि २ शृत्स में दत्त्वम था अकरत्वत् मादाव द्यादा थाका छान नग्न, টিছা বুঝিয়া ভাষাকে স্থানাপ্তরে রাখিয়া পশ্চাৎ অকবরকেও লইয়া ষাটবেন, এট সময়ে লুঠ ছটল। ঐ মীরজা অফরি উদূ বাজার সমস্ত লঠ করিয়া একাকী বালক অকবর্কে পাইয়া প্রতিপালনার্থে আপন বেলমের নিকট ভাতাকে সমর্পণ করিলেন। পরে মহমদ ভ্যায়ু থোরা-সানে আসিয়া পছঁছিলেন। তথাতে শাহ তহমাসেপর পুত্র মীর্জা মহমূদ ত্মায়র নানা প্রকার দান মানাদিতে পুরস্কার করিলেন। তাহার পর মহমুদ হেমায়ু মদহদে গিয়া পঁহুজিলেন, তথাতে ঐ তহমাদপ বাদ-শাহের মহিত মাক্ষাং করিয়া আপন ভাতাদের শতুতাপ্রযুক্ত আ-পনার নানা স্থানীয়তার সবিশেষ কহিলেন। ভাহাতে বাদশাহ কহি-লেন, ভোমার পিডা বাবোর আমার সহিত এই রূপ অনেক করিয়া-ছिলেন; मে यादा इडेक, किन्छ এडे क्रांग आमि रेमना मामच निश्र ভোমার দাহাত্য করিব, কিন্তু ভূমি জরী হউলে পর বল্প ও কন্ধার এই দৃট দেশ আমাকে দিয়া। মহমুদ ত্মায়ু তাহার এট কথা মীকার করিয়। তাঁহার অপ্পেবয়স্ক এক পূচ্দ্র ও দশ হাজার লশকর লউয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন। তাহার পর কস্কার ফতেহ করিয়া কিলার মহিত ঐ দেশ স্থাকারানুমারে ঐ তহমাসগ বাদশাহের প্রের হাওয়ালে করিলেন, এবং আপনিও কাবেলে দেশে গেলেন। এই भगग कजनरात्मत क्लोत्जा कन्नात्त्र आमिया उपमृत कतिन, ও ঐ সময়ে ভহমাদেশর পুত্র মরিল। এই কারণ মহমুদ ত্মাযু পুনস্বার কন্ধারে আদিয়া ঐ কললসংসের ফৌলনিগকে দুর করি-या आश्रीन शुनवीत कार्टाल शिलन, मिथान छोज ज्या कतिया মীরজা কামরালের চক্ষুন্সী করিয়া দিয়া ওাঁছাকে কারা পাটাইয়া দিলেন। মীর্জা অফরিও কাবা প্রস্থান করিয়াছিলেন, পথে ঠাহার মৃত্যু হউল, ও মীরজা হেন্দাল বিষ থাইয়া মরিলেন। ইহাতেই মহমুদ ছমায়ুর এবং তাঁহার বেরাদারির ঘেখানে মত প্রাচীন ও নতা দৈনা ছিল, সকলে আদিয়া ইহার কাছে উপস্থিত হটল। ইহাতে বাদশাহ কাবোলহইতে প্রস্থান করিয়া দেকদর শুরুকে পরা-ক্সম করিয়া লাহোর ও সিদ্ধু অধিকার করিলেন। সেখানে অনেক ধন পাইয়া দিল্লীতে আসিয়া তকে বসিলেন এবং খোতবা ও সিককা আপন নামে জারী করিলেন। ডাছার পর হিন্দুস্থানেরও আনেক কিল। ফতেহ হইল। ভাহার পর তিনি এক দিবস সিঁড়িহইতে নামি-তেছেন, এই সময়ে আজার শব্দ খনিয়া তথাহইতেই তট্ছ হইয়া

কিঞ্জিংকাল থাকিলেন, পশ্চং নামিনার উপক্রম করিছেই তথাচ্ইতে পড়িয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন। ইহার এই বারের বাদশাহা কেছ্ দশ বংসর লিখে, কেছ বা ১০ দশ মাস লিখে; কিন্তু অঙ্কের মিলনের কারণ আমি দশ মাস গুছণ করিলাম।

ভাছার পর ভাঁহার পুত্র দোলতান জলাল্দীন মহমদ অকবর বাদ-শাহ হউলে বয়র্ম থা ধানধানার প্রামশে লাহোরের নিকটে কালান ওবে তকে বসিয়া ৯৬০ নয় শত তেষট্টি হিজিবি মনে জল্ম করিলেন, ও সকল দিগে আজ্ঞাপত্র পাটাইলেন, পোহরা ও মিককা আপন নামে জারী করিলেন; হিন্দুখান ও দাক্ষণে ওজরাত প্রভৃতি অনেক দেশ ও অনেক বন্দর আয়ত করিলেন, ও অনেক প্রধান লোক মত উহার অনুগত হউল। আর অকবরের এমনি ভাগোর প্রাবলা हरेल (ग देहाँत नात्मराटे जा व देहा लाशिल, कथन रकान सात हैवाँत প্রাজ্য হয় নাই। পরে আন্থানা স্যুত্ম আঁ কোন বিষ্ঠে বাদ-শাহের কিছ আজোলজান করিয়।ছিলেন। অভএব বাদশা। ভাঁহাকে এক দিব্য ক্রিলেন, আপুনি অভিদ্যা হউলেন, অভ্এব সম্প্রি কারা প্রস্থান কফান, আপানকার পুত্র মুনিয়ম পাঁ উজারী কফান। বাদ-শাচ তাঁহাকে এট রূপ কহিয়া অতি দড় ম্যানাপুর্মাক ভাহাকে কারা পাচাইয়া দিয়া ওঁহার পূজ মুনিয়ম থাঁকে পান্থানা থেডার দিয়া উদ্ধারী কর্মে রাখিলেন। পরে প্রয়াগে উলাহারাদ নামে এক কিলা कृतिया প্রায় দেউ খানেই থাকিতেন, ও প্রয়াগের জল বিনা অন্য জল পান করিতেন না, এবং অক্ষরাবাদ নামে এক শহর আবাদ করিয়া এক কিলা সেখানে করিলেন ও সলতনং সকল প্রায় মেখা-নেই থাকিত: মুম্মুচভট্ট প্রভৃতি অনেক কেশীয় নানা শাস্ত্রজ অনেক পণিতদের সহিত ও ফরজা ও অবুসফলস ও ৃহঞীম অবুস ফতেই প্রভৃতি অনেক মওলানদের সহিত নানাবিধ শান্ত্রীয় কথার আ-মোদে থাকিতেন, ও অনেক সংস্কৃত শাস্ত্রের ফার্সীতে ভর্চমা সেই কালে হয়। এই রূপে নানাবিধ শাস্ত্রজানজন্য পার্মার্থিক বৃদ্ধিপ্রতি-ভাতে মহক্ষদের মতে অনাতা করিয়া মনে> হিন্দুদের মতেই আছা कतिरहम; अह अत है ताम ও हुतारमत त'आता है है। एक आनुरमान कति-য়া লি খিতেন। দেই সময়ে আরু > দেশেও এমত পণ্ডিত ও মতাপুরুষ मकल इडेग्लाइटलन, रा डैं। हारनत कता माञ्ज ९ मड मकल अर्थन ९ ला-কে প্রচর্দ্রেপ আছে, ও ইছারি করা আইনের মতে এখনো অনেক রাজকীয় ব্যাপার হইতেছে। পরে বজাতীয় অনেকবেগম থাকিতেও এক হিন্দু রাজাকে প্রার্থনা করিয়া ঠাহার এক কন্যা আপনি বিবাহ क्रिट्लन, स्म दानी अञ्चल्पूरत शिलुप्तत महानुमारत मूर्गाार्घा नानानि দেবপুলা নিত্য করিতেন। এ রাণীর পুত্র জাহাঁগীর যিনি উহার

পর বাদশাহ হউবেন। আর যে মহাপুরুষের বার্তা শুনিতেন, দে মহাপুরুষের নিকটে যাইবার দুই ক্রোশ থাকিতে দকল লোক রাখিয়া পদব্জে আপনি ওাঁহার স্থানে গিয়া ওাঁহাকে বিনয় প্রার্থনাদি করি-তেন, ইহাতেই কোন মহাপুরুষের প্রদাদে ইহার পুত্র হয়। পরে ইহার দভাতে তানদেন নামে এক অতি বড় গায়ক ছিলেন, তাঁহার করা গান প্রকাশেতে এখনও গায়কেরা গান করে, ও পুর্বে যে ২ দেশে যে ২ হাকিম থাকিতেন, ভাঁহারাই স্বস্তদেশে আপনাকে বাদশাহ করিয়া জানিতেন, ও কেহ কখনও লালাবন্দি ও পেশ কোশ রূপে কিজু খাজানা দিতেন। এই বাদশাহ একৈক প্রদেশকে একৈক সুবা করিয়া তাহার হাকিম একৈক সুবেদার করিলেন, তদবধি ততং প্রদেশীয় রাজারা জমীদার নামে কথিত হইল। ও রাজা তোড়মল নামে ক্ষত্রিয় জাতীয় এক প্রধান মন্ত্রী প্রায় হিলুম্বানীয় সকল দেশের জামী জব্দ করিয়া জমাবন্দি করিলেন। দেই অবধি প্রত্যেক দ্বাডে কানুনগোট সিরস্তা ও বাদশাহী একৈক অখশালা ও একৈক হস্তি-শালা মোকর্র হটল। আর টনি দামি হিদাবে মুন্দব নিয়মিত করিলেন। আর বীরবর নামে এক মাথুর ব্রাহ্মণ ইহার সভাসদ ছিলেন, তিনি অতি বড় উপস্থিতবকা ও বৃদ্ধিমান ছিলেন, ঠাহার সহিত অক্বর বাদশাহ প্রায় সর্বাদা শ্লেষোক্তি ও ব্যঙ্গোক্তি ও অন্যোপদেশ প্রভৃতি নানাবিধ সালকার বাকে)তে আমোদ করিতেন। ওাঁহাদের দেই সকল খোশ গণ্প এখনও অনেক লোক করিয়া থাকে। ইনি ফয়জীকে ছলারপে কাশী পাঠাইয়া ওাঁহার ছারা অনেক সৎস্কৃত বিদ্যার আহরণ করিয়াছিলেন। আর ইহাঁর সভাতে কবিগঙ্গ প্রভৃতি অনেক ফতকবি ভাট ছিল, তাহার মধ্যে কবিগঞ্ল বড় কবি ছিল। তাঁহার করা অনেক দোঁহা ও কবিতা এখনও লোকতঃ প্রচার আছে। আরু শাহ অকবর উদাম দাতা ছিলেন; এক২ দিনে কোটি টাকা দান করিতেন, এ রূপ দান প্রায়ই মধ্যে ২ করিতেন; আর ইনি গোমাৎস ভক্ষণ করিতেন না, এবৎ কিলার মধ্যেতেও গোবধ বারণ করিয়া দিয়াছিলেন, তৎপ্রযক্ত তদবধি এখনও তাঁহার কিলাতে নোবধ হয় না। আর তাঁহার শোষ্ট্য বীষ্ট্য গান্ধীষ্ট্য ঔদাষ্ট্য প্রণজভা ধণ্ণাহকতা দোষত্যাগিতা শিষ্টসমাদরকারিতা দৃষ্টবিনাশকারিতা বি-দ্যামোদিতা দীনদয়ালুতা দুঃখিজনবন্তা ধনিজনরক্ষকতা বক্তা র্সি-কতা দাতৃতা ধার্মিকতা প্রজামনোর-একতা দাত্সিকতা দদোৎদাহিতা নিভোদ্যমকারিতা মাতৃপিতৃভক্ততা প্রমেখ্রানুরাগিতা প্রভৃতি উত্তম প্রদের কথা আমি কত লিখিব? ইহার অনেক তওয়ারিখ আছে, তাহাতে দে সকল কথার বিষ্কার আছে। ইহার বিষয়ে অধিক আর কি লিখিব? এবিক্রমাদিতোর পর এই হিন্দুছানে এখন পর্যান্ত প্রণেডে

ভাছাতে সে সকল কথার বিস্তার আছে। ইহাঁর বিষয়ে অধিক আর কি লিখিব ? আনি বিক্রমাদিত্যের পর এই বিন্দুখানে এখন পর্যায় ওংগেছে আকবর শাহের সমান সমুটি আর কেহ হন নাই।

VI.—Of Jehángir (A. D. 1605—1628.)

তাছার পর নুরুদ্দীন মহম্মদ জাহাঁগীর বাদশাহ হউলেন। উনি কিছ অনবস্থিতচিতের মত ছিলেন। ইনি যে মহাপুরুষের প্রদাদে জাত হইয়াছিলেন, দেই মহাপুরুষ অকবরকে আজা করিয়াছিলেন, যে ডো-মার হিন্দুরাণীর গর্ট্তে ঘে পুল হইবে, দে কিছু অনবন্ধিচচিত্তের মত ছইলে ইহাতে তমি তাঁহার প্রতি কথনও বিরক্ত হটবা না; সেট বাদ-শাহ इडेर्टा डैनि ১०১৪ এक राजात छोज रिजति मन अकरतावास्नर কিল্লাতে তক্তে বসিয়া পিত শাসিত সকল দেশের প্রজাদের প্রতিপা-লন করিছে লাগিলেন। হিন্দুরাজার এক কন্যা আনাইয়া পিতার জীব-দশাতেই বিবাহ ক্রিয়াছিলেন। এ বাণীর গর্ভেশাহ∉াহাঁ নামে উহার প্ত অক্ররের বর্তমানে জিমিয়াছিলেন। ইনি প্রায় হিণ্দের মত বেশ ভূষা ধারণ করিতেন। ইহার মাতা শ্বেহ প্রযুক ইহার কণবেশ করাইয়া কুণ্ডল প্রাইয়াছিলেন; তাহাতেই ইনি কুণ্ডল ধারণ করিয়া তক্তে প্রায় বসিতেন। কিছ দিনের পর বাঞ্চালাতে শেরফগন খাঁ নামে এক ওমদা ছিল দে ইহার বাদশাহীর সময়ে মারা গেল; তাহার জী অতিবড় সুন্দরী ও অতিবড় গণবতী ও পণিতা ও কবি ও বুদ্ধিমতী ও বিবেচিকা। অতএব ঐ দ্বীকে আনাইয়া জাহান্দীর নিকা করিলেন। এ ব্রীতে জাহাঙ্গীর বাদশাহ দিনে ২ অতিশয় আসক্ত হউলেন; পুরে ঐ স্ত্রীর নাম নব্মহল দিয়াছিলেন, ডাহার পরে নর্জাহা নাম দিলেন। খোতবা ও সিক্রাতে ঐ নাম আপন নামের সহিত জারী করিলেন। আরু নুর্মাহা রেগম্বে এক দিন আজা কার্লেন, যে নাায় ব্যতি-রেকে বাদশাহীর যে কিছ বিষয় সে দকলি গোমার; কেবল আগ দের মাৎস ও এক সের মদিরা ভূমি আমাকে নিতা দিবা। নুর্জাতা महिमु 8 काइमालि 8 कको हिमिश्तक अदनक पन मिर्टन, 8 अतिया-হিতা আনেক কন্যাদের বড় ঘটাতে বিবাধ দিতেন, শাষ্ট্রাই এমন পিতৃত্তক ছিলেন যে এ ত্যাপারেতেও পিতার প্রতি কোন মতে विवक्त मा इहेबा मर्खना मर्याणालात लिशा व दक्ते जानून के शांकिएम, ৪ পিতৃ আজাতে আর্থ অনেক দেশ মায়ত করিলেন। যথন রাণার দেশ জয় করিয়া শাহজাঁহা আইলেন, তথন জাহার্লার বাদশাত অনুবজিয়া পুরকে আনিয়া পুরয়েহে ও পুলের জয়েতে য়েহার্ডিত হটয়া পুলকে আপন ক্লোডে বদাইয়া জনেক ধন বিতর্গ করিলেন, ও অনেক এত-

মুল্য রহন পুত্রের নিছুনি করিয়া দিলেন, এবং আনেক বহুমূল্য दरक्तरं भूटलंद मधान कतिरमन, ७ भूटलंद मरम यह १ अघरा नियाणिम, ভাছাদের প্রভ্যেককে উপযুক্ত মহ খিলাত ও নানা প্রকার রক্তাদি দিয়া প্রস্কার করিলেন, এবং আপন নিকটস্থ প্রধান ওমরাদিগকে আজা দিয়া আপন নিকটেই পুত্রকে নজর দেওযাইলেন। এবং নুর্জাহাও অনেক ধন বিতরণ করিয়া নানা প্রকার রচনাদি সামগ্রী শাহজাহাঁর নিকটে নজর পাঠাইয়া দিলেন। জাহার্সার বাদশাহ যথার্থ ন্যায় করিতেন, ভাছাতে কাহারও উপরোধ করিতেন না। এক দিবদ শাহজাহাঁ বাদশাহজাদা ঘোড়ার উপর চড়িয়া মৃগয়া করিতে গিয়াছিলেন; ওাঁহার আসিবার কালে কোন একপুলা বৃদ্ধা স্ত্রীর পুল অখের পদাঘাতে নই হইয়াছিল, ভাছাতে ঐ বৃদ্ধা দ্রী আপনি মৃত পুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া কাঁদিতে ২ বাদশাহের নিকটে আসিয়া পুত্রকে বাদশাহের সাক্ষাং ফেলিয়া দিয়া নিবেদন করিল, যে আমার পুততেক কে মারিল ইহা বিবেচনা করিয়া যথার্থ দণ্ড করে। ইহাতে বাদশাহ বিবেচনা করিয়া বুঝিলেন যে শাহজাহাঁ বাদশাহজাদার ঘোড়ার পদাঘাতে মরিয়াছে; অতএব ঐ বাদশাহ-क्कामारक आनाहेशा से वृक्षा खीरक मिरलन, ও आजा कतिरलन, छायात পুত্ৰ ইহাহইতে নফ হটয়াছে অতএব টহাকে আমি ভোমাকে দিলাম, যাহা মনে লয় ভাহা করে। ইহাতে ঐ বৃদ্ধা ভ্রী রাণীর ও আরে ২ বেগমদের নানা প্রকার লোভ প্রদশন না মানিয়া আপন কুটীরের নিকটে সরে রাস্তার উপরে বাদশাহজাদাকে আনিয়া বদাইল। শাহ-জাহাঁও এমন পিতৃতক ছিলেন, যে পিতৃ আজার রক্ষার্থ ঐ বৃদ্ধা उदी स्थमन २ कृतिल তाहाङ चीकात कृतिस्लन। उपनस्तत थे दृक्षा औ আগেন মৃত পুত্রের চারি দিগে শাহজ,হাঁর হাত ধরিয়া সাত বার ফিরাইয়া কহিল, যা, আমার এই মূত প্রের নিছোনি করিয়া ভোকে ভোর প্রাণ দিলাম।

পরে পুরাণা দিল্লীতে ব্রাক্ষণাদি হিন্দু লোকের। অনেকে বাস করিয়াছিলেন, তাঁহারা বাদশাহের চাকরি করিতেন না, আর কথনও কোন বিবাদ করিয়া বাদশাহের নিকটে ফরিয়াদ করিতে আসিতেন না, আপনারাই সামস্ক্রস্য করিতেন। দৈবাৎ ভাহাদের মধ্যে কোন এক ব্রী পুরুষের ব্যক্তিচার প্রকাশ হইল, ইহাতে ঐ ব্রীর কর্তা ঐ ব্রীকে মারিয়া ফেলিল, ও ঐ পুরুষের কর্তা ঐ পুরুষকে মারিয়া ফেলিল, ইহাতে ভথাকার ফোজদার ঐ বিষয়ের অনুসন্ধান করিয়া ভাহাদের নিকটে লোক পাঠাইল। ইহাতে ঐ বিশিষ্ট লোকেরা বাদশাহের নিকটে আসিয়া নিবেদন করিল, আমাদের পুর্বাপর এই রীতি আছে, আমাদের মধ্যে কাহারও ঘরে যদ্যপি কোন বিরোধ কিয়া মদ্দ ক্রিয়া দৈবাৎ হয়, তবে ভাহার প্রতিকার আমরা আপ-

নারাট বিবেচনাপূর্বক করি, মে কথা রাজদারে প্রকাশ করাতে আমাদিলের মর্যাদার হানি হয়, একারণ এ বিষয় আমরা রাজঘারে প্রকাশ করি নাই, কিন্তু তথাকার ফৌজনার আপনাছইতে এই বিষ-ষের অনুসম্ভান করিয়া আমাদের নিকটে লোক পাঠাইয়া দিয়াছেন। বাদশাহ তাহাদের কথাছারা বিশিষ্ট জানিয়া তাহাদের সম্মান করিয়া ভাছাদের সকল বিষয় তাহাদেরি অধীন করিয়া দিয়া ভাছাদিগকে বাজশাসনের বহির্ভত করিয়া বিদায় করিলেন। উনি যখন বিচার করিতেন, তথন অর্থি প্রতার্থির কথা আপনি দাক্ষাং শুনিতেন. কথনও কাহারও ছারা কাহারও কথা শুনিতেন না। এই রূপ বিচারেতে দেশেং বড় প্রভাপ হউল, প্রায় দেশ বিবাদবহিত হউল। यिक कथन ९ देवदां ९ काथां ९ विवान इसेंड, उत्त तम विवान आंभना হইতেই সমঞ্স হইত, বাদশাহের মাক্ষাং পর্যার প্রায় আসিত না। আর ইনি বন্য ব্যাঘুদিগকে আনাইয়া আপন সাক্ষাৎ ছাড়িয়া দিতেন। তাহাতে যদি কেহ কহিত, আপনি এ কি করেন? এ ব্যাঘ্-জাতি হিৎস্থভাব, না জানি কথন কি করে। ইহাতে আজা করিতেন, আমি কি কেবল মনুষ্যদের রাজা, ইহাদের কি রাজা নহি? বাস্তব মে বন্য ব্যাঘেরাও বাদশাহের নিকটে নতমন্তক হইয়া থাকিত। আরু ইহাঁর তক্তের উভয় পার্শে দোহনা ও ঘোহনা নামে দট শুक्त थाकिए। यमि कानर मुमलमान करिए, এ क्रभ मर्म्मानी मीरनत ধর্ম নয়, আপনি এ কি করেন? তবে বাদশাহ আজা করিতেন, দে বাস্তব বটে, আমি তাহা জানি; কিন্তু মাতৃক্লের ধর্ম প্রতি-পালনার্থে এই দুই শুকরকে কেবল আপনি নিকটে রাখি, ও পিড়-কল ধর্মারক্ষার্থে ভক্ষণ করি না। ইহাঁর অধিকারের সময় অস্ধি वामनाही मि॰हामत्नत् मसूर्थ अभवारमत् विमिवत् वात्व र उशास्त्र দাঁড়াইয়া থাকিবার প্থা হটল। নুরুদীন মহমাদ জাহাদীরশাহ বাদ-শাহের এই : রূপ অনেক প্রকার কথা প্রদিদ্ধ আছে। উনি রোগগুস্ত হুইয়া মুরেন, ইহাঁর বাদশাহী স্কাস্কা ২২ বাঈশ বংসর।

VII. - Of Shah Jehán (A. D. 1628-1658.)

তাছার পর ওঁছোর পুত্র শাহাবুদীন মহমান শাহজাহাঁ বাদশাহ হউলেন। ইহার বাল্যাবস্থাতে থোরম নাম ছিল; অকবরাবানের কিলাতে ইনি স্বাকুম করিলেন এবং ইনি পিতৃবর্তমানেই আপন বাহুবলে অনেকং দেশ সুশাসিত করিয়াছিলেন, তংপ্রাগুক্ত সে সময়েও প্রভাপাধিত ছিলেন, বাদশাহ হইলে পর তভোধিক দোর্দও প্রভাপশালী ইউলেন। ইহার মহমাদী মতের কিত্তাৎপর্যা ছিল। ইনি বাদশাহ হইয়াই আপন সম্ভান ताजित्तरक हिन्दु स्वकोश तर्भात मधूल विनाम कतिरलन। अक প্রধান পণ্ডিতকে আনাইয়া মন্ত্রী করিলেন, তাহার নাম শাদুলা খা। দে কোনহ ওমরার সন্তান ছিল না, কিন্তু পাণ্ডিত্যেতে ও নানা প্রণেতে মনুষ্যত্তাপন্ন হইতে যে২ উপযুক্ত হয়, দে সকলেতে সম্পূর্ণ ছিলা; এবং অনা সকল মন্ত্রিদের মধ্যে ও ওমরাদের মধ্যে এ প্রধান ছিল, এবং রা-জকীয় যাবৎ ব্যাপার সকলি ইহার প্রামশের অধীন ছিল। এমন্ত্রী হটলে পর অতি জীণ ও মলিন পূর্বাবস্থার আপনার পরিধেয় বত্ত অতি ষতনপূর্বক এক দিলুকের মধ্যে রাখিত। যখন বাদশাহের সমূথে যাইত, তথন ঐ বন্ত্র অবলোকন করিয়া যাইত। ইহাতে আর ২ ৪ম-दाता ও মন্ত্রি। বাদশাতের নিকটে নিবেদন করিল, শাদ্লা খাঁ যথন সাক্ষাৎ আইদেন, তখন এক সিলুকের মধ্যে কি আছে, তাহাই দেখিয়া আইসেন; ইহাতে বুঝি দাক্ষাৎহইতে তাহার প্রতি উত্তরোত্তর যে অধিক অনুগুহ হইতেছে তাহার কারণ এই হইবে। ইহাতে বাদশাহ ঈষৎ সন্দিথ্য হটয়া তাহাদের লোকদারা ঐ সিন্দুক সাক্ষাৎ আনাইয়া দেখিলেন কএক খান জীণ বস্তু মাত্র। আজা করিলেন, শাদুলা খাঁ, এ कि? শাদুল্ল। খাঁ। নিবেদন করিল ? ইহা আমার পূর্ববাবস্থার মারক। বাদশাহ আজা করিলেন, ফল কি? শাদুলা আঁ নিবেদন করিল, রাজপ্রসাদজন্য মততার অকুশররপ; কেননা পুরুষ বিষয়মদে মত হটলে অপ্রকৃতিত্ব হয়, অপ্রকৃতিত হটলে কর্ত্তব্যাকর্ত্ব্য গুহ থাকে না কর্ত্তবাকর্ত্তর পূহ না থাকিলে দর্মনাশ হয়। অভএব উত্তম পুরুষের এই কর্ত্র্য, ঈশবেছাপ্রযুক্ত ভালই হউক কিমা মন্দই হউক, তাহাতে মত ও বিষয় না হইয়া দক্ষদা আপনার স্বরূপ মরণ ভ্যাগ করিবে না। ইহাতে বাদশাহ শাদুলা থাঁর প্রতি অতার সন্তুট হট্যা ঈখরের ধনাবাদ করিয়া আজা করিলেন, তোমার যে উত্তমভানিয়া আমি ভোমাকে মন্ত্রিপদাভিষিক করিয়াছি, আজি সে উত্তমতা বর্ৎ ভতোধিক উত্তমতা ইহাদের হইতে বিলক্ষণ মতে লোকতঃ প্রকাশ পাইল।

আর শাহজাহাঁ দিলার প্রান্তে কএক কোটি টাকা খরচ করিয়া অতিবড় এক শহর ও কিলা আবাদ করিয়া তাহার নাম শাহজাহাঁনাবাদ রাখিলেন। পরে কএক কোটি টাকা খরচ করিয়া এক রক্তন ময় সিংহাসন প্রকৃত করিয়া তাহার নাম তক্তভাউসী রাখিয়া ঐ কিলাতে ঐ সিংহাসনে বসিলেন। পরে ঐ কিলাতে দেওয়ান খাসের ঘারের জালা ও বহিঃপ্রকোষ্ঠের কাঠরা ও ছাত মড়াইতে কএক কোটি টাকার রূপা ও সোনা লাগাইয়াছিলেন, এবং আর ২ প্রধান ২ প্রানাদের নির্মাণেতে সঙ্গমর্মর ও সঙ্গমুসা ও সঙ্গবাদল ও সঙ্গ এসম ও বকীক ফীরোজা প্রভৃতি নানাজাতীয় ও নানাবর্ণ প্রস্কর ও সোনা ও

কুপা ও নানাপুকার রক্তন যথোপমূক্ত স্থানে বিনিবেশিত করিয়াছি-লেন। এবং আপন খুশির ছলেতে কেবল গরীব গোরবারদের প্রাতি-পালনার্থে প্রায় আপনার খুশির মজলিসে কোনহ খুশিতে ১০০০০০ দশ লক, কাহাতে ২০০০০০ কুড়িলক, ও কাহাতের ২৫০০০০০ পঁচিশ লক টাকা থর্চ করিতেন ও এই বাদশাহ অতি বড় দাতা ছিলেন। শাহজাহাঁ-নাবাদে আপনি, আর প্রতি সুবাতে বাদশাহের প্রতিনিধিরূপে সুবেদা-রেরা স্বর্ণ রূপ্যাদি তৈজদের ও বুীহি যবাদি সামগুীর মাদে২ দুই ভোলা দান করিতেন। ইনি ধর্মনিষ্ঠ বড় ছিলেন, পিতার সাক্ষাৎ সূরাপান ভাগি করিয়া তিন লক্ষ টাকার রজনাদি নির্মিত পানপাত্র সকল দরিদু-দিগকে বিতরণ করিয়া দিরাছিলেন; তদবধি আপন জীবদশা পর্যান্ত কখনও সুরাপান করেন নাই। আর ইনি যথাকালে রাজকীয় ব্যাপার করিয়া ঈপরপর হইয়া থাকিতেন, প্রাতঃকালে প্রাতঃকৃত্য সকল সমা-পন করিয়া তদবী জপিতে২ কিরণ নামে এক অলক্ষার মুখের পার্শে ধারণ করিয়া দশনী করোকা নামে এক গবাক্ষরারে আদিয়া নিত্য বসিতেন। সেখানে বাহিরে কানা খোঁড়া নুলা ও অতুরাদি দরিদেুরা একত্র হইয়া থাকিত, তাহাদিগকে দেই সময় স্বৰ্ত্বপাদি দানেতে পরিভোষ করিতেন। দুই প্রহরের পর শাহজাহানাবাদে যেখানে যে বুভূক্ষিত লোক থাকিত, তাহাদের নিকটে খাদ খানা পাটাইয়া পশ্চাৎ আপনি থানা থাটতেন। এই মত দুই প্রহুর রাত্রিতেও করিতেন। ইহার অধিকারের সময়ে প্রজারা ও ওমরারা সকলে বড় সুখী ছিল। আর ইহার ভাজমহল বেগমের গর্তুজাত চারি পুত্র ও তিন কন্যা ছিলেন ; পরে এপ তাজমহল বেগম কিছুদিনের পর মরিলেন; তাহাতে শাহজাহাঁ বাদশাহ অত্যন্ত দুঃখী হইয়া প্রায় অনেক রাজভোগ ত্যাগ করিলেন, ৪ ঐ বেগমের যত ধন ছিল, সে সকল ধন তাহার সন্থানদিগকে ভাগ করিয়া দিলেন, ও ঐ বেগমের এক মকবরা কিছু অধিক কোটি টা-কাতে তৈয়ার করিয়া দিলেন ঐ মকবরার রোজা তাজমলুক নাম রা-খিলেন। তথাকার কোরান খানি ও খিচুড়ি বাঁটা প্রভৃতি খরচের কা-রণ প্রতাহ ২০০০ দুই হাজার টাকা নির্বন্ধ করিয়া দিলেন। এই শাহ-জাহাঁ বাদশাহের অন্য দেশে এমন নাম হটল, যে ট্রান ও তুরা-নের বাদশাহেরা ইহাঁহইতে দশক্ষ হউয়া প্রায় দূতদারা প্রতি বৎসর উপঢ়ৌকন সামগ্রী পাঠাইলেন। এবং বলথ প্রভৃতি কএক দেশের বাদশাহেরা ইহাঁর নিকটে আসিয়া ইহাঁর শরণাপন্ন হটয়া ব্রহ দেশে নিংশক হইয়া বাদশাহী করিতে লাগিলেন। পরে বাদশাহ আপন চারি পুত্তের মধ্যে আওরক্তজেবকে দক্ষিণ দেশের অধিকার দিলেন: শাহ্রজাকে পূর্ক দেশের অধিকার দিলেন; মহমদ মুরাদকে ওছরাট প্রভৃতি দেশের অধিকার দিলেন; আর আপন জেটে পুত্র দারা দিকোকে অভাস্থ দ্বেছ করিছেন, অভএব উহাকে যুবরাজ করিয়া আপন নিকটে রাখিলেন। কিছু দিনের পরে বাদশাহ মূছারোগপুত্ত হউ-লেন; ইহাতে অনাং দেশে গিয়াছিলেন যে পুত্রেরা, তাঁহারা সকলে এ বার্ত্তা স্থানিয়া পর্দপরে বিরোধ করিরা শাহত্তা আদাম দেশ পর্যান্ত পলায়ন করিলেন; মহত্থান দারা দিকো ইরান পর্যান্ত পলায়ন করিয়া যাইতেছিলেন, পথিমধ্যে মরিলেন; মহত্থান মূরাদও মারা গেলেন; আওরলজেব রাজধানীতে আদিয়া পিভাকে কএদ করিয়া আপনি ওকে বিদিলেন। শহাকুদীন মহত্থান শাহতাই। ঐ কএনে মরিলেন। ইহার বাদশাহী দক্ষিদ্ধা ৩১। ৩০০ এক এশি বংশর তিন মাদ কুড়ি দিন।

VIII.—Of Aurangzeh. (A. D. 1658—1707.)

তাহার পর মহীউদীন মহমদ আওরঙ্গজেব আলমগীর বাদশাহ হন। ইহার পিতৃ বর্ষানে এক জল্দ, পিতার মৃত্যুর পর আর এক জল্দ, এই জল্প ১০৬৮ এক হাজার আটেষ্ট্রিজরি সনে হয়। ইনি মহমাদী মতে অতিবত তৎপর হউলেন। আর প্রধান২ অনেক দেবস্থান নট क्रितिलान, विम्नुतनत् मटड मुग्रीयाँ उ शर्शम शृक्षानि तनतक्रा नकन वामगारी किलात मध्या अकरत अरिथ नियमित जिल, भ मकल किया বারণ করিলেন, ও অকবর অবধি যে > আইন জারী ছিল, তাহার মধ্যে অনেক আইনের অন্যথা করিয়া মকপোলর্চিত অনেক আইন জারী क्रिंदिलन । मिक्किंग प्राप्त प्राप्त नामिक क्रिल ना, प्राप्त क्रिल प्राप्त শাসনের নিমিতে লোক পাঠাইলেন, ও আপন মধ্যম পুত্র আজমশা-হতে কাশ্মীর প্রভৃতি দেশের অধিকার দিলেন। পরে ইরান ও তুরান ও বলথ ও বোখারা ও মিদর ও কাশগর ও বদরা, এই দকল रमान्य वामणावाम् उक्तीलाता रम मकन रमान्य उत्थर मामश्री उ মঙ্গলসন্থাদ পত্র নমেত বাদশাহের দাহ্মাৎ আইল। তাহাদিগকে যথো-পযুক্ত সম্মান করিয়া প্রত্যেকের প্রত্যুত্র পত্র ও উত্তম ২ সামগুরী দিয়া विनाम कतिलान। हेतात्नत वामगार्ट्स किन् उपमुत उपिहर रहमा-ছিল, তৎপ্রযুক্ত দে ইহাঁহইতে সাহায্য চাহিয়াছিল; অতএব ভাহার সাহায্যার্থে অনেক দৈন্য পাঠাইয়া কিছু দিনের পর আপনিও তা-হার সাহায্যার্থে যাইতেছিলেন; পথিমধ্যে শুনিলেন যে ইরানের বাদশাহের দহিত যে উপদূব করিয়াছিল সে রোগে মরিয়াছে, ইহা শুনিয়া পথছইতে ফিরিয়া আইলেন। পরে দক্ষিণ দেশের বিজ্ঞা-নগরের ছাকীম আদলশাছ কিছুং পেশকোশ বরাবর ইহাদিগকে मिठ, रम हेहारक छाहा निलाना, अञ्चव अरनक रेमना महिष्ठां हा अर-

দি৲হ রায়কে তাহার দমনার্থে পাঠাইলেন। তিনি তথা গিয়া তাহাকে যুদ্ধে পরাস্ত করিয়। তাহার দেশ সকল আয়ত্ত করিয়া গড়সেতার প্রভৃতি অনেক গড় অধিকার করিয়া আইলেন। পরে ওলকনার হা-কীন অবুলহসন্ শাঁ তানাশাহ বাদশাহের জোঠ পুল মহমাদ মাজজম হাছাদুর শাহের সহিত আপন কন্যার বিবাহ দিয়া মনেশে উপযুক্ত মত রাথিয়াছিল, পরে ঐ তানাশাহ আলমণীর বাদশাহহটতে কিছ্ বিমনা হইল; তৎপরে আলমগীর আপন পুত্র ও পুত্রবধূকে কোন ছলে আপন নিকটে আনাইয়া ওাঁহাদিগকে কএদ করিয়া আপনি সদৈনো প্রলকণাতে নিয়া ভানাশাহকে যুক্তে পরাস্ত করিয়া প্রলকণা রড় সমেত তাহার দেশ সকল অধিকার করিয়া স্থানে আইলেন। এই ২ মতে দক্ষিণ দেশীয় বাদশাহদের দেশ ও গড়সকল অধিকার করিয়া ও যথেষ্ট নানা প্রকার রতনাদিধন পাইয়া দর্মসৃদ্ধ ২২ বাইশ সুবা কুপ্ত করিলেম। অকবরের সময়ে ১১ এগার সুবা কুপ্ত ছিল। সেই বাইশ সুবার বিবরণ এই। দক্ষিণে ১ নয় সুবা, ও উত্তে এক সুবা, ও পুরের ও তিন মুবা, ও পশ্চিমে ৮ আট মুবা, ও শাহজাহাঁনাবাদ ১ এক স্বা। ইহাতে আলমগীর বাদশাহের অঠিবড় প্রহাপ ও बेच्चा इडेल; প্রায় রাজা বিক্রমাদিতোর পর এমন এখন্য ও প্রতাপ কোনহ দিল্লীর রাজার হয় নাই। নিতা জিলোপানাতে সমজ্জ হইয়। পঞ্চাশ হাজার সওয়ার প্রাত্তকালাবনি সন্ত্যাকাল প্রয়ন্ত হাজার থা-কিত; সন্ত্যাবধি প্রাত্তকাল প্যার অন্য পঞ্চাশ হাজার সওয়ার এই কপে নিত্য হাজীর থাকিত। ইহার বালককালে মহীউদ্দান মহমদ নাম ছিল। পরে এক দিবদ শাহজাহাঁ বাদশাহ তেমহলার উপরে বদিয়া হস্তিযুদ্ধ দেখিতেভিলেন, এ দালানের রিভার মহলে বদিয়া বাদশাহজ্ঞাদারা কৌতুক দেখিতেছিলেন; এই কালে হাতিরা অতিমত ইইয়া বড় ফুদ্ধ করিতে লাগিল। ইহাতে শাহজাই। বাদশাহ আপন ৬ে। ত পূজ মহমদ দারা সিকোকে নিকটে ডাকিয়া লইলেন। মহী-উদীন মহম্মদ বারাভাতে দাঁড়াইয়া কৌতুক দেখিতেছিলেন, ইতাবসরে अक मतः इस्ती हामला कतिया मही छेकीन महस्मनत्क अर् छ छिया लहेल। তংক্ষণে মহাউদীন মহমাদ কিছু উপায় না পাইয়। কমরে যে খঞার ছিল, ভাহা লইয়া ঐ হাতির কণ্ঠদেশ বিদারণ করিয়া আপন প্রাণ রক্ষা করিলেন, তংপ্রযুক্ত বাদশাহ অতাও তুট হটয়া আও্রঙ্গলের <েখতার দিলেন। পরে বাদশাহ হইলে আলমগীর নাম হটল। আর यथन এই আন্তর্কজের দক্ষিণ দেশে গিয়াছিলেন, তথন দৈন্যথরচের কারণ এক ওজারাতি মহাজনহটতে অনেক টাকা কজ লট্যাভিলেন; নে কজের তমস্ক লিখা গেল; সেট তমসুকে খাতক বাদশাহ হই-লেন। পুর্বের মহাজ্পনের নামের নীচে খাডকের নাম লিখা ঘাইত, এই

हीं जिल ; वामणारहत नाम नीरहरत लिशा उपयुक्त नग्न, व्याज्य व तम-ক্লকে পাতকের নাম মহাজনের নামের উপরে লিখা গেল; তদংধি ফার্সি তমস্কুক লিথার এই শৈলী হ**টল। আর তথন এম**নি মহাজন मकल ছिल, य এই মহাজন जे छाकात मध्या क्वित अहे वानगादित রুজ্নী এক রকম কোটি টাকা দেয়। পরে জ্যেষ্ঠ পুত্র বাহাদ্রশ:-হের প্রতি তৃষ্ট হইয়া ওাঁহার লোষ ক্ষমা করিয়া ১৪ চৌদ বংসরের পর তাঁহাতে কএদহইতে খালাস করিয়া কাবুল দেশের অধিকার দিলেন, ও মধ্যম পুত্র আজমশাহকে দক্ষিণ দেশের অধিকার দিলেন। পরে জোষ্ঠ পুত্রের পুত্র মহমাদ মহাউদীন ও আজীমৃদীন নামে দুই পৌত্রকে পাটনা ও কোর্রা এই দুই দেশের অধিকার দিলেন। পরে কামবধৰ নামে পুত্রকে বাঙ্গালা ও কিছুদক্ষিণ দেশ স্থিত উড়িদারে অনিকার দিলেন, ও আজমশাতের পুত্র বেদারবল্লকে মা-ল্য়া ও থান্দেশের অধিকার দিলেন। এই ২ রূপে পুত্র ও পৌতের। य्यर म्हार्मत अधिकात लाङ्गलन, मार प्रतामत विलक्षण मामन कतिया বাদশাহের আজাবহমতে পরম সুখে থাকিলেন; এবং আসদ আ উজ্জীর ও জাফর আঁ আমীর লওমরা ও রাজা রগুনাথ ন'মে প্রধান মন্ত্রী প্রভৃতি হলুরি ওমরারা অন্যাহ দেশীর বাদশাহদের চইতে অধিক স্থে ছিলেন, এবং দুবেজাতেও বে ২ ওমরারা জিল তাহারতি বড় সুৰে ছিল। আরু বাদশাহ প্রায় যোগাভ্যাদে থাকিতেন ও তপধিব ন্যায় আচরণ করিতেন ও আপন পৈতৃক কএক বিঘা ভূমির করেতে যাহা পাইতেন, তাহাতেই গুামাজ্ঞানন হইত, রাজভোগ কিছুই করিতেন না ও মদ্য মাৎসাদি কিছুই আংইডেন না, ও সকল জিনিদের মহসূল वांद्रश कतिया मिटलन, ७ कम्राल भारत कांद्राटन, ७ मट्पाटक टीमाटन, ४ দেড় টাকার অধিক মুলোর বন্ত পরিখেন না ও মহম্মদের বাবস্থার বিরু एक कि क कतिराज्य सा। इसि 8° छिला दश्मत तरारम नामणाह रहेरा এই ২ রূপ ব্যবহার করিছে লাগিলেন, কিও পিঙুবভ্রমানে আনেক রাজভোগ করিয়াজিলেন। আরু যথন ৩কে বসিতেন তথনি কেবল রাজ্যোপযুক্ত বন্ধ ভাষণ ধারণ করিতেন। পরে দক্ষিণ দেশে মার্হাট্টার বড়ই উপদূব করিতে লাগিল, ইছাতে বাদশাহ অনেক দৈন্য দহিং **দক্ষিণ দেশে পিয়া ভিঁও**রা নদীর তীরে ছা**উ**নি করিজেন, ও আ ভ রলাবাদ নামে এক শহর আবাদ করিলেন, বাদশাহ প্রায় তথাতে^৬ থাকিতেন। এক দিবস মার্হাউ।রা এমন যুদ্ধ করিল, যে ভাহাং । বাদশাহেরও রক্ষা পাওয়া ভার হটল, ভাচাতে ভোপধানার টং রাজের। বু)হরচনা করিয়া বাদশাহের প্রাণ রক্ষা করিলেন। ভাহাতে বাদশাহ সভকী হইয়া প্রধান২ ইৎরাজদিগকে উত্ম২ পদ দিং চাহিলেন, ওাঁহারা দে সকল কিছুই না লইয়া কেবল এই কলিকাটারে

কিছু ভূমি লইলেন। এই ইংরাজ বাহাদুরের এ হিন্দুহানে ভূমিদহছের প্রথমান্ত্র হাইল। তাহার পর বাদশাহ এক দিবদ দৈনার মউলু দাদ লইলেন; তাহাতে অন্যং দৈনোর কথা কি নিখিব? কেবল হাতী ৫১০০০ ছাপোল হাজার হাইল। ইহাতে বাদশাহের মনে বড় যে অহকার হাইল, দেই অহকার চূর্ণ করিছে ঈখরেজ্পপ্রযুক্ত ভিওরা নদীর এমন এক দহ পড়িল, যে তাহাতে প্রায় দকল দৈনা নদ্ট হাইল। ইনি প্রধান ২ অনেক দেবস্থানের ব্যাঘাহ করিয়াছিলেন, কিন্তু জ্বালামুখী ও লভ্মণবালাতে বিলক্ষণ প্রতিফল পাইয়া তাহাদিগকে মানিয়া দেবার্থে অনেক টাকার ভূমি নিযুক্ত করিয়া দিয়াছিলেন। পরে এ আওরঙ্গাবাদে ১২ বারো বংসর থাকিয়া এক সুাক্ষণের শাপে বিকৃত্ত শক্ষরিতে ২ মরিলেন। ইহার বাদশাহী ৪৯ উনপঞাশ বংসর।

FROM THE LIFE OF RAJA KRISHNA CHANDRA RAY.

মহারাজ কৃষ্ণচন্দু রায়ের চরিত্র।

I .-- His Birth.

রামজীবন রায় মহারাজ রাজ্য প্রাপ্ত হইয়া রাজা রামকৃষ্ট কৃষ্ণ-নগর নামে যে এক নগর করিয়াছিলেন, দেই স্থানে রাজধানী করিলেন। রামজীবন রায় মহাবাজ অভাব প্রতাপাদ্বিত হট্যা বাজা অভিশয় **শাদিত করিয়া কাল কেপেণ করেন। দময়ক্রমে মহারাজের দৃট পুত** হইল; জ্যেষ্ঠ র্ঘ্রাম, কনিষ্ঠ রামগোপাল। কিছ কালানভূরে রুঘ্রাম রায় রাজা হইলেন। রঘুরাম রায় মহারাজ অতিবড় দাতা পুণাবান পরম দুখে কাল যাপন করেন; রাজা রাণীর অধিক বয়ঃক্রম হইল; প্তা না হওয়াতে সর্বাদা থেদিত থাকেন। এক দিবস মনে ১ চিতা করিয়া স্থির করিলেন, ঈখরের আরাধনা তাতিরেকে উত্তম রক্তন লাভ হয় না; অতএব আমরা দুট জনে কঠোর তপ্স্যা করি, তবে ঈখুর অবেশ্য পুত্র দিবেন। রাজা রাণী ইহাই স্থির করিয়া আরোধনার নিয়ম করিলেন। অভিপ্রাতে গাভোগান করিয়া স্থানান্তর ঈখরের মহতী পুজা করিয়া দুর্ঘ্য দুঞ্চি করিয়া রাজা রাণী প্রতাহ ঈখরের তপদ্যা করেন, এই রূপে এক বংদর গত হইল। রাজা রাণীর তপদ্যাতে সকল লোকের চমংকার বোধ হইয়া বিসূর্থ প্রশংসা করিল। আ-রাধনার নিয়ম এক বংসর। তাহা পর্ণ হইলে মহতী ঘটা করিয়া যজ করিলেন। কিঞিৎ কাল পরে এক দিবস রাত্রে রাজা রুঘুরাম রাণীর সহিত অন্তঃপুরে শয়ন করিয়াছেন, রজনী শেষে রাণী অপ্র ম্বর্প দেখিয়া সটেতনা হইয়া রাজাকে গাড়োখান করাইলেন, বাজার টৈতনা হইলে পর নিবেদন করিলেন, হে মহারাজ, আমি এক আ শ্চর্য ৰপ্ন দেখিলাম। রাজা কহিলেন, কি ৰূপ্ন দেখিয়াছ ? রাণী কহিলেন, আমি নিৰুয়ে ছিলাম; এক জন অপুৰ্ব পুত্ৰ আদিয়া আমাকে কহিলেন, আমি ভোমার পুত্র হইব, আমাহইতে ভোমরা অনেক সুখী ছইবা, এবং যাবদীয় লোক ভোমাকে দ্বর্ণগর্ত্তা কহিবে, যেহেতৃ আ মাকে প্রদাব করিবা। আমি কহিলাম, আপনি কে? তাহাতে কহিলেন,

ডোমরা ঘাঁহার আরাধনা করিয়াভিলা, আমি ওাঁহার অনুগৃহীত; ভোমার প্ত ছউতে আমাকে আজা হইয়াছে। ইহাই বলিয়া অভিকুদুমূৰ্তি ধারণ করিয়া আমার মুখমধ্যে প্রবেশ করিলেন। রাজারঘুরাম রায় মধের বৃত্তার আবণ করিয়া মহানন্দার্ণবে মগু চট্যা রাণীকে কহিলেন, ভোমার অপুর্ব বালক হউবে; অদ্য ভোমার গর্ৱাধান হউল; এ কথা অন্যকে কহিবা না। কিঞ্জিৎ কাল পরে রাণীর গর্ৱ প্রচার হওনে পাত্র মিত্র আত্মীয়বর্গের সমূহ আননদ হটল; দিনে ২ নানা প্রকার উৎসাহ হুটতেছে। সময়ক্রমে রাণীর প্রসার বেদনা উপস্থিত হুটল, এই সন্ধাদ রাজা শুনিয়া জ্যোতিষ শাস্ত্রে মহামহোপাধ্যায় এমত পণিতগণকে লইয়া রাজা আরঃপুরের নিকটে বসিলেন। যাবদীয় প্রধান২ ভূতোরা দদা সাবধানে আছে; যখন যাহাকে যে আজা হইদে, তৎক্ষণেতে সে কাৰ্য্য করিবে। ইতিমধ্যে শুভক্ষণে শুভলগ্নে অপূর্ব্ব এক পূত্র হইল। পুদ্রের রূপে পূরী চল্ডের ন্যায় মালো করিল। রাজপরে জার ২ ধ্বনি হইবামাত্র অট্টালিকার উপরে বাদ্যোদাম শত্র ঘটা ঘড়ি ভূরী ভেরী ঝাঁঝরী রামশিক্সা চনকা ঢোল দাঘামা এবং বীণা মৃদক্ষ কাংশ্য কর্ডাল রামবেণী প্রভৃতি নানা যন্ত্রের বাদ্যে কোলাহল শব্দে নগর্ম্ব রমণীরা রাজপুরে আসিয়া ছলু ২ ধ্বনি করিতে প্রবৃত হইল। রাজা প্রমাহলাদে শত ২ সূর্ণ এক ২ ব্যাহ্রতক এবং উদাদীনকে ও অন্ধ আতুরকে এবং খঞ্জে প্রদান क्रिंट लागिलनः; यादनीय नगत्य लाकिनिरगत् मरबारयत् मीमा नाहै। কিঞ্ছিৎ কাল পরে পাত্রের প্রতি রাজা আজা করিলেন, নাবদীয় নগরের লোকের বাটীতে মথ্যা ও দ্ধি এবং সংশেশ ভারে ২ প্রদান করে। পাত্র ताजाजानुमारत मकरलत नाणीरण श्रमान कतिया अभाव ताजात निकण গমন করিয়া নিবেদন করিলেন, মহারাজ, অভঃপুরে ঘাইয়া পুল দশন করুন, এবং ভুতাদিগেরও বাসনা রাজপুত্র দেখে। রাজা হাস্য করিয়া কহিলেন, কর্বা হটে। রাজা অণ্ডে পুরমধ্যে গমন করিয়া পুল দশন করিলেন, পশ্চাৎ দাদীনিগের প্রতি আজা করিলেন, পাত্র প্রভৃতি যাতদীয় স্ভোরা রাজপুত্র দর্শন করিতে আদিতেন্তে, দকলকে দেখাও। দাদীর। রাজপুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া যাবদীয় প্রধান ২ ভূ থাদিগকে দে**খাইল।** পরে সকলেই অন্তঃপুরহইতে আগমন করিয়া রাজ্যভাতে বসিলেন, সমন্ত द्राक्तरंपदा दिवस्वनि कृतिए लाभिलानः भरत् रक्तार्थि च द्राप्तरंग्रहा नाना শাস্ত্র বিচার করিয়া দেখিলেন অপুর্ব বালক হইয়াছে; রাজার নিকটে নি-বেদন করিলেন, মহারাজ, এই যে রাজপুত হইয়াজেন, ইহার দীর্ঘ পর-মারু হউতে, সর্কাশান্তে মহামহোপাধ্যার এবং বুদ্ধিতে বৃহদ্পতির ন্যায় এবং ধর্মাত্মা হউবেন; সকল লোক ইহাঁর অভিশয় নশ ঘূবিবে; মহা-রাজচক্রেকরী হইয়া রহুকাল রাজ্য করিবেন; ইহাঁর ৪৭ণ কুল উজবল ^{ছইবে।} রাজা জ্যোতিষি ভট্টাচার্যাদিণের বাক্য শ্রবণ করিয়া **অ**হাস্ত

হর্ষফুক হইলেন। কিছু কালানহরে নর্কনীরা আসিয়া রজনীতে রাজার সন্ধুশে নৃত্য করিতে প্রবৃত্ত হইল, দিবারাজি সর্জান নারস্থ লোকদিগের আনন্দের দীমা নাই, এই রূপে কালক্ষেপণ করেন। রাজপুত্র দিনে > চন্দ্রের ন্যায় বৃদ্ধি পাইতেছেন; নাম রাখিলেন কৃষ্ণচন্দ্র। কালক্ষমে বিদ্যা অভ্যাস করিতে প্রবৃত্ত হইলেন; ক্ষতিধর যথন যাহা স্থনেন তংক্ষণাং অভ্যাস হয়; সকল শাস্ত্রেই পণ্ডিত হইলেন। পরে বালালা ও পারস্য শাস্ত্রেও পণ্ডিত হইলা অপ্রবিদ্যাতে প্রবৃত্ত হইলা অপ্রবিদ্যাতে প্রবৃত্ত হাগিলেন। রাজাদিগের সেমন নীতিবর্গ আছে, তাহা শিক্ষা করিতেলন, অপ্প কালের মধ্যে সকল বিষয়ে পারগ হইলেন।

II.—His Marriage.

রাজা রঘুরাম রায় দেখিলেন, পুত্র দর্ম প্রণালক্ত হউলেন; আত-এব প্রের বিবাহ দিয়া রাজা করিয়া আমি ঈশর্ভানে ঘাইয়া নিজ কর্মের সাধন করি, ইহাই মনোমধ্যে স্থির করিয়া সকল সভা-मन स्नामिश्यक जाजा कहिस्सन, रहामहा मकस्स विरवहना कहिया छै बम বংশে পর্মসৃদ্রী কন্যা দ্বির কর; আমি রাজপ্জের বিবাহ অর্যুয় দিব। সকলেই যে আজা বলিয়া স্বীকার করিল। পরে অনেকে কন্যার অত্থেষণ করিতে লাগিল; শতং স্থানে লোক প্রেরিত হউল: পরে সকলের বিবেচনায় উত্তম বংশে প্রমস্করী কন্যার সহিত সল্লক্ষ নির্ণয় করিয়া বিবাহের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। রাড় গৌড় तक्रनिटामी घातनीय वाजनन এत< পণিতনন ও প্রধান মনুষা নিমন্ত্রণ করিলেন; বিবাহের দিবস ফাল্ওণ মাসে স্থির হইল; যাবদীয় মনুষ্যের কারণ নানা স্থানে ভাগার হইল, প্রতি ভাগারে চর্ব্য চ্যা লেহ্য পেয় চারি প্রকার সামগ্রী পরিপূর্ণ, এবং যে যেমন মনুষ্য ভাছারি মত থাকনের স্থান নির্মাণ হউল। রাজ্ঞানীতে ভাবৎ দেশীয় লোক আগমন করিতে লাগিল। র:জা আয়জনদিগের প্রতি আজা করিয়া দিলেন, ভোমরা সর্বাদা ততা করিবা, বিস্তর লোকের আগমন হটতেছে, যেন কেহ অভুক না থাকে; দে যত লয় তাহাই দিবা। রাজাজানুসারে তাহার। মহে কার্যে। সদা সার্ধানে আছে। পরে রা-ল্পানের আগমন শুরণ করিয়। রাজা আপনি প্রত্যেক রাজার নিকটত হটয়া সমাদর পূর্বক উত্মালয়ে থাকনের স্থান নিরুপিত করিয়া দিলেন, এবং উপযুক্ত মনুষ্য রাজগণের নিকটে নিয়োজিঙ করিলেন, যে যেমন রাজা সেই রূপ সমাদর করেন; এবং সামগ্রীর আয়োজন

করিয়া প্রেরণ করিলেন। পরে রাজা রঘুরাম নগর ভুমণ করিয়া দেখিলেন যে অভিবিন্তর লোক আদিয়াছে, এড লোকের খান্সা-মগু कि श्रकारत ভ्रांडाता मिरड शाहिरत? चाडवत नगतक गातमीत ধাদ্য সামগ্রীর দোকান আছে, ইহাই আমি ক্রয় করিয়া সকলকে অনুমতি করি, যে যত লয় তাহা দেও। উহা মনে স্থির করিয়া পাত্র-কে আহ্বান করিয়া কহিলেন, যে রূপ লোক আসিয়াছে, ইহাতে কেহ পাদ্য সামগুরী প্রদান করিয়া যশ লইতে পারিবে না, কিন্তু মদি কেছ उंभवामी थाटक, उटव वक् अथािछिः, अडअव नगरत् मन आहाद्वत् দুবোর মহজেন লোক আছে, তাহাদিগকে কচ, যে যত চাহে ভাছাকে ভঙ দেয়, এবং যে আপনি লয় ভাচাকে বারণ না করে; লোক সকল আপন্থ ৰেচ্ছামত দুবা লউক, পরে মহাজনদিগের লিপিমত টাকা দেওয়া যাইবে। আর ভাগারের নিয়োগিত লোককে কচ, যে মত চাতে তাহার দশ ওণ করিয়া সামগ্রী দেয়; এবং কৃমি সক্ষত ভূমণ <mark>করিবা যেন কেহ দুঃগ না</mark> পাব। পাত্র যে আজা ধলিরা শ্বীকার করিলেন। অসংখ্য মনুষ্টের আগমন হট্যাজে; কোলাহলে নগরের লোক বরির হটল; নগরের শোভার সীমা নাই; রক পীত অভুনীল ইতাদি সহসু ২ পরাকা উড্ডীয়লানা নানাজাঠীর বালোটিয়ের রাজপুরে মহামতোৎস্ব অন্য রাজ্বন দর্শন করিয়া ধন্য ২ করিতেছেন। আর অনেক পণ্ডিত লোক আগমন করিয়া হাং স্থানে কাল কেপণ করিছেছেন। রাজপুরে প্রভাহ অপুর্বে সভা হয়; যাবদীয় রাজগণ ও পণিতগণ ৪ প্রধান মনুষ্য সকলেই রাজসভায় গমন করিয়া যা> খানে উপ্রিট হন। নতকি নতকী শত ২ আসিয়া নৃত্য গাঁত বাকা আবেণ করায়। এইরূপ প্রত্যত। লগুন জনমে মহতী ঘটাপুর্বকে রাজপুতের বিবাহ সম্পন্ন হটল। পরে মহা-রাজ রঘুরাম রায় অনাহত যে সকল লোক আসিয়াছিল, ভাহাদিগকে मदनानीड धन निया विनाय कतिरलन ; मकरल भूगाडि कतिया जालनर দেশে গমন করিল। পরে রাজগননিগকে উপন্ক মন্যানা করিয়া বিদায় করিলেন; পণ্ডিরদিগকে এবং প্রধান স্মন্য। দিগকে যে ध्यमन পाज विद्युष्टनाभुक्षक प्रयोगना कतिहा निनाश कविद्यान, सकलाई সুখ্যাতি করিলেন: যশে দিঙ্মওল প্রিপূর্ণ হউল। এই প্রকার মহতী ষ্টা করিয়া রাজারগুরাম কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের বিবাচ দিলেন। রাজারাণী পুত্র এবং পুত্রবধূ প্রাপ্ত হটয়া আজলানে কাল মাপন করিতে লা-গিলেন। এইরপে কিঞিংকাল মায়; পরে মহারাজ রম্বাম রায় কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে রাছ্যে নিযুক্ত করিয়া আপনি টগর ভগনে প্রবৃত্ত ইউলেন। অনুষুর কৃষ্ণচন্দ্র রায় রাজা চট্যা ধন্নশাস্মত প্রজাপালন করিঙে আরম্ভ করিলেন; রাজ্যের লোকদিগের কোন সামেতি নাই; **च्डारर्शता निष्ठ २ कार्या श्रा**क्षाता कृतिहा कालक्क्पण करता प्रधा-

রাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের সুখ্যাতির সীমা নাই। তথন রাজধানী মুরশিদাবাদে; নওয়াব সাহেবের নিকট মহারাজের অভার সভুম; সর্ক প্রকারে মহারাজচক্রবর্তির নায়ে বাবহার।

III .- His sacrifice.

এক দিবদ মহারাজ পাত্রকে জিলাদা করিলেন, পূর্বে এ বংশে যে দকল রাজগণ হউয়াছিলেন, ওাঁহারা কেছ যজ করিয়াছিলেন? তাহাতে পাত্র নিবেদন করিলেন, মহারাজ, আমরা পুরুষানুক্রমে এরাজ্যের পাত্র, কিন্তু স্বর্গায় মহারাজারা আর্থ প্রকার সুখ্যাভি করিয়াছেন, যজ কেছ করেন নাউ। মহারাজ এই রাক্য শ্রেণ করিয়াপাত্রক কহিলেন, আমি অতি স্হল্যজ করিবে, হুমি আয়োয়াজন কর। পাত্র নিবেদন করিলেন, মহারাজ প্রধান থ পিউটেদিগকে আজ্ঞান করিয়া, কি যজ করিবেন ভাহা স্থির করুন, পশ্চাং যেমন থ আজা করিবেন ভাহাই করিব। পাত্রের বাক্যে ভান্যামিদিগের আগমনার্থ রাজা মর্বাত লিপি প্রেরণ করিলেন। প্রধান থ পিউত্রা রাজপত্র প্রাপ্ত হয়া মহাহর্যে রাজধানী কৃষ্ণনগরে আগমন করিলেন।

পরে রাজা প্রাণ করিলেন, দে প্রধান ২ পণ্ডিছের। আমার আভানানুসারে আগমন করিরাছেন। পারের প্রতি রাজা আজা করিলেন, আনেক ২ পণ্ডিছের আগমন হইরাছে, অতএব তাঁছাদিগকে উত্তম
ভানে বাসা এবং উত্তম খাদ্য সামগুরী দেহ, যেন কোন মতে ব্যামোহ
না পান। পার রাজাজামতে যাবদীর পণ্ডিছিদিগকে উত্তম স্থান দিরা
খাদ্য সামগুরী যথেইকপ দিলেন। পর দিবস রাজা সভা করিরা পণ্ডিছদিগকে আভান করিলেন পণ্ডিছেরা নিকটে আদিয়া মহারাজকে
আশীর্ষাদ করিয়া সভোপবেশনপূর্কক নানা শান্তের বিচার করিছে
প্রত্ত হইলেন। বিচারানন্তর পণ্ডিছেরা মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে নিবেদন করিলেন, আমাদিগের প্রতি রাজলিপি কি কারণ গিয়াছিল?
ভাহাতে রাজা কহিলেন, আমি বাসনা করিয়াছি যজ করিব। অভএব আপনারা বিচার করিয়া আজা করুন, কি যজ করিব? আর কি
রূপ করিলে দর্মর স্থ্যাভি হইবে? এই বাক্য ধীরবর্গের। শুবণ করি
য়া মহারাজকে নিবেদন করিলেন, এ অপুর্শ্ব পরামর্শ করিয়াছেন; আদ্য
আমরা বাসায় প্রস্থান করি, কল্য আদিয়া নিবেদন করিব।

পর দিবদ পণ্ডিতেরা আগমনপূর্বক রাজাকে আশীর্বাদ করিয়া সকলে সভায় বদিলেন। পরে রাজা পণ্ডিতদিগের প্রান্ত নিরীক্ষণ করিয়া কহিলেন, আপনারা কি স্থির করিয়াছেন? পণ্ডিতেরা কহিলেন, মহারাজ অগ্নিছাত্র ও বাজপের যজ করন। রাজা উত্তর করিলেন, দুই যজ এককালীন করিব, কি পৃথক্থ করিব ? ইছা বিবেচনা করিয়া আপনারা আমাকে আজা করন, এবং কত বায়ে যজ সাল ছইবে ডাছাও আজা করন। পণ্ডিতেবা করিলেন, রাজার যজবায়ের বিবেচনা মহারাজ করিবেন, যজের যে ২ সামগ্রীর আবশাক ভালা লিপি করিয়া দিই। রাজা করিলেন, ভাল, ভাহাই দিউন। পরে পণ্ডিতেরা রাজসভাছত গাভোত্থান করিয়া পাত্রের নিকট যাইয়া যজের সামগ্রীর ফর্শ করিয়া দিলেন এবং কহিলেন, যে ২ দুব্য যজেরে লাগিবে, ভাছাই আমরা লিথিয়া দিলাম। পরে পাত্র সাম্দায়িক বরাদ্ধ করিয়া দিলেন, বিংশতি লক্ষ টাকা হইলে যজ সাল হইবে। মহারাজার নিকটে পাত্র গমন করিয়া সমন্ত নিবেনন করিলেন। রাজা হাস্য করিয়া কহিলেন, আয়োজন করহ। পরে পাত্র যজনুব্য সকল আব্যাজন করিতে প্রত্ব হইলেন।

পরে মহারাজ কৃষ্ণতন্ত্র রায় অস্ব কল কলিক রাচ গৌড় কাশী দ্রাবিড় উৎকল কাশীর প্রভৃতি নেশস্থ গাবদীয় পণ্ডিচদিগের প্রতি নিমন্ত্রণ পত্র পাঠাইলেন। যজের কাল উপদ্বিত হইলেই ভাবং দেশীয় ধীরবা দ্যাগত হইলেন। রাজা অতিশয় ঘটাপূর্ব্বক যজ সম্পূর্ণ করিলেন, এবং দকল লোককে যথেন্ট ধন দিয়া পরিভোষ জন্মাইলেন; রাজার দুখ্যা-তির দীমা নাই। যাবদীয় পণ্ডিতেরা রাজার নাম রাখিলেন অগ্নিছোত্রী বাজপেয়ী গ্রীমন্মহারাজরাজেন্ত্র কৃষ্ণতন্ত্র রায়। মহারাক্ষ এই নাম প্রাপ্ত হইয়া আনন্দার্গবে মগ্ন হইলেন। পশ্চাং যাবদেশীয় পণ্ডিচদিগকে বছবিধ ধন প্রদান পূর্বক বিদায় করিয়া মনের হর্ষে রাজ্য করেন। রাজ্য শাসিত হইলে সর্ব্বিত্ব শুণ্ডাতি পাইলেন; প্রজা সকলের যথেন্ট আছলাদ, কোন ক্রপে ব্যামোহ নাই, এই ক্রপে কালক্ষেপণ করেন।

IV.—His Residence, amusements, & c.

এক দিবস মহারালার অন্ধাকরণে হইল মৃগরার্থ গাইব। পরে ভ্রাবর্গদিগকে আজা করিলেন, আমি মৃগরা করিতে যাইব, ভোমরা সদকল হও। আজাপ্রমাণে সকলে প্রস্তুত হইল। রালা অখারোহণে গমন করিয়া নিবিড় বনে মৃগরা করেন। ইউমধ্যে এক ছানে উপনাত হইয়া দেখেন অতি রম্ম স্থান, চারি দিগে নদী, মধ্যে এক ক্ষুদু বীপ, এবং ছানে ২ অনেক পশ্ত পক্ষী আছে, নানা প্রকার শদ হইতেছে। রালা ছান নিরিক্ষণ করিয়া কহিলেন, এ অপুর্য হান, আমি এই ছানে কিছুদিন বিপ্রাম করিব। রালাভাক্তমে ভ্রাবর্গের রালার থাকিবার উপযুক্ত

স্থান করিয়া পশ্চাথ আপনাদিগের স্থান নিরূপণ করিয়া সকলেই দেট স্থানে বাস করেন। পরে রাজা আজো করিলেন, আমি এই স্থানে পুরী নির্মাণ করিব, পাতকে শীঘু আনয়ন কর। রাজাজানুমারে দৃত গিয়া পাত্রকে আনিল। পাত্রকে দেখিয়া মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায় কহি-লেন, ভূমি এট ভানে অপুর্বা এক পুরী প্রস্তুত কর, যেন কোন কপে क्ट्रां निका ना करता পांज निर्देशन कतिरलन, प्रशांताल, ताल्यानीरड গমন করুন, আমি পুরী নির্মাণ করাট; পশ্চাৎ প্রশুত হটলেই মহা-রাজ আসিয়া দেখিতেন। পাতের বাকো রাজা রাজধানীতে গমন করিলেন। পাত্র দেই স্থানে থাকিয়া পুরী নির্মাণ করিতে প্রবর্ত ইই-লেন। চারি দিগে যে নদী আছে সেই গড় হইল; দক্ষিণ দিগের নদী বন্ধন করিয়া প্রধান পথ, এবং দৈন্যের বাদোপযুক্ত স্থান कतिरलन; नष्ट कामान मुठे भारत तालिरलन, य होरा भूतमस्या শরু প্রবেশ করিতে না পারে। তংপরে অপূর্ক অট্টালিকা, তৎপরে বাদ্যাপার, তৎপরে অতি উক্ত অট্টালিকা, তমধ্যে যড়ি, তদূর্দ্ধে ঘণ্টা, ভাহার পর চারি প্রদার; মধ্যে সদাগরদিগের থাকনের স্থান এবং হাট, নানাজাতীয় দুবোর ক্রয় বিক্রয় হইবেক, তম্মধ্যে বিস্থারিত পথ, কিঞিৎ দুরে গিয়া এক অট্টালিকা, তন্মধ্যে নানা জাতীয় যন্ত্র লইয়া यश्चिता तारमामाम कतिरद। भरत ताजवाणी अथम এक हरू:मीमा, দক্ষিণ দারি এক অট্রালিকা, তাহাতে রাজকীয় ব্যাপার হইবে। তিন পার্মে অট্টালিকা, তথ্যে ভ্রেট্রা থাকিবে, পরে এক চতুঃদীমা তক্মধ্যে ঈশরের আলর। অপুর্বে রম্য স্থান, সহসুং লোকে দশন করিতে পারে। পরে অপূর্দ্ধ এই পুরী, ওমধ্যে মহারাজের বিরাজ করণের স্থান, চারি দিগে অট্টালিকা, পরে অন্তংপূর, অতি বৃহৎ বাটী, নানা স্থানে নানা প্রকার অট্টালিকা। অন্তঃপুরের কিঞিৎ দুরে এক পুঞ্পোদ্যান, চহুর্ন্দিনে প্রাচীর, মহারাণী প্রভৃতি পুঞ্পোদ্যানে গমন করিতে পারেন; প্ফেপান্যানে নানা জাতীয় পৃষ্প, তন্মধ্যস্থানে এক अर्डोलिका, डाहारड दिमशा तांनी मर्हकीनिरनत नुडा नर्मन এवर नीड वाना व्यवन करत्न। পশ্চিমদিগের যে পথ দেই পথ দিয়া किश्विर গমন করিলে এক ধর্মাশালা, দেখানে অন্ধ আছুর পঙ্গু এবৎ উদাসীন ষে কেহ উপনীত হটবে, যাহার যে স্বেচ্ছা আহারের দুব্য পাইবে, ভাণার পরিপূর্ণ করিয়া দুবা রাখিলেন।

পরে পূর্ম দিলে এক অপুর্ক পুলেশাদ্যান, তাহার মধ্যস্থানে অন্তা-লিকা এবং নানা জাতীয় বৃক্ষ ও পুরুষ। এই পুলেশাদ্যানের পর যাব-দীয় মহারাজের ভাতি এবং কুটুম্বদিগের পৃথক্ ২ অন্তালিকাময় বাটী; প্রভাক বাটীতে দেবালয়; এই রূপ অনেক প্রকার বাহুলা করিয়া বাটী প্রক্তন্ত করিলেন। পরে পাত্র বাটী নির্মাণ করাইয়া মহারাজকে সন্ধাদ দিলেন যে বাটী প্রশ্নত হইয়াছে। মহারাজ দপরিবারে নৃহন বাটীতে আগমন করিয়া দকল পুরী দেখিয়া অভ্যন্ত হইয়া পারকে রাজপ্রদাদ দিয়া জিল্লাসা করিলেন, অধ্যাপকদিগের স্থান করিয়াছ? পার নিবেদন করিলেন, মহারাজের যে পুষ্পের বাগান হইয়াছে, ভাহারি নিকটে স্থান আছে; আজা করিলে সেই স্থানে প্রশ্নত করে। রাজা করিলে, অঙি শীমু প্রশ্নত করে। রাজা জারুসারে পৃথক্য পাঠশালা প্রশ্নত করাইলেন; দেই সকল পাঠশালায় প্রধান পণ্ডিছের। বাস করিয়া অধ্যাপনা করাইতে লাগিলেন, এবং নানা দেশীয় প্রণান লোক আসিয়া প্রণ শিক্ষা করান এবং করেন; রাজা শভক্ষণে পুরমধ্যে প্রবেশ করিলেন, আক্ষাদের সীমা নাই। পুরীর নাম শিবনিবাস, নদীর নাম করণা রাখিলেন। পুরবাসী যাবদীয় মনুযোরা মহামুণে স্বর্দা হাস্য পরিহাস্যেতে কালক্ষেপণ এবং ধর্মানুষ্ঠান ও ঈশরের আরাগনা করেন। এই রূপে মহারাজ বস্তি করিতে প্রত্ হইলেন।

V.—His acquaintance with the Nawáb.

মধ্যে ২ রাজা মরশিদাবাদে গমন পর্যাত নবাব সাহেবের স্টিড দাক্ষাৎ করিয়া যথেষ্ট শিষ্টাচার করেন, এবং নানাজাতীয় ভে-টের দুব্য নবাবকে দেন। তথন নবাব আলাবৃদ্ধি গাঁ অভিবড় ধর্মাত্রা সকলের প্রতি দয়ালু প্রাশীল; সকল রাজারা রাজকর नरात्रक मित्रा मर्थर काल्यक्रिय कत्रिहरूक, वार्ष्णार्था कान्या নাই, যে দেমন মনুষ্য ভাষার প্রতি দেই রূপ নবাবের কুপা: কিন্তু নবাব সাহেবের পল্ল নাই; এক কন্যা; কন্যার প্রতি নবাব সাহেবের অভিশয় দ্বেহ। কিছু কালানন্তবে নবাব সাহেবের এক দৌহিত চটল, नाम वाशिएलन मार्छव्यनीला। नतात मार्टियत् तामना मिहित मर्यः नाहै निकटि थारक, अहे करल किन्न काल गात्र। मारजदरनीला अधिवष् দুর্ত্ত হউলেন, যাহা মনে আইদে ভাছাই করেন, কেচ বারণ করিছে পারে না। নবার সাহেরের পাত্র মহারাজ মহেন্দ্র এরং আরুং প্রবানং চাকর অনেক আছে, সকলেই ঐক্য হইয়া নবাব সাহেবকে নিবেদন করিলেন, সাজেরদৌলা অতিশয় দৌরাল্ল্যা করিতেভেন, আপনি ইছার कान डेभाग करून। डाहात भत नतात मारहत मारखतरमोलारक छाका-ইয়া কহিলেন, তুমি যাবদীয় লোকের উপর দৌরায়া কর, এ আউ মন্দ কর্মা; দাবধান, কদাচ মন্দ ক্রিয়া করিও না। এট রূপ শাসিত क्रद्रभ मारकदरमोला প্রধান পাত্রগণকে আহ্বান করিয়া দমন করিলেন,

আমি যে কাল্য করি, ভাষা যদি নবাব সাহেবের কণগোচর হয়, ভবে ভোমাদিগের উচিত দও করিব; এবং এ কথা নবাব সাহেবের নিকট ভোমরা কহিয়াছ; যদি আমার নলাবি হয়, তবে উহার প্রতিফল সুন্দর-মতে দিব। প্রধান ২ ভৃত্যেরা মহাশক্ষালিত হউয়া নীর্ব হউলেন। অনম্বর সাজেরদৌলা নানা প্রকার দৌরাক্স্য করিতে আরম্ভ করিলেন; ननी निशा त्नोका याश, तम त्नोका जुराश, मनुष्ठा मकल जुरिशा महत, টহাট দেখে; এর মানার আলায়ে খনে পরম সুন্দরী কন্যা আছে, वलकाम मह कना। हत्व करत, अ वार्तिवी खी आनिशा उनत हिरत, এট রূপ অতিশয় দৌরায়া আরম্ভ করিল। সকল লোক বিবেচনা করিতে প্রবৃত্ত ১ইল, প্রদণ্য বিবেচনা করিলেন, এ দেশে আর থাকা প্রাম্শ নহে। নগর্ভু লোক সকল মূর্শিদাবাদ ভাগে করিয়া পলায়নপর হইল ; হাহাকার শব্দ উঠিল ; সকল লোকেই ঈশবের স্থানে আরাধনা করিছে প্রবৃত্ত হটল, যে এ দেশে জবন অধিকারী ना थारक। किछ् पिन गायः; नवाव जालावृक्षित लाकावृत इकेल সাজেরদৌলা নবাব হইলেন। যাবদীয় প্রধান ২ ভৃতাবর্গেরা ভেট দিয়া कर्मभूटि निर्देशन क्रिलिन, जालिन अर्थन अ स्मार्थन करा इडेस्मन; যাহাতে রাজ্যের লোক সুখী হয়, তাহা করিবেন; ঈশর আপনাকে সর্বভোষ্ঠ করিলেন, এ দেশের লোককে সুখে রাখিলে বত্কাল রাজ্য করিতে পারিবেন। এই প্রকার পাত্র মিত্র লোকে সর্বাদা বুঝান, কিন্ত তিনি দ্ট প্রকৃতি ভাগে ও উত্তম বাকা প্রবণ করেন না। সকল লোক এবং প্রধান ২ চাকরের। বিবেচনা করিলেন, সাজেরদৌলা নবাব थांकित्ल काहात्वा कलाां। नाइ, अडअव कि हहेत्व? काथा याव? টহা ভাবিয়া শ্বির করিতে পারেন না। পরে যাবৎ দেশীয় রাজা ঐক্য হইয়া নবাবের প্রধান পাত্র মহারাজ মহেন্দ্রকে নিবেদন করিছে প্রবৃত হটলেন। রাজবর্গ এট>, বর্দ্ধানের রাজা, নবদীপের রাজা, मिना ज पूरत्त ताजा, विख्पूरत्त ताजा, शमिनी पूरत्त ताजा, वीत क्रां রাজা ইত্যাদি সকল রাজগণ প্রধান পাত্রের নিকট যাতা করিয়া সাজেরদৌলার দৌরাক্স নিবেদন করিলেন। মহারাজ মহেন্দ্র সক-লকে আখাস দিয়া হাং রাজ্যে প্রেরিতকরিলেন।

পরে যাবনীয় মন্ত্রিরা নবাব সুজেরনৌলাকে নীতিশিক্ষা করান; যত উত্তম কথা কছেন, সুজেরদৌলা ততাধিক মন্দ করে। পরে মহারাজ মহেলু এবং রাজা রামনারায়ণ, রাজা রাজবল্লভ, রাজা কৃষ্ণদান, ও মীর জাফরালি থা, এই সকল লোক ঐক্য হইয়া এক দিবস জগং সেট মহাশয়ের বাটীতে গমন করিয়া জগং সেটের সহিত বির্গে বিদ্যা প্রাথশ করিতে লাগিলেন। মহারাজ মহেলু অগ্রে কহিলেন, আমি যাহা ক্রিই তাহা আপনারা শ্রেণ করেন। আমরা এ দেশে অনেক

কালাবধি আছি, এবং নবাব সাহেবদিগের আজানুবতী ছইয়া প্রা-ধানারূপে পুরুষানুক্রমে কালকেপণ করিছেছি। এখন যিনি নতাত হটলেন, ইহার নিকট মানের লগুডা দিনং হটতে লাগিল, আর সকল লোকের উপর অভিশয় দৌর।স্মা; কত্তরপে নিষেধ করিলাম এবৎ বুঝাইলাম, ভাছা কদাত শ্বনে না, আরও দৌরাল্লা করে। অভএব টহার উপায় কি? সকলে বিবেচনা করুন। রাজা রামনারায়ণ ক্ষিলেন, **টহার উপায়ার্থে হত্তিনাপুরে জনেক গমন করি**য়া এ নবাবকে ত্রির করাইয়া অন্য এক নবাব না আনিলে এ রাজ্যের কল্যাণ নাই। রাজা রাজবল্ল কহিলেন, এ প্রামশ কিছ ন্য, হদ্ধিনাপুরের বাদশাহ জবন; তিনি আর এক জন নবাব দিবেন, সেও জবন; অতএব জবন অধি-ठाती थाकिएल हिन्तूत हिन्तूछ थाकिएन ना। এই क्रभ करबाभकवन, ख्त कि कृष्टे हरा ना। त्यास এडे भवामणं रहेल, शाहाटड अनन पृत हम, ভाहात (ठम्छे। कत्। डेहाटड अधर मिछे कहिस्सन, এक कार्य) कते, নবরীপের রাজা কৃষ্ণজন্ত রায় অতিবড় বৃদ্ধিমান, ঠাঁহ'কে আনিতে দ্ত পাঠাও; তিনি আইলেই যে প্রামশ হয় হাহাই করিস। সকলে সত্য কহিয়া দৃত প্রেরণ করিয়া নিজ > স্থানে প্রশ্বান করিলেন।

মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায় শিবনিবাদের বাটীতে মহাহয়ে বিআ্ঞা করিতেছেন; সক্ষদা আনন্দিত, পুরবাসিরা সক্ষণ উত্তম কর্মে নিযুক্ত: নানা দেশীয় গুণবান ব্যক্তি আদিয়া রাজ্যভায় ব্যিয়া গুণের প্রা-কা দিতেভেন; পণিতেরা ছাত্র সম্ভিতাহিত রাজার নিক্টগু হউ্গা শাস্ত্রের বিচার করিভেছেন; এই প্রকার প্রভাহ হইভেছে; বিভীয় রাজা বিজ্ঞাদিত্যের ন্যায় সভা, সকলেই মহারাজকে প্রশংসা করে, দিনে> রাজ্যের রৃদ্ধি এবং প্রজার বাজ্লা হউঙেছে। রাজার পাঁচ পুষ, কোন অংশে অুটি নাই, যাবদীয় লোক সুখে কালফেপণ করিছেছে, কিন্তু নবাৰ সাজেরদৌলা অতাথ দুবৃত হইয়াছে, মহারাজ চিথাথিত आदश्चन, दम्माधिकातो मुत्य, कथन कि कदत? मद्या > পण्डिमिद्यत প্রতি আজা করেন, দেখা, দেশাদিকারী অতি দুর্বর, আপনারা মকলে ঈশবের নিকট প্রার্থনা করুন, নে দুট্ট অধিকার্রা এ দেশে না থাকে; কিন্দু অভি লোপনে আরাধনা করিবা, কদাত প্রতার নাহর। এইরূপে নিজ রাজ্যে বাস করিভেছেন। ইতিমধ্যে মুর্শিদাবাদ০ইতে পত্র লইয়া দূত রাজপুরে উপস্থিত হউল। নার্না কহিল, ভূমি কে? কোথাচইতে আ-উলা ৈদূভ আহ্মপরিচয় দিয়া কঠিল, চুমি মহারাজকে সমান দেও, পরে থেমন আমাজা করিবেন দেই মত কান্য করিও। দুতের বাক্যঞ্মে দারী মহারাজকে নিবেদন করিল, মহারাজ, মুবশিদাবাদ্হইছে পঞ্লাইয়া এক দূ**ত আদি**য়াছে। রাজা ভারির বাকা শ্রবণ করিয়া আজা করিলেন, দূতকে তোমার নিকটে রাখ, পত আনহ। বারী ভাতি শীঘু গমন

THE WALL WASHING INSTITUTE OF THE PARTY OF T

করিয়া দূতকে আত্মহানে বসাইয়া পত্র আনিয়া মহারাজকে দিল।
রাজা দতা ত্যাগ করিয়া গোপনে বদিয়া পত্র পাঠ করিয়া যাবদীয়
দন্ধাদ আত হইলেন। বিন্তারিত দন্ধাদ আত হইলে হর্ষ বিষাদ দুই
হইল। হর্ষ হইল, যাবদীয় পাত্র মিত্র ৪ প্রধান ২ মন্ত্রিরা একত হইরাছেন, অতএব বুঝি অধিকারের তাল হইবে। বিষাদ হইল, নবাব
অতি দুরন্ধ, যদি এ সকল কথা প্রকাশ হয়, তবে জ্ঞাতি প্রাণ যাইবে।
এই রপে মনোমধ্যে বিদেচনা করিতে লাগিলেন, প্রচার কিছু করিলেন না, কোন ভূত্যকে আজা করিয়া দিলেন, যে দূত আদিরাছে,
ভাহাকে হাজার টাকা দেও, আর খাদ্য দুব্য যথেক করিয়া দেও।

VI.—His joining a conspiracy.*

পরে রন্তর্মীতে রাজা আত্মীয়বর্নের সহিত বসিয়া পাত্রকে আহ্বান করি-য়া আও নিজ্জন স্থানে বসিয়া সকলকে পতার্থ জাত করাইয়া কহি-লেন, তোমরা বিবেচনা কর, উহার কি কর্ত্তা? নবাবের প্রধান পাত্র লিখিয়াছেন শীঘু মুরশিদাবাদে যাইতে, এবং নবাবের দৌরাত্মাক্রমে সকল প্রধানং মন্ত্রির ঐক্য হট্যা আমাকে আজালিপি নিখিয়াছেন। আমি সে ভানে ঘাঁইলে যে হয় বিবেচনা করিবেন। সকলেই নিংশন, কাহারো মুখে বাক্য নাই। ক্ষণেক পরে পাত্র নিবেদন করি-লেন, মহারাজ, দেশাধিকারির বিষয়ে অতি সাবধান পূর্বকে বিবেচনা করিতে হইবে। রাজা কহিলেন, কি বিবেচনা করা যায়? পাত্র নিবে-দন করিলেন, অংগু মহারাজ গমন না করিয়া আমাকে গমন করিতে দিউন; দেখানকার সমস্ত প্রকরণ জাত হট্যা ভূতা যেমন নিবেদন লিখিবে সেই রূপ কার্য্য করিবেন, হঠাৎ মহারাজের যাওয়া প্রাম্প হয় না। এই কথা পাত্র কহিলে পর আরু মন্ত্রির কহিল, মহা-বাল, এই কর্ত্রা। এই প্রামর্শ স্থির করিয়া কিঞ্ছিৎকালের প্র পা-ত্রকে প্রেরণ করিলেন, তখন মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের পাত কালী প্রদাদ দিৎহ। মূরশিদাবাদে উপস্থিত হইয়া পাত স্বীয় রাজার এক বাটীতে থাকিয়া মহারাজ মহেল্রের সহিত সাক্ষাং করিয়া নিবেদন করিলেন, আমাদিগের মহারাজকে নিকট আসিতে আজাপত গিযা-ছিল:পত্র পাইয়া মহারাজ অত্যন্ত হক্ট হইয়া আগমনের দিন স্থির ক্রিয়াছিলেন। ইতিমধ্যে শারীরিক পীড়া হইয়া অত্যন্ত ক্লিট

[•] Much of this narrative is a mere fiction, probably invented in order to gain the favour of the English.

হটলেন, এ নিমিত্ত আমাকে নিকটে পাঠাইয়াছেন, এবং ভেটের কিঞিৎ দ্বাও পাঠাইয়াছেন, দুটি করিতে আজা হউক। মহাবাজ मह्ह मा करिया कहिलान, अभि आमा तसनीत आमिता; विरमध কাৰ্য্য আছে। কালীপ্ৰদাদ দিংহ নমস্কাৰ কৰিয়া বিদায় হইয়া স্তম্বানে গেলেন। পরে বৃজনীযোগে মহাবাজের বাজবাটীতে আ:-সিয়া মহারাজ মহেন্দ্রকে স্বাদ দেওয়াইলেন। মহারাজ মহেন্দ্র ভারণ করিলেন কালীপ্রসাদ সি৲হ আসিয়াছেন; আর্থ যত মন্যা নিকটে ছিল তাহাদিগকে কটিলেন, আদ্য তোমবা মুদ্ধানে প্রস্থান কর, আ-মার কিঞিৎ বিশেষ কর্ম আছে। আরু যাত লোক সভায় ছিল, সকলে বিদায় হইয়া গেল। পরে কালীপ্রসাদ দিৎহকে আনিতে অনু-মতি দিলেন। কালীপ্রসাদ সিৎহ আসিয়া নমস্কার করিয়া নিকটে তদিয়া নিবেদন করিলেন, কি জন্যে আমার মহারাজকে আদিতে আজাপত গিয়াছিল লৈচাতে মহাবাজ মহেন্দ্র কহিলেন, আমাদিগের দেশাধিকারির প্রকরণ সমস্তই শুনিতেছ; এ নবাব থাকিলে কাহারো ল্লাতি প্রাণ থাকিবে না। তোমার রাজা অতি বিজ এবং নানা শাস্ত্রে পণ্ডিত ও অতিবড় বৃদ্ধিমান, অতএব তাঁহার সহিত প্রামর্শ কবিয়া ইহার কোন উপায় চেফী পাওয়া যায়। এই বাক্য অংবণ করিয়া কালীপ্রসাদ সিৎহ করপুটে নিবেদন করিলেন, মহারাজ ঘেহ আজা করিলেন, সকলি প্রমাণ; কিন্তু রাজ্যকর্ত্তা অতি দর্গত, সাবধানে এ সকল প্রাম্শ করিবেন, আমার মহারাজাও সর্বান এই চিথাতেই চিন্তিত আছেন: আতএব নিবেদন কবি, যদি মহারাজদিগের সকলের ঐক্য বাক্য হইয়াছে, তবে অবশ্য ইহার উপায় হইবে, কিন্তু জ্ববন ममन ना कविशा यनि ७ कुल प्रीवाशा महा करवन, उरव काहारवा জাতি প্রাণ থাকিবে না, এবং জবন অধিকারী না হট্যা অন্যকোন मिश्र मनुष्य (मनाधिकाती हन, उाहा हरेल मकल मलल हरेता। মহারাজ মহেন্দ্র উত্তর করিলেন, এই রূপ আমাদিগের বাসনা; এই নিমিত্তে তোমার রাজাকে আদিতে লিখিরাছিলাম; তিনি শারীরিক পীজিত হইয়াছেন, অতএব তুমি শাঘু বিদায় হও, ঘাহাতে রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় শীঘু এখানে আমিতে পারেন, তাহা করিবা, আর এ हाति त्रीप कति । काली श्रमाम मिश्ह निरमन कति एसन, अ स्राप्त आमिशा नवाव मारहरवत महिछ यनि माक्का ना कतिशा याहै. श्वात यमि मुक्के ल्याटक नवादवत शाहरत ममाहात करह, उरव नवादवत উজ্ঞা হ'ইবে: আরু ন্রাবের আজাব্যতিরেকে এ শহরে আমার মহারাজ আসিতে পারেন না, অতএব নিবেদন করি, আমাকে নবাব मार्ट्यत् महित माक्कार कतान: आमि नगारवत शाहरत निर्वाहन করিব, আমার মহারাজের একবার জীগুতের সহিত সাক্ষাৎ করিতে

নিভাদ্ধ বাসনা, এবং আরং যে বিশেষ নিবেদন আছে ভাছা সাক্ষাতে নিবেদন করেন; এই রূপে কহিয়া নবাব সাহেবের মত করি য়া শেষে মহারাজ এথানে আইলে ভাল হয়; মহারাজ করা ইহাতে যেমন আজা করেন ভাছাই করি। মহারাজ মহেন্দ্র প্রনিয়া কহিলেন, উত্তম কহিয়াভ, কল্য ভোমাকে নবাব সাহেবের গোচরে লইয়া যাটব, ভূমি অভিপ্রাতে প্রস্তুত্ত হইয়া আমার নিকটে আসিবা। কালীপ্রসাদ সিংহ নমস্কার করিয়া বাসায় বিদায় হইলেন।

পরে কালীপ্রসাদ সিৎহ ভেটের নানা জাতীয় আয়োজন করিলেন; প্রাতে ভেটের সামগুী লইয়া মহারাজের বাটাতে উপস্থিত হউলেন; মহারাজ মহেন্দ্রের চতুর্দেলি প্রশুত হইল। কিঞিৎ পরে মহারাজ মহেন্দ্র এবং কালীপ্রমাদ সিংহ নবাব সাহেবের ছারে উপস্থিত হট্যা অংগ্ মহারাজ মহেন্দ্র নেবাবের গোচরে গেলেন, যেমন নিয়ম আছে সেই মত নমস্কার করিয়া নবাব সাহেবের সভাতে ক্ষণেক বসিলেন। পরে নবাব সাহেবকে নিবেদন করিলেন, নবদ্বীপের রাজা আত্মপাত্রকে প্রেরিত করিয়াছেন, এবৎ কিঞ্জিৎ ভেটের দুব্য পাঠাইয়াছেন, আজা इडेला के निक ए जा के रमन। नवांत मारहत ऋ ११क था किय़। कहिरलन, আসিতে বল। এক জন ভূত্য গিয়া কালীপ্রসাদ সিংহকে নবাব সা-হেবের গোচরে আনিল। কালীপ্রদাদ দিংহ মহদুং নমস্কার করিয়া ভেট দিয়া নিবেদন করিলেন, অনেক দিবদ আমার রাজা দাহেরকে দর্শন করেন নাট, এবং আত্ম নিবেদন আছে তাহাও গোচর করেন নাই; যদি অনুগুহ করিয়া আজা করেন, তবে দর্শন করিয়া আত্ম নিবেদন করেন। নবাব এ সকল বাক্য প্রবণ করিয়া মহারাজ্ঞেব প্রতি দৃষ্টি করিলেন। তথান মহারাজ মহেন্দ্র করপুটে নিবেদন করিলেন, যদি রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় আসিবার কারণ নিবেদন করিয়া পাঠাইয়াছেন, ইহাতে আসিতে আজা হইলে ভাল হয়। তথন নবাৰ সাহেব আজা করিলেন,ভাল, রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে আমার নিকট আসিতে আজাপত্র দেও। এই বাক্যের পর কালীপ্রসাদ সিৎহ অনেক ২ নমস্কার করিয়া নবাব সাহেবের নিকটহইতে যেখানে মহারাজ রাজকর্ম করেন সেই স্থানে আদিয়া বদিলেন। কিঞিং পরে মহারাজ মহেন্দ্র উপস্থিত হট্যা নবাবের অনুমতি লিপি দিয়া কালীপ্রসাদ সিৎহকে বিদায় করিলেন।

পরে কালীপ্রদাদ সিংহ শিবনিবাদে আসিয়া রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়
মহাশয়ের সহিত সাক্ষাং করিলেন।রাজা বিরলে গিয়া পাত্রকে আ-জ্ঞান করিয়া কহিলেন, মুরশিনাবাদের যাবদীয় সন্থাদ বিস্তার করিয়া কহ। কালীপ্রদাদ সিংহ বিস্তারিত করিয়া সমস্ত নিবেদন করিলেন। রাজা সমস্ত সমাচার জাত হইয়া অত্যন্ত ভুনী হটয়া আত্মপাত্রকে

বাজপ্রসাদ দিয়া যথেষ্ট সমানপর্বক আজা করিলেন, ভাল দিবস শ্বিকর রাজধানীতে ঘাইব। কিঞিং গৌণে শুভক্ষণে মহারাজা কুল্লচন্দ্র রায় উত্থ ২ মন্ত্রী লাইয়া মুরশিদাবাদে উপস্থিত হইলেন। কিঞিৎ পরে নবাবের যাবদীয় প্রধানং পাত মিত্রগণের সহিত্সাক্ষাৎ করিতে গমন করিলেন, সকলের সৃহিত সাক্ষাৎ চইলেই নবাবের ছারে উপনীত হটয়া সমাদ দিলেন। নবাব সাহেব ভুনিয়া আজো করিলেন, আসিতে কহ। রাজা কৃষ্ণতন্ত্র রায় নানাবিপ ভেটের দ্ব্য मिता मधाशमान वृद्धिलनः एछ एवे मामशी नतात मार्टत मुक्ति कविशा ভূষ্ট হইয়া বদিতে আজা করিয়া জিজাদা করিলেন, শারীরিক ভাল আছ ? রাজা করপুটে নিবেদন করিলেন, সাচেবের প্রমাদাৎ সকল মঙ্গল এবৎ শারীরিকও মঙ্গল। এইরূপ অনেক শিস্টাচার গেল। ক্ষণেক विभिन्ना ताजा निरतनन करिएलान, यनि जाजा इन्, उरव नामान घाडे: অনেক ২ নিবেদন আছে, পশ্চাৎ গোচর করিব। নবাব অনুমতি দিলেন। ঐ দিবস রাজা বাসায় আসিয়া মহারাজ মহেকু ও রাকা রামনারায়ণ ও রাজা রাজবলভ এবং জগংদেট ও মীর জাফেরালি খা ইহাদিগের নিকটে লোক প্রেরণ করিলেন, আমি দাক্ষাৎ করিতে যাইব। দকলেই অনুমতি করিলেন রাত্রে আদিতে কহিও; ক্রমে ২ वाजा मकरलव निकष्ठे दार्घ भमन कविशा आजा निरमन कविरलन। পরে জগৎসেট কহিলেন, এ দেশের অত্যন্ত অপ্রতুল হইল, দেশাধি-काती जाि मृतम, काहाता नाका अपन ना, मित्न र मोताका जािथक इडेटल्ड ; खरु अन मकरल अकरांका इडेशा वित्वहना ना कतिर**ल** काहारता निष्कृति नाहै। এই कथात পর রাজা कृष्ण उस्त तांग्र कहिरलन, আপনারা রাজ্জবারের কর্তা, আমরা আপনকাদিগের মহাবলম্বী। যেমনং कहिर्तन रमहे कुल कार्या कित्ति। हेराहे धनिया अन्धरमणे कहिरलन, অদ্য বাদায় ঘাউন, আমি মহারাজ মহেল্পের সহিত প্রাম্প করিয়া নিভূত এক স্থানে বসিয়া আপনাকে ডাকাইব। সে দিবস বিদায় হই-য়। রাজা বাসায় গেলেন। পরে এক দিবস দ্বর্গৎসেটের বাটীতে রাজা মহেন্দ্র প্রভৃতি দকলে বসিয়া রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে আন্ধান कतित्लन । मृष्ठ व्यामिशा दाजादक लहेशा दाल, गथा याता हात्न मकत्ल বসিলেন। হৃদণেক পরে রাজা রামনারায়ণ প্রশন করিলেন, আপনারা मकरलाहे विरवहना करून, मिणाधिकाती अखिणात मुन्छ, उत्तर मोता-জ্যার বৃদ্ধি হইতেছে, অভএব কি করা যায়? এই কথার পর মহা-तास मरहस्य कहिरलान, जामता পूरुयानुकृत्य नवारवत ठाकत; यनि আমাদিগের ছইতে কোন ক্ষতি নবাব দাছেবের হয়, তবে অধর্ম এবং অখ্যাতি; অতএব আমি কোন মন্দ কর্মের মধ্যে থাকিব না। তবে যে পূর্বে এক আধ বাকা কহিয়াছিলাম, দে বড় উদ্মাপ্রযুক্ত

এইক্লণে বিবেচনা করিলাম, এ দকল কার্য্য ভাল নয়। এই কথার পর রাজা রাজবলত এবং জগংদেট ও মীর জাফরালি গাঁও বাজা বামনাবায়ণ কহিলেন, যদ্যপি আপনি এ প্রামশ্হউতে ক্ষায়, হইলেন, কিন্তু দেশ রক্ষা পায় না, এবং ভদ লোকের জাতি ও প্রাণ থাকা ভার হটল। মনেকং রূপ কহিতে মহারাজ মহেন্দ্র কহিলেন, আপনারা কি প্রকার করিবেন? তথন রাজা রামনারায়ণ কহিলেন, পর্ম্বে এই কথার প্রস্তাব এক দিবদ হইয়াছিল, তাহাতে সকলে কহিয়ালিলেন, রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় অতি বড় মন্ত্রী, ওাঁহাকে আনাইরা জিলাদা করা যাউক; তিনি যেমন ২ পরামর্শ দিবেন, দেই মত কার্য্য করিব। এইক্ষণে রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় উপস্থিত আছেন, উহাঁকে জিজামা করুন; বে ২ প্রাম্শ করেন তাহাই প্রবণ করিয়া নে হয় পশ্চাৎ করিবেন। পরে রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে সকলে জি-জাদা করিলেন, আপনি দকলই জাত হইয়াছেন, এইক্ষণে কি কর্ত্রা? রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় হাস্য করিয়া নিবেদন করিলেন, মহাশয়েরা সক-লেই প্রধান, আপনকারা আমাকে পরামর্শ দিতে যে অনুমতি করি-তেছেন বড আশ্চর্য। সে যে হউক; আমার নিবেদন এই, যে আ-মাদিলের দেশাধিকারী জবন ইহার দৌরায়েয়ে আপনারা ব্যস্ত হইয়া প্রতিকারোপায় চিন্তা করিতেছেন। সম্ভিত্যাহারি মীর জাফরালি খাঁ। সাহেবও জাতিতে জবন, অভএব আমার আশ্চর্যা বোধ ইইতেছে। এট কথার পর সকলে হাস্য করিয়া কহিলেন, হাঁ, ইনি জবন বটেন, কিন্ত টহাঁর প্রকৃতি অতি উত্তম, আপনি টহাঁর প্রতি দদ্দেহ করি-रवन ना। अभ्छार कुछछ स्त्र ताश निर्दानन कतिस्त्रन, अस्तरभव उपव ठिक क्रियत्त् निश्र रहेशास्त्र, नर्ता अककालीन अठ रस ना। अथम মিনি দেশাধিকারী ইহাঁর প্রানিষ্ট চিন্তা মৎপরোনান্তি; যেখানে শুনেন সুন্দরী স্ত্রী আছে, তাহা বলক্রমে গুচণ করেন, এবং কিঞিং অপ-বাধে জাতি প্রাণ নট করেন। বিতীয় বরিগী আসিয়া লুঠ করে; ভাছাতে মনোযোগ নাই। তৃথীয় সন্ন্যাসী আসিয়া যাহার উত্তম ঘর দেখে, তাহাট ভাঙ্গিয়া জনালানি কাষ্ঠ করে, তাহা কেহ নিবারণ করে না। অশেষ প্রকারে এ দেশে উৎপাত হইয়াছে। অতএব দেশের করা জবন থাকিলে কাহারো ধর্ম ও জাতি থাকিবেনা; অতএব ঈশবের বিভিন্নানা হইলে এত উৎপাত হয় না। আমি একারণ অনেকং বিশিষ্ট লোককে কহিয়াছি, আপনারা ঈখরের আরাধনা করুন যাহাতে উৎপাত বারণ হয় এবং জবন অধিকারী না থাকে, আত্মজাতি ধর্ম রুক্ষা পায়। এই রূপ ব্যবহার আমি মর্বনাই করিতেছি। অতএব নিবেদন করি, ঈখর সৃষ্টি করিয়াছেন, নফ করিবেন না; কিন্তু এক স্পরামর্শ আছে; যদি সকলের মত হয়, তবে আমি তাহার চেকটা

করিতে পারি। সকলে জিজামা করিলেন, কি প্রামর্শ? কল্পন। রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় কহিলেন, আপনার। মনোযোগ পৃষ্ণক অবণ ক্রন।

দেশের অধিকারী দর্ক প্রকারে উত্তম হন, এবং অনাজাতীয় ও এতদেশীয় না হন, তবেই মঙ্গল হয়। জগংদেট প্রভৃতি কহিলেন. এমন কে ভোহা বিস্তার করিয়া কহ। রাজা কহিলেন, বিলাতনিবাদী জাতিতে ইৎরাজ কলিকাতায় কোঠী করিয়া আছেন, যদি উাহারা এ प्रताल तोजा रुन, उरव मकल मझल रहेरव। हेरा श्वनिया मकरलडे कहिल्लन, उँशिनित्शव कि छे। आह्रि वाजा कृष्यहस्य वास कहिल्लन, ভাঁহাদিলের গুণ এই, সভাবাদী, জিভেন্ত্রিয়, পর্হিৎসা করেন না, আতি বড যোদ্ধা, প্রজার প্রতি যথেষ্ট দয়া, এবং অত্যন্ত ক্ষমতাপর, বিদ্ধিত বৃহসপতির ন্যায়, ধনেতে কুবেরের তুলা, প্রম ধান্মিক, অর্জনের নাায় পরাক্রম, প্রজাপালনে সাক্ষাং ঘ্রিষ্ঠির, এবং সকলেই একবাকা, শিষ্টের পালন দ্যেট্র দমন, রাজার সকল ওণ্ট তাঁহাদিগের আছে। चाउवत डाँशांदा (मन्यादिकाती शहेरल मकरलत निश्चात, नहता यत्रान मकल नक्षे कतिरत। এই कथात शत अंतरराष्ट्रे कहिर्लन, टाइ।वा উত্তম বটেন, আমি জাত আছি, কিন্তু ডাঁচাদিগের বাকা আম্বা ব্যিতে পারি না, এবং আমাদিগের বাক্য তাঁহারা ব্যিতে পারেন না। পরে রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় কহিলেন, এখন ভাহারা কলিকা। য কোঠী করিয়া বাণিজ্য করিতেছেন, দেই কলিকাভার দক্ষিণে কার্লা-घाँछ, उज्रम् कान्नीरनतीत পुजनार्थ आभि मस्या २ तिया शांकि, स्मर्गे कारल वे काठीत वक मार्टित्व महिंग माकार कविया था कि, हेहार शहाब চরিত্র আমি সমধুট জাত আছি। এই কথার পর রাজা রামনারা-যণ কহিলেন, আপনি কলিকাভার বড় মাহেবের মহিত মাঞ্চাং করেন, কিন্ত তাঁহার বাক্য আপনি কি প্রকারে বুনেন? এবং আপনকার কথাই বা তিনি কি প্রকারে জাও হন? এট কথার উত্তর রাজা কুল্ডন্স রায় করিলেন, কলিকাতায় অনেক> বিশিষ্ট লোকের বুমুক্তি আছে, তাঁহারা সকলেই ইংরাজা ভাষা অভ্যাস করিয়াছেন, এবং সেই সকল বিশিষ্ট লোক সাহেবের চাক্র, ভাঁহার।ই স্বাটিয়া দেন। ইহা धनिया मकलडे कहिलान, हेराँवा अद्यक्त गर्वा रहेल मकल बुका পায়; অতএব আপনি কলিকাভায় গমন করিয়া যে সকল কথা উপস্থিত र^{हेल}, हेरा काठीत रह भारकरक छाड कताहैरतन। छिनि स्यमन > ক্রেন, বিস্কারিত আমাদিগকে কহিবেন; এবং তিনি প্রতিজ্ঞা করিবেন, যে তাঁছারা দেশাধিকারী হউলে আমাদিনের এ রাজ্যের প্রভল করি-र्विन, बत्र वर्शन रहर कार्य। आभामिर्दात आर्ष्ट शहाई वाशिर्वन। এই কথার পরে রাজা ক্ষ্যতন্ত্রীয় ক্ষিলেন, গ্রহারা দেশাধিকারী रेडेटवन, वाटकात প্রতুল রাখিলে রাজার প্রতুল হয়, এ কথা জামাদের

কহিতে আবশ্যক নাই; তবে যে কথা কহিলেন, আপনাদিগের যে কার্য্য আছে তাহাই বজায় রাখিবেন, তাহার কোন সন্দেহ মহাশরেরা করিবেন না। তাঁহাদের রাজ্য হইলে সকল লোক সুখা হইবে, কিন্তু আপনারা আমাকে দ্বির করিয়া অনুমতি করুন। পরে সকলেই কহিলেন, এই দ্বির হইল, আপনি গমন করুন। ইহা বলিয়া রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে বিদায় করিয়া সকলে দ্বং দ্বানে গমন করিলেন।

VII.—His Negociations with the English.

পরদিবস রাজা কৃষ্ণচন্দু রায় নবাব সাহেবের নিকটে আত্মরা-জ্যের অপ্রভুল নিবেদন করিয়া রাজধানীহউতে বিদায় হইয়া শ্বাজ্যে প্রস্থান করিলেন। পরে শিবনিবাদের বাটীতে পঁত্ছিয়া রাজা ঘাব-দীয় পাত্র মিত্রগণকে আজা করিলেন, আমি একবার কালীঘাটে যাত্রা করিব, তোমরা প্রদত্ত হও। সকলে যে আজা বলিয়ারাজসভাহইতে হ্ব স্থানে আসিয়া রাজার যাত্রার আয়োজন করিতে প্রবৃত হইলেন। কিঞিৎ গৌণে রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় পাত্রকে সঙ্গে করিয়া কালীঘাটে উপনীত হইলে পরে পাত্রকে কোঠীর বড় সাহেবের নিকটে ইহা কহিয়া প্রেরণ করিলেন, তুমি সাহেবকে নিবেদন কর, কল্য আমি সাক্ষাৎ করিতে যাইব। তাহাতে রাজার পাত্র আগমন প্রশ্নক সাহেতের সহিত माक्का करिता निरवमन करिलन, प्रशांता कृष्यक्त तात्र कालीघाटि আসিয়াছেন, এইক্লে বাসনা সাহেবের সহিত সাক্ষাৎ করেন। সাহেব আজা করিলেন, আদিতে কহিবেন। দাহেবের আজাতে পাত্রকে দমভি-ব্যাহার করিয়া প্রদিবদে সাহেবের নিকট আগত হইলেন। রাজা কৃষ্ণচল্ল রায় সাহেবের সহিত সাক্ষাৎ করিবামাত্র সাহেব যথেষ্ট মর্য্যাদা कतिया উপবেশনার্থে দিৎহাসন প্রদান করিলেন। রাজা ও সাহেব উভয়ে সিৎহাসনোপবিষ্ট হইয়া অনেক কথা প্রসঙ্গে হাদ্য পরিহাদাদি করণ পূর্বকে রাজা আনেক শিষ্টাচার করিলেন। সাহেবের প্রধান চাকর উভয়ের বাকাই উভয়কে বুঝাইয়া দিলেন। আনেক ২ কথার পর রাজা कहिलान, किश्विष विराय निर्यामन আছে। मारहर कहिलान, कि निर्यामन? কত্ন। রাজা মুরশিদাবাদের তাবদৃতাত জাপন করিয়া কহিলেন, এ রাজ্য আপনকারা রক্ষা না করিলে যাবদীয় লোক অত্যন্ত ক্লেশ পায, এবং মবনের অধিকার থাকিলে দেশ নফ্ট হয়; এই কারণ নবাবের প্রধান পাত্র মিত্রগণ আপনকার নিকটে আমাকে প্রেরণ করিয়াছেন।

নাহেব সকল বৃত্তান্থ অবণ করিয়া আখাদ নিগা কহিলেন, এই সন্ধাদ আমি বিলাতে লিখি; তথাকার আজা প্রাপ্তে পশ্চাং মুদ্ধ করিয়া এতদেশ হন্ধণত করিয়া তাবং প্রজাকে প্রম দুখে রাখিব। আপনি এই সমাচার নবাবের আমাতাদিগকে লিখুন। নাচেব যথেষ্ট আখাদা বাক্যে সম্বন্ধিত করিয়া রাজা কৃষ্ণতেল রায়কে বিনায় করিয়া এই সকল বৃত্তান্ত বিলাতে লিখিলেন। রাজা শিবনিবাদের বাটাতে উপ্থিত হইয়া নবাব সাহেবের প্রধান পাতকে বিস্তারিত রূপে তাবং জাপন করিলেন। সকলেই অবণ করিয়া স্বাই ইটলেন।

দৈব ঘটনাক্রমে নবাবের বিপদ উপশ্বিত হইল, তদ্বার এই।

ইৎরাজের বাণিজ্যের কোঠী অনেক গ্রামে ছিল। গে দিনিদের যে রাজকর নিয়ম ছিল, দেই মত নবাব সাহেব পাইতেন। নবাব সাজেবদৌলা অন্তঃকবণে করিলেন, ইৎরাজেরা ব্যাপার বাণিজ্য অতি বিষ্কুরে করিতে লাগিলেনে, অতএব আমি এখন অধিক রাজকর লাইব। ইহাই বিবেচনা করিয়া প্রধান > পাত্রগণকে আজা করিলেন, সর্বাত্র मुखान निथा, राथारन २ इर्जार्झित वागिर्झात रकांधी আছে मिटे २ স্থানে আমার যে২ চাকরেরা রাজকরের নিমিত্ত আছে, তাহাদিগের উপর এই লিখ, যে সকল নিয়ম আছে তাহা অপেক্ষা বাদ্ধকৰ অধিক लग्न। हेहा स्थानिया পांज कहिएलन, है रवास मारहरववा विप्तिम महा-জন, এ দেশে অনেক কালাব্ধি ব্যাপার বাণিজ্য করেন, নিয়মিত বাজ-কর বরাবর দেন, কথনো অধিক দেন নাই, এখন আপনি অধিক লই-বেন, এ উত্তম প্রামশ হয় না; তবে মহাশয় কর্ত্তা, যেমত আজা হয়। এই কথার যাবদীয় প্রধান ২ পাত্র মিত্রগণ সকলেই কহিলেন, মহারাজ महरू हा करिलान এक छेउम: जात्मालाच हा रहेबा जामिट हर এখন তাহার ব্যতিক্রম করা ভাল নহে। পাত্র মিত্রগণের রাক্য প্রবণ করিয়ানবাব উল্লান্তি হইয়া কহিলেন, হোমরা আমার চাকর; আমি ঘেমন ২ কহিব, সেই মত কার্য্য করিবা। তোমাদিগের বিবেচনায় কি করে ? প্নরায় যদি এ বিষয়েতে কেহ বাকা কহ, তবে ভাহার যথেষ্ট गांखि कतिय। मकरल निःगक इडेरलन। পরে যেখানে ২ কোঠী ছিল, দেই ২ স্থানে আজাপ্রমাণে চাকরের প্রতি লিখিলেন, ইৎবাল মাহেব লোকেরা যে বাণিজ্য করিতেছেন, তাঁহাদিগেদ করের যে নিয়ম ছি**ল, অদ্যাব্ধি তাহ। অপেক্ষা** অধিক লইবা। এই ম্মাচার পাইরা नवाद्यत ठाकत स्मादकवा दकाठीव ठाकविष्ट्रशत अदिक वाजकत् লইতে উদ্যত হইল: কোঠার চাকর সমন্ত কলিকাতার কোঠার বড় मार्ट्रिक विश्वादिक मेमाहाद निशिर्नित। मार्ट्य ये मकल भव भाहेगा সম্বাদ জাত হইলেন।

এই সময়ে নবাব সাহেব রাজা রাজবলভের উপর কোন কার্যোর

কারণ উল্লাহিত হউলেন, কিন্তু বাছে। প্রকাশ করেন নাই। রাজা রাজবল্লভ আপন পুল কৃদ্দদাদের সহিত গোপনে বিবেচনা করিলেন, যে নবাব সাহেব আমাদিগের উপর উল্লাকরিয়াছেন; অতএব যদি আমরা এখানে থাকি, তবে জাতি প্রাণ ও ধন দকল যাইবে, অত-এব এই সময় সপরিবাবে পলায়ন করি। রাজা কৃদ্ধদাস কহি-লেন, নবাবের সাক্ষাৎ থাকিলে এ সকলি সারিবে, কিন্তু পলায়ন করিয়া কোথায় যাইব? সকল দেশ ন্বাবের। রাজা রাজবল্লভ কহি-লেন, চল, কলিকাতার যাই, দে স্থান নবাবের অধিকার নহে, ইৎরাজ সাহেবদিগের অধিকার, এবৎ উাহাদিগের গুণ রাজা কৃষ্ণচন্দ্র বায বিস্তারিয়া কহিয়াছেন, তাহাতে আমি জাত আছি; তাঁহারা শ্রণাগত **জনকে তাগি করেন** না। অতএব কলিকাহার গমন করা প্রামশ, নতুবা मकल नम्छे रहेदत । এই श्रित कतिया मलतिवादत ललायन कतिया ताजा রাজবলত কলিকাতায় আধিয়া কোঠার বড় মাহেতের শরণ লউরা বিস্তারিত নিবেদন করিলেন। কোঠার সাহের আখাস কবিয়া বলি-लिन, खामामिर्गत कान हिचा नाहे; कलिकाचात्र थाक । इंदा विलग আপনার প্রধান চাকরকে কহিলেন, রাজা রাজগলত ও কৃফ্ষদাস দুই জন নবাবের শক্ষায় পলায়ন করিয়া আমার শরণ লইয়াছে; তুমি যথেট আখাদ দিয়া উত্তম এক স্থানে রাখ। সাহেবের আজামতে প্রধান ২ চাকর উত্তম স্থানে উাহাদিগকে রাখিলেন।

कि कृकान त्रीत्। नराव मुारक्षत्राना आर्ग कत्रिलन त्र त्राका রাজবলত ও কৃষ্ণদাস সপরিবারে পলায়ন করিয়া কলিকাতায় গিয়া রহিয়াছেন; শুনিবামাত্র অতি ক্রোধারিত হট্যা মহারাজ মহেলুকে আজা করিলেন, কলিকাভার কোঠীর বড় সাহেবকে পত্র লিখ যে আমার চাকর রাজবলভ ও কৃষ্ণদাদ এখানংইতে পলায়ন করিয়া আপনকার নিকটে আছে, তাহাদিগের দুই জনকে বন্ধন করিয়া আমার নিকটে শীঘু পাঠাইবা। মহারাজ মহেলু নবাব সাহেবের আজা অনিয়া নিঃশব্দে রহিলেন; ক্লণেকের পর নিবেদন করিলেন্ যে আজা তাহাই লিখিতেছি, কিন্তু এক নিবেদন আছে। নবাব কহিলেন, কি / কলিকাভার কোঠার যে বড় সাহের আছেন, ওাঁহাদিগের দ্বান্তির এক নিয়ম আছে, যদি কেহ শর্ণাগত হয় তাহার জন্যে আপনার প্রাণ দিলেও যদি দে রক্ষা পায় তাহাও করেন; এ কেবল তাঁহা-দিগের নিয়ম নছে, দকলেরি শান্তে এই মত, শরণাগত ত্যাগ করিলে অধর্ম, কিন্তু বিশেষ ভাঁহাদিনের পণ, প্রাণ থাকিতে শর্ণাগত ভাাগ करत्न ना। चाड अर निर्दयन कति, किश्विर कारलत् स्राम्य तास्वरस्य কলিকাতায় থাকুন, পশ্চাৎ কৌশলক্রমে আমি তাঁহাকে আনিতেছি। হঠাৎ এমত লিখন যদি আপনি লিখেন, আর কোঠীর বড় সাহেব

রাজবল্লভকে ত্যাগ না করেন, তবে বিবাদ উপস্থিত হউবে; তাহাতে যেকপ কার্য্য করিছে আজা করেন, সেই মত কার্য্য করি। নবাব খনিরা অধিক জোধ করিয়া কহিলেন, এখনি কোটার সাহেবকে লিখা। পরে মহারাজ মহেন্দ্র মুন্সি লোককে পত্র লিখিতে আজা করিয়া দিলেন। পত্রের বিবরণ এই। আত্ম মঙ্গল সন্মাদ লিখিয়া লিখিলেন, ''আমার চাকর রাজা রালবল্লভ ও রাজা ক্ষন্স এখান্টভতে পলায়ন করিয়া আপনকার নিকটে রহিয়াছে। অতএব ভাইঞা, দুই জনকে বন্ধন করিয়া শীঘু আমার নিকট পাটাইবেন, ইহাতে কলাচ অন্য মত করিবেন না।''

এই মত পত্র লিখিয়া কলিকাতায় পাটাইলেন। কোটীর বড় সাংচৰ লিপি পাইয়া আপন প্রধান ২ পাত্র মিত্রগণকে আহ্বান করিয়া পত্র দেখাইলেন। চাকরেরা পত্র জাত হইয়া সাংহৰকে পত্রের অথ জাত করাইলেন। পত্রের অর্থ শুনিয়া সাংহৰ হাম্য করিয়া আগ্রচাকরকে আজা করিলেন, পত্রের উত্র লিখা। তাহার বিদর্গ এই।

আত্মক্ষল সমাচার লিখিয়া লিখিলেন, "ভাই সাহেবের এক পত্র পাইয়া প্রমহৃষ্ট হইয়া সমাচার জাত হইলাম। আপনকার চাকর রাজা রাজবল্লভ ও রাজা কৃফদাম দুট জন পলায়ন করিয়া আমার শরণাপন্ন হইয়াছে; তাহার কারণ এই, ভাই মাহেবের মঞে আমার নথেষ্ট প্রণয় আছে, আমার নিকট থাকিলে ইহারা ভর্থইতে মক্ত হটবে। অতএব এ কুদুলোক, ইহার প্রতি আপনকার ক্রোপ যেমন মে-ষের উপর সিৎহের পরাক্রম, অতএব আপনি এ দেশাপিকারী, সকলের উপর কৃপাবলোকন করিয়া প্রতিপালন করা উচিত হয়। ইহাতে মদাপি अल्भ २ जाभवाद्य ठाकत्रमिरशत उभत निगुह करतन, छरेन कछीत মহিমার অুটি হয়। আর লিথিয়াছেন দুট জনকে বন্ধন করিয়া শীঘু পাচাইতে, এ বড আশ্চর্য্য বাক্য। শর্ণাগত জনকে তাগি করিতে দর্ম गाद्ध निरम्प, এवर आमानितात गाद्ध ९ टारहादत यत्थके मन। অভএব কিঞ্ছিৎকালের জন্যে আপনি বান্ত হটদেন না, আমি কৌশ-লক্রমে রাজ্যবল্লভকে নিকট পাটাইন। আর আমাদিনের বাণিল্ল্য এ দেশে অনেক কালাবধি আছে, তাহাতে রাজকরের যে নিয়ম আ-ছে তাহা দিতেছি; হঠাৎ আপনকার চাকরেরা অধিক লউতে চাহে; এ বিষয় আপনি আত্মলোকদিগকে বার্ণ করিয়া দিবেন, অধিক না চাছে।"

নবাব সাহেব কোঠীর সাহেবের পরের উত্তর জাত হট্যা পাত মিত্র-গণকে আজা করিলেন, কলিকাঠার কোঠীর সাহেব যে উত্তর লিখি-য়াছেন, ভাহার শীঘু প্রয়ুত্তর লিখ। পাত্র আজামতে পত্র লিখিলেন; হাহার বিবরণ এই।

আল্মজল লিখিয়া লিখিলেন, "ভাইজীর প্রহাত্র পত পাইয়া সন্থাদ জাত হউলাম । লিখিয়াছেন রাজবল্লভ ও কৃফলোস দুউ জন পলায়ন করিয়া আপনকার শরণাগত হইয়াছে, অত্এব শরণাগত ব্যক্তিকে ভাগে করণে যথেষ্ট অপর্ম; মে প্রমাণ বটে। কিন্তু রাজাজা পরিভাগ করিলেও অধর্ম আছে; আর আপনি বিদেশি মহাজন, দেশাধি-কারির সহিত বিবাদ হয়, এমত কার্য্য করা উচ্চিত নহে। অতএব আমি এ দেশের অধিকারী; আমার বাক্যে যদ্যাপি আপনাদের নিয়ম ভঙ্গ হয়, ভাহাও পণ্ডিতের কত্ত্ত্য। আপনকার স্পতি যথেষ্ট প্রণয় আছে; যাহাতে প্রণয় ভঙ্গ না হয় এমত করিবেন। আর লিখিয়াছেন, আপনকার কোঠী দেখানে >, দেই ২ স্থানে আমার লোক অধিক রাজকর লইতে উদাত হইরাছে; ভাহার কারণ এই, পূর্বে মথন আপনারা এ দেশে কোঠী করিলেন, তথন অপ্প ২ সামগ্রীর বাণিজ্ঞা করিতেন, এখন অতি-শয় দুব্য ক্রন বিক্রা করিতেছেন। অভএব ইহাতে কিরুপে পূর্বের মত রাজকর থাকে? সওদাগর্দিণের এই ধর্মা, যদি অধিক বাণিজ্য হয়, তবে যে দেশাধিকারী থাকে, তাঁহাকেও কিঞ্জিৎ অধিক দেয়। সে ध इडेक, এখন রাজবল্লভ ও কৃষ্ণদাসকে শাঘু এখানে পাঠাইবেন, এবং যে স্থানে আপনকার কোঠা আছে, দেই ২ কোঠাতে সমাচার লিখিবেন অধিক রাজকর দেয়; বর্ৎ এখন যে হারে রাজকর দিবেন সেই মত চিরকাল থাকিবে।" এইরূপ পত্র লিথিয়া কলিকাতায় পাঠा हेटलन । पृष्ठ आमिशा काठीत वर्ष माट्यत्क शब मिटलन । का-সীর বড় সাহেব পত্র জাত হইয়া পুনরায় উত্তর লিখিলেন; তাহার বিবর্ণ এই।

আপন মকল ও শিটাচারের পর লিখিলেন, "নবাব ভাই জীউ সাহেরের পর পাইয়া সকল সমাদ জাত হইলাম। রাজা রাজবল্লভ ও কৃষ্ণদাসের কারণ পুনং ২ লিখিতেছেন, আর লিখিরাছেন যে দেশাধিকারির বাকেট নিয়ম ভক্ষ করিছে পারে, এবং রাজাজালজ্যনে পাপ আছে, দেও প্রমাণ বটে। কিন্তু আত্ম ২ শান্তমতে এই হয় শরণাগত জনের কারণ বরঞ প্রাণ দিবে, তথাপি তাহাকে ত্যাণ করিবে না। সমান জনের সহিত শরণাগতের কারণ বিবাদ হইলে প্রাণ যাওনের ভয় কি? কিন্তু শরণাগতের জনাে যদি দেশাধিকারির সহিত বিবাদ হয় ওবেই প্রাণপ করা হয়; ভাহাতে যদ্যপি প্রাণ যায়, তথাপি তাহার স্থাপনকার নিকট উত্তম ২ পণ্ডিত আছেন ভাঁহাদিগকে জিজাালা করিছেন। ঘদি তাঁহাদিগের ব্যবস্থাতে শরণাগতকে ত্যাণ করা যায়, তবে আমি ত্যাণ করিব। আর এ রাজ্য পুর্বে হিন্দু লোকদিগের ছিল; আপনকার নিকটে জনেক ২ হিন্দু চাকর আছে, তাহার। অবশ্য আপন ২

শাস্ত্র জাত আছে। দেখুন অভিপূর্মে দণ্ডী নামে এক রাজা জিলেন, मर्वामा मृत्रमा कतिएउन। এक मित्रम मधी तास्त्रा এक तरनत मरक्षा त्रमन করিয়া মৃগয়া করিতেছেন, ইতিমধ্যে অত্যন্ত চঞ্চলগতি এবং আ শ্র্যামতি এক অসিনী দেখিয়া রাজা অভিশয় হুঠী হুইয়া সকল দৈন্যকৈ কহিলেন, এই অধিনীকে ধর। রাজাজা পাইয়া সকল দৈন্য অধিনীকে ধরিল। দণ্ডী রাজা অধিনীকে লট্যা আগুরাজে। গ্রমন কবিলেন। অখিনী দিবদে ঘোটকী, রাত্রে এক অপুর্বা সৃন্দরী কন্যা হয়, ইহাতে দণ্ডী রাজার বড় আশ্চর্য হোধ হইল। এইরূপে কিছকাল যায়। এক দিবদ রজনীতে দেই কন্যাকে দণ্ডী রাজা জিত্যাদা করিলেন. ত্মি কে? আমাকে দত্য কহ। তথন দেই কন্যা কহিলেন, আমি স্বনের नर्हकी हिलाम, এक नियम डेटलुत निकटि नुश कतिएउ जानामनका হ**ইলাম, ইহাতেই তাল ভঙ্গ হ**ইল; তাল ভঙ্গ হওনে ই<u>ল</u> উল্লাক্রিয়া कहिएलन, जूमि मन नृष्टा कृतिला, এই জाता अधिनी इडेगा मर्यामा বনমধ্যে গিয়া নৃত্য কর। পরে আমি উল্লুকে বহুবিধ স্তব করিলাম, ভাষাতে ইন্দ্র কিঞিৎ ভূস্ট হইয়া কহিলেন, ভূমি বজনীতে কন্যা হইবা, এবং দণী রাজা ভোমাকে ধরিবে, তাহার পর মূকা হট্যা আমার নিকটে আদিবা। ইহাখনিয়া দণী রাজা যতনপুর্রক অপিনীকে রাখেন। এক দিবস প্রীকৃষ্ট আপন আলয়ে প্রবণ করিলেন, দণী রাজা এক অপূর্কা অখিনী পাইয়াছেন। দেই অখিনী চাহিলেন। দণ্ডী রাজা দে অধিনী কদাচ দিলেন না। পরে একুফর বহু দৈনা লইয়া যুদ্ধ করিতে উন্ত হটলেন; দণী রাজা আবণ করিলেন যে জীকৃষ্ণ আমার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আসিতেছেন; তাহাতে পলাইয়া অনেকং স্থানে গমন করিলেন। পরে পাওব পুত্র মুধিষ্ঠির ভীম অজ্জন নকুল সহদেব ইহাদিলের মধ্যে ভীমের শর্ণাপন্ন হটলেন; ভীম আখাদ করিলেন, হে দণ্ডি রাজ, অখিনীর সহিত আমার নিকটে থাক, তোমার কোন চিন্দা নাই। দণ্ডা রাজা যথেষ্ট আখাদ পাইয়া ভীমের নিকটে রহিলেন। পরে এক্রিয় শুনিলেন দণ্ডী রাজা অখিনীর সহিত ভামের শর্ণাপল হটয়াছে। পশ্চাৎ প্রীক্ষ ইহা কহিয়া দত পাঠাটলেন, দণী রাজা অখিনীর সহিত সেখানে আছে, অতএব ভাহাকে এবং অধিনীকে শাঘ্ আমার নিকট পাঠাইবেন। এই সম্বাদ পাইয়া ভীম বড় ভাবিত হই-লেন; ভীমদিনের বল বৃদ্ধি বিক্রম যে কিতৃ সকলি জীক্ষা। অওঃকরণে विरवहना कहिरलन गड़गांशह अनरक दक्का यमि ना कहि, उरत आव धार्व करा वृथा; यनि ना निष्टे, उटव जीकृत्म्यत् युष्ट्वारत आवित्रका दहेटव नी। उत्त कि कृति ? अप्नक मह हिन्ना कृतिता दित कृतिस्त्रम, तृत्र যুদ্ধেতে প্রাণ যায় দেও উত্তম, তথাপি শর্ণাগত জনকে দেওলা মত नरह। इंदाई स्ति कृतिया कृत्कत मृत्रक विमाय क्विलान, मधी वाजाउ

অখিনীকে দিলেন না। প্রীকৃষ্ণ এই স্থাদ পাইয়া মহাজোধে দৈন। লইয়া যুদ্ধ করিছে আগমন করিলেন; পশ্চাৎ ভীম আল্পানহোদর-দিগকে স্থাদ দিলেন; তথন সুধিন্ধি প্রভৃতি খনিয়া মহাজোধাধিত হইয়া রণ করিছে প্রস্কৃত হইল। প্রীকৃষ্ণ কহিলেন, ভোমরা আমার আঞ্চিত হইয়া দণ্ডী রাজার কারণ আমার দক্ষে কিরণ করিছে আ-দিয়াছ ই স্তীমার্জুন কহিলেন, আপেনি যাহা কহিলেন দে প্রমাণ বটে, কিন্তু শ্রণাগত জনের কারণ আমারা প্রাণ দিতে দীকার করিয়াছি ই তথন প্রীকৃষ্ণ হাস্য করিয়া কহিলেন, আমি ভোমানিগের সাহস ৪ ধর্মা-জান দেখিবার কারণ এরপ করিয়াছিলাম। এইরপে কথোপকথন আনেক হইল। পশ্চাৎ অখিনী সাক্ষাতে আসিয়া ক্ষাদশনে ইল্লের অভিসম্পাত্রইতে মক্রা হইয়া আল্পাহনে গমন করিলেন।

"অতএব আমি হিলুলোকের স্থানে এমন কথা শ্রুণ করিরাছি, এবং হিলুর শান্তেও অনেক স্থানে প্রমাণ আছে যে শর্ণাগতকে কলাচ তাগ করিবে না; আমাদিগের শান্তেও শর্ণাগতকে তাগ করিবে যথেক নিষেধ আছে; তথাপি বার্ নিথিতেছেন। আপনি এ দেশের কর্ত্তা, আপনকার নিকটে সকল জাতীয় মনুষ্য আছে, বরং সকলকে কিজাসা করিবেন। বিশেষতঃ আমাদিগের পণ, প্রাণ সল্কে শর্ণাগত ব্যক্তিকে তাগ করিব না। অতএব রাজবল্লত ও ক্লুনাসকে পশ্চাং কৌশলজ্বমে আপনকার নিকট পাটাইব, এইক্লণে আপনি কিঞ্জিং কালের জন্যে দ্বি থাকিবেন। আর যে লিখিয়াছেন, আমাদিগের বাণিক্রা অধিক হইতেছে, অতএব রাজকর অধিক লাগিবে; কিল্ আমাদিগের বাণিক্রা এ দেশে অনেক কালাবি আছে, তাহাতে হিন্দিনাপুরের স্মাট রাজা এই নিয়ম করিয়া নিয়াছেন, এবং কত ২ সুবা গিয়াছে, কথনো অধিক দেই নাই, এখনও অধিক দিব না। আপনি বিবেচক, বিবেচনা করিয়া যে সংপ্রাম্ম হয় তাহাই করিবেন।" এই মত লিখন লিখিয়া নবাব সাহেবের নিকটে পাটাইলেন।

নবাবসাহের কলিকাহার কোঠার বড় সাহেবের পত্র ভাত হটনা আহান্ত ক্রোধান্থিত হটনা পাত্রকে আজা করিলেন, কলিকাহার কোঠার সাহেব বুনি আমার বাক্য শুনিলেন না, অত্তর আর এক পত্র লিখা; যদি বাক্য পালন করেন হবে ভালট, নহুবা আনে কলিকাছা লুঠ করিয়া তাহাদিগকে এ দেশে থাকিতে দিব না। পাত্র নিবেদন করিলেন, আপনি দেশাধিকারী, কিন্তু শান্তমত বিচার করিলে ভাল হয়। তাহাতে নবাব কহিলেন, আমার আজালক্রন করিলে আনি শান্ত বিচার করিব না; হুমি শান্ত বিচার করিব না; হুমি শান্ত বিচার করিব না। মহার বিচার করিব না; হুমি শান্ত কেরাইলেন; তাহার বিবরণ এট। আছাবিশিকাচারের পত্র লিখিলেন, গেভাই সাহেবের পত্র পাইটা

সকল সমাসীর জাত হইলাম। আপনি অনেকং শাস্ত্রমত লিখিয়াছেন, এবং পূর্বে যেমন ২ হইয়াছে ভাষাও লিখিয়াছেন, এ সকলি প্রয়াণ टটে, সর্বতেই রাজাদিগের এই পণ যে শ্রণাগত ভাগে করেন নাঃ ভ: চার কারণ এই, রাজা যদি শরণাগত ভাগে করেন, তবে রাজ্যের রাজ্লা হয় না, এবং প্রাক্রমেরও অুটি হয়। কিন্তু আপেনি রাজা नरहन, करल बालात वानिका कतिराहकन; हेहार बाबाव नाम তাবহার কেন? অতএব যদি রাজা রাজবলত ও কৃষ্ণদাদকে এপানে শীঘু পাঠান, ভবে ভালই; নহুবা আমি আপনকার দহিত মুদ্ধ করিব, আপনি যুদ্ধসঙ্গা করিবেন। কিন্তু যদি যুদ্ধ না করেন, ভবে পূর্ব্বের যে নিয়মিত রাজকর আছে, এইক্লণে তাহাই দিবেন; আমি আপন চাকর-দিগকে আনজ। করিয়া দিলাম, এবং জ্রীমূহ কোম্পানির নামে যে একয় বিক্রয় হউবে, তাহারি নিয়ম থাকিবে। কিন্তু আরু যত সাহেব **লো**• क्ति वाशिका कतिएउएकन, जीवामिरशत शास्त अधिक ताक्षकत लहेत। অভএর আপনি বিবেচক সংপ্রামশ করিয়া প্রের উত্তর লিখিবেন।" এই রূপ পত্র সিথিয়া কলিকাভায় বড় সাহেবের নিকট পাঠাইলেন। কোঠীর বড় সাহেব পত্র জাত হইয়া আপনার চাকরে লোককে জাত করিলেন, আরু কহিলেন, আমি রাম্বর্লন্ড ও কৃষ্ণাদাকে কদাচ দিব না; অতএব বুঝি নৱাবের সহিত আমার বিবাদ উপস্থিত **ছটল।** किन नवात এ मिनाधिकाती, जाँशात रैमना अधिक, आप्रि प्रशासनीय ব্যবসায় করি, সৈন্য নাই, ভাহাতে চারা কি? ভোমরা এ নগরে বাস করিয়া রহিয়াছ, অতএব আত্মাং পরিবার অন্য দেশে প্রেরণ করে, মার কিছু দৈনা যদি সংগুহ করিতে পার, ভাহারও চেষ্টা পাও, এবং নবাবের পত্রের উত্তর লিখ।

এই মত পতের উত্তর প্রত্যুত্র অনেক ২ গেল। নবার সুজের-নৌলা কদাচ কাহারে। বাক্য প্রবণ করিলেন না, মহাজেগথাছিত ইট্যা যারনীয় দৈন্য সঙ্গে করিয়া যুদ্ধের কারণ কলিকাভায় প্রস্থান করিলেন।

নবাব স্থাজেরদৌলা সদৈন্য যুদ্ধ করিছে আনিছেছেন, ইছা আবণ করিয়া কলিকাভার কোচীর বড় সাহেব আপনার যাবদার চাকর লোককে আন্ধান করিয়া কহিলেন, ভোমানিগকে পূর্কেই সকল বৃত্তান্ত কহিয়াছি; সম্পুতি নবাব সদৈন্য রণ করিছে আসিতেছেন; ভোমরা সকলে সাবধান থাক, এবং আর কিছু দৈন্য আমাকে আনিয়া দেহ। সাহেবের যতং চাকর লোক সকলেই উরিগ্ন হইয়া হিল্লা করিছে লাগিলেন, এবং সাহেবের আলানুসারে কিছু দৈন্য সংগুহু করিয়া দিয়া আল্লাং প্রিজন লোককে অন্য স্থানে গোপনে রাখিয়া অপনারা সকলে দৈন্যের সঙ্গে থাকিয়া যুদ্ধের আলোকন করিছে লাগিলেন। পুরাণ কোঠার গড়ের উপর থরে ২ কামান রাখিয়া রণসজ্জা করিয়া দকলে সাবধান থাকিলেন। তথন পুরাতন কোঠার নীচে
গলা ছিলেন, তাহাতে যুদ্ধের ছোট জাহাল প্রস্তুত করিলেন, এবং
যাবদীয় ধন ও বহুমূল্য দুব্য সমস্তুই জাহালে রাথিয়া অত্যন্ত সাহস
করিয়া প্রস্তুত হুয়া থাকিলেন, এবং বাগবালারের পুলের উপর
প্রিমা কামান ও কিঞিৎ দৈনা রাথিলেন।

किश्चिर त्नोर्ग नवाव मारख्यतमोला अन्नार रेमना लहेशा कलिकाडाश উপস্থিত হইলেন। বাগবাজাবের পূলের নিকট উপস্থিত হইলেই যুদ্ধ আরম্ভ হইল। নতাবের বহু দৈনা ছিল, তথাপি পূলের দৈনাগণকে জয় করিতে পারিতেছে না, বরৎ নবাবের অনেক দৈনা নফ হইল। কলিকাতানিবাদী লোফ সকল তর্ণিতেই প্রায় আছে। রাজা রাজবল্লভ ও কৃষ্ণদাস নৌকাঘোগে বন্ধ দেশে গমন করিয়া অতি গোপনে রহি-লেন। পরে বাগবাজারে অনেক যুদ্ধ করিয়া কোঠীর বড় সাহেবের দৈন্য কাতর হইল। পরে নবাবের দৈন্য নগরে প্রবেশ করিয়া নগর-নিবাসিদিগের ধন এবং দুব্য যে যাহা পায়, সে তাহাই লইতে লাগিল। পশ্চাৎ নবাবের প্রধান ২ দৈন্য দকল পুরাণ কোঠীর নিকট উপনীত हर्डे एक रे कार्रीत मारहर त्र कतिए आत्र कित्रलम, मरारतत रेमगाउ রণ করিতে লাগিল। কিন্তু কাহারো শক্তি হয় না যে এক পদ অগুগামী হন। সাহেতের যুদ্ধ ও সাহস দেখিয়া সকলেই যথেষ্ট প্রশৎসা করিতে लांशिएलन, य अपन योह्ना कथन क्हर प्रत्थ नारे; मिलाव्छित नाव গোলা গুলি পড়িতেছে। এইরূপ সপাহ যুদ্ধ হইল, নবাবের বিস্তর দৈন্য প্রাণভ্যাগ করিল। কোঠীর দাছেবের দৈন্য অপ্প, কি করি-বেন? গড়ে তিষ্ঠিতে না পারিয়া জাহাজের উপর আরোহণ করিলেন। भकाष नरात मारहरतत रेमना भर**्व प्रदेश श्राद**ण कतिहा गृक করিতে লাগিল। কোঠীর বড় সাহেব জাহাজের উপর থাকিয়া অনেক প্রকার যুদ্ধ করিলেন, বিস্তর দৈন্যে অপ্প দৈন্য কি করিতে পারে? অনেক যুদ্ধের পর জাহাজ ভাসাইয়া সাহেব রিলাতে গমন कतिलान। उथन अनु लाक मकलाई विश्वर्य इहेश कहिए लानिलान, এ দেশের আর মদল হয় না, কেননা বিদেশী সওদাগর লোক আর আসিবে না। যদি কথনো ইৎরাজেরা এ দেশে আইসেন, আর ঈশর यनि यवनाधिकाরिक नमें करतन, उत्वह এ রাজ্যের মঞ্চল হউবে; নতুবা এ দেশের লোকের যথেষ্ট দুর্গতি হইবে। এইরূপ প্রদ্পর কহিতে লাগিলেন, এবং ফুদু লোক সকলেই হাহা-কার করিয়া রোদন করিতে লাগিল। আর সকলেই মনে২ নরা-বেরে মন্দ কহিতে লাগিল। কোন ব্যক্তি কছে, ভাই ছে, ইৎরাজের তুল্য সত্যবাদী নাই, এবং দয়া যথেফী। যে লোক অন্য স্থানে

ষে বেডন পাইড, সেই লোফ সাহেবের চাকর হইলে ডাহার দ্বিধণ বেডন মিলিত। এই রূপ সকলে সাহেবের ধণানুবাদ করিতে প্রবৃত্ত হইল।

পরে নবাব সুক্রেরদৌলা সমরে জয় ইইয়া যাবদীয় লোককে আজা করিলেন, কোটীর বড় সাহেবের চাকর লোকের বাটী ঘর যত আছে, সকল ভালিয়া ফেল। আজামতে সকল ভ্রেরা কলিকাতার যাবদীয় অটালিকা ভালিতে প্রবৃত্ত হইল, নগরমধ্যে উত্তম স্থান রাখিল না। এইরূপ নগর ভগ্ন করিয়া সর্বতি সৈন্য রাখিয়া নবাব মুরশিদাবাদে গমন করিলেন। পাত্র মিত্রগণ সকলে অন্যায় দেখিয়া চমংকৃত হইলেন, শকায় কেহ কিছু কহিতে পারেন না। এই রূপে এক বংসর গত হইল।

পরে ইৎরাজ সাহেব লোক সৈনোতে পাঁচ জাহাজ পরিপূর্ণ করিয়া কলিকাতার নিকটে আসিয়া দূতদারা সম্বাদ জাত হউলেন, যে নবাব কিছু সৈন্য রাখিয়া আপনি রাজধানীতে গমন করিয়াছেন। পরে যে সকল সৈন্য কলিকাতায় ছিল, তাহাদিগের মধ্যে প্রবেশপূর্গক আজ্ম পরাকা উঠাইয়া দিলেন।

পশাৎ সকলে পরস্পরায় প্রবণ করিয়া অহান্ত হাট হইল; এবং পূর্বেষ যে দকল লোক চাকর ছিল, তাহারা প্রবণ করিয়া আনন্দ-সাগরে মগু হইয়া আপন্থ পরিবার লইয়া নগরে প্রবেশ করিল। পরে সাহেতের নিকট নানাজাতীয় থাদ্য দুব্য ভেট দিয়া আত্ম ২ সমাচার জ্ঞাত করাইলেন। সাহেব হাস্য করিয়া অনেক প্রকার আ-খাদ দিয়া পূর্বের যেং লোক যেং কর্মে নিযুক্ত ছিল, সেইং লোককে সেই ২ কর্মেতে নিযুক্ত করিলেন। নগরবাসি লোকদিগের আনদের সীমা নাই। পরে সাহেব প্রধান চাকরকে আজা করিলেন, পুর্ফো রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় আমার নিকটে আসিয়াছিলেন, তাহাতে আমি ওাঁহাকে কহিয়াছিলাম, বিলাভের আজান। পাইয়া আমি নবাবের সহিত বিবাদ করিতে পারি না। এখন বিলাতের কর্তার আজা পাইয়া আদি-য়াছি; নবাবের দহিত যুদ্ধ করিব, তাঁহারা আমার দাহায্য করি-रवन कि ना? এই मन्नाहात ताजा कृष्यहन्त ताग्ररक करिएन जिनि कि উত্তর করেন, তাহা যাহাতে জাত হইতে পারি তাহা কর। প্রধান পাত্র কহিলেন, যে আজা, আমি রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের নিকটে দৃত প্রেরিড করিয়া সন্থাদ আনাইতেছি। পরে সাহেতের চাকর সাহেতের আগমন শমাচার বিস্তারিভ করিয়া লিখিয়া মহারাজের নিকটে দৃত পাঠাইলেন। দূত কৃষ্ণনগরে উপনীত হটয়া মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে পত্র দিল। রাজা পূর্বেই সাহেতের আগমন সমাদ পাইয়াছিলেন; পরে পত্র পাইয়া সকল জাত হইয়া অত্যন্ত হৃষ্ট হইয়া দূতকে রাজপুসাদ দিয়া পত্রের উত্তর লিখিলেন।

রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায় সাহেবকে যে পত্র লিখিলেন, ভাহার বিবরণ এই।
আপন মদল এবং আনেকং প্রকার শিন্টাচার লিখিয়া লিখিলেন,
"সাহেব পুন্রায় আগমন করিয়া কলিকাতা অধিকার করিয়াছেন,
ইহাতে আম্তান্তিষিক হইয়া আনন্দার্গবে মগু হইয়াছি, এবং বুঝি
আমাদিগের এ রাজ্য রক্ষা পাইবে। আপনকার সহিত পুর্বে যে
কথোপকথন হইয়াছিল, দেই সকল সন্ধাদ কারণ মুর্শিদাবাদে মনুষ্য
প্রেরণ করিলাম, আপনি রণসজ্জা করিয়া প্রন্থ থাকিবেন, মুর্শিদাবাদের সমাচার পাইলেই নিবেদন লিখিব। পুর্বে যে নিবেদন করিয়া
আসিয়াছি, ভাহার অন্যথা কদাচ হইবে না।"

এই প্রকার পত্র লিখিয়া কলিকাতায় সাহেবের নিকটে পাচাইযা দিলেন। পরে মুরশিদাবাদে আল্পাতকে পাটাইলেন। সাহেব রাজা কুক্ষচন্দ্র রায়ের লিপি পাইয়া অভায় তুট হইলেন, পশ্চাৎ রাজা কৃষ্ণ-চত্র রায়ের পাত্র মূরশিদাবাদে উপনীত হটয়া মহারাজ মহেত্র ও রাজা রামনারায়ণ ও জগংদেট ও মীর জাফরালি খাঁ প্রভৃতি সকলকে **पृर्क्त ममाठात खुद्रण क**दिया मिस्लन। मकत्ल र यथि ये आचाम कदिया কহিলেন, তোমার রাজাকে সন্ধাদ দেহ, যে কলিকাতায মন্য্য পাঠান ও যাহাতে সাহেব অর্বার সৈন্য সহিত আইদেন,ভাহা করেন। মার জাফ্রালি 📲 কছিলেন, আমি নবাবের দেনাপতি, দকল দৈন্য আমার বশতাপন্ন; যেমত ২ কহিব, তাহাই দৈনোরা করিবে। কিন্তু আমার এক কথা সাহেবকে পালন করিতে হউবে, ইহাই সাহেব প্রায় নিবেদন করিয়া নিষ্পান কর; তবে যেমত ২ দাছেব আজো করিবেন, আমি দেই মত কার্য্য করিব। রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের পার কহিলেন, কি কথা? আজে। করুন, আমি সাছেব পর্যান্ত নিবেদন লিখিয়া নিজ্পন্ন করিব। মীর काफतानि शौ कहिएनन, अम्हा अ एनएमत नवावि आधारक निरवन; যদি সাছের এই প্রতিজা করেন, ভবে আমি মনোযোগ করিয়া সাহেবের সহিত যুদ্ধ করিব না। এই সমাচারের উত্তর আন।

পশ্চাৎ কালীপ্রসাদ সিংছ বিস্তারিত স্মাচার আপন আত্মীয় জনেক মনুষ্য দিয়া রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে নিবেদন লিথিয়া কলিকাতার লোন। মহারাজ মুরশিদাবাদের বাবদীয় সন্থাদ লিথিয়া কলিকাতার সাছেবকে জ্ঞাত করাইলেন। সাছেব বিস্তারিত স্মাচার শুনিয়া যথেষ্ট ছফ ছফা রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে লিখিলেন, নবাব সাজের দোলার সেনাপতি মার জাফরালি থাঁ নবাবি চাহিয়াছে, আমিও জীকার করিলাম; স্থাকের দোলাকে দূর করিয়া মীর জাফরালি থাঁকে নবাব করিব, তুমি এই স্মাচার মার জাফরালি থাকে দিলে দে

যেমত উত্তর করে, তাহা আমাকে লিখিব।। রাজা কুল্লচন্দ্র রায় সাছে-বের পতার্থ জাত হটয়। বিস্তারিত সমাচার লোকধারা আপন পাত্রকে জানাটলেন।

রাজপাত দবিশেষ জাত চইরা মীর জাফরালি খাঁর নিকট গমন করিয়া আনুপূর্বিক সমস্ক নিবেদন করিলেন। মীর জাফরালি খাঁ অত্যন্ত ভুটা ছইয়া কহিলেন, আমি আর মনোযোগ করিয়া রণ করিব না; জুমি দাহেদকে সমাচার দেও, মুদ্ধ করিরা শীমু জ্ঞা হউন। রাজা কৃষ্ণচেন্দ্র পাত নিবেদন করিলেন, যেমন দাহেব ধীকার করিয়াছেন, আপনাকে নবাব করিবেন, তেমন আপনিও ধীকার কর্নন, যে মনোযোগ করিয়া সমর করিবেন না। এই কথার পর মার জাফরালি খাঁ হাস্য করিয়া ধীকার করিলেন। রাজা কৃষ্ণচেন্দ্র রায়ের পাত ঈশরকে সাক্ষী করিয়া বিদায় হউলেন।

भट्ड कुछनगट्ड गमन कहिया (मर्थन, दाखा कृषाव्स् दाव निवनिवा-দের বাটীতে গিয়াছেন। রাজা কৃত্ততন্ত্রায় নবাবের শক্ষায় কখন কোন্ বাটীতে থাকেন, ইহা আত্মভুগুরণেরাও লানে না; দর্মনা চিথাপিত, এট সকল কথার যোজনকর্তা আমি, যদি নবাব সাজেরদৌলা কিঞিং সন্ধান পায়, তবে আমার জাতি প্রাণ রাখিবে না; ইহাতে সর্ধানা বাস্ক থাকেন। পরে পাত মৃবশিনাবাদহইতে মহারাজের নিকটে উপশ্বিত হুট্যা সমস্তু নিবেদন করিজেন। মহারাজ জ্ঞাত হুট্যা পাতকে গাড়া করিলেন, ভূমি অন্যট কলিকাভায় প্রস্থান কর, বিস্তারিত সমাচার मारहरत्त् निकटे निर्वान कृतिया मीचु याहारह नतात निभाव हरा, তাহার চেষ্টা পাও গিয়া। পাত্র রাজাজানুসারে কলিকাতায় আসিয়া मारहरत्व मरक माक्कां काविया आम्पुर्तिस्क मधस्त निरत्नन कविरलन। সাহের ভুক্ত হটয়া রাজপাত্রকে প্রমান দুব্য দিয়া যথেক সমান করিয়া বিদায় করিলেন। তথন কালীপ্রদাব দিংহ কিঞ্ছিৎ গৌণে বাটী প্রস্থান করিল। সাহের আপন যাবর্ণায় সৈন্যকে আজা করিলেন, ভোমর। সকলে সুসজ্জা করিয়া প্রদ্রত হও, আমি কল্য নদাব সাজেরদৌলার সঞ্চিত সমর করিতে ঘাইব। আজামাতে সকল দৈন্য রণসভলা করিয়া প্রশ্নত হইল। সাহের দেখিলেন, সকল দৈন্য প্রশ্ত; তথন শুভক্ষণে সাহের धमन क्विटलन, नाना श्रकात दामा वाजिए नाधिन, दारमात ध्वनिएड এবং দৈনোর অপ্র সভ্জা দেখিয়া সকল লোক চমংকৃত হটয়া সকলেট জয়ং ধানি করিতে প্রবৃত হইল, এবং যাত্রিক দুব্য দকল সমুপে রাখিয়া গ্রামের মনুষ্যেরা মঙ্গল ধ্বনি করিতে লাগিল। সাহেব হাস্য করিয়া আপন দেনাপতিকে আজা করিয়া দিলেন, গুমের লোকের উপর কোন দৈন্য দৌরাকায় করিতেনা পারে। সাহের এই রূপে দৈন্য मक्ष कृष्टिया हिम्सिन।

পরে মুর্শিদারাদ পর্যান্ত সমাচার ছইল যে ইৎরাজ সাহের নরাবের महिछ तम कतिएक आमिशास्त्रम, अन्य ननाव मारहव शृर्व्य जाड ছিলেন, বিশেষ জাত হট্যা আপন সেনাপতিকে আজা করিলেন, ত্রমি পঞ্জাশ হাজার দৈন্য লইয়া পলাশির বাগানে গিয়া প্রন্তুত থাক। সারধানে সমর করিবা, কোন কপে ইৎরাজ জায়ী হইতে না পারে, বাকি যে দৈন্য এখানে থাকিল, তাহা লইয়া আমি পশ্চাৎ গমন করিব, কিন্ত ইৎরাজেরা বড় যোদ্ধা এবং অশেষ মন্ত্রণাজানে, কোন রূপে অুটি না হয়, সাবধান ২। সেনাপতি মীর জাফরালি খাঁ বিস্তব ২ সাহস দিয়া সৈন্যের সহিত পলাশির বাগানে আসিয়া রুণসভ্জা করিয়া च्याच्चन, किन्तु मत्नामत्था विष्ठात कतित्यक्तन, किक्टल है बादकता जही ছউবেন। অনেক বিবেচনার পর দৈনোর মধ্যে প্রধান > যে ২ দৈনা, ভাহাদিলের সহিত প্রণয় করিয়া কহিলেন, ভোমরা কেহ মনোযোগ করি-য়ার্ণ করিও না। যে দেনাপতি দেই এমন গতি করিতে প্রবৃত হইল, তাহাতে সূত্রাৎ মকল দৈন্য ঔদাস্য করিয়া অসাবধানে থাকিল। পরে উৎরাজের যাবদীয় দৈন্য পলাশির বাগানে উপনীত হইয়া সমর আর্ভ করিল। নবাবি দৈন্য সকল দেখিল, যে প্রধান ২ দৈন্যেরা মনো-যোগ করিয়া যুদ্ধ করে না, ইৎরাজের অগ্নি বৃষ্টিতে শভং লোক প্রাণ ত্যার করিতেছে, কি করিব? ইহাতে কেহ উদ্মাক্রমে যুদ্ধ করিয়। প্রাণ ত্যার করিতেছে। মৃদ্ধ ভাল হইতেছে না, ইহা দেখিয়া নতাবের চাকর মোহন দাস নামে এক জন নবাব সাহেবকে কহিল, আপনি কি করেন? আপনকার চাকরেরা প্রামশ করিয়া মহাশয়কে ন্সট করিছে ৰসিয়াছে। নবাৰ কহিলেন, সে কেমন? মোহন দাস কহিল, সেনা-পৃতি মীর জাফরালি গাঁ ইৎরাজের সঙ্গে প্রণয় করিয়া রণ করিতেছে না: অভএব নিবেদন করি, আমাকে কিছু দৈন্য দিয়া পলাশির বাগানে পাঠান, আমি যাইয়া যুদ্ধ করি। আপনি বাকি দৈন্য লইয়া मावधात थाकिरवन, शृद्धव बादव यथि लाक वाशिरवन, अवर এইক্ষণে কোন ব্যক্তিকে বিশাস করিবেন না। এমন বাক্য অবণ করিয়া নবাব ভয়যুক হটয়া সাবধানে থাকিয়া মোহন দাসকে পঁচিশ হাজার দৈন্য দিয়া অনেক আখাদ করিয়া পলাশিতে প্রেরিত করিলেন। মোহন দাস উপস্থিত হইয়া অত্যম্ভ যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হটল। মোহন দাদের যুদ্ধেতে ইৎরাজের দৈনা শক্তাবিত হটল। মীর ক্লাফরালি গাঁ দেখিলেন, এ কর্ম ভাল হইল না; যদাপি মোহন দাদ ইৎরাজকে পরাভর করে, আর এ নবার থাকে, তবে আমাদিগের দকলেরি প্রাণ ঘাইবে, অভএব মোহন দাসকে নিবারণ করিতে হয়। ইহাই विरवहना कतिशा नवारत्व पृष्ठ कतिशा এक अन लाकरक शांठा है लान, সে মোহন দাসকে কহিল, আপনাকে নৱাৰ সাহেৰ ডাকিডেছেন,

শীঘু চলুন। মোহন দাস কহিল, আমি রণ গ্রাপ করিয়। কি প্রকারে ষাইব ? নবাবের দৃত কহিল, আপনি রাজাজা মানেন না? মোহন দাস বিবেচনা করিল, এ সকলি চাত্রী, এ সময় নবাব সাহেব আমাকে কেন ডাকিবেন? ইহা অন্তঃকরণে করিয়। দৃতের শিরশেলদন করিয়া পুনরায় সমর করিতে লাগিল। মীর জাফরালি থা বিবেচনা করিল, বৃথিপ্রমাদ ঘটিল, পরে আছীয় এক জনকে আজা করিল, গুমি ইংরাজের সৈন্য হইয়া মোহন দাসের নিকট গিয়া মোহন দাসকে নইট করেহ। আজা পাইয়া এক জন মন্য্য মোহন দাসের নিকট গমন করিয়া অগ্রিবাণে মোহন দাসকে মারিল, সেই বাণে মোহন দাসের পথন হইল। পরে নবাবি যাবদীয় দৈন্য রণে শুল দিয়া পলায়ন করিল, ইংরাজের য়য় হইল।

পরে নবাব সাজেরদৌলা সকল বৃত্তান্থ প্রবংগ করিয়া মনে ২ বিকেচনা করিলেন, কোন মতে রক্ষা নাই, আমার দৈন্য বৈরী ছইল, অতএব আমি এখানহইতে পলায়ন করি। ইহাই খির করিয়া নৌকোপরি আবোহণ করিয়া পলায়ন করিলেন। পরে ইংরাল সাহেবের নিকটে সকল সমাচার নিবেদন করিয়া মীর জাফরালি খা মুরশিদাবাদের গড়েছে গমন করিয়া ইংরাজী পতাকা উঠিয়া দিলে সকলে সুমিল, ইংরাজ মহাশায়দিনের জয় হইল। তখন সমস্ত লোক জয় ২ ধানি করিছে প্রকৃত হইল, এবং নানা বাল্য বাজিতে লাগিল। যাবদায় প্রধান মুষ্য ভেটের দুব্য দিয়া সাহেবের নিকট সাক্ষাং করিলেন। সাহেব সকলকে আখাদ করিয়া যিনি যে কর্মো নিযুক্ত ছিলেন, দেই ২ কর্মো ভাঁহাকে নিযুক্ত করিয়া রাজপ্রদাদ দিলেন; মার জাফরালি খাকে নবাব করিয়া সকলকে আভা করিলের, ভামরা সকলে সাবধানপুর্বক রাজকর্মা করিবা, রাজ্যের প্রভুল হয়, এবং প্রজা লোক দৃঃখ না পায়। সকলে আজালুসারে কার্য্য করিতে লাগিলেন।

পরে নবাব সুজেরদৌলা পলায়ন করিয়া যান। তিন দিবস অভ্ক অভ্যন্ত কুবিত নদীর তটের নিকট এক ফকিরের আলয় দেখিয়া নৌকার কর্ণধারকে কহিলেন, এই ফকিরের দ্বান, ভূমি ফকিরকে বল, কিঞিৎ খাদ্য সামনী দেও, এক জন মনুষ্য বড় পাড়িত কিঞিৎ আহার করেবে। ফকির এই তাক্য অত্যন্ত বিষয়ে নৌকার নিকট আসিয়া দেখিল, নবাব সুজেরদৌলা অভ্যন্ত বিষয়েলন। ফকির সকল বৃত্তান্ত আভ হইয়াভে, বিকেচনা করিল, নবাব পলায়ন করিয়া যায়, ইহাকে আমি ধরিয়া দিব; আমাকে প্রের যথেন্ট নিগুত করিয়া ফাছিল, ভাহার শোধ লইব। ইহাই মনোমধ্যে দ্বির করিয়া করপুটে বিলিল, আমি আহারের সুব্য প্রন্তুত করি, আপনারা সকলে ভোলন করিয়া প্রান করেন। ফকিরের প্রিয় বাকে। নবাব অভ্যন্ত ভূটা হইয়া ফ কিরের বাটীতে গমন করিলেন। ফ কির পাদ্য সামগুরি আয়োজন করিতে লাগিল। এবং নিকটে নবাব মীর জাফরালি খাঁর চাকর ছিল, তাহাকে সন্থাদ দিল, যে নবাব সুজেরদৌলা পলায়ন করিয়া যায়, তোমরা নবাবকে ধর। এ সন্থাদ পাইবামাত্র মীর জাফরালি খাঁর অনেক লোক একত্র হইয়া নবাব সুজেরদৌলাকে ধরিয়া মূর-শিদাবাদে আনিল।

পরে তাহারা অতি গোপনে নবাব মীর জাফরালি খার পুত্র মীর মীর-ণকে সম্বাদ দিয়া ইৎরাজের বড় সাহেবকে সম্বাদ দিতে যায়; তাহাতে মীর মীরণ নিষেধ করিয়া কহিলেন, আর কাহাকেও এ সমাচার करिंदा ना। भीत भीत्। भटनाभट्या विट्यहना कहिटलन, यनि वर्ष माट्य्य এ मचाम व्यादन करत्वन, उत्तर मु। ह्यात्रहानी कमाठ नक इहेरत ना, এবং আমাদিগেরও মঙ্গল হওয়া ভার। এবং যে২ পাত্র মিত্রগণ আছে, ইহারা প্রসণ করিলেও কলাচ নদ্ট করিতে দিবে না, এসং नदाव भाष्मकरामीलाक नवावि सम्बद्धनक (उक्ती भाष्ट्रिक, जाउ व नवाव সাজেরদৌল।কে এক দণ রাখা নয়। ইহাই দ্বি করিয়া আপনি খড়্গ হত্তে করিয়া নবাব মাজেরদৌলার নিকটে উপনীত হউলেন। नवाव मारकदरमोला रमिशलन,भीत्व आभारक रहमन कतिरंड आभिरंडरह, তখন মীরণকে অনেক > দ্বতি করিলেন। কিন্তু নির্দায় মীরণ কদাচ ক্ষান্ত হইল না। পশ্চাৎ নতাত সাজেরনৌলা ঈখতের মনোযোগ করিয়া নিঃশব্দে রহিলেন; তথান মীরণ খড়গেতে নবাবকে ছেদন করিয়া পশ্চাং প্রচার করিল। এই সকল বৃতাত বড় সাহেব শ্রবণ করিয়া যথেষ্ট খেদ করিলেন, এবং পাত্র মিত্রগণ সকলেই মহাব্যথিত হট্যা কা-ওর হইলেন।

মহারাজ মহেন্দ্র পাত্রকর্মে আপন ভুাছাকে নিমুক্ত করিয়া কলিকাছায় সপরিবারে আসিলেন। তথান বড় সাহেব বিবেচনা করিলেন, যবনকে প্রভায় নাই, অছএব পূর্বে যেমত নবাবি ভার ছিল, সেমত না রাখিরা রাজ্য করতল করিতে লাগিলেন; স্থানে ২ সাহেব লোক কর্তা, নবাবের লোক কার্য্য করে, এই রূপ রাজকর্ম হইতে লাগিল; রাজ্যের শাসন দিনে ২ হইতে লাগিল, প্রজালোকের যথেন্ট সূথ, কোন শক্ষা নাই, ভয়ক্ম কেহ কাহারো উপরে দৌরায়া করিতে পারে না; রাম রাজার প্রজাদের নায় মনুষ্য সকল সুখী হইল, এই রূপে কাল ক্ষেপ্ন করেন।

কিঞিৎ কালের পর বঁড় সাহেব কলিকাভার আসিরা রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে আহ্বান করিলেন। রাজা বড় সাহেবের আজ্ঞা পাইয়া কলি-কাভার উপনীত হইরা বড় সাহেবের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন। বড় সাহেব রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়কে যথেকী মর্য্যাদা করিয়া কহিলেন, ভোমার মনোনীত যাহা, ভাহা বিস্তারিত করিয়া বল, আমি পূর্ণ করিব।

মহাবাল্প করপুটে নিবেদন করিলেন, আমি কেবল অনুগুছের আকাৎক্ষী। এট কথার পর বড় সাহেব রাজা ক্ষচন্দ্র রায়কে কহিলেন, চুমি আমার নিহার বিখাসপাত্র, এবং হোমার ময়পায় সর্বত হয়ে হউলাম; ডো মার যাচাতে ভাল হয়, হাহা আমি দর্জনা করিন, ইত্যাদি অনেক প্রিয় বাক্য কহিয়াদে দিবস মহারাজকে বাসায় বিদায় করিজেন। প্রদিবস রাজাকে বিশ্বর ২ রাজপ্রদাদ দিয়া যথেকী নদান করিলেন, জার রাজা কুনাচন্দ্র রায় পূর্বের যে রাজকের দিতেন, তাহার পাঁচ লক্ষ তলাক্ষমা করিমা কেবল ছয় লক্ষ ভঙ্গা রাজকরের নিয়ম করিয়। দিলেন ; ও রাজার স্থ্যাতি বিলাভ প্যাত লিখিয়। মহারাজ কৃক্ষচন্দ্র রায়কে বিদায় করি-ু লেন। রাজা বড় দাহেবের প্রদাদ প্রাথ হট্রাও রাজ্যের প্রভুল করিয়া আপেনি র:জবানীতে গমন করিলেন। এবং য৺নকাব যে সমাচার হয় তাহা সাহেরপর্যান্ত নিবেদন করাইবার কারণ সঞ্চাংশ ভাল এক জন লোককে সাহেবের নিকটে নিযুক্ত করিলেন। রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের পুরের যে নাম বুলিরণেরা দিয়াছিলেন, বড় মাহেবও মেট নাম প্রচার ক্রাউলেন। যাবদীয় মনুষ্য প্রাদিতে লেখেন, অগ্নিহোতী বাজ্পেয়ী এমিমহারাজ রাজেতা কৃষ্ণচতা রায় বাহাদুর। এইরুপে দর্কএই মহা-বাজের সুখ্যাতি হইল।

VIII .- His Posterity.

মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র রান্মের দুই রাণী, প্রধান রাণীতে পঞ্চ পুত্র; জ্যে ছের নাম শিবচন্দ্র, ছিরার ভৈরবচন্দ্র, ত্রীয় মহেশ্চন্দ্র, চহুর্গ হরচন্দ্র, পঞ্ম ঈশানচন্দ্র; এই পঞ্চ পুত্র বড় রাণীর। ছোট রাণীর এক পুত্র শত্রুন্দ্র; রাজার এই ছয় পুত্র। পুত্র সকল সর্বাৎশে উত্তম, নানা বিদ্যাতে বিশারদ; মহারাজ কৃষ্ণহন্দ্র রায় পুত্র সকলের রূপে এবং গুণে অহ্যন্ত কট। রাজার সর্বাক্ত পরিবর্গের সভিত অশেষ শান্তের বিচার এবং নিজাবিকারের অভিশার শাসন, ও যাবদীয় লোকের প্রতি দয়া, এবং নিজাবিকারের অভিশার শাসন, ও যাবদীয় লোকের প্রতি দয়া, এবং নিরুদ্ধে দান ক্ষুধার্ত্ত জনেরে ভোজন করান, এইরূপে কাল ক্ষেপণ। কিছু কালানস্থরে বিবেচনা করিয়া জ্যেষ্ঠ পুত্র শিবচন্দ্র রায়কে অহান্ত শাস্ত্র ওপত্তিত এবং সর্বাপ্তণে গুণান্থিত দেখিয়া নিজ রাজ্যে শিবচন্দ্র রায়কে অভিষক্ত করিয়া রাজা করিলেন, এবং আপনি ঈশ্বরে মন স্থির করিয়া ধ্যান করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। রাজা শিবচন্দ্র রায় রাজ্যাভিষিক্ত হইয়া সর্বাদা পিতৃসেবাতেই মনোযোগ করেন, এইরূপে বস্ত্রকাল যায়। মহাবাজ কৃষ্ণচন্দ্র রায়ের ঈশ্বরপ্রাপ্তি হইল।

মচারাদ্ধ শিবচন্দ্র রায় নিয়ম মতে ক্রিয়ানন্তরে কলিকাতায় আসিয়া বড় সাতেবের নিকট সাক্ষাৎ করিলেন। সাতেব অনুগুহ করিয়া যথেকী মর্য্যানা পুরুক অধিকারের প্রভুল মতে রাজ্যে বিদায় করিয়া দিলেন।

রাজা। শিবচন্দ্র রায় নিজ রাজ্যে গমন করিয়া যাবদীয় প্রধান ২ পাতা মিত্রগণকে আহ্বান করিয়া আলা করিলেন, তোমরা অনেক কালের মন্ত্রী, মহারাজ কৃষ্টন্দ্র রায় এবং আমার পূর্বপুরুষ মহাশয়েরা যেমন ২ রাজনীতি কর্মা করিয়াছেন, দেইমত আমাকেও ভোমরা মন্ত্রণ দিবা, আমি ও দেইমত কার্যা করিব। এই বাক্য পাতা নিত্রগণেরা প্রবণ করিয়া অত্যাও সন্তর্ধী হইরা নিবেদন করিলেন, মহারাজ, আপনি মহামহোপোধ্যায়, দর্ম শাত্রে পণ্ডিত, মহাশায়কে মন্ত্রণা দিবার অপেকা নাই; ভবে দখন যাহা আজা করেন তাহা নিবেদন করিব। পাত্র মিত্রগণের বাক্যে রাজা শিবচন্দ্র রায় অত্যাও ছাট হইয়া রাজপ্রাদ দিরা সকলের দ্যান করিলেন; এইরপে প্রম স্থোরাজ্য করেন।

কিঞ্জিৎ কালের পর মহারাজ শিবচন্দ্র রার মনোমধ্যে বিবেচন। করিতেছেন, পূর্বে যে দকল মহারাজেরা আমাদিনের বংশে ছিলেন, ভাঁহারা অশেষ প্রকার পুণ্যকর্মা করিয়া দেশ দেশান্ধরে খ্যাত্যাপন্ন হইয়াছেন, অতএব আমিও দেই মতাচর্ণ করিব; ইহাই দ্বি ক্রিলেন।

কিঞ্জিং গৌণে নবছীপছইছে প্রধান ২ পণ্ডিছগণকে আছান করিয়া কহিলেন, আমার ইচ্ছা যে মছতী ঘটা করিয়া একটী যজ করি, অতএব আপনারা বিবেচনা করিয়া আজা করেন, কি যজ করিব। পণ্ডিছবর্গেরা কহিলেন, মহারাজ, সোম্যাগ করেন। মহারাজ শিবচন্দ্র রায় পণ্ডিছ-দিগের বাক্টো উত্তম ২ যজ কর্গানস্থর বহুবিধ দান করিয়া ঈশরে মনোর্পণ পুর্বক লোকাস্তরে গ্যুন করিলেন।

মহারাজ শিবচন্দ্র রায়ের এক পুদ্র ঈশরচন্দ্র রায়; কিছু দিনানদ্বরে ঈশরচন্দ্র রায় মহাশয় নবছীপের রাজা হউলেন। পূর্দ্ধের যে সকল মান্ত্রিরা ছিলেন, সে সকল মান্ত্রিদিগেরও লোকাস্তর হইয়াছে, উপযুক্ত মনুষ্য না পাইয়া অত্যন্ত উদ্মিতিক, দিনে ২ রাজ্যের ক্ষণিতা এবং নানা প্রকারে অর্থবায়, এই প্রকারে কতক কাল রাজ্য করিলেন। ইহার পুদ্র গিরীশাচন্দ্র রায়। মহারাজ ঈশরচন্দ্র রায় কপশতকর নাায় দাতা এবং ঈশরে সর্কামন ভরেত্বিধ দান করিয়া লোকাস্থর গমন করিলেন।

পরে গিরীশচন্দ্র রায় মহাশয়কে সাহেব লোক সকলে যথেষ্ট অনুগৃহ করেন, এইক্ষণে তিনিই নবছীপের রাজত্র করিতেছেন; কিন্তু রাজ্যের জ্ঞানক ক্ষণিতা হইয়াছে। তথাপি পূর্ব্বের মহারাজেরা যেমত ব্যবহার করিয়াছিলেন, সেইমত আচরণ করিয়েছেন। মহারাজ গিরীশচ্দ্র রায় অত্যন্ত দাতা, যাচক জনকে কদাচ বিমুধ করেন না, এইরপে রাজ্য করিতে আর্ম্ভ করিয়াছেন, এবৎ পূর্বা ২ মহারাজদিগের হে সকল কৃত্য

ভাষার যেরপে বায় ছিল, এখন যে রাজ্যের ন্যুনতা ছইয়াছে, তথাপি দে সকল বায়ের ন্যুনতা নাই; এবং পুর্বে যেমত ২ রাজনীতি ছিল এখনও সেই মত আচরণ করিতেছেন। যাবদীয় বিশিষ্ট পণিতবর্গেরা আগমন করিলে যথেক সম্মান করেন, এবং অংশ্য প্রকারে ধীর সকলকে সম্ভোষ করিয়া বিদায় করিতেছেন, কোন মতেই নিশার ক্মা করেন না।*



^{*} This Raja died some years ago.-En.

FROM THE TRIAL OF MAN.

পুৰুষ পরীক্ষা।

I .- The Hero of Kindness.

অথ দয়াবীর কথা।

দরালু যে পুরুষ উনি দকলের শুষ্ঠে এবং দকল জীবের উপকারক; ভাঁছার নাম কীর্ত্তন করিলে দর্কাত্ত মঙ্গল হয়। ভাহার বিবরণ এই।

कां निक्ती नमी शिदत (या शिनी शृद नार्य এक नशत, शहाद अना तृकीन নামে এক যবনরাজ ছিল: সে এক সময়ে কোন কারণে মহিমাসাহ নামে আপেন দেনাপতির প্রতি ক্রন্ধ হইল। মহিমাসাহ কুপিত প্রভকে প্রাণগাহক জানিয়া এই চিম্বা করিল, যে সজ্ঞোধ নরপতিতে বিখাস কর্ত্তব্য নহে, তালা পশ্তিতেরা কহিয়াছেন। রাজা এবং সূচক ও দর্প, টিহারা কথনো বিখাস্যোগ্য হয় না, গেছেতুক সমূম দুর্শন করাটয়া ন্স করে; তাহা পূর্বে অনুভব করা যায় না। অতএব যাবৎ আমি বন্ধ না ছই, তাহার মধ্যে সম্পৃতি কোন স্থানে গিয়া আত্মপ্রাণ বক্ষা করি। এই বিবেচনা করিয়া নিজ পরিবারের সহিত পলায়ন কবিল, এবং পলায়ন করত এই বিবেচনা করিল যে আমার পরিজনের দূর গমনে माधा रहेरत ना, এবৎ পরিজন ত্যাগ করিয়া পলায়ন করা जकउंदा, ভাহা পণ্ডিভেরা কহিয়াছেন। যে লোক নিজ ক্ল ভাগে করিয়া আল প্রাণ রক্ষার্থে অতিদ্রে পলায়ন করে, দে রন্ধনত্যাগী পরলোকগত প্রায় হয়. ভাহার জীবনেই বা কি প্রয়োজন? অতএব এই স্থানে হম্বীর্দেব নামা রাজা দয়াবীর আছেন, ওাঁহার আশুয়ে থাকি। এই প্রাম্শ করিয়া यतनस्मनाशिष ताजा रचीतरमस्यत निकटि शिशा निस्तमन कतिल, रह মহারাজ, বিনাপরাধে আমাকে নক্ট করিতে উদ্যত যে প্রভূ, ওাঁহার

...

[†] This work is translated from a Sanscrit original. Its style, though far superior to that of the two preceding works, borders upon the pedantic, as will be seen from the compound terms, many of which are too difficult.

ভ্রাদেতে আমি ভোমার শর্ণাপল হইলাম। যদি আমাকে রক্ষা করিছে পার, তবে আখাদ দান কর, নতুবা এখানছইতে অন্যত্ত গমন করি। ताजा रुचीतरमत हेरा चनिया करिस्तान, रू घतन, त्री आयात मत्राता, আমি জীবদশায় থাকিতে ভোমাকে যমও প্রান্তব করিতে পারিকেন ना; यतनतास कान् वृष्ट रहेरत / अडअत अशान निष्ठरत अवश्विकत । মহিমাসাহ রাজার অভয়তাকে)তে রণভ্তন নামে দুর্গেতে নিঃশক হইয়া বাস করিতে লাগিল। ভদনন্তর মহিমাসাহ ঐ দুর্গেতে আছে, ঘবনরাজ ইহা জানিয়া হম্বীরদেব রাজার প্রাতী ক্রুদ্ধ হইয়া হস্তী ও আম এ্বং পদাতিদিনের পদাঘাতে পৃথিবীকে কম্পায়মানা করত এবং বাহনসমূহের কোলাহলেতে দিকদ্ব লোক সকলকে বধির করত এক দিবনে ভারদ্ধন্ত্রো-লজ্যন করিয়া ছম্বীরদেব রাজার দুর্গনারে আসিয়া প্রলয়কালের মেঘের বৃষ্টির ন্যায় বাণ বর্ষণ করিলেন। ছম্বীরদেব রাজা গভীর পরিখানুকু চহুর্দিক এবং নাগদন্ত সহিত প্রাচীর মুক্ত ও পতাকাতে শোভিত দার দকল, এই মত দুর্গ প্রশ্নত করিয়া অস্বাসহা এমত ধনুওবের শন্পুরিক বাণ নিংক্ষেপদারা গগণমণ্ডল পর্যায় অক্ষকার করিলেন। প্রথম দৃদ্ধের পর যবনরাজ রাজা হম্বীরদেবের নিকটে দূত প্রেরণ করিলেন। দূত হমীরদেবের নিকটে গিয়া কহিল, রাজন্, প্রাসুত ঘবনেখর ভোমাকে এই আজা করিতেছেন, যে আমার অপ্রিয় কাঘ্যকারক মহিমাদাহকে ছাড়িয়া দেও; যদি না দেও, তবে আগামি প্রভাতে ভোমার দুর্গচূর্ণ করিয়া মহিমাদাহের দহিত ভোমাকে যমালয় প্রস্থান করাটব। রাজা रचीतरानव हेरा खनिया करिस्मन, रत मृठ, आगि এ कथात उत्तर डारत কি দিব ৈ ডোর প্রভূকে খড়্গধার্বারা ইহার উত্তর দিব, কেবল বাক্যেতে উত্তর করিব না। খন, আমার শরণাগত লোককে যমও শতুভাবে দশন कतिएड भारतम ना, घरमताझ कि कतिएड भातिएत? आनश्चत जित्रकुड দৃত নিকটাগত হইলে যবনাধিপতি উচ্মান্বিত হইয়া পুনর্কার যুদ্ধারয়ঃ করিল। পরে উভয় সৈন্যের সংগ্রামে কোনং বীর সন্থাযুদ্ধ করি-ভেছে, কেছে২ পলায়ন করিতেছে, কেছে২ বা নফী হটভেছে, কোন ২ যোদ্ধারা বৈরি সংহার করিতেতে, এতদ্রপে তিন বংসর পর্যান্ত প্রতিদিন মংগ্রাম ছইল। যবনরায় অর্দ্ধাবশিকীদৈন্য ছইয়া এবং দুর্গগুরুণে অসমর্থ ছইয়া নিজ ন্গরে গমনোদ্যোগী ছইলেন। সেট সময়ে রায়মল এবং রায়পাল নামে ছম্বীরদেব রাজার দুই দুইট মন্ত্রী যবনেশরের निकटि निया अकराका रहेगा कहिन, रह यतनाधीन, आशनि स्कान ছানে যাইবেন না; আমাদের দুর্গে দুর্ভিক্ষোপরিতি হইয়াছে; আমরা দুই জন দুর্গের তথা সম্বাদ জানি, কলা কিমা প্রস ভোমার দুর্গ-পুত্ৰ যাহাতে হয় তাহা করিব। যবনরাজ ইছা গুনিয়া ঐ দুই মন্ত্রিক পুরস্কার করিয়া দুর্গরার রোধ করিল। রাজা হস্বীরদেব অভ্যন্ত

বিপদ্দেখিয়া আপনার দৈনাগণকে কহিলেন, অরে যাজদেশসমূত যোদ্ধা দকল, আমি পরিমিত দৈন্য করণক প্রচুর দেনাযুক্ত যবনেখরের সহিত কি রূপে যুদ্ধ করিব; এবং যুদ্ধনীতিজ ব্যক্তিরও ইহা সময়ত নহে, অতএব ভোমরা দুর্গহইতে দূরে যাও। যোদ্ধারা নিবেদন করিল, হে মহারাজ, তুমি করণাপ্রযুক্ত ঘবনানুরোধে যুদ্ধে আপনার মরণ স্বীকার कतिटङ्ख; आगता टामात जीवनान्गड, मन्नु ि এडामृग उद्य सामी যে ভূমি, ভোমাকে ভাাগ করিয়া কেন কাপুরুষের পথে গমন করিব? এ অকর্ত্র। যবনরাজ অভি ক্ষুদু, ইহাকে স্থানান্তরে পাঠাইব, তাহাতেই আশিুচদিনের রক্ষা হটবে; অতএব এট আরন্ডট রক্ষণীয় সোকের রক্ষার নিমিত্তে হউক। পশ্চাৎ যবনদেনাপতি কহিল, হে মহারাজ, আমি বিদেশীয়, এক দামান্য লোক; আমার রক্ষার নিমিতে কেন স্ত্রী এবং পুল ও রাজ্য আর আত্ম প্রাণ নফট করিবা? আমাকে ভাাগ কর। হ্রীরদেব রাজা কহিলেন, হে মহিমাসাহ, তুমি আমাকে এ কথা কহিও না; নখর যে ভৌতিক শরীর, তাহাতে যদি চিরস্থায়ি যশ লভ্য হয়, তবে কোন্জন তাহা ত্যাগ করিতে বাসনা করে, যদি তুমি আমার কথা মান্য কর, তবে ভোমাকে নির্ভয় স্থানে পাঠাইতে পারি। যবন দেনাপতি উত্তর করিল, আপনি আমাকে এ প্রকার আজা করিবেন না; আমি দর্যাণ্ডে বিপক্ষের মন্তবে খড্গ প্রহার করিব, কিন্ত ব্রীলোক-দিগকে দর্গের বাহির করুন। স্ত্রী সকল প্রহাতর করিলেন, আমাদের স্বামী শর্ণাগত লোকের রক্ষার নিমিতে স্বর্ণাতা করিতে প্রবৃত্ত हर्डे डिल्बन, जामता छाँहा वाछित्तरक कि श्रकात्त পृथिवीरङ थाकिव; যেমন লভা সকল বৃক্ষ ব্যতিরেকে অবস্থিতি করে না, সেই রূপ স্থী लाक পতि ठा छित्दरक जीवल गांग्र थाकित्व ना। मरमारत्व मध्या माध्वी ক্রীদিনের প্রাণ স্বামির জীবনানুগত হয়; ভরিমিত্তে আমরা বীরপকনীর উপগুক্ত কার্য্য যে অগ্নি প্রবেশ, তাহাই করিব, যেহেতৃক হন্দারদেব রাজার পরার্থে প্রাণত্যাগ ম্বীকৃত হইয়াছে, এবং বীরগণের সংগ্রাম অঙ্গীকৃত হইয়াছে; তদ্রপ যোষিদর্গেরও অগ্নিপ্রবেশ অভিমত হইয়াছে। অনমূর প্রভাতে উপস্থিত যুদ্ধে রাজা হয়ীরদেব সরাহযুক হটরা হস্তিতে আবোহণ করিয়া উত্তম যোদ্ধারণের দহিত মিলিত হইয়া পরাক্রম করত দুর্গইটতে বহির্গমন করিলেন। পরে এড্রপ্রহা-(त विभक्तित रेनना अवर रही अ अधमगृहक निभाव कतिया अवर পদাতিদিগকে সংহার করিয়া দেনাগণকে ভয়প্রদর্শন পূর্বাক কবন্ধবর্গকে নৃত্য করাইলেন, এবং রুধিরধারাপ্রবাহেতে পৃথিবী ভূষিতা করিয়া, এবং বাণেতে বিক্ষতশ্রীর হইয়া সমুখ যুদ্ধে হস্তিপৃষ্ঠহটতে ভূমিতে পড়ি লেন, এবং শরীর তাাগ করিয়া তৎক্ষণাৎ দুর্গ্যমঞ্লে লীন ছইলেন। সেই কালে পণ্ডিতের। কহিলেন, যে উত্তম প্রদাদ ও অনুপম ওণ বশীভূচা

মুবঙি জ্ঞা আরে বহু সম্পতি সহিত রাক্ষ্য ইহার এক কছও কেহ তাাগ করিতে পারে না; রাজা হম্বীরদেব এই সকল সামগুদী পরিতাাগ করিয়া শর্ণাগত লোকের রক্ষার নিমিতে রংশ প্রিত হইলেন।

II .- The Hero of Truth.

অথ সত্যবীর কথা।

কলিকালে লোক সকল কামাদিতে মগ্ন হউয়া মিথ্যাবাদী হুট্রেন, কিন্তু সত্যবীরের কথা অবণ করিয়া সকল পাপহুউতে মুক্ত হুউবেন।

পূর্ব কালে হত্তিনা নগরে মহামল নামে এক ঘবনরাজ ছিলেন, তিনি সম্দু পর্যায় ভূমঙল শাসন করিয়া রাজ্য করেন। মহামলের ঐশ্বর্যাদহনশীল কাফর রাজ দৈন্যসমূচেতে বেটিত হইয়া মহামলের দৃহিত যুদ্ধ করিতে তাঁহার নিকটে গেলেন। যবনেগর কাফর রাজকে নিকটোপন্থিত জানিয়া বাহ্লীক দেশজ এবং অন্যদেশীয় লক্ষ্ণ অংখাত্ত-মেতে পরিবৃত হইয়া নগরোপাতে গিয়া সমর স্বীকার করিলেন। তদনত্ত্ উভয় পকের যুদ্ধে যবনরাজের যোদ্ধা দকল কাফর রাজের বলবান বীরণণ কর্তৃক ভাডামান হইয়া রণভূমিহইতে পলায়ন করিল। পশ্চাৎ ষেমত দিৎহভরেতে হত্তিমুখ পলায়ন করে, দেই প্রকার মর্ণভরে পলা-समान निज योकांश १ रक प्रतिशा घटान मत् कि एए छन, रह आयात ঘোদ্ধা সকল, ভোমাদের মধ্যে রাজা কিলা রাজপত্র এমত কেহ নাহি स मम्पुणि व्यति छात्राट छन्न व्यामात सम्मानगरक निज नाळ्ताल किलि। काटल त निभिष्ठ स्थित कतिएठ भारत ? यत्रसाभित अहे ताका सनिया কর্ণাটজাতি নরসিৎহদের নামা রাজকুমার এবং চোহান জাতি চাচিকদের नारम এक तांक्ष भूख এই দুই जन तांजारक निर्वामन कतिरामन, रह बामिन, নীচগামি সলিলপ্রায় শতুভয়ে পলায়মান যে ডোমার সেনাগণ, ডাহা-দিগকে সম্পুতি কে নিবারণ করিছে পারে? যদি আপনি এক ক্ষণ ^{ইত}ভতো ভূমণ করিয়া এখানে পুনশ্চ আদিয়া দেখেন, তবে আমরা ভোমার শত্তে খড়গধারে পরিচিত কিলা চিতাশারী করি। যবনাধি-পতি কহিলেন ভোমরাই দাবু, ভোমাদের দুই জন ব্যতিরেকে অন্য কোন্ পুরুষ এমত সাহস করিতে পারে? তাহার পর নর্সিংহদেব নাহনে সত্রিতবাজ হইয়া বদ্রুপাতের ন্যায় কশাঘাতে অখকে শীঘ্-গামী করিয়া এবৎ বিপক্ষবর্গের অলক্ষিত হটয়া কাফর রাজের দৈনামধ্যে প্রবেশ করিলেন। পরে নর্সিংহদের অভিশর উদ্দাপ্ত ^{বের} জ্বারের তলস্থিত কাফর রাজের স্থান্য শালার প্রহার করিলেন।

কাফর রাজ সেই অন্তপ্রহারেতে প্রাণত্যাগ করিয়া ভূমিতে পড়িলেন। সেই কালে চাচিকদের ভূতলে পতিত এবৎ তাক্তমীবন সেই কাফর রাজের মস্তক ছেদন করিয়া যদনেখরের নিকট আনিয়া দিলেন। যবনরাজ ছিল্প মন্ত্রক বেপিরা জিলাদা কবিলেন, এ মন্ত্রক কাহার? চাচিকদেব উত্তর করিলেন, এ মন্তক কাফর রাজের। যবনরাজ পুনশ্চ জিজ্ঞাদা করি-লেন, কোন্ নীর কাফর রাজকে নফ্ট করিয়াছেন? চাচিকদেব উত্তর করিলেন, হে রাজাধিরাজ, অনুপম পরাক্রম এবং নরশুষ্ঠ জ্ঞীনরসিংহদেব কাফর রাজকে নন্ট করিয়াছেন, আমি ওাঁহার পশ্চাৎ গমন করিয়া কাফর রাজের শিরশ্ছেদন করিলাম। যবনশ্বামী পুনর্কার জিজাদা করি-लान, नत्मि ९ इएन काथार আছেন। ठाठिक इन्द कहि इलन, इ छुलाल, কাফর রাজের সন্নিধিবত্তী, এবং স্বামি সংহারজন্য কোপে কম্পিত कटल दत अभव दोत्रागक र्कृत हमामान आग्न मत्नि १ हटन दटक दनियाणि ; দম্পৃতি তিনি কোথায় গিয়াছেন এবং কোথায় আছেন, তাহা আমি জানি না। সেই ফংণে যবনেখর হতনায়ক এবং পলায়মান শতুসেনা সকলকে দেখিয়া প্রমাহ্বাদিত চউলেন, এবং প্লায়িত বিপক্ষ দৈনোর পশ্চাদ্গামি নিজ দেনাগণকে কহিলেন, হে আমার যোদ্ধাগণ, ভোমরা কেন শতুসেনাগণকে নক্ট করিতেছ? সম্পুতি আমার রাজ্য রক্ষাকর্তা এবং কাফর রাজান্তক যে নরশুেষ্ঠ জ্ঞীনরসিংহদেব, ওাঁহাকে আনিয়া দেও। পরে যবনরাজ অনুসন্ধান করিয়া অনেক নারাচাল্রপ্রহারেতে ছিল্লভিল্ন শরীর এবং গলিভ কৃধিরের সহসু ২ ধারাতে সফুটিভ কিংশুক পুম্পের নাার ও অতিশয় বেদনাতে মূর্চ্চিত নরসিংহদেবকে দেখিয়া उ अक्र १९ (घा छेक इ डेटड नाभिशा जिलामा क ति एन न, (इ न त मि ९ इ एन त, তুমি বাঁচিবা? নর্দি∿হদেব উত্তর করিলেন, হে রাজাধিরাজ, আমি যাহা করিয়াছি, আপনি তাহা অবগত হইয়াছেন? নরপতি প্রত্যন্তর করিলেন, চাচিকদের কহিলেন যে তুমি আমার শত্রু বিনাশ করিয়াছ, তাছাতেই আমি ভোমার সমন্ত কাষ্ট জানিয়াছি। নর্সিৎহদেব কহিলেন, আমি যাঁহার হিতেছাতে অভিশয় দুঃসাধ্য কর্ম স্বীকার করিয়াছিলাম, যদি তিনি সে সকল জাত হইয়াছেন, তাহাডেই আমার শুমরূপ বৃহ্ন ফলবান **एडेल,** অতএत আমি नीर्घकोती रहेत। उपनस्तत यतनताक नत्ति श्टापटत्त শরীরে অভিশয় মগ্ন বাণ সকল উদ্ধার করিয়া এবং নানা প্রকার ঔষধ দেবন ও পথ্য প্রয়োগেতে অপে দিনের মধ্যে নর্সিংহকে আক্ষত শরীর করিলেন। পরে যবনরাজ সহসূহ উত্তমাখ ও লক্ষ্ স্থ্ণিছত এবং চামর আর অনেক অর্থ দিয়া নর্সিংহদেবের পুরস্কার করিলেন। প্রসাদ প্রাপ্ত হইয়া নরসিৎহদেব যবনরাজকে নিবেদন করিলেন, হে রাজাধিরাজ, যুদ্ধ করা রাজপুত্রদের বাভাবিক ধর্মা, আমি কি অনুত कर्म कतिलाभ य चामात अञापृत्र मम्मान कतिलानी स्म य इउँक, धिर

আমার প্রভার বিহিছ ৮ইল, তবে চাচিকদেবের সমান করুন, ভিনি
সভা প্রতিপালনের নিমিতে মহারাজের নিকটে শালুর মন্তক আনয়ন
করিয়া আমার যশঃ প্রশংসা করিয়াছেন, মীয় পুরুষাথ প্রকাশ করেন
নাই; ইনি মারণচিছরপক শালুমন্তক আনিয়াও, আমি বৈরিবিনাশ
করিয়াছি, ইহা কহেন নাই, তয়িমিতে প্রথমত চাচিকদেবের প্রভার
কর্ত্রা। পরে চাচিকদেব কহিলেন, হে রাজকুমার, আমার নিমিত্রে
প্রভার বক্রা নহে, আমি কেন ভোমার শৌর্চাের ফল লইয়া পরের
উচ্ছিউভোগী হইব লহা শুনিয়া নরিসিছদেব কহিলেন, হে মতারীর
চাচিকদেব, তুমি সাধু; ভোমার এই সত্তাতা হেতুক বুরিলাম, তুমি পণ্ডি
এবং সত্তীপুল্ল ও অতি প্রশংসনীয় মহাশয়। তদনস্বর যবনেশর এ
দুই রাজপুল্লের প্রসপ্রালাপে ছউচিত হইয়া দুই রাজকুমারের তুলা
প্রভার করিলেন।

III .- The Miser.

অথ কৃপণ কথা।

কুপণ লোক ধন দান করিতে পারে না, এবং ভোগ করিতেও পারে না, এই কারণ সকল লোকের অফারণীয় হইয়া কোন্লোকের অপ্রিয় না হয়? অথাং সকলেরি অপ্রিয় হয়। সেই কৃপণের বিবরণ কহাহাইতেভে।

মথুরা নগরীতে গুঢ়ধন নামা এক বণিক অত্যন্ত কৃপণ ছিল। দে পিপেলীর বাণিক্স্য করিয়া অভিশয় ধনবান হইল। এক সময়ে আসন্ম দূর্ভিক্ষ দেখিয়া এই চিয়া করিল, যদি এই দুর্ভিক্ষেত্রে প্রীপুরাদি পরিবার-গণ আমার সকল অর্থ ভোজন করে, তবে সেই ধনশোকেতে আমার প্রাণ বিয়োগ হইবে; সে অভিমন্দ; যেহেতুক ধনবান পুরুষ যদি একাকী থাকে, তবে সেই সম্পত্তিই তাহার পর্ম মিত্র হয়; তদ্ধিন্ধ যে সকল, তাহারা অনাত্মীয় হয়, যেহেতুক সংসারের মধ্যে যত বন্ধু আছে, সকলি ধন্মুলক। অভ্যাব নির্ধন হওয়া অনুচিত; সম্পুতি অন্যের অদৃশ্য দানে সকল ধন রাখি; পশ্চাং অপ্রাপ্ত ধনের প্রাণ্থি চেন্টা করিব, এই বিবেচনা করিয়া তাহা করিল। পণ্ডিতেরা সেই মত কহিয়াছেন, কৃপণ লোক রেশ ও পাপাচরণ পুরুক্ত ধন উপাত্মন করিয়া এবং অপভ্যাদি বহু অপশ্যান করিয়া তদর্থে ধন ব্যয় করে না, এবং আপনিও কিছু ভোগ করিতে পারে না। অনন্ধর এক সময় দুর্ভিক্ষ আগত হইলে সেই কৃপণ পরিবার্দিগকে অন্ধাভাবে সিন্তুয়াণ হইয়া কিছু ধন যাক্সা

করিলে সেই কৃপণ এক কবিতা পাঠ করিল, তাহার অর্থ এই, হে পরিবার সকল, খন, কৃপণ লোকের ধনই প্রাণ, যদি ভোমরা সেই ধন গুহণ করিতে ইচ্ছা করিছেছ, তবে অপ্রাপ্তধনশোক যে আমার প্রাণ, তাহা কেন গুহণ না কর? অর্থাৎ আমার ধনগুহণ করাতেই প্রাণগুহণ সিদ্ধ হইবে, কিন্তু কেবল প্রাণ গুহণ করিলে সে প্রাণ ধনশোক পাইবে না; অতএব ধনগুহণহইতে আমার প্রাণগুহণ করা ভাল। এই রূপ কেবল বাক)বায়েতে তাহার স্ত্রী পুত্র প্রভৃতি সকলে পঞ্চর পাইল। আপনিও অনশনেতে প্রাণমাত্রাবশিষ্ট হইয়া বিবেচনা করিল, আমি যদি পুত্র কল্লতাদিকে স্থোপাজির্ভ ধন দিলাম না, ভবে নিজ জীবন त्रकार्था रकन धन रखासन कतिता े अव चसन्हीन हरेंगा सीवरन वा কি প্রয়োজন ? এই বিবেচনাতে আত্ম প্রাণ রক্ষার্থেও ধন ব্যয় করিল না, কেবল উপবাদেতে দিন যাপন করিয়া অতি দুর্বল **হ**ইল। সে^ড সময় তন্ত্রনাসি দয়ালু পুরুষেরা ঐ বণিক্তে অতিক্ষণি দেখিয়া কহি-লেন, ধনসক্তের তোমার প্রাণবিয়োগ হইবে, এমত অনুভব হইতেছে; তথাপি সেই অর্থ বায় করিতে পার না। এমত ধনছারাতুমি কি কার্য্য করিবা? অতএব ডোমার মরণই উচিত, যেহেতুক কৃপণ লোক ধন উপাজ্জন করিতে দুঃখ পায়, এবং ধনক্ষতি হইলে শৌক পায়, এবং সেই অর্থের বিতরণজন্য ও ভোগজন্য যে সুথ ভাহা প্রাপ্ত হয় না; না মরিলে যে ধন উৎসাহপূর্বক দান করিতে পারে না, এবং ইচ্ছাক্রেমে ভোগ করিতে পারে না, দঞ্চয়কর্তার সেই ধন নিক্ষল থাকে, এ অতি দুঃখের ও থেদের বিষয় হয়। ইছা শুনিয়া দেই গুঢ়ধন কহিল, হে নগরবাসি পুরুষেরা, আমাকে কি কহিতেছ? আমি অসুব্যয়েতেও বস্বায় স্বীকার করি না, অর্থাৎ প্রাণবায় করিতে পারি, কিন্তু ধনবায় করিতে পারি না। অনন্তর প্রতিবাদি পুরুষেরা কহিলেন, তবে তুমি পঞ্চতর পাইলে রাজা কিয়া চোর ভোষার ধনগুহণ করিবেন। বণিক কহিল, অনাং বুদ্ধিহীন জনের ধন অনালোক গুহণ করিতে পারে, আমি আপন ধন গলায় বাঁধিয়া মরিব, ইহা কহিয়া ধনের পোঁটলী লইয়া মর্ণার্থে গলাতীরে গেল। সেধানে এক নাবিককে সন্বোধন করি-য়া কহিল, ও ভাই কৈবর্ত, আমি আপনার কটিন প্রাণ ত্যাগের বাদনা করিয়াও ত্যাগ করিতে পারি না, সম্পুতি পরিজনের শোকেতে বড় ব্যাকুল ছইয়াছি, আমাকে জলে মগ্ন করিয়া নত কর, আমি চোমাকে এক সুবর্ণমূদা দিব। ধীবর কহিল, ভোমার কথায় বিখাদ হয় না, স্বর্ণমূদা আমাকে দেখাও। তদনতত্ব বণিক কৈবর্তক হণ্মৃদু দেখাইয়া এবং ুষয়ৎ পুনঃ ২ দেখিয়া কহিল, হে ভাই নাবিক, আমি এই সকল ষণ্মুদু৷ বার্ষার অগ্নিতে দপ্ত করিয়া অভিশ্বন্ধ করিয়া রাখিয়াছি, ইহা অন্য ভাহাকেও দেওয়া যায় না, তুমি পুণ্যার্থে আমাকে নক্ট করহ। নাবিক

দেই সকল সুবর্ণমূলা দেখিয়া বলিল, ভাল, পুণাথেই ভোমাকে নফী করিব। ইহা কহিয়া দে ঐ গুড়ধন বণিককে জলে অভ্যন্ত মগ্ন করিয়া মারিল, পরে দেই দকল অণ্মুলুা লইয়া চরিতার্থ হইল।

পণিতের। কেবেন, সকলের অনুপকারক এবং সকল ভোগেতে রহিত এমত যে কৃপণহস্তাগত ধন, এবং সেই বিষয়ে যে অবিবেচনা, সে কেবল ধনস্থানির হৃদরে ধেদ জন্মায়, এবং অমঙ্গলদায়ক হয়, ও স্কুল যশ নফী করে, আরু ফ্লানি জন্মায়।

IV .- The indolent Man.

অথ অলস কথা।

সকল কার্য্যের উল্যোগের যে হেতু সেই উৎসাহ, তাহাকে জীবের ধর্মবিশেষ কহা যায়। সেই উৎসাহহীন যে মনুষ্য সে অলস হয়। তাহাব উদাহবণ এই।

মিথিলা নগরীতে বীরেখর নামে এক রাজমন্ত্রী থাকেন, ভিনি मानमील, এবং অত্যন্ত महालु, मकल मुर्नेड ও অনাথ লোকদিগকে প্রতিদিন তাহাদের ইচ্ছামত আহার দান করেন, কিন্ত ঐ দকলের মধ্যে অলস লোকদিগকে আন এবং বস্ত্র দান করেন। যেহেতৃক অলম লোক জঠরাগ্নিতে ব্যাক্ল হইয়াও আলম্য প্রযুক্ত কোন কর্মা করিতে পারে না, অতএব অলম লোক সকল দুর্গতের মধ্যে প্রধান গণিত হইয়াছে, অথবা আলস্য পর্ম সুধস্থান তদাঞ্জির্পে খ্যাত, যেহেতক আলস্যমাত্রাবলন্ধি প্রথের অক্ষর মন কোন বিষয়া-কাঙ্কা করে না, এবং দে ষয়ং কোন অভিলয়িত কার্য্যে শ্রমযুক্ত হয় না, কেবল জঠরাগ্নি তাহার নিদাজন্য দৃথ নতী করে, আমি এই विदियान कृति। পরে অনেক লোভী লোক অলমদের অভীকী লাভ खनिया त्मथात्न शिया अलममित्रत् महित थाकिल, यारहुक समाठी-য়ের সহবাদ সকলের দুথকর হয়, এবং বজাতীয়ের দুথ দেখিয়া कान् कीव त्मथात्न ना यात्र? পরে ধুরেরা অলদদের সুথ দেথিয়া কৃত্তিম আলস্য প্রকাশ করিয়া দেখানে ভোজনদুব্য গুহণ করিতে লাগিল। পশ্চাৎ নিয়োগি পৃত্যেরা অলসশালাতে অনেক দুব্য ব্যয় জানিয়া এই পরামর্শ করিল, স্বামী অলসদিগকে অক্ষম জানিয়া থাদ্য দুব্য দেন, কিন্তু অলসভিন্ন অন্য সোকও কপট করিয়া দুব্য পুহণ করিতেছে, দে আমাদের বৃদ্ধিভ্ম প্রযুক্ত, অতএব কেবল আমাদিগের দোষেতেই প্রভুর ধন নট হইতেছে, ইহাতে আমরা প্রভাবায়ী হটব ; অতএব সকল অলমদের প্রীক্ষা করি। এই প্রাম্শ করিয়া অলমেরা

যে গৃহে শয়ন করিয়াছিল, সেই গৃহে অগ্নি লিয়া নিকটে থাকিল, তথন ঐ গৃহে শয়িভ ধৃত দকল গৃহেতে অভিশয় প্রজ্ঞানিভাগ্নি দেখিয়া छয়েতে मृद्र পলায়ন করিল। অপ্পালস পুরুষেরাও পলায়ন করিল। প্রকৃত অলম চারি জন মেখানে শয়ন করিয়া প্রসপ্র কথোপকথন করিতে লাগিল, এবং তাহাদের মধ্যে এক জন বল্লেতে আপনার ম্थ । । किया विलिख्ड, अर साइ, कि निमित्त अहे कामाहम हहेत्उए ? দিভীয় ব্যক্তি কহিল, আমি অনুভৱ করি, এই গৃহে অগ্নি লাগিয়া থাকিবে। তথন তৃতীয় অলস কহিতেছে, এখানে এমত ধার্মিক লোক কেছ নাই যে আদু বিশ্ব কিমা আদু শিঘা করণক আমাদের শরীর আবৃত করে? চতুর্থ অলম ইহা শুনিয়া কহিল, ও বাচাল দকল, ভোমরা কত কথা কহিতে পার ? কি মৌনী হইয়া থাকিতে পার না? পশ্চাৎ নিয়োগি প্রুষেরা সেই চারি অলম লোকের পরস্পারা-লাপ শুনিয়া তাহাদিনের উপর অগ্নিপতনের ভয়েতে সেই চারি অলস লোকদের কেশাকর্ষণ করিয়া শীঘু গৃহের বাহিরে আনিলেন। অনস্তর নিয়োগী পুরুষেরা এক শ্লোক পাঠ করিলেন, তাহার অর্থ এই, रामण खीरलारकत सामी शि, अतर वालकिरात सननी शि, मिहे कुल ज्ञाम लाकिमितात मग्नाल शृत्यहे गिछ, उम्राटित्तक जना গতি নাই। পরে দেই নিয়োগী পুরুষেরা অলমদিগতে পূর্মাহইতে অধিক সামগ্রী দান করিতে লাগিলেন।

V.—The ready witted Man.

অথ সপ্রতিভ কথা।

উপখিত ব্যাপারে যাঁহার বৃদ্ধি নিতকঁদংমুকা হইয়া স্ফৃতিমিটী হয়, উাহাকে সপ্রতিভ কহা যায়। অথবা বৃদ্ধির নূডনং যে উল্লেষ তা-হার নাম প্রতিভা, দেই প্রতিভাযুক যে পুরুষ তাহার নাম সপ্রতিভ, তাহার ইতিহাস।

পূর্বকালে পৃথু নামে এক রাজা ছিলেন, তিনি এক সময়ে সুলোচনা নামে নিজ প্রেয়নীর সহিত মৃগয়ার কৌতৃক দেখিতে র্থারোহণ করিয়া ও চতুর জিনী সেনাতে বেন্টিড হইয়া নগরের বাহিরে গেলেন। পশ্চাথ এক বনমধ্যে উপস্থিত হইলে, সৈনোরা মৃগের অনুস্থান ক্রিছে নানা দিগে গেল, রাজা রাণীর সহিত এক রথে অর্ণামধ্যে ভুমণ করত সদ্দের শিশুকে দেখিয়া রাণীকে কহিলেন, প্রিয়ে, আশ্চর্যা দেখা, সিংহ ও বাাত্মেতে দেখিয়া রাণীকে কহিলেন, প্রিয়ে, আশ্চর্যা দেখা, সিংহ ও বাাত্মেতে

त्राश्व এই বন, ইহার মধ্যে কি প্রকারে মনুষ্যশিশ্বর সঞ্চার হটল? রাজপতনী কহিলেন, এই বালক পূর্ণচল্রের ন্যায় দৃষ্টিপ্রিয়, ইহাকে দেখিয়া আমার হাদয় করণাদুহিউতেছে; হে নাথ, যদি ভোমার আজা হয়, তবে এই বালককে লইয়া গৃহে গিয়া পুলম্বেহেতে প্রতিপালন করি। রাজা তাহা তানিয়া অত্যন্ত ক্রে হইয়া কহিলেন, আ: পাপীয়সী, তুমি ঘুণারহিতা, এবং অতি সাহসিকা, কি নিমিতে অজাতজননীজনক এবৎ চণ্ডালশকাদপদ এই যে বালক, ইহাকে ভূমি অকারণ কোলে क दिवा ? दा अप परियो कि हिस्लान, एर दा अन्, भूरूष कथन अनिमानी ग्रह्म না, দশা নিক্নীয়া হয়। পণ্ডিভেরা কহিয়াছেন, পুরুষ ক্থনও নি-कतीय हय ना, मुर्फणा निकनीया हय; तत्र शृत्वत छ । एउ अपनी तरुन-গর্ভা নামে খ্যাভা হন, এবং কাহার ললাটে বিধাতার কি প্রকার লিখন আছে,ভাহাও জানিতে পারা যায় না,আর প্রশংসিত কুলডাডি-রেকে সামান্য বংশকাত বালকের এ প্রকার সৌন্দর্য্য হয় না; অভএব করণ। প্রযুক্ত ইহাকে পরিত্যাগ করিতে পারি না। অনম্বর রাজা মহিষীকে भूनः २ तात्व कतिरलन, उथाभि तानी तालक गुरुर्वामा डा रहेश। सृभाल কর্তৃক তির্ফুডা হইলেন। ভূপালেরা বভাবত আজোভলাসহিষ্ হন, এবং রাজপতনীরাও দৌভাশামদগর্বিতা হন, এই প্রযুক্ত পর্দপর কলহ করিয়া রাজা রাণীর প্রতি অত্যন্ত ক্রোধ করিলেন, এবং রাণীকে वृथ्हें इंट क्यार्वाह्य क्वांह्या मित्नमा शत् वासा रेममामिश्यक व्याजा করিলেন, যে কেহ এই যে নীচানুরাগিণী দুর্ভগা ব্রী, ইহার সহিত গমন করিবে, আমি শত্র ন্যায় তাহার মস্তকচ্ছেদন করিব। পণিতেরা কহিয়াছেন, জাননাশক যে কোপ সে পুরুষের কোন্ দুরবস্থা না করে? অন্নরাঘাত এবং গৃহত্যাগ ও বলহানি আর সুক্রছেদ এট সকল অমঙ্গল করে। পশ্চাৎ রাজা সকল সেনার সহিত নিজ নগরে গেলেন। রাজপতনী দেই নিজ্জন বনমধ্যে অভিশয় ভীতা হটয়া এট চিষ্ধা করিলেন, নিষ্ঠুর পুরুষের পতনীর পরিণামে এট রূপ দশাট হয়, অথবা এ চিম্বা দৃথা; আমি যে কর্মা করিয়াভি, সম্পুতি তদনুদারে कार्य) कति। এই विद्युचना कृतिया भग्ननीय दुख्त महित तालक्ष्क ক্রোড়ে লইয়া এবং দ্ঞার্ণাের ভল্মেতে আপনার বত্ত মলিন করিয়া ও শরীরহইতে সমুদায় ভূষণ পুলিয়া লইয়া এক দিগে গমন করি-লেন। কিঞিৎ দুরে গিয়া হটাৎ বুলাপুর নামে এক গুমি পাইলেন, দেখানে দয়াবতী এক ব্রাহ্মণপ্রকাকে দেখিয়া প্রণাম করিয়া কহি-লেন, হে ভাগ্যবতি, আমি দরিদ্রের ব্রী, সপকনীর নিমিত্তে দুঃখিতা হুরুয়া তোমাকে আশ্রেষ করিয়া জীবনরক্ষা করিতে ইন্ছা করি। বাহ্মণী কহিলেন, ভুমি দরিদুের বধূ নহ, কোন রাজপতনী বট, গেহেতুক ডো-মার কর্ণন্তর কুণ্ডল ত্যাল করিয়াছে, এবং বাহুদ্ব রহলাভরণ পরি-

ভ্যাণ করিয়াছে, ও হারভ্যাণের চিক্যুক্ত ভ্রন্তম, আর পান্যুগল নপ্রহীন; সম্পুতি ভূষণ ত্যাগ করিয়াছে যে ভোমার সর্বাঙ্গ, সে मिलर्याचाता अहे निर्देशन कतिएडएए, जूमि च्यदणा कान तास्त्रभञ्जी বট, কিন্তু এখন আমার নিকটে ভোমার অবস্থিতি করণে কোন বাধা নাই। পরে ঐ ব্রী ব্রাহ্মণীর আশুয়ে থাকিয়া বালকের প্রতি-পালন করিতে লাগিলেন, এবং বিধানপুর্বক ঐ বালকের বিশাধ এই নাম রাখিলেন। বিশাখ রাজীকর্ত পালিত হইয়া কৌমারদশা প্রাপ্ত ছউলেন। পরে এক দিন রাণীকে জিলাসা করিলেন, আমার পিতার নাম কি? রাণী উত্তর করিলেন, আমি তাহা জানি না। বিশাখ ভাহা খনিয়া কহিলেন, তুমি আমার জননী; যদি আপনি আমার পিডার নাম না লান, তবে আমি অমূলক বিশাধ, আর আমি অজাতপিতৃক, তবে কি নিমিতে প্রাণ ধারণ করিব বিহেতুপুত জিমিলে পিডা আছ্লাদিত হন; আমি জিমিয়ালি, ইহাতে কে আছ্লাদিত হইতেছেন? এবৎ জীবিত পুত্র পিতার তর্পণ করে, আমি জীবদ্দশায় থাকিয়া কাছার তর্পণ করিব? অতএব আমার জীবন অসার্থক। এই রূপ বিলাপ কর্ড আভি কাত্র হইয়া উলৈঃ হরে ক্রন্দন করিতে লাগিলেন। রাজমহিবী मिहे मनिश्व वालकरक मत्रानाउ लिथिया। शृक्षवृक्षा सकल कहिरलन, যে হে পুত্র, এই সমুদায় বৃত্তাস্থ শুন, এবং ভোমার প্রতি লেছ করা এই যে অপরাধ, ভাহাতে আমার এই দুর্দশা হইয়াছে। বিশাধ मकन मचान सनिया कहिल, आश्रीत अहे अकात मूर्मणा बीकात করিয়াছেন, তথাপি আমাকে ত্যাগ করেন নাই, ইহাতে বুঝি যে আমিই ভোমার দুর্দশার কারণ, এবং আমার প্রতি ভোমার মহতী প্রত্যাশা আছে, তল্পিটের পরিত্যারঘোর্য যে প্রাণ, তাহা ভাগে করিব না, কেবল ভোমার আশা পরিপূর্ণ করিবার নিমিতেট বাঁচিব। কহ, ভূমি কোথায় আমাকে পাইয়াছ? যেহেভুক দেশ এবং কালের অনুদারে ও পূর্বাপর জানেতে জাতব্য কার্য্য বিষয়ে পুরুষের বিবেচনা হইতে পারে; তাহাতে কোন্পুরুষহইতে আমার জন্ম তাহা দেখানে গিয়া নিরূপণ করিব। পশ্চাৎ ঐ কুমার রাণীর সহিত গিয়। সকলার্ণ্য ভূমণ করিয়া এক সরোবর তীর্ত্ব সূথাদীন তপংশীল নামা धिवित्क मिथिया अनि शृक्षक नित्तमन कतिलान, ए महासम, আমার প্রতি প্রসন্ম হও। ধৃষি কিজাসা করিলেন, কে ভূমি? কি হেরু ञानिशाছ? পরে বিশাধ মুনিকে দকল বৃত্তার নিবেদন করিলেন। ভাছা শুনিয়া থবি কহিলেন, যদি ভোমার দেই সময়ের শয়নীয় বস্ত্র পাওয়া যায়, ভবে ভোমার পিভাকে ও মাভাকে জানিতে পারি। পরে কুমার রাণীর নিকটহইতে সেই বক্তথও আনিয়া মুনিকে দেখাইলেন। মূলিও নিজ গৃহহুইডে সেই বস্তের বিভীয় ৰঙ আনিয়াদেৰাইলেন,

এবং উভয় খণ নিরপণ করিয়া এক বজের দুই খণ, ইহা নিশ্চয় করিয়া মুনি কিছু লফ্জিড হটয়া কহিলেন, হে ক্যার, বৃত্তার ভান। আমি তপ্যারেয় করিলে দেবরাজ ইন্দ্র ভীত হইয়া মনে করিলেন, যে रिक मृति আমার ইল্র লইবেন, ইহা ভাবিয়া আমার তপোভলের নিমিত্তে ডিলোতমা বিদ্যাধ্রীকে আমার নিকটে পাঠাইলেন। পণ্ডি-তেরা কহিয়াছেন, কমলের ন্যায় চক্ষু এমত রুমণীয় কজ্জলমলিন क्रोटक्रांटक करलिडिटिस य लाक, मि मन्भरमण शुरुव करत ना, अ ভন্ন গণনা করে না, ও প্রতিষ্ঠাভিলাবী হয় না। অতএব দেই ব্রীতে আমার ঔর্দে তুমি জনিলা, ওিলোত্মা আমার তপদ্যাভলেতে কৃতার্থা হটয়া নিজ পরিধানবক্ত দুই ভাগ করিয়া ক্ষরণার্থে আমাকে অন্ধবন্ত দিয়া দিতীয়াদে শয্যা করিয়া তোমাকে শয়ন করাইয়া আপনি ব্রান্তর পরিধান করিয়া বর্গে গেল। তথন বিশাথ জানিলেন, যে দেবক্ন্যার গর্ভে এবং মুনির ঔর্দে আমি জ্মিয়াছি; ইহাতে প্রম হুট হুটুয়া মুনির বরপ্রাপ্ত হুটুয়া সুলোচনার সহিত পুথু রাজের নগরে উপস্থিত হুটলেন, দেখানে কোন লোকের গৃহে সুলোচনাকে গোপনে রাখিয়া আপনি দেবকরপে রাজার সহিত সাক্ষাৎ করিলেন; এবং পৃথু রাজের দেবায় নিযুক্ত হইয়া সপ্রতিভ ও সর্বধারাতে চতুর দেই কুমার ক্রমেতে রাজার ভারপাল হইলেন। পরে ভারির কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়া আপনার প্রভাপে ও উপকার্ষারা এবং দানেতে অধি-কার্ম্ সকল লোককে এবং যোদ্ধার্গণকে আপন বশীভূত করিয়া সুলো-চনাকে কহিলেন, হে জননি, তোমার কি উচ্ছা? ভাহা কহিলে দেউ রূপ করি। স্লোচনা দেবী কহিলেন, হে পুল, যদি পার, ভবে পৃথুরাজকে শৃথালে বদ্ধ করিয়া আমার নিকটে আনিয়াদেও। বিশাপ কহিলেন, এই কর্মা আমার অনায়াসসাধ্য। পরে বিশার্থ নিজানুরক শৃত্বলহত্ত তিন চারি জনকে দঙ্গে লইয়া আপনি পড়্গহল্ভ হইয়া রালার সকল কর্মাবসর দেখিয়া সভাসদ কএক পুরুষকে কহিলেন, হে সভাসদেরা, আমি ভোমাদিগকে জানাইভেছি যে ভোমরা আমার দহিত এক কার্য্যো-দ্যোগী হও, কিন্তু ভোমাদের মধ্যে এক পুরুষ আমার অনাছীয় আছে, त्म यमि इन्ह शामामि ठालन करत, उरत अडै अप्राधर ভाषात्क मीचू नके कतित; मम्भुष्ठि आमि तासारक राधिर छि। हेरा करिया गृधनर**ड** পুরুষদারা রাজাকে বাঁধিয়া সিৎহাসনহটতে নামাটলেন। অনেক সভাসদ দেখিলেন যে অন্য ২ লোক এই কার্য্যে একপ্রামর্শ হট্যা কৃত্সভান হটয়াছে, ইহাতেই ওাঁহারা রাজার রক্ষার্থে কেহ অন্তধারণ করিলেন না। পরে বিশাধ সহচর পুরুষদের আয়োজনেতে রাজা হট্যা কিঞিৎ পরে বন্ধ পৃথু রাজকে দুলোচনার নিকটে লইয়া গেলেন। দুলোচনা রালাকে দেখিয়া পর্ম ঘটা হইয়া কহিলেন, হে মহারালাধিরাল,

আমাকে চিনিতে পার? পরে নূপতি কহিলেন, হে মহিষি, আমি ভোমাকে कानिलाम, जुमि आमात शक्नी। मुलाहना शूनसीत कहिलन, এই विभाश-কে চিন? রাজা কহিলেন, আমি ইহাকে জানি না। রাজী কহিলেন, যাহাকে দেখিয়া আমি কহিয়াছিলাম, যে দশা নিন্দনীয়া হয়, পুরুষ কথন নিদ্দনীয় হয় না, দেই শিশু এমত ক্ষমতাপল্ল হইয়াছে, যে তৎকতৃক তমি বন্ধ হইয়াছ। এই কথাতে রালা লজ্জিত হইয়া রাণীকে অনেক স্তুব করিলেন, এবং রাণীর জানগৃহেতে পনর্বার সেই রাজ্যের রাজা ছউলেন। অনন্তর বিশাখ ও রাণী রালার অন্তঃপুরে গেলেন। বিশাখ রাজাতে পিতৃত্কি প্রকাশ করিয়া যুবরাজ হইলেন। পণ্ডিতেরা কহি-ग्राष्ट्रम, विभाश रेमना वाछित्त्रक अव धनवाछित्त्रक छ विना মেহকারক বাস্কবেতে কেবল বৃদ্ধিদারা পৃথ্রাজকে জয় করিয়া রাজজ পুহণ করিলেন, এবং রাজমছিধীর অভিলাষ পূর্ণ করিয়া রাজা ও রাণীর পূর্মবাক্য মরণ করাইলেন। অনম্ভর সেই বিশাধ পৃথি-বীমধ্যে অতি খ্যাত্যাপন হট্যা আত্ম প্রতিভা হেতৃক রাজমন্ত্রী হট্ लान। मिरे विभार्थत পुरुषकारतत विवत्। नीडिमर्काच शृक्षरक अवर মুদারাক্ষম গ্রে লিখিত আছে, দেই মকল গৃহ অদ্যাপি চলিতেছে, এবং তাহার ইতিহাস অদ্যাপি প্রকাশ পাইভেছে।

VI .- The quick-witted Man.

অথ মেধাবি কথা।

যিনি একবার উক্ত যে বিষয় তাহা পুহণ করিতে পারেন, এবং জাত বৃত্তান্ত কথন বিষয়ত হন না, ওাঁহার বৃদ্ধি যদি এই প্রকার ধার-গাবতী হয়, ভবে সেই পুরুষকে মেধাবী কহা বায়; ভাহার উদা-হরণ এই।

র্নোড় দেশে প্রথমনামা এক পণ্ডিত অভিশয় কবি ছিলেন। এক সময়ে তিনি নলচরিত্র নামে এক কাব্য রচনা করিয়া বিবেচনা করিলেন, যে রস্যুক্ত ও মনোরম এবং উণালকার্যুক্ত এই প্রকার যে কাব্য সে কবিদিগের যশের নিমিত্রে হয়, ডদ্ভিল্ল যে কাব্য সে উপহাদের নিমিত্রে হয়; অপর অগ্নিতে হর্ণের পরীক্ষা করিবে। বে কাব্য মধ্যে কবিভাবেলাদিগের নিকটে কাব্যের পরীক্ষা করিবে। যে কাব্য পণ্ডিতের। গুহণ না করেন, সে কাব্যেতে কবির কি ফল? পশ্চাৎ প্রহর্ণ সেই কাব্য লইয়া পণ্ডিতকো উদ্দেশে বারাণনী গেলেন, সেখানে গিয়া ককেকাক নামা পণ্ডিতকে লাভিপ্রায় নিবেদন করিলেন। ককেকাক

পণ্ডিত সংসার মুখে বিরক্ত সর্বান। তপদ্যাতে থাকেন, মধ্যাক্তকালে बाबार्स्स स्थत यिक विकारण भयन करतन, मिश्र मयत अधियर्गा भयन করত এ কাব্য অবণ করেন। জীহর্ষ প্রতিদিন সেই পণ্ডিছের সহিত ষাইয়। স্বঞ্চ কাব্য শুৰণ করান, কিন্তু কোন টুত্তব পান না; এই নিমিত্তে এক দিন পণিতকে কহিলেন, হে পুরুষশুষ্ঠ, আমি এট কা-ব্যেতে অনেক পরিশুম করিয়াছি, ভাহার পরীক্ষার নিমিতে পণ্ডিত-ज्ञाद्म दशमात উप्पदम এবং चदमभी हा दाश्मत्ला एड ज्युदनक मत्रहेड एड ভোমার নিকটে আসিযান্তি, এবং কাল্যের সদস্থিবেচনা হওনের প্রত্যা-শাতে পথে যাভায়াত করিয়া ভোমাকে শ্বনাইতেভি, আপেনি কাব্য ন্তনিয়া কিছুনিন্দ। করেন না, প্রশংসাও করেন না, ইহাতে এই অনুদ্ধ করি যে আপনি কাব্যের মধ্যে কর্ণাপণ করেন না। ককেকাক পণ্ডিত উত্তর করিলেন, আমি কি প্রকারে কর্ণার্পণ করিকাম না? সম্পূর্ণ কাব্য শ্রবণ করিয়া শ্লের এবৎ অর্থের সনস্বিবেচনা করিয়া ও সন্দর্ভ-খুদ্ধি জানিয়া বিশেষ কহিব, এই ইজ্ছাতে কিছুকহি নাই। এই কার্য আমি শুনিয়াতি এবং মনেতে ধারণ করিয়াতি; যদি দুমি প্রতায় না কর, তবে অবণ কর। ইহা কহিয়া কাব্যের জাত যে খ্লোক দকল সেই সমুদায় পাঠ করিলেন। এহিষ তাহা শ্রনিয়া চমংকৃত হইলেন, এবং আনন্দিত হউয়া ককেফাক পণিতের পাদৰয়ে প্রণাম করিয়া কহিলেন, হে ককেকাক মহাশয়, আমি ডোমার মেধামহক্তের অভ্যস্ত ুট হইলাম। কনেকাক পণ্ডিত দেই কাব্যের প্রণের প্রশৎদা করিয়া এবং দোষের সমাধান করিয়া এবং বিশেষ ২ অর্থ কহিয়া ঐহর্যকে মহর্ষ করিয়া গৃহে পাঠাইলেন। পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন যে ৪৭জ লোকেরা দোষ গুহণ না করিয়া যে ২ ৪ণ তাহাই পূহণ করেন; যেমত ভুমর কণ্টকমুক্ত স্ক্লের পুঞ্পেতে মধুপান করিতে না পারিয়াও গত গুহণ করে।

VII .- The intelligent Man.

অথ সুবুদ্ধি কথা।

্বে পুরুষের মেধা এবং প্রতিভা ও বৃদ্ধি এই সকল ওক্তর। হয়, এবং যিনি সন্দেহভঞ্জনক্ষম হন, তিনিই সুবৃদ্ধিরূপে খ্যাত হন। হাহার উনাহরণ।

মিথিল। নগরীতে কণাট কুলসভব হরসিংহ নামে এক রাজা ছিলেন, ভাঁহার সভাতে সাভা শাস্তবেতা এবং দঙ্নীতিশাস্তে কুশল গণে-খর নাম। এক মন্ত্রী ছিলেন। দেবগিরির রাজা রামদেব ঐ মন্ত্রির

নানা প্রকার মৃদ্দ্রিতা খনিয়া অত্যাশ্চর্য্য জান করিয়া চিত্তা করি-লেন, কি হেতু ভূমিনিবাদি গণেখরের বৃহদপতির ন্যায় বৃদ্ধি অনিতে পाहे? छाल, मकल निक्रभग कविटाछि। हेरा छाविशा वामएमव नव्यिष्ठ হর্সিৎহ রাজ্ঞার সহিত মিত্তা করিলেন; যেহেত্ক ঘাঁহাদের ক্রিয়ার खित्छ। थारक এवर याँदाता मृत ও মहाला हन, मह अकात मन्म लाकतमञ्ज भव्नमाव ता श्रीजि, तम कल्भलडाव नाम जाहवन करव। অপের কোষ এবং দৈন্য নট হউলেও আর ভৃত্য বিকারপ্রাপ্ত হউ-লেও যদি স্বংশজাত লোকের সহিত নিত্রতা থাকে, তবে দেউ মিত্রতা কল্প বৃক্ষের মত ব্যবহার করে, অর্থাৎ মিত্রের অভিল্পিত ফলপ্রন হয়। অনুষ্ত্র উভয় পক্ষের উপঢ়ৌকনুৱারা সৌহ্র চইলে রাজা রামদেব হরসিংহ রাজার নিকটে লিখনবারা এই প্রার্থনা করিলেন, সন্দেহ নিরাদার্থ একু বুদ্ধিমান এবং এক মূর্থ, এট দুট লোককে আমার নিকটে পাঠাইবেন। হর্সিৎহ রাজা সেই লিখন দেখিয়া পাঠ করিয়া তিন্তাযুক্ত হউলেন, বেহেৰুক মিতের বাক্য অলক্ষা, সম্পুতি কোন্ বৃদ্ধিমানকে এবং কোন্মূর্গকে পাঠাইব? এডজপ চিঙাহ্যা-কুল রাজাকে দেখিয়া গণেখর মন্ত্রা জিজাদা করিলেন, হে রাজন্, ভোমার কি চিতা? রাজা উত্র করিলেন, মিত্রের আজা নির্মাহ কর-ণের অসঙ্গতি দেখিয়া লজ্জা হউতেজে, কোন্ কৃষিমান পুরুষকে, ও কোন্ মুর্থকেট বা পাঠান ঘাটবে, টহা চিন্তা করিডেছি। মন্ত্রী করিলেন, ছে মহারাল, কোন পুরুষকে পাঠাইতে হইবে না। রাজা কহিলেন, আমাঃ, মিত্রের প্রার্থনা কি ভঙ্গ হউবে? মল্লিরাজ কহিলেন, হে ভূপাল, ভোমার মিতের প্রাথনা সিদ্ধি হউবে, ঘেহেতুক রামদেব রাজার দেব-গিরির রাজ্যেতে কি দুলভ সামগুী আছে ৷ অনেক পণ্ডিত আছেন, অনেক মুর্থও আছে, সেই হেতুক এখানহউতে পণ্ডিত কিলা মূল লোককে পাঠাইলে ওাঁহার কি প্রয়োজন সিদ্ধ হটবে? আমি এট বিতক করি, রামদেব রাজা পণ্ডিত এবং অতিশয় কৌতুকী, ঐ প্রকার দুই পুরুষ যাজ্ঞাছলে ভোমার মন্ত্রী যে আমি, আমি পণ্ডি-তকে আর মুর্খকে জানিতে পারি কি না, আমার এই পরীক্ষা করি-বেন। অতএব হে নরেন্দ্র, আপনি এই উত্তর লিখিবেন, বৃদ্ধিমান লোক এ রাজ্যে নাই, এবং ভোমার অধিকারের মধ্যেও দেখি না; বারাণসীতে এবং অনাং পুণাতীর্থে বৃদ্ধিমানের অনুসন্ধান করিবেন। উত্তম বৃদ্ধির ফল এই যে ভাহাতে তত্তজান হয়, অভএব ইলুলাল সদৃশ যে সাৎসারিক আপার, তাহার মধ্যে বৃদ্ধিমান লোক কি নিমিতে आविश्विष्ठि कृतिरहन ? जिनि कान निर्कान शान आह शिहिशश्चरह रशा-গাবলম্বন করিয়া থাকিবেন। ভদ্তির যে মূর্প লোক, সে দর্কত সুলভ, দেই অবস্তুর প্রেরণে কি ফল সৈত্তএব তাহার পরিচায়ক চিছ লি

শিহেভি। ঈর্যবেক্তাপ্রাভুক সকল মনুষ্যের হন্ত পানাদি স্মান হল, ট্রাতে যে ব্যক্তি দকল লোক কৃত্তক নিন্দিত হয় সেই মুখ। অপর মানৰ জনপ্ৰাপ্ত হট্যা যে লোকে পুনাসঞ্য নাকরে এবং যশ উপাক্তন না করে, তাহাকেট মূর্থ কহা যায়। রাজা হর্দিংহ এট কথা ভুনিয়া कवित्तान, डाटाडे कता। शर्मचय मधी जे शतामण शुक्रक तामरमव র্ছোকে দেই রূপ উত্তর লি.খিলেন। রাজা রামদের মেই পত্র পা-টয়া পরম সভাট হটলেন, এবং সভাসন সমাজোমসে, চ্চুসিংচ্রা− জাকে এবুৎ গণেখন ময়িকে এই কপ অনেক প্রশংসা করিলেন, সাধ্ রাজা মাধু, মেহেতুক ওাহার র।জনীতিরপা যে নরা ভাহার কণ্পারস্কর্প এবং ধন্নজ এই গণেখর মন্ত্রী আছেন। সেই কালে বাজা রামনের এক লোক পাট করিলেন, ভাষার অথ এই, যেমভ প্রিতেরা গণেশের ওণ্মমূহ গ্নণা ত্রিতে প্রবৃত হন, এবং লোকেরা ম্যুদ্র মুম্দায় জল কলম্বারা উঠাটতে প্রবৃত্ত হন, অলাহ শেষ করিতে পারে না, দেট মত কোন তাকি ঐ গণেখর মগির ওণ্গামের মংখ্যা কথনে প্রবৃত্ত হটনা মকল কহিছে পারে না, এবং নাচার মাবলৌকিক কমে ও বৈদিক কর্মো অভিশয় নিপ্নতা আছে, এদৎ চল্লের ন্যায় নিমলি যশ এবড্ড যে দেই গণেখর ময়া,তিনি জয়গ্রু হউন।

VIII. - The Deceiver.

অথ বঞ্চক কথা।

্দে লোক কৃতিয়াতে নিপুণ, এবং মাধার বাক্য অতি মৃদু, সার আম্য অতি কুংমিত, মেই প্রতিভাপতারক লোক বঞ্চ রূপে আত ত্য। তাহার উলচ্বণ এই।

পোলাবরী নর্নাটারে বিশালা নামে এক নগবী, ভালতে সম্পুরেন নামে এক বালা জিলেন। তাঁলার পুল চলুদেন নামা থিনি মহার ধবলছন্য, ইলোকে দেখিলা সেই নগর্বামী কোন বঞ্চ বিধিক রাজ্য গুলের ধনপেত্রণে চিন্তা কহিল। তালা প্রিছেইটা কহিলাভেন, যেমহ দুগ সকল ব্যামের ভল্পীয় হয়, এবং মপেরা গঞ্জের ভল্পা হয়, এবং মনের প্রিলগি সাঁটান পলির ভল্পাহয়, যেই প্রকার মার্ প্রেক ক্লোকের ভল্পায় হন। জহুএব বিধিক বিবেচনা কবিল, এই রাজ্য ক্লোকের ভল্পায় হন। জহুএব বিধিক বিবেচনা কবিল, এই রাজ্য ক্লোক আছি মুপ্রকৃতি, উহার ধন আমার মুগগুলা হনকে, মেই কারণ ইলার ইপাসনা করি। পরে বিকি সেই রাজ্যপুণ্ডর গেবা করিহে লাগিল। নিড্ডা ফলের নামে মুখনের প্রকৃতি, প্রথম সুর্বা পরিণামে বির্বা

LIBRARY

হয়। বণিক সেই প্রকৃতিহারা সেবা করত নানোপাসনাতে রাজক্যারকে वनीकृड कदिल। अनस्त मारे वक्षक विसा कदिल, यमि द्वान उपादार এই রাজকুমারকে দেশান্তরে লইয়া ঘাইতে পারি, তবে ইহার ভা-ভারের মে ২ উৎকৃষ্ট রক্তন, ভাহা গুহণ করিতে পারিব। পশ্চাৎ বঞ্চক নানা বিশ্বস্ত বাকাকরণক কৌতুক প্রস্তাবে অন্য দেশের নানা মনোত্র কথা কহিতে লাগিল, এবং দেই কথা অবণেতে দন্ত্র রাজকুমারকে কহিল, হে কুমার ভুমি যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত হইয়াছ; কিন্তু নিত্য সুলভা অথচ উপভূকা যে ক্সী তাহাতে এবং অন্যং যে ভোগা বন্ধ অদ্বারা তোমার কি সুথ হউতে পারে? দেশাস্তরেই সুঁথানুভব হইতে পারে; দেখানে প্রতিদিন অদৃষ্ট বন্দ্র দর্শন হয়, এবং অভুক্ দুবে)র ভোজন ও অনন্ভূত কত্র অনুভূব হয়, সেই স্থানের বৃতার সকল কহিছেছে, ভূমি অন। প্রফুল সর্দার্গ্র সংযুক্ত সর্বোত্র সকল, ও ষটপদদহিত যে কুনুম তাহাতে শোভিত লতা দকল ও তদ্ধারা ব্যাপ্ত বন, এবং সুবর্গ ও রভেনতে বিচিত্রিত নিতম দেশ এমত পর্যাত সমূহ, আর অত্যুক্ত অউালিক।দি সহিত নগর, এবং নানা প্রকার কেলিকুশলা রমণী, আর ভয়ক্তর মূর্ত্তি এমত ঘোদ্ধাগণ, এই সমুদায় দুব্য কোন বুদ্ধিমান লোক নানা দেশ ভুমণ নাকরিয়া দেখিতে পান? **ठल्यामन जे कथा छनिया कहिल्लन, हर मृद्य, कि क्रां**भ प्रभाग्न प्रभन कतित, उत्तिमित्त आमात मरहारबंग हरेटउरछ। विश्व कहिल, छारत्र অপ্প তথাচ মহামূল্য এমত ধনেতে বিদেশ দুশন হউতে পারে। যদি ভোমার মন: স্থির হয়, তবে তুমি রাজপুল বট, এবং ভোমার অনেক ধন আছে, অস্থ:করণ নিতান্ত স্থির কর, ভবে অবশ্য সিদ্ধ ছইবে। রাজপুত্র কহিলেন, হে মিত্র, আমি মনঃধির করিয়াছি। দেই সময়ে तक्षक तिक तिलट्डएड, यमि এडे भवामर्ग जना लादकत कर्नभथ-शाभी ना इश्न, এবং কেহ বিভর্ক করিতে না পারে, ভবে কার্য্য দিছ ছইতে পারে। যুবরাজ কহিলেন, কেছ বিভর্ক করিতে পারিবে না। उपनश्चत जे तक्षक प्रमाखत पर्माताश्चक अवर नाना क्षकात अर्थ-সহিত রাজকুমারকে লইয়। ছলেতে অন্য দেশে চলিল, ওাঁহার সম-ভিব্যাহারী দেনাগণ কিঞ্ছিদুরে গিয়া ফিরিয়া আইল। পরে রাজকুমার আনার বঞ্চক এই দুই জন উত্তম আখারোহণ করিয়া কোন দিগে বেলেন। পশ্চাৎ রাজকুমার দুর্গমনে পরিপ্রান্ত এবং কুরা ও পিপাসাতে তাাকুল হইয়া কোন বনমধ্যে জলসমীপত্ম এক বৃহদ্ক দেশিয়া আখহইতে নামিয়া সেই সৃক্ষের ছায়াতে বসিলেন। রাজকুমার শ্বভাবত: সুখাভিলাষী, অতএব জলপান করিয়া ছায়ার মধ্যে তৃণ-শঘ। তে निम्ना शिलन। दक्षक यूद्रामाक निर्मुष्ठ मिथिशा मतन कहिन, যে আমার কার্য্য সাধনের সময় এই। পরে ঐ দুরাক্মা বণিক রা

अপ্তের পাদসেবা করিছে২ ওাঁচাকে অভিশয় নিদ্তি বুঝিয়া লভাতে বন্ধন করিল, পশ্চাৎ লতাবন্ধ সেই রাজকুমারের ভ্রুরারোছণ করিয়া শত্রেতে দুই চক্ষ বিদ্ধ করিল। যখন রাজ গুমার, হে মিজ, আমাকে রক্ষা कृत, এই বাকা কহিছে লাগিলেন, দেই সময়ে तक्षक मकल धन ও ভ্রগন্ম লইয়া কৃতকাষ্য হইয়া পলায়ন করিল। রাজকুমার দেই অর্ণ্য মধ্যে আর্তনাদ পূর্বক রোদন করিতে লাগিলেন, এবং নেত্রবেদনাতে কাতর হটয়া হয়পোনাদি নিক্ষেপ করণেতে বধনহটতে মুক হট. লেন। অনম্ব ক্লেশকাত্র যুব্র।জ বলহীন ও নিফির্য চট্যা প্রসার इतिरड পड़िएलन। सिर्टे दृष्कां पति এक दृष्त चुक नमछि कर्तन, ठा-হার দুই পুল মহাশ্ক, তাহারা সঞ্রণাসমর্থ বৃদ্ধ পিওাকে প্রাটিদিন আহার আনিয়া দেয়। এক সময়ে ঐ দুট শুক বৃদ্ধ ভাতকে কহিল, হে পিতঃ, আজি আমরা নর্মানা নদীগারে এক অন্ত কটাস্থান দে-**খিয়াছি। বৃদ্ধ শুক জিলা**দা করিল দেই অদৃত কি প্রকার দেখিয়াছা? ভাষা কহ। পরে মহাশুকরয় কাইতে লাগিল, নমাদ। নদীতীরে স্থি-काপ্র নামে এক নগর, ভাহাতে নীলর্থ নামে এক ভূপতি, ওাঁচার পুত্র চিত্তর্থ নামা তিনি অভ। বৈদ্যের। তাহার চিকিৎসা করিতেছে, তথাপি তাছার আজতা দূব হটল না, ভলিমিতে ওাছার রাজ্য রাতি-কালে দীপর্হিত গৃহের নাায় হট্য়াছে, দেট অভিশয় ক্ষ্ট স্থান অদ্য দেখিয়াছি। বৃদ্ধ শুক কহিল, হে পৃত্রর, নদ্ট চক্ষুপ্রতিকারের নিমিত্তে এক ঔষধ আছে, কিন্তু তাহা বৈদ্যেরা জানেন না। দৃট শুক ছিলাদা করিল, দে ভৈষলা কি রূপ? দৃদ্ধ খক উত্তর করিডেভে, এট দ্কের শুক্ত অথবা আদুপ্দেশতে অঞ্চন করিয়া দদি নেভেতে দেশ, ভবে ন্টানেত্র যে লোক দে সুলোচন হয়। ভখন বৃক্ষতলয় রাজপুল হিথা করিলেন, অহো বিধাতা অনুকূল চইলেন, বিচঙ্গের কথাপ্রসঞ্চে প্রচক্র ঔষণের প্রস্থাবক্রমে ঔষণেপদেশ হটল, মে ঔষণও সম্পুতি সুলভ বটে; এই বৃক্ষের প্রেপতে অশ্বন করি। তথন মধ্রাজ ভাষা করিলে, প্রথমাঞ্চনেতে নেতের বেদনা দূর হউল, রিতীয়াঞ্চনেতে ভারা ছইল, ভূতীয়াঞ্নেতে উৎকৃষ্ট দৃষ্টি হইল। তদনস্ত্র কুমার জন্টচিত্ত विद्यान कित्रलन, यनि अने चलाने मृत्रो भिज्ञक निभाविक नेटन উठीन इडेलाम, उत्तर मल्लु जि कि कर्तता? এडे मृत्तवार गिम श्नर्यात গৃহে ঘাই, তবে অন্য লোকের উপচাসস্থান চটব, এবং আপনার অযোগ্যতা প্রকাশ হটবে; দে মর্ণহটতেও অতার মদদ; দেট চেতুক এখান্ছইতে নিজালয়ে গমন করিব না। অনুভূত এই ঔষধ লট্যা ষুথিকাপুরে ঘাই এবং দেই চিত্ররথ নামা রাজপুলের নেত্ররোরের উপশম করি; তাহা হইলে রাজা নীলরথ আমার বাঞ্চাসিছি করি-বেন। ঘুররাল এই পরামর্শ করিয়া পথাবেষণ করিয়া কিছু কালেতে

ম্থিকাপুরে গেলেন। অন্তর নীলর্থ নর্পতির স্টিত সাক্ষাং ক্রিমা চিত্ররথ নামে রাজকুমারের নেত্রোগ শাল্তি করিলেন। রাজা নীল-র্থ প্রমল্ট হট্যা ঐ মুব্রাজকে বৃতার জিজানা করিলেন, এবং সমাণত রাজপ্তের কথা ও ওণেতে ও শালিবারা ভাহার কুল জানিয়া চিত্রবংগর ক্রিষ্ঠা ভগিনী চিত্রদেনাকে দেই রাজপুদ্রের দ্বিত বি-ताह निरम्म, अत्र उँ। हारक हर्ने हिनक छात्र ताला निरम्म। उनति চল্রুদেন চল্রুবদনা হিত্রদেনা যে নিজ পজ্ঞী, তাহার সহিত রাজ্য সুখা-নুভ্র করিতে লাগিলেন। কোন সময়ে চল্রমেন খণ্ডর মন্দিরে গমন করিতেভেন, এই সময় প্থিম্প্যে আগমন করিতেছে যে সেই বঞ্জ বণিক ভাচাকে চঠাৎ দেখিলেন, এবৎ দশনকণেই ঘোটকহইতে অস-রোহণ করিবামাত্র ঐ বঞ্জ দেখিল যে মেই রাজপ্ত এখানে আ-ছেন; ইহাতে ভীত হুট্যা প্লায়ন করিল। চত্রুদেন প্রাতিরারা বঞ্ককে আনাইয়া আলিসন করিয়াজিজনা করিলেন, হে মিত্র, ভোমার মঙ্গল ? তাতা খনির। দণিক কি দুউত্র করিল না। রাজপুল মিএলাডেতে লফটিত হইলা রাজমন্দিকে গমন তাগে করিয়া দেই বণিকের সহিত নিজ মশিবে গিয়। নিজন ভানে বদিলেন। পরে রাজক্যার পুনক জিজাসা করিলেন, হে সংখে, গুমি এছ ধন লাভ করিয়াকেন এমছ দুদ-শাপুস্ত হটয়াছ? বঞ্জ কহিতেছে ভো রাজক্মার, আমি স্বাভাবিক लक्ष विकि, ভোমার ধন लहेशा वाशिष्णार्थ तृहरक्षीकारवाहर कतिशा সাগর পারে গিয়াছিলাম। দেখানে ভাঙ বস্ত বিজয় করিয়া মূল পনহটতে একশত গুণ লাভ পাট্যা তথাহটতে আদিতে সমৃদের তটের নিকটে আমার বৃহত্তর্ণী মগ্লা হটল, তাহাতেই আমার সকল ধন নফী হইল, এখন প্রাণমাত্রাবশিষ্ট হইয়া আসিয়াছি। সে যে হউক, আমি পুর্বের তোমার নিকটে অনেক অপরাধ করিয়াছি, তলিমিতে ভূমি আমার প্রাণদও কর। রাজপুত এই কথা খুনিরা কহিলেন, হে মিত্র, কিছুভর করিবা না, তুমি আমার বন্ধু, অতএব যাবজনীবন প্রতিপাল্য হইবা, এবং আমি সম্পুতি তোমারে অনেক ধন দিব, তাহাতেই তুমি ৰজ্বদে কাল যাপন করিছে পারিবা। জনধুর বণিক অতিশয় ভীত रहेशा उँतत कतिन, दर ताजनसन, आगात मन श्रीवालतादन निराय দুষ্ট হইয়াছে, এই কারণ ভোমার কথা প্রভায় করে না, আর ভোমাতে আমার কিজুনিরানুর্জি ছিল না। অত্এব তুমি কি কারণ আমার প্রতি প্রসন্ন হইবা? চল্রদেন বঞ্চের কথা শুনিয়া কহিলেন, আমার কার্য্য আমার বশাভূত বটে, কিন্ত আমি তোমার কাণ্যের প্রভূহইতে পারি না, তাহা বিস্তারিত কহিতেছি। তুমি তোমার কার্য্যের কর্তা এবং ভোমার পথও আনুগত আছে, যেমত শ্বেচ্ছা তাহাই করিবা; কিন্তু আমি তোমার প্রতি বিখাস করিয়া কোন্হ কার্মা না করিয়াছি? দেশ,

ষ্ক্রনদ্বিত রাজ্য এবং বিপুলৈখ্যা এট সম্নায় তাগি করিয়াভি, অঙএর আত্মকায়্যে আমার অধিকার আছে, কিন্তু পরব্যাপারে কিছু প্রাভুজ নাই। বঞ্ক এই সকল কথা খুনিয়া অতাভ লজিৱত হ**টল, এবং মেই** লজাতে বিদী-ছাৰ্ম চইয়া পঞ্জ পাইল। বৃ**জি**-প্র বণিকের মর্ণজন্য দুংখোতে কাত্র হইয়া উচ্চৈঃৰব্র রোদন ্রবিচে লাগিলেন। চিত্রদেনা মামিকে কাওর দেখিয়া নিবেদন করি-লেন, হে নাথ, এই ব্যক্তি কে? এবৎ কোথাচনতে আসিযাছিল? আর কি প্রকারে মরিল? এবং আপনিট বা কি নিমিতে ক্রণা-প্রাধীন হইয়া রোদন করিতেছেন? পশ্চাং চলুমেন উত্তর করি-লেন, এই লোক পুরের আমার মহিত অতি বৈশিট্যাচরণ করি-য়াছেন, যেহেতুক আমার সক্ষরাপহারক যে এই লোচ আমি ইহার আয়ত ছিলাম, তথাপি আমাকে প্রাণের মহিত নট্ট করেন নাই। হিত্রেনা বৃত্তার শুনিয়া নিবেদন করিলেন, হে স্বামিন্, এই মন্ধ্য যে তোমাকে নত করে নাই, মে ইহার ভাতিক্রমে হইয়াছে, কিন্তু জানপূর্বক হয় নাই। পরে চল্রুমেন কহিলেন, হে প্রিয়ে, এই লোক কুকর্মকারী বটে, তথাপি আমি ইহাকে শ্রেডজান করি, যেহেতক পূর্বার করণ করিয়া লড্ডাতে সম্পুতি মোহিত হটল। নীডিবে এরা এই রূপ কহিয়াছেন, যে লোক কুপথলামী হইয়াও কদাতিৎ লজিভ হয়, সে লোক শুেষ্ঠ; কিন্তু অনভিজাত লোকের মনেতে কথনও লজ্যা হয় না। এই রূপ কথোপকথনের পর রাজক্মার ঐ বণিকের ৰজাতীয় লোকঘারা দাহ ও শুদ্ধি করাইলেন; তথাপি বণিক সৌকিক অকীর্ত্তি ও মরণোত্তর নর্করূপ যে মুক্রেম্র ফল ভাহা ভোগ করিল।

IX .- The mean Man.

অথ পিশ্বন কথা।

যে লোক আত্মোপকারকের বেষ করে, এবং নিরপরাধ বাজিকে দাপরাধ জান করে, ও আপনি দাপরাধ হট্যাও লজিত হয় না, মেট পুরুষ পিশুন্রপে খ্যাত, এবং মে জগতের অপ্রিয় হয়। তা-চার উদাহরণ।

কুর্মপুর নামে এক নগর তাহাতে প্রধান মন্তিকর্তৃত ভাতি বিক্ চল্ড ওথ নামা এক রাজা ছিলেন। মেট রাজার শাদিত রাজেনতে কোন ব্লাজগনস্পতী নাম করেন। কিছু দিনে ব্লাজগীর এক পুল জ্ঞিজ; পরে ব্লাজগের মৃত্যু হটল। ব্লাজগী শিশ্বপোষণাদাম্থ্য প্রমুক্ত সেট পুলকে ত্যাগ করিল, তাহাতেই শিশ্ব অনাথ হটল। সেই সমর ব্লাজ-

ণের প্রতিবাদী দোমদত নামে এক বণিক ঐ শিশুকে দেখিয়া দয়া-দ্চিত হইয়া এবৎ দেই স্থানহইতে বালককে আনিয়া নিজ ধনবায়েতে প্রতিপালন করিল, এবং ব্রাহ্মণদারা তাহার সংস্কার করাইয়া কায়-স্থার। বিদ্যাভ্যাদ করাইল। এক সময়ে কোন দৈবজ কায়স্থ গৃহে দেই বালককে দেখিয়া এক শ্লোক পাঠ করিলেন, তাহার অর্থ এই, কুদু বাহ্মণের গৃহে জাত এব৲ বণিকের অন্নেতে বর্দ্ধিত আর কায়স্থ-ছইতে লব্ধবিদ্য যে এই বালক, এ অবশ্য কুদুবৃদ্ধি হটবে। তদি-नाविध मकल लाक थे वालकटक ऋमुवृक्षि वलिट आवस कविल। অনম্ভর বণিক দেই দ্বিজবালকহইতে প্রত্যুপকার বাসনা করিয়া তাহাকে রাজদলিধানে রাখিল, এবং যে পর্যান্ত রাজা দেই ব্রাক্ষণপুত্রের আ-রাধ্য হইয়া প্রসন্ম না হইলেন, তাবৎ বণিক নিজ ধনেতে ঐ বিপ্রসন্তা-নকে প্রতিপালন করিল। পরে রাজা ব্রাহ্মণের প্রতি অনুকূল হইলে ব্ৰাহ্মণও ধনপ্ৰাপ্ত হইল। তাহা দেখিয়া বণিক তৎপ্ৰতিপালনে উদা-भीत इडेल। कुपुनुहित बुक्ति विकटक उपामीत प्रिथिया जिल्लामा कतिल, হে তাত, তুমি এ পর্যান্ত আমার প্রতিপালন করিলা, এখন কেন না কর? বণিক উত্তর করিল, ভাল, তুমি সম্পুতি রাজানুগুহেতে অনেক ধন লাভ করিতেছ, এবং অনেকের প্রতিপালন করিতে পার; আমি বণিক্সাতি, কেন আমাহইতে এখন আত্মপ্রতিপালনেচ্ছা কর ? বরং তুমি আমাকে প্রতিপালন করিতে পার। সেই দুই জনের পরসপর এতদ্রপ কথোপকথন হইল, কিন্তু বণিক বিপ্রহইতে উপকারাকাওকী এবং বিপ্র বণিকছইতে ধনপুহণাভিলাষী এই রূপেতে প্রদপ্র দুই জনের বৈরোৎপত্তি হইল। পরে ঐ ক্লুদুবুদ্ধি কৃপিত হইয়া কহিল, হে বণিকাধম, তুমি কি বিবেচনা করিয়াছ ≀এ পর্যান্ত আশমার ভরণ পোষণ করিয়া ইহার পর কিছুই করিবা না? আর ভোমার যত ধন আছে, তাহা কি আমি জানি না? এবৎ তোমার ধনের সম্বাদ কি রাজা আমাকে জিজাদা করিবেন, না ুভাল, যদি আমাকে কিছু না দেও, ভবে ভূপালকে অবশ্য দিবা। এই রূপ বিরোধোক্তিতে এবং ক্দুদুবুদ্ধির নানা কুচেফীতে বণিক অভিভীত হইয়া ঐ ব্রাহ্মণকে কিঞিৎ ২ ধন দিতে সাগিল, তাহাতেই বণিক ক্রমেং ক্ষণিধন হইল। বণিক-পতনী ভর্তাকে নির্ধন এবং চিন্তাকুল দেখিয়া জিজাদা করিল, হে ৰা-মিন্, এই ক্ষুদুহৃদ্ধি বাহ্মণ ডোমার প্রতিপালিত, এবং সম্পুতি অনেক ধনোপার্জন করিভেছে, তথাপি তোমারে কিছু দেয় না, বর্ৎ তোমার স্থানে কিছুং লইতেছে, তুমি কিহেতু তাহাকে ধন দেও? বণিক ভা-র্য্যার কথা শুনিয়া উত্তর করিল, এই দিজ দুর্জ্জন; যদি ইহাকে কিছু না দি, তবে এই ধল রাজসমীপে থলতা করিয়া আমার ম^ল করিবে, সেই ভয়েতে কিছু২ দিভেছি। পণিতেরা সেই প্রকার কৃষ্টি

য়াছেন, যে পিশাচ এবং পিশ্বন ও ক্কক্র এই উন যাভাবিক লোভী; **चाउ बर मनुषा काल**गां भन कामनाट कि छ । निया है हानि भटक निरां व করিবে। বণিপুধূ এই কথা শুনিয়া কহিল, হে নাথ, এই বাহনণ যদি পিশ্বন, তবে কেন ইহাকে প্রতিপালন করিলা? বণিক উত্তর করি-লেন, প্রথমে পিশ্তনতারূপে ইহাকে জানিতে পারি নাই; যেমত কফাদি धात मकल महीदत निका जावसिकि कदत, रक्षम मर्ज्जदनत महीदत्रक সর্মদাই দোষ থাকে, কিন্তু বিধাতা দুর্জনের শীলপরিচায়ক কোন लक्कन निर्मान करत्न नार, य उष्टाता मध्यन्तिक हिनिए शादा यात : मर्ड्जन পরকৃত উপকার আমানা করে, তাহাতেই দর্জনকে চিনিতে পারা যায়। কিন্তু দে পরকৃত উপকার গৃহণ করিয়াকৃতকার্য্য হইলে পর তাহার পরিচয়েতে কি ফল হইতে পারে? বণিক্পজনী তাহা শ্বনিয়া কহিল, হে নাথ, পরিচয়ের এই ফল, যে সম্পৃতি তাহাকে ত্যাগ কর। বণিক তাহার উত্তর করিল, যেমত প্রবল ব্যাধি অতিশয় অনিফকারী, এই কারণ লোকের অবশ্য পরিত্যাল্য, কিন্তু তাহা কেহ এক কালে ত্যাগ করিতে পারে না, নানা চেন্টার ক্রমেতে পরিত্যাগ করে, সেই প্রকার ইহাকে হঠাৎ ত্যাগ করিতে না পারিয়া কিঞিৎ ২ দিরা কাল যাপন করিতেছি, পশ্চাৎ অবশা পরিহার্যা হইবে। পশ্চাৎ বণিগ্রধু কহিল, দানেতে ও সম্মানেতে কিলা প্রতিতে খল লোক প্রদন্ধ হয় না, কেবল প্রত্যপকারেতে খল প্রাভূত ইইয়া প্রদর্হয়; অপ্র य लाक श्रालत महिত थीछि करत, श्रेल छाहारक अममर्श जान करत; যে লোক খলকে কিছু দেয়, খল মেই দানকর্তার নিকটে পৌনঃপ্রা যাজ্ঞা করে; কিন্তু যে লোক খলের প্রত্যপকার করে, খল সেই অপ-কর্তার বশীভত হইয়া মিতের নাায় ব্যবহার করে। বণিক হিতভাষিণী ষে ব্রী তাহার বাক্য শুনিয়া কহিল, হে প্রিয়ে, আমি উংকৃষ্ট কুটুম্বপরিবৃত এবং লজ্জাবাধিত, কিন্তু দেই খল লজ্জা ভয় বিবর্জিত, অতএব আমার শক্তিতে দে কি প্রকারে পরাব্ধুত হইবে ? সে আমাদিগকে যে পরাভব ন। করে, সেই তাহার প্রাভ্র। পরে বণিক্পতনী কহিল, ভাল, দানদার। ভাছাকে কত কাল প্রতিপালন করিতে পারিবা? ভন্নিমিতে আমি এই পরামর্শ কহিতেছি, আপনি রাজার নিকটে এই সকল কথা নিবেদন কর। যেমত ভূপতিদিগের দেনাই বল এবং কুবুদ্ধি লোকের কুক্রিয়ারূপ বল ও দরিৰু লোকের মাধু লোকই বল, মেই প্রকার সংলাকদিগের যাথার্থাই বল; অতএব যথার্থ নিবেদন করিলে রাজা অবশা ইহার বিচার করিবেন। বণিক উত্তর করিল, এ কর্মা কেবল দুপকশুয়ন, অতএব অকর্ত্র। ষেমত পরের এখর্য্য দেখিয়া খলের মন্তকে বেদনা হয় ও দেই দুশ্চরিত্রভাতে ঋল লোক জগতের অপ্রিয় হয়, তেমন মনুষ্য কোন প্রকারে পরের অনিষ্ট চেষ্টা করিলেই সে সকলের অপ্রিয় হয়, আত-

এব তাহার মদদ করিছে আমার ইচ্ছা হয় না। বণিগুণু জিলাস। कदिल, त्म बुक्तात्वत अलडा कि श्रकात? विवक विलल, दर श्रिरह, ন্তন। দেট ব্রাহ্মণ সম্পুতি রামার নিকটে প্রধান মন্ত্রির এট প্রকার অপ্রশংসা করিতেছে, হে মহারাল, প্রধান মন্ত্রী কোন প্রকারে ডো-মার কিছু হিডেক্ছা করেন না। বণিক্পতনী পুনশ্চ জিলাদা করিল, রাজা টহা অনিয়া কি কহিলেন? বণিক উত্তর করিল, রাজা কুদুবুদ্ধিকে এই कहिल्लन, চাণका नाम दान्न প্রধান মন্ত্রী আমার গুরু এবং অভি শেষ্ঠ, আমার এই যে রাজ্য দেখিতেছ ইহা তিনি আমাকে দিয়া-ছেন; এবং যখন আমার মন্ত্রিজ বীকার করিয়াছেন, তুখনি আমার শবুবধে পড়্গ ধারণ করিয়াছেন, তাহাতে আমি ওাঁহার প্রতি নিশ্তিদ আছি; অতএব কোন বিষয়ে চাণকা মন্ত্রির বৃদ্ধির ব্যক্তিচার নাই। আর উনি আমার যে ২ আপদ নিবারণ করিয়াছেন, তাহা খন। আমার हिट्डत निमिट्ड अर्थड क्येन ताला कि अर्थात जानिया नरी कतियाद्यन, এবৎ নন্দ রাল্লাকে সবৎশে নষ্ট করিয়াছেন, আর বিষকন্যা প্রভৃতি আমার যে২ আপদ্দে সমন্ত নিবারণ করিয়াছেন, এবং আমাকে নিশ্চলা রাজলক্ষী দান করিয়াছেন; আমার সেই সদ্ধরু যে চাণক্য কি নিমিতে ওাঁছার বৃদ্ধিভূম হইবে? বণিকের স্ত্রী এই দকল কথা অনিয়া কহিল, দাধু রাজা চল্লপ্রও, দাধু; পুরুষের ৪৭ আভিজাতাকে অভিক্রমণ করে, অর্থাৎ প্রুষ উত্তম প্রণেতে ৰজাতীয় শেষ্ঠ হয়, এবং রাজা সংপ্রভূ হটলে ওাঁহার কর্ণপথ্যামী ধল্বাকা কি করিতে भारत ? रह नाथ, ठाहात अत कृमुन्कि कि कतिल ? विषक कहिर उरक, मिर्च निर्लब्ज नुक्ति उथािभ ताजा अ मन्ने अत्तत कारकप्रा সম্পুতির ভেদের নিমিতে তিন লোক পাঠ করিল, তাহার অর্থ এই। যেমত নিদ্তি লোকের ধন চোরেরা অপহরণ করে, সেই প্রকার যে রাজা নিজ কার্য্য বয়ং নিরীক্ষণ না করেন, ঠাছার সম্পত্তি অন্য লো-কের। ভোগ করে। অপর, সহসু ২ অমাত্রের এবং কোটি ২ সৈনেরতে পরিবৃত হইলেও রাজা হয় ১ আপনার হিত চেক্টা করিবেন। আরও क्रिडिश, ताजा मकालत विनयकाती दहेला मिहे मकल लाक कुलथ-গামী হয়, আরু সেই দুংশীল মনুষ্যেরা কোন কারণেতে রাজার প্রিয় হয়, কিন্তু শেষে অমঙ্গল করে; এই প্রকার সূচকবাক্য কহিল, অর্থাৎ ঠকামি করিল। ভাহাতে রাজা ভাহাকে অভি ক্রু জান করিলেন, এবং এই সকল কথা অনাইলেন, মন্ত্রী সকল কার্য্যের ভার বহন করেন, রাজা রাজ্যের সুধ ভোগ করেন;রাজা কায্যের ভার বহন क्तिरण मत्रीरे मूच्छानी इत। तास्रात अरे मकल वारकारड मिर्लक्ज वुक्ति स्टाप्नाम स्रेमा अधान मजित निकार निवा करिल, हि मणि-রাজ, রাজা চল্রপ্ত ভোষার অহিভকারী, ইহা ভূমি জান ? বণিকের

क्री बांबिएक शूनक क्रिजामा कतिल, देश धनिया श्रीत मन्नी कि कहि-लान ? तनिक उँ छत् कृतिल, मन्नो मिड्डांसन्त कथा चुनिया धर्माणील রাজার প্রতি সন্দিথটিত হউলেন। বণিগুধু উহা শুনিয়া কাইল, মখিরা কিছ কটিলাশয় হন, যেহেতুক ধলের বাকে; প্রভায় করিয়া সাধু লোকের প্রতি সন্দেহ করেন। সে যাহ। ছউক; হে মহাশয়, এই বৃত্তান্ত গোপনীয় থাকিবে না, এবং ভূমি যে প্রকারে ক্দুবৃদ্ধির প্রতিপালন করিয়াছ, এট সমুদায় বৃত্তান্ত প্রধান মন্ত্রী যে প্রকারে জানিতে পা-রেন, তুমি সেট প্রকার ১০ফী। কর, এবং উপশ্তি কার্যোর অনাদর করিও না। শীঘু মন্নির নিকটে যাও। আমি এই অনুভৱ করিডেছি, ক্দুবৃদ্ধি ভোমার যে প্রকার অপকারী, ভাষা মল্লিরাজকে নিরেদন कतिएल जिनि. ममस वृद्यान आनिता चारणा हैशत विविज (इन्हों। করিবেন; তাহাতেই সেই ক্রুব্দ্ধি অবশ্য পরাশ্বর পাইবে। বণিক স্ত্রীর প্রামর্শে সম্মত হট্যা কিঞিৎ উপঢ়োকন দুব্য লট্যা মন্ত্রির নিকটে গিয়া আপন দুকশার কথা নিবেদন করিল। মন্ত্রী পকো ক্রুব্ছির প্রতি সন্দিধ্য ছিলেন, পরে বণিকের বাক্য শ্রনিয়া কুদুব্ছিকে দুজ্র্ন জানিয়া তাহার প্রত্তীকারের উপায় বিবেচনা করিয়া সভ্যট ্ট্রলেন, এবং বণিককে কহিলেন, হে সোমদত, তুমি কুদুবৃদ্ধির षে প্রকার সম্বর্জনা করিয়াছ, আমি সে সকল জানি। সেই ক্রুবুর্দ্ধি टामात 'अहिङकाती दहेगाल्क, हेबाट तम अत्नात अहिङकाती हन, টিছা আমেচ্য্য নছে। সে স্কলি আমার সাক্ষাংকারে রাজার দুনীতি-বোৰক মিথ্যা বাক্য কহে। তদনদ্ধর মন্ত্রী দোমদত্ত বণিককে সঙ্গে ल^{हे}क्रा ताक्रमणाक्र व्यागिक्षा *वे मकल दृढाच* ताक्राटक छाठ कताहे. लान। ताका थे मकल कथा धनिया किङ्हामा कतिया कृतुनृहि पश्चित প্রতি যে কথা কহিয়াছিল, ভালাও মল্লিকে কহিলেন। ভালার পর রাজা ও মন্ত্রী উভয়ে হাস্য করিয়া কর্ডালধ্বনি করিয়া কছিলেন. ष्पादा, मुख्यांत्र कि अशिक्ष निश्वश, श्वाहरूक धामामिश्वत छेन्द्रात প্রীতি বিচ্ছেদ করিতেও বাসনা করে। তদনশ্বর সচিব করিলেন, হে ভূপাল, যে খল পিতৃত্লা প্রতিপালক এই বণিকের অনিষ্ট করিতেছে, ष्म कि ना कतिरङ পারে ो किस अहे राजशाद्वरङ ताथ इस स क्तृ-বৃদ্ধি অবশা লারল, ইহাতে সন্দেহ নাই। পণিতেরা সেই প্রকার কহি-शास्त्रत, तीर कुलाकृत मनुषा है कृत्कि दश, अवर म अल्ल उलमुखाट काउन रम, ज्यान शृथिवीन मर्पा सानस वाजित्वरक रकर उँभकानि তাক্তির অনুপকার করে না। পশ্চাৎ ভূপাল কহিলেন, যদি এই ব্রাক্ষ-ণের প্রদাবকর্রী থাকে, তবে এই অনুভবের নিরূপণ হটতে পারে। বিণিক উত্তর করিল, হে রাজাধিরাজ, এট কুসুবৃদ্ধির জননী আছে। পহের রাজা কৌতুকার্থে কোন ব্রাহ্মণীবারা হৃদুবৃদ্ধির মাতাকে আনাইয়া

কিছু ধন দিয়া ভাহার পুজোৎপত্তির সমাচার জিজাদা করিলেন। (महें खी धनलाएं मस्तरो। इडेवा घथार्थ नित्तमन कृतिल, एह महातास, ষাহা অনুভব করিয়াছেন, তাহা সত্য। আমার ভর্তাভিক্ক ছিলেন; তিনি এক দিবস ভিক্ষার্থে স্থানাস্তরে গিয়াভিলেন, কোন কারণে গৃছে আংইলেন না।পরে অস্ককার রাত্রিতে গুয়েস্থাল আমাকে আক্রমণ করিল, তাহার ঔর্দে এই ক্ষুবুক্তি জলিয়রাছে। নরপতি টহা ভানিয়া কটিলেন, দূতক্রারা অবেধারিত যে বিষয়, তালার অন্যথা কখনো হয় না। এই কুৰুবুভি চঙালজাত, ইহাসতা। পশ্চাং সোমদত বণিক ঐ সকল সম্বাদ শুনিয়ানরপতির নিকটে নিবেদন করিল, হে ভূপাল, আনি এই কুদুবুদ্ধির মুধ দেখিয়া ও বাকা অনিয়া এবং সৌদ্ধান দেখিয়া মুধ্ব হটলাম, কিন্তু আমি মূর্গ, এই কারণ ইহার আভিজাত্য জানিতে পারিলাম না। রাজা উত্তর করিলেন, হে বণিক, ভূমি সেই কর্মের ফল পাইয়াছ, যেতে চুক অঙ্গুষ্ঠ পরিমিত থর্ম এই ক্লুবুদ্ধিকে প্রতি-পালন করিয়াছ, কিন্তু দেই অন্তিজাতের সম্বর্ধনা করাতেই ব্যাকৃল হুইয়াছ। পশ্চং রাজ। বণিকের ধন বণিককে দেওয়াইয়া কুদুবুদ্ধির অনব-শিষ্ট সর্বাস্থ আপনি লইয়া কুদুবুদ্ধিকে সাগরপারে দূর করিয়া দিলেন। দেই কালে কোন পণ্ডিত এক কবিতা পাঠ করিলেন, তাহার অর্থ এই, ভূমেতে অথবা প্রমাদে কিলা দৈবগোগেও সাধু লোকের দুজ্জনসংসর্গ না ছউক, যেহেতুক সেই সংসর্গেতে যে পাপ জ্ঞান্ত, ভাহা প্রাণান্ত পর্যায় थात्कः अडबद त्कान श्रकात् कथन मुर्छ्यत् मर्ग्म कहेरा नत्र।

X.—The gentle Devotee.

অথ সাত্ত্বিক কথা।

মিথিলা নগরীতে বোধ নাম। এক কায়স্থ তিনি নির্ম্বর স্বংশক্ষার লোকের মর্যাদা রক্ষা করত রাক্ষ্যীয় ব্যাপার করিয়া নিক্ন পরিবার-বর্গ প্রতিপালন করেন, কিন্তু কোন ক্ষীবের হিংসা করেন না এবং প্রধন পূরণ ও পর্স্থা হরণ করেন না, কেবল প্রস্থানতে আদ্মায়বণের প্রতিপালন ও পুণ্ডর্ম করিয়া কাল্যাপন করেন, আর শূদ্রে কর্ত্বা যে ক্ষ্যুরপূলা ভাছা সর্বাদা করেন, এবং আপন উপাক্ষ্য মত দান ও ব্যাক্ষণের দেবা করেন। ঐ কায়স্থ এই রূপে কিছু কাল্যাপন করিয়া পদ্যাৎ অন্য হ কর্মাইতে নিবৃত্ত হইয়া নির্ম্বর শিবপূলাপরায়ণ হইয়া কালক্ষেণণ করিতে লাগিলেন। অনন্তর চর্মকাল নিক্ট হইলে দেই কায়স্থ পূর্ণের এক কবিতা শুবণ করিলেন, ভাছার অর্থ এই,

গলাদেবী কহিয়াজেন, পরহিৎসা ও পর্দুব্য গুছণ আরে প্রদার-সেবা এই দকল কার্যোতে প্রান্ত্র্প যে পুণ্যবান পুরুষ, তিনি কোন সময়ে আমার নিকটে আসিয়া আমাকে পবিতা করিবেন। ঐ কায়ত্ত এই বাকোতে প্রভায় করিয়া বিবেচনা করিলেন, আমি समावधि এই কলে পর্যায় কথন প্রহিৎদা করি নাট, এবং প্রদ্বা ছর্ণ ও প্রক্তীগমন করি নাই, আরে কাছার অনিট করি নাই, বর্ৎ আঃ পনার কার্য্য অপ্পজান করিয়া মিত্রনের হিত্তায়্য করিয়াভি, আরু এक हिंछ इडेशा मुकर्सता कार्या कतिया कालयाभन कतियाहि। उदय সম্পৃতি গঙ্গাদেবীর বাকোর প্রীক্ষাকেন নাক্রি? এই প্রাম্প করিয়া সঙ্গাতীরে যাইবার উদ্যোগ করিয়া গঙ্গাতীরের এক জ্রোশের মধ্যে উপস্থিত হটয়া এবং সেট স্থানে অপ্পক্ষণ থাকিয়া পুরাণের সেট লোকের দুই চরণ আর যকৃত দুই চরণ উভয় একতা করিয়া এক কবিডা পাঠ করিলেন, ভাহার অথ এট, প্রহিৎসা ও প্রদ্বাহরণ ও পরব্রীগমন এই সকল কর্মোতে আমি পরায়ুখ; হে দেবি, সম্পুত্তি ডোমার নিকটে আসিরান্তি, তুমি পবিতা হও। গলাদেরী এই কথা অনিয়া এবং কারত্বের তকির দৃঢ়ঃানুভর করিয়াপরমাজগাদপুর্বক ফুলত্ব তরজেতে তীর তঙ্গ করিয়া ঐ কায়ত্ত্বের নিকটে গিয়া এবং কুর্ম মীন মকর শিখুমার্যুক্ত যে প্রাবাহ ভাহার ধবল জলধারাতে কায়স্থকে স্থান করাইলেন। সেই কায়স্থ বিপাছার অবধারিত যে আপন প্রমায়ু, তাহা সম্পূর্হওয়াতে গঙ্গাললে বেহত্যাগ ক্রিয়া হগে গেলেন। নেই গঙ্গার অনুগৃহীত পাত্র এবং গঙ্গার মহিমাপরীক্ষক নে কায়স্থ, ভাছাকে দাপুলোকেরা অব্যাপি প্রশংমা করিছেলেন। অভএব কহি, मकल লোকের শরীর নমী হয় এব∿ ধন নমী হয় ও বভুবর্গনমী হয়, কিন্তু উত্তমা খ্যাতি কখনও নকা হয় না।

XI .- The enthusiastic Devoter.

অথ তামদ কথা।

্যে পুরুষ বিষয় বিবেচন। করিয়া তৎক্ষণাৎ সাহসপূর্মক ধর্মাচরণ করেন এবং আভাবিক ভয়োধণযুক্ত হন ভাঁহার নাম ভামস ধার্মিক। ভাহার বিবরণ এই।

রাচ্চা নগরীতে জ্রীকণ্ঠ নামে এক সাক্ষণ তিনি সকলশারবেতা ও নীতিজ এবং কবি ছিলেন। এক সময়ে সেট সাক্ষণ প্রথমকালাবধি শিক্ষিত বিদ্যার ফল ও প্রশংসা লাভের নিমিত্তে রাজাদিগের সহিত নাক্ষাৎ করিতে নানা দেশে ভূমণ করিয়া প্রয়াগঠাথে উপস্থিত ছইলেন। অন্তরে সূর্য্যপুছণ সময়ে এক কুন্তীর ঐ গলাযমুনার সল্পের নিকটে ভীর্ভ এক গোকে ধরিয়া জলে মগু করে ! ব্রাহ্মণ ঐ রূপ গোকে দেখিয়া করণাযুক্ত হইয়া চিস্তা করিতে লাগিলেন, প্রয়াগের পর পুণ্যতীর্থ নাই, এবং সূর্যাপুহণ সময়ের ন্যায় উত্তম পুণ্যকাল আর নাই, ও পরপ্রাণ রক্ষাহইতে অধিক ধর্ম নাই; সম্পুতি পুণাজনক সকল বিষয় এক স্থানে দেখিতেছি, ইহা ত্যাগ করা উপযুক্ত হয় না, আহত এব কুন্ডীরের মুখহ ইতে গোরক্ষা করিব ; নখর যে শরীর ভাহাহ ইতে যদি চির্ম্বায়ি পুণ্য লাভ হয়, তবে কোন্ ভুদু লোক ভাছা ভাগি করে ? অপের এই গোরক্ষা রূপ যে কাঘ্য সে প্রামশের কাল বিলয় সহ্য করে না, এবৎ কালাঙীত হউলে আমার কোন ফল লাভ হউতে পারে না; পশ্চাৎ কেবল বিষাদ উপস্থিত ছইবে। এই বিবেচনার পর সেই বৃহ্মণ কেবল ধর্মেতে শুদ্ধা করিয়া এবং আপনার জীবন তৃণ ज्ञान कतिशा अलगारधा सम्ल मिरलन, जात उरक्रनार कूसीरत्व मूर्स এক অক্সাঘাত করিলেন। কুদ্রীর সেই অক্সাঘাতের বেদনাতে কুপিত ছইয়া অর্দ্ধুত্ত গোকে ভাগে করিয়া ব্রাহ্মণকে ধরিল। গো কুডীরের মুখছইতে পরিত্রাণ পাইয়া দূরে পলায়ন করিল। পরে কুডীর বাুক্ষণকে নটা করিল। অতএব জীবদিগের বাব কর্মের ফল যে ভদু।ভদু তাহা কাল বিশেষে হঠাৎ উপশ্বিত হয়, এবৎ কেহ ভাহা নিবারণ করিতে পারেন না, দেখ গো ক্টারের মুখহউতে রক্ষা পাইয়া দুথী হউল ! নিরুপদুব বালাণ প্রাকৃত কর্মের ফলে কেবল ধর্মলোভে কুদ্বীর্গুত্ত হইয়া প্রাণভাগে করিলেন, কিন্তু গোরক্ষা জন্য পূণ্যেতে ঐ ব্যক্ষণের মন্তবে দেবভারা পৃষ্পাবৃষ্ঠি করিলেন। ব্রাহ্মণ দেহ ত্যাগ করিয়া পুনর্বার দিব্য শরীর পরিপুত করিয়া ধর্গে গেলেন। প্রয়াগতাদি পণ্ডিতের। ব্রাক্ষণের অন্ত কর্মা দেখিয়া ধনাং করিতে লাগিলেন, এবং বিবেচনা করিলেন, ধীর পুরুষেরা চিরকাল পরিশুম করিয়া যে পুণালাভ করিছে আক্ষম হন, এই দাহদি বাহ্মণ শীঘুকারিক প্রযুক্ত দেই পুণা ও যশ লাড করিলেন।

XII .- The repentant man.

অথ অনুশয়ি কথা।

মে পুরুষ প্রথমে পাপ করিয়া পশ্চাৎ তাপযুক্ত ইইয়া সেই পাপ-হইতে নিবৃত্ত হয় এবং শেষে তপ্স্যা করে, পণ্ডিতেরা সেই ধার্মিকের নাম অনুশ্রী কহেন। ইহার ইতিহাস এই।

গলাতীরে কাল্পিল নামে এক নগর, তাহাতে হেমালদ নামা এক

বালা থাকেন। মন্ত্রিরা প্রামর্শ করিয়া দেট রাজার পুত্র রজ্লাক্ষদকে ঘুররাজ করিলেন। রজালদ গৌবরাজ্য পাইয়া পিতার উপাত্তির ধনেতে গর্কিত ছউয়া এবং যৌবনমদেতে মত ছউয়া অন্যং লোকের প্রতি অন্যায় করিতে প্রবৃত হউল। প্রাচীনেরা কলিয়'ছেন, বিশিষ্ট লোকের আত্মসদৃশ পুত্রেতে বংশরক্ষা হয়, এবং অভিধার্মিক পুত্র-ৰারা বংশ উল্লেল হয়, আরে অধম পুত্রৰারা বংশ শীঘু ক্লীণ হয়। অপর কোন্ অধম প্রুষ প্রচ্র ধন ও মৌরনপ্রাপ্ত ছইয়া উংক্টৌ বিদ্যালাভ করিয়া গর্কিত না হর ? যিনি ধন ও গৌবন এবং বিদ্যা এই সকল লাভ করিয়া অহস্কার্যুক্ত না হন, তিনিই সংপ্রুষ, আরু পণিতমণ্ডলীর মধ্যে তিনি পৃজ্জনীয় হন। অপর যে পুরুষ ধন প্রাথ হ**ট্যা অহ**কার জয় করিছে পারেন এবং যৌবন সময়ে কদ্দপকে প্রাক্তিত করিতে পারেন, সেই সাধু লোক, কাহাকে জয় করিতে ন। পারেন? অর্থাৎ তিনি সকলকে জয় করিতে পারেন। অপর যে খ্রা क्लपर्का अजिज्ञान करत, आह स्य मन्त्रा प्रभावाध उन्नाद्धन करत. सिष्ट দুরের শ্রীরে কোন্পাপ না জলেয় ? যেতে সুক ভাহারা ভেজচোরী হটয়। কৃপথগামী হয়, কেহ ভাহাদিগকে নিষেধ করিছে পারে না,যেমহ উচ্ছুঞ্জ रखी चफ्टल्म गमन करत, डाहारक रकह तात्व कतिरह भारत मा, डाहात নায়। অনন্তর দেই রতনাক্ষ পিতৃবিয়োগের পর ব্যং রাজা হট্যা ধনিদিলের ধন হরণ এবং পরস্তা হরণ আরে অপরাধরহিত প্রজা-দিগের প্রাণদণ্ড করিতে লাগিল। তথান দেখানকার সকল লোক বিবেচনা করিলেন, এই রহনাক্ষদ কথনও রাজ। নচে, এ নিতামুদস্য। আর যেমত মদাক্ষ হয়ী স্থান্তুট হট্যা দৌরাল্ল্য করে, দেট মত গৌলন-মদে মর এবং ধর্মাত্ত এই রাজা প্রজাবের প্রতি দৌরাক্সা করিতেছে। যদি সকল লোক একপ্রামশ হটয়া এট রালার অপ্রাধের উপযুক্ প্রতিকার করেন, তবে সকলের স্বামিদ্যেহরপ পাপ হটবে। যদি কোন প্রহীকার না করেন, ভবে সকলের বিনাশ হটবে; অভএব মুনিগণরারা नत्र अधिक धर्म्मा भरतम कतान कर्तना। भरत महित्तत। ८ आहर প্রধান লোকেরা মুনিদিগকে আজ্ঞান করিলেন। পশ্চাৎ মুনিগণ একত্র रहेशा तास्रात निकटि शिया कहिलान, हर महातास, हुमि धर्मा मक्षय কর; ধর্মাই রাজ্যের কারণ হটয়াছে। ধর্মের ন্যুনতা প্রযুক্ত অন্যু সকলে কেবল সামান্য মনুষ্য হইয়াজে; ভূমি পূঠা জন্মে অধিক ধর্ম সঞ্য করিয়াছ, ভাছার ফলে নরপতি হইয়াছ; পুনশ্চ ধর্মানুষ্ঠান কর, ভাছাতে ট্টাইট্ডেও উত্তম পদ পাইবা। পরে রাজা জিলাদা করিলেন, ছে म्निशन, धर्मा कि श्रकात? म्निशन उत्तत कतिलान, भत्नुता इतन अत्मातास्थित्रम्य अवर अवहिरमा, अहे मकत्मत्र निवृत्तिक्रमकः, स्वात् দরা এবং দান ও প্রজাপালন ও যজ এবং বুভ এই সমুদায়ের প্রবৃ-

তিরূপক বেদবোধিত যে কর্মা, তাহার নাম ধর্মা। র্তনাল্দ নর্পত্তি পুনক জিলাদা করিলেন, দেই ধর্মেতে কি হয়? মুনিগণ করিলেন. অমর্থ কাম মোক্ষ এই ত্রিবর্ণ সিদ্ধ হয়। রাজা কহিলেন, ইচার প্র. মাণ कि? থযিরা উত্তর করিলেন, ঈখরের প্রণীত বেদ সকল ট্রাব প্রমাণ আছেন। রাজা বলিলেন, ঈশর নাই; ওাঁহার প্রণীত বেদ কি? মুদ্ধ ঈশ্র থাকিতেন, তবে আমার দৃশ্য অথবা অনুভত হউতেন। ডিনি আমার কিলা অন্য লোকের দৃশ্য হন না এবং অনুভূত হন না, অতএব ঈশর নাট। ভোমরা মূনি অতান্ত মানা, কেন মিথাা কহিয়া আমাকে ভূলাইতেছ? যদি প্নশচ এই প্রকার কহ, তবে ইহার উপযুক্ত দওপাইব।। মুনিগণ এই কথা শ্রনিয়া আদেতে বাহিরে আদিয়। পরসপর কহিতে লাগিলেন, এট রাজা নাস্তিক, এ আমাদিগের কথা গুহণ করিবে না, তবে কি প্রকারে ইহার মঙ্গল হউবে, উহা কহিয়া ওঁহোরা আপিন ১ স্থানে গেলেন। অন্তর মন্ত্রিরা যোদ্ধাদিগের সহিত প্রাম্পকরিলেন, এই রক্তাঙ্গদ অভিদুট প্রভু; ইহাকে কোন উপায়েতে রাল্যহইতে দ্র করিতে হটবে। এই কথোপকথনের পর ঐ দকল লোক এক-প্রামশ হইয়া রাজাকে অপ্রস্থ করিয়া তাঁহার কনিষ্ঠ ভাতাকে রাজা করিলেন। শান্তের এই রূপ লিখন আছে, যে রালার মন্ত্রী বিরুক্ হয়, দেই রাজার রাজ্য নফীহয়; এবং যে নরপতির প্রজারা বিরুক্ত হয়, ঠাঁহার আয়ু:ক্ষীণ হয়। দেউ কালে রজনালন চিন্তা করিলেন, আমার ভাতা আমার রাজ্য লউলেন, উহার পর আমার প্রাণ লউবেন : আহেএর এখানহউতে পলায়ন করি। উহা ধির করিয়াল৴ভিদে। নামে এক বেশ্যাকে সঙ্গে লইয়া পলায়ন করিলেন; পরে কোন গামেব मस्या ना थाकिया এक उरलावरनव मस्या वाम कविरलन । लम्हाः व इन्हें अव প্রতিদিন তপ্রদিগের আনীত ফল ম্লাদি লইয়া ভক্ষণ করিতেলা-গিলেন। তপ্যিরা রাজার দৌরায়ো বিরক হট্যারাজাকে কহিলেন, হে নরপতি, তোমার ভাতা ভোমাকে নট করিতে এখানে আদি-তেছেন। রাজা ঐ কথা শুনিয়া অভিতীত হট্যা চিতা করিলেন, ভাতার অনেক সহায় আছে, আমার অন্য সহায় নাট, কেবল এক বেশ্যা সহার আছে, ইহাতে কি প্রকারে আপনার প্রাণ্রক্ষা করিব[†] অতএব এখানহটতে দুরে ঘাই। ইহা দ্বিক করিয়া ঐ বেশ্যার সহিত বনাম্বরে পলায়ন করিল। অনম্বর উভয়ের এক ২ বন্ত জিল; ভাগা ক্লীৰ্ণ ছইলে শীতকাল উপস্থিত হউল। তথন ঐ দুই জনের শীতকাণকভা কেবল এক কমল থাকিল। দুই জন মিলিড হইয়াঐ কমল আসন ও भारतीतारत्व करत्न। यथन दाजा मिहे कमन महेगा मुगरा कतिएउ यानः তখন বেশা)। শীতে অতি কাভরা হয়। এফ দিন গণিকা শীতে অংব কাতরা ছইয়া রাজাতেক কহিতে লাগিল, রে ন্রাধ্ম, চুট রাজা হ^{ট্}া

কেবল আপনার জানদোবেতে রাজ্যতাত হটয়াছিল, বধাপি সুথেছা করিয়া আমাকে বনমধ্যে আনিয়া নিভান্ত দুঃধ দিতেছিল। আমি আরু দঃশ সহ্য করিছে পারি না; আমাকে ভাগে কর। উত্তম শস্তী ব্যতিরেকে যাহার শয়ন হটত না, এবং ঘোটক ব্যতিরেকে যাহার গমনাগমন হইত না, আর কপুরাদি উত্তম দামগুী ব্যাউরেকে ঘাছার ভাৰল চকণি হটত না, ও ঘাহার সমীপে সকলা চামর বাজন হটত, এই রূপ সূখী পুরুষ যে তুমি, এখন ব্যাধের ন্যায় জাব হিংদা করিয়া উদর পর্ণ করিতেছ, অতএব ভোমাকে বিক্। রঙ্লাঙ্গদ বেশ্যার তির্ভার टाका खनिया कहिएलन, रह श्रिया, वियान कति ६ ना, कान ममस्य शृख्यब्र বিপদ উপস্থিত হয়, এবং সময় বিশেষে সেই বিপদের প্রতীকারঙ হয়; ইহাতে উদ্বেগ কর্ত্তর নহে। আরু আমি প্রভিন্না করিছেছি, এই বাজিতে দিতীয় এক কম্বল আনিয়া অবশ্য তোমাকে দিব, ইহার অন্যথা ছউবে না। সম্পুতি তুমি অগ্নিদেবা করিয়া শীত নিবারণ করে, আমি ছিতীয় কম্মলার্থে ঘাইতেছি। রাজা বেশ্যার নিকটে ঐ প্রভিজাকরিয়া নিজ কললেতে আপনার শ্রীর ঢাকিয়া এক নগরের মধ্যে গেলেন। পরে এক ব্রাহ্মণের গৃহে সিঁথ দিয়া দেই সিঁথের মূর্বে আমাপনার क्यम दाशिया शृद्धत मध्या अतिम कृतिसम, किन अनुमन्नान कृतिया ट्राक्करनद नदीद्रहरेट कचन आकर्षन कताट ये द्राक्करनद निमासन इरेल। उथन वाकान उटेकः सदत প্রতিবাসিদিনকে कहिट्ड लानिल्लन, ভোমরা শীঘু এখানে আসিয়া এই চোরকে মার। চোর সকল লোককে জাগুং জানিয়া অতিত্রাদেতে গৃহের বাহিরে আদিয়া অরাপ্রযুক্ত আপনার কম্বল ত্যাগ করিয়া শীঘু পলায়ন করিল। পশ্চাৎ চোর নরপতি নগরের टाहित्व ज्यानिया भीटि काउत इन्हेंगा विट्याना कवित्नन, ज्यामाव स्म এক কম্মল ছিল, তাহাও গেল। পরে স্থির চিবেতে চিম্বা করিতে লা-গিলেন, করার ইচ্ছা ও যতন বাভিরেকে কাণ্য দিছ হয় না, এবং হাঁহার ইচ্ছা ও যভেনতেই কার্য্য দিদ্ধ হয়; কিন্তু কাহার ইচ্ছাতে আমার কম্বল গেল? আমার এমন ইজ্ছা ভিল না যে আমার কম্প যায়, বর্ৎ আমার ইচ্ছা ও যকন ছিল যে বিঠায় কমল মিলে; ভাহা না হটয়া डोहात विभावीत इंडेल, डेटा काहात डेव्हाटड ट्रंडेल ? এব९ डिनि वी কে? অত্তৰ বুঝি স্মাক্তা কেছ আছেন, ঠাহার উচ্চাডেট স্কল সম্পন্ন হয়, তিনিই সৎসারের সৃষ্টি শ্বিতি প্রলয়কর্তা ও প্রমারাধ্য প্রমেখর। এমত যে প্রম প্রুষ তাঁহাকে আমি মোহপ্রসূক অব্যাপি চিনিতে পারিলাম না, আর নানা দোষে ও অহস্কারে এবং অসানভাতে শাব্রসিদ্ধ বাক্য না শুনিয়া ত্রৈলোক্যের নির্মাণকর্তাকে জানিতে পা-विलाभ ना। असन कि कतिय? विवास कर्तना नहर। मनुषा व्यक्तानश প্রযুক্ত অনেক লংখতে পাপকর্ম করে, কিন্তু যথন ভাছার ধর্মেতে

প্রবৃত্তি হয়, সেই সময়ে তাহার শুভক্ষণ। অপর সোক য়খন পাপ পরিত্যাগ করিয়া ধর্মজিয়াতে প্রসৃত্ত চয়, ভদতধি দে কাল সেট কাল ভাছার ৰুগভোগের নিমিত্তে হয়। আরু দেমত ঔষধ রোগিদের সঞ্জিত রোগ নতী করে, সেই মত পুণ্য পাপিদের সঞ্জিত পাপ নটা করে। অতএব আলা প্রভৃতি আমি ভপদ্যা করিছে প্রবৃত হইলাম। ইছা নির্দারিত করিয়া দেউ রাজা লংকিক। বেশ্যার নিকটে আসিরা কটিলেন, হে বেশ্যে, আমি ভোষাকে ভাগে কবিলাম, ভূমি অভিল-ষিত ভানে যাও। কেশ্যা ঐ কথা খনিয়া নগরের মধ্যে গেল। তখন রাজা চিত্রা করিতে লাগিলেন, যে কাল গিয়াছে তাকা পুনর্কার আ-সিবে না, এব৲ যে কাল সম্পুতি ঘাইতেছে তাহা আরু মিলিবে নাঃ আছেএব আহার বৃথা কালযাপন কর্ত্র নহে। আমি এই অনুধি মহা-দেবের তপ্সা করিয়া তাবং কাল যাপন করিব। রাজা এ^ই প্রতি-জ্ঞাপুর্বক মহাদেবের আরোধনাকরিয়। মহাতপদী হউলেন। মেট সম মুনিগণ বিবেচনা করিলেন, মনুষ্য যে জাতিমাত্রেতে চোর অথবা ধার্মিক হয় এমত নচে; যে প্রকার ক্রিয়া করে দেই রূপ খ্যাত হয়। দেখ র্তসালদ প্রথমে রাজা হট্যা মধ্যে দ্যুত্তি করিয়াও পূর্বজন্মের কর্মা-ফলেতে শেষে তপৰী হউয়া মহাপ্রুষ হউলেন।

XIII.—The Generous Rich.

অথ মহেচ্ছ কথা।

ধে লোক ন্যায়েতে অথোপাড্রন করিয়া সেট অর্থ দান ও ডোগ করেন, তিনি যদি পুণ্য ও মশের আশুয় হন, তবে সকল লোক ভাঁছাকে মহেচ্ছ কহেন। ডাহার উদাহরণ এট।

পাণ্ডুপত্তন নগরে গৌড় রাজার মন্ত্রী মহারাজনেব নামে এক করিন ছিলেন। তিনি বামি শুকিপরায়ণ হইয়া আতপত্র পরিচিত নারক এই উপাধি পাইলেন, পশ্চাং সকল লোকের নিকটে সত্যরাজরুপে ঝাত হইলেন। পণ্ডিরেরা কহিয়াছেন, ধর্ম ও অর্থ ও কাম ও মোক্ষ এই চারি প্রকার পুরুষার্থ, কিন্ত প্রভুশুক্ততে ঐ চারি প্রকার পুরুষার্থ লাভ হয়। সেই বাভাবিক ধার্মিক মন্ত্রী ধর্মোপায়েরেত ধনোপার্জন করিয়া ভাহার কর এবং বিভি ও বৃদ্ধি এই বিবেচনা পূর্বক কার্য্য করিয়া প্রচুর ধন সঞ্চয় করিলেন। অনন্তর মন্ত্রী বিবেচনা করিলেন, অর্থই প্রধান পুরুষার্থ; কিন্তু আমি শ্রামান, এই অভিমান যাহার হয় ভাহার শ্রী দীর্ঘকাল থাকে না; যেহেতুক লক্ষ্মী চঞ্চলা, আর যে পুরুষের

অধিকাধিক ধনাকাৎক্ষী এবং সর্মকার্য্যে ক্শল ও ধনোপাজ্ঞানে প্রবৃত্ত कार्ष्ट्रम, जात धन विषया निज পरिजनिष्ठित वित्राम करत्म ना, उ . ধনতার করিতে পারেন না, ভাঁহারা কেবল কায়ে।র ভার বহন করেন। অপের যে লোক সঞ্জিত ধনেতে আপনাকে চরিতার্থ জান করেন, তাহার অর্থের বৃদ্ধি হয় না। অন্য প্রকার যে পুরুষের বলবান সহায় বশী-ভূত থাকে, তাহার ধনোপাজ্জনের যোগ্যতা করাগুবতিনী হয়; কিন্তু বৃদ্ধিমান লোকের। ধনকে ধনজান করেন না, ধনোপাজনির গোগাভাকে ধনজান করেন। তাহার কারণ এট, ধন নফী হয়, অথোপাজ্জনের যোগ্যতা হঠাৎ নন্টা হয় না। সম্পুতি আমার অনেক ধন আছে, এ প্রযুক্ত ধনচিধাও কর্ত্তবা নছে। আরে রাজা এক শের পরিমিত দুব্য ভোলন করেন, চৌরও এক শের দুলা ভক্ষণ করে, অংএব আছো-রার্থে রাজ্ঞার অধিক ধনেতে কি প্রযোজন? এবং চৌরের ধনতীন-ভাতেই বা কি ছানি? ভলিমিতে কেবল আহারাথে ধন্যঞ্য কর্ত্ব্য নহে, সঞ্জিত ধনের যে প্রধান ফর এহা লাভ করি, এই বিবেচনাতে অর্থবায় করিয়া মালা চন্দন ও বনিতা এবং ভাষুলাদিয়ারা সুখানুষ্ঠব করিয়া পুণাভিলাষ হউলেন, ও হুলা প্রভৃতি মহানান করিয়া কারি শ্বাপন করিলেন, ও প্রচুর ধনতায়েতে গুণধান লোক সকলকে সভ্যট করিয়া আপনার গুণজগাপ্রকাশ করিলেন। এই রূপে যোবন কাল यांभन कविष्ठान । वे शच्चा शोरन सभएत्रत भत विष्ठात विवृक्त हहेंगा বুত উপবাদাদি কায়কেশদাধ্য যে ধন্ম তাহাও সঞ্য করিছেন। অন্তর সকল দর্শহর যে বাহ্নকা ভাহা উপঞ্চ হউলে মন্ত্রী ক্রমে ২ শরীরের সৌল্লয়নাশ ও সাম্থ্যহানি আর গুছের ধনক্ষয় এট সকল দেখিয়া চিশ্ব। করিতে লাগিলেন, আমি পঞ্জ পাইলে আমার সকল ধন নটে হটনে, এবং মকল ওণ ল্প হটনে, ও প্রভূতকি মাটবে, আর এট যে দেহের 🛍 টহাও থাকিবে না। এবে দপ্রতি ধর্মাথে কেন সকল সম্পতি বিভর্গ না করি? আরু মনুষ্য সকল বিষয়া ভাগে করিছে পারিলেই বামনার্চিত হয়। ইহা খের করিয়া হরিক্দু রাজার মত আপেনার সর্কায় বুলেলদিগকে দান করিলেন, এবং রাজা বিক্রমাদিতে।র নায়ে দৃজ্পতিজ হটন। গন্ধন বুঙ করিমা প্রয়াগতার্থে দেহতাগ করিলেন, এবং ভংকণাং ছর্গোগ্যন করিয়া দেবতা পাইলেন। শাধু লোকেরা মহারাজদেবের কাতি শুনিরা এবং মর্ণের ত্যাপার (विश्वज्ञा विरवहना कृतिस्मन, এই মন্ত্রী প্রান্ধ দংখ্যক ধন উপাত্র্যন ৪ বিতরণ করিয়া যাচকদিগের মনোরথ পূর্ণ করিয়াছেন, এংং যৌবন সময়ে কলপের দেবা করিয়াছেন, সম্পুতি উত্তম তীর্থে প্রাণত্যাপ করিয়া মুক্ত হটলেন। অতএব এই সকল কাৰ্য্যহটতে অধিক পুরুষার্থ কি আছে≀ অনেক ধনবান লোক দুরহইতে আগত অথচ নিল্রার্ছ

যাচকদিপকে কিঞিৎ দান করেন। মন্ত্রী মহারাজদেব বিনা যাজ্ঞাতে যাচকদের গৃহেতে প্রচুর ধন প্রেরণ করিয়াভেন, অতএব পৃথিবীর মধ্যে মহারাজদেবের তুল্য দাতা ও দকল পুরুষার্থিযুক্ত অন্য কেই নাই।

XII .- The foolish Rich.

অথ মূঢ় কথা।

ষে লোক লভা ধনের প্রভ্যাশাতে সমুদ্র লব্ধ ধন বায় করে, এবং ধর্ম আরে অর্থ ও কাম এই সমুদায়েতে অনভিজ হয়, জানবান লোকের। ভাহাকে মুদ্ কহেন। ভাহার উদাহরণ এই।

অঘোধ্যা নগরীতে ভূরিবসু নামে বণিকের প্রচুরধন নামা এক পুজ ছিল, সে পিতৃ বিয়োগের পর পিতার সঞ্জিত ধন পাইয়া প্রাচীন লোকদিগকে জিজাদা করিল, আমার পিতা কি উপায়েতে এত ধন সঞ্ম করিয়াছিলেন? বৃদ্ধ লোকেরা কহিলেন, ভোমার পিতা কেবল বাণিক্ষোতে অর্থ দঞ্জ করিয়াছেন। শারের এই মত লিখন আছে, বুজোপদেশে জ্ঞান জমে, এবং রাজদেবাতে মঘ্যাদা লাভ হয়, ও দানেতে পূণ্য আর যশোলাভ হয়, এব**ং বাণিজ্যেতে ধনসঞ্**র হয়। প্রচুর্ধন ভাহা অনিয়া পুনশ্চ জিজাদা করিল, বাণিজ্ঞা কি প্রকার? বৃদ্ধেরা উত্তর করিলেন, অন, গৌড় দেশে ক্রীত বদ্ধ প্রজ্ঞার দেশে विक्रम कृतिमा এवर धेम्बद्ध कोड वन्त्र लीए विक्रम कृतिद्व, व्यर्थार ষ্থান যে স্থানে যে২ দুবা দূলত হয়, তাহা ক্রম ক্রা, এবং যে দময়ে ও যে ছানে দে দুব্য মাহার্ঘ্য হয়, সেই সময় বিশেষে কিলা দেট স্থান বিশেষে ভাছা বিক্রয় করা, এই বাণিজ্য। পণ্ডিভেরা কহিয়াছেন, এক দেশহইতে অন্য দেশে দুব্যের আনয়ন, এবং এক সময়ে क्रीं वर्षत कालाखद विक्य कर्न, देशत नाम वानिका, देशट मुरतात ষে মূল্য বিশেষ হয়, ডদ্বারা বণিকেরা মূলধনহইতে অধিক লাভ করেন। অপর যে ব্রী পতিবুতা না হয়, এবং যে পুরুষ ব্যবসায়ী ন হয়, সেই দুই জন সময় বিশেষে অভিক্লেশ ভোগ করে। অভএব ভূমিও ব্যবসায় করিতে উদ্যোগী হও। কোটীখর যে পুরুষ তিনিও ব্যবসায় ना कतिरल निर्धन इन। उनमञ्जद सम्हे दिनक्शृष्ट विरवहना कतिन, আমার কোটি দংখ্যক ধন আছে, ইহার লক্ষ্ ভদ্ধাতে ক্রীত বড় এক দেশহইতে অন্যদেশে লইয়া বিক্রয় করিলে তাহার চতুর্গুণ ধন भाइतः; **अउथव नर्समा अदे श्रकात कतिल अम-राशा धन इ**हेरतः; ভাছাতে কোন চিন্তা थाकिटर ना; मण नक ग्राकात राजनारम् छ भूनसीत

कार्षि मृषु। व्यवना मक्षय कृतिए शाहित। मन्नु कि मन लक्ष मृषु। दाशि-য়া ও অবশিষ্ট ধনতায় করিয়া যৌবনোচিত দুখভোগ করি; যেছেতুক অর্থ আইনে এবং যায় আর পুন:২ লভ্য হয়, কিন্তু বাল্যকালাদি যে বয়ঃক্রম ভাহা অভীত হ^টলে পুনকার আগমন করে না। বণিক-পত্রের সহবাসি বয়স্যেরা এই কথা খনিমা ভালাকে প্রশংসাকরিছে লাগিলেন, সাধু বৰিকপুত্ৰ, সাধু; ভোমার পিডা কৃপণ ছিলেন, ডিনি কেবল অর্থোপাজ্ঞন করিয়াছেন, কিছু ভোগ করিতে পাবেন নাই, কিন্তু তুমি ধনৰামী হটরা অনায়াদে সমূলায় ভোগ করিতে পারিবা। অনুধুর্ সেই মূঢ় আপেনার সহবাসিদিগের কথাতে উংস;হগুকু হইয়া নির্শ্বর ধন হায় করিছে জাগিল। যাহার ধন থাকে দে যদি অপ্রায় করে, তবে দেই অমথাথ বায়রপে বাসনে ঐ ধনির ধন ক্ষয় হয়; কিড দেই ধনগাহকদিগের এবং অনা লোকদিগের কিছ হানি হয় না। অপর যাবং যামির বিভব থাকে, তাবং মনুষোরা ওঁহোর ধনায়াদন করে ও ৰামিকে স্তব করে, পশ্চাৎ প্রভুনির্ধন হউলে মনুষোরা কেবল ঠাহার ভ্যাগ ও নিন্দা করে। পরে দেই মৃঢ় উত্তর কালে কি হইদে, ইহা বিবেচনা না করিয়া সভংস্রের মধ্যে মালা এবং চপন ও যুবতা আরু ভাষুল ও আরি ২ সূথকর সামগ্রীর নিমিতে সকাধ উচ্ছিল করিল, এবং পুর্কেদশ লক্ষ্মুদারাখিবার যে প্রামশ করিয়াভিল, ভাহানারাখিয়া এক লক্ষ্ম দুমাত্র রাখিল, পশ্চাৎ কিঞ্ছিৎ কালেতে দেই এক লক্ষ্ টাকা অভেকি বায় করিল। যেমত প্রবাহর্হিত কুপের হলে লোককর্তৃক নীর্মান হট্য়া ক্ষয় পায়, সেই মত উপায় বৃতিত্তপ্রপুকু গুতের সঞ্জিত ধন অংশে ব্যয়েতেও ক্লীণ হয়। পরে মেট বণিকপ্ত অংশে ব্যয়েতে কিঞিৎ কালে নির্ম হইয়া অবসম হইল। পণিতেরা কহিয়াছেল, কোটীখর পুরুষও ক্ষীণধন হউলে বুকি ও বিবেচনাতে রহিত এবং পূর্বাস্তাস ক্রমেতে বায় বাসনা করিয়া সকল ধন বায় করাঙে অপপ কালে দ্রিদৃহয়।

XV .- The Coretous Man.

অধ বহুাশ কথা।

শে লুক্ক পুরুষ ধন লাভ করিয়া ভূপ হয় না, এবং বহু লাভেচ্ছা করিয়া সর্কাদা প্রচুর ধনেতে দীর্ঘ প্রত্যাশা করে, নীডিজ লোকেরা ডাছাকে বন্ধাশ কছেন। তাহার উদাহরণ এট।

বিজয়নগরেতে কৃতিকুশল নামে এক মালাকার ভিল, সে অভি সুন্দর মালা প্রস্তুত করিভ এবং মালাগুছিক নগর্ছ লোকের উপাদনা ক্রিয়া

অনেক ধন লাভ করিয়া ও ভাহা অপ্প জ্ঞান করিয়া প্রচুর ধন লান্ডে-চ্ছাতে রাজ সেবারম্ভ করিল। অনন্তর মালাকার মালাদানের কৌশ-লেতে রাজাকে দন্তট করিয়া নরপতির অনুগুহেতে মালার পৃষ্পাদংখাক মুদ্রা লাভ করিতে লাগিল, কিন্ত তথাপি মালাকারের প্রত্যাশার নিবৃত্তি হইল না; জ্ঞানতান লোকেরা কহিয়াছেন, যে লোক পরার্ক্ন পরিমিত ধনাকাৎক্ষা করিয়া ইতল্পতো ধাৰমান হইয়া আপনাকে সদা নিৰ্ধন জ্ঞান করে, দেই বহুলে পুরুষের কোন স্থানে দুখ জ্ঞানে না। অনন্তর দেই মালী প্রভ্যাশাতে উত্রোত্র ব্যাকুল হইয়া এই চিতা করিল, षामद्भ धरनट छेमाना करा এवर लद्भ विख्रतट षापनाद मस्हार ও পোষণ করা আর অর্থের পরিচয় দেওয়া এবং ধন ভোগ করা, এই সমুদায় কার্য্য করণেতে অর্থের বৃদ্ধি হয় না, বর্থ সঞ্চিতার্থের লোপ হয়। এই পরামর্শ করিয়া মালাকার পিপ্পলীর ব্যবসায় এবং কৃষিকর্ম আর অন্যথ বাণিজা ও পশুপালনাদি ধনোপাজ্জনের যে ১ উপায় আছে, সেই সকল কার্যোতে আপনার অর্থ সকল নিযুক্ত করিল, এবং আপেনি ঐ সকল বাবসায়েতে নিযুক হটয়াও পূর্কমত রাজ সেবা করিতে লাগিল, এবং আত্মভিন্ন দকল লোককে অবিখাদ করিয়া স্বয়ৎ পরি**শ্রম করিয়া সকল** ব্যাপার করাতে খাতার **খাশ**ক হইল। আরে যখন বাণিজ্ঞা ব্যবসায়ে থাকে, তখন কৃষিকর্মা হয় না; যে সময়ে কৃষিকম্মেতে থাকে, দে সময় পিপ্পলী সংগুহ হয় না; যাবং পিৎপলী मरशुर করে, ভাবৎ পশুপালন হয় না। এই প্রকারে তাবং কর্মানট হইতে লাগিল, এবং আপনিও সর্বাদা পরিশ্রম করিয়া অতি দুর্বল ছইল। অনপুর রাজা মালাকোরের কোন অপরাধে ভাহার সর্কয় হরণ করিলেন। নীতি শাত্রে কথিত আছে, দাদেরা যদি নৃপতিকে জ্মাবধি মৃত্যু পর্যান্ত দেবা করে, তথাপি দেই রাজা দেবকদের ষংকিঞিং অপরাধে ঐ দেবকদের প্রতি অতায় কুপিত হন, এবং সেই কোপেতে যদি সেবকদের প্রাণ দও না করেন, তথাপি দৃগ্র ন্যায় ভাহাদের সর্ধয় গুহণ করেন অনত্তর মালাকার নির্ধন হইয়া অধিক কুধা এবং দুর্লভ বেদ্ধর লাভেচ্ছা ও মুধরতা আর কাকুলি ৪ তাবে প্রসক্তে অনভিজ্ঞতা, দরিদের যে এই পাচ দোষ তদ্যুক **হটল, এবং দরিদু হটয়া পারজন পোষণেতে অসমর্থ হইয়াও পুনঃ**ং ধনসঞ্চয়ের চেক্টা করিতে লাগিল। প×চাৎ মালাকার এক রাত্রিতে কত্ত ও<mark>লি মালা ল</mark>টয়া নি**ল** নগ্রহটতে অন্য গুড়েম যাটতেছে, সেট সম্য দুট পুজকরিণীর মধায়ানে অতি বৃহৎ সাভ ধনভাও ঘাটতেছে টিহা দেখিল; এবং ঐ ধনভাও দেখিয়া বিবেচনা করিল, এই অচ্চের বক্ত কি প্রকারে এক সরোবরহইতে অন্য সরোবরে ঘাইতেছে । এ বড় আশ্চহা। বিদ্র আমি বিবেচনা করি এই সকল নিধিভাও চ^{ইটে}

পারে, সেই নিধি শক্তিতে ইহারা গমন করিতেছে। আমি শীঘু এই সকল ভাও পূজা করি। ইহা দ্বি করিয়া ঐ সকল মালা দিয়া প্রত্যেক ভাতের পূজা করিয়া নানা প্রকার স্তব করিল। তাহার পর প্রথম ভাওহইতে এই বাকা নির্গত হটল, হে দরিদু, যে ভাও সকলের পশ্চাৎ আসিতেছে, ভাহাইইতে তুমি কিছু ধন লট্বা। তাহার পর আর পাঁচ ভাওও সেই প্রকার কহিল। শেষে সপ্তম ভাও আপন মথের আ-বরণ খলিয়া এবং সুবর্ণ প্রকাশ করিয়া কহিল, হে মালাকার, আমরা দকলে তুমী হইয়া তোমাকে সাত অঞ্জলি মুণ দিতেছি, তুমি তাহা লও, কিন্তু ইহার অধিকাকাৎক্ষা করিও না। মালী ঐ কথা শ্রনিয়া হর্ষযক্ত হইয়া ঐ ভাওহইতে সাত অঞ্জলি ষ্ণ লইয়া পুষ্পপাতে রাখিল, পরে অতিশয় লোভেতে অউমাঞ্জলি গুহণ করিবার বাসনাতে ভাতের মধ্যে দৃষ্ট হাত প্রবেশ করাইল। তৎক্ষণাৎ ঐ ভাও নিজমূথে আবরণসংয্ক্ত হুইয়া ঐ মালাকারকে লইয়া অতি বেগে চলিল। ভাহাতে মালাকার বেদনাযুক্ত হটয়া কাকুতিপূর্কক কবিতে লাগিল, হে ভাও, আমি আর ধন লোভ করিব না, আমার হস্ত ত্যাগ কর; বর্ৎ যে মুর্ণ লাইয়াছি, তাহা তোমাকে দিতেছি। এই রূপ কহাতে কিজুই হইল না। তাহাতে মালাকার বিবেচনা করিল, यमि এই ধনভাও আমাকে লইয়া জলমধ্যে মগু করে, তবে আমার প্রাণ বিয়োগ হইবে; এই ভয়ে পাদদলয়তে এক বৃক্ষ বেষ্টন করিয়া রহিল। নিধিভাও মালাকারের হস্ক বলেতে আকর্ষণ করিতে লাগিল, তাহাতেই ঐ মালির দুট বাহুমূলোৎপাটন হুইল এবং দেই বেদনাতে মালাকারের পঞ্জ হুইল। প্রবীণেরা কহিয়াছেন, যে লোক ধন বিষয়ে দর্মদা অতুপ থাকে এবং পরার্ক দংখ্যক ধনাকাঙ্কা করে, দেই বহাশ লোক কথনও দুখা হয় না, এবৎ শেষে বিপদগ্র হয়।

XVI.—The Man resigning all things.

অথ নিৰ্ম্বন্ধি কথা।

যে সংপুরুষ সংসার বাসনা ত্যাগ করেন এবং প্ররুষকেরতে প্রভায় করেন ও তক্তজানলাভের নিমিত্তে দৃঢ়তর আগুছ করেন, এমত ধে যতি তিনি নির্মাদ্ধীরূপে খ্যাত হন। তাহার ইতিহাস এই।

দারকা পুরীতে গ্রদ্ধাশা নামে এক ব্রাহ্মণ থাকেন; কোন সময়ে তাঁচার এক পুত্র ক্ষিল, ঐ পুত্রের নাম বিবেকশর্মা। সেই শিশু শৈশবকালাবধি সংসার সুখে বিরহা, ও তিনি পূর্ব জ্লের সংখ্যারেতেই সংসারক নিতান্ত অদ্বির ক্রিয়া জানেন। যেমত পক্ষিশাবকেরা জাতিবভাবপ্রাফুক

শস্যাদি ভক্ষণ করে এবং মৃগশাবকেরা জাতি**র**ভাবেতে ভৃণীদি ভক্ষণ করে ও মনুষ্যবালকেরা জাত্মাত্র দুগ্ধপান করে, দেই রূপ ভব্বজানি প্রবের। জাতমাত্র সংসার সুথে বিরক্ত হইয়া তক্তরজানের অনুসন্ধান करत्न। ঐ वालक विष्याच्यारम रेगगटकाल यालन कत्या ज्यालनात् যৌদন সময়ের প্রথমে উদাসীন হইয়া তক্তজানলাভের নিমিত্তে পিতাকে জিজাসা করিতেছেন, হে পিতঃ, আমি তব্যজানাথী; কিঞিৎ তব্যজান লাভ করিয়া কালযাপন করিতে ইচ্ছা করি, কিন্ত গুরুর অনুগুছ বাঙি-বেকে ভতরজান হটতে পারে না; তুমি আমার পিডা এবং ভতরবেতা, আহএর ভোমার নিকটে হতবজান যাক্রা করি। যেহেহুক কোন লোক যদি কুক্ষের মূলেতে ফল প্রাপ্ত হয়, তবে দে কুক্ষের শাঝাতে আরোহণ করিতে हेक्छा करत ना; त्मडे क्रभ शृष्टरड यनि विना। शास्क, उरव विनाशी লোক দুর দেশ গমন করিয়া বিদ্যালাভ করিতে ইচ্ছা করে না, অতএব আমি অন্যত্র যাইতে হাসনা করি না, আপনি আমাকে ভরেজান শিক্ষা করাউন। শুদ্ধমণা ব্ৰাহ্মণ ঐ কথা শুনিয়া কহিলেন, হে পুত্ৰ, তুমি যুবা পুরুষ, সম্পৃতি গৃহাশ্রমে থাকিয়া সাৎসারিক সুখভোগ কর, পশ্চাৎ সৎসার ত্যাগ করিয়া বনবাসী হটবা; পরে সন্ন্যাসী হটয়া ভক্তজোনের অনুসন্ধান করিলেই ভক্তজান পাইবা। যেমত মনুষ্য বৃ-ক্ষের উচ্চ শাথারোহণেচ্ছা করিয়া প্রথমেট বৃক্ষের সেট উচ্চ শাথা গুহণ করিতে পারে না, কিন্ত যথাক্রমে গুহণ করিতে পারে, সেই মত সংসারী লোক নানাশুম করিয়া ও নানা যতন করিয়া ক্রমেতে ভক্তরজান লাভ করিতে পারে। বিবেকশর্মা পিতার বাকা श्वित्रा निरवनन कतिलान, रह शिष्टः, आमात मीर्घकाल स्रोवत्नत् यमि কেছ প্রতিভূ হয় অর্থাৎ জামিন হয়, তবে আমি ক্রমেতে দকলাশ্রম করিয়া পশ্চাৎ ভক্তজনে পাইডে পারি; যদি শীঘু আমার মৃহ্যুহয়, ভবে আমি সকলাশুম করিতে পারিব না, এবং আমার ভক্তজানও চ্ইবে না; অতএব অবিলম্বে ভারবজানোপদেশ করবা, যেহেতুক সংসার অভ্যন্ত অস্থির। আর পুত্র পীড়িত হইলে শ্বেহযুক্ত পিতাও পুত্রের পীড়ার অবংশী ছইতে পারেন না, এবং যমদূতকতৃক নীয়মান পরিজনকেও साभी तक्का कतिएउ भारतन ना, आत जननी उन्तक रामएकत भीजाय কাতরা হন না, এবং ব্যাধিতে বিকৃত হয় যে নিজ শরীর সেও মনুষ্যের স্বৰণ থাকে না; অভএব কেছ কাছারো সুথ দুঃথের অংশী হন না, ও কেছ কাছাকে রক্ষা করিতে পারেন না, এবং পরক্ষণে কি ছইবে ভাছাও পূর্বের কেছ জানিতে পারেন না। আমার মন এই সকল নিশ্য করিয়া সাৎসারিক ব্যাপারে প্রবৃত হয় না, এই কারণ উত্তম পুরুষাথ যে মোক্ষ, আমি ভাছাই সাধন করিতে ইচ্ছা করি। অর্থ আর কাম এই দুই প্রয়েথ নহে, যেহেতৃক ধন সুধল্লক হয় না, তাহার কারণ

এই যে ধনবায় না করিলে সুখভোগ হয় না; यनि ধনবায় করে, ভবে সেই লোক নিধন হয়। কিড মনুষ্য প্রথমে ধনবান হটয়া এবং ঐ ধনতায়েতে নানা সুধভোগ করিয়া পশ্চাং নিধন হইয়া ধনতায় করিতে অংশক হয়, তাহাতে অনুভূত দেই সকল স্থেতে রহিত হটয়া সর্বাদা দৃঃখানুভব করে, সেট দুঃখান্ভবের কারণ কেবল পুরের ধনাগম। অতএব ধন সুধজনক না হট্যাকেবল দু:ধজনক হয়। আব धन काहादता श्राम तक्का कतिएव भारत ना, त्कावीयत भुक्र खत् ह মৃত্য হইভেছে; এবং সঞ্জিত ধনও মনুষে)র তৃপিজনক হয় না, কোটী-শর প্রবেরও প্রাপ্ত ধনহউতে অধিকাধিক লাভেত্তা হয়, অত্ঞাব ধন প্রহার্থ নহে। কামও পুরুষার্থ নহে, ভাহার কারণ এই, নিরুমুর (স্বা-মান যে কাম অর্থাৎ ক্রিয়মাণ যে কামল ব্যাপার, দে পুরুষকে मग्रक श्रकाद वृश्व करत ना, अथार उन् छत् कारल প্রযের ভৃথিজনক হয় না, আহএব কামও প্রবাথ নহে। অপর ধর্মও ভোগেতে নস্ট হয়, এই কারণ ধর্মা উত্তম পুরুষার্থ হয় না। হে পি:ঃ, আমি এট সকল বিবেচনা করিয়া দ্বি করিয়াছি নে মোক্ষট উওম প্রযার্থ, তাচা যে রূপে দিয় হয়, আপনি আমাকে দেউ রূপ আলে ক্রন। খুঞ্নশা বুজিন আপন পুত্রের বাক্য শ্রনিয়া প্রমাহলাদিত হট্যা উত্তর ক্রিজেন. হে পুত্র, সংসার অস্থিরতর এবং অতার বিরুষ, তমি যে ইতা জানিয়াত म यथार्थ वरहे, अथन वृत्यिलाम इपि निहास स्माक्ताका इकी नहे. अत्र মোক্ষপ্রাপ্তির যে উপায় জানিতে ইচ্ছা করিতেছ আমিও তাহার উপায় কহিতেছি। কিন্তু উপায়জানমাত্রই প্রয়োজন নতে; যদি উপায়জান-মাত্রই প্রয়োজন হইত, এবং কেবল উপায়জানেতেই ফল সিদ্ধ হটত. ওবে আমি মোকের উপায় জানি, আমার কেন মুক্তিনা হটল? গ্রএব উপায় কেবল পথ, সেই পথে গমন করে এমত লোক অভিদুর্গভ। অপর শাব্রে কহিয়াছেন, উপায়রূপ পথবেতা অনে গ লোক আছেন, কিন্তু যে সংপ্রুষ সেই পথে গমন করেন, তিনিট প্রপ্রাপ চন। খুদ্ধন্য। ব্রাহ্মণ এই সকল কথা কহিয়া পুনর্মার কৃষ্ঠিলেন, তে পুন্ন, মোহ্মসাধনের ষে উপায় কহিতেছি, ভূমি ভাহাতে মনোগোগ কর, ওরু প্রমুখাং দক্ষদা বেদ বেদাস্থাদি শাস্ত্র শুনিয়া আত্মতক জানিবা, এবং আত্মতক জানিয়া युक्टिड डाहात निकास कतिया अ समन निकित आधारत्मात এकिन হুট্রা, এট রূপ করিলেট ভোমার মন বিষয়হটতে নিবৃত হুট্য। ঈখ-রেতে সংযুক্ত হউবে; ঈশরেতে নির্পার মনঃসংযোগ হউলেই গোমার मूक्ति इहेटत। প्रत्स मन मुडे श्रकात, यक्ष ও अयक्ष, छाडात तित्त्व बड़े, मझ बदर कुल 8 दम आद शक बदर मलम बड़े भाँठ अकाद বিষয়, এই সকল বিষয়েতে যে দপ্তা ভাতার নাম কামনা; দেই কামনা রহিত যে মন সেই শুদ্ধ; ঐ কামনাযুক্ত যে মন দে অশুদ্ধ। পর্ক্ত মন

নিবিষয় হইলেই অর্থাৎ গুদ্ধ হইলেই মুক্তি হওয়া অতি দুগম, কিভ মনের নির্বিষয় হওয়া অতি কটিন, যেহেতুক আশারূপা যে ব্যাঘ্রী সে প্রচারেম্বর্যা পাদ করিয়াও তথা হয় না,আর যেমত দওনীয় বন্ধ চোর অস্ত্রা-ঘাতেতে নট্ট হয়, সেই রূপ কামী পুরুষ কামরূপ পাশে বন্ধ হইয়া কামি-নীর দৃষ্টিরূপ বাণেতে নট হইতেছে। এই সকল কারণেতে মুক্তির পথ অতিদ্র্গম হটয়াচে, কিন্তু নান। প্রকার ধ্যান ধারণাদিতে যোগ সিদ্ধ ছয়, হে পুত্র, তুমি সেই যোগাবলম্বন করিয়া তক্তজানে নির্বলী হও অর্থাৎ তদেকচিত্ত হও, তাহাতেই তোমার মোক্ষ হটবে। বুলিনের পুত্র এই সমুদায় বাক্য শুনিয়া কহিলেন, হে তাত, আমি ভোমার অনুগু-হেতে এই উপদেশানুসারে তত্তবজ্ঞানেতে নির্বস্তী হইলাম। বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ উত্তর করিলেন, হে পূত্র, তবে তোমার মূক্তি হইবে; তব্তবেটাধে নির্বন্ধী ছইলে জীব সংসারপারাবারোতীর্ণ হইতে পারেন, এবং বনজ মত ছব্রিব ন্যায় যে মন তাহা বশীভূত করিয়া ইন্দ্রিয়গণকে জয় করিতে পারেন, আর দকল বিদ্যার পার্গত হুট্যা কর্মারূপ যে পাশবন্ধন তাহাহইতে মুক্ত হইতে পারেন, এবং দেই হেতুক মোক্ষপ্রাপ্ত হউতে পারেন। ব্রাহ্মণের পৃত্র পিতার আজানুদারে যোগাবলম্বন করিয়া এবং তত্তজানী হইয়া অর্থাৎ জীবাত্মার সহিত প্রমাত্মার অভেদ জान कतिशा मुक्त इटेलन।

From the Hitopadesha*.

হিতোপদেশঃ।

I .- Introduction.

ভাগীরথীভীরে পাটলিপুত্র নামে এক নগর আছে, দেখানে দকল রাজ্ঞপিবিশিক্ট সুদর্শন নামে রাজা ছিলেন। দেই ভূপন্তি এক সময়ে কাহারও কর্তৃক পঠামান লোকরয় অবণ করিলেন; তাহার অথ এই; অনেক সন্দেহের নাশক এবং অপ্রভাক্ষ বিষয়ের দর্শক এমত যে শাস্ত্র দে সকলের চক্ষু, ইহা যাহার নাহি দেই অন্ধ। আরু যৌবন ও ধনদম্পত্তি ও প্রভূত্র ও অবিবেকতা, এই চহুক্টয় প্রভোকেই অনর্থের নিমিত্ত হয়, আরু যেখানে এ চহুক্টয় একাধারবর্তি, দেখানে কি হয়, তাহা কহিতে পারি না।

ইহা শুনিয়া সে রাজা অজাতশান্ত এবং দর্মনা নিপথণামি আপন পুশুদিনের শান্ত্রবিজ্ঞাপনার্থে উরিপ্লিত হইয়া চিন্তা করিলেন, যে পুশু পণ্ডিত ও ধার্মিক নয়, সে পুশু হওয়াতে কি প্রয়োজন বরং অনথ হয়। যেমন কাণচক্তে কিছু প্রয়োজন নাইি: কাণচক্ত্ কেরল পীড়ারই কারণ হয়। আরু অজাত ও মৃত ও মৃর্গ, ইহাদের মধ্যে আদান্তর ভাল, অন্তিম ভাল নয়, সেহেতুক আদান্তর একবার দুংগদায়ক হয়, কিন্তু অন্তিম পদে হ দুংগদায়ক হয়। অপর গর্জ্যাবও ভাল; ক্রী অভিগমন না করা ও জ্মিয়া মরাও ভাল, কন্যা হওয়াও ভাল, ভার্যা বন্ধা হওয়াও ভাল, গর্জুইইতে ভূমিষ্ঠ না হওয়াও ভাল, হথাপি রূপ ও ধন সমূহবিশিষ্ট মূর্থ পুশু কিছু নয়। এবং যে পুশু জ্মিলে বংশ উন্নতি পায়, দে জ্মুক, নতুবা জ্ম মরণ ধর্মশালি সংসারে কে বা মরিয়া না জ্বা পের পুলুবত মাতা যদি পুশুবতী হয়, তবে বল, বন্ধ্যা কেমন হয় প্রবিন্ধ এক পুশুও ভাল, তথাপি শতহ মূর্থ পুশু কিছু

[•] The extracts from this work have been greatly abridged, but not otherwise altered.

নহে। দেমন এক চন্দ্র অন্ধকার নই করে, কিন্তু ভারাসমূহ কিচ্
করিত্তে পারে না। এবং কোন পুণাতীর্থে যে অতি দুক্ষর তপদা।
করিয়াছে, ভাহার পুত্র অবশা ধনদান ও ধার্মিক ও পণ্ডিত হয়। সেই
প্রকার পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন, প্রতিদিন অর্থের আগমন ও অরোগিতা
এবং প্রিয়া ভার্যা ও প্রিরদাদিনী ভার্যা ও বিনয়ী পুত্র ও অর্থকরী
বিদ্যা, এই ছয় দংদারে দুখদায়ক হয়। আর গোলাগ্হের পূরগার্থে যে আড়ি ততুলা অনেক পুত্রেতে কে ধনা হয়? কিন্তু কুলাচারাবলম্বী এক পুত্রও ভাল, ভাহাতে পিতা খায়ত হন।

এখন এই আমার পুত্রদিগকে ওণবন্ত করা ঘাউক। যেহেতুক আহার ও নিদা ও ভয় ও নিধুবন, এই সকল ব্যবহার পাখদের যাদৃশ মনুষ্যদেরও তাদৃশ হয়; কিন্তু পশুদের হউতে মনুষ্যদের অধিক ধর্মা, এই বিশেষ; অতএব ধর্মহীন মনুষ্যেরা পশ্তদের সমান। যেহেতুক ধর্ম ও অর্থ ও কাম ও মোক্ষ ইহাদের মধ্যে একও যাহার নাহি, তাহার জন্ম ছাগলের গলদেশস্থিত স্তুনের ন্যায় নির্থক হয়। অপরও কহা মাইতেজে, আয়ুঃ ও কর্ম ও ধন ও বিদ্যা ও মরণ এই পাঁচ জীবের গর্ভ্যাবস্থাতেই সৃষ্ট হয়। এবং যে হইবার উপযুক্ত নয় সে হইতে পারে না, যে হইবার উপযুক্ত হাহার অন্যথা হইতে পারে না, এই যে চিন্তারূপ বিষনাশক ঔষধি, ইছা কেন লোককড়ক পীত হয় না? এ কোন কাৰ্য্যাক্ষম লোক-দিলের আলস্যবচন, যেতেতুক সেমন এক চক্রেতে রথের গতি হয় না, ভেমন পুরুষার্থ ব্যতিরেকে দৈব সিদ্ধ হয় না। পুর্বজন্ম কৃত যে কর্ম ভাছার নাম দৈব কহা যায়; সেই হেতুক নিরালদা হইয়া পুরুষার্থেতে যতন করিবে। আর লক্ষ্মী উদ্যোগি পুরুষ্দিৎহকে পায়েন, অদৃষ্টপ্রযুক্ত হয় টহা কাপুরুষেরা কহে। অতএব অদৃষ্টকে অনাদর করিয়া আপন শकानुमादत् अत्रवार्थ প्रकाश कत्रह, यक कत्रिल यमि कार्यी मिक्र ना হয়, ভবে কি দোষ? যেমন কুলাল ঘট ও শরাবাদি যাহা ২ ইচ্ছা করে. তাহাই এক মৃথপিওছউতে নিঞাণ করে, এবং মনুষ্য আপন কৃতকর্ম-ছইতে নানা ফল পায়। অপর সমুখেতে কাকভালীয়ের ন্যায় অক্সাৎ প্রাপ্ত নিধিকে দেখিলেও বৈব আপনি আনিয়া দেন না, কিন্তু পুরুষাথ আপেক্সা করে। মেহেতুক উন্যোগেতে কার্য্য সকল সিদ্ধ হয়, মনোর্থ মাত্রেতিই হয় না, কেননা সুপ্ত সিৎহের মুখেতে মূলেরা বঙ্কঃ প্রবেশ করে না। পণ্ডিতেরা সেই প্রকার কহিয়াছেন, যে পিতা মাতা বালককে পাঠ করায় না দে পিতা মাতা শতু, ঐ বালক সভামধ্যে শোভা পায় না, যেমন হৎদের মধ্যে বক। রূপ ও যৌবনেতে সম্পন্ন এবং মহাকৃলসন্তব যে সকল, তাহারাও বিদ্যাহীন হইলে শোভা পায় না, যেমন গন্ধহীন পলাশ পৃষ্প। অপর যে ব্যক্তি ধরু নিকটে অধ্যয়ন করে নাই, ও আপনিও পুরুকে অধ্যয়ন করে নাই, দে সভামধ্যে শোভা পায় না।

ইহা চিদ্ধা করিয়া দেই রাজা পণিওসভা করাইলেন, আনম্বর রাজা করিলেন, ভো ভো পণিওগণ, আমার কথা প্রবণ করুন, নিভা বিপথগামি ও অবিদিওশান্ত যে আমার পূলগণ, ভাহাদের এখন নীউশারোপদেশদারা পুনর্জন্ম করাইতে সমথ হয় এমন পণিও কেহ আছে? যেহেভুক কাচ যেমন কাঞ্চন দ্বংসগেতে মরকত্রমণির দীপ্নি ধারণ করে, তেমনি পণিও সন্মিগনেতে মুর্গও প্রবীণক্রকে পায়। পণিতেরা সে প্রকার কহিয়াছেন, হীনলোকদের সহবাসেতে মতি হানা হয়, এবং ব্লমান লোকদের সহবাসেতে মতি সমতাকে পায়, এবং উত্তম লোকদের সহবাসেতে মতি উত্তমতাকে পায়।

ইতিমধ্যে বৃহক্ষাতি তুলা সকল নীতিশান্তের যথাথজাতা নিক্ষুশর্মা নামে এক পণ্ডিত কহিলেন, হে মহারাজ, এই রাজপুত্রেরা সংকুলোদ্ধর, এই হৈছুক আমি তাহাদিগকে নীতিশান্ত গুহুণ করাইতে পারি। যেহেছুক কোন ক্রিয়া অস্থানে পতিতা হইলে ফলবতী হয় না; যেমন নানা প্রকার যতেনতেও বক শুকপ্র্নির নায় কথনো পড়ে না। আর এ গোত্রে নির্ধণ সন্থান জন্মে না, যেহেছুক পদ্মরাগ মণির আকরেতে কাচ মণির জন্ম কোথায়? আমি ছয় মাসের মধ্যে হোমার পুশ্রদিগকে নীতিশান্ত্র করিব।

রাজা পুনর্রার বিনয় পূর্বক কবিলেন, পূক্ষ মহবাদেতে কাটও সালোকের মন্তকে আরোহণ করে, এবং সালোক কর্তৃক সুপ্রতিষ্ঠিত প্রান্তর দেবজাকে পায়। আর বেমন উদয়াচলার দুব্য সুঘ্যসালিবানে দীপ্তি পায়, তেমনি সংসলিবানেতে হীনবন্ত দীপ্তি পায়। আমার এই পুজাদিগকে নীতিশাজোপদেশের নিমিতে ভোমরাই প্রমাণ হই গাত। ইহা ক্রিয়া মেই বিজ্ঞাম্মার বহুসমান পুর্বক পুজাদিগকে সমর্পণ করিলেন।

II.—Of Friendship.

মিত্রলাভ।

অনন্তর প্রাসাদের উপরে সুথেতে উপবিফ রাজপুশুদিরের সন্থ্য প্রস্তাব ক্রমেতে দেই পণ্ডির কহিলেন, কান্য শান্তের আমোদেতে পণ্ডি-ডদের কাল যাপন হয়, বাসন অর্থাং ব্রী ও দূচি ও পান ও বৃথা পর্যাটন ও ম্বায়া ও দিবদে নিদুা ও কলহ ইছাদিতে মূর্খদের কাল যাপন হয়; অভএব ভোমাদের আমোদের নিমিত্তে কাক কুর্মাদির বিচিত্র কথা কহি। রাজপুশুশুরা কহিলেন, কহুন্। বিল্পুশ্র্মা কহিছেছেন, রাজপুশুক্ররা প্রবং করহ। সম্পুতি মিত্রলাভ প্রকাব করি, যাহার প্রথমেতে এই লোক;কাক ও ফুর্মা ও মৃগ ও মূখিক ইহারা উপায়রহিত অথচ ধনহীন হইয়াও বৃদ্ধিমতাপ্রযুক্ত শীলু কার্য্য সাধন করে।

রাজপুত্রেরা কহিলেন, দে কি প্রকার? বিজ্পার্থা কহিলেন, গোদানরীর তারে এক বড় শাল্মলী বৃহ্ণ থাকে, নানাদিগ্দেশছইতে পক্ষিরা আসিয়া ঐ বৃক্ষে রাত্রিকালে বাস করে। অনন্তর কোন দিনরাত্রি অবসন্ত্রা হইলে কুম্দিনী নায়ক চল্ল অস্তাচলচ্ডাবলন্ধী হইলে অর্থাং অস্তু গেলে পর লঘুপতন নামে কাক জাগুং হইয়া দেখিল, এক বাাধ দিনীয় যমের নাায় ভূমণ করিতেছে; সে তাহাকে অবলোকন করিয়া চিন্তা করিতে লাগিল, আদা প্রতিহাকালেই অমঙ্গল দর্শন হইল, না জানি কি অমঙ্গল দেখাইবে। ইহা কহিয়া বাাধ্রে পশ্চাং গমন ক্রমতে বাাক্লচিত্ত হইয়া চলিল।

অনস্থর দেই ব্যাধ তণুল কণা ছড়াইয়া এবং জাল বিস্তুণি করিয়া আপনি লুক্রায়িত হইয়া থাকিল। এই কালে হিত্রপুরি নামে কপোতরায় লপরিবারে আকাশে বিহরত দেই তণুলকণা সকল অবলোকন করিল। অনস্থর কপোতরায় তণুলকণলোভি কপোতদিগকে কহিল, কি রূপে এ নির্জন বনে তণুলকণার সদ্দেব? তাহা নিরূপণ কর, এ ভাল দেখি না, এই তণুলকণার লোভেতে আমরাও প্রায় তেমনি ইইব; যেমন কঙ্কণলোভেতে দুস্তুর পঙ্কেতে মগ্ন গে পথিক, দে বৃদ্ধ ব্যাগু কর্তৃক প্রাপ হইয়া মরিয়াছে। কপোতেরা কহিল, দে কি প্রকার?

কপোত্রাজ কহিল, আমি এক সময়ে দক্ষিণারণে বিহরত দেখিলাম, এক সরোবরের তীরে এক বৃদ্ধ ব্যাঘু স্নাত ও কুশহস্ত হইয়া কহিতেছে, ভো২ পথিক, এই মূবর্ণ কস্ত্রণ কর। পরে লোভা কোন পথিক প্রামর্শ করিল, ভাগ্যক্রমে এতাদৃশ লাভ হয়; কিন্ত প্রাণের সন্দেহ, এ বিষয়েতে প্রকৃতি কর্তব্যা নয়। তথাপি সক্ষত্র ধনোপার্জনে প্রকৃতি সন্দেহেতেই হয়। সে প্রকার পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন, সংশয়েতে আরোহণ না করিলে মনুষ্য মঙ্গল দেখে না; কিন্তু সংশংয়তে আব্রোহণ করিয়া যদি বাঁচে, তবে মঙ্গল দেখে; অতএব তাছা নিরপণ করি। পথিত প্রকাশ করিয়া কহিতেছে, কঙ্গণ কোথায়? ব্যাঘু হন্ত বিস্তার করিয়া দেখাইল। অনম্বর পথিক কহিল, তুমি হিৎসুক, ভোমাতে কি প্রকারে বিশাস হয় ? ব্যাঘু কহিল, শুন রে পথিক, পূর্বকালে যৌবনদশাতে আমি অতিদুর্ত ছিলাম, অনেক গোও মনুষ্টিগের বধ করাতে আমার ক্রী ও পুজেরা মরিয়াছে, অতএব বংশহীন চইয়াছি; আমনত্ত কোন ধার্মিক আমাকে কহিলেন, এমি দান ও ধর্মাদি আচরণ কর, দেই উপদেশ প্রযুক্ত এখন আমি দানশীল ও দাতা হইয়াছি, তবে ৃদ্ধ ও গলিঃন্থদ্ভ যে আমি, আমি কেন বিখাসপাত ন। হ^{টু)}

আমার এমনি লোভ বিরহ হটয়াছে, যে আপন হত্তগত সুবণ কল্প অন্য লোককে দিতে উচ্চা করিছেছি। তথাপি ব্যাঘু মন্যাকে খায়, এই অপবাদ লোকে আছে, তাহা নিবারণ করা যায় না। আমি ধর্মশাস্ত্র পড়িয়াছি অন, যেমন আপনার পু:৭ ইফী, তেমন দকল জীবের প্রাণও ইফট হয়। এই হেতুক সাপুলোকেরা আলাবং দকল জীতকে দয়া করেন। ভুমি অতি দরিদু, দেই হেতুক তোমাকে দিতে আমি সচেষ্ট ছইয়াছি। অতএব এই সরোবরে মান কবিয়া সূবণ কল্প পুছণ কর। অন্তর পথিক তাহার বাকোতে প্রতায় করিয়া লোভেতে য়ান করিবার নিমিত্তে সর্বোবত্র প্রবিষ্ট হউলে মহাপ্রেমগ্র ইট্যা পলাউছে অসম্থ হটল। তথন আছু পঙ্গে পতিত পথিককে দেখিয়া কহিল, হায় ২ মহাপদ্ধে পতিত হইরাছ, অতএব ভোমাকে আমি উঠাই। ইচা কহিয়া সেই আয়ু অপেশ ২ নিকটে গিয়া ভাহাকে ধরিল। তথন সে বুলিগ চিন্তা করিল, দুরাত্মার ধর্মশাত্ত্রের পাঠ ও বেদের অধ্যয়ন ধর্মিষ্ঠ ছওনের কারণ নছে; আহত এব মারাল্লক ব্যাঘুে বিখাস করিয়া তাল করি নাই। এই প্রকার চিন্তা করত ঐ পথিক বাংগুকতৃক পৃত ও ভক্ষিত ছ^টল। অভএব আমি কহি, কলণের লোভেতে বেমন পথিক বালাগ পলেতে মগু इडेल इंडामि। এই নিমিত্তে সর্বপ্রকাবে অবিচারিত কর্মা কত্রবা নয়।

এ কথা শ্বনিয়া কোন কপোত দপ করিয়া কহিল, আং, এ কি কহিতেজ ? আপথকাল উপস্থিত হউলে বৃদ্ধলোকের বাকা গুছি হয়, আর অন্যান্তঃ বিচারক্রমে গুছি হয়; কিন্তু ভোজন বিষয়ে গুছি নয়। যেহেতুক পৃথিবীমণ্ডলে সকল অল ও জলাদি আশ্লানারা বাপে আছে, তাহাতে কোথা প্রবৃত্তি কর্তব্যা ? কি প্রকারে বা জীবন ধারণ কর্তব্য ? ইছা শ্বনিয়া সকল কপোত সে দ্বানে উপবিফি ছইল; পরে সকলেই জালেতে বদ্ধ হইল।

অনস্তর যাহার বাকে।তে দে শ্বান অবলম্বন করিয়াছিল, হাহাকে সকলে তির্ভ্বার করিতে লাগিল। গেহেতুক কার্য্য সিদ্ধ হটলে সকলেরই সমান ফল, কিন্তু কার্য্যে বিঘু হটলে প্রধান ব্যক্তি দোষভাগী হয়।

ভাছার অপমান শুনিয়া চিত্রগ্রীব কহিল, ইহার এ দোষ নয়; বিপৎ-কালে বিক্ষাপল্ল হওয়া কাপুরুষের লক্ষণ, অভএব এ সময়ে ইবিষ্য অবলম্বন করিয়া উপায় চিন্তা করে।

এখনও ইহা কর, সকলে একচিত হট্যা আল লইয়া উয়। যেহেতুক তুক্ত বন্ধর যে সমূহ, তাহাতেও কার্য্য সাধন হয়; যেমন রজ্জুক পাইলে, তৃণসমূহকর্তৃক যত হন্ধী বন্ধ হয়। ইহা চিন্তা করিয়া সকল পক্ষিরা আল লইয়া উপরে উড়িল। অনন্ধর সে ব্যাধ অতিদূর্হইতে আলের অপহারক কপোচদিগতে দেখিয়া পশ্চাৎ ধাব্যান হট্যা এট ভাবনা করিল, এ কপোডেরা সকলে একত হট্যা আমার আল হরণ করিয়াতে, কিন্তু যখন পৃথিবীতে পড়িবে, তখন আমার বশীভূত হটবে। ওৎপরে সেট পক্ষির। ব্যাধের চক্ষুর দৃষ্টি অতিক্রমণ করিলে সেই ব্যাবনি বৃত্ত হটল।

তাহার পর ব্যাধকে নিবৃত্ত দেখিয়া কপোতের। কহিল, এখন কি করা উচিত? চিত্রপুবি কহিল, মাতা ও পিতা ও মিত্র ইহারা তিন জন অভাবেতে হিডকারী হন, আর অন্য লোকও কার্য্য কারণ প্রায়ুক্ত হিডকারী হয়। অভএব আমাদের মিত্র হিরণ্যক নামে মুষিকরাজ চিত্রবনে গণ্ডকী নদীর তীরে বাস করে, সে আমাদিগের পাশ কাটিবে, ইহা বিবেচনা করিয়া সকলে হিরণ্যকের গর্তের নিকটে গেল।

হির্ণাঞ্জ সর্বাদা উপদূবশঙ্কাতে শত্রার গর্ত্ত করিয়া বসতি করে। অমনমূর হির্ণাক কপোডদের পতন শব্দের ভয়েতে ভীত হইয়া চুপ করিয়া থাকিল। ভাহাতে চিত্রগুাব বলিল, হে মিত্র হির্ণ্যক, কেন আ মাদিগকে সন্ডাষা কর না? তথন হির্ণাক মিতের বাকা বৃঝিয়া শীঘু বাহির হইয়া বলিল, আ: আমি কি পুণ্যবান্। আমার প্রম সূজং চিত্রগার আসিয়াছেন তাহার পর সে কপোতদিগকে জালে বন্ধ দেখিয়া বিষয়াপন হইয়া কিঞিৎ কাল থাকিয়া কহিল, সথে, এ কি? চিত্রগুরি কহিল, হে মিত্র, আমাদের পূর্ব জন্মকৃত কর্মের ফল এই। উল্পুর চিত্র গীবের বন্ধন ছেদন করিতে শাঘু সমীপে ঘাইতেছে, তাহা দেখিয়া চিত্রগার কহিল, হে মিত্র, এমন করিও না, অগ্রে আমার আঞ্জিত এই কপোতদের পাশ ছেদন করে, পশ্চাৎ আমার জাল ছেদন করিও। তখন হির্ণাক কহিল, আমি অপ্পবলী, আর আমার দন্তও কোমল, এই কারণ এই সকলের বন্ধন ছেদন করিতে কি রূপে শক্ত হইব? তবে আমার দম্ভ যতক্ষণ না ভালে, ততক্ষণ তোমার পাশ ছেদন করি, পশ্চাং ইহাদেরও যত পারিব ছেদন করিব। চিত্রগুবি কহিল, এমন ছউক, তথাপি যেমন সাম্থ্য ইহাদিগের বস্তুন কাট। হির্ণাক কহিল, আপ-নাকে পরিত্যাগ করিয়া আশূিত লোকের যে রক্ষা করা, দেনীডিড লোকদের সমতে নছে। চিত্রগাব বলিল, হে মিঅ, নীতিশাস্ত এই রূপ^ই বটে, কিন্তু আমি আপন আশূত সোকদিগের দুংগ কোন প্রকারে সহিতে পারি না, সেই নিমিতে ইহা বলি। ইহা শুনিয়া হির্ণাক হৃষ্টচিত ও পুলকিত হইয়া বলিল, সাধু, এই আশুিত বাংসলোতে ত্রিলোকের প্রভুজ ভোমাতে উপযুক্ত হয় ; ইহা কহিয়া দেই হির্ণাক সকল কপোতে? वक्कमाष्ट्रमम् कर्तिल।

অনন্তর হির্ণাক সকল কপোতকে সমান করিয়। কহিল, হে সংগ চিত্রপুবি, এই জালে বন্ধন হওয়াতে দোষ আশকা করিয়া আপনাত অবজা কর্ত্বা নহে, এই প্রকারে প্রবোধ করিয়া আভিথা করিয় আলিক্স ক্রিয়া বিদায় করিল, ভাছাতে চিত্রপুবি সপরিবারে আপ অভিলয়িত দেশে গোল; হির্ণাকও আপন বিবরে প্রবিষ্ট ছইল। অভএব লোক শত শত মিত্র করিবে; নেখ, উদ্পুর মিত্রেতে কপোতের। বন্ধনছইতে মুক্ত ছইল।

আনন্তর সমুপতনক নামে কাক এই সকল দেখিরা ইছা বলিল, কি আশ্চর্যা! হে হিরণক, তুমি লাঘ্য; আমিও হোমার সহিত মিত্রতা ইচ্ছা করি, এই নিমিতে আমাকে মিত্রতাতে অনুগৃহ করিতে সম্ভ হও। ইছা শুনিয়া হিরণাক গর্তের মধ্যে থাকিয়া কহিল, কে তুমি ? সে বিদিল, আমি সমুপতনক নামে কাক। হিরণাক হাসিয়া বলিল, ভোমার সহিত মিত্রতা কি? আমি ভোজা, তুমি ভোলা, ইছাতে কি প্রকারে প্রীতি হইবে? ভক্ষা ও ভক্ষকের যে প্রণয় সে বিপত্তির কারণ হয়; কেননা শুগালহইতে পাশেতে বদ্ধ মুগালহইতে পাশেতে বদ্ধ মুগালহইতে পাশেতে বদ্ধ মুগালহইতে বিক্রির হাক। কাক কহিল, এ কি প্রকার?

হিবণ্যক কহিছেছে, মগধনেশে চম্পকাবতী নামে এক বন আছে, তাহাতে হবিণ ও কাক দুই জন বহুকাল বড় যেহেতে বাদ করে; দেই হবিণ আপন ইচ্ছাতে ভূমণ করিলে কোন শৃগাল তাহাকে হাট্টাল দেখিয়া চিন্তা করিল, আঃ কি প্রকাবে এই উত্তম ললিত মাৎদ খাইব? যাহা হউক, বিশাস জ্মাই। এই প্রাম্শ করিয়া সমীপে গিয়া বলিল, হে মিত্র, ভোমার কি মঙ্গল গৈ কহিল, কে ভূমি? শৃগাল কহিতেছে, ক্ষুদুবুদ্ধি নামে শৃগাল আমি, এই বনেতে বাজবহীন হইয়া মূত শ্রীরের নায় বাস করি, সম্পূতি ভোমাকে মিত্র পাইয়া পুনর্কার স্বাদ্ধ্ব হইয়া সজীব্ হইলাম, এখন আমি স্বাদ্ধ ভোমার আনুচর হইব। মূগ শৃগালকে কহিল, ভাল, ভালই হউক।

আনস্তর ভগবান্ মরীচিমালী সূর্যা পশ্চিমে অন্ত গোলে মৃগের বাসস্থানে দেই মৃগ ও শৃগাল গেল। দেখানে চম্পাকর্ফের ডালেতে মৃগের চিরকালের মিত্র সুবুদ্ধি নামে কাক বাস করে। তথান কাক হরিও আর জহুককে দেখিয়া বলিল, মিত্র, বিভীয় এ কে? হরিও কচিতেছে, ইনি জহুক, আমার সহিত মিত্র। করিতে বাঞ্চা করিরা আসিয়াছেন। কাক বলিতেছে, সথো, অক্ষাং আগভ্তেকর সহিত মিত্রা উচিত নয়, ফেহেতুক বিড়ালের দোষেতে জর্দ্গ্র নামে গ্রু নফট হইল। মৃগ আর শৃগাল জিজ্ঞাসিল, দে কি প্রকার?

কাক কহিতেছে, গঙ্গাতীরে পৃথুকুট নামে পর্বতে বৃহং এক পাকৃড় বৃহ্ণ থাকে, তাহার কোটরে বৈববিপাকে নথ ও চক্ষুরহিত ধারদ্গব নামে এক শক্লি বসতি করে। অনন্তর ভাহার জীবনের নিমিতে সেই বৃহ্ণবাসি পক্ষিরা কৃপা করিয়া আপন ২ আহারহইতে কিঞিৎ উদ্ধার করিয়া ভাহাকে দেয়, তাহাতে এ ধারদ্গব বুবাচে। পরে কোন দিন দার্ঘকর্ণনামে এক মার্জার পক্ষিবালকদিগকে ভক্ষণ করিবার নিমিতে সেখানে

আছিল। ভাছাতে পিক্লিবালকের। সেই বিড়ালকে আসিতে দেখিয়া ভরার হইরা কোলাছল করিল। তাহা ভানিয়া ভরদ্গব বিড়ালকে কছিল, এ কে আইলে? দীর্ঘকর্ণ শকুনিকে দেখিয়া সন্তর ছইলা খেদেতে কছিল, আমি নকী ছইলাম; এখন নিকটে পলাইতে অসমর্থ; ভবে যে ভবিতরা, ভাছা ছউক, বিখাদ জ্বাইয়া ইছার সমীপে গমন করি। ইছা আলোচনা করিছা নিকটে গিয়া বলিল, হে শেষ্ঠ, ভোমাকে অভিবাদন করি। শকুনি কহিল, কে তুমি? দে কহিল, বিড়াল আমি। শকুনি বলিভেছে, দূরে যাও; যদি না যাও, ভবে আমি ভোমাকে নকী করিব। মাজার বলিল, আমার বাক্য খন, ভার পর যদি আমি বধ্য ছই, ভবে বধ্ব করিব; যেছেতুক কোথায় কেছ জাডিমাত্রেতে বধ্য কিছা প্রান্ম, ব্যবছারেতে বধ্য অথবা পূজা হয়।

শকুনি কহিছেছে, বল, কি নিমিতে চুমি আদিয়াছ? সে বলিল, আমি এখানে গলাগীরে নিচান্তায়ী নিরামিষাশী বুক্ষচারী চাক্রামণ বুক আচরণ করিয়া থাকি, বিখাদভূমি পক্ষি দক্ল ধর্মজানরত যে ডোমরা, ডোমানিগকে আমার অগ্রেড দর্মলা প্রশাশনা করে; অতএব তোমরা বিদ্যা ও বয়নেতে বৃদ্ধ, ডোমাদের ধর্ম শুনিবার নিমিতে এখানে আসিয়াছি। আপনারা এমন ধর্মজ্ঞ যে আমি অভিথি, আমাকে মারিতে উদ্যত গৃহছের এ ধর্মা বটে, গৃহে আইলে শবুরও উপযুক্ আভিথা করিবে, ছেদনকর্তার দর্মপিবতি ছায়াকে বৃক্ষ অপহরণ করে না। যদি বা ধন না থাকে, তবে প্রিয় বাক্যেও অভিথি অবশ্য পূত্র হন, যেহেতুক আদন ও হান ও জল ও প্রিয় বাক্য এ সকল সাধু লোকদের ঘরেতে কথন অপ্রাপ্ত হয় না। এবং অভিথি নিরাশ হট্যা হাহার গৃহহুইতে ফিরিয়া যায়, সে আপন পাপ ভাহাকে দিয়া ভাহার পূণ্য লট্যা যায়। আর অধ্যাবর্ও যদি উত্তমবর্ণের ঘরে আইনে, ভবে সে যথোপযুক্ত পূক্ষ হয়, কেননা অভিথি স্কানেব্যারপ।

শক্লি বলিল, বিড়াল মাংসর্তি, এখানে পক্ষির ছানা সকল আছে, সেই নিমিছে আমি এই প্রকার বলি। বিড়াল ভাষা অনিয়া ভূমিদলশ করিরা দুই কর্নদর্শ করিতেছে, এবং কৃষ্ণ ক্ষার করিয়াছি; যেতেতুক অহিংসা পরম ধর্মা, ইছাতে প্রকার বিবাদমান সকল ধর্মা শান্তের সম্মতি আছে। এবং ধর্মাই এক মিত্র যে মরিলেও সক্ষে যায়, আর সকল শরীরের সহিত নাশকে পায়। পুনর্ব্বার অন, বজ্জে বনেতে জ্বে যে শান, ভাছাত্তেও উদরপ্রণ হয়, ওবে এই পোড়া পেটের নিমিত্তে কে মহাপাপ করে সে মার্ছার এই প্রকার বিখাস জ্বাইয়া কৃষ্ণকোটরে থাকিল। অনশ্বর কিছু দিন বিশ্বার পরে পক্ষির ছানাদিগকৈ ধরিয়া আপন কোটর মধ্যে আনিয়া

প্রতাহ খায়। সে যে পদ্ধিদের সন্ধানদিগকে খাইল, ভাহারা শোকার্ত इहेबा द्वामन क्विट्ट २ हेडलुट्डा बिजामा क्विट्ड लाशिन। विद्रान छाहा सामिया काणेत्रहरेट निर्शेष्ठ रहेशा शाहित्व शलाहेल। छाहात्र পর ইডম্ভ অবেষণ করাতে পক্ষি সকল পক্ষিশারকের অহি পাইল। अनुबुद्ध उद्योग कृष्टिल, এট अव्यागत आधानित्वत मुखानिवृद्ध थी-इम्राह्म, हेरा निक्षम कृतिया मकल शक्तिता नकतितक नके किहिन: আভএব আমি বলি, অভাত ক্লশীলকে বাস দেওয়া উচিত নয়।

সেট শাগাল টহা খনিয়া ক্রোধেতে কহিল, মুগের প্রথম দশনদিনে আপনিও অভাত ক্লশীল ছিলেন, তবে কি প্রকারে আপনকার স্টিভ ট্রার উত্তর প্রাতির আধিকা হউতেছে? যেমন এট মূল আমার नशा, रुमनि आपनि आमात् मशा। वृद्धि विमन, अ उत्तर् कि প্রান্তর একত সকলে প্রণ্যালাপেতে সুখে থাক।

পরে কাক কচিল, এই হউক। অন্ধুর প্রভাতে সকলে আপন্থ অভিলয়িত দেশে গেল। এক দিশে নিমনে ভদক বলিভেছে, হে মিত্র মুগ, এই বনের এক প্রদেশে শদ্যপূগ ক্ষেত্র আছে, আমি হোমাকে লটয়া ভাছা দেখাট, টলা কহিয়া ভাছা দেখাটলে পরে, ছরিণ প্রাঞ্জিন দেখানে যাইয়া শদ্য খায়। অন্তুৰ ক্ষেত্ৰ দেখিয়া ক্ষেত্ৰপতি জাল যোজিত করিল, তাতার পর প্রকার মূগ আদিয়াপাশেতে বছ ए । চিষ্কা করিল, মিত্রব্যভিরেক কে আমাকে যমপাশের নাায় এট ব্যাধের পাশ্হইতে প্রিক্রাণ ক্রিতে শক্ত হয়? তংপরে জ্বক দেখানে উপস্থিত হটয়া ভারনা করিল, এড দিনে আমার কাপট্টোডে মনোভিলায সিছা হটল। ব্যাধ ঘশন এই ম্বের মাৎস ছেদন করিবে, তথন রক্তেতে লিপ্ত আছি আমি অবশা পাইন, হাহাতে বিলক্ষণরূপে ভোষন হটবে। हत्वि डाहाटक मिथा खास्तामित हहेगा विलिट्डि, मृद्ध गुनान,

আমার বস্ত্রন ছেদন কর, শীল্ আমাকে রক্ষা কর।

मुजाल शाम क्लिया बादवाद हिया कदिल, अहे वहन मुहा खाद কহিল, ছে মিত্র, এ পাশ চমার্চিত, এট ছেতুক আজি রবিবারে কি श्रकारत है। प्रटब मनमं कतित? मरण, यनि अमाकतरन आना श्रकात না মান, ভবে ভূমি যাহ। কহিবা, ভাহা প্রভাতে আমার কর্ব্য।

खबबद म कांक मन्त्रा काटल मुश्रक जामिए ना मिलिहा है इस्ड चार्चवन कहिया (मड़े श्रकात (मचित्रा कहिल, मार्च, अ कि रे मुन कहिल, (र बिज, बिजवाका अवजाव कन अहै।

कांक कहिएडएक, तम दक्षक कांचार चाह्य हित्न कहिना, तम আষার মাৎস ভোজনের নিমিধে এই স্থানেই আছে। কাত কহিছেছে, **আমি পুর্বেটি ক**হিয়াছি, আমার অপরাধ না^ট; এ বিশাদের কারণ नक, स्वरहरूक अनुहरेट अन्दारनदृष्ट स्व कार्य ।

পরে কাক দীর্ঘ নিংখাদ কেলিয়া কছিল, ওরে বঞ্চক শ্রাল, চুই পাপী কি করিয়াছিদ?

অনন্তর প্রাভংকালে ক্ষেত্রপতি লাঠি হাতে করিয়া দেই স্থানে গমন করিতেতে, ইহা নারস দেখিল। ক্ষেত্রপালকে দেখিয়া কাক কহিল, তে মিত্র মূগ, হুমি নিংখাস বন্ধ করিরা পেট কুলাইয়া পা সকল দ্বির করিয়া আপনাকে মৃত শরীরের নায় দেখাইয়া থাক, আমি ভোমার চক্ষু ঠোঁটেতে করিয়া ঠোকরাই। মথন আমি শন্ধ করির, তথন হুমি উঠিয়া শীঘু পলাইবা। কাকের কথাতে মৃগ দেই প্রকার থাকিল। তাহার পর আক্ষাদেতে প্রফুলিতনয়ন হইয়া দে ক্ষেত্রপতি সেই প্রকারে মৃগকে দেখিয়া, আং আপনি মরিয়াছ, ইহা কহিয়া সন্ধন ছাড়াইয়া আল জড় করিবার নিমিতে সত্রর হইল। মনতুর মৃগ কাকের শন্ধ খানিয়া শীঘু উঠিয়া পলাইল। পরে ক্ষেত্রপতি মৃরের উদ্দেশে ক্ষেপ্রণ যে লাইড, ভাহাতে শুগাল নন্ট হইল। অভএব আমি হলি, খান্য আর খাদকের যে প্রণর দে আপদের কারণ।

লঘুপতনক নামে কাক পুনর্কার কহিল, তোমাকে আমি ভক্ষণ করিলে আমার তৃপিজনক আহার হউবে না, চিত্রগুবির নাার নিক্সাপ চুমি বাঁচিলেই আমি বাঁচি।

হিরণ্যক বলিতেছে, তমি চপল, চপলের সহিত প্রণয় কোন প্রকারে কর্ত্তব্য নয়। আর কি কহিব? তুমি আমাদিগের শতুর পক্ষ।

লঘুপতনক বলিতেতে, আমি সকল শ্বনিয়াতি, তথাপি আমার এই প্রতিজ্ঞা, তোমার দহিত সন্ধা অবশ্য কর্ত্য, যদি মিত্রতা না কর, ভবে আনাহারেতে আপনাকে নট করিব। সেহেতুক শ্বতিতা ও দান-শীলতা ও শ্রুজ এবং সুগ ও দুংথেতে সমানতা ও নিপুণতা ও আনু-রক্তি ও সভ্যতা, এই সকল মিত্রের গুণ; এই সকল গুণেতে যুক্ত ভোমান্তির কোন্ পুরুষকে আমি পাইব?

লঘুপতনকের এই সকল কথা শুনিয়া হিরণ্যক বাহিরে নির্গত ছইয়া বলিল, আমি তোমার অমৃতবাকোতে আহ্লাদিত হইলাম। তোমার অভিমতই হউক। হিরণ্যক ইহা কহিয়া মিত্রতা করিয়া খাল্য সামগুনি ছারা লঘুপতনককে সম্ভোষ করিয়া গর্ভে প্রবিষ্ট হইল, কাকও আপন ছানে গেল। সেই অবধি ঐ দুয়ের প্রদপ্র আহারদানেতে ও মৃদ্ল প্রশেনতে ও আলাপেতে কাল যাপন হউতেছে।

এক দিবদ সম্পতনক হির্ণাককে কহিল, এ স্থানে আহার সাভ বড় দুঃখেতে হয়, অতএব এ স্থান পরিত্যাগ করিয়া স্থানাম্বরে খাইতে ইচ্ছা করি। হির্ণাক বলিতেছে, নিত্র, কোথায় যাইব ? কাক কহিতেছে, বিলক্ষণ নিণীত স্থান আছে। হির্ণাক বলিল, দে কি? কাক কহিল, দওকারণেয়তে কপূর্ণোর নামে এক দ্রোব্র আছে, তাহাতে অনেক কালের প্রিয় মিত ধার্মিক মন্তর নামা কচ্চপ বাস করে, সে উত্তম ছোভানদারা আমাকে সম্ভানা করিবে। হির্ণাক্ত কহিল, তবে আমি এখানে
থাকিয়া কি করিব লৈত্তএর আমাকেও সেখানে লও। অন্তর্কাক সেই মিত্রের সহিত নানা প্রভাব আলাপ করিতেই সুপেতে সেই সর্বোব্রের নিকটে গেল। পরে মন্ত্র দূর্হইতে দেখিয়া লমুপ্তনকের উচিত আহিথা করিবা মূষ্কের আহিথা করিল।

বারস কহিল, হে মিত্র মন্ত্র, ইহাঁর পূজা বিশেষরূপে কর, যেছেহুকু ইনি পুণাবানদের মধ্যে শুষ্ঠ ও দরা মুদ্ হিরণাক নামে মুধিকরাজা, ইহাঁর প্রণের স্ত্রব সপ্দিগের রাজা অন্য দুই হাজার জিল্পাতেও মদি কনাচিং কাইতে পারেন। ইহা কহিলা তিএগুনিরে বৃত্তাথ কহিলেন। মহর আদরে হিরণাককে সন্মান করিয়া কাহলেন, ভোমার মঙ্গল, আর আপনকার নিজন বনে আধিবার কারণ কহিছে যোগা হও। হিরণাক বলিল, খন, কারণ আছে, বলিভেজি।

চম্পকা নামে নগরীতে সন্ন্যাংগরা বাস করে, সেইখানে চূড়াকণ নামে এক সন্ন্যামা থাকে, সে ভোজনাবশিট ভিন্দান্ত্রে সহিত ভিন্দাণার নাগদেশকেরে সহিত ভিন্দাণার নাগদেশকেরে অথাং হস্তিদখনিমিত ডাঙাতের গাখিলা শারন করে, আমি লাফিয়া সেই অন প্রতিদিন খাই। পরে ভাহার প্রিয় মিত্র বিনাকর্ণ নামে সন্ন্যামী এক দিবস আইল। তাহার সহিত কথাপ্রসঙ্গে উপবিট হইয়া আমার ত্রাসের নিনিত্রে জর্গর বংশপণ্ডবারা ভূমি তাড়ান করিতেভিল। তথান বিনাকেণি কহিল, হে মিত্র, কি আমার কথাতে বিরক্ত হইলা কৈননা তুমি অন্যমনা হইতেছ। চূড়াকণ কহিল, সংখ্, আমি বিরক্ত নই, কিন্তু দেখ, এই ইশ্র আমার অপকারী লাফিয়া স্কর্মাণাত্রিছে ভিলান্ন খার। বিণাকণ নাগদশ্বক দেখিয়া কহিল, কি প্রকারে অম্প বলবান ম্যিক এত দূরে লাফিয়া উঠে? অত্যব ইহাতে কোন কারণ থাকিবে।

কিঞ্ছিং কাল চিতা করিয়া পরিবুজিক কহিল, ইহার কারণ প্রচুর ধন ছইবে। ভাহার পর সে সন্ধানন থিল লইয়া বিবর খুঁড়িয়া আমার চিরকালের সঞ্জিত ধন লইল, সেই অবধি আপন শক্তিতে হান ও উৎসাহর্ছিত হইয়া কাভরে মৃদ্ধং গমন করিয়া আপন আহার জ্ঞান করিতে অক্ষম হইলাম। ইকা চুড়াকণ দেখিল, অন্ধ্র সে কহিল, লোক ধনেতে বলবান হয়, ধনহইতে পণ্ডিত হয়। এই পাপিত মুখিককে দেখা, এখন আপন ভাডিতুলাতাকে পাইল।

এই পঁকল শুনিরা আমি আলোচনা করিলাম, আমার এখানে অবস্থান উচিত নর, সম্পুতি অন্য তাকিকে যে এই বৃত্তান্ত কহা সেও অনুপ্যুক্ত, বেছেচুক ধননাশ ও মনতাপ ও গৃংহর মন্দ চরিত্র ও পর্কর্তৃক রঞ্জনা ও অপ্যান এই সকল বৃদ্ধিমান লোক প্রকাশ করিবে না। এই স্থানে যে যাজ্ঞাতে প্রাণ ধারণ দে অভান্ত নিদিত, যেছেতুক ধনহীন লোকের অগ্নিতে প্রাণ সমর্পণ করাও ভাল। ইহা চিন্তা করিয়া আমি আপনাকে কি পর্পিণ্ডে পোষণ করিব? ও হে, দেও কন্টা, বিভীয় যমধার। ইহা বিবেচনা করিয়াও লোভ প্রফুক পুন্র্বারও ধন সংগুহ করিবার নিমিক্তে জান করিলাম। পভিতেরা তাহা কহিয়াছেন, লোভেতে বুদ্ধি চঞ্চল হয়, লোভ ভ্রাকে জন্মায়, হ্লাপী ক্লিন্যা ইহলোকে ও পর্লোকে দুঃখ পায়।

আনস্তর আমি সেই বীণাকর্ম কুর্ক জন্তর্ব বংশথগুদারা তাড়িত হইয়া
মন্দং গমন করিয়া ভাবনা করিলাম, লোভি ও অপ্রিত্মী লোক
অবশ্য আত্মহাতী হয়। এই প্রামশ করিয়া আমি নির্জন বনে আইলাম।
তদনম্বর আমার পুণ্যবলহেতুক এই মিত্রকর্ক প্রতিতে আমি অনুগুহীত হইয়াজি, ইদানী পুণ্যবলের প্রকাশ হেতুক ভোমার আশ্রয়
আমার স্বর্গই প্রাপ্ত হইল।

মছর কহিল, ধন পারের ধুলার ন্যায়, আর যৌগন পর্স্তরনীর বেগের ন্যায়, আর জলবিলু যেমন চঞ্জ, এমনি অস্থির প্রমাযু, আর জীবন কেণার ন্যায়, ইহা জানিয়া যে মন্দ্রুদ্ধি স্থেগর অর্গলের উদ্ঘাটক যে ধর্ম হাহা না করে, সে লোক পশ্চাং দৃদ্ধাবস্ত্রপ্রথাপ্ত ইংলে তাপিত হইয়া শোকরপ অগ্রিতে দ্ধা হয়। তুমি অত্যন্ত সঞ্য় করিয়াছিলা, তাহার এই দোষ শ্বন, বিজেরা কহিরাছেন, সর্কাশ সঞ্য় করিরে, কিন্তু অত্যন্ত সঞ্য়ে করিবেনা; দেখ, অতিসঞ্য়ী শ্রাল ধনুতে নন্ট হছল। সেই কাক ও মুষিক বলিল, দে কি প্রকার ?

মশ্ব কহিতেছে, কল্যাণকটক নামে গামে উত্তর নামে ব্যাধ থাকে, সে এক দিবদ মৃণ অন্থেষণ করিয়া বিষ্যাটবীতে গেল। অনন্তর এক মৃণকে নই করিয়া লইয়া ঘাইতেছিল, ইতোমধ্যে এক ভয়ানকশ্রীর বরাহকে দেখিল, পরে সেই ব্যাধ হরিণকে ভূমিতে রাখিয়া শরেতে ঐ শুকরকে মারিল। ভাহাতে শুকর তর্জন গর্জন করিয়া ব্যাধের উদরে মারিলে ব্যাধ ছিল্ল বৃক্লের নায় ভূমিতে পড়িয়া মরিল। যেহেতুক জল কিখা অগ্লি কিখা বিষ কিখা শক্স কিখা কুধা কিখা বিষ কিখা শক্স কিখা কুধা কিখা বাগের কিখা পর্বতহুইতে পত্তন ইত্যাদি যথকিছিৎ নিমিত্ত পাইয়া জীব প্রাণ্ডাণ করে। অনন্তর বরাহ ও ব্যাধের পা আইডানেতে এক সম্পর্ক মরিল। ভাহার পরে দীর্ঘির নামে শৃণাল আহারের নিমিতে ভূমণ করিয়া মৃত সেই মৃণ ও ব্যাধ ও দর্প ও বরাহকে দেখিয়া চিছা করিল, কি আশ্রম্যা! আজি বড় খাল্য দুব্য আমার উপন্থিত হইল। সম্পুতি ইহাদের মাৎসেতে আমার তিন মাল সুবেতে ঘাইবে। আরও কহিল, মনুষ্য এক মাল ঘাইবে, মৃণ ও শুকর দুই মাল ঘাইবে, মৃণ ও শুকর দুই মাল ঘাইবে, মৃণ ও শুকর দুই মাল ঘাইবে, মৃণ এক দিন ঘাইবে, অনুর ছিলা ভক্ষণ করিব। অনন্তর প্রথম

কুধাতে এই আধাদনর্হিত ধনুদ্ধিত চার্মের ছিলা থাই, ইছা কহিয়া ভাছা করিল। পরে মায়ুর বন্ধন ছিড়িলে ধনু ছদয়ে লাগিয়া দে দীঘরব পঞ্চল পাইল। অভএব আমি বলি, দঞ্য অবশ্য করিবে, কিড় অঙিশয় দঞ্য় করিবেনা। দেই হেতুক হে মিএ, এখানে অবশা করিবে, কিড় অঙিশয় দঞ্য় করিবেনা। দেই হেতুক হে মিএ, এখানে অবশা বিশেষে শাস্তি কর্ত্বা, ভূমি ইহাও অভাত্ত কইট করিয়া জানিও না। যেহেতুক রাজা ও কুলপ্তা ও বাজাণ ও ময়া ও মেঘ ও দল ও চুল ও নথ ও মনুষ্য, এ দকল স্থানচাত হইলে শোভা পায় না, ইহা জানিয়া বুজিমান লোক স্থান পরিত্যাগ করিবে না, এ কাপ্রথমের বাক্য। যেহেতুক দিংহ ও সংপ্রথম ও হয়া ইহারা স্থান ভাগা করিয়া যায়। পভিত্রা ভাহা কহিয়াতেন, বারের ও পভিত্র কি ভাদেশ? কি বা বিদেশ যে দেশ আআয় করে, দেই দেশকেই বাজ্বলেতে জয় করে হে মিএ, যিনি হংসকে শ্লেফ করিয়াভেন, আর স্থাক পিছিকে হরিং বর্ণ করিয়াভেন, আর ময়ুরকে চিত্রিত করিয়াভেন, তিনি ভোমার বৃত্তি বিধান করিবেন। আর হে মিএ, আয়ারি দাইভ এখানে কাল যাপন কর।

ইহা শুনিয়া লঘুপতনক কহিতেতে, হে মদ্ব, তুমি ধনা, তুমি প্রশং-সিত প্রণবিশিক্ট। অনন্তর তাহারা এই প্রকারে আপন ২ ইচ্ছাতে আহার বিহার করাতে সন্তুক্ত হইয়া সুখোতে বাস করে।

পরে এক দিবস চিত্রাঙ্গ নামে মুগ কোন ব্যক্তি কর্তৃক ভীত হইয়া দেখানে আসিয়া মিলিল। পরে মন্তর আগত মৃগকে দেখিয়া ভয় महातना कतिया अला अतिके दहेन, उ उन्नृत गर्वद्या भान, अरू কাকও উড়িয়া বৃক্ষে আরোহণ করিল। তাছার পর লঘুপতনক चाि मृत পर्यास प्रशिश स्टाइत कात्र कि हुई आहेरन ना, हैरा चा-লোচনা করিল; পশ্চাৎ কাকের বাক্যেতে দকলে পুনর্বার আদিয়া সেই ছানে মিলিয়া বসিল। মন্ত্র কহিল, হে মৃগ, সুখেতে আইলা? ইহা জিজাসিয়া কহিল। তুমি আপন ইচ্ছাতে জল তৃণাদি আহার করছ, এ স্থানে অবস্থান করিয়া এই বনকে স্বামিক করছ। চিত্রাঙ্গ বলিতেছে, আমি ব্যাধকর্তৃক তাদিত হইয়াছি, আপনকাদের শরণাগত হইলাম, আপনকাদিগের সহিত স্থা ইচ্ছা করিছেছি। হির্ণাক বলিল, হে মিত্র, তুমি আমাদিণের সহিত অনেক কল্টেতে মিলিয়াছ, এই হেতুক আপনি এখানে আপন গৃহের ন্যায় থাকুন। তাহা ভানিয়া ইরিণ আহলাদিত হইয়া আপন ইচ্ছাতে আহার করিয়া জল পান ক্রিয়া অলে সল্লিধিতে বৃক্ষভায়াতে বসিল। আনকর মত্তর কহিল, ছে মিত্র মৃণ, এই নির্জন বনে কাহাকতৃক হুমি ভীত হইয়াছ? এ বনে কথন **কি** ব্যাধ আইদে?

मृत कहिन, कनिन्दारण ख़कनान्तर नात्म छूपान चाट्यन, दिति मित-

বিজয় করিতে আদিয়া চল্রভাগা নদীর তীরে কটক সংগুরু করিয়া বাদ করিতেছেন। প্রাতঃকালে তিনি আদিয়া কপূরদরোবর নিকটে থাকিবেন, ইহা ব্যাধের মুখেতে জনশ্রতি শ্রনিতেভি, দেই হেতুক এখানেতেও ভয়ের কারণ আভে; ইহা বিবেচনা করিয়া যাহা কর্ত্য হয় ভাহা করে। ইহা শুনিয়া কল্পে ভাত চইয়া কহিল, অন্য পূক্ষরিণীতে যাই। কাক ও হরিণ কহিল, এই হউক। পরে হিরণ্যক হাদিয়া বলিল, অন্য হুদে গেলে মন্তরের মলল, কিন্তু হুলে যাইবার কি উপায় ? যেহেতুক জলজন্তর জল বড় বল; দুর্গবাদির দুর্গ বড় বল, ব্যাম্যুদির ক্রান বড় বল, রাজার মন্ত্রী বড় বল। কেননা কর্ম পথে গমন কর্ড শ্রালকর্ডুক হন্তী নক্ট হইল। ভাহারা জিজাদিল, এ কি প্রকার?

হিরণ্যক কহিতেছে, বুক্ষারণ্যেতে কপূর্বভিলক নামে এক হাতী থাকে, ভাষাকে দেখিয়া সকল শৃগালেরা চিন্তা করিল, যদি এ কোন উপায়েতে মরে, তবে ইহার শরীরে আমাদের চারি মাদের ভোজন হয়। তাহাতে এক বৃদ্ধ অবস্ক প্রতিজা করিল, আমি বৃদ্ধিপ্রভাবেতে ইহার মরণ माधिय। পরে দে বঞ্চ কপূরতিলকের নিকটে গিয়া অফীল প্রণাম कतिया कहिन, रह महाताल, मृथ्वि श्रमान करून। हन्नो कहिर उर्छ, रक इपि? कार्थाहरेट आहेला? तम कहिल, आधि मृशाल, ममछ दनवामी शर्यता মিলিয়া আপনার নিকট ইহা কহিতে পাঠাইয়াছে, রাজা ব্যতিরেকে বাস করা অনুপযুক্ত; এই হেডুক বনব্লাজ্যেতে অভিষেক করিবার নিমিত্তে সকল রাজলকণেতে যুক্ত আপনাকে নিরূপণ করিয়াছে। তৎপর রাজ্য-লোভেতে লুদ্ধ 😎 য়া এই কপূর ভিলক ন:মে গজ শৃগালের পথে যাইতে বৃহৎ পক্ষে পতিত হইল। অনন্তর হন্তা কহিল, হে বন্তো শুলাল, এখন कि কর্ত্তর । আমি পাঁকে পড়িয়া মরি, ফিরিয়া দেখ। শৃগাল হাস্য করিয়া কহিল, হে মহারাজ, আমার লাসুল অলবন করিয়া উঠ, যেহেত্ক আমার তুলা লোকের কথাতে বিখাস করিয়াছ, সেই হেতুক অর্কিত দৃঃধ অনুভব কর।

মন্ত্র সে হিতবাকা অবজা করিয়া বড় ভরেতে মুগ্ড হইয়া সে জলাশয়
ত্যান করিয়া চলিল, এবং হিরণাক ও লঘুপভনক ও চিত্রাল স্নেহ প্রযুক্ত
অমলল আশকা করিয়া মন্ত্রের পশ্চাৎ গেল। তাহার পর স্থলে যাইতেছিল যে মন্ত্র, সে অর্ণোতে ভুমণ করিলে কোন ব্যাধ তাহাকে পাইল,
ভালাকে পাইয়া ধরিয়া উঠাইয়া ধনুতে বাজিয়া ভুমণ করিয়া এয়
প্রযুক্ত ক্ষা ও পিপাসাতে ব্যাকুল হইয়া আপন গৃহেতে অভিমুখে
চলিল। অনন্তর মুগ ও কাক ও উল্পুর বড় বিষয় হইয়া পশ্চাৎ গেল।
ভৎপর হিরণাক বিলাপ করিতে লাগিল, সমুদ্রুর পারে যাওয়া
যেমন অসাধ্য, ভেমনি এক দুংখের শেষ না পাইতে আমার ছিঠায় দুংখ
উপছিত হয়।

এ প্রকারে অনেক রোদন করিয়া ছির্ণাক চিত্রাঙ্গ ও লগুপত্নককে বলিল, যাবং প্যান্ত এট ব্যাধ বনহউতে নিগত না হয়, দে প্রয়ন্ত মন্ত্রকে ছাড়াটতে যতন কর। ভাহার। দুট জন বলিল, শীঘুপরামর্শ কহ। হির্ণাক বলিতেছে, চিত্রাঙ্গ জলস্মিরিতে নিয়া আপনাকে মত শরীরের ন্যায় দেখাউন। কাক ভাহার উপরে থাকিয়া ভাছাকে গোঁটে ঠোক্রাউক, তবে নিশ্য এই ব্যাধ সে স্থানে কচ্ছপকে রাখিয়া মুলমাৎসের নিমিতে অব্যাতে ঘাইবে, ভাছার পর আমি মন্তরের বন্ধন ছেদন কবিব, ব্যাধ নিকটে আইলে হোমরা দুট জন পলাইবা। অনন্তর চিত্রাল ও লঘুপতনক অরোতে গিয়া দেইরূপ করিলে পর দেই ল্ক ক প্রান্ত ছইয়া জলপান করিয়া বৃক্ষের মলে বসিয়া সেইকপ মৃগকে দেখিল। অনস্ত্র কাতান লইয়া প্রফুলচিত হইয়া মূগের নিকটে চলিল, ইতোমণ্যে হিরণাক আদিয়া মন্তরের বন্ধন ছেদন করিলে দে কচ্ছপ भीयु अलाभारत अतिभ कृतिल, এवर जे इति। ताहे हाथतक निकारी আসিতে দেখিয়া উঠিয়া পলাইল। লুক্কক ফিরিয়া যখন গাভের তলাতে আইল, তথন কৃমাকে না দেখিয়া ভাবনা করিল, ভদাভদু বিবেচনা না করিয়া কর্মা করি যে আমি, আমার এই উপদৃক্ট বটে, দেছেতুক যে লোক নিশ্তিত বিষয়কে পরিত্যাগ করিয়া অনিশ্তিত বিষয়কে চেন্টা করে, ভাহার নিশ্চিত বিষয় নফী হয়, অনিশ্চিত বিষয়ও নফী হটয়াছে। অনস্তর ঐ ব্যাধ বাসস্থানে গেল। অতএব দুর্গম বনকেও মিতা করিবে; দেশ, ব্যাধকর্ত্ক বন্ধ কৃর্মাশুষ্ঠ মূঘিককর্ত্ক মোচিত হউল। পরে মন্ত্র প্রভৃতি সকলে বিপদ্তীণ হইয়া আপন দ্বানে যাইয়া মুখেতে থাকিল।

্রাজকুমারের। আছলাদ চিতেতে দে সমস্থ শনিলেন। তাঁহারা সকলে সুধী হইয়া কবিলেন, আমানের অভিল্যিত সম্পূর্ণ হইল। বিজ্ঞান্ত্রা বলিলেন, এই প্রসঙ্গেতে ভোমানের বাঞ্চি সিদ্ধি হইল, অন্যেও ডেন্ত্রেক হউক।

III.—Of Discord.

সুহুডেদ।

অনস্থর রাজনন্দনেরা বলিলেন, হে গুরো, আমরা নিজলাত শ্নিলাম, সম্পুতি সুজড়েদ শুনিতে উচ্ছা করিছেছি। বিজুশর্মা বলিলেন, ভোমরা সুজড়েদ শুন, যাহার প্রথম শ্লোকের অর্থ এই, অর্ণোতে লোভা অথচ পল শ্লাল কড়ক সিংহ ও বলাবদ্ধের বর্ধনশীল অভিশয় প্রেম নউট ইউল। রাজক্মারেরা কহিলেন, এ কি প্রকার?

বিজুশর্মা বলিতেছেন, দক্ষিণা পথে সুবর্ণবর্হা নামে এক নগরী আছে,

ভালতে বর্দ্ধমান নামে এক বণিক বাদ করে, ভাহার আনেক বিভব থাকিতেও অন্য ২ বান্ধবদিগকে এখার্যাবান দেশিয়া পুনর্কার ধন বাড়।ন কর্ত্রা, এই বৃদ্ধি করিল। যেতেত্ত আপন অপেক্ষা ক্ষু লোককে দেখাতে কাহার মহতের না বাড়ে? আরে আপন অপেকাবড় লোককে দেখাতে সকল লোকই দরিদু হয়। এই চিন্তা করিয়া নদক ও স**র্কা**-বক নামক দুই বলীবয়নকৈ শকটে গোজনা করিয়া নানা প্রকার দ্বোতে শক্ট পরিপূর্ণ করিয়া বাণিছা করিতে কান্সীর দেশে গেল। আনমর সুদর্গনামে মহারণ্যে গমন করিলে ভাহার সঞ্জীবক ভগুপদ হটয়া পড়িল। তাহাকে দেশিয়া বর্ষমান চিন্তা করিল, বিধাতার মনে যাতা থাকে টহার ফল প্ন: ভাহাট হয়, কিন্তু সকল কর্মের বিম মে বিষয়ে, ট্রচা সর্বা প্রকারে ত্যাজ্য। ট্রচা ভাবনা করিয়া সঞ্জীবককে দেট খানে পরিতাগ করিয়া বর্তমান প্নর্বার আপনি ধর্মপুর নাম নগরে গিয়া বৃহৎ শরীর এক অন্য বলীবর্দ্ধকে আনিয়া ভার সোজন। कविशा ठलिल। जानवृत् मश्चीतक कान श्रकाद्व जिन शृद्द्र मन করিয়া উঠিল। এই রূপে কএক দিন গেলে আপন ইচ্ছাতে আহার বিহার করিয়া অর্ণ্যে ভূমণ করত ক্ষীপৃষ্টাঙ্গ হট্যা শব্দ করিল।

সেই বনেতে পিকল নামে এক দিংছ আপন বাছতলোপাজিতি রাজ্যসুখানুভব করিয়া বাদ করে। দেই দিংছ এক দিনে তৃষ্ণাও ছইয়া জলপান করিবার নিমিতে যমুনার তারে গেলে ঐ স্থানে অকাল মেঘগর্জনের নায় সঞ্জাবকের শক শুনিল, তাহা শুনিয়া জলপান না করিয়া সভয় হইয়া ফিরিযা আপন হানে আদিরা, এ কি? ইহা আলোচনা করিয়া চুপ করিয়া থাকিল। তাহার মিন্তিপুত্র করেটক ও দমনক দুই শুগাল দিংহকে এই প্রকার বেধিয়া দমনক বলিল, ছে মিএ করেটক, এই জলপানাথাঁ রাজা কেন জল পান না করিয়া ভাছ হইয়া আছে হ অবস্থান করিছেলেন?

কর্টক বলিতেছে, সথে দমনক, আমার মতে ইঁহার দেবাই করা যায় না; যদি হাহা হয়, তবে এ স্বামির চেন্টা নিরূপণে আমাদের কি প্রয়োজন? যেহেতুক এই রাজাকর্তৃক আমরা অপরাধ বাতিরেকে অবজাত, আর বহুদিন বড় দুঃথ পাইয়াছি।

দমনক বলিতেছে, হে মিত্র, কোন প্রকারে মনেতেও ইহা কর্ত্তর নয়।
কর্টক বলিতেছে, তথাপি আমাদের এ ব্যাপারে কি প্রয়োজন?
দেখ, যে লোক অব্যাপারেতে ব্যাপার করিতে বাঞ্চা করে, দে কালোংপাটি বানরের নায় নইট হউর। স্থামিত শয়ন করে।

ममनक किजानिएडएए, अ कि श्रकार ?

কর্টক কহিতেছে, মগধ দেশে ধর্মার্ণ্যের নিকটে ওভদত নামক কার্ছ কেলিগৃহ করিবার নিমিতে আব্রুড করিয়াছিল, ভাহাতে ক্রাড- হারা বিদার্যমাণ এক ভ্রম্ভের কিন্তং প্যায় দুই খণ হইয়াছিল, এ খণ্ডহের মধ্যে সূত্রধার এক কীলক নিধান করিয়া রাখিয়াছিল, ভাছাতে বানরের পাল জ্বীড়া করিছেজিল, এক বানর কালপ্রেরিডের নায় দেই কীলককে দুই হাতে ধরিয়া ব্যাল, দেই কাছহুয়ের মধ্যে ভাহার লাজুল লখা হইয়া পড়িয়াছিল। অন্দর দে হুতাবত চাপলা-হেছুক বড় প্রয়াদেতে এ কীলক টানিল, কালক আক্ষণ করিলে পরে লাজুল পৃত্ত হওয়াতে সে ধরা পড়িয়া হত হইল; এই জ্বন্যে আমি বলি, যে লোক অব্যাপারেতে ব্যাপার করিতে ইচ্ছা করে ইত্যাদি। দমনক বলিতেছে, তথাপি হামির চেন্টা নিরূপণ দেবকের অব-শাক্ষরিয়।

কর্টক বলিতেজে, সমস্ত কাসোতে নিগুকু গে প্রধান মন্ত্রী দেই করুক; বেছেতুক ভূতাদের প্রাধিকার চচ্চা কোন প্রকারে কন্তরা নছে। দেখা, গে জন প্রভূবিভেজাতে প্রাধিকার চচ্চা করে সে বিষয় হয়;বেমন চীংকারেতে গর্ভি ভাডিত ছাইয়াজিল।

ममनक अन्न कविष्डल, म कि अनाव ?

কর্টক কহিতেছে, কাশাতে কপূর্পটক নামে এক র্জক থাকে, দে নব্যুবতি বধুকে আলিঙ্গন করিয়া নিদুত হটয়াছে। তৎপরে তা-হার ঘরের দুবা সকল চুরি করিবার নিমিত্তে চৌর প্রবেশ করিয়াছে। ভাছার উঠানেতে এক গাধা বাধা থাকে, এক কৃতক্রও বদিয়া থাকে। অন্তর গাধা কুক্রুবকে বলিল, হে মিত্র, ভোমার এই ব্যাপার, ভবে কেন ভূমি উটেডঃমরেতে প্রভূকে না জাগাও । ক্লকুর করিডেভে, ভাল, আমার কর্মের চর্চা ভোমার কর্ত্তর নর। যেরপেতে দিবারাত্রি আমি ভাহার গৃহ রক্ষা করি, গুমি ইহা কি জান ন।? তথাপি চিরকাল নির্বৃত এ ব্যক্তি আমার উপযোগিতা জ'নে না। দেট তেতুক এখন আমার আহার দানেতে অনাদর হইয়াছে, যেতেণুক বৈশ্বস দশন ব্যতিরেকে ভূভ্যেতে হামির মন্দান্র হয়। গছত বলিঙেছে, শুন রে दर्वत, या कार्याकारल याद्या करत रम कि नामरे आत रम कि बिक्र आ-জাপ্রাপ্ত না হইলেও যে জান আন্য করবা ব্যাপারও করে দেই মির। ক্রুকুর কহিতেছে, কার্ম্যকালে যে লোক ভূতাদিগকে সদ্বাধা করে, দে কি প্রস্থা অনপ্র লাধা জ্লোধ করিয়া কহিল, অবে দুর্গুদ্ধি, ভুট পাপিষ্ঠ, যেহেতৃক বিপ্তিডে প্রভুকার্য্যের উপেক্ষা করিলি। হউক, যে প্রকারে স্বামী জাগেন ভাহা আমার করুব্য। ইহা বলিয়া অভিবড় চাঁৎকার শব্দ করিল। পরে সে রম্ভক সেই চীংকার শব্দে ভাগং হইয়া নিসু। चर्ष्टित स्कारभटक उँविहा लक्ष्यांता शांधारक माहिल, शांबाटक में शर्कक **१४३व्य भारेल। এ**डे स्नत्म खामि तलि, भवाधिकाव ठळी करूपा न्हर, ুইটাদি। দেখ, পশুদের অনা বিষয় অধেষণ করাই অসলিয়োগ,

সংপ্রতি ঘনিয়োগের চর্চা কর, কিন্তু আজি সে চর্চাতেও প্রয়োজন নাই; কেননা আমাদের দুই জনের ভূকাবশিক আহার যথেক আচে। দমনক কোপ করিয়া কহিল, তুমি কি কেবল আহারের নিমিত্তেই রাজাকে সেবা কর? ইহা হুমি অনুপায়ক কহিল।

কর্টক বলিখেছে, ইহার পর এমি কি বল?

দমনক কহিল, এই রাজা পিঙ্গলক কি কারণেতে সভর হইরা ফিরিয়া বসিয়াভেন?

কর্টক কহিতেছে, তমি কি যথার্থ জান?

দমনক বলিতেছে, ইহাতে অভাত কি আছে? বুদ্ধি পরের ইঙ্গিতভা হয়। আকার্মারা ও ইঙ্গিতমারা ও গমননারা ও চেফীমারা ও কথন-মারা ও চফু আর মুখের বিকার্মারা মন অভঃকরণম্ব বিষয় ভানে। এই ভয় প্রসঙ্গেতে বৃদ্ধিপ্রভাবেতে আমি এই রাজাকে আয়ায় করিব।

কর্টক বলিতেছে হে বজো, ভূমি দেবানভিজ। দেখা, যে জিজাসিত না হইলে আনেক কহে ও আপিনাকে রাজার প্রিয় করিয়া জানে, সে লোক নির্কোধ।

দমনক কহিতেছে, হে মিত্র, কেন আমি দেবানভিজ ?

কর্টক বলিতেছে, অসময়েতে প্রবেশের কারণেতে পাছে রাজা ভোমাকে অপমান করেন।

্দমনক কৰিল, তাহা হউক,তথাপি স্বামির দাক্ষাং ভূডোর অবশ। কর্বা।

কর্টক বলিতেছে, দেখানে গিয়া তুমি কি বলিবা?

সে কহিল, খন, আমাতে প্রভূ অনুবৃক্ত কিখা বিবৃক্ত, ইহা জানিব।
ইহা জানিয়া যে প্রকারে ইনি আমার বশীভূত হন তাহা করিব।
করেটক বলিতেছে, তথাপি প্রসঙ্গ উপস্থিত না হইলে কহিতে যোগা
হইবা না।

দমনক বলিতেছে, হে দখে, ভয় করিও না, আমি অপ্রাস্ত্রিক বচন বলিব না।

নৰ বালব না। কের্টক বলিভেছে, ভোমার মঙ্গল হউক, যাহা বাঞ্চিত ভাহ কর।

ভদনন্তর দে বিষয়াপদের ন্যায় পিঞ্চলকের সমাপে গেল। পরে দূর্হইতেই আদেরেতে রাজাকর্তৃক প্রবেশিত হটয়া অফীঞ্চ প্রণাম করিয়াবসিল।

রাজা কহিলেন, অনেক কালের পর দেখা হইল।

দমনক বলিতেছে, যদাপি আমাহেন ভূত্যেতে প্রিয়ুত মহারাজের পারের কিছু প্রয়োজন নাই, তথাপি দেবকেরা সময় বিশেষে অবশ্য দাকাং করিবে, এ জনো আমি আইলাম। যদাপি বজ্কাল দেবপাদক ঠ্ক কাবজাত আমার বৃদ্ধি নাশের শকা হয়, দে শকাও কর্ত্বা নয়। হ মহারাজ, তক অথ্য সমর্থ আমাকে অবজা করিতে তুমি হোগা হও না. গেহেতুক বিজ পরিবার লোক অবজাতে নিরুদ্ধি হয়, অনধ্র সেই দৃষ্টিতে নিকটে পণ্ডিত লোক থাকে না, পণ্ডিতক্তক রাজা তাক হউলে নীতি উপ্বতী হয় না, নীতি নক্ট হউলে সমস্ত জগৎ বিষয় হয়।

পিঙ্গলক বলিল, ভবু দমনক, এ কি ৈ চুনি আমার প্রধান মন্ত্রির পুদ্র, এছ কাল পর্যাস্ত কোন খলের বাক্যেতে আটন নাট, এখন কি প্রকার মান্দ, তাহা বল।

দমনক বলিতেছে, হে মহারাজ, প্রশন করি, কিঞ্ছিং বলুন। জলাথী মহারাজ জল পান না করিয়া কেন বিষ্যাপদ্যের নায় রভিয়াছেন ?

পিক্লক কহিল, মুমি বিলক্ষণ কহিরাছ, কিন্তু এ রুহ্দা বলিবার নিমিতে কোন প্রভারস্থান নাই; তথাপি নিজ্যান করিয়া করি খন, ইনানী এই বন অপুর্কি প্রানিতে অধিতিত হইয়াছে, অতএব আমাদিগের ভাজা; এই নিমিতে বিশায়াপল হইয়াছি, এবং আমিও বড় আশ্চয়া শক্ষ খনিয়াছি, শকান্দারেতে এ প্রানির বড় বল হইবে।

দমনক বলিতেছে, হে মহারাজ, এ বড় হরের কারণ বটে। দেশক আমরাও শুনিরাছি, কিন্তু যে আগেতেই শ্বান হ্যাগ করার, পশ্চাং যুদ্ধ উপদেশ করে, দে কি মন্ত্রী? আর এই ক্রিয়ার সন্দেহেতে দাসদের উপঘোগিতা জানিবা।

মি৲হ বলিভেছে, হে ভদু, আমার বড় শকা হউতেছে।

দমনক পুনকার কহিল, হে মহারাজ, যাবং পায়স্ক আমি বাঁচিয়া আছি, তাবং পায়স্ক ভায় কর্ত্বা নয়, কিন্তু কর্টক প্রভৃতিকেও আখাদ করুন; যেহেভুক বিপদের প্রতীকারের সময় অনেক পুরুষ পাওয়া দুল্ভ।

আনস্থর সেই দমনক ও কর্টক রাজকত্ব সক্ষেদার। সন্মানিও ইইয়া ভায়ের প্রতীকার করিতে প্রতিজা করিয়া চলিল। কর্টক গমন কর্ত দমনককে কহিল, হে মিত্র, ভায়ের কারণ কি? প্রতীকারের যোগ্য কিষা প্রতীকারের আনোগ্য, ইংগ না জানিয়া ভায়ের শান্তি করিতে প্রতিজা করিয়া কি প্রকারে এ মহাপ্রদান গুহণ করিলা? নেহেতৃক উপকার না করিয়া কাহারও উপটোকন লাইবে না, বিশোষে রাজার।

দমনক হাসিয়া বলিল, হে বজো, চুপ করিয়াথাক, আনমি ভয়ের কারণ জানিয়াছি, আঁড়িয়া গরুর শশ; সে বলিবর্দ আমাদের ভক্ষণীয়, সিৎহের কথাকি ≀

কর্টক বলিভেছে, যন্যপি এমন, ডবে প্রভুর ভয় কি ? সেট স্থানেতে কেন ভীডিশণুন করিলা না ?

দমনক বলিভেছে, যদি রাজার ভয় দেই থানেতেই যায়, তবে **কি** প্রকারে এ মহাপ্রদাদ লাভ হয় থৈবং ভ্রোরা স্থানিকে কথন নির্**পেক** ক্রিবে না, প্রভূকে নিরপেক্ষ ক্রিয়া ভূচা দ্বিকণের নাায় হইবে। কর্টক প্রশন করিছেছে এ কি রূপ।

দমনক কহিতেছে, উত্তরাপথে অর্কুদশিশার নামে পর্কতে মহাপরা-ক্রম বিশিষ্ট দুর্দান্ত নামে এক দি৲হ থাকে, পর্বতের গল্পবেতে নিদুত ভাহার জটার অনুভাগ কোন উন্দুর প্রভাহ কাটে। ভদনন্তর কেশাগুচ্ছিন্ন দেখিয়। ক্রুদ্ধ হইয়া গর্তমধ্যে স্থিত মৃষিককে না পাইয়া ভাবনা করিল, যে অকুৰুশকু হয়, পরাক্রমেতে ধরা না যায়, ভাহাকে নয়ট করিবার নিমিত্তে তাহার তুল্য সেনা করিবে। এই আলোচনা করিয়া সেই দিৎ হ গামে গিয়া বিখাদ করিয়া দধিকর্ণ নামে বিড়ালকে যভেনতে আনিয়া মাৎদ আহার দিয়া আপন কলবেতে রাখিল। অনন্তর দেই ভয়েতে মুষিকও বিবর্হইতে বাহির হয় না; দেই হেতুক ঐ সিংহ অভিছেলজটা ছটয়া সুথেতে নিদা যায়। যখন ২ উন্বের শব্দ খনে, তথন ২ মাৎস ভোলনমারা মে বিড়ালকে সম্বর্ছন। করে। তাহার পর এক দিবস সেই মুষিক ক্ষাত হইয়া বাহিরে চরিলে মাজনার তাহাকে পাইয়া ভক্ষণ করিল। তদনন্তর সেই সিংহ অনেক কালপর্যান্ত মূষিককে দেখে না, ভাছার শব্ধ খনে না। তথন ভাছার অনুপ্যোগিভা হেছুক বিড়ালেরও আমহার দানেতে মদদাদর হইল। পরে অনাহার হেতুক দধিকণ দুর্বল ছটয়া অবসম্ভ ছটল। এই নিমিত্তে আমি বলি, প্রভুকে নিরপেক ক্রিয়া ইত্যাদি।

তৎপরে দমনক ও কর্টক সঞ্চীবকের নিকট গেল, সেখানে কর্টক গাছের তলাতে সাটোপ করিয়া বসিল, দমনক সঞ্চীবকসমীপে যাইয়া বলিল, অরে বলদ, রাজা পিঞ্লক কর্তক বন রক্ষার নিমিতে নিদুক কর্টক নামে এই সেনাপতি আজা করিতেছেন, শীঘু আইস, নতুবা এই বনহুইতে দুরে যাও; অনাথা গোমার মন্দ ফল হুইবে, না জানি প্রভু কুপিত হুইয়া কি করিবেন। তাহা শুনিয়া দেশাচারানভিজ সঞ্চীবক ভীত হুইয়া নিকটে গিয়া কর্টককে সাম্টাঙ্গ প্রণাম করিল।

অনন্তর সঞ্চীবক সশস্ত হইয়া কহিল, হে সেনাপতে, আমার কি কর্ত্তবাং ভাষা কহুন।

কর্টক বলিভেছে, হে বৃষভ, এই বনেতে থাক, তবে আমাদিগের ভূপতির চরণ কমলকে প্রণাম কর।

সঞ্জীবক বলিতেছে, অভয় বাক্য আমাকে দেও, তবে যাই।

কর্টক কহিতেছে, শুন রে ব্যন্ত, এ শক্ষা দ্থা, কারণ মেঘের ধ্বনিকে সিংহ প্রতিধানি প্রদান করে, শৃগালের শব্দকে প্রতিশব্দ প্রদান করে না; আরু দেখ, সর্বপ্রকারে ন্যু ও কোমল ঘাসকে বায়ু উন্পূল করে না, কিন্তু অভিউচ্চ বৃক্ষ সকলকেই উৎপাটন করে; কেননা বড় লোকেছে প্রাক্রম করে।

তদনস্থর ভাহার সঞ্জীবককে কিছু দূরে রাখিয়। পিল্লেকের সন্ধিধানে গেল। তাহার পর রাজা ভাহাদিগকে সাদরে দেখিলেন, ভাহার। প্রণাম করিয়া বসিল।

ভপাল কহিলেন, তাহাকে তোমরা দেখিয়াছা?

দমনক বলিল, মহারাজ, দেপিয়াভি, কিন্তু মহারাজ যাহা জানিয়া জেন, সেইকপে এ অভিবড়, মহারাজাকে দেখিতে অভিলাষ করে, কিন্তু এ অভি-শয় বলবান; অভএব সদজ ইইয়া বসিয়া দেখুন, শন্মাত্তেতেই ভায় ক্রি-বেন না; বিজোৱা ভাহা কহিয়াভেন, ভরের কারণ না জানিয়া শন্মাতে ভয় কর্তুব্য নয়, শদ্রের নিমিত জানিয়া কুট্নিনী গৌরব পাইয়াভিল।

রাজা জিজাসিলেন, এ কি প্রকার ?

দমনক কহিতেভে, জ্ঞীপর্বতের মধ্যে বুক্সপূর নামে নগর আছে, তা-हात मिथरत्त এक अर्मिए घण्डोकर्ग नाय अक ताक्रम ताम करत, এই জন্তুৰ খুনা যায়। এক দিবস ঘণ্টা লইয়াপলায়মান কোন চোৱ সাঘকর্ক ভক্ষিত হটল, তাহার হাত্হটতে পতিত ঘণী বানরেরা পান ইল। বানর সেই ঘটো স্থাক্ষণ বাজায়, তাহার প্র নগর্ভ লো-কেরা সেই মনুষ্যকে ভক্ষিত দেখিল, আরু দর্শনা ঘণ্টার রুবও শ্বনে। ভাহার পর যণ্টাকণ রুফী হইয়া মনুষ্য সকলকে খায়, ঘণ্টাও বাঞ্চায়, ইহা বলিয়া সকল লোক নগ্রহইতে পলাইল। অন্তর্ করালানামে কুট্টিনী প্রামর্শ করিয়া অনুক্ষণ এই ঘণ্টাবাদ্য হয়, ডবে বানরেরা ঘণ্টা বাজাইয়া থাকিবে, ইহা আপনি জানিয়া রাজাকে জানাইল, হে মহারাজ, यनाभि किल् ४न वाहा कत्, उदव आभि এই घण्डाकर्गदक मापन कति। ভাহার পর রাজা ভাহাকে ধন দিল। কুট্টিনা মঙল আঁকিয়া গণেশাদি পুজার বড় বাজ্স্য দেখাইয়া আপনি মর্কটদিনের প্রিয় ফল লইয়া বনে প্রবেশ করিয়া ফল দকল ফেলিয়া দিল, তৎপরে বানরেরা ঘণ্টা পরিত্যার করিয়া ফলাসক হইলে কুট্টিনী ঘণ্টা লইয়া নগরে স্মাসিয়া স্কল্লের মান্যা হইল। অতএব আমি বলি, ভয়ের কারণ না জানিয়া শ্ৰুমাত্ৰেতেই ভয় কওঁবা নয়। অন্তর সঞ্চীৰককে আ-নিয়া দেখাকরাটল, পশ্চাৎ দেট স্থানেডেট আশুিচ হটয়া প্রদপ্র অভ্যন্ত প্রীতিতে বস্তকাল বাস করে। অনম্বর কদাটিৎ সেই সিৎছের ভাষা হারুকর্ণনামা সিৎহ আউলে ডাহার আডিথ্য করিয়া বসিয়া পিঙ্গলক ভাহার ভোজনের নিমিতে পশ্ত নফট করিছে চলিল।

ইত্যবসরে সঞ্জাবক বলিতেছে, হে মহারাজ, আজি নই মৃগের মাৎস কোথায় ?

ভূপতি কহিল, দমনক ও কর্টক জানে। সংশীৰক বলিতেছে, কি আছে বা নাট, ভাহা নিশ্চিত হউক। সিংহ বিবেচনা ক্রিয়া বলিল, কিছু নাট। সঞ্জীরক বলিতেছে, হাহারা কি প্রকারে এত মাৎস খাইল' রাজা বলিল, খাইয়াছে, বায় করিয়াছে, অবজাও করিয়াছে, প্রত্যা হট এইরূপ।

সঞ্জীবক বলিতেছে, প্রীমৃত মহারাজের চরণের আনজাতে কি রূপে এমন করে?

নূপতি কহিলেন, আমার অগোচরেতেই করে। অনন্তর সঞ্জীবক বলিল, ইহা উপস্কু নহে।

দ্ধরুকণ বলিতেছে, খন ভাই, এই দমনক ও কর্টক চির্কালের আশুত্র, সদ্ধি বিপুত্ব কার্যেতে ইবারা নিযুক্ত আছে, ধনাধিকারেতে লিরোগ কর্ত্তা নতে। আরু নিয়োগের প্রসক্তেত আমি যাহা শুনিয়াছি
ভাষা কহি। হে মহারাজ, নিযুক্ত লোকদিগকে বার্থার সুঝিরে, এক
বার পীড়ন করিলে কি ন্নান্ত্র শীগু জলতাগ করে? এই সকল
সময়ানুষারে জানিয়া ব্যবহার কর্ত্তি।

সিৎছ বলিতেছে, এই প্রকার বটে, ইহারা দুই জন সর্বাদা আমার বচন আমান্য করে।

স্কুর্কর্ণ বলিতেছে, এ সকল সর্পপ্রকারে অনুপযুক্ত। হে ভাই, সর্বা-প্রকারে আমার বাক্য করে, আমরাও বাবহার করিয়াছি। এই সঞ্জীবক শসাস্তক্ষক, অর্থাধিকারে ইহাকে নিযোগ করে। এই কথানুদাবে করি-লে পরে হদবধি অন্য সমস্ত বন্ধু পরিয়াগ করিয়া অতিশয় স্থেহেতে পিছলক ও সঞ্জীবকের কাল যাইতেছে।

আনন্তর দাসদেরও আহারদানেতে শৈথিলা দশনহেতুক দমনক ও কর্টক প্রদপ্র ভাবনা করিতে ২ দমনক কর্টককে কহিল; হে মিত্র, কি কর্ত্র ? আয়ুক্ত এ দোব, আপনি দোয করিলে খেদ করা অনুচিত।

করেটক বলিডেছে, এই প্রকার হউক; কিন্তু ইহাদের প্রস্পার স্বস্থা বেতে উপজাত অভিবড় যেহ, কি প্রকারে ভেদ করাইতে সমর্থ হইবা?

দমনক বলিতেছে, উপায় দ্বির করা যাউক। পণ্ডিবেরা ভাষা কহিয়া-ছেন, উপায়েতে যাহা করিতে শক্য হয়, বিক্রমেতে ভাষা করিতে শক্য হয় না, যেমন কাকী ধ্র্মিরের দ্বারা কালস্প্রেক ন্ট করিয়াছিল।

কর্টক জিজাদা করিছেছে, এ কি প্রকার ?

দমনক কহিতেছে, কোন এক বৃক্ষেতে কাকদম্পতী বাস করে, বৃদ্ধানিটারে স্থিত তাহাদিগের সন্তান সকলকে কালসপ্তিত থায়। তদনত্তর পুনর্বার কাকী অন্ধরাপত্তা হইয়া কাককে কহিল, হে স্বামি, এ বৃদ্ধা তাগ করে, এই তরতে অবস্থিত কৃষ্ণপ্রস্কাল আমাদিগের সন্তানকে ভক্ষণ করে; যেহেতুক ভুফা জী, থল মিত্র, প্রত্যুত্তরদায়ক দাস, ও সপ্তের সহিত বর্ষমান গৃহেতে বাস, এই সকল মৃত্যুর স্কুলপ, ইহাতে সন্দেহ নাই।

্রাষ্ট্রাই করি বিজেপ্ত প্রাক্তিয়া করিব নয়, মূলুস্ত আমি ইছার অভিশয় অপ্রাধ সহিয়াভি, সম্পৃতি আবি ঋষা করবা নয়।

্লয়েসী কহিল, কি প্রকারে এই বলবানের সূহত তুমি সুদ্ধ করিছে। সম্প্রটবা?

কাক কহিতেছে, এ শকা স্থা, নেছেত্ক নাহার স্থি ভাহার সল, নিকুদ্ধির কোথায় হল? সেখা,শশককভূকি মনোমত সিংহ বিনাশিত হটল। কাকী কহিল, ইহা কি প্রকার?

काक कहिएडएछ, मन्तत् नाटम श्रवेएड प्रकाश नाटम এक मिर्ह् शोटक. মে নির্ভুর প্রদিগের বধ করে। অনভার সকল প্রার্থা নিলিয়া সেই সিংহকে নিবেদন করিল, হে সিংহ, কি নিমিতে এক কালেতেই পশ্ত সকলকে বধ কর? ঘদি অনগৃহ হয়, ডবে আম্রাই আপনকার আচাবের নিমিতে প্রভাহ একং পশু উপঢৌকন দেই। অনধুর সিংহ বলিল, হোমাদের মদি এই অভিমত, তবে তাহাই হউক। ওদক্ষি মেট সিৎছ এক ২ পশ্ব উপটোকন ভন্নণ করিয়া থাকে। অনম্ব এক দিবস এক বৃদ্ধ শশকের পালা আইল, মে জিলা করিল, জীবিং।শাচেত্ক ভয় প্রযুক্ত বিনয় করি, যদি পঞ্জাই পাইব, হবে ।সংক্রে অনুনরেতে আমার কি প্রয়োজন ? এই হেড্ক মদ্দ > করিয়া গমন করি। ভাচার প্র সিংহও ক্ষাত হট্যা কোপেতে তাহাকে কহিল, কি নিমিতে কট এত বিলয় করিয়া আমিতেছিম্ শশক বলিল, মহারাজা, আমি অপরাধী নট, পথেতে আগমন করিতে২ অন্য সিংহকর্ক বলেতে পুত হইরাজিলাম, তাহার সাক্ষাতে পুনশ্চ অলেমনের নিমিতে দিবা করিরা প্রভুকে নিবেদন করিতে এখানে ভাইলাম। সিৎছ ইট্রা কহিল; শীমু গিবা দেখা, সে দুক্তীয়ো কোথা থাকে? ভাষাৰ পর শশক ভাচাকে লগ্যা এক গভার ভূপ দেখাইবার নিমিটে গেল, সেখানে ঘাইয়া, প্রভু আপান দেখুন, ইহা কহিলে সেই ঠুপ-জলে সিৎছ আপনারি প্রতিবেধ নেপিল; এন্দর এ সিংছ কোপেছে কাম্পত চইয়া অহুংকারেতে ডাহার উপরে আপনি নাম্প দিয়া পঞ্জ পাইল। অভ্রেষ আমি বলি, মাহার কৃদ্ধি ভাহার বল ইংগ্রান।

বারসীক, হল, আমি দক্ষ খনিলাম, ইনানা দে প্রকার কর্ত্রত তাহা হল।
বারস কহিল, এই সাম্বিবর্তি স্বোধরে রাজপুশু প্রতাহ আসিয়া
মান করেন, স্থানকালে উঁহোর শ্রীর্হইতে নামত জল স্মীপস্থ প্রত্বেতে স্থাপিত মুর্ণসূত্র চঞ্চে বহিয়া আনিয়া এই কোটরে রাখিবা।

অন্তর কোন দিন সান কার্বার নিমিতে র একুমার জলে প্রহেশ করিলে কাকী তাছা করিল। পরে রাজপুরুষেরা মর্ণসূত্রের অলেষণ করিতে বিয়া সেই বৃক্তকোটরে কালসপকে দেখিল এবং মারিল। অত্থব আমি বলি, উপায়েতে যাহা করিতে শক্ত হয় ইত্যাদি। কর্টক বলিভেছে, যদি এই রূপ, তবে তুমি গমন কর, তোমার পথে মঞ্চল হউক।

অনন্তর দমনক পিল্লেকের নিকট গিয় প্রণাম করিয়া কহিল, ছে মহা-রাজ, অউশায় মহাভয়জনক কোন কার্য্য জানিয়া আইলাম।

পিল্লক আদর করিয়া কহিল, ইহার পর তুমি কি বলিতে ইচ্ছ। করিডেছ?

দমনক বলিতেছে, হে মহারাজ, সঞ্চীবককে ভোমার উপর অনুপাযুক্ বাসহারির ন্যায় দেখিতেছি, আর আমাদের দাক্ষাতে প্রীমুত মহারা জের চরণের প্রভাব উৎসাহ মন্ত্রপ শক্তিব্রের নিন্দা করিয়া রাজ্ঞ বাঞ্চাকরিতেছে।

ইহা শুনিয়া পিঙ্গলক ভীত হই য়া চমংকার মানিয়া চুপ করিয়া থাকিল।
দমনক পুনশ্চ বলিল, হে প্রভা, সমস্ত মন্নিদিনকে ভাগ করিয়া এক
এই সঞ্চীবককে শুমি যে সর্বাধিকারী করিয়াছ, সেই দোষ। রাজা যথান
এক মন্ত্রিকে রাজকর্মেতে প্রমাণ করেন, তথান মোহপ্রযুক্ত অহস্কার
ভাহাকে আশ্রয় করেন, সেই অহস্কারেতে হয় যে আলস্য, ভাহাতে মন্ত্রী
নিভিন্ন হয়, সেই শিভিন্ন মন্ত্রির অভ্যকরণেতে কভ্তরকরণেচ্ছা বাস করে;
তদনস্ত্র কভ্তরকরণেচ্ছাহেতুক সে অমাত্য রাজার প্রাণকে নাই করিতে
ইচ্ছা করে।

সিৎহ বিবেচনা করিয়া কহিল, ভাল, যদ্যপি এমন তথাপি সঞ্চীবকের সাহিত আমার বড় প্রীতি। দেখ, যে প্রিয়ে সে অপ্রিয় কর্মা করিলেও প্রিয়েই থাকে। দেখে উত্তম গৃহ দাহ ক্রিলেও অগ্নিতে কাহার আদর নাই?

দমনক পুনর্কার কহিল, হে মহারাছ, দেই বড় দোষ, তুমি প্রধান দাসদিগকে পরিহাগ করিয়া আগন্তকের পুরস্কার করিয়াছ, ইহা অনু-চিত্ত করিয়াছ।

দিৎ বলিতেছে, কি চমৎকার! আমি অভয় বাক্য দিয়া আনিয়াছি, এবং বাড়াইয়াছি; তবে কি প্রকারে আমাকে নফ করিতে ইচ্ছা করে?

দমনক বলিতেছে, হে মহারাজ, নিরস্তর সেব্যমান হইলেও দুফী লোক সারল্য পায় না; যেমন তাপ ও ইংলাদি মর্দনহারা কুককুরের লাঙ্গুল কথন সোজা হয় না; কুককুরের পুচ্ছ বেদিত ও মর্দিত ও রজ্জুকরণক বেফিডি হইলেও ছাদশ ব্যের পর মুক্ত হইলে পুনন্দ আপনার ছভা-বকে পায়। সঞ্জীবকের ব্যসনেতে পীড়িত মহারাজ বিজাপিত হইলেও যদ্যপি নিবৃত্ত নাহন, তবে এতাদুশ আন্সংভ্তোতে দোষ নাই, তাহা জান।

পিক্ললক অস্তঃকরণে ভাবনা করিল, অহস্কার প্রযুক্ত সর্পের মুখেতে হস্ক দেওয়া যেমন আপনার নাশের নিমিত্তে হয়, তেমনি ওণ দোষ নিগ্য় না করিয়া দণ্ড করা আপন নাশের নিমিত্ত হয়।

পিঙ্গলক সপষ্ট করিয়া বলিতেছে, তবে সঞ্চীবককে ঠি আজা করিব?

লমনক সন্তুমেতে গলিল, হে ভূপতে, এই প্রকার করিবেন না, এরপে মন্ত্রভেদ হয়; আরম্ভ কর্মা অতি যতেলতে সম্পল্ল করা আবশ্যক; আর যে লোক দৃষ্টলোষ হইলেও লোষহইতে নিবৃত্তি করে, ভাহার সহিত সন্ধি করা অভাব অনুপযুক্ত।

मि९ ह दलिएडएइ, अ टाकि आमामिर्गत कि कतिएउ ममर्थ हम ?

েদে বলিল, হে মহারাজ, অঙ্গালি ভাব না জানিয়া কি প্রকার শক্তির নিশ্চয় হউবে? দেখা, টিড্রিড পক্ষিমাত্র সমুদুকে ব্যাকুল করিয়াছিল।

নিব্হ প্রশান করিছেছে, ইহা কি প্রকার ?

দমনক কহিতেছে, দক্ষিণ সম্দুতীরে টিট্রিভেরা ক্রী পুরুষে দাস করে, ভাছাতে প্রসহকাল নিকট হউলে টিট্রিড়া পতিকে বলিল, হে নাথ, প্রসংবাপযুক্ত নিজন স্থান অনুসন্ধান কর। টিট্রিড বলিল, হে প্রিয়ে, এই শ্বান। সে বলিল, এ স্থান সমুদ্ধেলাক্তৃতি আক্রাস্তয়। টি.টুড বলিল, আমি কি দুর্বল যে সমুদু আমাকে নিগুছ করিবেন? টিট্রিলী ছাসিয়া হলিল, হে স্থামি, তোমাতে আব সম্দুতে বিশ্বর অন্তর। টিট্টিভ বলিল, যাহার বৃদ্ধি আছে, সে কন্টেতেও অবসন্হ হয় না। আনস্কর পতির বাক্য হেতুক দে ঐ স্থানেতেই প্রদাব হইল। এই স্কল অনিয়া সমুৰু তাহার সামথ। জানিবার নিমিতে দেই অও সকল অংপ-হরণ করেল। ভাহার পর টিট্টিভা শোকাতুরা হটয়া ভটাকে বলিল, চে প্রাণনাথ, দুখে উপস্থিত হইল, আমার দেই অও নট হটল। টিট্রিভ বলিল, হে প্রিয়ে, ভয় করিও না। টহা বলিয়া পঞ্চিদিরেব মিলন করিয়া পক্ষিদিগের প্রধান গরুড়ের নিকটে গেল, দেখানে शांडेश हि डिंड मकल वृताय शरूर इत आर्गुट निर्वासन कृतिल, रह প্রভো, আপন গৃহেটে অংশ্তি আমি অপরাধ বাহিরেকে সম্দৃত কর্তি নিগৃহীত হট্যাভি। অন্ধর তাহার বচন এবণকারি গরুত্ত ঠুক সৃষ্ঠি স্থিতি প্রলয়ের কারণ ভগশন্ নারায়ণ প্রভুবিভাপিত হট্না সমুদকে অওদানের নিমিতে আদেশ করিলেন। ভাহার পর সমুদ্ভর-বানের আজা মন্ত্রকে কর্মানে এও সকল টি ট্রন্ডকে সমর্পণ করিলেন। অতএব আমি বলে, একাকিভাব না জানিয়া ইত্যাদি।

রাক্সা বলিল, ইনি হিৎসুক, ইহা কি প্রকারে জানিব?

দমনক বলিতেছে, যথন ঐ সঞ্চিক গরিত হইয়া শৃলাগুরূপ ভা<u>রা</u> ভিমুখ হইয়া আসিবে, ডখন প্রভু জানিবেন।

এই রূপ করিয়া সঞ্জীবকের নিকটে গেল, দে স্থানে গিয়া অপেশ ১ নিকটে গমন করিয়া বিসয়োপদের নায়ে আপনাকে দেখাটল; সঞ্জীবক আদর করিয়া কহিল, হে মিত্র, ভোমার মলল?

দননক বলিভেছে, ভৃত্যদের কুশল কোথায় বিহেতুক যাহারা রা-

ষ্কার আশুিড, ভাষাদিগের সম্পত্তি প্রায়ত, আরে সম্ভংকরণ সকলে। দুঃশিড, আরু মুক্রি প্রাণেতেও সপ্রভায়।

मशीतक कहिल, छ मर्ग, रल।

দমনক বলিল, মন্দ্রাগ্য আমি কি বলিব দৈশে, সমুদ্রে মজন করি-য়া স্প্রেক অবলখন পাইরা বেমন ভাগে করিতে পারে না, ধরিতেও পারে না; সেইকূপ ইকানী আমি মুক্ত ইতেজি; দুংখাণ্বে প্রিড ইইরাজি। ইচা কহিরা দীঘ্নিখাস ফেলিয়া বাসল।

স্থারিক সলিতেছে, তুমি আমোর কৃষ্ডল, তথাপি হে সংখা, আনতঃক-রণ্য তাব্যুক্ষ।

দমনক নিজ্জনে কহিল, ফ্রাপি রাজবিধান্সকা তাবক্সা, তথাপি আমার প্রচারেতে ভূমি আনিষা এ ঝানে আছে; সেইতেত্ক প্রলোকাথী আমি ধোমার হিত্ত ক্ষেণা কহিব। খন, এই প্রভূ হোমার উপরে বিকার পুষ্ঠিতি হইলা নি নিতে কহিলেন, সঞ্চিতকে নফ্ট কবিনা নিজ-প্রিবারকে তথ্য করিব। ইহা খনিয়া মঞ্চিক বড় বিষয় হইল।

্দমনক পুনশ্চ কহিল, বিষয়বো নির্থক, কালোপমুক কর্ম অনু-ষ্ঠান কর্।

সঞ্জীবক কিঞিংকাল বিবেচনা করিয়া কহিল, উহা নিশ্চয় বটে। আর্ব কহিল, রাজার অপকার আমি কি করিয়াছি? কিয়া রাজারা স্কলে অপকারক হয়?

দখনক কহিতেছে, এই প্রভু খিন্টান্তানী বিষণুলান্তংকরণ, ইহা আমি
কানিলাম; যেতেছুক দূর্ভইতে উদ্ভূতত্ত এবং সজলচফ এবং আর্দ্ধাশন
দাতা এবং নিভর আলিজনে ভংগর, এবং প্রিন বাকোর জিলাদাতে
কুচাদর, এবং ভিতেতে গুপুবিষ, এবং বাহোতে মগুমর, এবং অভিশর
মায়াপট্।

সঞ্জীবক পুনর্কার নিখাস কেলিয়া কহিল, ওছে, এ কি সামোহ বি আমি শস্তক্ষক, আমাকে কেন্দিংছনটা করিবে থৈছেতুক উভরের তুল্য বল ও ধন থাকিলে বিবাদ হয়, দুর্মলের সহিত্বলবানের মুগ কোথায় ? পুন্রার চিঙা করিয়া সঞ্জাবক বলিল, হে মিড, কি প্রকারে জানিব যে এ দুর্মুদ্ধি আমাকে নাট করিবে ? ইহা কছ।

দমনক বলিতেছে, যথন এ স্তর্কণ উল্লাস্প ইইয়া সঙ্গাদ ছইয়া বিস্তাবিতমুশ হট্যা তোমাকে দেখিবে, তথন চুমিও আপন প্রাক্রম দেখাইবা: কিন্তু গোপনেতে এট সকল অনুধান কর্ব্য, নতুবা তুমিও থাকিবা না, আমিও থাকিব না।

ইছা কহিয়া কর্টকের নিকটে গেল। কর্টক কহিল, কি সম্পন্ন হইল? সমনক কহিল, প্রস্প্র ভেদ নিঞ্পন্ন হইল। পরে দমনক পিল্লাকের স্থিধানে গিয়া কাইল, হে মহারাজ, ঐ পাপিন্ঠ আইল: মহাএব স্মৃত্ত হউনা থাক। ইনা কহিনা পুর্বোক আকার করাইল। অন্তর স্থাবিকও আইল, সেই প্রকাব বিকার-প্রাপ্ত নিংহকে অবসোকন কবিয়া নিংচনুক। পর্ক্তিম করিল, এহাব পর হাহাদিগের হড় সুদ্ধ হইলে পরে সেংহক্ত স্থাবিক বিনাশেও হউল।

ভাষার পর পিজলক সঞ্চীকককে নাট কাক্যা বিশ্রাম করের সংশাকের নায়ে থাকিয়া কহিল, আমাকার্ত্ক কি নারণ নির্দিত্য কথা কৃত হউল? উরুৱা ভূমির নাশ, আর বুদ্ধিনান দাসের নাশ, ইহার মধ্যে ভূয়ের নাশ রাজাদিনের মরণভূল্য , কেননা ভূমি ভূফী ইইলেও প্নশু মিধে, ভূতা নাট ইইলে পাওয়া দুলভ।

সমনক বলিতেছে, প্রভু, এ কিনুতন ন)াম, যে বৈরিকে নফী করিয়া। সম্ভাপ করিতেছেন [>]

এইকপে দমনককত্ক পিল্লক প্রিডোমিত হট্যা থাকীয় থাডাব প্রাপ্ত হট্যা সিংহাসনে উপবিফী হট্লেন। দমনক প্রফ্লেডের হট্যা কহিল, মহারাজ জয় হউক, ইহা কহিয়া প্রমাজনাদে আকিগ।

বিষ্শর্মা কহিলেন, ভোমরা সুক্ষের এবণ করিলা।

্রাজকুমারেরা কহিলেন, আপনকার অনুগৃতেতে খনিলাম, আমরা আফলাদিতও হটলাম।

বিষ্ণুমা বলিলেন, আরও এই প্রকার হউক, আপনকাদিগের অরিগ্রে দুহুদ্দে হউক।

IV.—Of War.

বিগুছ।

পুনর্বার কথারম্বকালে রাজপুলেশ করিলেন, হে ওরো, আমরা রাজনন্দন, এইতেভূক বিগুল খনিশার নিমিতে আমাদিগের কৌর্ক আছে।

বিজুশুলা বলিলেন, ভোষাদিগের সভাতে কৃতি হয়, থাতা কই খন, যাহার প্রথম শ্লোকার্থ এই, হংদের সহিত বৃদ্ধেতে মনুর্বিগের চুলা প্রাক্রমেতেও কাক শলুগুহে থাকিয়া প্রভায়োম্পাদন করাতে হংস বঞ্জিত হইল

तासकुमादित्। करिटडएइन, এ कि अकात ?

বিজ্ঞান্ত্রী কহিলেন, কপ্রস্থাপে পদাকেলি নামে মরোবর থাকে, ভাহাতে হির্ণাগর্ভনামে রাজহংস বাস করে, সকল জ্ঞালতর পক্ষিরা মিলিরা ভাহাকে পক্ষিরাজ্যেতে অভিবিক্ত করিল। এক দিন এই রাড- চৎস অতিশয় বিস্তারিত কমলপর্যাঙ্গেতে পরিবার লোকেতে বেইটিত ত্তরা সুঝোপবিইট আছেন। অনন্তর দীর্ঘমুখ নামে বক কোন দীপ-হুটতে আসিয়া প্রণাম করিয়া বসিল।

রাঞাবলিলেন, হে দীর্ঘমুখ, তুমি অন্য দেশহুটতে আইসা; বৃত্তান্ত কহ। দে বলিল, হে মহারাজ, বড় বার্তা আছে, তাহা কহিবার নিমিতেই আমি অব্রাতে আইলাম, তাহা শুন।

জন্দ্রীপেতে বিদ্ধা নামে পর্বত আছে, তাহাতে চিত্রবর্ণ নামে মন্ত্র পক্ষিদের রাজা বাদ করে, তাহার অনুচর পক্ষিণণ দথ্যারণা মধ্যেতে চরিয়া আমাকে দেগিয়া জিলাসা করিল, কে তুমি? কোথাহইতে আইলা? তথান আমি কহিলাম, আমি কপুরিদ্বাপচক্রীতিই বির্ণাগর্ভ নামে হৎসরাজের অনুচর; কৌডুক প্রমুক্ত দেশান্তর দেথিতে আসিয়াছি। তাহা দ্বানিয়া পক্ষিরা কহিল, তবে এই দুই দেশের মধ্যে কোন দেশ বড় ভাল? কোন্রাজা বা বড় ভাল?

অনন্তর আমি করিলাম, আঃ কি করিতেছ? আনেক অন্তর, যেতেতুক কপ্রদ্বীপ স্থাই; রাজহৎস দিহীয় স্থাপতি ইন্দুৰুল্য, এই মন্ত ভূমিতে পড়িয়া হোমরা কি কর? আমার দেশে আইস। অনন্তর আমার বাক্য শ্রুবন করিয়া সেই পক্ষিরা সরোষ হইল; গেহেতুক দর্পদের দুগ্ধপান কেবল বিষবর্কক হয়, ও মূঢ়দিগের উপবেশ ক্লোধের নিমিত্তেই হয়, শান্তির নিমিত্তে হয় না। অপর পণ্ডিতেরা মূখকে কাচ্চ উপদেশ কর্ণোপযুক্ত জান করিবেন না; মূচ বানর্দিগকে উপদেশ করিয়া পক্ষিরা স্থানভূষ্ট হইয়াভিল।

রাজা কহিলেন, এ কি প্রকার?

দীর্ঘুথ কহিতেছে, নর্মানাতীরে এক অতিবড় শাল্মলী বৃক্ষ থাকে, দেই তরুতে আপন চঞু করণক নির্মিত নাড়মধ্যে পক্ষিরা বর্ষাতেও সুখেতে বাস করে। অনস্তর নীলবর্গ পটের তুলা মেঘসমূহেতে গগণমঞ্জ আচ্ছন্ন হইলে পরে স্থুল ধারাতে অতিবড় বৃদ্ধি হইল। দেই তরুতলেতে বানরদিগকে আদুভিছ্ত শীতার্ত্ত কম্পিডকলেবর দেখিয়া করণা প্রযুক্ত পক্ষিরা কহিল, ও হে বানরেরা, শুন, আমাদিগের চঞুমাত্রেতে আফত ভ্গত্বণক নীড় নির্মিত হইয়াছে, পানি পাদবিশিক্ট তোমরা কেন এই প্রকারে অবসন্ন হইতেছ লোহা শুনিরা জাতকোধ বানরেরা আলোচনা করিল, বায়ুর্ক্তি নীড়মধ্যে অবস্থান প্রযুক্ত সুখী হইনা পক্ষিরা আমাদিগকে নিন্দা করিতেছে; ভাল, বৃদ্ধির উপশম হউক। তাহার পর জল বরণ নিবৃত্তি হইলে সেই মর্কটেরা বৃক্ষ আরোহণ করিয়া সকল বাসা ভালিল, তাহাদিগের অনু সকলও নীচেতে ফেলাইয়া দিল। অতএব আমি বলি, পণ্ডিরেরা মুশ্বক কলাচ উপদেশ করণেপিযুক্ত ইত্যাদি।

वाङा कहिएलन, डाहावा भाव कि कतिल?

বক বলিতেতে, আনস্থর পক্ষিরা ক্রোপেতে কহিল, তোর রাজাহৎসকে কে রাজা করিয়াজে । তাহার পর আমিও জাংক্রোথ হটরা কহিলাম, তোমাদের ম্যূরকে কে রাজা করিয়াছে । টিলা খনিলা তালারা সকলে আমাকে নফী করিতে উদাত হটল। তাহার পর আমিও নিজ প্রাক্রম দেখাটলাম।

রাজা হাষ্য করিয়া কহিলেন, যে জন আপুনার ও পরের বলাবল দেখিয়া আন্তর না জানে, সে জন শতুকতৃক তির্ফুত হয়। যেমন কালুচন্মার্ত নির্পুদ্ধি গদত কেতেতে বত্কাল প্রায় প্রহাহ শ্র্য ভক্ষণ করিয়া বাক্যদোষেতে নফু হউল।

रक अ*म कतिराटा छ, এ कि अकात ?

রাজা কহিছেছেন, হদ্ধিনানগরে বিলাস নামে রজক থাকে। হাহার এক গর্ম্ব অভিশার বহন প্রাস্কুক কুর্দল মুযুর্ব হুলা হউল; অনম্বর সেই রজক ঐ গাধাকে ব্যাস্কুচমেতে আদ্যাদন করিয়া কানন সমীপে শ্যামধ্যে নিযুক্ত করিল, ভাহার পর দুরহউতে ভাহাকে দেখিয়া ব্যাস্কুদ্ধিতে ক্ষেত্রপালকেরা পলার। আনধ্র এক দিবস কোন শ্যাস্পালক ঈ্ষং পাঞ্বর্গ ক্ষেত্রতে শ্রীরাজ্যানন করিয়া হীর ধনুক স্জ্যা করিয়া সক্ষ্তিত শ্রীরেতে নির্দ্ধিনেতে থাকিল; মথাভিল্যিত শ্যাহার প্র্কুক জাতবল পুটার্কেলের সেই গদ্ভ ভাহাকে দূর্হইতে দেখিয়া গর্মি আন করিয়া উচ্চেতে শ্রু করিয়া হাহার স্কুণে পারন করিল। ভ্রু করিয়া হাহার স্কুণ্ পারন করিল। ভ্রু করিয়া হাহার স্কুণ পারন করিয়া ভ্রু করিয়া আনামেতে নইট করিল। আহএব আমি বলি, ব্যাস্কুচমান্ত নির্দ্ধির গদ্ভ ইহ্যাদি।

দীর্ঘুঝ বলিতেছে, তাতার পর পজির। কঠিল, আরে পাপাদৃষ্ট বক, আমাদিগের খানে চরত আমাদিগের ঘানিকে নিশা করিতেছিল? এই তেতুক তোমাকে এখন কমা করা নয়। ইচা কঠিয়া সকলে চঞ্
করণক আমাকে তাড়না করিয়া ফুট চইরা কাচল, দেখ রে মুখা,
তার রাজা দেই হ৲দ দর্মপ্রকারে মৃদু, তাতার রাজ্যেতে অপিকার
নাই; যেতেতুক নিতার মৃদু বাকি হস্ততল্পিত ধনকেও রক্ষা করিছে
অসমর্থ, দে কি প্রকারে পৃথিবা শাদন করিবে? তাতার রাজ্যই বা কি?
কিছ ভূমি কুপমঞ্ক, এই তেতুক দে আশ্রয়কে উপদেশ করিতেছ; খন,
কুল্লের দেবা কর্ত্রা নয়, মহতের আশ্রয়ই কর্ত্রা, কেননা শৌভিকভ্রিছে দুশ্বকেও লোকেরা মদিরা তলে। বিশেষতা অভিসম্প্রিছাতে
ভলোকিতেও কার্য্য সম্পন্ন হয়, কেননা শশকেরা চন্দ্রদশভ্রিছলোকিভারা সুব্ধতে আছে।

আমি কহিলাম, এ কি প্রকার?

পক্ষিরা কহিল, কোন সময় ব্যাকালে অনার্টিংহেতৃক ভুলাচুর গছ-যুগ যুগপতিকে কৃতিল, হে প্রভা, আমাদিনের জীবনের নিমিতে কি উপায়? কুদু জন্তদিগেরও মজ্জনস্থান নাই, আমরা অবগাহনস্থানের অভাব প্রশুক্ত মৃতের নাার আছি, কি করিব? কোথা যাব? ভাছাতে গলর।জ গিয়া সমীপে এক ভাল জনাশয় বেথিল। অনন্তর কিছুদিন গেলে পরে মেট মরোবর মগাপ্রিত ক্লুশ্পকেরা হত্তিপদাঘাতদারা চুর্ চইল। শিলামুখ নামে শশক ভাবনা করিল, তৃষার্ত এই হরিষ্ট্থ প্রতাহ এই থানে আদিবে; অতএব আমাদের কুল নফী হইবে। ভদনত্র বিজয় নামে বৃদ্ধ শশক বলিল, বিষয় চইও না, ইচাতে আমি প্রতিকার করিব, তাহার পর প্রতিজা করিয়া চলিল। গমন করিয়া দে আলোচনা করিল, হস্তিসূথ সল্লিবানে থাকিয়া <mark>কি প্রকা</mark>রে বলিব ∤ যেহেতুক হন্তী সপাশ করত নফী করে; সর্পা ঘুাণ করত নফী করে; রাজা পলায়ন করত নফী করে; দুর্জন হাস্য করত নফী করে; অতএব পর্বাহশিশরে আরোহণ করিয়া মূথপতিকে কহি। ভাহা করিলে মুথ-পতি কহিল, কে ৰুমি ? কোথাহইছে আইলা ? দে বলিল, আমি শশক, ভগরান চন্দ্র আপনকার নিকটে প্রেরণ করিয়াছেন।

যুথনাথ কচিল, কাৰ্য্য কছ।

বিজয় বলিতেছে, শস্ত্র উলিও চুক্ত অনাথা কছে না; দেকেডক দুহ অনধাভাদেতে সর্কান ই মথাথেরি বক্তা হয়; দেইছেতুক আমি জাঁহার আজাতে বলি, শ্বন; এই চলুসরোবরের রক্ষক শশকেরা হোমাকক্তৃক দূরীকৃত হইয়াছে, তাহা অনুচিত করিয়াছ। দে শশ্কেরা বছকাল আমার রক্ষিত, অভএব আমার নাম শশক্ত এই প্রসিদ্ধ আছে।

এই প্রকারে দূতকহিলে পর যূথস্বামী ভয়েতে ইহা কহিল, আবধান কর, আজান প্রযুক্ত ইচা করিয়াছি, পুনর্বার করিব না।

দূত বলিল, যদি এই রুপ, তবে এই সরোবরে কোপেতে কম্পিত কলেবর ভগবান শশাসকে প্রণাম করিয়া প্রসম করিয়া গমন কর। আনস্বর রাতিতে যূথপতিকে লইয়া জলেতে চঞ্চল চল্রমণ্ডল দেখাইয়া যূথস্থামিকে প্রণাম করাইল; আর দে কহিল, হে চন্দ্র, অজ্ঞান প্রস্ক ইনি অপরাধ করিয়াছেন, তাহা ক্ষমা কর, বারাস্তর এরূপ করিবেনা, ইহা কহিয়া প্রস্থান করাইল। অভএব আমি বলি অভিনম্থ রাজাতে ইত্যাদি।

ভাহার পর আমি কহিলাম, দেই মহাপ্রভাপী অভিসমর্থ আমাদের স্বামী রাজহৎস, ভাহাতে ত্রিভূদনের কর্তৃত্ত উচিত হয়, রাজ্য কি? এখন অরে দুষ্ট ভূই, আমাদের স্থানেতে চরিতেছিদ। ইহা কহিয়া পক্ষিরা আমাকে চিত্রবর্ণের সন্ধিধানে লইয়া গোল।

তদনস্তর রাজার অল্লেতে আমাকে দেখাইয়া তাহারাপ্রণাম করিয়া

কহিল, হে মহারাজ, অবধান করুন, এই দৃষ্ট বক আমাদের দেশে চরিয়া মহারাজের চরণের নিশ্ব। করে।

রাজা কহিল, কে এ? কে:থাহ্নতে আসিমাছে?

ভাহারা কহিল, হিরণ্যগভ নামে রাজহৎসের অনুচর কপূর দ্বীপহউতে আদিয়াভো

অনধ্র গুণু মল্লিকর্ক আমি জিলাসিত হইলাম, দেখানে প্রধান মন্ত্রীকে?

আমি কৰিলাম, সকল শাস্তার্থবৈতা সর্বজ নামে চক্রবাক।

্রপুর বলিতেছে, উপযুক্ত বটে; সাসহার্জ উত্তম বংশভাত শাভ পণিত পনের উৎপাদক, এতাদৃশ সাকিকে রাজা মন্নী কবিবে।

উত্যবসরে অক কহিল, হে রাজাণিরাজ, কপ্ররাপ প্রসৃতি ক্ষুদু শ্বীপ জ্যুরাপের মধ্যেই , থাতাতেও মহারাজের চন্দের প্রসূত্র।

ভাষার পর রাজকড়ক কাথ্যচটল, এই রটে।

ত্রনত্র আমি ক্রিল্মে, যদি বাকামাত্রেটেই যামিজসিদ্ধি হয়, ভবে জনুরীপেতেও আমানের যামি (হর্ণ)গভের প্রভুজ আত্র

শুক বলিভেছে, ইহাতে কি নিশ্চয়?

আমি কহিলাম, গৃদ্ধট।

রাজা হাস্য করিয়া কহিলেন, আপন প্রভৃকে গিয়া প্রশ্নত করে।

তথন আমি কহিলাম, আপন দূতকেও পাঠাও।

রাজা বলিলেন, দৌহাকর্মেতে কে মাইবে 🖯

গুরু বলিতেছে, অনেক দূত আছে, কিন্তু ব্লাজগুট কর্তব্য।

্রাজা কহিলেন, সেই হেডুক শুচ্ট গ্যন ক্রন, হে শুক, চুমিট ইচার সহিত গ্যন ক্রিয়া আমাদের বাঞ্চিত বল ।

শ্রক সলিতেছে, মহারাজ, যে প্রকার আলা করেন, কিন্দু এই রক দুর্জন, এই হেতুক ইহার সাহত গামন করিব না; দুট লোকের সহিত থাকিবে না, গমনও করিবে না; কেননা কাক সম্ভিয়াহারে হৎস থাকত এবং বর্ত্তক গমন করত নষ্ট হইল।

ताका वांलालन, हेश कि कुल ?

শুক কহিছেছে, উদ্দাননির পথের মধ্যে এক পাক্ড বৃক্ষ থাকে, ভাহাতে হংস আর কাক বাস করে। গ্রীদ্ম কালেতে এক দিন কোন পথিক শুদ্ধ হইয়া ভক্তলেতে ধনু ও শর রাখিয়া নিলু গেল। ভাহাতে কিঞাং কালের পর ভাহার মুখহইতে বৃক্ষজায়া গেল। ভারনমন্ত্র সূত্য-কিরণলাপ্ত ভাহার মুখ দেখিয়া ঐ বৃক্ষিত হংস দয়াহেছুক পক্ষম বিভার করিয়া পুনর্বার ভাহার মুখেতে ভায়া করিল। খাহার পর সে অভিশয় নিলু গেল, সুখেতে মুখ ব্যাদান করিল। মনশুর স্থান কুর্নিতা হেছুক প্রসুখাসহনশাল ঐ কাক ভাহার মুখেতে বিজা ভাগ

করিয়া পলাইল। তৎপরে যথন ঐ পথিক উটিয়া উচ্চেতে অবলোকন করিল, তথ্য তৎকর্তৃক সে হৎস নিরীক্ষিত হটয়া বাণকরণক বিদ্ধ হটয়াবিনাশিত হটল। বর্তকের কথাও কহি।

এক দিবস ভগবান গরুড়ের যাতা প্রসঞ্জেরে সকল পক্ষিরা সম্দুতীরে গেল; ভদনত্ব কাকের সক্ষেতে বর্ত্তক চলিল। তাহার পর যাইতেছিল যে গোপ তাহার দ্বিভাগুহইতে পুনঃ ২ সেই কাক দ্বি থাইতে লাগিল। অনস্তর যথন ঐ গোপাল দ্বিভাগুকে ভূমিতে রাখিয়া উদ্ভেতে নিরীক্ষণ করিল, তথন তাহাকর্ত্তক করেল ও বর্ত্তক অবলোকিত হইল। তদনত্র ভাহাকর্ত্তক দূরীকৃত হইয়া কাক পলাইল, নির্পরাধী অভাবতো মন্দানি ব্লক তাহাকর্ত্তক প্রাপ্ত হইয়া কাক পলাইল, নির্পরাধী অভাবতো মন্দানি ক্রক তাহাকর্ত্তক প্রাপ্ত হইয়া কাক পলাইল, নির্পরাধী অভাবতো মন্দানি ক্রক তাহাকর্ত্তক প্রাপ্ত হইয়া ব্যাপাদিত হইল। এই নিমিত্তে আমি বলি, দুফ লোকের সহিত থাকিবে না ইত্যাদি।

তাহার পর দেই রাজা ব্যবহারানুসারে আমাকে সন্মান কিন্যা বিদায় করিলেন, শুকও আমার পশ্চাৎ আসিতেছে। এই সকল জানিয়া যাহা কর্তব্য ভাহা অনুসন্ধান করে।

চক্রণক হাস্য করিয়া কহিলেন, হে মহারাজ, বক দেশান্তর গিয়া সামর্থানুসারে রাজকায় অনুষ্ঠান করিয়াছে; কিন্ত হে ভূপাল, কার্ণ ব্যক্তিরেকেও যুদ্ধ করিবে ইহা মূর্থের লক্ষণ।

রাজা কহিলেন, অতীতের অনুভবেতে কি প্রয়োজন ? উপদ্বিত অনু-সন্ধান কর।

চক্রবাক বলিতেছে, হে মহারাজ, নির্জনে বলিব। রাজা ও মন্ত্রীদে স্থানে থাকিলেন, অন্য লোকেরা স্থানান্তরে গোল।

চক্রবাক বলিতেছে, হে মহারাজ, দৃত প্রশ্বান করুক, তবে অনুষ্ঠান ও বলাবল জানিব; এবং সে দিতীয় বিশ্বস্তু লোককে লট্যা যাউক, ভাচাতে দৃত আপনি সেখানে অবস্থান করিয়া দিতীয় মনুষ্ঠকে সেখানের ময়ণা ও নির্দ্ধন হান নিরূপণ করিয়া কহিয়া পাঠাউক। যে জলে ও হলে চরে, সেই গুচ্চার; সেই হেতুক এই বককেই নিয়োগ করুন। এইরপ বিতীয় কোন বক যাউক, কিন্তু হে রাজাধিরাজ, ইহাও অভ্যন্ত গোপনে কর্মতা।

রাজা বিবেচনা করিয়া কহিলেন, আমি উত্তম চর পাইয়াছি।

মন্ত্রী বলিতেছে, তবে যুদ্ধেতে জয়ও পাইলেন। ইতাবসবে ছারী প্রবেশ করিরা প্রণাম করিয়া বলিল, হে মহারাজ, জবুদ্বীপত্ইতে তাক আদিয়া ছারেতে আছে। রাজা চক্রবাককে অবলোকন করিলেন। চক্রবাক কহিল, আবাদেতে গিয়া থাকুন, পশ্চাহ আনীও ছইয়া দেখা ঘাইবে। ছার্রক্ষক ভাছাকে আবাস্থানে লইয়া গেল।

রাজা কছিলেন, সংগ্রাম উপস্থিত। চক্রবাক বলিতেজে, ছে মহারাজ, প্রথমেতে যুদ্ধ কর্বট নয়। ^{সলো} কোরো বিপিতিতে ইধৈয়াবলস্থন করে। অপর প্রথমতঃ উত্তাপ নিশ্চয় সকল কার্যোর বিমি, কেননা অত্যন্ত শীতল জাল কি পর্যতকে ভেদ করে না ? বিশেষে মহাবল ঐ চিত্রবর্ণ রাজা; বলবানের সহিত যুদ্ধ করিবে, ইহা নি-দর্শন নাই, কেননা মনুষ্টাদিগের হস্তির সহিত যে গৃদ্ধ, দে মর্ণকে উপস্থিত করে। আত্এব তাহার দূতকওে আখাস করিয়া যাবং প্র্যান্দ্র দুর্গ সুসজ্জ না হয়, তাবং প্যান্ত রোপ; যেহেতুক প্রাকার্য ধনুদ্ধর এক ব্যক্তি শত লোকের সহিত যুদ্ধ করে, শত লোক লক্ষে লোকের সহিত যুদ্ধ করে।

वाजा विलियन, मूर्णित यानुमकारनरंड रक निग्क रहेरव ?

চক্রবাক বলিতেছে, যে কর্মোতে যে দক্ষ দেই কর্মোতে ভাহাকে নিয়োগ করিবে, সেহেভুক সার্দকে আহ্বান কর। ভাহা করিলে পরে সার্দকে আগত দেখিয়া রাজ। বলিলেন, ও হে সার্দ, চুমি শীঘু দুর্গের অনু-দক্ষান কর।

সারস প্রণাম করিয়া বলিল, হে মহারাজ, এই বৃহৎ সরোবরে অনেক কাল দুর্গ নিরূপিত আছে, কিন্তু এই মধ্যবর্তি হীপে দুব্য সংগুহ করুন। রাজা কহিলেন, অরোতে গিয়া সমস্ত অনুষ্ঠান কর।

পুনর্কার প্রবেশ করিয়া ছারী বলিতেছে, হে রাজাধিরাজ, দিৎহল-দ্বীপহউতে মেঘবর্ণ নামে কাক দপরিবারে আদিয়া ছারেতে আছে, মহারাজের চর্ণ দেখিবার নিমিত্তে বাঞ্চা করিতেছে।

রাজা বলিলেন, কাকেরা সর্বাজ হয়, এবং বহুদশী হয়; ঋতএব সংগ্রহ কর্ত্বা, ইহা ব্ঝিতেছি।

চক্রবাক বলিতেছে, থে মহারাজ, এই বটে, কিন্তু কাক স্থলতর, সেই জন্যে আমাদিবের বিপক্ষেতে নিনুক্ত, কি প্রকারে সংগুহ করা যায়? যে লোক স্বপক্ষকে পরিত্যাগ করিয়া পরপক্ষেতে আসক্ত হয়, দে মূর্ধ নীলবর্ণ শ্গালের ন্যায় পরকর্তৃক হয় হয়।

वाका कहिस्सन, अ कि श्रकांत?

মথী কহিতেছে, কাননেতে কোন শ্গাল থাকে, সে আপন ইচ্ছাতে নগরোপান্তে জুমণ করিয়া নালীভাণে পড়িল: অনন্তর তাহাহইতে উঠিতে পারিল না। প্রভাত কালে আপনাকে মৃতের ন্যায় দেশাইয়া থাকিল। তাহার পর নীলীভাণ্ডের বামী সে মৃত, ইহা জানিয়া তাহাহইতে উঠাইয়া দূরে লইয়া ফেলিল, সে স্থানহইতে জম্ফুক পলাইল। অনন্তর ঐ শৃগাল অরণ্যে গিয়া নিজ্ঞ শরীরকে নালবর্গ দেখিয়া চিন্তা করিল, আমি উত্তমবর্গ হইয়াছি, ভবে আমি আপনার উৎকৃষ্টতাকে কেন সাধন না করি? এই আলোচনা করিয়া শ্গালদিগকে আন্ধান করিয়া সে কহিল, ভগবঙা বনদেবতা কর্তৃক বহুত্বায়া সর্কোষধি করণক বন্রাজ্যেতে আমি অভিবিক্ত হইয়াছি, এই হেতুক আদ্ধি অবধি সকলে কাননেতে আমার আজ্ঞাতে কর্মা করিয়ে। শৃগালের। তাহাকে উত্তমবর্গ দেখিয়া অ্ষীক্ষে

প্রণাম করিয়া কটিল, হে মহারাল, আপনি দেরপ আজা করেন। এই প্রকারে সমস্ত বনবাসি পশ্তে তাহার প্রভুক্ত হুইল। অনন্তর সে অংকীয় জাতিতে পরিবৃত হইয়া মহতব সাধন করিল। তাহার পর দে বাাঘু সিৎহাদি উৎকৃষ্ট পরিজনকে পাইয়া সভাতে শৃগালদিগকে দেখিয়া লজ্জিত হট্যা সকল জাতিকে অপমান করিয়া দূর করিল। তদনত্তর শুগালদিগকে বিমনা দেখিয়া কোন বৃদ্ধ জনুক এই প্রভিজা করিল, ভোমরা বিষয় হটও না। নীডিজ মর্মাবিৎ আমরা এট অনভিজকর্তৃত ষে প্রাভূত হট্যাভি, দেই হেতুক যে রূপে এ নফ হয়, ভাহা কর্তা। এই ব্যায়ু প্রভৃতিরা বর্ণমাত্র দেখিয়া শুগাল নাজানিয়া ইহাকে রাজা করিয়া মানে। তবে এ যে রূপে পরিচিত হয় সেইরূপ কর। তাহাতে এই প্রকার কর্ত্রা; সকলে সায়ৎকালে সমীপেতে এক কালে অভিশ্ন শব্দ করিবা; ভাহার প্র সেই শব্দ শুরণ করিয়া জাতি স্বভাব হেতৃক সেও রব করিবে। অনন্তর সেই প্রকার করিলে ভাষা হউল, যেহেতৃক যাহার যে স্বভাব আছে, দে সর্বাদাট অপরিহার্য্য; কেননা যদি কুকুর রাজা হয়, ভবে দে কি চর্মাপাদুকা ভোজন করে না? ভাহার পর শক্তে জান করিয়া ব্যাঘুদে শুগালকে নফী করিল। আছেএব আমি বলি, যে লোক স্বপক্ষকে ভাগে করিয়া ইত্যাদি।

রাজা কহিলেন, যদাপি এইরূপ ভথাপি দেখ, এ ব্যক্তি দূর্হইতে আসিয়াভে, ভাহার সংগুহেতে বিচার করা ঘাইবে।

চক্রকাক বলিতেভে, হে মহারাজ, ঢর পাঠান গিয়াছে, দুর্গও প্রশুড ছইয়াছে, অতএব শুককে আনিতে পাঠাউন।

আনস্থর সভা করিয়া শুক এবং কাককে আহান করিল। শুক কিঞিং উর্দ্ধান্তক হইয়া দ্রাসনে বসিয়া বলিতেছে, ও হে হির্ণ্যগর্ভ, ছোমাকে মহারাজাধিরাজ শ্রীমজিতবর্গ আভা করিয়াছেন, যদি প্রাণে কিছা সম্প্রিতে প্রয়োজন থাকে, ভবে শীঘু আসিয়া আমার চর্ণেতে প্রণাম কর, নহুবা অবস্থানের নিমিতে স্থানান্তর চেফী কর্।

রাজা রুফ হইয়া কহিলেন, আ:! আমার অগ্রেড কেহ নাই বে ইহাকে গলাতে হাত দিয়া বাহির করিয়া দেয়?

মেঘবর্ণ উঠিয়া বলিতেছে, হে মহারাজ, আজা করুন, দুফট শুককে নট করি। সর্বাজ রাজাকে এবং কাককে সাস্ত্রনা করিয়া বলিতেছে, শুন, এই ধর্মা, মেলছ দুভও অবধা হয়; যেহেতুক রাজা দূভমুথ; অভএব শয় উপতি হইলেও দূভ অন্য প্রকার বলে না; দূভ সর্বাদাই অবধ্য ভাবেতে সমস্কই বলে।

ভাছার পর রাজা এবং কাক আপন স্বভাবকে পাইল, শুকও উঠিয়া চলিল। পশ্চাৎ চক্রবাক ভাছাকে প্রবোধ করিয়া স্বর্ণালক্ষারাদি দিলে দে প্রেরিভ ছইয়া গেল। শুক বিন্ধাচলের রাজাকে প্রণাম করিল। .রাজা কহিলেন, শুক, বৃত্তান্ত কি ? ঐ দেশ কি রূপ ?

শুক বলিতেতে, ছে মহারাজ, সংক্রেপেতে এই বার্তা। ইদানী সং-গ্রামের উদ্যোগ করুন, ঐ কপূরদ্বীপ মনের এক দেশ, রাজা দিতীয় ম্বর্গপতি, কি প্রকারে বর্গনা করিতে সমর্থ চই?

অনস্থর রাজা সকল শিক্টাদিগকৈ আহ্বান করিয়া মন্ত্রা করিবার নিমিতে বসিলেন, আরে কহিলেন, সংপ্রতি কর্ত্য বৃদ্ধতে যে প্রকার কর্ত্র ভাহা উপদেশ কর; কিন্তু যুদ্ধ অস্থ্য কর্ত্য।

্দ্রদশী নামে গুণু বলিতেছে, কে মহারাজ, ব)দনিতা হেডুক যুদ্ধ বিভিডনয়

রাজা বলিলেন, হে মন্ত্রি, আমার দৈন্য নিরিজণ কর, আর উহাদের উপযোগিতা জান,এবৎ দৈবজকে আহ্বান কর, শুভ লগু নিণয় করিয়া দেন। মন্ত্রী বলিভিডেছে, তথাপি অকফাং যাতা উপস্কুনয়।

্রাজা কহিলেন, হে মন্ত্রি, সামার উৎদাহ ভল দক্ষণা করিও না, জায়েজু ব্যক্তি যে প্রকারে প্রস্থানাক্রমণ করে ডাহা করে।

ভাষার পর রাজা উঠিয়া শৈরজকর্ম জানিও লগ্নেতে মালা করিলেন।

অনস্বর প্রেরিত চর বির্ণাগলের সমীপে আমিয়া কলিল, যে মহারাজ,
চিত্রবর্ণ রাজা আগরপ্রায়, সংপ্রতি মলমপ্র্যুত মার্বানে রাম করিছেভেন, অনুক্রণ দুগানুসকান কত্রস; যেতেওুক ঐ গুলু মহামুথী, আর আমাদের নিক্টম্ব কোন ব্যক্তির সহিত ভাহার প্রভাগ ঐ রাজা কোন লোককে আমাদিগের দুগেতে পুর্সেতেই প্রেবণ করিয়াজেন। কথাপা-পেতে ভাষার ইপ্লিত আমি জাত হইয়াজি।

ठळ्याक नलिएडएफ, रह भगाताज, काक्ट এ मस्त हरा।

র জি। বলিজেন, ইহা কদাচ নগ। যদি এমন সটে, তবে কেন সে অংকের প্রাভবে উন্ম করিল? এবং অকের আগমনেতে ভাচার গুদ্ধোং-সাহ? সে অনেক কাল এ স্থানে আছে।

মন্ত্রী বলিতেছে, ভ্রাপি আগলুক শক্ষনীয়।

রাজা কেইবিলেন, আগাস্তুক কাক্তির কেনাচিং উপকার্ক হয়। বিজ্ঞাক কহিতেছা, এ কি প্রকার ?

রাজা কহিতেছেন, আমি পুরেরিত শুদুক রালার ক্রীড়া সবোবরে কপুরিকেলিনামা রাজহৎদের কন্যা কপুরমঞ্চীর সহিত অঙিশর অনু-রাগী হউরাছিলাম; ভাহাতে মহারাজপুত্র বার্বির নামে কোন দেশহউতে আসিয়া রাজহারে গিয়া হারিকে বলিল, আমি বেতনাথা রাজপুত্র, রাজদর্শন করাও। ভাহার পর তাহাকতৃক রাজদ্শন প্রাপ্ত হউয়া বাল-তেছে, হে মহারাজ, যদ্যপি অন্ত্রেতে মহারাজের প্রয়োজন থাকে তবে আমার বেতন কহ। শূদুক বলিল, হোমার বেতন কি । বীরবর বলিতেছে, প্রভাহ পাঁচ শত সূবর্ণ মৃদুা দেও। রাজা বলিলেন, ভোমার গামগুী কি । বীরবর বলিভেছে, বাহু দৃই, খড্গা তৃতীয়।

রাজা বলিলেন, অসামর্থ্য হয়। ভাছা খনিয়া বীরবর চলিল। অনন্ধর আমাত্যেরা কহিল, হে মহারাজ, চারি দিবদের বেহন দিয়া ইহার স্থর্ন জান, এ লোক কেমন? উপযুক্ত এহ বেহন লয় অনুপযুক্তই বা? তৎপরে মন্ত্রির বাক্যেতে আহ্বান করিয়া বীরবরকে পাণ দিয়া পঞ্জাত সুবর্ণমূলু। দিলেন। হাহার বাক্য আর ভাহার বিনিযোগ রাজা নিজনে নিরূপণ করিলেন। বীরবর হাহার অর্কেক দেবহাদিগকে ও বুল্ফেণদিগকে দিল, অবশিষ্টের অর্কেক দুংখিদিগকে, তদবশিষ্ট খাদ্য দুব্যাদিতে বায়। এই দকল নিতা কর্মা করিয়া রাজাবারেতে দিবারাত্রি খড়গহস্তেতে শ্রন করে। যখন রাজা আপনি আজা করেন, তখন নিজ গৃহে যায়। অনস্বর এক দিবস কৃষ্ণ পক্ষীয় চহুদ্দী রাত্রিতে রাজা কর্মণার সহিত রোদন শক্ষ শ্রনিলেন।

শুদুক কহিলেন, কে কে এই ছারে? সে কহিল, হে মহারাজ, আমি বীরবর।

রাজা বলিলেন, ক্রন্দনের অনুসরণ কর। বীরবর কহিলেন, হে মহারাজ, যে প্রকার আজা করেন। ইহা কহিয়া চলিল। রাজা ভাবনা করিলেন, ঘার অক্ষকারে একাকী এই রাজপুল্ল প্রেরিত হইল ইহা উপযুক্ত নয়। সেই হেতুক পশ্চাৎ গমন করিয়া, কি এ ইহা নিরপণ করি। তাহার পর রাজাও অসি লইয়া তাহার অনুসরণ ক্রমেতে নগরের বাহিরে গেলেন। গিয়া বীরবরকর্তৃক সেই রোদনকারিণী রূপযৌবনসম্পন্না স্কলোলারভূষিতা কোন জী নিরীক্ষিতা হইল, আর জিজাসিতা হইল, কে ভূমি কি নিমিতে রোদন কর? স্থী কহিল, আমি এই শুদুকের রাজলক্ষী; চিরকাল ইহার বাহুছোয়াতে বড় সুখে বিশ্রাম করিয়াভিলাম, সম্পুতি অন্যত্ত গমন করিব।

বীর্বর বলিতেছে, যেখানে অপায় হয় দেখানে উপায়ও আছে, তবে কি প্রকারে এখানে পুনর্কার আপনকার অবস্থান হয় ?

লক্ষমী কহিলেন, যদ্যপি বৃত্তিশ লক্ষণেতে যুক্ত আপন পুদ্র শক্তিধরকে তুমি ভবগতী সর্বমঙ্গলাকে বলি দেও; ভবে আমি পুন্দ এখানে বহুকাল বাস করি; ইহা কহিয়া অদৃশ্যা হইলেম। ভাহার পর বারবর আপন গৃহে গিয়া নিদিত আপন পক্তনীকে আর পুত্রকে জাগাইলেন। ভাহারা দুই জন নিদ্যা ভাগা করিয়া উঠিয়া বসিল। বারবর সেই সকল লক্ষার বাক্য বলিলেন।

তাহা শ্বনিয়া আহ্লাদিত হইয়া শক্তিধর বলিতেছে, ধন্য আমি, স্বামির

রাজ্যরক্ষার নিমিতে যে আমার এতাদৃশ উপযোগিতা সে শাঘ্য; ভবে এখন গৌণের কারণ কি? এতাদৃশ কায্যেতে শ্রীরের নিয়োগ হাঘ্য। যেতেত্ক পণিত ব্যক্তি ধন আর প্রাণ পরের নিমিতে ত্যাগ করিবে। কেননা শ্রীরনাশ অবশ্য তউবে, উহাতে সাধুর নিমিতে ত্যাগট ভাল।

শক্তিধরের মাতা কজিল, মদ্যাপি ইহা না কর, তবে অন্য কোন কর্মেতে অতিবড় বেতনের নিস্কার হটবে না, ট্রা আঙ্গোচনা করিয়া দকলে দর্মমঙ্গলার স্থানে গেল। দেখানে দর্মাঙ্গলাকে পূজা করিয়া दीवृत्वत् त्रांनिष्टर्षः, रह प्राति, श्रमसा हुउ, मुनुक महावास असमुक हुउँन, আপেনি বলি গুহণ করেন। ইহা কহিয়াপুলের মস্কুকে ছেদন করিলেন। उनमञ्जल नीववज्ञ छात्रमा कजिल्लाम, या शृंशीच जालविकतमत मिस्राज হটল, সংপ্রতি অপ্রকের জীবন নিবর্থক। ট্রা বিবেচনা করিয়া আপনার শিরশ্ছেদন করিলেন। তাহার পর বীরবরের জীও হামিপুত্র-শোকোতা হউয়া তাহা করিল। রাজা দেউ সকল দেখিয়া বিশ্বয়াপাঁল হউয়া চিধা করিলেন, আমার হুলা কুবু জাল্রা জিমিতেতে ও মরিতেতে, পৃথিবীতে ইহার তুল্য লোক হয় নাই ও হবে না; সেইতেতুক ইহাতে রহিত হইয়া আমার রাজতর নিঞ্পুরোজন। তদনত্র শুদু<mark>কও নিজ</mark> মহক কেছদন করিবার নিমিত্তে পঙ্গ উঠাইলেন। অনস্থর ভগৰতী স্কামস্পা রাজার হস্ত ধরিলেন, আরু ক্সিলেন, পূস্ত, আমি ভোমাকে প্রসন্না হইলাম, এত সাহস নির্থক, প্রাণাত্তেও তোমার রাজাভদ নাই। রাজা অফীক্ষপ্রণাম করিয়া কহিলেন, তে দেনি, আমার রাজ্যে প্রাণেট বা কি প্রয়োজন? যদ্যপি আমি অনুগৃহাত হউ, তবে আমার আয়ুর শেষেতে স্বারাপতা এই বীর্বর বাঁচুক; নতুবা ইতারা যে গতি পা• ইয়াছে, দে গতি আমি পাই। ভগবতী কহিলেন, হে পুল, তোমার এট সতা সন্ধানতাতে আরু জৃতাবাংমলোতে তোমাকে তুফী ছইলাম, যাও, জয়ণ্ক হও, এই সপরিবার রাজকুমারও বাঁচুক। টহা কছিয়া দেবী অন্তর্হিগ ছইলেন। ডদনত্তর বীরবর দ্বারাপুত্র গৃহে গেলেন। রাছাও তাহাদিনের আহাক্রিত হইয়াশীঘু অস্তঃপুরে প্রবেশ করিলেন।

অনন্তর প্রাতঃকালে দারস্থ বারবর পুনশ্চ জিলাসিত হইয়া কহিলেন, হে মহারাজ, রোদনকারিণী সে দ্রী আমাকে নিরীক্ষণ করিয়া অদুশা হইল, আর কোন বৃহাদ্ধ নাই। হাহার কথা শুনিয়া রাজা চিন্ধা করিলেন, এই বাকি শ্লাঘ্য মহানল, এই মহা পুরুষসক্ষণ, ইহাতে সমস্কই আছে। তাহার পর সেই রাজা পুর্বাহে শিট সভা করিয়া শকল বৃহাত্ত প্রভাব করিয়া অনুগুহ প্রশুক্ত তাহাকে কণাট রাজ্য দিলেন। তবে জাতিমারেতেই কি আগেন্তক দুষ্টি? তাহাতেও উত্তম মধ্যম অধ্য আছে।

ট্রকবাক বলিভেছে, ব্রামার ইচ্ছাতে যে অকার্যাকে কার্যাভুলা করিয়া

শাসন করে সে কি মন্ত্রী? প্রভুর মনের দুংখাও ভাল, তথাপি অকাষ্যকে কাষ্য করিয়া শাসন করিবে না। হে মহারাজ, অবেণ করেছ, পুণা প্রযুক্ কোন এক বাজি যাহা পাইয়াছে ভাহা আমারও হইবে, ইহা জান করিয়া যে লোক কর্মা করে সে নন্ট হয়। ইহাতে দৃষ্টান্ত, অভিশয় লেভ প্রযুক্ত ভিক্ষুক্তকে ভাড়না করিয়া নিধ্যথী নাপিত যেমন নন্ট হইয়াছিল। রাজা জিজাসিতেছেন, এ কি প্রকার?

মন্ত্রী কহিতেকে, অ্যোধ্যাতে চূড়ামনি নামে ক্ষত্রিয় ছিলেন, তিনি ধনের নিমিতে ভাগান্ চল্ডুচুতক বস্তুকাল আরাধনা করিলেন। ভাগার পর নিম্পাপ ঐ ক্ষত্রিয়কে স্থানেত দশন দিয়া মহেখনের আলাজের কুবের এই আদেশ করিলেন, এমি অন্য পূর্দ্ধাকে ক্ষেরি করিয়া হস্তেরে লগুড় ধরিয়া গ্রেতে লুক্কায়িত চইরা থাকিবা। অনস্তর ঐ অঙ্গনেতে এক ছিক্ককে আদিতে দেখিবা, ভাগাকে নির্মার লগুড় প্রহারে নই করিবা, ওাহার পর সুবর্গ কলাসু হইবে, ভাগাওই এমি জীবন পর্যায় সুখা ইইয়া থাকিবা। ভদনস্তর ভাগা করিলে ভাগা হইল। ভাগাওে ক্ষেরির করণের নিমিতে আদিয়াছিল যে নাপিত সে ভাগা দেখিয়া ছিয়া করিল, যে নির্মিত আদিয়াছিল যে নাপিত সে ভাগা করিল। ভাগার জিলার উপায় এই, আমিও এই প্রকার কেন না করি? সেই অবধি ঐ নাপিত প্রতিদিন সেইরূপে লগুড় হাইয়া নির্ম্ভবেরে ভিক্ককের আগমন প্রতীক্ষা করে। এক দিবস সেই নাপিত ভিক্ককের আমি বলি,পুগ্রপুক্রকান বাকি প্রকারে করিল। অভএব আমি বলি,পুগ্রপুক্রকানার কি প্রকারে পর নির্মাণ্ড ক্ষেত্র সির্মাণ্ড ক্ষেত্র স্থানি ক্ষান্ত করিল। অভিনার বাকি প্রকারের করিলে নাই ক্ষেত্র করেন করিলের স্থাকিবলের ব্রান্তক্ষারার কি প্রকারের পর নির্মাণ্ড ক্ষান্ত করিল। স্থাকিবলের ব্রান্তক্ষান্তন করিলের সেই ক্ষান্তন করিলের স্থাকিবলের ব্রান্তক্ষান্তন করিলের স্থাকিবলের স্থাকিবলের স্থাকিবলের সির্মাণ্ড করিলের স্থাকিবলের স্থাকিবলে

রাজা কাইপেনে, পূর্কেণালের বৃত্তান্তকথনরারা কি প্রকারে পর নিনীর ছাইবে? কারণ বাউরেকে কি বিশুহুইবে? কিছা বিসামঘাভকই ছেইবে? ঘাউক, উপস্থিত অনুস্কান কর, মলয়পর্কতি সমীপে যদি চিতাবর্গ আন সিয়াতে, তবে এখন কি কত্বা?

মন্ত্রী বলিভেছে, ছে মহারাজ, আগত দুতের মুখেতে আমি শুনিয়াজি, ঐ মহামন্ত্রী গৃপ্পের উপদেশেতে চিত্রবর্ণ অনাদর করিয়াছে, দেই নিমিতে ঐ চিত্রবর্গ মূদ, ভাহাকে জয় করিতে শকা বটে । দেই হেতৃক ঐ চিত্রবধ্যাবং পর্যান্ত্র আমাদিগের দুগদার রোধ না করে, ভাবং পর্যান্ত ননী ও পর্বান্ত ও বন ও পথেতে ভাহার দেনাকে হানিবার নিমিতে দার্ব প্রস্থৃতি দেনাপতিরা নিমুক্ত হউন। ভাহা করিলে পরে চিত্রবণের দেনাও সেনাপতি অনেক নন্ত হইল, ভংপরে চিত্রবর্গ উদ্বিগ্ন হইয়া আপন মন্ত্রী দুরদ্শিকে বলিল। হে পিতঃ, কেন আমাকে উপেক্ষা করিছেছা? কোথাও কি আমার অবিনয় আছে?

গৃধু বলিতেছে, ছে মহারাজ, তুমি নিজ্ঞ দেনার উৎসাহ দেখিয়া সাহসিক আমাকর্তৃক উপদিষ্ট মন্ত্রণতে অনবধান করিয়াছ, আর নিষ্টুর বাক্য কহিয়াছ, অতএব এই দুনীতের ফল এই, অনুভূত হইতেছে। অনম্বর রাজা কৃচাশ্বলি হইয়া কছিলেন, হে পিডঃ, আছার এই অপরাধ আছে। সম্পুতি অবশিষ্ট সৈন্মের সহিত ফিরিয়া বিদ্যা পর্বতে ফেরপে যাই ভাহাতে উপদেশ কর।

মন্ত্রী হাসিয়া কহিতেছে, হে মহারাজ, ভর করিও না, আখাসিত ছইয়া শুন, আপনকার অনুগুহেতে দুগকে ভাঙ্গিয়: কীর্ত্তি প্রভাপের গৃহিত ভোমাকে অংশ কালেতেই বিভাপর্যতে দটনা যাইন।

রাজা কহিলেন, কি প্রকারে? সংপ্রতি অত্যপণ সেনাছে ভালা সম্পল্ল হটবে?

পুধু বলিতেছে, হে মহারাজ, সমস্ক হউনে, অফফাৎ দুর্গরোধ কর। হির্ণাগর্ভের প্রেরিড চর বক আসিরা ভাহা কহিল, হে মহারাজ, অবশিষ্ট অত্য়ম্প সেনার সৃহিত ঐ রাজা চিত্রবর্ণ গৃধ্বের প্রামর্শে দুর্গরোধ করিবে।

वाका कहिरमन, रह मर्क्षज, अभन कि कहंता ?

চক্রবাক বলিতেভে, নিজ দেনাতে সারাসার বিদেচনা কর, তাছ।
জানিয়া উপযুক্ত মতে পারিতে যিক সুদর্গ ব্রাদি দেও, যেচেডুক
অপর যজেভে ও বিবাহেতে ও বিপৎকালেতে ও শক্ত্রহাতে ও কীত্তিকর
কর্মেতে ও মিক্র করণেতে ও প্রিয় ব্রীতে ও বন্ধুলোকেতে, এই আটেতে
বায় অভিশয় নাই।

রালা কছিলেন, কি প্রকারে এ সময়ে অতিরিজ বায় উপস্ক হয় । ময়ী কছিতেজে; হে মহারাজ, কৃপণতা ভাগে করিয়া দান ৪ সমানৰারা ৰকীয় হোদ্ধাদিগের পুরস্কার কর।

আনস্তর মেঘবর্গ আদিয়া প্রণাম করিয়া দলিংহতে, ছে মহারাল, আনুপুছ পূর্বেক আবলোকন করুন, সম্পুতি দুর্গরারেতে বিপক্ষ আতে, সেই হেছুক মহারাজের চরণের আজা চইলে বাহিরে গিয়া নিজ পরাক্ষম দেখাই, তাহা করিয়া মহারাজের পায়ের অঞ্জী হই।

চক্রবাক বলিতেছে, ইবা করিও না, যদি বাহির হইরা যুদ্ধ করা যার, তবে দুর্গাশুর ব্লিম্পুরোজন। ভরানক কৃষ্ণার জলকটতে নিগঠ হইলে অবশ হয়, বলবান সিংহও বনহটতে নিগঠহইলে শৃগালের কায় হয়। হে মহারাজ, আপনি গিয়া যুদ্ধ দেখুন। অন্তরে তাহারা সকলে দুর্গনারে যাইয়া অভিবড় যুদ্ধ করিল।

পরদিবস চিত্রবর্ণ রাজা গৃধুকে বলিল, ছে চাচ, এখন আপন প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন কর।

পৃধু বলিডেডে, হে মহারাজ, অনুন, অইনতা আর বছকাল পর্যার অব-রোধ আর আক্রমণ আর উরু পুরুষ, দুর্গলক্ষনের এই চারি উপায়, ইছা-তে শক্তামুসারে এই ২ বক্স কর। তদনত্তর সূর্যোদয়ের পুর্বেক্তেই দুর্গের চারিত্বারেডেই যুদ্ধ হউলে পরে এক দিবস দুর্গর্যাবর্তি সকল গৃহিছে কাকের । অগ্নি ক্ষেপণ করিল। ভাছার পর দুর্গ লইয়াজি > এ কোলাছল খানিয়া সর্মাত জললিভাগ্নি দেখিয়া রাজহংসের সেনারা আরে দুর্গবাসি লোকেরা করেছে ছুলে প্রবেশ করিল। রাজহংস অভাবতো মন্দর্গতি আর ছিতীয় সারস এই দুইকে চিত্রবর্ণের সেনাপতি, কুমকুট আসিযা বেড়িল। ছির্ণাগর্ভ সারসকে বলিল, হে সেনাপতে, আমার অনুরোধে আপনাকে কেন নন্ট কর? তুমি এখন ঘাইতে পার, অভএব যাইয়া জলে প্রবেশ কর, আপনাকে রক্ষা কর, চূড়ামণি নামা আমার পুত্রক স্কাতের স্মাতিতে রাজা করিবা।

সারস বলিতেজে, হে মহারাজ, এতানৃশ দুঃসহ বাক্য বক্রব্য নর। যাবং পর্যাস্ত চন্দ্র সূর্য্য গগণে আছে, তাবং পর্যান্ত মহারাজ আপনি জ্ঞার হউন। আমি দুর্গাধিকারী, আমার মাৎসরক্রলিও ছারপথেতে শবু প্রবেশ করেক। আপনকার তুল্য দাতা ক্রমাবান গুণগুছিক অপর প্রস্তুকে কটেতে মিলে।

্রালা কাইতেছেন, ইহা যথাথই বটে, কিন্তু পবিত্র কর্মানিপুণ আনুরক এতিদ্ধেপ ভূতাও দুর্লচ।

সার্দ বলিতেছে, শুন হে মহারাজ, তুমি স্বামী দর্ম প্রকারে রক্ষণীয়।

আনস্তর কুককুট আসিয়া রাজহৎসের শরীরে তীক্ষ নথাঘাত করিল।
সারস শীঘু সমীপে আসিয়া রাজাকে আপন শরীরের মধ্যে করিয়া
জলে পড়িল। তদনত্তর কুককুটদের নথ মুথ প্রহারেতে ক্ষত বিক্ষত
হুট্যা সারস আনেক কুককুট সেনাকে নফী করিল। পশ্চাৎ সারস
চঞ্প্রহারেতে ক্ষত বিক্ষত হুট্যা প্রাণ্ডাগ করিল। তাহার পর চিত্রবর্ণ
দুর্গেতে প্রবেশ করিয়া দুর্গম্পুর্য সকল সুটাইয়া বন্দিকর্ভৃক জয়শন্দতে
আক্রাদিত হুট্যা আপন শিবিরে গেলেন।

অনম্বর রাজপুত্রের। কহিলেন, সেই রাজসৈনোতে দার্সই অভিবড় পুণাবান, যে নিজ দেহ ভাগি করিয়া শ্বামিকে রক্ষা করিল।

V.—Of Peace.

मिक्ता

পুনশ্চ কথারন্ড সময়ে রাজকুমারেরা কহিলেন, হে প্ররো, আছির। বিগুহ শুনিলাম, সম্পুতি সন্ধি বল।

বিজুশর্মা কহিলেন, খন, সন্থিও কহি, যাহার প্রথম প্রোকার্থ এই, অতিশয় মুদ্ধ হইলে পরে দুই রাজার অনেক দৈন্য নন্ট হইলে থাকিল যে গ্রুও চক্রবাক ভাহারা অপপ কালেডেই বাক্যছারা সন্ধি করিল।

ताजनत्मता कहिल्लन, देश कि श्रकात ?

বিষ্ণুশন্মা কহিতেছেন, ভাষাব পর সেট রাজহৎস কচিল, আমার দুর্গেকে বছি প্রদান করিল? কি প্রকীয় লোক? কিছা বৈরি প্রেরিড আমার দুর্গবাসী কেছ?

চক্রবাক কৰিতেছে, হে ভূপাল, আপনাব নিম্পুর্যোজন মিত্র ঐ মেদ্রবর্গ সপ্রিবার দৃষ্ট হয় না, সেই নিমিতে বুঝি ভাহারি অনুষ্ঠিত এই।

্রাজা কিঞিং কাল ভাবনা করিয়। কহিলেন, সেই ১টে, এ আন-মার দুদিহি।

মন্ত্রী বলিতেছে, উহা কথিত আছে, যে লোক হিতানিলায়ি বন্ধু নিগের বচন খনে না, সে কাষ্ঠ্যুত নিস্মৃদ্ধি ক'ছপের ন্যায় ন্সী চম। বালা কহিলেন, এ কি প্রকার?

মন্ত্রী কাইতেতে, মগধনেশে ফুলোংপল নামে সরোবর আছে, ভাচাতে অনেক কাল সক্ষট বিকট নামে দুই হংস বসতি করে, ভাহাদিগের মধা কলুগুবি নামে কতেশ বাস করে। অনধর এক দিবস কৈবরেশ আসিয়া সে স্থানে কহিল, এ ভানে আমরা আছি বাস করিয়া কলা প্রভিক্তালে মংস্য কতলাদি নস্ট করিব। ভাহা শ্বনিয়া কমঠ দুই হংসকে কহিল, হে মিত্রো, কৈবতদিগের কথোপকথন শ্বনিলা? ইনানী আমার কর্ত্ব্য কি?

হৎদের: বলিল, ভাহা পরে দেখা যাউবে, প্রাঙঃকালে যাহা উপদৃক হয়,ভাহা করা যাউবে।

কদপে বলিতেতে, এমন নয়, বিজেরা তাহা কহিয়াতেন, আনাগতবিধাতা আর প্রভূমপল্ল মতি, এই দুই জন দুখী হয়, আর যদ্বয়ি নাট হয়। হুম্দেরা কহিল, এ কি প্রকারে?

কুমা কহিতেছে, পূর্পে এই সরোবরে ঝালিয়া এই রূপে উপদ্বিভ চইপে পরে জিন মংসা পর্মশ করিতে লাগিল, তাকার মধ্যে এনাগওবিধারা নামে এক মংসা কহিল, আমি অনা প্রকরিণাতে যাই, ইকা বলিয়া জলাশায়ান্তরে গেল। প্রাথশামতি নামে মংসা কহিল, ভাবি বিবরেতে লিক্যা নাই, আমি কোথা ঘাইব লৈ ভাবা উপদ্বিভ কইলো যাই। কয় হালা করিব। তাকার পর্ যদ্ধিয়া কহিল, যে বিসয় কইবার উপযুক্তনার, সে ইইবে না; যে বিষয় হইবার উপযুক্ত ভাকার অন্যথা কইবে না। বনন্তর প্রত্যুৎপদ্মতি প্রাথকালে আলেতে বন্ধ ইইয়া আপনাকে মৃত্তুল দেখাইয়া থাকিল। ভাকার পর ঝালহইতে নিংসারিভ কইয়া সামর্থা। নুসারে জম্ফ দিয়া অগাধ জলে প্রবিষ্ট কইল; যদ্ধিয়া বৈদ্য কর্তুক প্রহীয়া ব্যাঞ্জাদিত হইল। এই নিমিত্তে আমি বলি, অনাগওবিধাতা ইচাদি; সেইত্তুক যে প্রকাবে আমি অন্য জলাশ্যে যাই ভাকা করে।

হৎসেরা বলিল, তুদান্তরে গেলে পরে গোমার কল্যাণ, কিন্তু ছলে পমন করিবার ভোমার কি উপায় ? কমাঠ কহিল, যেরূপে আমি হোমাদের দ্হিত আকাশপথেতে যাওঁ ভাছা কর। হৎদেরা বলিল, কি প্রকারে উপায় সদ্ভব হয় ?

কুর্ম বলিতেভে, ডোমাদের দুট জনকর্তৃত চঞ্প্ত এক কার্ছবণ্ডক আমি মুধ্যারা অবলম্বন করিয়া ডোমাদের দুই জনের পক্ষবলেডে সুৰোযাইব।

দুই হৎস বলিল, এতাদৃশ উপায় সম্ভব বটে, কিন্দু সুবোধ লোক উপায় চিথা করিয়া অপায়ও চিথা করিবে, কেননা মূর্থ বকের সন্তান ভাহার চফুর্গোচরে নকুলকর্ভুক ভক্লিত ছইল।

কচ্ছপ প্রশন করিছেছে, এ কি প্রকার ?

ভাষারা কহিছেছে, উত্তরপথেতে গুপুকুট নামে গিরিতে এক বৃহৎ অস্পথ্যক আছে, তাহাতে অনেক বক বাদ করে, তাহানের শিব সধানদিগকে বৃহ্ণং লগতে সন্ধানদিগকে বৃহ্ণং লগতে সন্ধানদিগকে বৃহ্ণং লগতে সন্ধানদিগকে বৃহ্ণং লগতে বিলেপ থার। অন্ধর শোকাণুর বকদিগের রোদন শ্বনিয়া কোন বক কবিল, এরুপ বিলাপ করিও না, ভোমরা মংস্য আনিয়া নকুলের গর্তকে আর্থ্য করিয়া সপের বিবরপ্যায় পংক্রিক্মেতে স্থাপন করে। ভাহার পর দেই খাদ্য দুব্যলোভি নকুল আসিয়া স্পকে দেখিবে, খাভাবিক শ্রুভাহেত্বক ভাহাকে নই করিবে। ভাহা করিলে পরে ভাহা হইল। তদন্তর দেই ভরতে নকুলেরা বক্রালকজননি শ্বনিল, পশ্লং ভাহারা বৃহহ্ণ আরোহণ করিয়া শিশ্বদিগকে খাইল। এই জন্যে আমি বলি, মুবোধ লোক উপায় হিন্তা করিয়া ইভাদি। আমাদের কর্তৃক নীয়্মান ভোমাকে নিরীহ্ণণ করিয়া লোক অবশ্য কিছু বলিবে, ভাহা শুনিয়া যদি ভুমি উত্তর দিবা, ভবে ভোমার মৃণ্যু হইবে, সেই নিমিতে স্বর্থা এই খানে থাক।

কছেপ বলিতেছে, আমি কি অজান ? আমি প্রভাবর দিব না, কিছুই বলিব না। সেইরপ করিলে পর ৩ জাপ ক্ষঠকে অবলোকন করিয়া সকল গোরক্ষকেরা পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া নানা কথা কহিছে লাগিল। কেই বলিতেছে, যদি এই কুর্মা পড়ে, ভবে এ ছানেতেই পাক করিয়া খাই; কেই কহিছেছে, এই ছানেতেই দক্ষ করিয়া খাই; কেই বলিতেছে, গ্রেই কথা শুনিয়া ঐ কছেপ ক্লোধাবিই ইইয়া প্রতিক্রা তাক্ষণ করি। সেই কথা শুনিয়া ঐ কছেপ ক্লোধাবিই ইইয়া প্রতিক্রা করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া তাক্ষা করিয়া ক

অনতর দূত বক দেখানে আসিরা বলিল, হে মহারাজ, পুর্বেডেই আমি কহিরাজি, নিরন্তর দুর্গশোধন কর্ত্ব্য, তাহা ভোমরা কর নাই, সে অনবধানের এই ফল, অনুভূত হইতেছে, গৃধু প্রেরিত মেঘবর্ণ কাক দুগ দাহ করিয়াছে।

এ স্থানহটতে দুর্গ দাহ করিয়া যখন মেঘবর্ণ গেল, তখন প্রদর

হট্যা বিঅবণ কহিল, এট মেঘবণকে এট কপূর্বীপের রাজতেতে অভিষিক্ত কর, ভাষার পর মুখ্য মন্ত্রী গুণু কহিল, হে মহারাজ, টহা উপসুক্ত নয়, প্রশালাওর কিজুকক্তন; মহতের স্থানেতে নীচকে কদাচ নিযুক্ত করিবে না। পণ্ডিতের। তাহা কাহরাজেন, নীচ লোক প্রশাসিত পদ পাট্যা প্রভুকে নফী করিতে আকাজ্কা করে, উন্ধুব লোমুক্ত পাট্যা যেমন মুনিকে নফী করিতে গিয়াজিল।

চিত্রবর্ণ জিজাসিতেছে, এ কি প্রকার ?

মন্ত্রী কহিতেছে, গৌতম মহষির তপোবনে মহাতপানামা মূনি থা-কেন, দেখানে কাককতৃক নীয়মান এক মুখিকের শিশু দেই মুনকড়ক প্রাপ্ত হইল। তদনত্তর অভাব দয়ালু দেই মুনি চ্চুক উছি গানে।র কণার ভক্ষণদারা বিদ্ধিও হউল, ডাহার পর দেই মুঘিককে ঝাইবার নিমিতে এক বিড়াল পশ্চাৎ ধাবন করে, উন্দর তাহা নিরাক্ষণ করিয়া সেই মুনির কোলেতে প্রবেশ করিল। ভাহার পর মুনি কহিলেন, তে ম্বিক, তুমি মাজার হও; তদনওর দে শিয়াল কুলকুরছে দেখিয়। প্লায়। তৎপরে মুনি কহিলেন, কুককুরহইতে ভন পাও, সংএক ুমিও কুকক্র হও। সেই কুকক্র আয়ুহইতে ভয় পায়, এই হেহুক সেই মুনি কুককুরকে ব্যাসু কারলেন। ওদনন্তর মুনি সেই ব্যাসুকে, এ মৃষিক, এই প্রকার দেখেন। ভাহার পর সকল লোক সে মুনিকে ও তাামুকে দেখিয়া বলে, এই মুনি মৃষিককে তাামু করিয়াছেন। টিছ। শ্বনিয়া মে ব্যাঘু ভাবনা করিল, যাবংকাল এট মুনি থাকিবে, ভাবং আমার অপ্যশস্ত্র স্ক্রপাথ্যান ঘাইতে না; মুধিক ইহা থালো-চনা করিয়া সেই মুনিকে নফী করিবার নিমিতে গেল। ভাগার পর মেট মুনি তাহা জানিয়া পুনর্মার মৃষিক হও, টহা কহিয়া মৃষিক করি-লেন অভএব আমি বলি, নীচ লোক প্রশংসিত পদ পাইবা ইত্যাদি। অপরও ইহা অনারাস সাধ্য, এমন সোধে কবিও না; খন, উত্ম মধ্যম অধম অনেক মৎস্য ভক্ষণ করিয়া বক অতিশয় লোভচেতুক পশাৎ ককটের গুহণ প্রয়ক্ত মরিল।

চিত্রবর্ণ প্রশন করিতেছে, এ কি প্রকার?

মন্ত্রী কহিতেতে, মালব দেশেতে পদাগর্ভ নামে সরোবর আছে, হাচাতে শক্তির্চিত এক বৃদ্ধাক আপনাকে উবিগুরে নায়ে দেখাইয়া থাকে। তাহাকে কোন ককট দেখিল আর জিলানিল, ত্মি কেন এগানে আহার তাাল করিয়া রহিয়াছ? বক কহিল, আমার প্রাণ ধারণের কারণ মংসোরা, তাহাদিগকে কৈবেত্রা আদিয়া নট করিবে, এই বৃভাত আদি নগর সমীপে শুনিয়াছি, অতএব বর্তনের অভাব প্রযুক্ট আমার মরণ উপস্থিত, ইহা জানিয়া আহারেতে আনাদর করিয়াছি। উদনশ্বর মংসোরা আলোচনা করিল, এই কালেতে এই হাকি উপ-

কারকট বুনিতেভি, দেটতেতুক ঘাহা কর্তা ভাহা টহাকে ছিজাস। করা উচিত। বিজেরা ভাহা কহিয়াছেন, উপকারি শত্র সহিত সন্ধি কর্তা, অপকারি মিত্রের সহিত কর্তা নয়।

মংসারো কহিল, ওহে বক্, ইহাতে রক্ষার কি উপায় ? বক বলি তেছে, রক্ষার উপায় আছে, অন্য হুদ আশ্রেয় কর, দেখানে আমি এক ২ জন করিয়া লইব। মংসোরা কহিল, এই প্রকার হউক। তদনস্থর ঐ বক দেই মংসাদিগকে একে ২ লইয়া খায়। তদনস্থর কুকটি ভাহাকে কহিল, ওহে আমাকেও দেখানে লও। তৎপর উত্তম কুকীর মাংসাথাঁ বকও আদর করিয়া ভাহাকে লইয়া স্থলেতে রাখিল, কুলীর দেই স্থান মংসা কণ্টক ব্যাপ্ত দেখিয়া ভাবনা করিল, হায়, মন্ভাগ্য আমি নই হুলাম রে, হউক, সম্পুতি বলোপযুক্ত ব্যবহার করিব; ইহা বিবেচনা করিয়া কর্কট ভাহার প্রীবাকে ছেদন করিল, ভাহাতে দে বক পঞ্চ পাইল। এই জন্যে আমি বলি, উত্তম মধ্যম অনেক মীন ভক্ষণ করিয়া ইত্যাদি।

ভাছার পর চিত্রবর্ণ বলিল, ওছে মদ্রি, শুন, আমাকর্তৃক এই আলোচিত আছে, কপ্রদ্বীপের যত উত্তম দুব্য মেঘবর্ণ রাজকর্তৃক লব্ধ ছইরাছে সে সকল আমাদিগের লওয়া কর্ত্ব্য, সেই বন্ধতে বিদ্যাগিরিতে অতি-শ্য় সুখোতে আমাদিগের থাকা ছইবে।

দূরদশী হাদিয়া বলিল, হে ভূপাল, অনুপস্থিত চিস্তা করিয়া দে লোক হ্ষিত হয়, সে অস্থানকে পায় যেমন ভগুভাঙ বুলাণ।

ভূপতি কহিলেন, এ কি রূপ ?

মন্ত্রী কহিতেছে, দেবীকোটর স\জক নগরেতে দেবশর্মা নামে বিপ্রথাকেন, তিনি মহাবিষ্ব সংক্রান্তিতে শকুপুরিত এক শরাব পাইলেন, তাহা লইয়া তিনি রৌদুতে ব্যাকুল হইয়া কুদ্ধকারের ভাঙপূর্ণ গৃহের এক প্রদেশেতে শরন করিলেন। তাহার শকুর রক্ষার নিমিত্রে হস্তেতে এক দঙ লইয়া চিন্তা করিলেন, যদি আমি এই শকুশরাবকে বিক্রয় করিয়া দশ কড়া কড়ি পাই, ভবে এই স্থানেতেই সেই কড়িতে ঘট শরাব প্রভৃতি কিনিয়া অনেক বারেতে বৃদ্ধি প্রাপ্ত দেই ধনছারা বারস্বার প্রবাক বন্ত্রাদিক্রয় করিয়া লক্ষ্যংথাকে দুবিণ করিয়া চারি বিবাহ করিব। তদনবর্ধ সেই সপতনীদিগের মধ্যে যে রূপযোবনবিশিন্টা তাহাতে অধিকানুরাগ প্রকাশ করিব। সপতনীরা যথন বিবাদ করিবে, তথন ক্রোধাবিন্ট হইয়া আমি তাহাদিগকে লগুড়েতে করিয়া তাড়ন করিব। ইহা কহিয়া দওক্ষেপ করিলেন; তাহাতে শকুশ্রাব চুণ হইল, অনেক ঘটও ভাঙ্গিল। তৎপত্রে সেই শক্ষেতে কুদ্ধকার আদিয়া ভাঁড় সকল সেই রূপ দেখিয়া বুল্লণকে তিরস্কার করিল, বাহির করিয়াও দিল। এছদথে আমি বলি অনুপর্ষিণ চিন্তা করিয়া ইচাদি।

ভদনত্তর রাজা গৃধুকে বলিলেন, হে ভাত, যাহা কর্ত্রা ভাহা উপ-দেশ করে।

পূরু বলিতেছে, শুন, হে মহারাজ, আমাদিগের গুদ্ধেতে কি দুগ ভগু উপারেতে তাহা হইরাছে তাহা নয়, কিন্তু,তোমার প্রতাপ ও উপায়েতে। রাজা কহিলেন, তোমাদিগের উপায়েতে তাহা নিম্পন্ন হইযাছে।

গুধ বলিতেতে, যদি আমার প্রামশ করেন, তবে নিজনেশে গমন করুন, নতুবা ব্যাকাল উপস্থিত হউলে পুনশ্চ সংগ্রুম হউলে বিদেশালাল আমাদিগারে নিজ দেশে গমনও দুলভ হউবে। সুগ ও শোভার নিমিতে দক্তি করিয়া গমন করুন। দুগ ভগ্ন হউল, যশ প্রাপ্ত হউলেন। আমার এউ মত। আপর ভুলা লোকেরও সহিত সালি করিবে, যেতে চুক সংগ্রামেতে জয় সন্দিঞাই, ভুলা প্রাক্রম সুদ্দ উপসুদ্দ কি প্রস্পার নাই হয় নাই ?

নৃপতি কহিলেন, এ কি প্রকার ∤

সচিব কহিতেছে, পূর্বেতে সুন্দোপসুন্দ নামা অতি বড় বৈত্য দৃই জন তিভুবনাভিলাষে অতাও ক্লেশেতে বহুতৰ কাল মহাদেবের আরাধনা করিল। অনন্তর তিনি প্রদল্প হইয়া কহিলেন, ভোমরা বর প্রাথনা কর, অনন্তর সেই দুই জনের অস্তংকরণে অধিষ্ঠাতী বর্ষতী অন্য প্রকার বরেচ্ছু সেই দুই জনকে এই অন্য কথা বলাইলেন যদি আমাদিগেছে আ পনি সন্তুষ্ট হইয়াছেন, তবে আপনকার পতনী গৌরীকে দিউন। তদনম্বর ভগবান অনুদ্ধ হইয়া বরদানে আনবশ্যকতৰ হেতুক বিচারমূখ সুন্দোপ-সুক্লকে উমার ন্যায় এক জ্ঞীকে নির্মাণ করিয়া দিলেন। ভাহার পর অজ্ঞানান্ধ সুন্দোপসুন্দ অন্তংকরণের উৎসাহেতে পার্স্কভীভূল্য দৌন্দর্যোতে ল্ব্র হইয়া, আমার এ, এই প্রদপ্র বিবাদ করিয়া কোন মধাশ ব্যক্তিকে জিজাদা করি, এই বুদ্ধি করিলে পরে দেট ভগবান বৃদ্ধ বু।ক্ষণরূপ হইয়। আ।সিয়াসেই স্থানে উপনীত হইলেন। অনওর ভাষারী বুলাকাণকে জিজাসিল, আমরা ইহাকে আপন বলেতে পাইয়াছি, আমা-দের দুই অসনের মধ্যে কাহার এ হউবে? ব্রাহ্মণ বলিতেছেন, জান-শুষ্ঠ ব্ৰাহ্মণ পূজনীয়, বলবান ক্ষতিয় পূজা, ধন ধান্যাধিক বৈশা পূজা, বাহ্মণদোবাতে শুদু মানা, সেই নিমিতে ভোমরা ক্ষতির ধর্ম-শাল, তোমাদের মুদ্ধই নিয়ম। ইহা কথিত হউলে পরে উনি বিল-কণ কহিয়াছেন, ইহা কহিয়া দুই জনেতেই এককালেই প্রদপ্র মারণদারা বিনাশপ্রাপ্ত হটল। অতএব আমি বলি, খুলা লোকেরও महिङ मश्चिकविद्य है छा। मि।

্রাজা ক্ছিলেন, পূর্বেডেই কেন ভোমরা বলিলানা?

মন্ত্রী বলিতেছে, আপুনি কি আমার বাকোর শেব পুর্যাত্তন । আমার সমান্তিতে উত্তম গুণশালী ঐ হিরণাগর্ভের সহিত সংগ্রাম কর-পোপযুক্ত নয়। চক্রতাক বলিভেছে, ওছে দুত্মর্পত্ত যাও, গিয়া পুনর্পার আসিও।

কি পিং কাল পরে চক্রকাক হির্ণাগভকে কহিল, হে মহারাজ, যদাপি ভাহার মহামন্ত্রী গৃপু মেল করিবার প্রদান করিয়াছে, তথাপি জয় হইয়াছে এই অহল্পার প্রদুক্ত দে রাজা অবজা দেন না করে, দেই হেতুক এই প্রকার করেন। দিং হল্পীপের মহাবল নামে দারসরাজ আমাদের দ্বা জন্মীপেতে গিয়া চিত্রবর্গের পশ্চাদাগে ক্রোধ জন্মান; যেহেতুক ব্যাক্ল ব্যক্তি অহার ব্যাক্ল হইয়া ব্যাক্লের মহিত মিলন করে।

রাজা কললিনে, এইকপে হউক, ইংহা কহিয়া বিচিত্র নাম বেককে জোহাও গুপা লাপি দিয়া দিৎহলহাপি পোঠাইলানে।

আনস্র চর আসিয়া বলিল,তে ভূপাল, দে স্থানের প্রস্তাব শুনুন, দেখানে গুপু এই প্রকার বলিল, হে নুপতে, মেঘবর্ণ দে স্থানে বস্তকাল বস্কি ক্রিয়াভে, সে জানে হির্ণাগভ সংস্কর প্রশালী বটে কি না ?

ভদনস্ব রাজা ভাস্থান করিয়া জিজাদা করিলেন, ওহে কাক.৺ হির্ণাগভারাজা কিরুপি? আর চক্রাক মনীই বা কীকৃশ≀

কাক বলিল, হে মহারাজ, রাজা হির্ণ্যপর্ভ যুধিষ্ঠির তুল্য মহাশ্য. ও চক্রবাকের নায় অমাত্য কুলুপি দৃষ্ট নয়।

রাজা কহিলেন, যদি এতাদুশ, তবে কি প্রকার ইনি বঞ্চিত ছইলেন ।
মেঘবর্গ হাস্য করিয়া কহিল, হে মহারাজ, অনুন। সে সচিব প্রথম
দশনেতে জানিয়াছিল, কিন্তু ঐ রাজা মহাশ্য়, সেই হেছুক আমি বঞ্চা
করিয়াছি। প্রজেরা তাহা কহিয়াছেন, আয়ুলুলোতে যে লোক খলকে
সভাবাদী করিয়া জানে, সে জন সেই প্রকার বঞ্জিত হয়, যেমন ছাগলের
নিমিতে তিন জন পুর্কর্ক এক বুজিণ বঞ্জিত হইল।

রাজা কৃহিলেন, এ কি প্রকার?

মেঘবর্গ কহিছেছে, গৌহম মুনির কাননেতে এক আর্সুষজ বুলিল থাকেন, উনি যজের নিমিতে গুমাস্তর্হউতে ছাগল কর করিয়া ক্ষেপ্ত লাইয়া যাইতেছিলেন, ইহা উন জন ধূর্ত লোক দেখিল। তাহার পর সেই শাঠেরা, যদি এই ছাগল কোন উপারের দারা লইতে পারি, তবে বুদ্ধির উৎকর্ম হয়, ইহা পরামশ করিয়া উন বৃক্ষের তলেতে এক কোশ অন্তরেতে সেই দিজের আগমন প্রতীক্ষা করিয়া পথের মধ্যে থাকিল। দেখানে যাইতেছিল যে বুলিল, তাহাকে এক বঞ্চ কহিল, হে বুলিল, কেন ক্কেকুরেকে ক্ষেত্তে করিয়া বহিতেছ? ভূদেব কহিলেন, এ কুককুর নয়, কিন্তু যজীয় ছাগ। অনস্থর তাহার পর ছিল যে আপর শাঠ, সেও ঐ প্রকার কহিল। তাহা শ্বীয়া দিল ছাগলকে ভূমিতে নামাইয়া ভূরো, অবলোকন করিয়া পুনর্বার ক্ষেত্র করিয়া চঞ্জাতির হইয়া চলিল। যেহেতুক শাঠ বাকেচতে সুবোধ লোকেরও বুদ্ধি চঞ্জা হয়, যেমন চিত্রক উন ক্ষন কর্তৃক প্রাপ্তিরিশাদ হইয়া মরিল।

রাজা কতিলেন, উহা কি রূপ ?

সে কহিছেছে, এক অর্ণোং মনেংকট নামে সিংছ থাকে, হাছার্লাস তিন জন, কাক ও সাসুও পুলাল। অন্নর গুলার ভূমণ করিছেই এক উট্টুকে দেখিরা জ্ঞাসল, মুদ্ধি কেন সাথে গ্রাম করিষা আইলাই যে নিজ ব্রাও কাইলা। তদন্তর উলাও লইলা সিংহকে সমর্পণ করিল, সে অভ্যা বাক্য দিয়া হিএকণ এই নাম করের। হাছাকে র্কিলা। হাছার পর কোন দিন শ্রামারার প্রত্তা প্রাক্ত থাছার। সিংহকে আহার না পাইলা সাক্র হইল। হাছার পর ভাছারা আলোহনা করিল, যে প্রাবে চহক্তিকই রাজা মারেন ভাছার অর্ক ভিছার। করে, এ কাইকভাছেন হৈ প্রথাক্ষ ইয়ামারেন হাছা করে; এ কাইকভাছিনতে কি প্রয়োজন ই স্যামু থিলি, রাজা অভ্যা

কাক বলিওছে, এ সম্পেতে অনালারেতে এনফা প্রান্ত পাপত করিবেন।
সেতেতুক ক্রাতুর লোক আপন স্থা ও প্রকেত আল করে, বৃদ্ধিক চ স্পিনী নিজ অভ্যকে ভক্তন করে, ফ্র ত রাজি কেন্দ্রপাপ না করে ই কেননা আহার প্রস্তুল নিটে লোক নিন্দ্র হয়। ইহা ভাবনা করিয়া সকলে সিংহের নিকটে গেল।

সিংহ বলিল, ভৃষণের নিনিতে কিল পাইযাল? ভাষারা বলিল, প্রামেতেও কিজিং≒ পাই নাই।

দিছে কৃতিল, মৃহপ্রতি আমানের প্রান্ধাবনের উপায় কি?

কাক হলিতেছে, নিজ য়ত ভোজন পরি আগ প্রণ্ড এ সধানাশ উপ্রিত।

সিৎহ কটিল, এখানে কোনু আচার আপনার অর্থান?

বামদ কণেতে কভিতেছে, চিত্রক্ণ।

শিংহ হস্ত্ৰহোৱ হারা ভূমিপাশ করিয়া দুই কর্ণ দ্পাশ করিছেছে, এবং কহিতেছে, আমরা ইহাকে এতা বাক্য দিনা সাংখ্যাছি, তবে কি মতে এত দুশ সমুধ হল শিক্ষাভিলামকানক অধ্যাব যালের মে ফল, সে সমুদ্ধ কল শ্বণাগর ব্যক্তিকে রুক্ষা কার্লে পায়।

কাক সলিভেছে, প্রভৃ আপেনি ইচাকে নটাকাবদেন না, কিও গামবা সেই প্রকার করিস, যে প্রকারে আপনিইও নিজ শ্রার দান খাকার করে। সিংহ ভাচা খনিয়া চুব করিয়া গ্রিকল।

আনন্ত্র অবকাশক্রমেতে কাক কপট করিয়া সকলকে লইয়া সিং-হের সামনিতে গোল। ভাহার পর কাক কহিল, হে মহারাজ, মজেন-হেও খালাসুরা পাইলাম না, সম্ভাৱ উপসামেতে প্রাভৃ কৃশ হইয়া-ছেন, অহএব সম্পুতি আমার মাখন ভোজন কঞ্ন; স্থানিকৃতি অমাহা লোক পরিভাল হইয়া ঐথন্যালালা হইলেও বাচে না। নিখছ কহিল, জাবন পরিভাগও ভাল, তথাপে এইজব কর্মেতে প্রবৃত্তি ভাল নর। শুগালেও ভালা কহিল। তদন্ত্র সিংহ ক্রিল, এমন না হউক। ভাহার পর বাালু কহিল, আমার শরীবেতে প্রস্থুবঁচুন। সিংহ বলিল, কদাচ টহা উপযুক্ত নয়। চিত্রকণিও জাভপ্রহায় হট্যা যে প্রকার আপনাকে কহিলেন। ভাহার কথাতে যেট ব্যায়ু কুফিবিদারণ কবি য়া উহাকে নফট ক্রিলে সকলে ভাহাকে পাটল। এট নিমিতে আর্ন বলি, পল বাকোতে উত্যদেরও বুদ্ধি চঞ্লা হয়।

ভদনস্থর ত্থীর প্রের বাক্য শ্রনিয়া আপন বুদ্ধিভূম নিশ্যুকরিন। ভাগলকে ভাগে করিয়া বুলিগ আন করিয়া মরে গেলেন। ধূলের: এ ভাগলকে সউয়া ভক্ষণ করিল। অভএব আমি বলি আল্লুলোও যেলোক উভাদি।

রাজা বলিলেন, মেঘবর্ণ, ভূমি কি প্রকারে বিপক্ষের মধ্যে চির্কাল বাস করিয়াভিলা? কি প্রকারে বা ভাষাদিগের বিনয় করিয়াভিলা?

মেঘবণ বলিল, মহারাজ, স্থামির কার্যোর নিমিতে আর আপনাব কার্যোর নিমিতে লোক কি না করে? সুনোধ লোক নিজ কার্যোর নিমিতে শবুকে ফল্ডদেশেতে করিয়া বহন করে, গে কপে বৃদ্ধ সপ্মভূকদিগকে নফী করিল।

রাজ: কহিলেন, এ কি প্রকার ?

(भगवर्ग कहिएउएछ, জोएगानात्मएड मन्तविष मास्य এक मर्भ शास्त्र, নে অত্যন্ত বাদ্ধকা বহা প্রযুক্ত আহার অবেষণ করিতেও অসমর্থ পুক্ত রিণীর তীরে পড়িযা থাকে: তাহার পর দূবহুটতে কোন মণুক তাহা-কে দেখিয়া জিলাসা করিল, কেন তুমি ভোজনের তক্ত কর না? ভজুর কহিল, ওছে মিত্র, মন্দভাগ্য আমার জিজাসাতে কি প্রয়োজন ? ওন-নম্বর সেই ভেক কুণুহলী চইয়া ইছা কহিল, গুমি অবশ্য কহ। ভুজন্ন বলিল, হে ভুরু, বুলাপরনিবাসি গ্রোতিয় কৌভিন্য বুলিচের বিংশটি বষশয়স্ক অশেষ ধনালকৃত পুলকে দুকৈব প্ৰযুক্ত খলস্ভাৰতেতুক আম দংশন করিয়াছি; সেই দুশীল নামে পুলকে মৃত দেখিয়া কৌভিনা মুদ্ছিত হইয়া মৃতিকাতে পড়গাড় দিতেছেন। তাহার পর বুরূপ্রবাসি সমস্ত বন্ধু লোকের) সেধানে আসিয়া বসিল। তাহাতে কাপেল নামে चाउक रलिएलन, जारत कोधिना, उहें मूर्य, अहें निमित्त रतानन करि-ভেছিদ। অন, সমুদেনতে নানা দেশস্থ দুই কাভেতে যেমন মিলন হয়, মিলিয়া অন্যা২ নেশে যায়, দেই প্রকার প্রাণিদের স্মার্ম। লোক পুত্রজাদি যত সম্বন্ধকে মনের প্রিয় করে, সেই সকল সম্বন্ধকে পুতা-দির নাশ হ**উলে শোক্র**প শঙ্গু করিয়া পুঁতিয়া রাথে। অতএব সং সার বিবেচনা কর, এই শোক অজ্ঞানের কার্য্য।

ভদনত্ব ভাছার বাকা শ্রনিয়া সুপ্রোপিছের ন্যায় কৌভিনা উটির। বলিলেন, এই নিমিত্তে এখন সংসার্রপ ন্রকে বাস করা বৃথা, অর্থাতে গ্রম করিব। কপেল পুনকার কবিলেন, বাংগ লোকদের জাননেতেও দোষ প্রভব হয়, রোচেতেও পঞ্চ ইন্দ্রিয়ের যে নমন করা সেই ওপস্যা। মে ব্যক্তি আনিন্দিত কার্যোতে প্রবৃত্ত হয় সেই কৈরাগী, লোকের গৃহই হলোবন, আছা নদীষ্কপ, ইন্দ্রোন্পুত পুণাইথিষ্কপ, শাল ভট্ষকপ, দয়া ভর্দ্রকপ। এইন্দ্রেপ নদীতে অভিষেক কর, অভংগরণ কেবল জালেতে স্কেহেয়না।

কৌশিন্য সলিতেছেন, এই স্টে >। ভ্ৰন্থর গেই শোকাই বুজিপ আমাকে এই অভিশাপ করিলেন, আজে এবার গুমি তেকনের বাইন চইবা। ইচা কাহরা মেই কৌশিন্য কশিলের উন্নেশকর অস্তেহে নুট্শোকাগ্নি ইইরা শাস্ত্রনুষারে মন্ত্র্যাস গুছু করিলেন। অত্তর ভূনে-বের অভিশাপ প্রস্কু মণ্ডুকনিগকে সহিবাব নিমিত্তে এ থানে আছে। ভাহার পর সেই ভেক গিলা জনপদ নামে মণ্ডুরাজের অগ্নেত ভাহা কহিল। তদনন্ত্র ঐ মণ্ডুকনাথ আমিরা সেই মর্পের প্রেটিতে আরোহণ করিল, ঐ স্পতি ভাহাকে প্রেটতে ক্রিয়া বিত্র গাত্তে ভূমণ করিছে লাগিল। প্রনিস্কে ভাহাতে চলিতে অসক্ত নে,খ্যা মণ্ডুক্ষ,মা বলিল, অন্য কেন ভূমি গ্রান অসম্য

মর্প বলিতেছে, হে মহারাল, অনাহার প্রাকৃত অসমণ হট্যাছি।

ভেকরাজ করিলেন, আমার আজাতে মণ্ট ভোজন করে। তদনপ্র আমি বড় আনুগুত পাইলাম, ইতা কছিলা অংশপাস ভেকদিগকে থাইল। ভাতার প্র সে নির্মণুক জলাশার দেখিলা মণ্ট রাজাকেও খাইল। সভ-এব আমি বলি, দুবোপ লোক নিজ কার্যোর নিনিতি শহুকেও ফল্ডেড করিয়া ইতাদি।

হে মহারাজ, এখন ইতিহাস কথন যাউট; ঐ হিবণ্ডতে রাজা শক প্রকারে সক্ষেত্র, এই অংমার জানে।

রাজা বলিলেন, ডোমার এ প্রাম্শ কি? যেতেত্ত আম্রা উতাকে জয় করিয়াভি, মেট তেতুক যকাপি আমানের অনুগ্রুত্তীয়া বসতি করে, ডবে আকুক, নতুবা সুদ্ধ ক্ষক।

ইতোমধ্যে জন্মনিতইতে আদিয়া শুরু কহিল, তে বড়োপ্রাছ, যিং-হল্মীপের মার্ম রাজা সংপুতি জন্মীপকে আক্রমন করিয়া আছে।

রাজা ব্যস্ত ছইয়া বলিতেটে, কি, কি ?

শ্বক পুনর্বার ভাষা কণিডেছে।

পূরু অন্তঃকরণে কহিতেভেন, সাপুরে চক্রনকৈ অমাতা সক্সিলার্থ। নূপতি সরোষ হটরা কহিলেন, এট হির্ণাগভ থাকুক, সম্পুতি সংট্রা উহাকেট মূলের সহিও উন্ধলন করি।

দ্রদশী হাস্য করিয়া কবিলেন, রাজা এক কালেতে অনেক বিপক্ষের শহিত সংগুাম করিবে না; কেননা বলবান সপ ও বছতর কীটকর্ক আদশ্য নাট হয়; হে ভূপাল, মিলন স্থিতিরকে কি গমন আছে? গেছেত্থ আমানের পশ্চাং ঐ হির্ণাগর্ভ ক্রোধ করিবে। অপর যে বালি যথার্থ নিরূপণ না করিয়া কোপেরই দশীভূত হয়, যে লোক ঐ রূপ উত্তপ হয়, যেমন মুখিবালন নকুল্ডইতে বাংক্ল চইয়াছিল।

রাজা কহিলেন, এ কি প্রকার ?

मृतननी किटिएएज, उक्ज गमीट माधन मामा अक दान्तन थारिकन, ভাহার বাহ্মনী শিশ্বন্থানের বহুলের কারণ স্থামিকে রাখিয়া স্থান করিছে। গেলেন। অন্তর সে^ড ব্রাহ্মণ রাজার পাসংগ্রাহ্ম ভোজন কবিশার নিমিতে আছেত হউলেন। ডালা খনিযা সুজেও দারিদ্যু রভাব প্রযুক্ত ভাবনা করিলেন, যদি শাঘুনা ঘটে ভবে খন্য কেহ শুনিয়া আহ্নায় দুব্য গুহণ করিবে, এ ধানে বালকের রক্ষক নাই, এই নিমিতে কি করি? ঘাউক, এখন নকুলকে পুলঙ্ল। করিয়া সহকাল পালন করিয়াছি ; মাহএব শিশু-র্ফ্রণেতে স্থাপন কবিয়া যাই: ভাছা কবিয়া গেলেন ৷ এদনসুর এক কাল-মপ বালকের নিকটে আটেলে মেই নকুল ভাহাকে দেখিয়া নফ করিল। ও কোপেতে খাওঁ২ করিয়ে, খাইল। ভাষার প্র রক্তাকুম্খাংরণ ঐ নকল বুলিলণকে আসিতে কেপিয়া অব্যতে সমীপে গিয়া তাহার পদৰ্যেতে লুজন করিতে লাগিল ; পরে ব্রাহ্মণ ভাষাকে সে প্রকার দেখিয়া,এই বেদি বালককে খাইয়াজে, ইহা নশুর কার্য়া হাছাকে নফী ক্রিল। হাছার পর যথন নিকটে গিয়া পুলকে দেখিতেছেন, তথন শিশুকে ্যুক দেখিলেন, সপকে মৃত দেখিলেন। ওদনমূব উপকারক নকুলকে অং-লোকন ক্রিয়া অভ্যক্রণে ভাসনা ক্রিয়া দুঃ খত ১ইয়া অতিশয় বিষয়ত পাইলেন। এই নিমিতে আমি বলি, যে ব্যক্তি মথার্থ নিরূপণ না করিমা কোপেরই বশীভূত হয় ইত্যাদি।

রাজা কহিলেন, হে মন্ত্রি, হোমার এই স্থির ?

অমাত্য বলিতেছে, এই প্রকারই। এইছেতুক হে ভূপাল, যদি এখন আমার কথা মান, তবে মেল করিয়া চল।

রাজা কহালৈনে, কি প্রকার একপে সন্তুসহয়?

সচিব বলিতেছে, হে নৃপতে, ঝটিউ হইবে; যেহেতুক দুঐ বাজি মৃদ্ধাণ্ডের ন্যায় অনায়াদেতে ভেলা হয়, আর দুংখেতে সঞ্জয় হয়; সালু লোক ধ্র্ণপাত্রের ন্যায় আয়াদেতে ভেলা হয়, অর্যায় মদ্দের হয়। বিশেষতঃ এই রাজাধর্মিষ্ঠ আরু মন্ত্রী সর্বজ্ঞ।

রাজা কহিলেন, উত্তর প্রস্তাহর বার্থ, যাহা অভিলয়িত তাতা কর।
এই মন্ত্রণা করিয়া মহামন্ত্রী পূবু দেখানে যাহা করণোপসূক্ত হয়
তাহা করিব, ইহা কহিয়া দুগমধ্যে গেলেন। তাহার পর প্রণিধি বক আদিয়া হিরণাগর্ভ রাজাকে নিবেদন করিল, হে ভূপাল, দদ্ধি করিবার কারণ মহামন্ত্রী গুবু আমাদের দ্রিধানে আদিয়াছে। রাজহংস বলিতেতেন, পুনর্কার সন্ধান করিছে কে আসিয়াতে।
সর্বাজ হাস্য কবিয়া কহিলেন, হে মহারাজ, এ শক্ষাস্পদ নহে; ভ্রেক কনি দূরদশী মহাশ্য সেইছেণ্ড হে মহারাজ, সাম্পান্স ব ভাচার সন্মানের নিমিত্রে রহন উপহার প্রভৃতি সাম্থ্য প্রশৃত করেন।

ভাহা করিলে পরে চক্রবাক গুপুসন্ধিশনে গিয়া সন্ধানপুসাক গড়ের ভারহউতে আনিয়া রাজার সহিত সাক্ষাং ক্রাইলেন, পরে দ্রাসনে গুপু বসিলেন।

্চক্রবাক বলিলা, এসমস্কুই ভোমাদের ভাষিত, আপন ইওংডে এই রাজ্য উপভোগ কর।

রাজহৎস বলিতেছেন, এই প্রকারই বটে।

দুসদশী কহিতেছে, ইহা এই বটে, কিন্তু সম্পুতি অনেক প্রপঞ্চাক্য প্রযোজন নাই। সেই নিমিত্তে মেল করিয়া যাও, কেননা চিত্রবণ রাজা মহাবল প্রাক্তম।

চিক্রাক বলবিতেভা, যে কুপ মিলন কওঁবা ভাষা কই। কাষাগংশ বলবিতেভান, সক্ষি কেড প্রকার হয় ?

গুরু কহিতেছেন, ৫হি শুনুন। বলবান কর্ত্ত অভিনুক রাজা প্রতীকা-রামনে অসমর্থ হউলে বিপদ্গুধ হউয়া কাল কেপণ করিয়া সন্ধি করিছে চেফী করে। কপাল ও উপহার ও মধান ও মন্ত ও উপন্যাম ও পুতীকার ९ मर्रमात ६ भूक्षायत ९ अमृत्वेनत ९ जामिके ९ आशामिके ९ उँभनुष ও পরিক্রেয় ও উচ্ছেল ও প্রভবণ ও ঋদ্বোপনের, এই যোল পুকার সন্ধি হয়। কেবল সমহাতে যে মিলন হয় হাহাকে কপাল সন্ধি করিয়া জানিবা। ধনাদিঝারা যে মেল হয় ভাছাকে উপহার করিয়া কলি। দাসী কেশ্যাদিনান-ছারা যে মেল দে সম্থান সন্ধি। মিত্রতাপূঠাক যে সন্ধিবারা যাবজনীবনপ্যায উভয়েরি এক বিষয় এক প্রয়ে'জন,সম্পতিতেই বা বিপতিতেই বা কোনহ কারণ প্রযুক্ত ভিন্ন হয় না, এই সঙ্গতমন্ত্রি ভাহা উত্মভাতে যুক সুধর্ণের ন্যায়; অত্তর সন্ধিত লোকেবা ভাছাকে কঞ্নেসন্ধি করিয়া বলেন। ধন ও নিজকার্য্য নিম্পতিকে উদ্দেশ করিয়া যে মেল করে, ভালকে উপন্যাস-কুশলের। উপন্যাস করিয়া বলেন। আমি পুস্তে ইহার উপকার করিয়াতি আমারো এ লোক করিতে, এই মেলকে প্রতীকার করিয়া বলি। যেখানে এক কাঘাকে উদ্দেশ করিয়া ভাতার প্রমাণের সহিত গমন করে, ভাতাকে শংযোগ কবিয়া বলি। ভোমার ও আমার সহিত সেনাপতিরারা আমার কার্যা নিক্ষার কর, ইচা কচিয়া ঘাচাতে পণ করে, দেই দন্ধি পুরুষাথর সন্ধিনামক হয়। কেবল ভোমার কর্তৃক আমার এই অর্থ স্পাধ্য হইবে, এরূপ যে ছলে শত্রু পণ করে, ডাঙাকে অদৃষ্ট পুরুষ করিয়া বঙ্গেন। শৰুকর্ত্ক তাক্ত হটয়৷ ভূমোক দেশ পণেতে যে মেল হয় ভাহাকে আৰিষ্ট সন্ধি বলি। আপন দৈনোর সহিত বিপক্ষের দকে যে মেল তাহারে আয়াদিট করিয়া বলি। জীবনরক্ষার কারণ সর্পরদানেতে যে পান করে তাহাকে উপপুহ করিয়া বলি। অবশিষ্ট প্রকৃতি রক্ষার নিতে কোষস্থ কিয়ং পরিমিত স্বণক্রেয়ার দানবারা যে মেল, তাহাকে পরিজ্য করিয়া বলি। উত্য ভূমিদান প্রসূক্ত যে সন্ধি হয় তাহাকে উজ্জ্ব করিয়া বলি। ভূম্যুৎপদ্ম ভূরি শাস্যদানবারা যে মেল হয় তাহার নাম পর্ভুষণ। যে স্থলে ভূম্যুৎপদ্ম শাস্ত প্রত্যেকেতে বহন করিয়া নেয়, সন্ধিপঞ্তেরা তাহাকে ক্ষোপনেয় করিয়া বলেন।

চক্রকাক বলিল, পর্পকনীতে মাতৃত্ল্য, অন্য ধনেতে ডেলার নায়, মঞ্চল প্রাণিতে আয়ুসদৃশ বে দেখে দেই পণ্ডি।

রাজা কহিলেন, তোমরা দড়লোক আরু জানী এই হেতুক এখন আ মাদিগের যাহা কর্ব্য ভাহা কহ!

অমাত্য বলিতেতে, আঃ এ কি কহিছে ই মৃণ্ডুজার ন্যার সংসারকে ক্ষণবিধ্বংসি জানিরা ধর্মের কারণ ও সুখের নিমিতে সাধু লোকদের সহিত সদ করিবে। সেই নিমিতে আমার অভিমতেতে তাহাই কর। সেচেছুক সহসু অখ্যেধ যজ আব সতা বাকা, এই দুই তুলাতে পৃষ্ঠ ইয়াতে, তাহাতে সহসু অখ্যেধহুইতে সতাই অভিরিক্ত হইলেন, এই হেছুক সতা করণাভিধান দিবা পূধ্যক এই দুই রাজার সুবর্গমঙাক স্থিতিক

সর্বজ্ঞ বলিলেন, এই হউক। তদনত্ব রাজা রাজহংস কর্তৃকবসনাত-রংগাপচার্থারা ঐ দূরদশী অমাতা স্মানিত হট্রা প্রফুলাওংকরণ হট্রা চক্রবাককে লট্রা মযুর রাজের স্মীপে গেলেন। সেখানে রাজাপিরাজ জ্ঞিচিত্রবর্গ গৃধুবাকাপ্রমুক্ত অনেক দান স্মান পূর্বক স্বভ্জকে স্থায়া করিয়া সেই প্রকার দক্ষি স্থাকার করিয়া রাজহংস সন্ধিবানে প্রের্থ করিবোন।

দুর্দশী কহিতেছে, হে মহারাজাধিরাজ, এখন আমাদের অভিলৱিড সম্পূর্ণ হউল, নিজ স্থান বিদ্যাপর্কতেউ ফিরিয়া চল। আনগুর স্কলে আপেন স্থানে গিয়া মনোবাঞ্ছিত ফল পাউলেন।

বিজুশর্মা কহিলেন, আরু কি কহিব ? তাহা কহ।

রাজনদনেরা কহিলেন, তোমার অনুগুহেতে রাজবাবহার অবগঙ হইলাম, আমরা সুখী হইলাম।

FROM THE LIGHT OF KNOWLEDGE.

क्छानम्भिका।

I .- Attention necessary to success.

মনোযোগদারা কার্যাদিদি।

মনুষ্যাদিলের দকল কাষ্যে মনঃসংযোগ করা অবশ্য কত্তর। বিশেষতঃ विम्याविष्ठा तालकनिर्वत् मञ्ज भागम मः रंगांशी व छन। स्थरव मन तथ्त চঞ্চলচিত্ত নানা বিষয় গৃহ হয়েন, কিন্দু এ মনঃসংযোগ ব্যভিরেকে কোন বিষয় বোধ হয় না; ভাতএব মনঃসংযোগ করা উচিত। ভাবেরা দেশ, কারণ ব্যতিরেকে কদাত কাম্যের উৎপতি হয় না। বেমত কারণ সমহ সমবায়ে ও একতর কারণাভাবে কদ হয় না, সেই প্রকার জানের প্রতি প্রধান কারণ যে মনঃসংযোগ, ৬বাতিরেকে কলাচ ছউতে পারে না। অভএব শাস্ত্রে দণিত আছে,মে প্রথমতঃ চিত্তকে এক বিষয়ে রাখিবে, তদ্বারা তদনস্ব চিতের নৈমাল। হয়, পরে জানোদয়। সেমত দপণস্বারা মুপপ্রতিবিশ্বদশন শ্বভাব্দিদ্ধ, কিন্তু মলিন চইলে দৃষ্ট হয় না; পুনর্কার দপ্ণ মলনাশক দুব্যৱাহা মাজ্জন ক্রিপে উত্তমক্পে দৃষ্ট হয়। আবেুগ দেখা, উত্তম দ্রদ্ক্তিনুক পুরুষ সমূথে যদি বৃহৎ> সম্ব্যাকে, কিন্দু হন্ধ-फाट विलक्षण भनःमर्याण ना भारक, उरत थे टाकित उदम मुखि हरें লেও ঐ বৃহৎ২ রুদ্ধ যেমন ভাহরে দৃঞ্জিলাচর হয় না, সেট প্রকার মনোঘোগ ব্যতিরেকে বোধাদি হয় না। ইহার এক উদাহরণ সুমপ্ররক বংশি প্রভৃতি শব্দে মগু যে মৃগ তাতার স্থুপরিত ব্যাপকে দশন ৪ তন্ধনুষ্ঠকারাদি অবণ ইত্যাদি কিছ ছয় না।

এবং মন:সংযোগনারা সকল বিষয় প্রকাশ পাইলেও মনুসানিগের উত্তম বিষয়ে মন:সংযোগ করা কত্তবা; কিন্তু বিদ্যাহইতে আর উত্তম বিষয় নাই। বিদ্যার উত্তমতা বহুং গুলে বিষয় আছে, আছে- এব বিদ্যোপার্জন বিষয়ে সহত মন:সংযোগ কর্চ, কারণ তদ্মারা ষথার্থ তাৎপ্র্যা বোধ হইলে আদৃষ্ট পদার্থ সংদশন পাইবা। আন্ত্যা

দৃষ্ট পদার্থের কি কহিব? দেখ, দৃষ্ট পদার্থ প্রায় মুট্রোও দেখিছে পায়। আর পাটকালীন তরিবরে মনঃসংযোগ করিলে অতিশীলু অভ্যান ও চিরকাল করেল অভ্যান সদিও হয়, তথাপি করেল থাকে না। উলার উদাহরণ, এক বিষয়ে মনঃসংযোগ জনের নাম গুহণ পুর্কাক কেছ সংঘাধন করিলে প্রায় অসেণাথেষয়ীভূত হয় না; যদ্যপি প্রবণগোচর হয়, তবে বিশেষরতেপ বোধ হয় না, যে আমাকে সংঘাধন করিতেছেন।

বিদ্যাভ্যাদ ও অন্যং বুদ্ধিদাধ্য কর্ম কর্ণের এমহন্তান যে স্থানে মনোহারক দুব্যাদি ও দুগদ্ধি ও দুশোভন সৌধুমার্যাদি দুভোগ্য সংমগ্রী ও উত্তমা স্ত্রীও প্রবন্ধাদি নাথাকে। আবন মুগি চক্ষুটভানি ই প্রির্গুহ্য বন্ধ যে স্থানে থাকে, সেই স্থানে বুদ্ধিদাধ্য কর্ম কর্ব্য নহে। কার্ণ আম্মনোহরণ গোগ্য বন্ধতে মনঃপত্ন হটলে ভ্রিম্মটইতে প্রন্হর।

আর বিদ্যাথি ব্যক্তির প্রতি এক উপদেশ কলি, যে ভালাব কল্যা অতিশয় প্রবলহর কাম, জোধ, লেভি, মোহ, মদ, মাংদার্য, ভয়, ফোল দুংগাদির পরিভাগে। যদি পরিভাগে না কর, ভবে শীলু প্রবৃতিজনক উল্কামাদির বিষয়ে ইন্দ্রিয়াগণেরা বলজনে চিত্তকে হরণ করে। ভালাতে চিত্ত হুইলে, অনিবার্য্য বার্থমান চিত্তকে করাচ কেই কোন বিষয়ে বশাভ্রু করিয়া রাখিতে পারে না। ভালাতে বিপরীত আচার মহকারে সকল আজাদজনক অম্থার্থ পদার্থে নিকেশবার্য মত্ত সম্প্রকাল সকল জন সমাপে অস্থা প্রাপ্ত হয়েন। কিন্ত ইন্দ্রিয়া মাত্ত সম্পর্কাল সকল জন সমাপে অস্থা প্রাপ্ত হয়েন। কিন্ত ইন্দ্রিয়া মাত্ত ক্ষাভ্রু পুদার কাম জোবাদির প্রাক্তা ক্ষাম্য করে। অভ্যাব স্বাম্য ক্ষাম্য করে। অভ্যাব স্বাম্য স্থাব স্থান না করিয়া অতি কুশলপ্রদ জাগন ক্ষা করে। অভ্যাব স্বাম্য সকলা করে। অভ্যাব স্বাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য করে। অভ্যাব স্বাম্য সকলা করে। অভ্যাব স্বাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য করে। অভ্যাব স্বাম্য স্থাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য করে। অভ্যাব স্বাম্য স্থাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য করে। অভ্যাব্র স্বাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য করে। অভ্যাব স্বাম্য ক্ষাম্য ক্ষাম্য

II.—Five means of increasing knowledge.

বৃদ্ধি বৃদ্ধির প্রক্তি পঞ্চ প্রকার উপায়।

বুদ্ধিবর্দ্ধক পঞ্চ প্রকার উপায় এই ২, প্রথম ম্বভাবনিদ্ধ সংস্কার, দ্বিতীয় অধ্যয়ন, ভূগিয় উপদেশ, চতুর্থ আ<u>লোচনা,</u> পঞ্ম চিন্তন। ইহার মধ্যে প্রথম উপায় যে সংস্কার তাহার নির্ণয়। সংস্কার অদৃষ্ট পদার্থ, কিন্তু ম্বভাবনিদ্ধ, অর্থাৎ অন্যাং উপদেশাদি কারণ ব্যত্তিরেকে দুবা ও ত্তৰ প্ৰভৃতি সকল পদাৰ্থ সকল হাক্তির বুদ্ধিতে প্ৰকাশ পায়। ইহার উনাচর্ণ: বালকদিগের কিছ্ই বিশেষ বোধ থাকে না যে আগ্রির দাহিকা শক্তি ও জালের শীতলাস ইত্যাদি: কিন্দু শ্তাব্যিদ্ধ সংখ্যার্যার। ভত্তং শক্তি প্রকাশ পায়। গেষত সংগু উন্যমাতে ও ব্যক্তি আলোক বোগমাতে স্থাত্তিদিদ্ধ সংকার্থারা ত্যো বিনাশ পূর্ক প্রকাশ চৃদ্

ৰিতীয় অধ্যমন। ইতার দারা পুজ চঠার রা ১ ও গু কি ও ভারাদি ও অপ্রাপানে পাওয়া যায়। ভাতা দেখা, অধ্যায়নে নিগা চইপে পুল ২ পুজ করাদিগের সংস্কার ও পুজের তাৎপায়াগ ও কালজ্য ও ভঙ্কর পদাথ ও নানাগুণ ও নানারস ইত্যাদি বৃদ্ধিতে প্রকাশ পায়, এবং অথ ও মান ও মুণ ও প্রম্প ও দৃশ্য ও অকৃণ্য পাথ সাক্ষাংকার কর্ডঃ প্রম জান ও বিজ্ঞানি সকলি লাভ হয়। এবং পুনং ২ গুরু দশন ও চিল্ল ও দোব পুণ বিবেচনা ইত্যাদি হয়। আর নিজন্য তইপে ক্রিয়া দৃশ্য সময়ে পাঠ করিলে দৃংখাদি দুবাক্রণ পুনক প্রমাজাদি প্রাপ্ত হয়।

ত্থার উপদেশ। ওরু গৃহমধ্যে কিয়া সভিঃস্থানে শিন্যাদিগের প্রতি বে পুরের ভাৎপন্যাদি সজেন, ভাষার নাম উপদেশ। এই উপদেশ পাঠ হইতে উত্তম, আর ইহাতে ভাবিক লভা হয়। ভাহা এই> কলমন্ত্র পুতির বোধ কেবল পাঠনারা হয় না, কিন্তু উপদেশনারা হয়। আর ভাতি কঠিন ভাগার্থ বোধ ও সন্দেহ ভগ্ধন হয়। এবং বাহা আভি উপকারক অবশ্য কত্রস্য, ভাহা শিষ্যাদিগের পুতি কলিলে ভালারা বিলক্ষ্যেপ ক্রিতে পারে। আর উচ্চার্গ ভেল ও ষর ও সাল্পানি ভেল উবদেশ হারা বোধন্ম্য হয়, ভাহা পাঠনারা হইতে পারে না।

চতুর আজোচনা। পর্দার শাস্তাদি বিষয়ে বে কর্থোপকখন ভাগার নাম আজোচনা। ইহার ছারা উত্যক্তেপ বুজির বৃদ্ধি হইতে পারে। পর্দার কর্থোপকখনে শাস্তের মত ও ভারিখ জানা যায়, এবং বিশ্ব হইতে জিজাসাতে পুনঃনার। এই সকল হয় না। এবং গুলে কোনাহের পারা যায়, কিন্তু পাসের রা এই সকল হয় না। এবং গুলে কোনাহের কিছা দুঃসার্যবোর হইতে ক্যোপ্রথন না। এবং গুলে কোনাহের কিছা দুঃসার্যবোর হইতে ক্যোপ্রথন না। জিলার হয়, কিল্ পুনক্ষারা হয় না, কারণ পুনকের বাক্যাবোলালে নাই। আরো অন্য মনুষ্যের রাজি ও বর্গাপুত প্রথার কথোপকখন সংশ ভারেরার। বোধ হয়, নতুরা হয় না। বেমত বোলাবিলাক গোলা। চরকান যোগ করিলেও হত্ত পার না, কিন্তু আক্রোহনতে করার পায়।

পঞ্চ বিশ্বন। উক্ত প্রকার চ্যুটরা গেঁচ সকল তাংপায়ার্গ চিতে বে দুছতর স্থাপন, গ্রাহার নাম চিত্রন। এই চিত্রনবারা উপদেশাদিতইতে প্রাপ্ত সে পদার্থ, ডাহার সত্ত আপানতেই সকল নিফ্টাথ ও লোয ধণ ইত্যাদি প্রকাশিত ও জানের দুটো ও বৃদ্ধি হয়। আরু সকল পদাথের সাক্ষাংকারকারক হয়। আরু গে পদার্থ চিত্রা করা যায়, সেই পদাথের আয়রত। হেছু বোধ হয় যে উনি আমার, কিন্তু ভয়তিরেকে কলাচ আয়রত হয় না, তাহাতে বোধ হয় যে আমার নহে।

উক্ত এই পঞ্চ প্রকার উপায়ে উচিত্রর যে নির্ভর ছিতি করেন। কেননা এই উপায়পঞ্চ বাতিরেকে করাচ বৃদ্ধিবৃদ্ধি হয় না, এবং বৃদ্ধিবাতিরেকে দকল কার্যোও দকল সাধ্ দ্মাপে সভত নিন্দনীয় হয়। আর প্রাধীনজ্ঞ ও প্রস্থানে ব্যক্ত ইত্যাদি নানাক্রেশে মগ্ল ইউ হয়। আর দর্শোগ্রেও স্প্রোকে দলা ক্থিত আছে, যে বৃদ্ধিনী জন শ্করাদিম ইত্যাদি। অভ্এব এই প্রোপায়ে সভত রভ ইউলে পঞ্জীকৃত অপঞ্জীকৃত পঞ্জুত্ময় শ্রীরে ভদ্দিক ক্লেশ্যোগ প্রব্ধিদামুগী হয়।

111.—Learning to be acquired by diligence.

পরিশ্রমদার। বিদ্যাদি লাভ।

विमा विषयः ও অনাং कर्मविषयः य উদ্যোগ তাহাকেই লোকে পরি-**শ্রম কহে। বাল্যাবস্থা ও যৌবনাবস্থাতে মনুষ্য সকল সতত সকল** পিষ্যে পরিশ্রম অবশ্য করিবেন, যেতেত্পরিএমেতে বিদ্যা ও ধন ও মান্যতা ও সুঝাদি হয়; পরিশ্রম ব্যতিরেকে ইহার কিছুই হয় না,অনুফীলারা যে স্থাদি হয়, দে কাপরুষের কথামাত্র। যদ্যপি চেন্টা করিলে কাঘ্যদিদ্ধ না হয়, তাহাতে হানি নাই। ইহার দৃষ্টার, কুন্তকার এক মৃত্তিকাপিওেতে घ छ अ आलामि याशा २ उन्हों। कति एउटिन उाशा २ निर्माण कति एउ ছেন; এবং দেখ নানাবিধ দুবা সমূখে আছে বটে, কিন্তু ভোজনার্থি বাক্তির মুখে অদুষ্ট কি অল্লানি প্রদান করেন? উন্লোলব্যভিরেকে সেই দুরা ভক্ষণ করিতে পারেন না। এবং আরো দেখ, বনমধ্যে মুখ ত্যাদান করিয়া নিদ্যপ্রাপ্ত যে দিংহ, তাহার মুখমধ্যে মৃগাদি কি আপনারা প্রবেশ করে? অতএব বাল্যাবস্থাতে বিদ্যা বিষয়ে অত্যন্ত চেফী করিলে। যদাপি বাল্যাবস্থাতে বিদ্যাভ্যাদ না করে, তবে বৃদ্ধাবস্থাতে কি অভ্যাদ করিতে পারে । তৎকালে ই ল্রিয় সকল শিথিল হয়, সূত্রাৎ অভ্যাদেতে অতার ক্লেশ হয়, অভ্যাস করিলেও মরণ থাকে না। এবৎ যৌতনাবদ্বাতে मर्कामा मकन विषया रहको कतित्वन, हेहा मास्त्र वर्षित আছে। आद्री किशाएकन, य (ठकी) ठाउँदित्क कमाठ कार्यामिश्च इस ना। (मर्थ (यभव सृत्रि ও वीज दर्शानिकाल गरुरशाला कि कर्षण ताछितिक एक कल श्रन ছয়েন? কদাচ হয়েন না। ইহার উদাহরণ।

অবেশ্বিকা নগর নিবাসি রাজকুলোন্তর মহাবল পরাক্রান্ত সপ্ত দীপা∙ ধিপতি বত্ং রজন ও অসীম ধনসংযুক্ত কমলাপতি নামক এক ব্যক্তি

ভাহার ধরণীধর নামক এক পুত্র দত্ত দকলবিষয়ে চেফারেটিত, পরি-শ্রম করণে অসমথ। কিছকাল পরে ডমপিতা কমলাপতির মৃত্যু ছউলে ঐ ধর্ণীবর কেবল অমাতাদহ 🖨 থ্যাক ম্পিত কথাতে কাল্যাপন করেন, ে কিন্তু কোন বিষয়ে বিশেষ পরিআ্য করেন না। চদনস্তর ঐ ধর্নীধরের পিতৃমন্ত্রী ও অমাতা ও অনাং ভৃত্যাদি সকলেই ধরণীধরের এতাদৃশী রীউ দলশন হেমুক বিরক্ত হট্যা খীয়হ কাষ্য পরিভাগে পুর্বক ষীয় ২ গৃছে প্রস্থান করিলে কএক ব্যক্তি ধৃত্ত ও প্রস্থাক্ত মন্ত্রী প্রস্তুতির কার্য্যে নিযুক্ত হউয়া অপপদিনের মধ্যে অসংখ্যা ধন ও রজনাদিয়ক কোষ প্রায় শূন্য করিলেন ভংকালে মতত চেটাশীল পরিএমশালি ও নানাশাজ্ঞে পারদর্শি এক বরিলু ব্যক্তি স্বায় পরিপ্রমন্ত্রার। ঐ পর্ণী-পরের দৈনাসহ সম্প্রীতি হেতুক ক্রমে স্বরণীপরের রাজ্য প্রায় হয়ত্ত করাতে ও ধরণীদর স্বীয় দৈনোর প্রতি অনুমতি প্রদানে অত্যন্ত পরিশ্রম জান করিয়া উপেক্ষা করিলেন। পরে ঐ দরিবের বর্শাভূত হইয়া অতি-শয় ক্লেশে কালযাপন করিতে লাগিলেন। ভাতএব ওতে বালকেরা, ভো-মরা সকাদা সকাবিষয়ে পরিশ্রম কর্ছ। দেখা, যিনি এই এজগতের কর্ত্তী ওাঁহারও চেফীাদারা তিজগৎ মূজন হয়। আর তিনি চেফীাহীন হউলে ভিগ্রহ লয় হয়। আরো দেখ, রাদে প্রভৃতি ইহারা বনাফলাশি ধনচীন মুনির সম্ভান হউয়াও মীয় > পরিশ্রমভারা সকল রাজ্যাধিপ হউসাকি প্যান সুখভোগ করিয়াছেন।

IV.—Difficulties overcome by resolution

দুঃসাধ্য সাধনে পুরুষার্থ।

কোন কর্মা যদি অহাত্ত ব্লেজনক হয়, হবে দেই ক্রা দু-সাধা বেবি করিয়া পরিহাল করিবে না, বর্ণ হংপর হইয়া বহুণ মহনবারা হংকর্ম নিরাহ করিবে, কারণ দুংসাধা সাধনই পুল্যাথ,মুমাধা মাধন কাপুন্ধহই-তেও হয়।ইহার বিবর্ণ। নাগরকুলস্থ এক গুল্ম বৃজ্ঞোপরি নিবাসি এটার প্রাথন কতক গুলি পক্ষী বহুকালাবিব ভংগানে গাকেন। ইতিমধা এক বিসম ঐ পিক্ষি সকল স্থীয় ২ শাবকগণকে স্থায় ২ সাধানে রাখিয়া হাহা-দিগের আহারাথ বহুত্ব দুর্দেশে ইহস্ততা ভূমণ কর্ত স্থাতে গহাও পীড়ামান। তথাপি স্থোলর পূবণ না করিয়া খার শাবকগণের উনর পূরণাথি বহুত্ব ভঞ্জকণ স্থায় ২ চকুপুট্নারা ধারণ পুল্যক অভিশয় বেলে উজ্রা সাগরহারে উপ্রিভ্রা সাগরহানে স্থানি দ্বিদ্বার স্থায় বিষয়ে ও শোকাদি তেত্

অভান্ন পাড়াতে আকাশমণলে মণলীকৃত হইয়াকল ২ ধানিতে বজুতব বিলাপপুর্সাক জেন্দন্যক হউলে জটায় কহিলেন, যে আপদকালে গৈয়া. বলম্বনে উপায় চিন্তা কর্ত্রা, কিন্তু বিষয় 📽 বিষাদ ও ভয় ও শোক কর্ত্রা মতে। যেতেত্ত শোকেতে যে মনের বৃত্তি তিনি প্রজাকে নট করেন। যেমন সমদে প্রতিওত্র বায়ভারা বানসমূহের নাশ হয়। অতএব তোমরু। সকলে শোক্ষাগরে সংযোগজন নিমজনবারা বিহলে ধ্যুচিত্তে ধৈর্ঘ্যাপর্যভাক্ত করিয়া সৃষ্থির করহ। চিত্ত বৈক্লসা অংশতবা, মেতে 🖲 দৈক্লব্য ক্লীব ব্যক্তির অনুষ্মবণীয়। এবংবিধ নানাপ্রকার বিবেচনা করত: পক্লিসমূহ নিজুন স্থানে বসিয়া উপায় চিন্তা করিতে লাগিল যে আমা-मिर्तित नीए ९ व्यथ ९ मायक मकैं लाक कान जन नकें कति न? ठाहा दाउ মোলে কিলা মন্যালারা নদী হয় নাই, তাহা চইলে অবশা পক্ষ কিল ডিম্বাদির কিঞিৎ চিহ্ন থাকিত। অতএর এই অনুমান্হয় যে মহোদ্র সাগর স্বীয় কলোলিয়ারা ডিম্বাদি স্বোদরে পর্ণ করিয়াছেন। হায় লোকে কতে যে বড়র বড় পেট অপরিনিত, মহৎ২ মীন ও মকর ও ক্ডীব ও কেচ্পে ও তিমিঞ্জিল ও তিমিও শিশুমার ও শক্ষর ও রাঘবাদিতেও উদর্পুরণ হয় না। আমরা সতত প্রতিবাদি সমাপ্রিত, আমাদিরের প্রতি ইহার উচিত এট যে হার কেশবারা শত্মমত্টতে সংর্জণ করা, তাহা দুরে স্থিতি করুক, স্বয়ংই সংখারক হইল। আমরা ইইাকে জান করিয়াছিলাম যে ইনি মহৎ, দর্মনা আমানিগের রক্ষা করিবেন. আরু মহতের এই ধন্ম যে পরপ্রতিপালক আঞ্রিত স্থানায়ক। এবং আমরা ইহার কিছুইমাত অনিষ্ট করি নাই, দূরহইতে আচারীয় দুবা আনয়ন করি, কেবল জলমাত্র পান করি। আর ইহাতে আমাদিলের আতান্ত বিশাস ছিল, কিন্তু সে বিশাসে সর্ধনাশ হইল: অতএব নদী **জাতিকে কলাচ বিখাস করিবে না। এই নীতিশাস্ত্রের বিরুদ্ধাচ্**রণে ফল প্রভাক্ষ হইল। যদাপি সমৃদ্ননীপতি, তথাপি নদীছাতি সটেন; যেগন পশুপতি সিংহ, তথাপি পশুজাতি কি ন্য? ইহা প্রেণ করিয়া জন্য এঞ পক্ষী কৰিল যে এই প্রকার সভ্তর হয় না। কারণ সুষ্ঠারৎশীয় মহা-রাজাধিরাজ সগরহইতে ইহাঁর উৎপত্তি, অতএব ইনি সর্থশজাত ; ইহাঁর যদি কেহ শরণাগত হয়,তবে তাহার প্রতি অতাত মমতা হয়,এসং ধন ও প্রাণ প্রদানপূর্মক পরোপকার করেন। রেখ, পক্ষিণণ আট মহৎ ২ যে বৃক্ষ ইহার শাঝাদি ভগ্ন ও ভদুপরি মলভ্যাগাদি করেন, তথা-পি তৃক্ষ ফলাদিবার। ঐ পক্ষিগণকে প্রতিপালন করেন। ইহা আরু করি^{হা} মেই পক্ষী কহিল, ওছে ভাই, পিৰুপ্তণ ও বংশপ্তণ কি সন্থানের হয়? ভাই ছয় না। দেখা, যে কীটের লালরারাপ টু অর্থাং তদর ও গ্রদ প্রভৃ^{টি} হটতেছে, মেই কটিংইতে প্রজাপতি হইতেছে; কিন্তু তাহার লালংইটে কিছুই হয় না। অতএব সর্বজন নিজ ওণে প্রকাশ পায়। এই দ্রাই

লহণ্মমুদু আপিনাকে রজনকর মানিয়া গর্মে গরির হট্ট্যা জানশূনাছা হেছুক কর্ত্যাকত্বা বিবেচনা করে না। এবং ঘাচার ঐখন্য শারুণা দশন করিছে পার না এবং মিএদিগের ভোগের হয় না, এমও দুমের ঐখন্য না হওয়াই ভাল। গেছেছু দুষ্টের সম্পতি মত্তার জন্য হয়, এবং শক্তি পরপীড়নার্থ ও বিদ্যা পরের পরিভ্রাথ হয়; আরু সাব্র ঐখন্য দানার্থ এবং বিদ্যা জানাথ ও স.ম্প্য পর বিদ্যুপরিরোগ্য হয়। মত্র এখন্য ও সাম্থ্যাদির ইউক, মারু দুষ্টের ঐখন্য ও সাম্থ্যাদির সমূলেংপাটন ইউক। হলনভরে জটানু স্কল পজিগণের অনুরোধে সক্ষা ধায়তঞ্কারা সমূদ্ধে আঘাত কর্ভঃ স্মৃদ্রের গকতেছু যে এছার জল্প দিওন, ভালা নিবারণ করিলেন। অভ্রব অধ্যাপি সমৃদুরিরে গে পন্যর জলবেগ হয়, ভালার অধিক উচ্ছানে উঠে না। অভ্রব জটানু অহার দুংসাধ্যকে সাধন করিলেন। আবো এক উলাহরণ।

উজ্জয়নী নগড় নিবাদি অভাত ধনি বীর্জয় নামক এক বাজি, ইহার বাল্যকালে পিতৃবিযোগ হয়, এই হেতৃ তথ্ঞালে বিদ্যোপাল্ল করিছে পারেন নাট এবং ঐ ব্যক্তির সে ধন ছিল, সেট ধনর্কাণ নিযুক্ত राक्तिता से मकल धन नकी कृतिल। भारत से तीतृ जारात कि क्षिर तारभा-দয় চউলে এ ধনত্রকার্থ নিযুক্ত ব্যক্তিদিগের প্রতি আবেদন করণার্থ रकुडा डेव्हा (बडु सीग्राजनभी शृंधिक तस्तृहाद क्षरत दहेला (य र কথাতে যে২ প্রকার হস্ত পাদাদি ভঙ্গী করিতে হয়, ভদ্রপ না হটয়া অন্যং প্রকার হয়, এবং অতি মৃদ্ধর উচ্চ ও দণ্টকথনে অসমণ, এই হেত ভাহার সমনমুদ্ধ ও সভাগণ সকলে পরিহাস করিপে ঐ বীর্ঞায় অভাস্ত ক্ষ্ত্র ভইয়া বিপিন্নধো এক গম্বর প্রশ্নত করিয়া ভ্রথগো মন্তকের অর্দ্ধেক মণ্ডন অর্থাৎ কেশ বপন পৃত্তক বাদ করিতেন। গম্মর মণ্যে স্থিতির কারণ এই, নে কোন মনুসামহ মন্দর্শন ও আলাপাদি না হয়, সন্দ্রনাদি হউলে আজাপাদিরারা বৃথা বহুকাল গতহউরে। এবং মুক অর্থাং ডোভালা তদোল পরীচারাথ মুপমধ্যে দকানা কলব রাশিয়া নাক্যপ্রয়োগ করিতেন। আরু স্বার্র মান্দ্র নিশার্ণার্থে অণ্যুক্ত পর্মভোপরি স্রাদা অভাচত রব ও সদা উচেন্ত গ্যনাগ্যন করিছেন, श्व उन्धाता चारमत तळ्कालाति थिखिरिक बरतत उक्तरा करेल, बर रक्टामधरয় হস্তপদাদির ভদীর বাহিজ্য বিনাশার্থ আদর্শ অথাং আ इनावाता बीग्न टक्टा कालीन रुग्न अनामित टाडिक्स मर्गन करिया ষথাষোগ্য ভলা শিক্ষা করিতেন, আর রজ্জুরারা উপরিদেশে কেশ বস্থন করিয়া রাঝিডেন যে ভদ্ধারা নিসুভিক হউড। এবং সর্গদাশি^{ক্}ণ ও অন্য ২ শাস্ত্র চিল্লাপার্মক অনুষ্ঠানলংকা মর্মবিদ্যাও বক্তাদিতে এমন নিপুণভর সংস্থার হইল, যে এই প্রকার বকুল ও শিল্পাদি নানা বিদ্যায়

পার্গ প্রায় হয় না। অভএব দেশ, যে২ বিষয়ে দৃড়ভা যে ব্যক্তির হয়, অভ্যুম দুঃমাধ্য কর্ম ভাহাও মাধ্য হয়।

অপর মুর্ঘাবংশ প্রসূত শার্দার ও নানার্থণমুক্ত মহারাজাপিরাজ জন্মোধ্যাপতি দশর্থমুত প্রারম্ভন্ত অভিপ্রভাপালিত রাবণাদি বধের নিমিত অভিশয় প্রকাতর দুনিবার সম্পুমধ্যে সেতু অর্থাং রাস্ভা বর্ক করিলেন। এই ২ রূপ দুঃদাধ্যে কর্ম সাধন সমর্থ যে পুরুষ, সেই উত্তম জানিবা।

V.—Humility necessary in learning.

জানোপার্জন বিষয়ে থক্তার আবশাকতা।

জ্ঞানোপার্জন বিষয়ে মনুষ্য অবশ্য শক্ষণ প্রকাশ করিদেন। শক্ষণ দারা মানাতা ও দুখা ও বিজান হয়, যেহেতু থর্ম না হউলে অহলার প্রকাশ পায়, অহস্কার্ছারা মকল জন মহ শতুভা হয়, এবং ওঁরুও ভাচ্চল্য করেন। অতএব কি প্রকারে অন্য জন কড়ক মান্য হইবেন? আর গুরুর ভূফি ব্যভিরেকে কি বিদ্যা হউতে পারে? অতএব বিজ্ঞ ব্যক্তিরা কৰিয়। शास्क्रम, स्य नक्षण भनुषारक अर्थ करवन, अर्थण मीहरक उठिह करवन। কেবল গর্মাই থর্মকারক জানিবে, এবং শাস্ত্রেও কহিয়াছেন মে থর্ম-তায় কাম ক্রোধাদি রিপু অর্থ হয়, ও জ্ঞানোদয় করেন। আর দেখ, যে জন দুঃথভোগ কদাচ করে নাই, তিনি যেমত সুখাস্থাদন করিতে যোগ্য হয়েন না, এবং দদা আলোকদশা বে জন, তিনি যেমত অন্ধকার জানেন না, তাহার ন্যায় যে জনের থারতো নাই, দে জন কি দিয়াজনা मुख जानिष्ड भारत्न? यमि अर्द्ध शास्त्र, उत्तर कादना विना। ও मश হয়, আর তাহার আহাদন জানিতে পারে। অপর থর্মতাহীন জন ঐগ্যা-যুক্ত জনকে সংদশন করিয়া হিৎসা করেন, সেই হিৎসাভারা সতত ক্লেশ পায়েন; কিন্তু থঠা জনগণের থঠাতা হেতু হিৎসা হয় না, এ৴৭ ঐ থর্মতালারা উপার্জিত যে জান, তদপেক্ষা ঐশ্বর্যাকে তচ্ছজান করেন। বিদ্যাহইতে অধিক কি আছে? ইহা বলেন। অভএব শান্তে বিদ্যারূপ যে রক্তন টনি মহাধন; এই বিদ্যারূপ ধনাপেক্ষা অধিক ধন নাই। আর যদি থরজান আজাতে না করহ, তবে হিৎসাও সুধাও উত্তম পরিচ্ছেদে ইচ্ছা হইবে, তাহাতে কদাচ বিদ্যা হইতে পারে না। অভএব ধর্মতা প্ৰকাশ করহ, যে তদ্বারা যথাথ সুথ সডোগ হইবে, আর সকল লোকে উত্তমস্তরূপে প্রকাশ পাইবে। যেমত হীরকের যে দীপ্তি অন্ধকার আগার মধ্যে রাথিলে জানা যায়, এবং দুব্য বহনাদি ও গমনাদিদারা অতার শ্রমযুক্ত জন যেমত উপবেশনাদি করতঃ সুধ সৎস্থোগ করেন, আর যেমত দাহাদিয়ারা মর্ণের উত্তমতা প্রকাশ পায়; এই সকলের ন্যায় থকাতাযার

মনুষ্য দীপ্তি ও মান্যতা ও সুপ ও জান পায়েন। আর দেমন দাহদ দংযুক্ত যে জন, তিনি যদি আপদ্ দময়ে দাহদ্যারা দুঃদাধ্য যে কমা ভাহা সাধন করেন, তবেই তাহার সাহদের মাথক, নত্বা দে দাহদে কি প্রয়োজন? সেইজপ পর্যতা ও ন্যুতানিযুক্ত স্যক্তি যদি দিদ্যাদি উপাজন করেন, তবে দেই বিদ্যাদি দুপ দেন, নত্বা দে স্যুথ ছানিবে। আত্তাব ভোমরা থকাতা ও ন্যুতাবলম্বন করহ, যে হদ্ধারা ভান ও প্রম্পুর ইউবে।

ইহার উদাহরণ। মহারাজ সান্তন্য হান হাস আজি সলান ও গোদ্ধা ও সার শন্ত্র ও শান্তবিদ্যায় নিপুণ ভিলেন। তিনি থকা ও নমুগাবলম্বন হৈত্ব পৃথিবীমণ্ডলে উত্তম সশং ও কীর্ত্তি ও স্থাতি ও মানাগা ও সক্পিরিয়ক্ত পাইয়া প্রমজানলারা প্রমুখী হইয়াভিলেন। কিন্তু জমদ্মি মুভ প্রশ্বাম আতি মানা ও সুখী ভিলেন, তিনি গকা হেত্ অনেক হ স্থানে ক্ষোভ পাইয়াভেন। এবং দশ্রেথ ওনয় প্রাণ্যতন্ত্র যংকালীন জনকরাজন্দিনী সীতাকে প্রিণ্যন করিয়া আন্যন করেন, গেই সময়ে প্রমির্গ ঐ প্রশ্বাম আতি গকা পূথক জীরামতন্ত্র প্রত্তি আক্রমণ করিলে জীরামতন্ত্র নমু হইরা আনেক ফ্রিকিট করিলেও প্রশ্বামের কৃপা হইলান, বরং গকাই প্রস্কু হইল, অন্যর প্রাম্যতন্ত্র সহ মুদ্ধার্যের প্রশ্বাম ক্ষেভি পাইলেন, এবং প্রশ্বামের কৃপা হউলান, হরং গকাই প্রস্কু হইল, অন্যর প্রাম্যতন্ত্র সহ স্কু বিষ্টা হিলন, এবং প্রশ্বামের কৃপা বিন্দী হইল।

প্রকারান্তর। গুজরাট নগর নিবাসি শচাবভট্ট অতি মান্য ও পনাচ্য ও বিলান ভিলেন। তংপুত্র চির্ওজীব ভট্ট অতি গক্ষেত্যু সকল জনকে আছিল্য করেন, কিন্ত অহক্ষার্লারা বিদ্যা ও সৃথপ্রভৃতি সকলি নদট হইল; ওথাপি চির্ওজীবের গন্দ দূর হয় না। পরে শচাবভট্ট পুদ্রের মুখ্টা ও দুঃগ হেছু অত্যন্দ দুঃগিও হইনা ঐ প্তের প্রতি প্রভার ও উত্তম নীতিশিক্ষালার। চির্ঝাব ভট্টের গক্কে অন্ধ করিজেন। পরে চির্থীব অন্ধতা ও নমুখালারা সকলের প্রিয় হইনা সন্ধ্যা শান্ত চিনা ও শান্তালাচনলারা জানপ্রাপ্তি পূর্কক প্রম মুখ পাইলেন। অত্তব মনুষাদিগের উচিত যে অর্থ ও নমু হয়েন।

VI.—Importance of an early education.

উপদেশ তুচ্ছতা প্রাপ্ত শিশুর বয়োধিকে দুরবস্থা বিষয়ক।

ষে জন বাজ্যাবস্থায় বিদ্যোপার্জন বিষয়ে চেন্টা ও পরিআম ও সদুপ-দেশ পুহণ করেন না, ভাহার অধিক বয়নে অভ্যথ মানসিক ও কায়িক ও বাচনিক ক্লেশ হয়; যেহেতু বাজ্যাবস্থায় কোন সাংসারিক ব্যাপারে

চেফী৷ করিতে হয় না, আর কোন বিষয়চিদ্যা নাই, ও সতত অভঃকলে ে श्रष्टन निरमाপার্জন বিরোধি কোন কার্যোর সন্তারনাও নাই। অপ্র অভ্যাদশক্তি ও পরিঅমশক্তি প্রভৃতি দকলি আছে, ইহাতেও বিদ্যাবৃদ্ধির · প্রা<mark>ডি ও অধায়নে ঘচন করেন না; অত</mark>এব এমত জনের কি রেপে উত্_া काटन विका 3 उड़काना मूथ इडेट्ट ? यहां शि नरशाधिक इडेटन आंडा विक मुक्ष (इंड्रू तिमा) छार्म यञ्ज कर्द्र, उर्प रम मधर ह कि तिमा। इस हिन्ता তজ্জনা দুথ হয়? কিলুই হউতে পারে না। যেমত বর্ষাদিকাল অংহীত হউলে ক্ষেত্রে বীজা বপন করিলে ফল জামো না, ভাহার নায় জানিবে। আর বাল্যাবস্থায় বিদ্যাভ্যান না করিলে উৎদাহ ও দাহম ও ইচ্ছা প্রভুত্তি থাকে না। অপর অন্য ত্যাঁক অপেক্ষা অধিক বিদ্বান্ ও প্রশংসিঙ ছইব, এই প্রকার যে ইজ্ছা তাহাও থাকে না; ইজ্ছাও বিদ্যার পুতি কারণ। আর যে বাক্তি বাল্যাবখায় ভাচ্ছল্য করিয়া অধিক নয়দে চেফী করে, তাছার কেবল পরিশ্রম আর বিলাপকরণ জানিবে। আর যে এন বাল্যাবস্থায় পর্ব ও আলস্যাদি পুযুক্ত বিদ্যাভ্যাস না করে, ভাহার বয়োধিক হইলে কোন কায়ো মনঃদ্রি হয় না, কেবল দকল কায়ো বিরক্ত হয়। আর যদ্যাশি হয়োধিকে বিদ্যাভ্যাদে ইচ্ছা ও দুখ ও উপকার বোধ হয়, তথাপি মনঃস্থির হয় না, যেহেছু তৎকালীন মনুষ্যেরা গংঙ নানা বিষয়ে ভুমণ করে, আর নূতন ২ বিষয়ে নূতন ২ উপদেশবারা ইচ্ছা হয়; কিন্তু বয়োধিকা হেতু সেই ইচ্ছাদ্বারা ফল জন্মে না। অপর ষতো অধিক বয়স হয়, ততো সৎসারাদি চিদ্ধা বৃদ্ধি হইতে থাকে, অন্য চিত্তা উপস্থিতা হইঙ্গে শান্ত্রচিত্তা কি প্রকারে হইতে পারে? আর যেমত বেলা যত গত হ'ইতে থাকে, ততো ছায়া ক্রমে ২ বৃদ্ধি হয়, সেই প্রকার মনুষ্যাদিনের যভো বয়োবৃদ্ধি হয়, ততো রাগাদি প্রবৃদ্ধ হটনা বিদ্যাতে ভাচ্চলা হয়, আর উপদেশে ভাচ্চলা ও অনুভাপ হয়, এবং জ্ঞানজন্য যে আহলাদ ও উত্তম অপকৃষ্ট দুব্যের আয়াদ বৈলক্ষণ্য, ও বিষয় **দুখ প্রভৃতি কি**ছুই হয় না। আর যে জন অক্ষয় আনন্দ জনক জানোপার্জন করেন, এবং সতত প্রম্পদাথালেষণ্দারা কলা কেপণ করেন, ভাহারা সকল সুখায়াদন করিতে পারেন; যেহেতু জগত কর্কর্ক সৃজিত হটয়া তাহার সৃজিত বর্মেথাকেন, তাহাতে ৬২স্জিট বিষয় সুথ ও পরম সুথ সাক্ষাৎ করিতে যোগ্য হয়েন। আর সং^{৪(3)} অসুথ যে ক্লণিক ই লিয়জন্য সূথ, তদপেক্ষা উত্তম যে পর্মসূথ গাড়াট বুদ্ধিমান মনুষ্য অংশেষণ করেন। অপর যেমত জয় ও রাজ্যাথি এন সতত নূতন ২ জয় ও রাজাবৃদ্ধির নিমিতে যুদ্ধাদিদারা চেকী৷ ^{৫০,৪ন} সেই প্রকার বিদ্যার্থি ব্যক্তি নানা পরিশ্রমাদিরারা বিদ্যা ও বিজ্ঞান ও জান বৃদ্ধি ও নুত্র ২ আভাস ও নূত্র ২ রচনাপ্রভৃতি করেন। আর সকল সাগুসমীপে বিদ্বান মনুষ্য সতত পূজা ও যান্য হয়েন, ^{এই ১}

বিদ্যান মনুষ্যের মৃত্যু হউলেও তাহার গুণকতিন দর্ম রাজ্যে দর্ম মনুষ্যেরা বরেন। আর শান্তেও বাবহারে এই আছে, যে বাল্যাবস্থায় বিদ্যাভ্যাদ, যৌবনে বিষয়চেন্টা, বার্ককো তল্পচিত্রা করিবে। অতএব হে বালকগণ, হোমরা অহলার ও সুথবাদনাপ্রভৃতি পরিভ্যাগ পুরুক বিদ্যাভ্যাদ ও জানচেষ্টা ও শান্ত্রিগ করহ, অবিক বয়দে বিদ্যা পাইবে না, দতত নানা দুঃখ ভোগ করিতে হইবে।

ইহার উদাহরণ। মহারাজাধিরাজ দিলীপ রাজা তৎসূত রঘু অতিশিষ্ট বিশিষ্ট মান্য জনের মানপ্রদ ছিলেন, তিনি বালাাবস্থায় সতত বিদ্যা-ভাাস ও শাস্ত্রতিঝা ও শাস্তানুশীলন ও শাস্ত্রসন্ধর্শন ও শাস্ত্রতনা করিয়া শিশ্প শান্তাদিতে নিপুণ হউলেন। অনমূর যৌরনারস্থায় ঐ রঘ-রাজা দিগ্রিজয় করতঃ সকল রাজ্যাধিপতি হইলেন ওাঁহার ধন্রিদ্যায় এমত পারদশিতা যে যৎকালীন দিলীপ ঐ রুমূকে অখরক্ষার্থ নিয়োগ করেন, তৎকালীন রঘুর যোড়শবর্ষ বয়ঃক্রম, কিন্তু সকল রাজাকে প্রাভ্র পাওয়াইয়া ইন্দুস্হ যুদ্ধ হইলে ইন্দুের র্জুর্যুস্মীপে পরাগুথ হইল, ইলুও রঘুকে নীতি ও বিনয় বাক্যদারা যুদ্ধহইতে নিবৃত্ত করিলেন, আর রঘুর যে শাস্ত্রজন্য ও কীতি ও মুদ্ধনৈপুণা ও সুখ ও বিদ্যা তাহা মহাভারতে বিস্তৃত আছে। অপর দারকা নিবাসি নিধিপতি নামা বিপ্র ছিলেন, তিনি স্কাদা বাল্যাবস্থায় বনে ২ গোরক্ষক গোপবালক সহ ভূমণ করিতেন, আর কিঞিৎ পিতৃপন ছিল, তাহাতে অহার অহন্ধার প্রকাশ করিতেন, আর উত্তম আহার উত্তম প্রিচ্ছদে ষতত উচ্ছাছিল। এইরূপে বাল্যাব্যা গছা হউয়া যৌবনার্ক গছ হউলে পুরাধনক্ষয় ও মানাতাহানি ও পরিবারের অতাও ক্লেশ দেখিয়া বিদ্যাভ্যাদে মতি করিলেন। কিন্তু তাহাতে যদ্যপি ইচ্ছা হইল, মতি শ্বির হয় না, ও পরিশ্রেম ও অত্যাস করিতে পারেন না, আর শাস্ত্রচিত্ত-নে সংসার্চিতা উপন্থিতা হয়, তাহাতে কেবল মনস্ভাপমাত্র, কিছুট বিকা। হইল না। অতএব বাল্যাবস্থায় অবশ্য বিকোপাজ্ঞন করিকে, নতুবা মনস্তাপ ও অপমান ও নানা দৃঃথ ভোগ করিতে হয়।

VII. -Triumphs of perseverance.

দৃঢ়ভাদারা কার্যা সিদ্ধি।

মনুষোরা যদি বিদ্যাবৃদ্ধি ও ধনোপাজ্জনে ও আনাং বিষয়কার্যো দৃঢ্ভা করেন, এবে ভাঁহার ক্রমেং ভত্তিষয় ভাবশা দিয় হেউবে। যেমভ উচ্চেম্বান প্রাপ্তি নিমিত্ত যদি দৃঢ়ভা থাকে, এবে ক্রমেং সোপানদারা ^{ও্তি}য়ান প্রাপ্তি হয়, ভাহার নাায় ক্রমেং বিদ্যাদি বৃদ্ধি পাইয়া প্রম**স্থ** পুলি হয়েন। আর যেমত মহ্লিকা পুভৃতি ক্রমেং দৃঢ়তর যক্তবার। কিঞ্জিৎ মধু আনরনপূর্বক বহু সঞ্জয় করে, তাহার নায় মনুযোরা যে কর্মে দৃঢ়তর যক্তপূর্বক পুবৃত্ত হয়েন, তাহাদিনের সে কার্য্য অবশ্য সিদ্ধ হয়। অপর চিত্রকর পুথমত পুত্রিকার আকার নির্মাণ করে, অনস্তর সেই পুত্রিকা আফ প্রত্যাক অলস্কার্বারা অতিমনোহর রূপতা পায়, তাহার নায় সকল কার্য্যই ক্রমেং সিদ্ধ ইইয়া উত্তমতাকে পায়। আর দেখ বাল্যাবদ্বিধি যাহা ২ রচনাপ্রভৃতি হইয়াছে, সেই সকল একত্র করিলে করে। অতএব ক্রমেং দৃঢ় সক্তনপূর্বক কার্য্য করিলে অবশ্য সিদ্ধ হয়। এবং কছপে ক্রমেং দৃঢ় সক্তনপূর্বক কার্য্য করিলে অবশ্য সিদ্ধ হয়। এবং কছপে ক্রমেং মান্যাগতিবারা বীর হানকে প্রাপ্ত হরেন, কিন্তু বনবিড়াল অর্থাৎ খ্রগোশের অতি ক্রতগতি তথাপি মন্ত্রাপ্রপ্রি হয় না। অপর স্থান বিশেষে ক্রমেং কিঞ্জিৎ মৃত্রিরা যোগে প্রত্রক্তপ্রাপ্তি পূর্বক পর্বত হয় ও ফুদু নদী ক্রমেং প্রাহারা অতি প্রবলা হয়, তাহার নায় দৃঢ়হাবারা অতি দুঃসাধ্য কায় সাধন হয়। অতএব সতত সকল কার্য্য দৃঢ় যকন করহ, তদ্বারা অবশ্য সিদ্ধ হইবে।

ইছার উদাহরণ। অঘোধাধিপতি দশর্থ সূত প্রারামচন্দ্র দৃঢ় যক্ত হেতু অতি দুঃদাধ্য প্রবেশতর বারিধি উপরি দেতু বন্ধন করিয়া সম্দূ লঙ্ঘনপূর্বক লকা প্রাথ হইয়াছিলেন। এবং বহু থোক বহু ২ রা জার দুর্গজায় কর্ত আধিপতা ও নানাপ্রকার মুখ সডোগ করিয়াছেন।

অপর আদিতাস্ত সুরথ নামক স্মাট রাজা ছিলেন, এই আদিতা তনরের আদিতাস্তা প্রতাপদারা সর্কাণ শব্দংঘ সংতথ্য হইত, কিন্তু আতি নীচ করণ্ডলি শুকর থাদক আগমনপূর্বাক দৃচতর প্রয়তন প্রযুক্ত সুরথের সকল রাজ্যে আধিপতা করিরা শুর্থের রাজধানী আক্রমণ করত সুরথ রাজা অতিমানে নিজ্জন গছনে গমন করিলে ঐ কোল ধ্বংসিরা অভ্যদেন রাজ্য করিতে লাগিল। অতএব যে ২ বিষয়ে দৃচতা করে, মনুষাদিগের সেই ২ বিষয় অবশা সিদ্ধ হয়। শুন সকল মনুষ্ঠাণ ভোমরা কার্যা বিষয়ে দৃচ যতন করহ, যে তদ্ধারা কার্যা সিদ্ধ হইলে সুধ ও অভ্দেতা ও জান পাইবা। আর বিষয় ও জান ও বিদ্যাবিষয়ে অভিশয় দার্ঘ্য করহ, তাহাতে মান্যতা ও প্রম শুথ ইইবা। আর লোকেও দৃষ্ট ইইতেছে যে দৃচতাশ্বারা বিদ্যাও জান প্রাপ্তি পূর্বাধ্য মনুষ্য পর্ম সুথী ইইতেছেন।

VIII.—Politeness.

সভ্যতাবিষয়ক।

সতত সাধ্নিকটে গমন ও সদৃত ও স্লাচারী ও নীতিজ ও প্রিয়-रामी ও সরস কাব্য সংযুক্ত হিতবাক্য প্রয়োক্তা ও সরলচিত ও শিষ্ট ও সকলদশী যে জন, তাহাকে সভ্য বলাযায়। এই সভ্যের যে ধর্ম তাহার নাম সভাতা। সভাতাছারা সকল জন ও রাজস্মীপে মান্ডা ও রাজা প্রদৃতির প্রিয় হয়। অতএষ সদাচার ও উত্তম অথচ প্রিয় বাক্য ও নীতি শিক্ষা ও সরসকাবাযুক্ত বাকা প্রয়োগ ও মারলা ও শীলতা ও নমুতা ও দ্রিতাপুর্বক কর্মাচরণ করহ, যে তদ্বারা প্রম দুখী ও দভ্য হটনে আর সকল লোকে আদর করিবে। আর এই সভ্যকে লোকে শিক্ট কহেন। অতএর শিষ্টতা ও সভাতার ভেদ নাই। সভাের গে সমস্ত ওণ, তাহা বাল্যাবস্থাবধি অভ্যাস করিলে হয়, নতুবা বয়োধিকো কদাচ হউতে পারে না, কেবল ইহার বৈপরীতাই হয়। এবং উত্তম বাক্যপ্রয়োগ মধ্যে ত্রিরোধি কলর্ব শব্দ প্রভৃতি কর্ণ ও বিতখাবাদিত্য ও চাৎকার প্রস্কিক কথন ও অভিহান্য করণ ও চক্ষুর কুৎসিত ভঙ্গীকরণ ও জ্রকৌটিস্য ও रकुरकोर्টिना ও অন্যাঙ্গ ভঙ্গীকরণ ও কুটিলভা ও অপ্পদর্শিক্ত ও অসদাচরণ এই সকল সভ্যতার বিপরীত ধর্ম জানিবা। বিপরীতাচরণদারা তাহার হানি ও ভুচ্ছতা ও নীচতা ও অনাদ্র সকলেই করে আর অভারা বরৎ অহস্কার প্রকাশ হয়, অতএব হে বালকগণ, ভোমরা সভ্যতা বিষয়ে সতত চেটা কর্ছ, অধিক বয়দে কিছু হটবে না, বর্ণ ট্ছার বিপরীত হটবে, তাহাতে কেবল নিন্দা ও মনস্তাপ প্রস্তি প্রাধি হটবে।

ইহার উদাহরণ। সূতনামক এক শুদুতনয় তিনি দর্মদা প্রিয় ৪ সদকা ৪ সদাচারী ও দর্লচিত্র ও শিক্ট ও সমদশা ও দর্শকাব্যযুক্ বচন প্রেরাকর্ত্তা ও নীতি এ প্রিয়বাদী ও হিত্রাদী ছিলেন, এই হেতু তাঁহাকে সকল লোক মান্যতা ও আদর করিত, এবং তাঁহার সভ্যতা মন্য মুশ্ধান ও যোগি ও সমাধি নিষ্ঠ ও সকল শাস্ত্রজ ও জানার জ ও জানার কুরিয়াছিলেন, তাঁহারাও ঐ সত্যকে আদর পূর্পক বক্তর প্রদান করিয়াছিলেন, অতএব সূত্র যে কিরুপ সভ্য তাহা কিকহিব। অপর এই সভ্যতা হেতু বিশ্বমান্য ও ধন্য হউয়া পর্মজান প্রাপ্তি পূর্কক পরম সূথ পাইয়াছিলেন। অতএব তোমরা সভত দাধু দমাপে সমাগ্রমন করিয়া সভ্যতা যদ্দারা হয় তাহার সর্কাদা চেন্টা করহ। যদ্যপি চেন্টা না করহ, ভবে ইহার বৈপরীত্যে বিপরীত ফল ভোগ করিছে হইবে।

1X.—Faithfulness in promises.

প্রতিক্তা রক্ষা অবশ্য কর্ত্ব্য।

আমি এট কর্মা করিব, এট প্লার যে কথন তাহার নাম প্তিজ: বিজ্ঞদিগের উচিত হয় পুর্বে বিবেচন। করেন যে এই কার্য্য মৃদাত कि मुःगाधा, এবং এই कार्या कत्रां आमात क्रमण आष्ट्र कि मः, আমন্ত্র যদি যোগ্য হয়েন, তবে পুভিজা করা কর্ত্রা; কারণ পৃতিজ: করিয়া যদি পুতিজাত কার্য্যে অসমথ হয়েন, তবে পুতিজাতস্কল্য নিন্দা ও মিখ্যাবাকা হয়, তাহাতে বিজ্ঞাবিজ দাধারণ জন দমীপে ভুক্ততঃ পুাপ হয়েন। আরু কোন জনের অনুরোধ কিয়া লজ্জা পুযুক্ত যে পুঙিজা করা দে অতি অজের কর্মা, গেছেতু পৃঙিজা কোন কারণ বশত ভগ্না হটলে সুত্রাং মে অনুরোধ বার্থ আরু লজ্জাও দিধণা হয়। আরো তদ্তির বাক্যের মিথ্যাত্র ও পুতিজাভত্মজন্য দোর ও সকল সমীপে তুক্ততা হয়, মতএব তদপেক্ষা প্রতিকার পূর্বের লজ্জা ভয় ও অনুরোধ পরিত্যাণ পুর্বাক প্রতিজা না করাই উত্তম। অপর কুংগিঃ অজ জনগণ অনায়ানে শীঘু পুতিজা করেন, কিন্তু পরক্ষণে তাহা আৰ চিত্তে উদয় পায় না। যেমত অভিশয় পুরলতর বায়ু শীঘু আইদে, কিল প্রক্ষণে নিবৃত্ত হয়, তাহার ন্যায় জানিবে। আর তাহাদের পুতিজাভদে যে দোষ ও নিন্দা ও ভুজ্তা ও অবিখান ইত্যাদি হয়, তাহা অভঃকরণে স্থানদানও করে না। আর বিজ মন্ধ্যগণ অনেক বিবেচনা পুত্রক বহু বিলম্বে যে কাৰ্য্য দাধনযোগ্য ও যাহাতে ক্ষমতা আছে, এমত কার্য্যে নিয়ম ও পুতিজা করেন, আর দেই পুতিজারক্ষাথ পাণ দান করিয়াও কাষ্য সাধন কবেন। অতএব তোমরা বিবেচনা প্রবৃক্ত প্র-ডিজাও নিয়ম করিবা, যাহাতে প্রতিজা ও নিয়ম বৃহ্ণা পায়: কেননা যদ্যপি রক্ষা নাহয় তবে লোকে নিদা ও তাচ্চল্য ও তুচ্ছতা ও অবিখাস করেন।

FROM THE SEA OF KNOWLEDGE

क्कानार्वः ।

I.—Advantages of learning.

বিদ্যার ফল।

দকল শরীরাপেকা উত্তম অভিদ্লত যে মানসদেহ, এই দেহরূপ য়ে ক্ষেত্র উছাতে বিদ্যারূপ যে কৃষ্ণ, ডাফা রোপণ করিলে ডাফার যে সকল নানাবিধ উত্তম কল জন্মে, সে সকল ফল প্রাপির নিমিত কোনু জনের নালোভ জন্মে? অথাৎ মকলেরি লোভ হয়। 'মার সে^ট ফলাথ সর্কাসাধারণেট বিদ্যা বৃক্ষে আরোহণ আকাশ্কাকরেন। যে যেহেতু অন্যান্য ভূমিতে সকল ফল জয়ে না, কোন শ্বান বিশেষে কোন ফল জয়ে আরু মরুভ্যাদিতে কিছুট ফল হয় না। কিন্তু দেহরূপ ক্ষেত্রে দকল ফলই জন্মে যাহা তিভবনে দফ্পাপ্য তাহাও পাওয়া যায়। এবং অন্যান্য কৃক্ষ আবোহণে কণ্টকাদি নানা উপদুব আছে ও বহুত্র ক্লেশ ও আয়াস পাইতে হয়, আরু মরণ সন্ধা-বনা আছে; যদ্যপি পতন হয়, তবে প্রায়ুট মূত্য হয় থেবং অতি উচ্চন্থ ফল প্রায় পাওয়া যায় না, আর এক প্রকারি ফল। বিদ্যা বৃক্ষে উঠিবার উত্তম নীতিরূপ দোপান আছে, এবং ইহাতে কণ্টকাদি কোন উপদূব নাই, অত্যপপ পরিশুম, ও আয়াস হয় না, কেবল চিহ্বামাত্ৰ। এবং এই বৃহেক উঠিলে কদাচ বহুবাধাদিৰাবা পুতন हर सा, मतरभद महावसां उथारक सा, कांद्रश विना। तृक्कारवाही मनाहै कीरनगूरु, डाहाद भद्रभ हत्र नी, अर्थाय भद्रित दिनावादा कीरन-^{মু}কের নাায় প্রকাশ থাকে।

এবং অন্য বৃক্ষের উচ্চস্থ ফল প্রায় পাওয়া যায় না, বিদ্যাবৃক্ষের শ্নোপরি দীমাঙীভ উচ্চস্থিত ফল আকর্ষাদি ব্যতিরেকে অনায়াদে পাওয়া যায়। অন্যান্য বৃক্ষের এক এক প্রকার ফল, এই এক বিদ্যাবৃক্ষে নানারপে ফল জন্মে। অন্য অন্য কৃক্ষ ও ভাহার ফল দেই স্থানেই শোভা পায়; এই কৃক্ষ ও ইহার ফল সর্বাত শোভা পায়, তবে অন্য কৃক্ষের ফলে মেই বৃক্ষ ও ফল কেবল দীপ্তি পায়,এই বিদ্যাবৃক্ষের ফল সকলকে দীপ্তি-যুক্ত করেন। এবং অন্যান্য ফল জাতি বিশেষে পরিত্যাগ করে, ইহার ফল কোন জাতীয়ের পরিত্যাগ ঘোগ্য নহে। অন্যান্য ফলের অক্ অষ্ঠি প্রভৃতি হেয় অংশ আছে, ইহার কিছুই হেয় নাই। অন্যান্য ফলের আহাদ সকল মুখে উত্তম বোধ হয় না, এবং কোন ফল আমাদযুক্ত, কোন কোন বা বৈলক্ষণাযুক্ত, আরু দেই দকল ফলের আম্বাদের দীমা আছে কিন্ত বিদ্যাবৃক্কের ফলে দর্মমুখে উত্তম আম্বাদ-পুহণ হয়, এবৎ দকল উত্তম, আম্বাদের কিঞ্ছিরলক্ষণ্য নাই। এবৎ ইহার আশ্বাদের দীমা নাই; যত ভক্ষণ করহ ততো আরো অধিক শ্বাদ বৃদ্ধি হয়। অন্যান্য বৃক্ষের ফলে র্সের অপ্পতা, এবং একবার ভোজন করিলেই শেষ হয়; বিদ্যাপৃক্ষের ফল কেবল রসময় আর চিরস্থায়ি; যতো ভোজন করিবে, ততো বৃদ্ধিকে পাইবে; এবৎ যে স্থানে হস্তক্ষেপ করিবে, দেই স্থানেই ফলপ্রাপ্তি হইবে। অন্যান্য কল ভক্ষণে ভৃপ্তির শেষ আছে, ইহাতে ভৃত্তির শেষ জন্মে না৷ যেমন ভুমরগণের অন্যান্য পুষ্পমধুপানে তৃপ্তি জন্মে, কিন্তু আমু মুকুলে যত মধুপান করে, ততা আরো পান করণে ইচ্ছা হয়, অর্থাৎ তাহাতে তৃপ্তি পরিপূর্ণা হয় না; তাহার ন্যায় অন্যান্য বৃক্তের ছায়ায় অভিরৌদু সময়ে আইলে দুখ জন্মে, বিদ্যাবৃহক দূরে থাকুক এই বৃহক যে কেতের আছে, সেই কেতের বায়ু সেবন করিলেও সকল আপদ শান্তি পূর্মক পর্ম সুথ হয়।

বিদ্যাব্দ্দের ফল। দুঃসাধ্য অতি প্রবলতর শলুসমূহের পরাজয় করণ, যোগ্যাযোগ্যাযোগ্য কালিং, কালিং, অর্থ, ধর্মরেপ, সৌদর্শ্য, সূথ-টোগ, মঙ্গল, জয়, রাজাদিকর্তৃক পূজাতা ও মান্যতা, ধর্মাধর্ম বিবেচনা, দুক্পাপ্যের প্রান্ধি, তত্তবপর্মসূথ, প্রমেখরবোধ, ইল্রিয়ন্মন, শম দম প্রভৃতি, দয়া ক্ষমা শান্তি আদি হয়, অতএব হে বালক সকল, ভোমরা কিঞিৎ যতন করিয়া মাতা পিতা প্রকৃত্ত উপদেশরুপ পথ দিয়া বিদ্যান্ত্রপ বৃদ্দে আবোহণ পূর্বক উত্তম দকল ফল মড়োগ করহ। যদ্যপি এই বৃদ্দে আবোহণ না করহ, তবে মূর্থতারুপ, দম্দুদ্দেহরুরপ ভূমি মগ্গা হইয়া পতিতা ইইলো, প্রবলতম বহুতর তবঙ্গে মূর্ণায়মান করাইয়া অভিক্রেশরুপ নিবিড্দহে নিমজ্জন পূর্বক অধ্যাগামি করাইবে, অভএব বিদ্যা বৃদ্ধারেছণে অবিরত রত হও।

II .- Method of sharpening the Intellect.

বুদ্ধির তীক্ষতা করণোপায়।

চিত্তবৃত্তি অদৃষ্টপদার্থ ঘাহার ছারা দৃষ্টাদৃষ্ট যাবৰ পদাথ প্রকাশ পায়, তাহার নাম বৃদ্ধি। বৃদ্ধি গো মহিষ্যাদিরো আছে, কিন্তু তাহা-দিগের বৃদ্ধি কেবল আহার নিদ্রাদি বিষয়ে থাকে; মনুষোর বৃদ্ধি দৃষ্টাদৃষ্ট ষাবদীয় পদার্থ বিষয়ে দীপ্তি পায়, আর চক্ষুরাদির অভীত যে প্রমেশ্বর ভাঁছাকে বন্ধিৰারা জানা যায়। অতএব সর্মশান্তে স্কলেকে মন্যাদেতকে উত্তম কহিয়াছেন। এই বৃদ্ধি ব্যক্তিবিশেষে কোন দোষ বশতঃ স্থলা, ওণবিশেষ প্রযুক্ত দুক্ষা হয়েন, দেই দুক্ষাতা যাহার দারা হয় তাহাকে উপায় বলা যায়। এই বৃদ্ধিকে মনুষ্য গোমহিয়াদি আপারের বিভিন্নতায় নানা কহিয়া থাকেন, ফলতঃ সর্প্রসাধারণেরি এক, যেমত এক বায়কে শরীরের মধ্যে স্থান বিশেষে দ্বিতি হেতু প্রাণবাযু উদানবাযু ইত্যাদি নানা প্রকার বলা য়ায়, তাহার ন্যায় এক বৃদ্ধিকে আধারভেদে নানা करिया शास्त्रत। मठठ व्यमुक्ते अमार्थ हिन्द्रत, गुक्तित कात्र (याश कत्र, শিल्भगाञ्चामित्व नित्स्त्र मि ଓ अनुष्ठान, मलनागक निर्मालक गृरामिष्ठा चक्रम, मुक्कार श्रेमार्थ्व व्यविवृत्त आस्त्राहमा, वामानूवाम बाता गृक्तिव অনুসন্ধান করণ ইত্যাদিবারা বুদ্ধির তীক্ষতা একে। যেমত অতি সূক্ষতম লৌহনিমিত শুচ প্রভৃতি ধ্লিপ্রভৃতিদারা আছেল হউলে চকুদারা কদাচ দৃষ্ট হয় না, কিন্তু প্রস্তুর বিশেষভাবা তাহাকে আকর্ষণ করে তাহার ন্যায় অদৃষ্ট যে প্রমেশ্বর, ওাঁহাকে বুদ্ধিবারা প্রকাশ পাওয়াইয়া দেয়-গোমহিষ্যাদি ভুণাদি ভক্ষণ করে, এবং দরিদুগণে শাকাদি ভক্ষণ করে, অতএব ভাহাদিনের বৃদ্ধির স্থুলতা হয়। আর ধনিরানির্মালদ সৃহাদি সো-জন করে, তল্পিমিত তাহাদিগের বৃদ্ধির তীক্ষতা; তদপেক্ষা ঘূপতিপ্রভৃতির অধিক বৃদ্ধির তীক্ষতা। এবং যেমত কুম্রিয়া কটিকে তৈলপাদী অর্থাৎ আর্মজা সভত চিল্লাকরত তক্ষয় হয় তাহার ন্যায় সভত সূক্ষ পদার্থ চিত্নভারা বুদ্ধি সূক্ষমতা পায়। আর যেমত দিবনে জাগুদ^নভায় যে পদার্থ আছ্লাদ পূর্বকে অবিরত দর্শন করেন, ম্বপারস্থায় দেই পদার্থ চিত্তে উদয় হয়, ভাহার ন্যায় শাস্তার্থ চিন্দনরারা বৃদ্ধির হীক্ষতা চট্ট্রা मकल পদার্থের বোধ জন্ম। এবং যেমত ঘর্যপরারা প্রস্তরাদি সূক্ষাতা পাই-য়া অতি সুশোভিত ভূষণ হয়, তাহার ন্যায় বাদানুবাদবারা বুদ্ধি সুক্ষাতা পাইয়া অভিশয় শোভা পায়। অতএব হে বালকণণ ভোমবা দর্মদা উক্তরপ আচরণ করহ, তাহাতে বৃদ্ধির তীক্ষতা হট্যা দকল পদার্থ। বোধগম্য করিতে পারিবা, আর অতি জ্ঞরায় উত্তম বিদ্যা হইবে, ভাহাতে মানাতা সূধ প্রভৃতির প্রাপ্তি ছটবে।

রূপনারায়ণ নদ পুলিনবাসি রূপনারায়ণ নামক এক ব্যক্তি ছিলেন,

তাঁচার অত্যম্পবয়দে মাতা পিতার বিয়োগ হওয়াতে কিছুই বিদ্যাভ্যাদ করেন নাই, তাহাতে সর্বাদা অস্থকরেণে ক্লোভ জ্যে এবং সর্বাদোকে অপমান করে আর নানা দুঃখ পায়। অনন্তর এক দিবস এক অধ্যাপক সমীপে সমাগমন পূর্বাক তাহাকে জিজাসা করিলেন, মহাশয়, আমার বুদ্ধির অতিশয় মূলতা, কোন শাস্তার্থ ও বাস্বাক্যাদি বুঝিতে সম্থ হই না, অত্এব বৃদ্ধির সুজনতা হয় ইহার কোন উপায় কহিয়া দিতে পারেন ≀ অধ্যাপক কহিলেন, যে শুন, ইহার কি আশ্চর্য? আমার সহিত ভূমি আগ-মন করছ। এই বাক্য বলিয়া উভয়ে একত হইয়া এক অহ্যতম দরোবর সমীপে ঘাইয়া তাহার প্রস্তুরময় ঘাটের সোপানোপরি দশন করিলেন, যে কতক গুলি রমণী কুড জলপূর্ণ করিয়ারাখিয়াছেন। ঐ অধ্যাপক এ ठाक्टिक कहिल्लन, या न्या, এই প্রস্তুবমর সোপানোপরি মুখার কলদ স্থাপনহেতু প্রস্তুর ক্ষণিতা পাইয়াছে, ইহা তুমি দশন করিতেছ, আর বুদ্ধির তীক্ষতা হউবে উহার কি আশ্চয়া? অতএব বিজ্ঞাহ দদাশা-ঞালাপাদিরপ ঘর্ষণ করহ, ডাহাতে অবশ্য বুদ্ধির সূক্ষাতা হইবে। আরো দেখ, রজতে কাঞ্চন যোগ করিলে রজত নির্মাল হইয়। উত্তমতাকে পায়, আরু শীশক বোগে অপকৃষ্টতা পায়। তাহার ন্যায় তেজো-২১শাধিক্য ঘুতাদি ভক্ষণ ঘোগে বুদ্ধির উত্তমতা হয়, আর শাকাদি ভোজনে বুদ্ধির স্পতা জন্ম। আর সামানা সৃত্তিকা সেমহ প্রস্তুর লোগে প্রস্তরতা পায়, তাহার ন্যায় বিরানের বৃদ্ধিদংসর্গে দামান্যা বৃদ্ধি তল্মরতা পায়। এবং শিশ্পী যেমভ শিশ্প করত ক্রমশ উত্তম শিশ্প করে, তাহার ন্যায় শাস্ত্র আলোচনা করত বুদ্ধি উত্মতা পায়। এই দকল উদাহরণ मल्यान कृतिया क्रथनावायन मस्त्री गाक्तिया, विवासमह जालाशानि, ঘৃত কপূর প্রভাত ভোজন, ও বাবানুবাদ করিছে লাগিলেন, এইরুপে কিঞিৎ কাল বিলম্বে কপনারায়ণের বৃদ্ধির ভীক্ষতা চইয়া সকল শাস্ত্রাথ পরিজাত হওত সর্ধত মানা ও সুখী হউলেন। অতএব হে শিশুগন ভোমরা সর্বানা উক্তরূপ আচরণ কর্হ, তাহাতে সভাভা পর্মজান প্রম সুথ পাইবা।

অন্য উদাহরণ। মহানদণীর নিবাসি মহানদ্দ নামা এক ব্রাহ্মণ জিলেন, তিনি সর্বাদা এক ঘোটকোপরি আরোহণ পূর্দ্ধক নানাদেশ ভূমণ করিবেন, আর ঐ ঘোটকের আহার প্রদান ও তাহার মুগ স্বাচ্চনার গৈতৃক অথ বিনফ হইলে পরিবার প্রতিপালন করণে অত্যন্ত অসমর্থ ইউলে ভাহার পরিবার পরিবার পরিবার করেন, এবং প্রতিবাসিরা উপহাস করেন, তথাপি মহানদ্দ ঐ ঘোটকের প্রতি রেহের ন্যুনতা করিবে সমর্থ হয়েন না, কেবল, পূর্দের নায় ঘোটক লইয়াই বেড়ান পরে এক দিবদ পরিবারের আহারাভাবে অভিশয় ক্লেশ দেখিয়া ঐ ঘোটকেরে

প্রিকারি ক্রিয়া বন্মটো গ্রম ক্রেড এক প্রিড স্থ স্কুশ্ন হট্ন। ভান্তৰ মহান্দ ঐ প্ৰিতাহ তাৰে হ'ব কহিলে প্ৰত্মহান্দ্ৰে অধা-লন্থে নিম্ফু ক্রিলেন, কিন্তু মহান্দ যাহা অস্তান ক্রিছেন ভাহার आहि श्रांसारगांश करवेस सा. किटल (५३ (श. उँ६५४ सिम्राइड अक्षा) চললাট্র থাকেন। ইতিমধ্যে এ পণ্ডির মহানন্দকে জিডা্মা ক্রিলেন, ভাল কি নিলিও অনামনক থাক, শাংলালে কিছম মনোমোল কৰ নাই হাহাতে মহানদ্দ কভিলেন, আমাৰ দেই ঘেটেকেৰ প্ৰতি মুক্দা অতংক্রন, শাস্তার্থ চিতা করিছে পারি মা। পরে এ পাওও মহামন্ত্রক ক্রিলেন, ভুমি দেখা, ঘেটিকে কি ১ইবে? আপনাৰ চেত মহ স্থ্যু थांकिरत मा, जात जरमात् कथा कि किठिटी (करल तिमाहि रूप प স্থাপুরা ও প্রমেধর্জান্নায়িকা; অভ্রব ভুমি শাঝালাপ, শাফাল্যাস, ওদন্সকান, শাস্ত্রিরানি স্প্রনা কর্হ। ভান্তুর মহানল ঐ প্থিতের সাক্রান্ত্রপ ভ্রাচরণ্ডারা অভিশীঘ স্পৃথিত হন্যা ঋদেশ স্থাগ্যন প্রক্র দেশাবিপতি স্মাপে প্রতিপন্ন ১ইলেন, প্রে মহান্দের আহিশ্য मण छ बेयरी धार्षि ठडेल । अडबर माघालाधामि अरमा कनरा, যন্ত্ৰি জাৰায় স্পিন হীক্ষত হট্যা বিদ্যা ক্ষেত্ৰ দিয়াৰ বে ফল হাহ বিদ্যা প্রকরণে অনুসন্ধান করিত।

III.—Good Company.

मदम्पम्।

সংপ্রে সাপু, ভাহার সভিত গে ম্যুক, হাহার নাম মংখ্যক বিশ্যা, রেষ, জ্রোধ, পরের ভানিট রহিছ, জ্বাজ পরেলাছায় পালংহ, স্ন্সাচারে সংস্কু, ক্রজভাগালী পে স্থাকি, হাহার নাম মাধু। এই মাধু স্বাহারে সংস্কু, ক্রজভাগালী পে স্থাকি, হাহার নাম মাধু। এই মাধু স্বাহারে সংস্কুর ক্রজভা প্রিছার প্রায় হাহার। কাজন সংস্কার্থ প্রায় হালার কাজন সংস্কার কাজনত প্রায় হালার নায় মাধুর সভিত স্থাকি হালার নায় মাধুর সভিত স্থাকিছে গুল্লার নিন্নার গ্রাহ হালার নায় মাধুর সভিত স্থাকিছে গুল্লার নিন্নার গ্রাহ হালার কালার সংস্কৃতিক হালার কালার স্থাকি হালার কালার স্বাহার স্থাকিছে হালার কালার প্রায় প্রায় স্বাহার স্থাকিছে হালার প্রায় প্রায় স্বাহার স্বাহার স্বাহার প্রায় স্বাহার সংস্কৃতিক স্থান স্বাহার স্বাহার স্বাহার স্বাহার স্বাহারির সংস্কৃতিক স্বাহার স্বাহার স্বাহারির সংস্ক্রির স্বাহারির স্বাহার স্বাহারির স্বাহারির স্বাহার স্বাহার স্বাহার স্বাহার স্বাহার স্বা

ভাষা ইত্যাদি বলে; আর যদাপি মনুষা উত্তম সংস্থা করে, তবে 🕫 ভাহার উত্তমতা হইবে ইহার আশহর্য কি? আবের দেখা, অঙ্গার স্বাভাবিক কৃষ্ণদর্গ, কিন্তু অগ্নিসহ সংযোগে মীয় মভাবকে পরিত্যাগ করিয়া অগ্নিদ হয়; অতএব মনুধারণও দাধুদং দরে মনের মালিনা দুরীকৃত করিব: সাধুর ন্যায় সাধুস্বতাব পায়। আর গেমত চুলক মনি লৌহকে আ কর্ষণ করে, তাচার ম্যায় সংসংসগরূপ যে মণি, তাচা অতি কটিন হুদয় যে মন্য্য ভাহার মনোরূপ যে লৌহ তাহাকে আকর্ষণ কৰিন দয়াদি রূপয়ভাবে স্থাপন করে। আর জান্য আন্য ওণ্মহ সংযোগ ব্যতিরেকে ফল জালে না, কিন্তু মতের সল্লিধান হেতুফল হয়। তাহাব অন্য কি কহিব? ঘদ্যপি কৃষ্তি হাক্তিকে উত্তম ব্যক্তির নিকটে দেখে, তবে লোকে দেই কুমতি ব্যক্তিকে প্রশংদা করে। এবং নেমত লেং ও শুসক কাঠ প্রভৃতি অগ্নির উত্তাপে নমুতা পায়, তালার ন্যায় সাধ্যরেপ অগ্নিদ্বন্ধে লৌহাদি হুলা যে বাক্তি ভাহারাও নমুভাকে প্রাথ হযেন। অভএব ছে বালকগণ, ডোমরা স্ফুলা সাপুর সহিত সংস্গ ও ভাহাদিগের উপদেশ গুত্র কর্ত, তদ্বারা অভংকর্থের যাসদীয় মলা পরিতাগ করিয়া মন সংপ্রেথ গমন করিবে, তাতাতে স্পলা স্চিতা হউকে এক मशामि जमाहित, उम्राता शृंजारा, मानारा, मुण, मरलाहि, मिल्लामाञ्चादि জান, পর্ম জান প্রাপ্তি হইবে।

ইহার উদাহরণ। দেবগুলি নিবাণি দেবনাথ নামে এক ব্যক্তি ছিলেন ভাহার অভিশৈশবাবস্থায় পিতৃমাতৃবিযোগ হওলাতে কদাচ সংসংসর্থ কিয়া অধ্যয়নাদি কিছুই হয় নাই, কেবল তিনি ভিক্ষা ও কুক্মানাস কাল্যাপন করিতেন, কিন্তু ভাহাতে ভাহাকে লোকে নিন্দা করে ও নান' পীড়া দেয়, আরু কেহই তাহার মহিত আলাপও করে না; তাহাতে দেস-নাথ অত্যন্ত দুঃখিত হউয়া কেবল কোভ্যাত্র করেন, কিন্তু দৃঃখশাঝিত কোন উপায় করেন না। পরে দেবনাথ এক দিবস নিশিমময়ে গামেব প্রাস্কভারে বনের বল্পে এক ব্যক্তিকে সন্দর্শন করিয়া ভাহার বন্ধানি পুহণার্থ উদাত হউলে ঐ বাক্তি দেবনাথকে কৃতিলেন, শুন ২ আমা^{কে} তুমি প্রহার করিও না, এই স্ক্রাদিলও; কিন্ত ভোমাকে জিজাসা করি বস্ত্রাদি অপহরণ করিয়া ভোমার কত কাল্যাপন হইবে? বর্ৎ অ^{তি}-শীঘুই রাজাদিরারা অভিশয় ক্লেশ পাউবা। অতএব তোমাকে আদি বলি, তুমি দেখ, বনের পক্ষিকে মনুষে)রা ধরিয়া তাহাকে আপনা দিগের শব্দ শিক্ষা করায়; দেই শব্দ শিক্ষা করে যে পক্ষী, ভাষাতে মন্য্যগণ কত আদের করিয়া যতন পূর্বক উত্তম হ দুব্য ভক্ষণ করা^{য়} আরু তাহার বিষ্ঠাও হস্তদারা পরিফ্লার করে; অতএব তুমি আমার সহিত আইস। ইহা বলিয়া দেবনাথকে দঙ্গে লইয়া এ ব্যক্তি স্বীয় গৃতে গমন পুর্বেক ঐ দেবনাথকে আহার প্রদান ও নীতি রীতি শিক্ষা করা^{ইতে}

লাগিলেন, পরে জামে > দেবনাথের অধ্যক্ষণে স্থেক। স্বাধাপ, অধ্যয়নাদি কর্ণে প্রত্তি হলন এবং উজ সাপু স্থাপে স্কলে বাস কলত তাহার উপদেশ গুল্গ করেন। কিছুকাল বিল্পে দেবনাথের এইরপে নানা শাজে বিদ্যা হইলে তান স্পত্ত স্থাত, মানা, পূছা হইলেন, পরে অথ, সূথ, প্রমাথ, প্রম্থ পরিপ্রাথি হইল। অভ্যব স্থাপ্রস্থা বিল্লাভাবি কলতা না হয়। অথাং স্কলি লভা হয়, অভ্যব সাপুদ্য স্থাপ স্কলাই কলেতা না

V.—Bad Company.

কুদ°শের্গ বিষয়।

ক্ষৎসর্গ অথাৎ অসতের সহিত সন্ধর, তাহা কত্ত্ব্য নহে। ক্রমাচারী া স্যক্তি ভাষার নাম অসহ, অসতের স্থিত প্রাতি ও স্থ্যাস এবং मञ्ज आलालामि कतिरल मण्डा तत्व अमरकारमा ध्रत्वि पर्या, शबार ब अमरकार्या (य (होरा)वि डाठा घटि, उन्नाता निका ९ ताक्षप्रधान নানা ক্লেশ পাইতে হয়। যেমন মপুশাতক কলক মধ্যে যদি মক্সদ। থাকে, ভবে কোন সময়ে ভেক কলক আঠারার্থে আগত ক্রীয়া কলক মহ মেট সপশারককে ভক্তণ করে। নেখা, আহি কৃথ্যিত যে কঞ্ক তাহার ষ্ঠিঃ সংখ্যা তেই মুর্পের ভজা যে ভেক, এংকট্র মর্প্রাধ্ক ভক্তা ইয়, ভাষার ন্যায় কদংসর্গেড্ দংব্যক্তিও বিন্দী হংগ্রা। এবং বেগন अভाষতো উত্তম যে দুফা, ভাষাতে এয়া কিলা গোমন মদক करेल समे দ্রু বিকৃতিকে পাস; আরু নেমত চুর্ণ সংযোগে হরিদা ধিকৃতিকে পাম, গছার ন্যায় উত্তরস্থান যে মনুষ্য, তিনি কুমংমর্গছাং বিকৃতিকে পা-যেন। দেখা, চোর ও দস্য প্রস্কৃতির সহিত সহবাস করিলে মদ্যাপি চোম্যাদি में करत, उधालि स्त्रारक अञ्चारक मिला करत. धटा (5)वालिकरल মপরাদগ্র হট্যা কথন পাড়া পাট্ডেও হয়। মত্রশ কুমংমগ কলতে কন্ত্রা নতে।

ক্ষংমর্গ বিষয়ে উস্ভিরণ। অটক নদীছীর্থ বিনোদ নামক এক বাজি, ছাছার অতি সংস্থভাব; তিনি সতত সংক্রমান্তি, প্রানিউর্বিথ, প্রউত্তেরত ভিলেন। ভাছার এক দুসুস্ত বস্থা চইল পরে এ দুসু প্রভি
দিবস বিনোদকে মন্ত্রণ দেন, যে দুসুস্তি কর্ণে অনায়াসে অনেক অর্থলান্ত ও প্রম্ম মুখ চইবে। এই রূপে অনেক কাল মুগণ নিতে > বিনোদের ক্রমশঃ কুক্রেম্ম মতি চইল, প্রেক্ত আন্নে স্বান্ত কুক্র্মা-চর্ণে রত চইলে লোকে অভাধ নিলা ক্রিণে লাগিল। প্রে এক দিবস গুমর্ক্ত নিশিযোগে এক গৃহ্খালয়ে বিনোদকে বৃত্ত ক্রিয়া ভ্ৰহ্ণাং হাথাকে বিনষ্ট করিল। কিন্তু বিনোদের ভুাথা মনোগর, জিনি কোন কুক্মাধিত নহেন, হথাপি হাহাকে বিনোদের ভুাথা বলিয়া লোকে নিন্দা করে, এবং কখন ২ রাজাও পীড়া দেন। অওএব কুক্মির স্থিত সহবাস করিলে লোকাপবাদ ও অথাত রেশে হয়।

V .- Kindness in speech.

প্রিয়বাক্য বিষয়।

হিত্তমক অথ্য আহলাদপ্রদ ও মথার্থ যে বাক্য তাহার নাম প্রিয়বাক। প্রিয়বাক্য সর্মদাই কহিবে। হিওছনক কিন্তু প্রাবণে কটু যে বাক্য, ভাচ প্রিয়ুবাক্য নহে। অনিট্রায়ক অথ্য আজ্ঞানপ্রন যে বাক্য মেও অপ্রিয়। কেবল আপাড়তঃ প্রবণে অস্থ জন্মাইলেও যে বাক্য যথাথ হয়. ভাষাও প্রিয়। সর্বাদা সন্ধানারণকে প্রিয়বাক্য কহে যে জন সে তাক্ত সকাপ্রিয় হয়, সকাপ্রিয় হইলে সক্ত আদৃত ও স্মান প্রাথ হয়, তাহাতে অত্লা এখনা ও দুখ জনো। আরু দে তাকি কাতুর হইলে সকলেই কাতর হয়, এবং ভাহার উভম বিদ্যা ও জান প্রাপ্ত হউতে পারে, কেননা ভাষার হিভাগে সকলেই চেক্টিড হয়েন, আরু ওনিগণ প্রিয়ন্ত্র ट্যক্তিকে যাজ্ঞা করিয়া ওনদান ও নিগৃত সন্ধান দেন। এবং প্রিয়ন্ত্রন জন প্রমেধরকে জানিতে পারে, কারণ প্রমেধরের রচিত যে রীতিবর্জা তাহাতে দেই ব্যাক বর্তার। আরু দেখা, প্রমেধর অন্যান্য অঙ্গে অস্থি দিয়াছেন, কিও ভিজাতে অস্থি দেন নাই, কেননা ভিস্কাৰ অস্থি দিলে যদ্যপি কঠোর বাকা নিঃমূত হয়; অতএব বিবেচনা প্রায়ক প্রমেশর জিল্লাকে নির্দ্ধি করিয়াছেন। আরু কট্রাক্যের পর প্থিঠী মওলে ক্লেজনক কি.আছে। বল। দেখা, বর্থ নেত্রাঘাত কাষ্ঠাঘাতানি দারা যে ক্লেশ সেও ক্লুক্লেশ। অপ্রিয়বারী অকারণ জগতের শত্র। দেখ অপ্রিয়বাদী কাহার অনিষ্ট করে না? এবং যাহার হিত করিতেছেন দেই সকলেই তাহার প্রতি জ্লুছ হয়। আরো দেখা, বন্ধ ময়র কোকিল প্রভৃতির কোন গুণ নাই; পোষণকর্তারও হাহারা কোন উপকারক নহেন, কিন্তু প্রিয় রবহেত অতিশয় প্রিয় হয়। আরু ত্রিতন্ত্রী ও বীণা প্রভৃতি সর্বাপ্রিয় ও আহলাদজনক, কেননা ভাহাহইতে মধব বব হয়। এবৎ বালকগণ কাহারো উপকার করণে যোগ্য নহেন; কিন্তু তাহা-দিগের বাক্যের মিষ্টভাহেত বালকমাত্রকেই দর্মলোকে ভাল বাদে, এবৎ তাহাদিগের বাকা শুবণে সকলেই আহলাদিত হয়েন। অতএব সতত সকলকে প্রিরবাক্য কহাই উচিত; প্রিয়বাক্যহেত্ ক্রোধির ক্রোধ-

ণানু, ছিনু, এবৎ অভিশিষ শৃষ্ট ইউজেও আনফীচরণ করিছে পারে নে'। ভাতুএব প্রিয়েশকা কথনইউছে বল সোৱা নাই।

প্রিরাক্য বিষয়ে উলাহরণ। হির্ণাক্ষ নদ্ধীর্লামি ভির্ণানামক এক ব্যক্তি ভিলেন, তিনি সহায় সংপাতি বিহান অতিয়ান আয়ে চর্ণ পোষণে অসমর্থ, কিন্তু অভিশয় প্রিয়ম্ব : তেই ভাষার আনষ্ট কিন্তা কোন আঘাত করিলেও ভাহাকে অভিন্যাক। ক্রিছেন না, এত্রিনিস্ত বিৰ্যুকে সকলেই ভাল বাসিত, এবং হিরুদ্যের কাহারো মহিত শঞ্চা ভিলুমা। ঐ হির্ণোর পিতৃশকু এক সাক্র ভিলু, মেও হির্ণোর প্রিয় লাকাকের মিত্রভাব প্রাপ্ত ইয়া ভাষার পিতার যে বিষয় বল পুরুক ল্টয়াছিল, ভাহা হির্ণাকে প্রদান করিল। পরে হির্ণা 'ল্লাসন কর্ণে প্রসূত হউলে ভাহার ওকু মর্শায়েসেতা অতিশয় বিদান হির্ণোর বাকে। আহিশয় সভ্টে হট্যা অতি লোপনীয় যে সকল বিদ্যা হাহাহির্গাকে প্রদান করিতে লাগিলেন: ভাহাতে অভিজ্ঞায় হিবণ্ডের শিশ্যশাস্থানিতে অত্যন্তম বিদ্যা হউল। পরে হিবণা সফর মানা ও পূজা এবং বাজ্যভা হটলেন: ভাছাতে অনেক অর্থাপিও প্রম্মণ হটল। পরে প্রমেখনে পর্মজান প্রাপ্ত হুইয়া চির্কাল পর্ম সংখ কাল্যাপন করিছে লাগিলেন। हि लिख्ना, होमहा मर्सना नीन कान कान भागामा मानात्वर ध्र স্বাক্য ক্রিবা, ভাহাতে স্প্তির ও শ্রুব্হিত হট্যা উভ্য বিদ্যা, অর্থ, সুখা, পর্মজান প্রাথ হইবা।

VI.—Mastery of the Passions.

इ जित्र प्रमन।

জানে জ্রিয় কর্মে জ্রিয় ভেদে ই জ্রিয় একাদশ হয়; হাহার মধ্যে কর্মে জ্রিয় পাঁচ, মথা হস্তু, পদ, বাক, এবং মলরার ও প্রসাবেরার; অপর জানে জ্রিয় ছয়, মথা চজ্যু, কর্ম, নামিকা, র্যনা, স্থেষ্, মন। এই মকল ই জ্রিয়েরা পরস্পার মালে পরস্পারের উপকারী হয়, যেমন চবণে কণ্টক প্রবিক্ট ছইলে চক্ষের দ্টি সহকারে হস্তু মেই কণ্টক নিগহ করে, এই রূপ মকল ই জ্রিয়ের প্রস্থার মহ্যাবিধা স্বভাবিধার হইয়াছে; এবং জীবের জীবন রক্ষার প্রথি ই জ্রিয়গণ বাদুশ বাজব হয়, প্রাম্থালে জন্য কেই এরপ নহে। কোন ভলে গমন করিছে হইলে নয়ন ও চরণ ছয় প্রধান সহকারী হয়, অন্থর বাক্যপুল্যাগ নাহাছে পৃথিবীর ভাবং কাল্য নিজ্মি ইউডেছে, বাক্যে জ্রিয় হাহা বিনা থাহা বিদ্ধান যুবান, এবং প্রবংশিল্য না থাকিলে প্রস্থার কোন কাল্য ইউডেপারে না; এই রূপে নামাতে নিখাস পুরাম ব্যহীত শ্রাবনাশা থাকিতে

পারে না। অপর জিলা ঘাচাতে তাবৎ খাদ্যদামগুরি আলাদ গৃহণ করা মায়, ছাহার সাহায়ে। আহারদারা জীবন রক্ষা হয়; এবং ১%, পুরোজনীয় তাবদ্ধ আহরণদারা বদনমধ্যে ওদনীয় পুদান করে; তৎপরে আহারের মারভাগ শ্রীর্থ শিরাদারা মক্ষ্রীরে ব্যাপ্ত হয়, অস্শিক্ট অপকৃষ্টাংশ মলবাবে বহির্গত হট্যা থাকে। এবং অক্ অর্থাং চর্মোন্ডিয়, যাহাতে গাত্রফাশ মাত্র শীতোক্তানির অনুভব চইতেছে, এই ইন্দ্রিয় মর্রকালে বিশেষতঃ অস্কর্নার ও নিদ্রিত সময়ে সপার্শগ্রাহিত্য শক্তিদারা অস্ত্রশন্ত্র স্পানিহইতে রক্ষা করে, এতদ্কিল শীতোদ্ধরায পুহণরারা নিয়তই জাবকে রক্ষা করিয়া থাকে। অপের ইন্দ্রিয় মন যাহাকে পণিতেরা সকল উল্লিয়ের প্রধান বলিয়া থাকেন; তাহা ব্যহীত পৃথিবীর কোন কার্ম্য নির্মাহ হউতে পারে না, মন শরীরের মধ্যে থাকিয়: বিবেচনা শক্তিদারা উক্ত ইন্দ্রিয় সকলের তাবং কান্য সমাধা কবে। এই সকল উপকার্দারা ইন্দ্রিয়ণণ দেহ্যাত্রানির্ব্যাহেতে প্রুম মিএ-স্থকপ হয়; পণ্ডিতেরা কছেন, ইহাদিগকে যে আল্লিকশে রক্ষণ ভাহার নাম উল্রিয়দমন, যেহেতু ইল্রিয় চয়কে জয় করিয়া ভাহাদিধের নিজ ২ বিষ-য়েতে নিয়োজিত করিতে পারিলেই তাহারা জীবকে সৎসার্জয়ী করে। কিন্তু যদ্যপি অধীনতাপাশমূক হউয়া হাং বিষদে স্বাধীনরূপে স্বেজা-চার ব্যবহার করিতে অবকাশ প।য়, তবে জীবকে অনায়ামে অব্সাদ সমুদ্রে মগ্ন করিতে সক্ষম হয়। তাহার উদাহরণ দশন করাণ দাইতেছে মনোযোগ পূর্মক বিবেচনা করিতে হইবেক। তল্রপুভা নামক রাজ্যেও উরুপুতাপ নামা এক নৃপতি ছিলেন। ঐ পৃথীপাল শ্বীয় প্রবল প্রতাপ দারা পৃথীমওল মধান্তি তাবং পৃথীপালাদগের পুতাপরূপ মহাদেনিক উপরিভাগে সিৎহাসন স্থাপন করিয়া সমাগরা পৃথীর স্মাট হউলেন, ফলতঃ দুশিক্ষিত দৈন্যাধ্যক্ষতা ও সংগ্রাম ক্ষমতাতে উগুপুতাপান্পতি শাদন দময়ে দমকালীন লক্ষাং ভূপালমধ্যে এক ব্যক্তিও এমত ক্ষমদান ছিলেন না, যে বিপক্ষ হইয়া উক্ত মহারাজকে লক্ষ্য করেন; সকল রাজারাই মহাপ্রহাপালিত উগুপ্রহাপ রাজ্যেশরকে ঈশরতুল্য জ্ঞান করিয়া কর প্রদান করিতেন। অতএব দোর্দওপ্রতাপ উনুপ্রতাপ মণ্ডলেশর ধরণা-মণ্ডলে কাছাকেও ভয় করিতেন না। এক কালীন পৃথিবী জয় করিয়া ৰয়ংরাজ্য শাসন বিষয়ে অবসর হইলেন, এবং প্রধান মন্ত্রির প্রঙি ভাবদ্ধারাপণি করিয়া রাজ্যের মধ্যে স্বেচ্ছাচারিজ্ররূপে ইন্দ্রিয়াদির সুপভোগ করিতে লাগিলেন; ভাহাতে রাজ্যরক্ষক নুপতি যদি স্বা১ ভক্ষক হয়েন, তবে ভাহার পক্ষে প্রজাগণের যে পর্যান্ত বৈর্ক্তি হটবার সম্ভাৱনা তাছাই ঘটিল। রাজার আতান্তিক অত্যাচারে মনস্কাপিত হট্যা প্রজা সকল আর্ত্রনাদ পূর্স্ত্র প্রত্যন্ত দীর্ঘ মতে প্রমেশ্র স্থানে আতেনন আরম্ভ করিলেন, হে জগদীখর, আমাদিগের সিৎহাসনধারি অভ্যাচারি

শাসনকারিকে সভার বিনাশ করুন, ওাঁহার উৎপাতে আমরা উৎশাত হউতেছি: পক্ষান্তরে দিন দিন দীন প্রজারা মন্ত্রিকও জাত করিতে লাগিলেন। তাহাতে এক সমযে সভাসদ পণ্ডি সহকারে ময়িবর সমাট স্মীপে উপস্থিত হট্যা কহিলেন, হে মহাপাল, আম্বা মহাবাজেন নিকট কিঞিং নিবেদন কবিতে আধিযান্তি; যদ্যপি অনুজা প্রাপ্ত ১ই, তবে নিবেদন করিতে পারি। তাহাতে রাজা হাস্য বদনে জিজাস। করিলেন, হে মন্ত্রি, অদ্য পণিত্মণিত্তইয়া কি নিমিত্তে আজান ন্ত্ৰিত আসিয়াছাই তাহা বল। এই অনুজাতে কৃতজ হইয়ামগ্রীক্তিলেন, হে ভপাল ক্লচড়ামণি, প্রমেশ্র আপনাকে প্রির্বিক্লাগনা বাজাবাক করিয়াছেন; রাজা সকল প্রজাদিগের পিতাম্বর্প হযেন, রাজনীতিশামেতে প্রিতেরা কহিয়াছেন, রাজারা প্রজাগনকে আল্লান্তানের ন্যায় দশ্ন পুরক প্রতিপালন করিবেন। কিন্তু আপনি হাহার বিপর্গত করিতেছেন; অতএর কহি, যাহাতে দেশবাসি লোক সকল নুপতির ফল্যাণার্থে রাশি > আশীর্মাদ করেন, আমাদিগের অভিলায মহারাজ মেইরের চলেন। রাজমন্ত্রী এবং সভাষদ পণ্ডিতেরা মহারাজকে এই মকল প্রকারে বিবিদ নীতি জ্ঞাত করিমা রাজাজা গৃহ। পুষাক ধা> শ্বানে প্রথান করিলেন। किछ डेल्वियम् अंच के मुलाहित कर्नक्र (तृत्व अ अलाहित वाक) मकल প্রমন্ত গৃথীতের ন্যায় হইল; অর্থাৎ রাজমন্ত্রির উপদেশ বচন প্রসণ-বিবরে শুরণ করিলেন, এই মাত্র, মনের মধ্যে ফলের খান দান করিলেন না। তাঁহার যে ঘূণিত কাষ্যে আনুরাক ছিল, ক্রমিক ভাষা বৃদ্ধি ইউতে লাগিল। কিন্তু রাজার এই সকল অনুক্ত বাবহারেতে মভাসদ লোকেরা এবং তাবং প্রজাবা এমত বিবক্ত হউলেন যে ঠাহাদিলের প্রাথনা উগুপ্রতাপ অতিশীঘ নিপাত হয়েন। ভবে মৈন্যবল মাম্থ্যবলেতে মহাবেল প্রাক্রান্ত বাজাকে সহ্মা আক্রমণ কর্ণে মাহামক হইছে পারেন ना, अकात्व स्त्रोनादलस्त जोरन शावन कतित्व इनेल। अनेक्ट्र किस् काल भर ह जम्भ है वाजा माहिमक कुर्ल है लाम्भ है। वि मगाना करिए ह লাগিলেন; তাহাতে রাজ্যন্থ প্রধান লোকেরা এবং প্রতিবাদি রাজারা (थिपिड इहेशा शश्चित निकारि जाभितलन, अत्र मगत तित्मास लाभनीय মভা করিয়া নুপতির বিনাশার্থ প্রামশ আর্দ্ড করিলেন; কিন্তু অসংখ্য দৈন্য সহকারি স্মাটের স্থিত কেচ সাক্ষাং সংগ্রেম প্রদূত চটতে পারেন না। ভবে কি প্রকারে কার্য্যসাধন করিবেন, ওচিতরন বিষম চিথা উপস্থিত হইল। এইকালে কুএক সভা সকলকে স্থোধন ক্রিয়া ক্তিলেন, মহাশয়েরা কেন চিতা করিতেছেন? ইন্দ্রিয় সুথাভিলাগিকে নত করিতে বহু প্রয়াস অপেক্ষণীয় নহে; লোভের নিকট ফাঁদ পাতিলে আকাশস্থ কলানিধিকে বন্ধ করা যায়, তাহাতে লম্পট মনুম্যের জাতন বিশেব আশচ্যা কি ? ইন্দ্রিয়নাস ভূপতি ভোগবিলাস নাগক নাপিতের ঘারা ইন্দ্রিয় ভোগ

মংগুর করেন; আমরা মেট ওপতর নরস্করকে ডাকিমা প্রত্যাসন দিতে স্বীকার করি, এবং ভাগে যাতা চাম ভাতা প্রদান কারা মাউল অথের বশ কে নয় ' অথাৎ সকল মনুষ্ট অথের দাস; ভাছাতে ক্ষদুলে ন নাপিত অবশ্য বশীভূত হউকে, এবং আমর্৷ তাতাকে এই প্রাঃশ বলি, কামকলানদী ীরে যে মনোহর উন্যান আছে, নাপিত কন্দপ্র মোটিত নুপতিকে কামজীড়ার প্রলোভ জাপন করিয়া নিশিংলাগে रमङ উन्।। तिरु नी व करव, आभानेतात् भरता कि जिल्ला राक्ति नातीत्रम ধারণ করিয়া উদ্যানম্ অট্টালিকা মধ্যে থাকিব, এবং অট্টালিকার মধ্যমলে এক গভাৰ কুপ খনন করত তাহা কণটাকত শাখির শাখানে পরিপূর্ণ করিয়া বাখিব তালার উপরিভাগে রাজার উপবেশনাথ উত্ত শ্বা) প্রস্তুত থাকিবে, পরে নুধতি আগমন মাত্র আমরা অঙ্গনারুপে র্জ্প করিতে > রাজাকে কুপে নিকেপ করিব; তাহাতে রাজ্যের কণ্টন রাজা কণ্টকময় কুপে পাঁডত হইয়া প্রাণতার করিলেন। এই প্রাংশ শাবণে তাৰ্থ লোক সমাত হইয়া ভোগ বিলাসকে ডাকিলেন, এবং ভাচা/ নিকট উক্ত প্রকার প্ররোচনা প্রতিপন্ন করিবাতে নরসূত্রর স্বীকার করিয়া নরপতির নিকট গমন করিল। পরে ভোগবিলাদ কামবিলঞ নুপতিকে ই ড্রিয়ভোগের উত্তম দুযোগ প্রয়োগ করিয়া নিশিযোগে কাং-कलानमोडीत्स উम्हारन नीड कविल, এवर श्रुत भएकड श्रमार्ग उनाल-মধ্যে যে সকল কৃত্রিম সুত্রোণী শুেলী পূর্বাক দশুয়মানা জিল তালাদিগতে দর্শন করত হয়মোহিত লম্পটি রাজা গৃহমপ্যে প্রবেশমাত্র কউকিও ভূে পতিত হইলেন; অন্তর সকলে স্প্র মৃতিকারারা গ্রম্থ পরিপু করিয়া স্বাহ্ বাসস্থানে প্রস্থান করিল। এই স্থলে বিলেডনা করিছে হউতে -উল্প্রভাপ নৃপতি পৃথিবীকে সমূদু বেফিত দুগধরূপ করিয়া নিফেডে -রাজ্যের হইয়াছিলেন, এবৎ যাঁহার নাম শুরণে ভারমার্হাপাল সকল কম্পিতকলেবর হউতেন, ইল্রিয়ের অবশতা পুমুক্ত সামান্য লোকে হয়ে পরাভব পুরাক কণ্টকাকীর্ণ কুপে পড়িয়া মেই মহাপ্রভাপচরং <mark>রাজ্যপাল কালপুাপ্ত হউলেন। অত</mark>এব ইন্দ্রিয় সকলকে বশীভূত কৰ[া] অভ্যাবশাক হয়।

VII.—Seeking the welfare of others.

পরহিতে রত।

পর শব্দে অন্য, হিচ পদে উপকার। যে মনুষ্য সাধ্যানুসারে অন্যে উপকার করেন, পণ্ডিতেরা ভাঁহাকেই পর্হিতে রত কহেন। মুক্তি পুনার্থ মপুমাণ হয়, প্রোপকারিতা ধরুপ মহদধণ ধ্রভাবসিদ্ধ হইয়তে, কি হেছু নাধুলোকেরা অন্যের শরীরে আঘাতীয় কিবা অন্য প্রকার দৃথেশর কোন চিক্ন দর্শন করিলে আপনারা ভালাতে খেদিও হয়েন, এবং অন্যের দৃথ দেখিলে ভালাতে আজ্লাদিও চইয়া থাকেন। অতএব অন্যের দক্ষদ বিপদ সময়ে যথন হর্ষ বিষাদ সাভাবিক হউতেছে, তথন সাধ্যানুষারে পরের উপকার করাও স্বাভাবিক বটে, এবং লৌকিক উনাহরণেতেও দৃষ্ট হউতেছে। ধনি লোকেরা পন দানরারা অন্যের উপকার করেন, এই কারণ উপকৃত ব্যক্তিরাও নাবিত হউরা ধনি লোকের প্রত্যুপকার করিতে যতনশীল হয়েন। আরু যাহারা অন্যের উপকার করে বিষয়ের নতে, আনোরাও ভালাদিগের উপকার করে না, পরস্পারের উপকারিতারেলপে যে মহৎ সম্বন্ধ ভালা পরস্পার সকলেতেই বিভিন্নাছে। এই লিতা সম্বন্ধ বিচারে অন্ধ হউরা মাহারা অনোর উপকার করণে সিমুপ হয়েন, তাঁহারা স্বাভাবিক নিয়মের বিপর্বাত করেন; কিন্তু আনি লোকেরা এই স্বাভাবিক ওণকে যুক্তিসিদ্ধানে সাধ্যানুষারে পরের উপকার করিয়া থাকেন, বর্ঞ অনেক স্থানে মাধ্যানুষারে পরের উপকার করিয়া থাকেন, বর্ঞ অনেক স্থানে মাধ্য লোকেরা প্রাণ পর্যাপ্ত বিয়া পরের উপকার করিয়া থাকেন। তাহার এক দৃষ্টাম্ব এই।

সমূদের মধাভানে খেতবীপ নামক রাজ্যেতে কীভিদক্ষয় নামে এক गनाগর ছিলেন। কীতিসঞ্যোর পিতা যাবজ্জীবন বাণি**জ্য**রারা ব**ত** সম্পত্তি সঞ্য় কর্ত মর্ণকালীন উপযুক্ত উক্ত সন্তানকে কহিলেন, ওরে কীতিসঞ্জয়, আমি বজুকটে লে সম্পতি সঞ্জ করিয়াছি, ভাষাই ভোমার পক্ষে মথেফী হউবে; ভোমার ধনোপাছন বিষয়ে মনোযোগ করিছে হটবেক না। আমি জীবনে জীবের উপকারার্থ অর্থ সাম্থ্যদারা কোন প্রকারে যতন করিতে অবকাশ পাই নাই, অতএব প্রাণবিয়োগ সময়ে োমাকে অনুজা করিতেছি, তুমি আমার আজাকে অবজানাকরিয়া কেবল পৃথিবীর উপকার বিষয়ে মনোযোগ করিবা, আর আমার সঞ্জিত সম্পত্তির একাংশ তোমার জাবন প্রতিপালনার্থ রাক্ষণ চরল, অবশেষ্ট অংশজয় মনুস্যাদির উপকারে নিগুক্ত রাখিরা। বৃদ্ধ সনাগর এই রূপ সনুপদেশবাকে। সন্তানকে শিক্ষিত করিয়া চক্ষ্টির করিলেন। পরে প্রিনিষ্ঠ সন্থান পিতার অব্যেক্টিজিয়া স্মাপনান্ত্র সাঙ্গোপাঙ্গ আ-ষ্টাৰ সাঞ্চ করিয়া প্রতিক্ষণ পিতার আজা প্রতিপালনে নিযুক ইউলেন। তিনি প্রথমতঃ রাজ্যের মধ্যে এই ঘোষণা প্রকাশ করিলেন, কীর্ত্তি-শঞ্র স্বাগরের দ্বারা যদি কেহ কোন উপকার স্বাকার করেন, ভবে অবিলয়ে তাঁহার নিকট জাত করিলে দ্রাগর সাধ্যানুষারে আুটি করিবেন না। অন্তর উক্ত প্রকার ঘোষণা অসণে উপকারাথিরা প্রভাহ পিপীলিকাশ্রেণীর ন্যায় সমাগত হউয়া স্লাগরের নিকট স্থানোগ্য উপকার প্রাপ্ত হউতে লাগিলেন। এই রূপে প্রতি দিন সাধ্যানুষায়ি উপকার করেণেতে কীর্তিসঞ্জ সদাগর মশোরাশি সক্ষয় করিয়া জন

মধ্যে প্রভিষ্ঠিত মহাজন হইলেন। অনস্তর সদাগর চিন্ধা করিলেন, পিতার আজা প্রতিপালনজনা যাহা উচিত কর্ত্বা হইতেছে, নিযুক্ত কর্মকার্ক লোকদারাই তাহা সমাধা হউবে; আমি এ প্র্যান্ত কোন দেশ ভুমণ করি নাই, অত্এব ইতাবকাশে কিঞ্ছিংকাল দেশান্তর ভূমণ করিলে উত্তম হয়। পরে বিবিধ শান্তদর্শি মহাজানি পুরোহিতকে আন্ধান করিয়া **তাঁহার সমীপে আল্লনি**বেদন প্রকাশ করিবাতে পুরোচিত কহিলেন, যে আছো, মহাশ্য়, উত্তম প্রাম্শ বলিলাছেন। ফদি আপনি দেশাযুৱ দর্শনে গমন করেন, তবে আমিও আপেনকার সহিত যাতা করিতে প্রস্থাতি । পুরোহিতের বাক্য আবণে সামন্দিত স্দাগর সভার হট্য: मुश्रीकिंड विश्रामशांव প্রধান কর্মাকভাকে ডাকিয়া কহিলেন, হে বন্ধে, আমি কিয়ংকাল বিদেশে ভ্রণার্থ মান্য করিরাভি; আমার ভাবরিষ্য রক্ষণাবেক্ষণ পূর্স্তাক নিয়মিত কার্ন্য সকল গোমার নির্বাহ করিতে চট-বেক। ভাহাতে প্রধান কর্মাকারক প্রণত হইয়া উত্তর ক্রিলেন, তে প্রভো, আপনি যে অনুগৃহীত দাসকে বিশাস করিয়া তাবদিয়াত্র ভারার্পণ করিতেছেন, ইহাতে অধীন ভূত্য কুরাথ হইল, কিন্তু স্তুকাল বিলম্ব না করিয়া যাহাতে অবিলম্বে প্রত্যাগমন হয়, অনুগহ পৃঞ্জ <mark>ভাহা করিদেন। আনধর সদাগ</mark>র অনুচর বহুতর লোক ও পণ্ডিত পুরে:-হিত সহকারে সর্বান্ত বিদায় হইনা যাতা করিলেন, এবং সদাগরের মর্ণমুখী তর্ণী সম্ভর্গামিনী হইয়া প্রথমতঃ উজ্জননী দেশাভিষ্থে গমন করিতে লাগিল। এই রূপে ক্রমিক মাস্বয় গ্রনের পর স্বাগ্র সমৃদু ছাজিলা হারলতা নদীতে উপস্থিত হইলেন এবং চতুর্দিলে হারাকারে বেষ্টিত ছার্লতা নদীতে অত্যুদ্জবল উজ্জায়নী রাজ্য দর্শন করিয়া দেই **ছানে অবস্থান করিলেন।** উজ্জয়নী দেশীয় রাজ্যেশর চল্পুর্জ রাজ চল্পুর নামক স্থানে রাজধানী করিয়া বস্তি করেন। কীর্ত্তিস্ঞয় স্বা-গর পুরোহিতসহিত অবহোরণ করিয়া প্রথমতঃ রাজধানীর বাজার সকল ভুমণ করিতে লাগিলেন, তাহাতে দেখিলেন, অগণাপণা দ্যোতে বাজার সুশোভিত বটে, কিন্তু বাজারেতে রাজার প্রণরব অনুরূপ নংহ। ঐ রাজা রাজ্যশাসন বিষয়ে অহার অনুপয়ত, কিন্তু মহাবল পরাক্রার প্রযুক্ত প্রজারা ভাঁহাকে আত্যন্ত্রিক ভয় করেন। অন্যান্য বিষয়ে চল্রুঞ্চ রাজার প্রজার প্রতি অত্যাচার বিশ্বর ছিল, তথাচ সর্বাপেকা প্রশান আন্যায় এট যে তিনি রাজধানীর মধ্যে ভীমচ্ডী নামে এক দেবী স্থাপন করিয়। প্রতি মাসে নির্মিত রাত্তিতে নর্ম্ভলার। চ্ছাকে স্ভুক্ট করেন। ভাছাতে রাজার অনুমতি ছিল, ভীমচণীর মণ্ডপদমীপে বলিদানাথে দুতেরা পালা অনুসারে এক ২ প্রজার পরিবারহইতে মাদে এক ^২ নর ধরিয়া আনিত। কিন্তু রাজা এই মাত্র হাঁছার সচ্চরিত্রের ঘো^{রণ} প্রকাশ করিয়াজিলেন, যে আনীত প্রজার পরিবারেরা যদি অ^{না}

काशादक जानिया प्रति, उत्त थुंड ताक्तियक छाछिया निर्देग। देनवायक की हिंगक्षत मनागत यश्कालीन वालाएत ज्ञान करतून, उश्मन्नत मन्नीशव এক বাটীতে রোদনীয় কোলাহলশন হউতেন্তে, এবং সমীপবাসি লোকেরাও বিলপনীয় ব্যাপারে বিমন হট্যা হাহাকার করিতেছে। এট সময়ে মদাগর মমীপত্ত এক বণিকের গৃহে উপস্থিত হটয়া জিজাসা করিলেন; হে বণিক, ভোমাতে এবং বাজার্বাসি ভাবৎ বাজিকেট শ্রিদামান রোজদামান দেখিতেছি, ইহার কারণ কি? বণিক উত্তর করিল, মচাশয় কি এ দৈশের লোক নংখন? বেবি হয়, নুখন আসিয়াছেন? সনাগর কহিলেন, হাঁ, তাহাই বটে, আমি প্রথম উজ্জয়নীতে আসিয়া বাজারে ভূমণ করিতেভি। তাহাতে ক্রিক বলিল, মহাশ্র আমাদিগের দৃঃখের কথা কি জিলামা করেন? ম্যাপস্থ যে বাটাতে ক্রন্দনপরনি প্রবণ ক্রিতেছেন, দেই খানে গিরা জিজামা ক্রিলেই ভাবনিবরণ জাত হইতে পারিবেন। সদাগর বনিকের উত্তর প্রাথ হটরা হথায় গেলেন, এবং রোদনের বিবরণ আদণ করিয়া অত্যা-গ্যা জান করিলেন, যে **অসোভাগ্য** ব্যক্তিকে রাজদূতেরা চণীমণ্ডপের সাক্ষাতে দণ্ডায়মান করিয়াছে, ভাহার জনক জননী চলংশক্তির্ভিত নয়ন্বিহান প্রাচান, ভাতএব অমৰারা ভাহাদিনের আহার আহরণার্থ ই হতভাগ্য বাক্তি গমন করিয়াছিল; রাজনতেরা তথাহটতে তাতাকে পৃত করত প্রস্থান করিয়াছে। সদা**গর** এই প্রকার বিলপনীয় সম্বাদ শ্ববে থিদ্যমান হউয়া ক্ষণকাল চিম্বার পর পুরোহিতকে কহিলেন, ঐ এক প্রাণির বিনাশে নিরাভায় বহু প্রাণির প্রাণ শেষ হউবে; কিন্তু যদি আমি তাহার প্রাণ বিনিময়ে পুাণার্পণ স্বীকার করিয়া চণ্ডীমণ্ডপ সমীপে বলিবোগ্য হটয়া ভীম-চণীকে মুশ্রদান করি, তবে এই সকল দীন পুাণি নূপদণ্ডইতত পরিআণ পায়। অতএব এক পাণ বিনিময়ে বহু জীবের জীবন রক্ষারূপ অ্যাচিত পর্হিত ঘাহা আমি অনায়াদে প্রাপ্ত হইতেছি, পৃথিবীর মধ্যে ইহা অপেক্ষা আমার প্রার্থনীয় পরোপকার কি আছে? কীতিসঞ্য সদাগর পুরোহিতকে এই সকল বাকা বলিয়া প্রমেখর সাক্ষিকরতক ধৃত ठाकित समकामिटक जाक मित्रा कहिल्लम, अट्न भाकामूल आणि मकल, ভোমরা ক্রন্দন সম্বরণ পুর্ত্তক শান্তি অবলভন কর, রাজদূতেরা ভোমা-দিগের জীবনরক্ষক যাহাকে চঙীর সাক্ষাতে বলিদানার্থ কম্পিত করি-রাছে, তাহার পরিবর্তে আমার মুও চণ্ডীকে দিরা তোমাদিগের প্রিয়-তমকে মুক্ত করিতেছি। এই কথা বলিয়া সনাগর ভংক্ষণাং চণ্ডীসমীপে গমন করিলেন, এবং সদাগরের চমংকৃত কাও দশনার্থনাগরিক লোকে-রাও মহাজনতারূপে চভীবাটীতে শ্রেণীপূর্বক দভায়মান হইল। অনন্তর কীর্ত্তিসঞ্জয় লোকচয়মধ্যে দণ্ডায়মান হট্যা রাজদূত সকলকে কহিলেন, ওরে অনচর্গণ, মহারাজের দক্ষণ পালনার্থ ডোমরা যাহাকে উপস্থিত

করিয়াছ, ভাহাকে ত্যাগ কর: ভাহার বিনিম্যে আমি ষ্থৎ স্মাগত হইলাম, ভাহার পরিবর্তে আমাকে বলিবান কর। পরে উক্ত ব্যক্তিকে এক শত স্বর্গমুলা পারিতোষিক দিয়া বিদায় করিয়া তৎক্ষণাৎ বলিবাছে আপন গলদেশ যোজন করত কহিলেন, হে প্রমেপ্র স্থগাঁর পিঃ: যদি পরোপকার করণ ভোমার প্রিয়কার্য্য হয়, তবে আমি এই উপকাবকে পৃথিবীর মধ্যে দুর্লভ জান করিয়া ভোমার প্রতিগ্র প্রাণ ত্যাগ করিলাম। অনস্তর ভীমচভীর পুরোহিত ব্যাযোগ্য অর্চনাদি করিয়া স্বাগরকে বলিদান করিলেন, এবং তৎক্ষণাৎ কীর্তিস্পরের মুখনীনীয় যশোনিকর লোকভুখারে উড্জীয়মান হইয়া ধরামওল ব্যাপ্ত ইল।

VIII.—Evil of injuring others.

পরানিষ্ট।

প্রমেশ্র স্বীয় সৃষ্টির মধ্যে মনুষ্যকে সর্বাপেক্লা উৎকৃষ্ট করিয়া ছেন, তাহার কারণ এই, যে প্রমেখর কৃপা করিয়া মনুষাকে জানচফ্ দিয়াছেন, ভাষাতে মনুষ্যের। পর্মেশ্রীয় কার্য্য দকল বিবেচনা পুরুত ভাঁহার আজা প্রতিপালন করিতে পারেন। লৌকিক উদাহরণেতে ও ষ্টিতে বোধ হয় প্রমেশর মন্ষোর প্রতি এই আজা করিয়াজেন হে মনুষ্ঠোরা সন্ধিবেচনা পূর্বাক আত্ম পর সর্বাত্ত সমদৃষ্টি করিয়া পূথি-वीत कार्या नियाण कतिरवन; गर्नि वा माधानुमारत পরের উপকার कतिए जमभर्य रामन, उथाठ कान প्रकारत जानात जानिक कतिएन না; পরের অনিষ্ট করিলে প্রমেশরের নিয়্মের বিপ্রীর্লহয়। অতঞ ভাঁহার নিয়মের বিপরীতকারি মনুষ্যকে অবশ্যই তিনি দওনীয় করেন। লোকেতে যে রূপ দৃষ্ট হউতেছে রাজ্যের শাসনকর্তারা কোন অভি-নর নিয়ম করিয়া প্রজামগুলীতে প্রচার করিলে প্রজারা যদ্যপি দেই নিয়ম উপেকা করেন, তবে রাজবারে দণ্ডযোগ্য হয়েন; দেই রূপ এ^র পৃথিবী প্রমেশবের স্বকৃত রাজ্য, উহাতে রাজ্যেশর প্রমেশর; ঠাহার নিয়ম লঙ্ঘন করিলে তিনি অবশ্য দও করিতে পারেন। এবং লৌকি^ক উদাহরণেতেও প্রাপ্ত হইতেছে, অন্যের অনিষ্ট করিয়া ইফট লাভ হ্য **না, ভাহাতে অনিফটই উপস্থিত হয়। যদি কেহ কৃষ্ভাবপ্র**মূক অনোর **অনিষ্ট করে, ভবে অন্যেরাও অনিষ্ট**কারিকে নফ্ট করিছে চেষ্টিত হয়েন যেমন সূপ ক্রেমভাব প্রযুক্ত লোকের অনিষ্ট করে, এই হেতুলোকে? দর্শনমাত্রই সর্পতে বিনষ্ট করেন। এবং ব্যাঘুপশু মনুষ্যাদির অনিট কর হয়, অতএব লোকেরা দৃটিমাত্র বাগু হটয়া বাাঘুকে ^{বিনট} করিয়া থাকেন। এই রূপ অনোর অনিষ্ট করিলে তাহাতে স্বীয়ানি^{ষ্ট}

নিশিচ্ছ আছে; ভাষার এক লৌকিক নৃষ্টার পশ্চাং লিখিতেছি, ভাষাও পাসকর্মের বিবেচনাংযাগ্য হউবে।

আকাশগিরি পর্মত মধ্যে কল্যাণ্সিংছ নামে এক দ্যারাল ব্যঙ্জি ক্রিত। মহাবল কল) গৈমিৎহ পৃথিতীর মধ্যে কাহাকেও ভ্য ক্রিত না; পাঁচ **লক্ষ সংখ্যা**কৃত বলবান দম্যদল ভাহাব খন্তব ছিল, ভাহার। আকাশগিরি পর্বতে মৃত্তিকার নিফাভাগে যে মনোহর প্রী নির্মাণ करत, ভाशांत भाग कला। वाक्षशामी, उथांय थाकिया मगर वित्यास ममकालीन वार्जानिरात निकडे भव लिथिया भाषाहर, शहाव भाष्ठ अहै, রাজা আ অম্কসক্তরিত্রেষ। এল আমহারাজাধিরাজ কল্যাণ্যিৎহের পত্রে জাত হটবা, সম্পুতি আমাদিগের কিঞিৎটাকার আবশাকতা হট্যাছে, অতএৰ ভূমি অমুক দিবদ অমুক সমবে অমুক থানে এত লক্ষ টাকা लाक्षेत्रिता, जेबाटड यमि अनाशी कत, उदत अक समदत दशमात मिडेड माकार कतिय। ইত্যানি প্রকার পত্র ।লখিয়া গাঁহার ।নকটে পাচাইত, তিনি পত্র প্রাপ্তি মাত্র স্থায় কল্যাণার্থ কল্যানের আজান্যাবে নিয়মিত সমনে লক্ষিত মূলে তত লক্ষ টাকা পাটাইনা দিংনে। মনি কেচপত্ত হেমজান করিছেন, তবে ভাঁচার আশুম আলায় করেয়া শ্লীয় প্রাক্রমে মর্মার লইয়া ঘাইত, এবং রাজধানীর মহাত্র বীতিহোত প্রকান করেত ক্ষণমাত্র ভার্থার করিয়া প্রভান করিও। ফল্যাণ্মিংতের এই মকল প্রকার নির্দ্য কার্য্যেতে আকাশ্রিনির নামক প্রস্তের তথ্দিগত লোক সকল অধিৱাৰ্থ হউলেন, কিন্ত মহাবল প্ৰাক্ৰান্ত দ্যাদলকে প্ৰা**ভ**ৰ করিতে কেছ সমর্থ নতেন, তাহারা যে স্থানে বাস করে তাহার সন্ধান কেছ জানে না; বর্ঘাকালে একেবারে অদৃশ্য হউয়া শাত সময়ে পিপীলিকাশেূণীর ন্যায় প্রকাশ পায়, এবং আগমন্মাত বজু গাম লুঠ করিয়া ভৎক্ষণাৎ আদৃশ্য হর, বিশেষতঃ ভাষাদিগের সময় নিশ্চয় ष्ठिल मा; निवादारखद মर्पा रव अभरव मूरगांश किश्व, साहै कारल शाम ল্টিয়া প্রস্থান করিত; অতএব তাহাদিগের স্থান করাই দৃক্ষর ছিল। মাধারণ লোকেরা এবং আকাশ্গিরি প্রতের চচুরিণবামি নুপতিরা যথন আতান্ত উত্তাপিত হইলেন, তথন সকলে একত চইয়া দৃদ্যদিনের रामसाम मसाम कृतिए लाशिएलम, किन्तु जाराग श्रकारत छाणी कृतिशा मिश्रालन, कान श्रकादत् है मन्नान शाहित्वन ना। এहे भगरत द्यांकाल, তথন কল্যাণসিৎতের দল বহিগত হয় না, কিন্তুটাকার গপ্রতল হউলে পৃথ্যোক্ত প্রকারে কোন রাজার নিকটে পত্র প্রেরণ করে। দৈবায়ত মেট বর্ষাকালে কল্যাণের অপ্রত্ত হটল, এবং মুমর সিরু নূপতির নিকট দশ লক্ষ টাকার নিমিত্তে উক্তরী চানুমারে পত্র প্রেরণ করিয়া-ছিল। কল্যাণের পত্র পাঠাইবার এই নিয়ম ছিল যে তাহার সোকের। প্রকাশ হইয়া কাহারো হস্তে পত্ত দিত না, গোপনভাবে আসিয়া কোন

প্রকাশ্য স্থানে পত্র রাখিয়া যাইত, পরে যাঁচার নামে শিরোভোগে লিখিড হয়, তিনি পাইয়া নির্নিট স্থানে টাকা পাটাইয়া দিছেন। সমর সিহু রাজাও দেট রীত্যন্সারে রক্ষিত পত্র সিৎহাসনের নিকট প্রাপ্ত হটলেন, এবং পাই করিয়া সহকারি ভুপালনিগের নিকট ভংক্ষণাৎ স্থান প্রেরণ করিলেন। ভাছাতে সর্ক্ষাধারণের প্রামর্শে দ্বির হউল, কল্যাণ্সিংহ যে স্থানে টাকা রাখিবার নিমিত্তে লিখিযাছে তাহার নিকট অন্তর প্রেরণ করা যায়, এবং অনুচরেরা গোপনভাবে থাকিয়া নিবিট কালে আবিট স্বলে হে'ন দিগছউতে লোক আমিয়া কোন্দিগে কোথায় গমন করে, মনোযোগ পুর্বক তাহা সন্ধান করিয়া সমাচার দের। পরে তাহাট হটল, এবং সন্ধানবারা সন্ধান পাইজেন কল্যাণ্সিংহ বান্ধ্বগংমইড মৃত্তিকার নীচে বস্তি করিতেছে। অত্এব স্কুল রাজারা দৈন্যমান্ত স্থকারে আকাশ গিরি পর্যতের চতুর্লিগ বেফীন করিলেন, এবং অলেষণ করিয়া দেখি-লেন চারিদিলে দুড়ক আছে, তাহার মুখ প্রস্তুরময় কপাটে রুদ্ধ; সেই কপাট মুক্ত করিয়া দুমুরা যাতায়াত করে। নূপতিরা সুড়গবার ভল कतिया हातिमित्रा भूतीमत्था तासम शृतित्व लागित्सम, अतर उछम রূপে পরিপূর্ণ করিয়া তাহাতে অগ্নি দিলেন। অনন্তর প্রজ্বলিত জ্বাল্সবেগে নগচড়া উদ্ভীয়মান হটল, এবং স্পিগণ্যহকারে কল্যাণ্সিংহ সংহার হটয়া আকারতর পাটল। উহার তাংপ্যা এই যে প্রানিষ্টকারি দৃষ্ট **লোকের ক্**তাপি নিষ্কার নাই। পাঁচ লক্ষ দৈনোর অবিপতি হইনা কলাণসিংহ পর্বভ্যারে মৃতিকার নীচে বাস করিয়াছিল, তথাস পরিত্রাণ পাইল না, প্রানিষ্টল দোষে দল বলসহিত বিনয় হইল: অতএব পরের অনিফাচরণ কোন প্রকারেই কর্ত্তা নহে।

নিষ্ঠাচার।

যুক্তিমূলক শান্তীয় বাক্য ও জানি লোকের উপদেশবাক্যেতে বিখাস পূর্মাক ভদনুযায়ি যে ব্যবহার তাহাকেই নিষ্ঠাচার বলে। নিষ্ঠাচারি নর সকল সকলের নিকট মান্য হয়েন এবং ওাঁহাদিগের বাক্যেতে সকলে বিখাস করেন, ভাহার কারণ এই যে নিষ্ঠাচারি লোকেরা শান্তীয় ব্যবহার বহির্ভূত চলেন না, হাঁহারা নিশ্চয় জানেন শান্তকারের মুক্তিমূলক শান্তেতে যাহা লিখিয়াছেন, ভাহা সৃষ্টিকর্তার আদেশমন্তই হইয়াছে, ভাহার বিপরীত করিলে প্রমেখর দঙ্ভ করিবেন। অভএব সভ্যকখন, প্রজ্ঞান প্রতিপালন, দয়া, দান, সদ্যবহার, প্রমেখরকে ভয় করণ,

প্রতিপালন করেন। জগতের মধ্যে সংখ্যাতীত কৃতক সৃষ্টি হউয়াছে, এবং ভাছার গভীর সোঁতে পতিও হটয়া চঞ্চল বাকি দকল মগু চটতেছেন। কিন্তু সেই সোতের তরঙ্গ নিষ্ঠাচার পে কের অঞ্চে প্রতিক্ষণ সংলগ্ন ছট্যা <mark>থাকে, তথা</mark>স তাহারা শান্তীয় তাকে)র কিলা জানি লোকের उपारिकाल की या लाइकान करतान नाः । १४६न सम्बु अर्थाय नम नमीत প্রশাহ তরকে পরিপূর্ণ হটয়। থাকেন, ডখাচ উলোর ধাভাবিক সাম। উল্লেখ্যন করে না, মেইকপা। এবং পার্নিষ্ঠ মান্ত স্পল বার্ম্বার সাংসারিক শোকজনক ধিষয়ে অথাং বসুবিয়োগ ধনবিনাশ ইতা**দি** নানা স্যাপারে পতিত হযেন, তথাচ ঐ প্রাপ্ত পোঞানল শতাদিরের চির্চিড্ডি মতের বাতায় করিছে পারে না। যেমন সুদর্গ বার্থার অগ্রিক্স ছউয়া থাকে, তথাত ভতাশন সূত্রের প্রকৃত্যতনাশ করিয়া द्रभाष्ट्रकृतिहरू शाहतू मा, सिहैत्राश । अध्यत निष्ठ आति लाक मकस সকল প্রকারে সকলাপেকা শ্রেষ্ঠ হয়েন, এবং পরিনিট মানব সক-লকে সৃষ্টিকর্তা প্রমেখর কি প্রাও কুলাকরেন, তালা লেখনীর স্বারা বিশ্বরে করা অমান। হল। নিষ্ঠাটার লোকের এরি মৃট্টেরটার মধ্যেন মের এক দুটাও এ ফুলে প্রকাশ করিছেল, লোকে পারিকরণ হাতা भाष्ट्र कतिहा उभरतात जान कतिर्यन।

হেমন্ত্র নারে আমিও নামে এক জন চিত্র কর ছিলেন। এই বিটি গৃচিওকর প্রভাবে গাজোপান করিয়া দেলা দশ ঘণ্টা প্রাওপর্মেগ্রচিথার নিস্ক থাকিতেন, পরে অপুর্বা পটে নানা প্রকার বিভিত্র চিত্র প্রতিমৃতি নির্মাণ করিছেন, অন্তর্মধ্যাক্কালে সমাগত অভুক্ত পোক সকলকে আছারা-निवाता मरखाय कतिया निर्मत भाषात वरेट; भरत मार्गन नगानानानि কার্যোতে সায়াক্ষকাল ক্ষেপণ করিয়া রাতি দশ ঘটিকা পতাও প্রমেখর-5 का स्राप्त निम्क धाकि टिन। জीম क হিতক পের অপ্রাপ্ত ক দুই পুল এক কন্যা ছিল, এবং তৃদ্ধ পিতা মাতা বেওমান জিলেন। চিএকরের কন্যা আরতি পরম সুক্রী ভাহার নাম রুগজুমারী। রূপজুমারীর অপুরার্জপ গৌরবের সৌরব অবেগ করিয়া নানা দেশহ ইতে রাজপুত সকল গাগমন করিতে লাগিলেন, কিন্তু কোন রাজ্যমার রূপকুমারীর সুরূপের সর্শ নহেন, আত্তর কাহারে। সহিত স্থাধ নিক্ত হল ন,ই। এই স্মায়ে তেমস্থ নগরীয় নুপতি আবেণ করিলেন, আমিথের দুটিতা প্রমণ্শরী, তাহাকে বিবাছ কর্ণার্থ রাজপুত্র সকল গ্যনাগ্যন করিছেডেন। আংএব এক দিবস মর্মাথ অংককাং প্রীমধের বার্টাতে ধরুং উপ্ধিত চইরা কছি-লেন, হে চিত্রকর, আমি শুবণ করিয়াছি ভোমার কন্যা অধুলরপে- বহী, অভএব বিবাহ করণাথ ষয়৲ আদিয়াভি; আমি রাজা, আমাতে कना। मन्नमान कवित्न भवममूर्थ कामगाभन कवित्र भावित। उद्याद চিত্রকর উত্তর করিলেন, হে মহামতিম ভূপতি, বদেশীয় নৃপতি জামাতা

হুটাবেন, ইহার অধিক সৌভাগ্য কি আছে ? কিন্তু জাতীয় মন্যানা বিষয়ে মহারাজের স্তিত আমার অনেক পার্থকা; তাহাতে যদাপি মহারাজেক হত্তে কন্যা সম্পুদান করি, তবে আমি জাতি জাতির নিকট নিলনীয ছাইব। অতএব আদ্য এ বিষয়ে নিশ্চয বলিতে পারিলাম না ; বিবেচন পুর্বেক ভুপালকে নিদেদন করিব। চিত্রকরের এই উত্তর শূরণে ছবন জাতীয় রাজা বিজাতীয় ক্রোধ করিয়া কৃতিপেন, আমণু, অদা ভোমাকে ক্ষমা করিলাম; ভূপতিকে অধমজাতি ধলিয়া মহোরা ঘূণাকতে, হাই দিগোরে মুশুজেন করিতে হয়। তবে কহি:তেড, বিদেচনা পুলিক বলিবেং। অভএর স্পাহের মধ্যে যদ্যপি আমার সহিত রূপক্ষারীর বিশ্চ সমন্ধ না হ্য, তবে তোমাদিগকে মংপারে নাঞ্জি দও দিয়া দলপুৰিত ক্রপক্ষারীকে বিবাহ ক্রিন। জন্ম ১পাল চিত্রকর্কে এই ক্রপাস্থ্য বাক্য বলিয়া বিদায় হউলে পর চিত্রকর অধ্যপুরে প্রবেশ কর্ড পিতা মাতাকে এবং আপন ভার্নাকে রাজবাক্য শুবণ করাইল কহিলেন, এইক্ষণে আমাদিণের উপায় কি? ঘদাপি নৃপতিকে কনা সমর্পণ করি, তবে আমাদিগের প্রতিজার ও জাতিধন্মের অন্যথ ছটবে; আরু না করিলেও নিদ্য রাজা প্রাণ সংহার করিবেন; ইহাতে আমাদিণের উভয় পক্ষ স্পট হটল। এই প্রকার বিসেচনার শেষ নিশ্চিত হইল, সপরিবারে ভারণো পলায়ন কবিবেন, ওথাচ জবন ব **জাতে কন্যা সমর্পণ ক**রিদেন না। এসং শেষ ভাগাই ঘটিল; রাত্রিয়োও হেমন্ত নগর পরিত্যাগ করিয়া অর্থেয় প্রভান করিলেন। পকাওবে জাবন রাজ্যেখর মনে ধির করিয়াছেন, চিত্তকরকে যে রূপ বলিয়াতি ভাহাতে স্পাতের ম্পেটি রূপকুমারীকে আমাতে সম্পণ কবিতে সপ্তাহ বিরামে স্কীয় প্রাক্ষমন্ত্রাই বিবাহ করিব। ইতিমধ্যে অন্ত আমিয়া রাজাকে কহিল, হে তপ্তি, আপুনি যে স্প্রপুপ করিয়াছেন ভাহার বিকপপ হটল, আমন্ত চিএকর সপরিবারে পলায়ন করিয়াচে। রাজা অনুচর্মধে সমাচার অংবণ করিয়া বিজাঠীয় জোধে পরিপুন ছইলেন, এবৎ তৎক্ষণাৎ চারি দল দৈন্য প্রশুত করিয়া তিন দিগোতন দল প্রেরণ করত অর্থাস্ট মহাদল মহিত অর্থাে অলেষণাথ স্ব যাত্রা করি**লেন।** এ দিগে চিত্রকরের কি পর্যান্ত নিপদ হউয়াছে, ভা^{হা} আরণ কর। দুই বালক ও রূপকুমারী কন্যা ও স্বীয় ভার্য্যা এবং বৃদ্ধ পিতা মাতার সহিত চিত্রকর অতি নিবিড় জকলে প্রবিফী চইয়া ঘেব বিপাকে ঠেকিয়াছেন, কোন দিগে বহিগ্মনের পথ নাই; চারি দিবন নিরাছার কুধাতৃষ্ণাতে অতাধ ক্লাধ, বিশেষতঃ চরণে কণ্টকানি প্রার্থ ত্টবায় জীমন্তের বৃদ্ধ পিতা প্রাণ্ঠাগ করিতে উদাত ত্ট্রাছিলেন'∙ ভাছাতে এঞ্মিভ পিতাকে নানা প্রকার জানোপদেশবারা শাষ কঠত এক স্থানে স্কলকে রাখিয়া ধর্থ জল অধ্যেষণ করিছে গেলেন, কিণ

নিবিড জললময় পর্যতশিখরে পানীয় প্রাপণ বিষয়ে হতাশ হইয়া এক वक्कमत्ल विभिन्ना श्रद्धान्नद्दरक हिन्दा कृतिराष्ट्रहम, अष्ट मग्रत्य श्रद्धान्नद প্রমাদে কিঞ্জিদরে এক সরোবর দেখিবা তথার গমন করত দৃটি হইল, এক স্কোতে পরিপ্র হইয়া অপুরি ফল মকল ব্লেচেডে। এই রূপ আশ্চন্য দশ্লেতে হয় হটনা এনমন্ত প্রমেখন স্মাপে কৃত্যতা মাকাৰ ক্রিলেন, এবং তৎক্ষণাং প্রত্যাগত হইয়া স্থায় পরিবার মক্রপ্রে মেট স্থানে লট্যা গেলেন। প্রিবার স্কল প্রশ্ম ফ্রা ব্যয়তে ব্যাক্ল মবোবরতীরে ফলপ্রাপ্ত হইনা পারপূর্ণ আহার এবিলেন, এবং আন হৃতি প্যাম নিহাল পানীয় পান কৰ্ড সুধ্র হুটলেন। কিলু মেই সৃধি-द्या क्किनिएकत नाम इडेल, श्रष्टेचाल महाम्ये अरन ताम भारमान চট্ট্যাচ্ছেন, ভানাত্র প্রম্নীয় পথ নাই, গ্রেড্র জান লাগা গিবেশ। ই সংহার করিবেন, এই চিঝাতে প্যাচ্ল হন্যা লেশ্চণ লেশনে, নিনর রাজা মুমীপুরতী হট্রামান মুকলে মুলোন্রে প্রাণ্ডাগ করেবেন। এট সমলে প্রমেখনের ত্রা দেখা, চীন দেখীয় অস্থ্য রংশা মহা-রুজাপিরাজ ক্ষেত্রিম্বত নামক ওপতি জবন রাজার নিকট এক খেত হয়ির নিমিত্ত পত্র লিখিবাজিলেন, ডাহাতে জবন রাজা সেই পত্র তেরজান করিয়া হান্ত প্রেরণ করেন নাউ। অতথ্য ফেএমিছে দুপ্তি ষীয় দল বল নাইত জবন ৰাজাৰ বিনাশ থ সে বত্ব শংগে দেই মৰোৰৱ নিকট দিয়া আসিতেছেন, উহার মধ্যে ছাংন রাছাও মেট ঝলে আাস্যা উপ্রিত হউলেন। ইহারা প্রকথ্য দুই দল প্থহারা হইয়া জলপান। প্ गरतारत डीटत जामिबारणम, किन्छ (६७०८२४) सिक्धम ८८१४ करिएलम, দুট দিলে জবন রাজার সৈনেট্রা ওাঁহাদিগতে আজন্মণার্থ নাগত হট-যাছে, অতএক প্রাণ পরিত্যাগ কর্ণাশরে যথন জলাশ্যে গমন করিলেন, তথন ক্ষেত্রসিৎত ভূপাল জানিতে পারিলেন, এই লোকে চাভ্য পাইয়া মলাশ্যে প্রবেশ ক্রিডেছে। অভ্রস ভংক্ষণাং হালাদিগকে নিভয় বলিগা রক্ষা করেত কারণ জাত চউষা ক্ষিলেন, ভ্যুনাই, ফ্রনের কাল নিক্ট ষ্ট্রাছে, এবং ওদ্দেষ্ট জননদলের ম্ভিত গোর সংগ্রামার্ড **চটল।** ভাহাতে জাবনেশার ক্ষেত্রিমিংতের হয়ে পঞ্জা পাউলোন, এবং মহা-কুলোছের ক্ষেত্রসিংহ রাজা রূপকুমারাকে বিবাহ করিয়া হেমপ্ত নগরীয় নিংহাসন গ্রীমন্তকে দিলেন। অত্রব মনুষ্যের নিষ্ঠাচারে থাকিলে ভাঁচা-দিগের কলাচ বিপদ হয় না, নিষ্ঠাচারে মনুষাকে প্রমেখর অবশাট কুপা কবেন।

FROM THE LIGHT OF INTELLIGENCE.

প্रবোধচন্দ্রিকা।

I .- A king's advice to his son.

🗐ল জীবিক্রমাদিত্য ভপালতনয় জীল জীবৈলপালাভিধান ধর্ণীপাল ছিলেন। তিনি একদা স্ক্রিষ্যুভাজন সভাজন্মধ্যে অধ্যামীন হুট্যা এই চিম্বা করিতে লাগিলেন, যে দ্বীতির আস্থি হজ্পার্ময় ছিল, এবং কর্ণের চর্মা আভেদ্য বর্মোর ন্যায় ছিল, ভাঁহাবাও এ ভতলে বছকলে क्राइन नाहै; मस्मु ि शहादित तम महीतृ । नाहे, अ तम विख्य आहे, ও দে রাজায়াধিকাবও নাই, কিন্ত ঐ দহীচির স্বমরণ স্বীকারপ্রাক ব্ছু নির্মাণার্থ অস্থিদানজনিত কীর্তিমাত্র, ও কণেব যে অক্ষয় কর্তমাতাস্থ্যে हम्म वर्ष्मात् ना। व जिल, रम जिल्हा करटाउत क्रमुटा बीकारत् याउकरक मानस्त्रा यत्नामाज व्याष्ट्र। এ सीटलाक सीटन कमलनलगड सन-তুলা চপল হইয়াছে। নবছিদ শ্রীরে প্রাণবায়র অবস্থানই আশ্চর্যা, কখন কোন পথে প্রস্থান যে করিবেন সে সহজ। এ সৎসার নামমত **সৎসার, বন্ধতঃ অসার ; সকলই অচির্হায়ী, ক্ষণভঙ্গর, কিন্তু অক্ষর**-নিবদ্ধা কীর্ত্তি চির্ম্বায়িনী। অত্তর ইছলোকে ও পরলোকে স্থান যে কর্ম, সেই দর্দশিদের প্রতাহ অবশা কর্ত্রা। আমার স্থাবিরাবরার উপস্থিতি হইল; যে অবস্থাতে শ্রীর শীর্ণ, ইল্রিয় সকল চার্ণ, লোচন গলিত, বাক্য স্থালিত, কেশ পালিত, মাৎস লোলিত, দম চলিত হয়। পত্ত শিশু, ক্রীড়াতে আসক্তচিত, বিদ্যাভ্যাদেতে অনাস্কুমনাঃ, কিরুপে প্রজাপালন ও রাজ্যরকা করিবেন ? এবস্থিপ বিবিধপ্রকার ভাবনা করিয়া 角মানু বৈহাপাল ভূপাল থেলারমান 🖄 ধ্রাধ্র নাম নিজ বালককে बर्मामधात आनिया कहिलन, अद्र वाष्ट्रा, विन्यास्थान कर्, विन्याद्य রিপুরা পরাজিত হয়, বিদ্যাতে কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য জ্ঞান হয়, বিদ্যাতে

ঘশোলান্ত হয়; অর্থনাধন ও ধর্ম বিদ্যাতেই হয়; বিদ্যা পিত্তুলা ইতকারিণী, বিদ্যা মাতৃত্ব প্রতিপালন করেন, বিদ্যা প্রেয়নী-প্রায় সুখ দেন, বিদ্যা কম্পলতাত্—্য সকাতিলাম দেন। সকাধনমধ্যে বিদ্যাধন অত্যুত্তম। যে বিদ্যাধন অন্যকে প্রদান করলে দিনে বাজে, কোন প্রকারে সুজাত বিদ্যাধন নফী হয় না, রাজনভাতে হাত হয় না, চোরেতে অপহাত হয় না, অগ্লিতে দগ্ধ হয় না, দায়ানেরা বিভাগ করিয়া লইতে পারে না, চাকরেরা খাইয়া ফেলিতে পারে না, কোণাও অপ্রকাশিত থাকে না, মরিলে পরও সঙ্গে যায়। হে পুত্র, রেখ, খন, য়ুস্কিতে বিবেচনা করিয়া বুঝা, আমার কথা নির্ভুর ঝ্রণ করিও, আমার বাকেয়ের ভাংপ্রা অবধারণ করে।

্চে পুত্র, এক ডেডনরূপী পর্মেখর এ জগতের উৎপত্তির কারণ, ষ্ট্রপরকার্য্য ভূতভৌতিকপ্রপঞ্চমাত্র অচেত্র। কারণ ঘটপটকারকাদির চেঃনতা, কাষ্য ঘটপটাদির অচেঃনতা, ইকা সকল লে:কের প্রতাক্ষানু-सर्मिक चाल्छ। এक मृगोरिष अ अंगरित 'आमिकर्ता भत्रायेत रहस्त, তিনি এক; অনেকেশবকপেনাতে গৌৰত ও প্ৰমাণাভাৱ। তৎস্ট যাব-জ্ঞাৎ আচেতন ও অনেক, এই নিশ্চন, চিলাত্ররূপী প্রমেশ্র ভাচেতন-মাত্রাল্লক পদার্থ সকলের সৃত্তি করিলা চিদ্ধা করিলেন, আমি এক চেত্র, মন্বাতিরেকে কিরুপে মংস্ট অচেত্র প্রাথ সকল ত্যাপার योगा इडेटवकर ८ एडमारिकाम राजिएतरक चार्टबम राम्भात वस मा। যেমন সার্থির অধিষ্ঠানাভাবে র্থের গমনতাপারাভাব। এইরূপ চিৰা कतिया यनाभि चन्छे भनाधमाद्यत ममान छ। द अनुश्रविष्ठे इडेग्रा আছেন, তথাপি লোকতঃ চেতনাচেতনবিভাগ বুজিভাবাভাবকৃত; যথা চতুরিবৈ ভূতগামমধ্যে জরাযুল মনুষ্য গ্রাদি, অঙল পক্লি স্পাদি, খেদল কুমিদ শেম শকাদি, এই ত্রিবিধ ভৃত্যুম চেতন ; উভিজ্ঞ ভরু ওল্ম লভা শৈলাদিরূপ একবিধ ভ্রগ্রাম অচেতন; এবং চেংনজাতীয় মনুষ্য পশ্ত পক্সাদি মধ্যে एवं উত্য মধ্যমাধ্য বিভাগ দে বুঞ্জুর উত্তমকর মধ্যমকরা-ধমজ্ঞ প্রযুক্ত। আনত্রব এ সংসারে চেতন দেই বে কৃত্রিমান, আচেতন সেই যে বৃদ্ধাভাববান্। যদাপি চেতনজাতীয়দের ৰং প্রকৃতিবৈ-চিত্রপ্রস্কুরু বিবিধ প্রকার হয়, তথাপি সামান্যতে বৃদ্ধি দুই প্রকার, নৈদার্গকী ও শাস্ত্রায়া। এই বিবিধ বৃদ্ধিমধ্যে নৈদর্গিকা বৃদ্ধি, আহার নিদা ভয়াদিমাতোপধোগিনী প্রমনুষ্যমাধারণী ৰূপা সহয়া। শারীয়া বুদ্ধি, শারানুশালন ওরপদেশঞ্জিতা ঐহিকপার্ত্তিকানুকুপ সূক্ষ বিষয়াবধারণক্ষম। ঠাকু। দুর্লভা।

অতএব হে পুত্র, ষ্বুছির স্থলতা দোষপরিহারাথে শাত্ররপিশারে সতঃ অনুশীলনরপে ঘর্ষণ করিয়া হীক্ষতা সম্পাদন কর। হীক্ষ বৃদ্ধি ভীক্ষ শরের ন্যায়, বিষয়ের কিঞ্জিয়াত প্রদেশ সপ্শনি করত অভ্যন্তর

প্রবিষ্ট হর। खुल বৃদ্ধি প্রস্তরপ্রায়, বিষয়ের যাবং প্রদেশ দপার্শন করিরাও বাহিরেই থাকে। এতাদৃশ যে তীক্ষ বৃদ্ধি সেই বৃদ্ধি; তাদৃশ বৃদ্ধি যার সেই সুক্ষিমান সেই বলবান; যে বলবান হাহারই রাজ্য; অতএব लारकर र लोकिक नृत्रि थाकिए । भारतीय नृत्रित्रि । प्रित्रिक निस्ता वि নিক্ষি হটলে রাজপুত হটয়াও পিতৃপিতামহ জ্মাণত রাহ্যাবেকার র্কিত হট্টরা রক্ষত্র। শাস্ত্রাভ্যাস্ভনিত তীক্ষ বৃদ্ধি বিনয় ঔদাধ্য হৈঠে। গান্দীর্ঘ্য শৌন্যাত্রেনুর্য্যাদি গ্রহণদম্পান্ন ভ্রালবালক প্রজাকেনের প্রিয়তর হন। কোন পণ্ডিতের। বুদ্ধি তিন প্রকার হয় ইহা বণনা করেন। তৈলবং বৃদ্ধি প্রথমা উত্মা; বেমন তৈলবিন্দু জলের এক দেশ সগশ ক্রামাত্রেই তাবদেশ লাপে, তেমনি যে বুদ্ধে শান্তার্থৈকদেশ দপ্শ কর্তট যাবদর্থ গ্লণ করে মেট উত্না প্রথমা। চন্দ্রবং বৃদ্ধি বিতীস মধ্যমা; যেমন চন্দ্র সূচ্যালিকরণক যথপ্রদেশে কিন্ধু হয় তারিআত্র প্রদেশে সচ্ছিদু হয়, আরু ২ প্রদেশে পূর্বের মতই থাকে, তেমনি যে বৃদ্ধি গা বন্ধাত্র শাস্ত্রার্থিকরণক সংস্থাট হয় ভাবন্ধাত্রার্থ গুরুণ করে, অবিক্র রহণ করিতে পারে না, নেট বুদ্ধি বিতীয়া মধ্যমা। নমদানামত বক বিশেষকৎ বৃদ্ধি ভূঠায়া অধ্যা; যেমন নম্নানামক বস্ত্র স্চ্যাদি পিছ প্রদেশেতে সূচ্যানিতে আবৈদ্ধ প্রদেশের ন্যায় থাকে, তেমনি যে বৃদ্ধি পঠিত শান্তার্থে অপঠিত শান্তাথের ন্যায় থাকে, মেই বৃদ্ধি ভূতীর অধ্যা। এবং আরি মিত্র অরিমিত মিত্রমিত্র আরিমিতামিত, পুলে,ধাত এই পঞ্জ প্রকার রাজা, ও পার্কিগুছি আক্রন্দ পার্কিগুছিলার আক্রনামার भक्षाभ जिलामीन, अन्हाकृति এই ছয় প্রকার রাজা, সম্বাধে একারশবিং রাজচক্রমধারতী হট্যা বিজিলাধ্যৎ জক মহারাদাধির জক্পে মেই এক ভন্নংপ্রকাশ পায়, যেমন একাদশ আদিতা মধ্যে দিনকুং প্রকাশ পান। এবং চির্স্থার মেট রাজার নিমিত্তে অচির্স্থায়ি আর্থ রাজা সকল প্রতর্মান থাকেন, যেমন ভারি রুসার্থে প্রবর্তমান অস্থারিভাব সকল ছয়, এবং যেমন মণিময় মালার মধানতী অতিতেজয়ী মধানায়ক শোভা পায়, তেমনি পাঞ্জিতাদি পশ্চারতি ভূপালাবলি ও পুরোবর্ত্তি অরি প্রভৃতি রাজরাজীরূপ মালার মধ্যবন্তী মকল রাজার তেজের আভি ভবকারী নায়করপে সেট রাজা বিরাজমান হন। যে অষ্ট গুণ প্রভাঙে প্রাজতম হয়, বৃদ্ধির অফ ওণ এই, শান্তশুরণেজ্ঞা, শান্তশুরণ, শান্তগুরণ, শাস্ত্রধারণ অর্থাৎ মনে রাখা, শাস্ত্রীয় সদর্থোৎপ্রেক্ষণরূপ উহ, অসদ্ধ নির্সন্রূপ অপোহ, অর্থজান, তর্বনিশ্চর। অতএব হে পুত্র, সংস শাস্ত্রাভ্যাস করত বুদ্ধির তীক্ষতা সম্পাদন করে। অনন্তর পুরুষজনসমূতের ও প্রজ:জন নমাজের মনোনুর-এর-কারী হইয়া পিতৃপিতামহাদি পুরুষ পরস্পরতে ক্রমাণত রাজ্যের রক্ষাকর। হে পুল, 'বরিভোগ্যা বসুলরা এট শাক্তীয় বাক্যের ঘদ্যপি যুদ্ধমাত্রবীর পরুষের ভোগ্যা পুথিবী হন

এই অর্থ আপাততঃ প্রতীনমান হন, তথাপি মৃদ্ধনির দ্যানীর দাননীব যে পুরুষ, তাহারি ভোগা। এই পৃথিনী হন, এই তাংপ্র্যাথ। যেতে চুক্ মৃদ্ধাথনীর রাজনীয় যে পুরুষেনা এচানা কেবল মৃদ্ধ করে, রাজনত বেতনমাত্র ভোগ করে; পুরেষাক তিনিব নার যে প্রুষ মেই ক্রমাণ্ড রাজ্যভোগ পুত্রপাত্রাদিক্রমে করে। অত্তরতে পুল, মুদ্ধনার ও দ্যানীর ও দানবীর হও।

তে পুত্র, আরু শুন। এ জগতের ধারণকর্তা যে হয় ভাহাকে শাল্পে ধর্মা শব্দে কছে, এবৎ এ জগতের বিনাশকারী বে হয় তাতাকে অসক্ষ শক্ষে কছে। ভবে যে রাজার ভূষারকতা যে ধন্দরারা, গেতেত্ক অভিশয় লফ্লবীরু যে রাজা মেও ধন্ম ব্যঙিরেকে পৃথিবী ধারণ করিতে পারে না, কিন্তু অধর্মেতে সকল নট হয়; অতথ্য রাজার ভূপার্কথা ধর্ম-নিমিতিক, সংঘাত নিমিতিক নম। ভাঙএৰ সভাসুগে সকলাৰে ধনামানাচৰণ বে প্যায় ছিল, হাবং প্র্তিত পুথিবাতে বাছা কেহা চল না ; প্রাং क्रमणः चालका सक्षात् च उतारच ध्रामधा स्टान (भ्यानास १६६ श्या ४ অপনা নিবারণ ও ধনা সংখ্যাপনক নক ষ্ণুট পুষ্বির র্ফার্ফের রাজ্ঞ भारत कालविष्णात्व शृक्ष्यविष्णयात्व वत्। वत् आध्यक्ष कविया आमिरक्षण्य । এবৎ যে বন্ধ যে নিমান করে, সে বন্ধ উংক চুক দানবিক্রয়াদি বাভিবেকে ভাহারি থাকে। এ প্রাথসীর নির্মাণকতা প্রমেশ্র ধানন্মত প্রথিবা কথনো কাছাকেও দান করেন নাই ও বিজয়ও করেন নাই, লঙ্গৰ এই পৃথিবী প্রমেখরেরি। প্রমেখরেডানুমারে স্থলীয় পৃথিবী পালনাথে যথন যে রাজপদে ভাপিত হয়, তখন তাহার উপায়ক এই হয়, যে শাজোক রাজবর্মান্যারণ পুর্বকি অসম নিবারণ ও ৪মি সংখাপনকরণক দুটা দমন ও শেটা প্রতিপালনাথে প্রজা লোকেনেরত গৈতে নিয়মিত কর গুহণ করত এ পৃথিবীর পালন করেন। সকল রাজধর্মের ভাংপ্র্যাথ এই। তাদুশ রাজবম বিপরাতকারী শিলেন্দ্রমাএপরায়ণ যভাগার পরিপুরণাথে ইচ্ছাচার কর্গুটো প্রমন্ত যে কিংরাজা, যে কুড্যুরাপান दुन्छिकमक्के खुराविको वानव न्यात ल्याकुल रहा।

হে পুজ, মনোযোগ কর। এ মন্যালোকে যদি কেছ কোন ক্ষুত্র পুক্ষের দুবোতোত স্থানির জান করিয়া গথেটাচরণ করে, মে ইংলোকে রাজনত ও অফীতেভাগা হইযা পরলোকে বতংর কালপণাও নরকভাগী হয়। এ পৃথিবা জগনাগরের, ইংলাতে আমার এ পৃথিবা, এডাদৃশ বুফিকারী যে প্রমন্ত উচ্ছেপ্পল গথেটাচারা কিংর, জা, ভাগার কথা কিকিংব বিদ্যাল্যান হাতিরেকে রাজ্যর জার কারণ ধন্মাবন্দিবিক বিজ্ঞান কার না। অতএব হে পুল, বিদ্যাল্যান্তে গত্ত মান্যের আবেশ কর, এবং বিদ্যাল্যান প্রতিবন্ধক যে দকল ভাগাতে হেয়জান কর। বিদ্যাল্যান্য প্রতিবন্ধক থে দকল ভাগাতে হেয়জান কর। বিদ্যাল্যান্যের প্রতিবন্ধক এই দকল, বত্তক্ষনদ্বান, উত্তম নিটাল ভালনা

ভিলাষ, গন্ধপুষ্পাবনিতাদির উপতোগ, ইতন্ততো নির্থক ভুমণ, নৃত্য গীতবাদ্যে অনুবাগ, পাশকাদি ক্রীড়া, বৃদ্ধিভু শকারি মাদক দুব্য পানাদি।

ইত্যাদি নানাবিধ উপদেশ শুবণ করিয়া বৈজ্ঞপাল ভূপালের বালক জীধরাধর অতান্ত লক্জান্তিত হট্যা স্বিন্য় বচনে জনকস্মিধানে নিবেদন করিলেন, হে মহারাজ, তাংকালিক বির্স প্রিণামসুশদ কটু উক্ত ক্ষাস্প্রিম বাহ্যজনরাদি রোগ নিস্তার্থ পিতা পুলকে পান করান। আপ্রিতাংকালিক প্রিণাম উভয় সুখন যে উপদেশক্রপ অমৃত তাহা মুর্থজনেয় নিব্রিপুর্মকে আন্রকি রোগের উপশ্যনার্থ পান করাইলেন, ভাষা আনি শুবণ করিলাম। সংপ্রতি কোন্ শান্তের অধ্যয়ন করিব, ভাষা আজা কর্ন।

স্থান যের এইজপে স্বিন্য বচন শুবণ করিয়া আলি আইবৈলপাল ভূপাল অভ্যন্ত সন্তল্য ভাইরা পুত্রকে মুগত্রন পূর্মক স্বজ্ঞোড়াপিত করিয়া কহিলেন, হে পুল্ল, অফীদশ বিদ্যার মধ্যে নীতিবিদ্যা ও অন্তর্বিদ্যা রাজ্যকর্মোপ্যোগিনী যদ্যপি হয়, তথাপি অন্ত্রবিদ্যাহইতে নীতিবিদ্যা অধিকোপযোগিনী। বেছেহুক নীতিবিদ্যাতে রাজ্য দ্বির থাকে, অতএব নীতিশান্তের জ্ঞান অবশ্য কর্ত্তব্য। শাস্ত্রাথজ্ঞান শাস্ত্রের তাৎপর্যানিগর মুলক, তাংপর্যানিণর বাক্যার্থজানমূলক, বাক্যার্থজান পদার্থজানমূলক, পদার্থজান পদজানমূলক, পদজান ব্যাকরণশাব্রজানমূলক। অভএব প্রথ মতঃ শাস্ত্রার্থজ্ঞানের সুসাধ্যতা নিমিতে ব্যাক্রণশাস্ত্রাভ্যাস করণক তদর্থ জ্ঞান ক্রিয়া নীতিবিদ্যাভ্যায় করে। ব্যাক্রণজ্ঞান ব্যতিরেকে অন্য শাব্র-জ্ঞান দৃষ্কর। যে ব্যাক্রণশাব্রাধায়ন না করিয়া অন্য শাব্রজান করিঙে ইচ্ছা করে, দে গাঢ় অন্ধকারাচ্ছন্ন রাত্রিতে জলোপরি বেগেতে গমন করে যে সর্প, তাহার চরণ গণনা করিতে পারে। অতএব ব্যাকরণাভাগ चार्त् कत, जनस्त् नीडिविमाणाम कत, उर्भमार जात्र विमान्-শীলন করিও। ব)াকরণজানরহিত বৃদ্ধি খোদকভা রহিত হয়, আ^{এব} ব্যাকরণ প্রথমতঃ অবশ্য অধ্যেত্ব্য। এই বিষয়ে কেছ কছে, যেমন লৌকিক গাছ মাছ ইত্যাদি শব্দ ও তদর্থ জ্ঞান লৌকিক ব্যবহার করিতে ২ ক্রমশঃ হয়, তেমনি সংস্তুত শান্ত্রাভ্যাস করিতে ২ শান্ত্রীয় শব্দ ও তদ্ধ জ্ঞান উত্রোত্তর হইবে, অতএব ব্যাকরণ শাব্রাধ্যয়ন নিঞ্পুয়োজন, হঞে তুক অব্যেত্র নয়। সে কিছুনয়, যেতেতুক ব্যাকরণের প্রয়োজন শ^{নের} সাধুতর অসাধুতর জাপন নহু শব্দ জাপন; শব্দ সকলের নিহাতলংগুক এশন উত্তম এ শন অধম ও এশন এই ২ অক্লারে হয়, অনাকরে रहा ना ; रायन मन्द्रा नकातान दिन भन भूगाल वाहक, मुर्क्कना चकातान विच শব্দ গর্লবাচক। অতএব অধম শব্দে হেয়ক্ত ভানপূর্ব্বক বাচক ^{শা} ব্রীয় শব্দের উপাদেয়তা জান নিমিত্ত ব্যাক্রণ শাব্র অবশ্য অধ্যে^{ত্র}

বটে। যদ্যপি লৌকিক ব্যবহার কালে 'মংস্যানায়' 'মাচ আন,' এই দুই বাক্যের তুল্য ফল হউক,তথাপি শান্তীয় ব্যবহার কালে অথ অনর্প্রপ বিভিন্ন ফলকতা বেদে শাত আছে। এবং সভার জুষণ পণ্ডির,পণ্ডিরের জুষণ উত্তমালক্ষার্যুক্ত শব্পপ্রোগ। যে ব্যক্তি ব্যাকরণজ্ঞানিহিন হইরা সাধু শব্প প্রোগাভিলায় হয়, সে যদি মৃণালগুড়ে মত হান্তকে বন্ধন করিছে পারে, তবে মাভিলায় পূর্ণ করিছে পারে। হে প্র, খন, প্রমেখর গুণাদি বর্ণনাবিষয়ে কেছ যদ্যপি কদাহিৎ এক ও সাধু শব্দ প্রয়োগ করে, তবে ভাছার প্রলোকে উত্তম গতি হয়, ইলা শ্তিতে শ্রুণ আছে। ভাগুর্ব শিহ্নিক ফল সিহ্বার্থ ব্যাকরণ শান্তজ্ঞান অবশ্য কর্ব্ব্য, এই নিশ্চর।

II.—Impulse an unsafe guide.

কোন কবি এক মহাধনিক বণিক নিকটে এক কবিটা করিয়া বিজেয় করিছে লাইরা মহাজনকে কহিলেন, এ শ্লোক গুমি আমাহইছে জয় করে, মূলা একশাহ হাওঁ দেও। মহাজন কহিলে, এ শ্লোকেতে কি হর বিকহিলেন, সর্কার্থ রক্ষা হয়। বণিক কহিলেন, দুবের গুণ না জানিরা জয় করা হয় না, গুণ জানিলে মূলা দিতে পারি; এইজণে আমার নিকটে এই শ্লোক রাখিতে । কবি কাহলেন, ভাল, ভালাই হউক; এ শ্লোকের প্রয়েজন জানিলে আমাকে টো এক শাহ হাওঁ দিবে বিশিক কহিলেন, অবশা দিব, অনাথা কখনো হইবে না। এ কবি এইরপে বিশিককে প্রক্রিজন করিয়া হার্হে গমন করিলেন। মহাজন এ কাবতা অভঃপুরে শয়নাগারের পাষাণ্যয় ভিত্তিতে লিখিয়ারাজিলেন।

তদন্ধর কিছু দিবসের পর ঐ বণিক বাণিজ্য করণাথে অর্থবানেরে নানাবিধ সাম্প্রী বোঝাই করিয়া অভাগের্ডা পর্কাকে ঝাল্যের রাখিয়া বিদেশ গমন করিলেন। নানা দেশীয় বত্রিধ দুবেট্র ক্রের বিক্রয় প্রতিদানেরে অনেক ধন লাভ করিয়া ঘোডশ বর্ষাওর ম্বেশে আফিয়া উপস্থিত হইলেন। পরে স্থাগ্রির ব্যাস্ত্র স্থিত প্রাম্প করিলেন, যে হে বয়য়া, আমি যথন বাটাইউতে প্রস্থান করি, তখন আমার স্থা ভরণী ছিল, আর বাটাতে পুটোনা অভিভাবিকা স্থা কেহ নাই, একে মুবতী তাহাতে মুবত্রা আমার ভার্যা, এ কারণ আমার সন্দেহ হয়; না জানি, এভাবং কাল পর্যুক্ত কিরপে বাবহারে আছে। এবং নাহিশায়েও কহিয়াছেন, নারী যদি মুক্তোভ্রিতাও হউক, তথাপি পরির্ক্ষণীয়া। অর্থাৎ এ আমার নিকটে আছে, ইহাহউতে কুকর্ম হইতে পারিবে না, ইহা মনে করিয়াভ্রিয়ার অ্বাবধান হইবে না। আমার ভার্যা ঘোড়া ঘোড়া আমার ভ্রিয়া ভ্রিয়ার অ্বাবধান হইবে না।

ড়শ বংশর হউল আমাছাড়া হউরা আছে, না জানি কেমন আছে। হে বয়সা, দ্রীবিষয়ে এক কথা আছে তাহা কবি খন।

এক রাজকীর লোক থাকে, তাহার জাবাসক্তিতা এক ভার্য্য থাকে-ঐ রাজপুরুষ প্রহাত মন্ধ্যাকালাদেরি বিভাগ প্রহর রাতি পর্যাত রাজ্যেশ করিতে যায়। ইতারমরে তাহার ভাষ্যা একাকিনী গাত্রে প্রচুর হবিষ্ **জেপন করিয়া বাটীর নিকট্ড নদী সন্তর্গ করিয়া প্রপ্রেবাদি ছাতি**-বলবান এক কোটালের মলে লীলারক হাম্যপরিহামাদিপুর্যক অভাংকট **ষাভিলাষ সম্পূ**ণ করিয়া পুন্ধার **শ**রীরে বর্বণিনী বি**লেপন** কার্যা সোতঃরতী বাহুতরণ করিয়। আমপ্রযুক্ত অকাতরে প্রাস্থোপরি নিয়া যার। তাহার ভত্তী প্রহর্তনোত্র শ্বনিবাদে আদিয়া শ্বপ্রেয়া সমত-ব্যাহারে শয়ন করে: ভালার ঐ ভার্যা প্রাভঃকালে বায়দ সমূহের শল শুবণ করিয়া অভান্ত চমংকৃত হটিয়া, ও মা, এ কি বৈ এটাদুশ কাভরেছিল করিয়া কাঁপিতে ২ নিজ বাতরয়লতাপাশেতে মামিকণ্ঠ গুচ্ন কর্তাহ থ্যাচারে অভ্যন্ত ভয়েতে মূর্জিভা প্রায় হয়। তদনতর তৎপতি অতি-শায় উদিগু হটয়া অস্তব্যস্তে স্বপ্রিয়াননে জাল প্রক্লেপ করিয়া, আহা, আমার প্রেয়নী অতি দুকুমারী, অতঃপুরের বাহির কখনো হন নাই, কি জুই দেখেন নাই, এবং কি জুই খনেন নাই, কেবল গৃহপঞ্জরকো কিলা; ইত্যাকার করুণোক্তি করত স্বপ্রিয়ার শ্রীরে হাত বুলাইয়া মায়া মূর্জা মোচন করিত। অনন্তর ঐ স্ত্রী পতিকে ক্তিত, হে প্রাণনাথ, প্রতিদিরে প্রভাষ সমলে এ গুলা কি ডাকে? খুনিবামাত্র আমার হৃৎকম্পুহর, ও মা, এ বালাইওলার ডাক এমন কেন? আজিংইতে এ পাপওলার ডাক এমত যেন না হয়, ভাগা ভূমি কর; ভোমার পারে পাড়ি, আমার মথা খাও; ভাগ্যে ২ আজি বাঁচিলাম, এমনি হইতে ২ না জানি কোন দিন মরিয়া যাইব।

জ্ঞার এই বাকা প্রকামাত খনারীকপটাচারে বঞ্জিত তৎপতি সুপ্রভাত থ হাচ থানি, এ কি অমজল বাকা, তোমার বালাই লইরা ডোমার সৌন-র্যাত ও সুশীলভাতে অসহমানা পার্পারারীর মরুক; এমন কথা আর কথনো মুখে আনিও না। এই কর্প পুষ্বান করিরা কাত্যমুখ্তুখন পূর্রক ভরাপনোদন করিরা নৈতী ক কর্মেতে প্রবর্তমান হইত। পরে এ আতিথের গৃহস্থের গৃহে কমওলাচারি সন্মাদির প্রায় এক বুজচারী আমিনা বেলাবসানে উপ্রত্ত হইল। ইহা শুনিনা পর্কিরা কহিল, কমওলাচারি সন্মাদী কেমন থ অন্য পক্ষী উত্তর করিল, এক বুজিল ছিলেন, তিনি সকংশা জাত হইরাও জলক্ষণোঘতে বড় চোর হইলেন; নৈবাৎ এক নিবস কোন খানে খলোপু অর্থাৎ বমাল চৌর্যোতে ধরা পড়াতে অপ্যান পাইরা খনেশহইতে দূরদেশ গমন করিলেন। ভাহা উচিত, কেননা "সতাম্মানে ফ্লানে মরণম্থবা দূর্বম্মন" ইতি। অনন্ধর সন্ধ্যাস করিলেন,

এইকপে সন্ধানী ইইয়াও বছাবদোষেতে গলিত ইইয়। অন্যান্য সন্ধানিদেবের নিদুকালে একের কমগুলু অন্যের কাছে রাথেন, অন্যের কমগুলু আর এক জনের কাছে রাথেন, এইমতে কমগুলু বিনিমর্ক্রপ কমগুলার করেন। প্রাভংকালে দেই স্র্যাধিবা স্বয়ন্মগুলুর হাত্যান দেখিয়া স্বিশেষ বৃত্তান্ত অবগত ইইয়া ব্যত্যাস্কারি ঐ সন্ধ্যাদিকে দ্ব করিয়া দিলেন। এ কথার তাংপর্গ্য স্থভাবাতিক্রম দুর্গট। এতাদৃশ ক্ষণভ্রারি সন্ধ্যাদির ন্যায় ঐ অতিথি বুক্লচারী ভিল, গেতেতুক ইনিও বিউপভাবোষ্টের স্বাবস্থ্যন্ত্র ইইয়া বিবেক্তের বুক্লচারী চলী

অনন্তর ঐ আতিথেয় গৃহি ব্যক্তি দিবাব্যানে আগত পূকাপরিচিত আগলুক অভিথি বৃক্ষচারিকে দেখিয়া কৃতকৃত্য ও ধন্যবাদ করিয়া ময়ে ২ छिक्तिका मरकाताजिलाय अनाम बानड अस्म लामाणि अमानान्छान প্রঃসর আসনাবস্থাপন ভোজন শয়ন করাণ লক্ষণ আতিথা ঐ অতিথি বুলাচারির করিয়া রাজদোবার্থে গমন করিল। তথপর উপপ-তিসমীপুরুমনার্থে উদ্দামবাগুচিতা তৎপতনী ঐ অতিথিকে বার্ধার জিজাসা করে, ওগো বুজাচারি গোঁসাই, মহাশরের নিদা হইল? বুজাচারী कहिल, खेळूँ उल्लाइ इडेटड निटडटछ ना, निमा कि इटत? कारणत काटछ মশাগুলা ভেন্থ করে। তথন ঐ স্ত্রী স্বদ্থীদ্হিত উকিমারিয়া দেখে, ৪ কাণাকাণি করে, আইদে যায়, আবার আইদে আবার যায়; আমর এ পাপটার চক্ষে কি ঘুম নাই? ইহা চুপেচুপে কহে। এইরূপে অতিশয় অন্তব্যস্ত হইয়া অতিথিকে কহিল, ভোমার কি আজি নিদ্য হউবে না? বুজাচারী এই হয়? উহা কহিয়া নিদ্যাব্যাজে নাদাশদ করিতে লাগিল। ভদনন্তর ঐ ক্রী অত্যন্ত শুনটিচিতা হইয়া গাতে মথেণ্ট চরিদুা অনুলেপন করিয়া নদী দত্ত্বপূর্বক জাতালয়ে গমন করিল। বুলচারী ষভাবলোষে কৌতুকদর্শনাথী হইয়া প্রচ্ছের রূপে তৎপশ্চাথ গমন করিয়। নিভৃত স্থলে থাকিয়া ঐ প্রীর চরিত্র সকল দেখিয়া শয়নস্থানে আদিয়া নিদুত হইয়া থাকিলেন। এইরূপে উপপ্তিসমীপোপস্থিতা অভিদারিকা ঐ কামিনী অত্যন্ত কামুক জার্মকে কামকলালীলাবিলাদপূর্মক সাজো-পাল্রপে বিলক্ষণমতে ঘাভিলাষ দম্পূর্ণ করিয়া পূর্মবং অনেক হলুদ মাঝিয়া নদী সাঁতারিয়া ঘরে আসিয়া খাটে অকাতরে গুরুয়া থাকিল। অন্তর দুই প্রহর রাত্রির পর তংপতিও আসিয়া তৎসহিত বাপাবেশে थांकिन।

পরে প্রাতে ঐ গৃহপতি মুখপ্রকালন শৌচাচমনাদি প্রাতঃকৃত্য করিয়া বুক্ষচারিমমীপে আদিয়া দওবং করিল। বুক্ষচারি আশীর্ঝাদ করিলেন, ও কহিলেন, ''দিবা বিভেতি কাকেভ্যো রাত্রৌ সঞ্চরতে নদীং,'' অর্থাৎ যে দিবদে কাকের ডাকে ভয় পায়, দে রাত্রিতে একলা নদী সম্ভরণ করে। গৃহী বিমনা হয়না কহিলেন, "অত্ত নজভ্যং নাস্কি," অর্থাং দে নদীতে বি কুমীরের ভয় নাই? বুক্লচারী উত্তর করিলেন, "তদ্ধি জানঝি তদিনং," অর্থাং কুমীরের ভয় নিশিচংরপে যে জানে, দে কুমীরের ভয় যাহাতে না হয় ভাহাত্ত জানে। এই কহিলা বুক্লচারী গেলেন। গৃহী বুক্লচারির এই কথাতে সন্দিগ্ধ হইরা দেই দিবদ রাজদেবার্থ গমনজ্লে নদীপারে রহঃস্থানে লুক্লায়িত হইয়া স্থত্তীর চরিত্র ভাবদ্দেখিয়া মনে করিল, ওবে বুক্লচারি ঘাহা কহিয়াছিল, দে সকলি সত্তা। নজভত্যতে গাতে হবিদুলপেন করে শ্রুত আছে, হরিদুল কুটারজাতির বিষ। ত্রী হইয়াইছার এ পর্যান্ধ অনুধাবন। হায়! এ বড় দুনৈর, ইনি আমার প্রেয়দী, ইহার কুছক বিজ্পনাতে আমি এতাবং কাল পর্যান্ধ বিড্রিত হইয়াছিলাম। এতা হইয়া আমাকে লীলামকটপ্রায় করিয়া রাখিয়াছিল, এত দিনে সকল প্রকাশ হইল। আমি কেবেল বর্ষর। "ভূতে পশান্ধি বর্ষরাঃ।" পূর্ধে এ সকল কিঞ্জিমাত্রও জানিতে পারি নাই। এইরপে নানাপ্রকার অনুশানেও প্রস্থাতাপ করিয়া ভদবধি এ ত্রীতে বীত্রাগ হইয়া ভাহাকে তাল

ঐ মহাজন কহিলেন, হে স্থা, জীজাতি এমন হয়, জ্ঞীদের মুখ প্রফ্র পদ্মান্ত বচন পীযুষপ্রবাহ প্রায়, হৃদয় শাণিত তীক্ষ কুরধার সমান, গাঁচা-দিগের চেষ্টিত কে জানিতে পারে? আর ব্রীদের প্রিয় কেছ নাই, অগ্রি-য়ও কেছ নয়, যেমন গো সকল অর্ণ্যে দিনে ২ নব ২ ঘাস প্রার্থনা করে: তেমনি জ্রীরা অহরহ নব২ পুরুষসঙ্গরসাভিলাষ করে, ইহা নীতিশাহে প্রসিদ্ধ আছে; অতএব আমাকে আপন পতনীর রীতি বুঝিতে হয়। ইহা কহিয়া আগমনবাতা বাটীতে না দিয়া আপনি একাকী হ অংকীয় অন্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন, যে শয়নাগারে মীয় 🕸 নিদাতে আছে, তৎসমীপে এক ষোড়শবর্ধীয় যুবাপুরুষ শয়ন করিয়াছে ইহা দেখিবামাত্রে অত্যন্ত ক্রোধাবিষ্ট হট্য়া ঐ ত্রীপুরুষকে যুগপৎ চেন্ন করিতে খড়গোদাম করিবামাত্রে দেই কবিদত্ত পদা যে স্থানে লেপ ছিল দেই স্থানে লাগিল। অনন্তর মহাজনের উর্দৃষ্টি হওয়াতে নংক-লোচর ঐ শ্লোকের ''হচাং কোন কর্মা কর্ত্তব্য নয়,'' এই অর্থ ক্রি প্রচণ্ডর ক্রোধের সম্বরণ করিল। পশ্চাৎ মহাজন স্থিরচিত হ^{ড়}য়া ^এ পুরুষকে মুপুত্রতারূপে নিশ্চয় করিয়া ঐ কবিকে সহসু মুর্গ দিয়া 🕏 প্রতকে লইয়া সুথে কাল্যাপন করিছে লাগিলেন।

পক্ষী কহিল, হে বন্ধু লোকেরা, অতএব আমি করি, সহসা কোন কর্ম করা ভাল নহে, কিন্তু বিচার করিয়া করা ভাল। নীতিজেরা কহেন, লে ৰসমানের সহিত বৈর ও প্রীতি ও বিবাহ কর্মীয়, এবং আপনহউটে লি বড় তাহার সঙ্গে বিবাদ করা উচিত নয়, এবং আনেকের সহিত যুগপর্ বিরোধ কর্ত্বা নয়। এ সমদু আমাদের অপেক্ষায় সহায় সম্পতি সাম্থী মর্মপ্রকারেই বড়, আমরা ইহার সমান কোন মড়েই নই, আর ইহার বিকন্ধ আমানের হইতে কি হইতে পারিবে গৈলামাণ সাধন সামগুলিদাপেক
আমরা অভিকুদু পক্ষী, আমানের কালাসাধন সামগুলি পক্ষ পাদ চঞ্চ পুটমাত্র, অতএব এডাদৃশ সম্পুরে উদৃশ আমানের এডাবনাও সাধনসাধা যে
কার্যা হয়,ভাহাই আব্দ করা উপাযুক্ত হয়। উহাতে জনা এক পক্ষী উত্তর্বকরেল, যে শক্তক ভোট জানিয়া অবজাপুরুক উপাহাস করিয়া নিশ্চিদ্ধ
হয়,সে ভাহাহইতে অবশা বিনাশ পায়,ইহা নিভিদিশার্দের। ক্তিয়াছেন।
অঙ্এব আমরা যে উপারেতে ইহার অনিটাচ্রদে প্রাক্ত হইব, মে উপারেতে কিলা আমাসবাভেই ভুজ জানে উপাহাস করিয়া এ সমুদু নিম্বৃত্ত হউক, কিলা অনুস্থিত হাজলাক্রপে নিজ বোনেতেই ন্ট হইবে।
অগ্রেমান প্রস্কুল শক্তে হাজলাক্রপে নিজ বোনেতেই নাট হইবে।

ইহা শ্বনিয়া আর এক পর্ফা কহিল, সে উপায় কি লাহাতে আমাদের হউতে এ সম্দের অনিট হউবে ? ঐ পর্ফা কঠিল, খন, আমাদের সমদা-যের মধ্যে কেই চঞ্চে ও পক্ষরয়েতে দাগ্রহইতে জল উচাইয়া খক-নাতে ফেলাও, এবং ঐ আদু শরীরে ভূমি লৃষ্ঠন করিয়া সমূদে ডুব, আ বার সেই গাত্রসংলগ্ন জল ডেলাডে ঝাড়, কেহ বা চকুতে ডুগাদি আহরণ ক্রিয়া সমূদে ফেলাও, আর্বার সমূদে ড্রিরা শুফ্চ খানে গা ঝাড়, এই-রূপ ক্রিতে ২ ক্রমে,২ কালক্রমে পয়োনিরি খন্ফ হইরে। ইতা খনিয়া সেট পক্ষী জিজামা করিল, এ উপায়ে এ মম্দুকত কালে শুকাইবে টেছাতে सके अक्की कहिल, यन, स्व कार्य। स्व मत अक अनुस्मयन कर्जुक, अनुसमय-র্ট চেডন, চেডন্ট কর্টা হয়, অসমদাদি গঠাতানাগতবর্তনান যে সকল ছীবর্ষ দে সকলি অচেওন, অভএব কার্য্য, কর্ত্তা নয়, কর্ত্তা কেবল চেওন-ক্পী প্রমেখর। তবে যে গ্রুগ্রা সম্প্রিকালান জাব্দংঘাতের কর্ত্স, দে কেবল অয়োগোলকন্যায়ে হয়, দেমন ভোপের গোলার দে দাহ-জিয়াকর্তৃত্ব দে ভাছাতে থাকে যে অগ্নি ভাষারই, কিন্তু স্থলদশিরা কলে, ভোপের গোলা পোড়াইতেছে; বদুশক্তিবিবেচকেরা থাচা কচে না, কছে অরোগোলকাব্ছিল্ল ব্জি দাহ ক্রিডেছে। ডেমনি বাহাদশিরা কচে, সে भामि इमि हैनि कतिसारल, कतिरासल, कतिरास, कतिसालि, कतिरांण, कतित, कतिशाष्ट्र, कतिराष्ट्र, कतिता, कतिशास्त्रम, कतिराष्ट्रम, कतिराष्ट्रम, करिरायम। উজজানিরা ব্যবহারকালে মন্যপি তেমনি কত্ন, তথাপি প্রমার্থতঃ ভাষা कर्णन ना, करण्य मदास्त्रीताविष्ठ (प्रधनक्ष्मी भवरमध्य मन्नियानवस्थ কার্যামাত্র ছইতেছে, এবং 'সক্ষতাবস্থিত চেতুন্রপী প্রমেশবের চেতুন্তা-টেই সাম্ভঃকরণ সকল শরীরিদিগের চেতনতা। নিরভঃকরণ স্থাবরশরীরি-দের চেতনভা নাই, যেমন নকাত সমভাবে পভিত সূর্যার্মির চাক্চকোডেই কাচভূমির চাক্চকা ভদিতর ভূমির চাক্চকা হয় না, এট দকল বেদের পর্যদি**ছান্ত। অতএব হে** ভাতারা, মিথ্যাভুম দূর কর, জানচকুতে দেশ,

তিনিই সকলি করেন এবং দেখিতেছেন, শুনিতেছেন, জাঁহার কাছে ছোট বড় সকল সমান, অভএব আইস সকলে ঐকমতা ও ঐক্বাকা কর; যেমন কুর্মোরা স্বাহীয় অংশতে নিশ্চল দৃষ্টি রাখিয়া ইতস্কুতঃ সঞ্জরণ করে, যেমন বা ডুবাক্রা স্বনাসাপুট্বয়ে উচ্ছাস নিংখাসার্থ প্রবিষ্ট নলবয়েতে একান্ত সাবধান থাকিয়া গভীর জলে নিমগু হইয়া দুব্যাদ্যেশ করে, ডেমনি ঈখরেতে প্রণিহিভ্যনা ও জাগক্ক হইয়া স্কর্বা কর্মা করণে নিমগু হঙ্গ, তিনি অবশ্য আমাদের মনোর্থ সিদ্ধ করিবেন, এইরূপ বিশাস কর, অসম্ভাবনা ক্লাচিৎ করিও না। এ বিষয়ে এক প্রাতন ইতিহাস শুন।

দওকারণ্যে প্রাচী নদীহীরে বহুকালাবধি এক তপদ্বী তপ্স্যা করেন, বিবিধ কৃচ্ছুদাধ্য তপঃ করিয়াও তপঃদিদ্ধিভাগী হন না। দৈবাং এ তপোধনের তপোবনেতে এক দিবস নারদ মুনি আসিয়া উপস্থিত হউ লেন। ঐ তপষী বহুমান পুরঃসর পাদ্যাহ্যাসন দান ও ৰাগত প্রক করিয়া নারদ মুনিকে নিবেদন করিলেন, হে ঈগরদর্শি মুনি, বহুকাল-ব্যভীত হইল আমি তপ্স্যা করিতেছি, তপঃসিদ্ধি হয় না, কত কালে আ মার তপঃদিদ্ধি হইবে, ইহা আপনি ঈশব্দমীপে জানিয়া আমাকে আজা করিবেন। তাপদের এই বাক্য শুনিয়া নার্দ মূনি ঈশর্সল্লিধানে গিয়া ভাহার কথা নিবেদন করিলেন। ঈশর আজা করিলেন, ঐ তাপদের তপোৰনোপকণ্ঠে যে অভিবৃহৎ তিন্তিড়ী বৃক্ষ আছে, দে বৃক্ষের যয় পত্র, তত শত বংসরে তার তপদ্যাসিদ্ধি হইবে। ঈশ্বরের এই আজা নার্দ শুনিয়া ঐ তপোধনকে কহিলেন। তপোধন শুনিবামাত্র পর্মাহ্লাদে উর্কুবাস্থ হইয়া নৃত্য করিতে লাগিলেন, ও কহিলেন, ভাল, কখনো হউক, আমার তপঃদিদ্ধি হউবে তো। তপদ্বী এইরপে অতাত জটাতঃ কর্ণ হইয়া নারদ মুনির নিকটে বসিয়া আছেন, ইভাবসরে প্রমেখ্র স্বয়ং ঐ তাপদের আশ্রমে আদিয়া তাহাকে দশন দিয়া কহিলেন, হে তাপস, অদ্য তোমার তপঃসিদ্ধি হইল, তাহার বিলম্বের কারণ গে সকল পাপ ছিল, তাহা তোমার নিষ্ঠার এতাদৃশী পরাকাষ্ঠাতে সভ্^{নী} ত্ইরা ভোমাকে হৃদ্মা করিলাম। এইরূপে ঐ তপরিকে তপঃসিদ্ধির প্রদান করিয়া ঈশ্বর অত্তিতি হইলেন। তদনত্তর নারদ মুনি ঐ তপো-ধনকে কহিলেন, হে তপমি, কার্য্যসিদ্ধির কালের কিছু ইয়তা নাই, কিড পুরুষের বিখাদপূর্বক আতান্তিক নিষ্ঠাতে দন্ত্য পর্মেখরের প্র^{দান} যথন হয় তথনি কাৰ্য্যদিদ্ধি হয়, দৈধ যাবং থাকে তাবং প^{ৰ্যাৱ} কার্য্যসিদ্ধি হইতে পারে না।

অতএব কহি, হে বন্ধুবর্ণেরা, অসম্ভাবনা ত্যাগ করিয়া "কার্য্য নাধ্য়েৎ শ্রীর্থ বা পাত্য়েৎ" ইত্যাকারক সুদৃঢ় আগুছ করিয়া কার্য্য সিদ্ধির উপায় করণে সকলে প্রবর্ত হও। এইরূপ প্রাম্শ করিয়া সকল পক্ষিরা একতা হইয়া সমুদুশোষণার্থে কেছ বা সমূদুে ডুব দিয়া ডেঙ্গাতে না ঝাড়ে, আবার ধূলাতে গড়াগড়ি দিয়া সমুদে ডুবে, এইরপ পৌনঃ-প্নো করিতে লাগিল; কেহ বা চঞুতে তৃণাদি আছরণ করিয়া জলে ফেলায়, জলে ডুবিয়া ভূমিতে পাখা ঝাড়ে, এইরপ পুনঃপুনঃ করিতে লাগিল। এতদ্রেপ ব্যাপার অহোরাত্র অবিশান বহু দিন প্যার পঞ্চি-সমূহেরা করিল। অনন্তর ঈশরপারিষদ এক মহর্ষি অর্গরতীরে আদিয়া পক্তিদের তাদৃশ ব্যাপার দেখিয়া তাহাদিগকে জিজানিয়া আমূলতঃ তাব-দ্তার জাত হইয়া ঈশর্মমীপে গিয়া কথাপ্রসঙ্গে কৌতুকরূপে পক্ষি-দের বিষয় ঈশরকে বিজ্ঞাপন করিলেন। ঈশর কহিলেন, পক্ষির। যদি সমদ্শোষণার্থে একান্ত যজনবান হট্যাছে, তবে যে সমুদু শুফক হট্বে, এ কি আশচর্ঘা? লোকের প্রয়তেনতে অদাধ্য কিছুই থাকে না, পুরুষ একান্তিক ভাবে চেফী করিলে দুংসাধ্য সিদ্ধি করিতে পারে। পরমেখরের এভাদৃশ উচ্ছা হওয়াতে অগস্তা নামে মুনি সমৃদুপান করিয়ামরুভূমি-প্রায়ঃ করিলেন, এইরুপে ঈগরপ্রসন্মতাতে অগস্তা মুনিদারা পক্ষিরা প্রাথমনোরথ হইয়া বৈর্নির্যাতন করিল। এইরুপে সমুদু শুক্ষ চইয়া বহু দিন পর্যান্ত ছিল, পশ্চাৎ সগ্রসন্তানদের খননেতে পূর্বাবৎ জলেতে সম্পূর্ণ হইল। এ কথার তাৎপর্য্য, কেহ আপনাকে বড় জানিয়। আহ-क्षांत ना करत, ও काहारक उ कृतु जानिया अवजा ना करत, उ भूसव-কারের অসাধ্য কিছুনয় ইত্যাদি।

অশক্যাধাব্যসায় করা উচিত নর, ইহার কথা। অত্যন্ত সাহসিক ও সাহস্কার এক জন কোন পণ্ডিত্রের স্থানে, দুবেরর পরিমাণ চারি প্রকার হয়, অণু মহৎ হুম্ব দার্ঘ, তাহার মধ্যে মহৎ পরিমাণ আকাশের, যেহেতুক আকাশ সকলহইতে বড়, ইহা প্রবণ করিয়া মনে করিল, যে আকাশ যদি সর্বাপেক্ষা বড়, তবে আমাহইতেও বড় হইল, ইচাকে কোন মতে খাট করা কর্ত্য। অতএব আমি আকাশকে খড়গেতে খণ্ড ব করির, ইহা মনে করিয়া অদি হস্তে লইয়া আদকালন করিয়া, এই আকাশকে খণ্ড বর্তির, ইহা মনে করিয়া অদি হস্তে লইয়া আদকালন করিয়া, এই আকাশকে খণ্ড বর্তির, ইহা কহিয়া প্রতাহ আকাশে খাঁড়া ঘূরায়। দৈবাৎ এক দিবস ঐ উদ্যুশ্রিমান খড়গ তাহারি পুরিতে লাগিল, ভাহাতেই সে পঞ্জর প্রাপ্ত হইল।

যার যে শাস্ত্র কিঞ্জিমাতও অধীত নয়, সে শান্তেতে তাহার উপদেশ
গ্রাহ্য করিবে না, ইহার কথা। এক রাজার নিকটে বিপ্রাভাব নামে
এক বৈদ্য থাকে, সে চিকিৎসাতে উত্তম। তাহার পঞ্চপ্রপ্রাপ্ত হইলেপর
ঐ রাজা রামকুমার নামে তৎপুশ্রকে ভাহার পিতৃপদে ফাপিত করিলেন।
ঐ ভিষক্পুশ্র রামকুমার ব্যাকরণ সাহিত্য কিঞ্জিৎ পড়িয়া বুম্পর্র
ভিল, কিন্তু বৈদ্যকাদি শাস্ত্র কিঞ্জিমাত্রও পঠিত ছিল না। রাজানুগুহেতে
স্বপিতৃপদাভিষিক্ত হওয়াতে রোগির। চিকিৎসাথে তাহার সরিধিতে
যাওয়া আসা করিতে লাগিল। পরে এক দিবস এক নেত্রেগা ঐ

রামকুমার বৈদ্যপুদ্রের নিকটে আদিয়া কহিল, হে বৈদ্যপুত্র, আলি আদ্মিপীড়াতে অভিশয় পীড়িত আছি; দেখ, আমাকে এমন কোন ওীষিধি দেও যাহাতে আমার নয়নবায়বি শীসু উপশম পায়। রুপুনেত্রের এই বাক্য অবদ করিয়া ঐ চিকিৎসকসূত অভিবড় এক পুস্কুক আনিয়া পুলিবামাত্রে এক বচনার্জ দেখিতে পাইল, দে বচনার্জ এই, ''নেত্র-রোগে সমুৎপদ্মে কর্ণে। ভিত্রা গুদ্দ দহেং' ইহার অর্থ, নেত্ররোগ ইইলে নেত্রোগির কর্ণন্ত্র ছেদন করিয়া লোহ তথ্য করিয়া ভাহার পৃষ্ঠদেশে দাগ দিবে। এই বচনার্জ পাইলা ঐ ভিষক্রনদন নেত্রোগিকে কহিল, হে রুগ্লাক্ষ, এই প্রতীকারে তোমার বায়ধির শীঘু শাভি হইকে, মেহেতৃও গুদ্ধ মুকুলিত করামাত্রেই এ বায়বির উবদের প্রমাণ পাওরা গেল, এ বড় সুল্লকণ। রোগী কহিল, সে কি ঔবধ ভিষকসভান কহিল, মুনিশীঘু বাটী গিয়া এই প্রযোগ করে, গ্রীক্ষণার শাণিত্ এক ক্লুর আনিয়া মুকীয় দুই কর্ণ কাটিয়া সত্তপ্র লোহেতে পৃষ্ঠদেশে দুই দাগে দেও, ওবে ভোমার চক্ষুপৌড়া আশু শান্ত ইউবে। ইহা শুনিয়া ঐ লোচনরোগা আত্রপ্রিক্ত কিঞ্জিন্সাত্র বিবেচনা না করিয়া তাহাই করিল।

অনুষুর রোগী এক পীড়োপশ্মনার্থ চেষ্টাতে অধিক পীড়াদ্বরে অহার र्गाक्ल इडेशा से रेक्टनाज़ निकटिं भूनवीत शिल, ଓ ठाहाटक कहिन, হে বৈদ্যপুত্র, নেত্রের জলালা যেমন তেমনি পৃষ্ঠের জ্বালায় মরি। रेतमा পुज कहिल, छाडे, कि कतिरत? द्वांश इडेरल महिस्तू टा कतिरह इग्न, আমি শান্তানুসারে তোমাকে ঔষধি দিয়াছি, আতৃর হউলে কি হবে? ''নহি স্থাব্দির লভাতে।'' এই ক্রেপে রোগী বৈদ্যেতে কথোপকগন ছইতেছে, ইতিমধ্যে অত্যুত্তম এক চিকিৎদক তথা আদিয়া উপদ্ভিত **इडेल। अ यमगरहान्द्र दामकुमाद नारम मूर्ण टेटनाउनराइद अलटला**डि পাশিতাপ্রযুক্ত সাহদের বিশেষ অবগত হটয়া কহিল, ওরে বালীক, সর্ম্মনাশ করিয়াছিদ, এ বোগীটাকে পুন করিলি, এ বচনার্ছ অসচিকিং-সার, মনুষাপর নয়। দেশ কাল পাত্র অবস্থা ভেদে চিকিংসার বিশেষ আছে, তোর প্রকর্ণজান নাই, এ শাস্ত্র ভোর পড়া নয়, কুরাংপতিমাত্র বলে অপঠিত শান্ত্রের ব্যবস্থা দিন্? যা২, উত্তম প্রকৃর স্থানে বৈদ্যক শাব্রের অধায়ন কর্, "সঙ্গেতবিদা৷ গুরুবকুণমা৷" ইহা কি তুই কথন গুনিদ নাই? এইক্রপে ঐ চিকিৎসকতৎসকে পবিত্র ভর্ৎসন করিয়া এ ক্লিল্লাক্ষ হোগিকে যথাশার ঔষধি প্রদান করিয়া নীরোগ করিল।

III .- Mind the test of a man's value.

যার যে জাতীয় ধর্ম সে শ্বতঃপ্রকাশ পায়, ইহার কথা। এক সিংই গর্ত্তিন বনমধ্যে প্রদ্র হইয়া জাতমাত্র শাবক ত্যাগ করিয়া অন্য কাননে নিলা থাকিল। দে সিংহশিশ ভরিপিনবাসি কৃষ্কুর্ম্থের মৃষ্টিভ তদীয় আহার ব্যবহার করত থাকে। পবে এক দিন অতিশায় বৃত্তী হওয়াতে গরতর স্বোভঃ প্রবাহিণী পর্মানীয় নিমর ভরা এক নদীর তীরে ঐ কেশ্রিশাবক্রমন্তিব্যাহত শ্বমুথ নিয়া দেউ নদীর পারে মাউতে সকলে এক কালে উলাম করিল, তাহাতে সিংহশিশ্ব স্বজাতীয় শক্তিম্বৃতি হওয়াতে অনায়াদে ঐ করনা নদীর প্রপার প্রাপ্ত হউল, কৃষ্কুব্যুথের শারভ্জীমুতাজ্মর নাায় উল্যোগমাত হউল।

वाला रशेवन वार्ककानि अवसा धर्म उपानगराहित्तरक सर्हे हश, ইচাতে এক কাহিনী আছে, তাহা কহি, খন। এক মহাজন নানাবিধ দ্ব্য লইয়া স্বকীয় অজাতমৌবনা ভার্মাকে গ্রে রাখিয়া অর্থন্যানেতে -তাণিজ্ঞার্থে বিদেশগমন করিল। পরে নানাদেশীয় স্ভাবিধ দুবাজাত জ্ঞা-বিক্রয় করিয়া অনেক ধন উপার্জন করিয়া বিশ্বর দিংসের পর মানটো তে আইল, তথান তাহার পজনী প্রাগল্ভ্যাব্ডা প্রাথা চইয়াছে। অন্তর্ ঐ সদাগ্র নিশাভাগে শয়ন্সময়ে ধ্রমণীর বার্গেদ্ধা ও জিলাবৈদ্ধা ও কামকলাকৌশলাদিরপ চাতুরী নিরীক্ষণ করিয়া শুন্দির্গতির চইয়া অন্য-মন্দ্র হউলেন। উহাতে ঐ তাতিচ্তুরা স্ক্রী অংকীয় আমির অভিপ্রায় স্মিতে পারিয়া তৎক্ষণে চিত্রপটে তুলিকাতে এক নবপ্রসূতা মিৎচী-প্রলিকা চিত্র করিল, ভংপশ্চাং এক মত মাত্র লিখিল, ঐ মত্রুঞ্জের গণষ্লের উপরে নবজাত পঞাস্যশাবক ক্রোধেতে নথবিদারণ করি-তেজে, এমত চিত্র লিখিরা খীয় খামির স্মুখে রাখিল, এবং স্থিত-বদনা হটরা স্বামিকে কহিল, আপনি বিবেচনা পূর্দক দেখুন, এ চিত্র কেমন হউরাছে / ডৎপতি / ডচ্চিত্রাবলোকন করিয়া স্বপতনীর জিয়া-দৈবধ্যো প্রত্যক ও নিঃসংশয় হটয়া অতিলফী চটল।

জাতি বিদ্যা রূপাদিতেই পুরুষ ভাল হয় না, কিন্দু মনের ভদুওাতে মনুষ্যের সমীচীনতা, মনের অসামীচীনো মানবের অশোভনতা, ইতার কথা। অবস্থী নগরীতে এক বাজন থাকেন, তিনি বশিষ্ঠগোত্র ও বিদ্যান ও রূপবান ভিলেন; আরু এক চর্মাকারও থাকে, দে পিত্রী ও ঘোর মূর্গ জিল। এই দুই জন একত্র হইয়া বাণিজ্য করিছে অনেক টাকা ও ঘোরর কইয়া বিদেশে বাইতে মন্থ করিল। পরে মুহী বুজানকে জিলাসা করিল, তুমি কিসের হাবসায় করিব। বুজান কহিলেন, শালী বুটি যব গোপুম মূর্গ মাষ চণক মটর মসূর অরর কুলাথ বর্বটা সামা কাওনা চিনা কোদো মাড়িয়া ইত্যাদি শাস্মুব্যের জ্য়বিজ্যরূপ স্যাপার আমিকরিব। এবং পাদুক্থকে বিজ্ঞ জিলাসিলেন, চুই কিসের হ্যাপার করিব। কিমার কহিল, আমি গরুর চাম ও মহিবের চাম ভাগলের চাম ও ভেড়ার চাম ঘোড়ার চাম উটের চাম হাতির চাম গাগের চাম এই সকল চর্মের ব্যাপার করিব। উভয়ে এই প্রামশ করিয়া ব্যাপার থে প্রাপের চাম এই সকল চর্মের ব্যাপার করিব। উভয়ে এই প্রামশ করিয়া ব্যাপারাথে প্রাশে চুলিল।

মধ্যপথে এক গৃহত্তের বাটাতে ঐ দুই জন এক দিন উত্তরিল। পরে গৃহি ব্যক্তি ঐ দুই জনকে, ভোমরা কোথায় কি নিমিত্তে যাও? এ সন্ধাদ প্রশন করিয়া দকল সমাচার অবগত হইয়া বিপ্রকে বহুসমা-নেতে ভোজন শ্রনাদি করাইল, মুটিকে যাদৃদ্দিকরপে আহার নিদু৷ করাইল। এইরপে দৌহেতে তথা রাত্রিতে বাদ করিয়া প্রভূষে প্র-দ্বান করিল।

পরে ঐ দৃষ্ট জন বঙ্গদেশে আমিয়া পূর্কবিচারিত মামগ্রী সকল কিনিয়া ভ্রিতে ভ্রাই করিয়া অন্য কোন দেশে বেচিতে চলিল। তর্ণীতে জলপথে আমানিতে ২ পথ ঘটিত যাওয়ার কালে যে গৃহত্তের বাটীতে উত্তরিয়াছিল, দেট গৃহস্থদের প্রামে নদীর ঘাটে নৌকা লাগাইল। অনন্তর ঐ ব্রাজন চর্মকারকে কহিলেন, দাঁড়ী মাঝারা সকলে ঘাটে থাকুক, চল আমরা দুট জন সেই গৃহত্তের ঘরে গিয়া উৎরাট। এট কহিয়া দুট জন তথাতে আসিয়া উপস্থিত হউল। পরে সেই গৃহী ভাহাদিগের সকল বৃত্তান্ত অবগত হটয়াঐ চর্মকোরকে বহুমান পুরঃসর ভোজনাদি অগ্রে করাইলেন, পশ্চাৎ ব্রাহ্মণকে অবজা করিয়া খাওয়াইলেন। ভাছাতে এ বুলিল্প দলিকাহইয়া গৃহিকে জিজাদিলেন, হে গৃহি, তুমি ধার্মিক বিদ্যা-বান হটয়া এ বিপরী ভাচরণ কেন করিলা? বিশিষ্ট লোকের এমত রীতি নয়। ইহা প্রবণ করিয়া গৃহস্থ কহিল, তুমি যাওয়ার সময়ে আমার মন্দিরে যথন আসিয়াছিলা, তথন ভোমার অভিপ্রায় এই ছিল, যে যথেষ্ট ফদল ফলুক, ধান্যাদি শদ্য দকল দন্তা হউক, ভবেই আমি অপপ মূল্যে বিস্তর ধান্যাদি পাইব; এইরূপে সর্কলোকের কুশলবাসনা তোমার মান্স ছিল। এক্ষণে তোমার এই আশয় হইয়াছে, যে ধান্যাদি শদ্য সকল দুর্মূল্য হউক, দেশে অতিবৃষ্টি অনাবৃষ্টি ও শলভ অর্থাং পঙ্গপাল মূষিক শুকাদি পিহ্নি বাহুলা ও পরদপরে রাজবিগুহ, এই ছয় ঈতির মধ্যে অনাতম হউক, ভবেই আমার অ^লপ ধানাদি বিক্রয়ে যথে^ন লাভ হইবে। এইমতে সর্কপ্রাণির অনিফী ডোমার ইফী হ**ই**য়াছে, এই मुद्रे कावर आि शृद्ध छामात मश्कात कतिशाष्ट्रिलाम, देमानी अनामत করিলাম। আর এ চর্মকারের যাওনকালে অভিলাষ এই ছিল, যে ঝড়ে वांडारम वमसामि दार्रा अरनक ला महिसामि मङ्क, अरनक वर्म रहेक, এই মতে প্রাণিদের অন্তভাকাঙ্কা ছিল; সংপ্রতি দেশে জল হউক, ও প্রচুর তৃণাদি ও ধান্য যব লোধুমাদি হউক, লোমহিষাদিরা যথেকী ঘাস সিচালি ছানি ভূষি মুজ্দরূপে ভক্ষণ করিয়া হস্টপুষ্ট হইয়া প্রাণধারণ করুক, তবেই চর্মা মহার্ঘ্য হইবেক, আমার অনেক লভ্য হইবেক। এই রূপে পশুকাতীয় প্রাণিনিকায়ের মঙ্গলবাঞ্চ হইয়াছে, এই দুই নিমিতে আমি এ চর্মকারের আগমন সময়ে অসংকার করিয়াছিলাম, অধুনা আদের করিলাম। তুমিও জ্ঞানবান্বট খিন্ন হইও না।তুমি যদ্যপি এ

সকল বিষয় কান, ভথাপি অরণার্থ কহি, পাপের ফল দুঃশ, পুণাের ফল দৃঃশ। সনুষাদিগাের মনই পাপপুণাের কারণ, পুরুষের যথন যেমন অবহা, তখন ভেমন পূজা, শরীরমাত্রের পূজা কথন নয়। ভূমি পণ্ডিত অসংকর্মনারা ধনােশার্জনে প্রতিতি করিও না, সন্তিতে ঘণালাভে সম্ভােষ কর্, সার সম্ভাবতার সুখা, অসভ্যত কোটাগারও সদা দৃঃখভাগা।

আর দেখা, ধনের ও ঘনের এক প্রকার রীতি; কেননা মেঘ ঘশন লাইসে তথন বড় ঘটা হয়, যথন যায় ওখন শুনামাত থাকে, তেমনি ধন যথন আইসে ও যায়। আর দেখা, নারিকেলের জলের মত ধন ভাইসে, ও গজভুক কপিথেফলপ্রায় যখন যায়, এতাদৃশ পনের কারণ জানগাননিগের অধর্মবাসনা কর্ত্রা নয়; ধন হইলেই সুখ হয় এমন নিম নয়। যেহেছুক দেবরাজ ইন্দ্র অমৃত পান ভোগে স্বপ্রিয়া শ্চীদ্রেল বিলাসকরণে যাদৃশ সুখ পান, ভাদ্শ সুখ শুনর ও পায়। সেশ্কর কৃষিবাণিজ্য রাজসেবাদি ধনোপাজনোপায় কিছুই করে না, কিন্তু দেবরাজ্যুল্য সুখভাগী হয়। গ্রুড্রের এইরপ বাকের ঐ বুল্লণ লজ্যতে অব্যামুখ হইয়া আপনাকে বিককার দিয়া প্রভাতে নৌখানে স্বান্দ্র গ্রমন করিলেন।

প্রভারকের প্রভারণতে বিশ্ববঞ্জন্ত বঞ্চ হয়, সরল লোজেরা যে বিছিছিত হয় তাহা কি কহিব? ইহার কাহিনী। ভোজপুরে বিশ্ববঞ্জ নামে এক জন থাকে, তাহার ভার্যার নাম গতি জিয়া, পুল্রের নাম ঠক। সে ব্যক্তি ঘ্টের ছাই পুলা আজার পুরিয়া উপরে এক আদ্দের দি দিয়া দেশে শহরে ২ নগরে ২ গুলম ২ অনিয়ত বেশে ভুমণ করিয়া ঘড়াত্রমা ডিলালীয়া দিয়া সম্পূর্ণ মূল্য লয়। কেহ যদি ঘড়া ভালিয়া দৃষ্ট তিন সের ঘৃত লইতে চাকে, তবে তাহাকে দেয় না, বলে যে এ হৈয়লবীন অভ্যুত্রম ঘৃত, দেবভাদের হোমের উপস্কু, আমি এ ঘড়াইত ওামাকে কিছু দিতে পারি না; যদি ভোমার দেববুল্লণার্থে নেওয়ার আবশ্যক থাকে, তবে বর্থ অনুমানে এ ঘড়াতে যতো ঘৃত ছয় ভাহার এক আদ্দের নান করিয়া ঘড়াসমেত দিতে পারি, কিছু ঘড়াত্রত ভালিয়া কিঞ্ছি দিতে পারি না। কেননা মদি কিছু দেই, তবে বিশিষ্ট লোকেরা এ ঘৃত লইবেন না, কহিবেন, এ ঘৃতের অগুভাগ হুই আইয়াছিস, কিছা অন্য কাহাকেও দিয়াছিস, অবশিষ্ট ভাগ দেবতা-দিগকে দেয় হয় না, তবে লইয়া কি করিব?

বিশবঞ্চকের এই বাক্য শ্রাবণ করিয়া ক্রেডারা কেছ কছে, আমার অম্প স্তের প্রয়োজন, দুই এক সের আজ্য যদি দিতে, তবে লইভাম, অধিক ছবির আর্য্য নাই। এইকপ কছিয়া কেছ ফিরিয়া যায়, কেছ বা কদাচিৎ উপযুক্ত মূল্য দিয়া ভাওসমেত সকল ঘৃড লইয়া যায়, এইকপে সর্বজনকে বিজ্যুনা করিয়া বেজ্য়ে। দৈবাৎ এক দিন ঐ বিশ্বঞ্চকের ন্যায় আরে এক জন বিশ্বভণ নামে এক কুপাতে পাঁক কাদা পুরিয়া তদুপরি কথক প্রভাগির এ কুপা মাথার করিয়া ইতস্কঃ ভূমণ করিছে আরু ছইরা বিশামার্থে এক বৃক্ষের ছারাতে বসিয়া আছে। ইউমধ্যে বিশ্বক্ষেক তাদুশ শর্পিঃকুম মন্ত্রকে করিয়া ভূমণ করত ক্লান হইরা ঐ তর্মলে উপস্থিত হইল। পরে বিশ্বভণ্ডের সন্থিয়া আপনি রানাথে পুফারিণীতে গমন করিল। অন্তর্র ঐ বিশ্বভণ্ড মনে কিচার করিয়া তাহাতে বিশ্ব ক্ষাম করিয়া অনুপ্রিত ক্ষাম করিয়া করেয়া করেয়া করেয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করেয়া করিয়া করিয়া করেয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া আদিতে হ আমি আপন প্রভ্রে কুপা ছাজ্য়া উহার মৃত্যম্পূর্ণ কুম্ব লাইয়া শ্রিপান্ত শর্রা করিয়া গাতের তলাম করেয়া করিয়া করিয়া করিয়া করিয়া প্রাক্ষিত তাহার করিয়া আদিতে হ আমি আপন প্রভ্রে কুপা ছাজ্য়া উহার মৃত্যম্পূর্ণ কৃম্ব লাইয়া শ্রিপান্তর তলাম করেয়া বিশ্বজ্ঞকের তদ্ধেপ শ্রিপান্ত লাইয়া মনে হ তাহাকে ফারিল দিয়া অভিবেশ্ব প্রভান করিল।

তদনস্ত্র ঐ বিশ্বপ্রক স্বোব্বে স্থান কবিয়া তহতলে আসিয়া স্থকীয় ঘুতক্ত না দেখিয়া তাহার শর্করাক্ত অবলোকন ক্রিয়া মনে ২ অগ্র আছলাদিত হইয়া কহিল, আজি এ বেটাবড় ফাঁকি পাইয়াছে, ঈগগু-বিড়ম্বিত মার্থবিড্মিত হর, আমার আদা অনারাদে যে লাভ হটল সেই ভাল। এইরূপ মনে করিয়া প্রমানন্দে নিজ মন্দিবে গমন ক্রিল। বাটীর নিকটে গিয়া আপন স্ত্রীকে ডাকিল, ও ঠকের মা, ওরে দৌডিয়া শীঘ আয়ে, মাথাহইতে ভার নামা, আজি এক বেটাকে বড ঠকাইয়াছি। তাহার জী গতিক্রিয়া কহিল, ওগে। আমি যাইতে পারিব না, আমার ছাত যোড়া আছে। তৎপতি বিশ্ববঞ্চ আলয়ে আদিয়া দ্বীকে ক্তিল. আয়, এই নে, আজি বড মজা হইয়াছে, দিবা দাব গুড এক কপা পাওন ণিয়াছে: এক বেটালক্ষীভাড়। আপন এই গুড়ফেলাইয়া আমার সেই যিএর যড়া জানিস্তো তাহা নিয়া অমনি প্রশ্বান করিয়াছে: মনে ২ বড় হর্ষ হট্যাছে যে আজি যথেট ঘৃত পাট্লাম, পশ্চাৎ টের পাট্রে: যা, শীঘু রাঁধারাড়া কর, আমি নাইয়াই আসিয়াছি, ক্লধাতে পেট জবলিতেছে। জ্রী কহিল, গুড় হইলেই কি বাঁধা হয়? তেল নাই, লুণ मारे, ठाउँल मारे, उत्कातिशां कि कि हरे मारे, कांठें छला मकलि । छ हा, বেদাতি বা কিরুপে হবে? তৎপতি কহিল, আজি কি ঘরে কিছুট নাই ? দেখদেখি, পুদক্তা যদি কিছু থাকে তবে তার পিঠা কর, এই ওঁড দিয়া খাইব। ইহাতে তাহার স্ত্রী কহিল, বটে, পিঠা করা বৃঝি বয় সোঝা, জান না? পিঠা আঠা যেমন আঠা লাগিলে শীঘ ছাড়ে না, তেমনি পিঠার লেঠা বড় লেঠা শীঘু ছাড়ে না; কখনোতো রাঁধিয়া খাও নাই? আর লোকেদের মাউনের মতন মাউন পাইয়া থাকিতে, তবে জানিতে। हेरा सनिया विश्वत्भक करिल, उदर कि आजि शास्त्र गट्य ना ? क्यांव

ক্তি মবিব? তৎপতনী কভিল, মত্তকম্যানে, আজি কি পিঠা না খাইলেট নয়? দেখিদেখি হাঁড়িক্ঁড়ী খুদক্ঁড়া যদি কিছ থাকে। ইছা কহিয়া ছবহইতে अमर्कें जानिया वाँटिए वर्गिया किल, मीलहा छाल वरहे, लांडाहे। ষা ইচ্ছা তা, এতে কি জিকণ বাঁটা হয়, মকুক, যেমন হউক, বাঁটি ছো। কুলা কহিয়া খাদবঁড়া বাঁটিয়া কহিল, বাঁটাড়ো এক প্রকার চইল, আলিদি পিঠা খাইবা, নাল্ণ ভেল আনিতে হইবে । গঙিক্রিয়ার এই কথা খনিয়া বিখ্রঞ্জ কহিল, এবে বাজা ঠক, ডৈল লবণ কোথাট্টডে গোছেগাছে কিছ আন। ইহাখনিয়া ঠক নামে তৎপুত্র কোন প্রদীর এক ছালি-য়াকে, আয় আমার সঙ্গে, তোকে মোয়া দিব, এইকপে ভূলাইয়া সঙ্গে লট্যা বাজারে গিয়া এক মদির লোকানে ঐ বালককে বন্ধক রা-থিয়া তৈল লবণ লইয়া ঘবে আইল। তৎপিতা জিজাদিল, কিকপে তৈল লবণ আনিলি? ঠক কহিল, এক জোড়াকে ভ্লাইয়া বন্ধক দিয়া মদি শালাকে ঠকিয়া আনিলাম। উহা শুনিয়া তথপিতা কহিল, হাঁ মোর राष्ट्रा, এই তো বটে, না হবে কেন? আমার পুত্র; ভাল, অন্ন করিয়া খাইতে পারিবে। এইরুপে প্লের ধন্যবাদ করিয়া ভাগ্যাকে কহিল, ওলো মালি, যা যা, শীলু পিঠা করিলা, ক্রাতে বাঁচি না। অনম্বর তৎপতনী পিষ্টক করিতে আর্ডমাত্র করিয়া ভর্তার নিকটে আসিয়া এক পাশে মুখে কাপড় দিয়া চুপ করিয়া দাঁড়াইল, ও কহিল, আমারভো পিঠা করা হইল না, ভূমি গিয়া কর। তৎপতি কহিল, এ আবার কি? ভূই কেন করিবি না? ইহাকহিয়া কিঞিংকাল থাকিয়া কহিল, না খাইলে ডো নয়, ষাই আমিই করি গিয়া। এইরপ কহিয়া আপনি পিষ্টক পাক করিয়া থালেতে পরিবেশন করিয়া কুপাচইতে ওড় ঢালিতে প্রথম খানিক প্রভু পডিয়া তদ্পরি এক কালে কথকওলা পাস কর্ম পড়িল।

ইচা দেখিয়া গতিক্রিয়া কহিল, খাও, এখন পিটা খাও, যেমন মতি তেমনি গতি। তানস্ত্র ভংপতি গালে হাত দিয়া অপোমুখ হট্মা কিঞিংকাল থাকিয়া কহিল, যা যা, তুই আরু পোড়াশ্নে বিষার যেমন কপাল ভার ভেমনি দকলি মিলে; কিন্তু যা হউক, পেটা ভাল বটে, আমি বিশবক্ষক, আমাকেও বঞ্জনা করিল, লাপের পেটা বটে, এ ব্যক্তি বেখানে থাক্ক, দেখানে গিয়া ভাছাকে খুঁজিয়া ভাছার দদে বক্রালি করিছে চলল। ইচা করিয়া যথাকথঞ্জিলপে কিঞ্চিটোজন করিয়া ভদস্ত্রণে চলিল। পরে কিছু দিনের পর এক দিবদ এ বিশভ্তকে দেখিতে পাটয়া দূর্বইতে ডাকিতে লাগিল, ওহে বলু, থাকে ভোমাকে পোল দিয়া আমি ভোমার সহিত্ব বন্ধুতা করিয়া এডজপ শদ শুবন করিয়া আপাতত ভটছ ইইয়া ইভস্কতঃ অবলোকন করিয়া বিশবঞ্চককে দেখিতে পাটয়া কহিল, আইম ব্রোমাকেও আমি মনে ২ তক্ব করিছেছি, ভালো হইল ভোমার দলে দেখা ছইল, কছ, ওড় কেমন থাইলা? বিশ্বঞ্চক কহিল, ভূমি যেমন

ঘুত থাইলা। কিন্তু ভাই, তুমি আমাকে জিতিয়াছ, আমি প্রড় কিছই পাই নাই, তুমি ঘুত কিঞ্ছিৎ পাইয়া থাকিবা। দে যা হউক, আইস, ভোমার সঙ্গে কোলাকুলি করি। ইহা কহিয়া দোঁতে পরদশর আলিজন করিয়া আন্যান্য মখাবলোকনপ্রকি হাস্য করিয়া কৃক্ষভায়াতে ব্লিল। चानचुत दिचतक्षक कहिल, छाउँ, छामात नाम कि? स्न कहिः, आमात নাম বিশ্বভঙ। ইহা শুবণমাতে হীহী করিয়া হাসিয়া বিশ্বঞ্ক কচিল, ত্রেতো তমি আমার মিতা হইলে। ইহা শ্রনিয়া বিশ্বভঙ্গ কহিল, ভোমার কি এই নাম ? ইহাতে দে কহিল, না ভাই, আমার নাম বিশবপাক; নোহার নাম শ্ৰুতঃ স্মান না হউক, অর্থতঃ এক বটে: অত্তর আজি অব্ধি আমাদের বন্তা হইল। বিশ্বতঃ কহিল, ভাল সমানে ২ মিংন বিভিঙ तर्हे, यनि উভয়ে সরল হয়; উভয়ে কৃটিল হইলে বাহ্যতঃ যদ্যপি মি∴া ছউক, তথাপি ভিতরে ফাঁক থাকে। যা হউক,কিন্তু এক্ষণে ভোমায় আম্ব প্রীতি কর্ত্তা বটে। কেননা ভূমি আমার গুণ জানিলা, আমিও ভোমার ধ্রণ জানিলাম; কেছ কাছারো কথা কোথাও কহিব না। এই রূপে দুই क्कान भिज्ञ कितिया भवाभर्ग कतिल, এ कर्म कृनुलां उ कानां 5 र क. সেও অপ্প. ভাষাতে নিতা নৈমিত্তিক কর্মা নির্বাহ বিলক্ষণমতে ছউটে পারে না। "চটক্সা মাৎসং ভাগশতং" এতয়্যায় দ্র্নামের কার্ণমাত, কেবল ছুচা মারিয়া হাতগন্ধ; অতএব চল, কোন দ্রদেশে গিলা এমত জাবিকা করি যাহাতে অধিক লাভ হয়। এইরূপ প্রামশ করিয়া উভয়ে **কিছ টাকা দক্ষে লই**য়া গুজ্জারাটদেশে গেল। তথা গিয়া বিশবঞ্জ বিশ্বভাংকে কহিল, হে মিহা, তুমি এক কর্মা কর, এই দোযান পাগ মাথ য বাঁধিয়া এই ধোয়া ধৃতি ও আঙ্গুরাখা পরিয়া ধোরাকাচা চার্ব গায দিয়া এ শহরবাসি চিত্রপ্রভাম মহাজনের বাটী যাও, পশ্চাং আমিও ষাইতেছি; কিন্তু আমার যাওয়ার পুরের তুমি আপেন পরিচয় কিছু কাছাকেও দিবে না, আমি গিয়া দিব, কিন্তু আমি যখন ভোমাকে জিজা-**দিব, যে আপনি হেভায় কেন? তথন তুমি কহিও** যে পিভার সঙিভ কর্মাক্রমে বিবাদ করিয়া আসিয়াছি: ইচ্ছা আছে যদি ইনি সাহায্য করেন তবে বাণিজ্য করি।

আনন্তর বিখনত কথিতানুরপ সকল করিয়া তথা গেল। পদাৎ বিখবঞ্চ কিঞিৎ পরে সেখানে গিয়া উপস্থিত হইয়া বিখনত কৈ জিলাসিল, এ কি আশ্চয়া? আপনি এ স্থানে কি নিমিত্রে? সে কহিল, তাত বিমাতার বশতাপয়, এই প্রযুক্ত তাঁহার সঙ্গে কার্য্যক্রমে বিবাদ হইল এই নিমিতে। পরে বিখবঞ্চক কহিল, সর্মান্ত বিখ্যাত অন্তয়ন্ত ধনিক মহাপদ্মপতি নাম মহাজনের পুত্র ইনি; হে চিত্রপ্তর, ভোমার বড় ভাগা বে ইনি ভোমার বাটী আসেন। এ কথা শুনিয়া চিত্রপ্তর কহিল, বটে? তাঁহার পুত্র ইনি? আমি ভাঁহাকে বিশক্ষণয়পে জানি। তদনত্বর বিখবঞ্চক বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রতে বিশ্বভ্রত বিশ্বভর্য বিশ্বভর্য বিশ্বভর্য বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভর্য বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভর্য বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বভর্য বিশ্বত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বত বিশ্বভ্রত বিশ্বভর্য বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বভ্রত বিশ্বভ্রত বিশ্বত বিশ

জাদিল, এক্ষণে এথায় আপনি কি করিবেন? সে কহিল, ইহাঁব নাম খুনিয়া এ স্থানে আসিবালি; ইনি যদি আনুক্লা করেন. ১০ে স্কাতি জ্ঞীবিকা বাণিল্য কর্মা করিব। ইহাতে চিত্রওপ কহিল, তুমি যদি এই মগরে কুঠা করিয়া বাবদান কর, হবে আমে ভোমার দ্বারভা করিতে পাবি। চিত্রপ্রপের এই ক্রামতে উভয়ে এক দোকান ক্রিয়া রেওয়া দেওয়াতে চিত্রওপ্রের বিশাস জম ইয়া এক দিবস লক্ষ্টালা আনিল। বিশ্বস্পক বিশ্বভ্রকে কহিল, ওচে তন্ধো শ্বন, বিদেশে দীর্ঘকাল থাকা **छाल भय, जील्लामि लांतरात्रराला मर्त्रक्रम श्रास्ट ग्रास्ट ग्रा** না; ভাহাতে নানা দোষ ঘটে, আনজ এককালে অনেক টাকা পাওয়া গিয়াছে, এ সকল মৃদ্য কোন উপাদে লাইয়া উভ্যে ঋদেশে প্রস্থান করি। বিশ্বভন্ত ক্ৰিল, সে উপায় কিট বিশ্বস্থাক ক্ৰিটেটেল, সাৰ্গপ্ৰস্থে সংস্থা कडकंधेना घत कति, मुटै अक हाआत होकात उना आगिया (भट्टे भक्त ঘরে পরিয়া নিশাথে মেই ঘরে আওন দিনা পোড়াইয়া প্র তে চিএওখনে গিয়া কহি। তিনি মথান কহিবেন, আমার টাকার কি । এখন ওনি কাহবা, তাহার ভারনা কি? আমার সঙ্গে লোক দেও, আমি ঘরে গিরা হিসাব कतिया कड़ाकड़ा माम २. এक काल्य मकल छिँडा हैया मित। हेशार डिनि আপন টাকার উসলের জন্য যে সকল লোক আমানের সঙ্গে দিতেন, ভাহাদিলকে লইয়া ঘাইতে ২ মধ্যপথে আমি আপন বাটী নাইন, ভদন্ধি তুমি পাগল হইবা; মহাজনের লোকেরা যখন কিছু কভিবে, তখন তুমি ভূভ, কেবল এই শব্দ করিবা। মহাজনের লোকেরা কিছু দিন এই ক্প দেখিয়া বিবক হইয়া আপনাবাই গোমাকে ভাডিয়া ঘাইবে।

ইহা শুনিয়া বিখভও কহিল, টাকা সামলাই রা রাখিবার কেমন হবে ।
বিখবঞ্চক কহিল, ঝরচের উপলুক্ত টাকা রাখিরা বাকী টাকা আমরা
দুই জনে ভাল করিয়া লইয়া আপন আপন রূপক দাবধান করিয়া
রাখি, যাহাতে কেহ জানিছে না পারে। এ কথা শুনিয়া বিশহও কহিল,
টাকা সাবধানে রাখা কর্ত্বা হটে, কিন্তু এক্ষণে যে ভাল করা সে
কেবল কালনেমির লক্ষার বাঁটের মহ। আকাশের পক্ষির মাৎস পাকার্থে
বেসর বাটা মুর্থের কর্মা। পরের টাকা হীন করা বড় কটিন, এ মহাজনের
হাছ ছাড়াইয়া নিয়্রহেলে দেশে নিয়া এ টাকা পার করা লেল, যখন
এমত বুঝা যাবে, তখন বাঁটের কথা, এখন কি? কিন্তু হুমি যে পরামর্শ করিয়াছ সে উত্তম বটে। অতএব ভূমি কিন্তু টাকা লইয়া অল্প মূল্যে
অনেক হয় এইজপ তুলাপ্রভৃতি সামন্ত্রী আন নিয়া, আমি হড় ২ দাঁড্যরা
ক্তক্তলা প্রস্তুত করি। এইরপ দুই জনে নির্দ্ধনে বিচার করিয়া বিশব্দক
ভূলা কাপাসদিলর সামন্ত্রী আনিতে লেল। ইত্যবদরে বিশ্বত প্রশ্বত করেল
ভাবিশন্ত ভল্পা সকল বাটা পাচাইয়া দিল। অনন্তর বিশ্বত্বক সামন্ত্রী সকল আনিয়া রাত্তিযোগে সকল গৃহে অগ্নি দিয়া সকল দুবা ভক্ষাং করিয়া পরিছিত বস্তুমাত্রাবশিষ্ট উভয়ে অতি প্রত্যুহে চিত্রওপ্রকে সকল বিষয় জাত করিয়া ভাহার লোকসমভিব্যাহারে লাইয়া হাদেশে প্রহান করিল। পথহুইতে বিশ্বসঞ্জ আপিন বাটী গোল; বিশ্বভণ্ড কপটোআদ হুইয়া স্বালয়ে প্রবেশ করিল, মহাজনের লোকেরা যথন টাকার তাগাদা করে, তথন কেবল ভুভু এই কহে, আর কিজুই কহে না।

এইরূপ কিছ দিন দেখিয়া দাধ্ব লোকেরা মদেশে গিয়া উত্তমণ্কে অধমর্ণের সকল বৃত্তার বিজ্ঞাপন করিল। সদাগর অজ্ঞাত কুলশীল লো-কের সহিত দার্ল্য ক্রা মূর্থের কর্মা, এই প্রযুক্ত অত্যন্ত লডিলত হইয়া আপন হানি স্বাকার করিয়াও স্বৃদ্ধি লাঘবজন্য অপ্রভিষ্ঠা ভয়েতে কা-হাকেও কিছুনা কহিয়া হৃদ্ধীন্তুত হইয়া থাকিলেন। তদনশুর বিশ্বঞ্চ আসিয়া বিশ্বভাওকে কহিল, মহাজন বেটাকে কেমন ফাকি দিলাম, এক্সণে আমার ভার দেও। ইহা শুনিয়া বিশ্বভণ পূর্কবিং পাগলহইয়া ভূভু, কেবল ইহাই কহিল। পরে বিশ্বস্থক কহিল, যাও ২ ভাই, আমার সহিত কৌতৃক করার কার্য্য নাই, আমার ন্যায্য ভাগ আমাকে শীযু দেও। ইহাতেও ভুভু এই মাত্র উত্তর করিল। এইরূপে কিছুদিন দেখা থাকিয়া নানা প্রকার ভর প্রীতি প্রদর্শনদারা যভো ২ তাগাদা করে, ভাহাতে কেবল ভূ পাইয়া অতাত বিরক্ত ও কুপিত চইয়া বিশ্ববঞ্চ কহিল, ভালো রে নেটা, ভাল, আমি নিশ্বঞ্জ, আমাকেও ভাঁড়াইলি? ভুট যথার্থ বিশ্বভণ বটিস্। যে শিখাইল ভূ তারেই দিলি ভূ। এই কহিয়া চোরের লাজে না কাঁদে, এডস্যায়ে কেবল ভেক্যা হট্যা ভবনে গেলেন। এ কথার অবান্তর ভাংপর্যার্থ সকল সুসুদ্ধিরা মুর্দ্ধিতে বৃথিবেন।

IV .- Contentment.

পশ্চাৎ অসম্বন্ধীয় যে আরম্ভ তাহা করিবে না, কিন্তু উত্তমকালে উপসৎহার্য্য যে তাহাই করিবে, ইহার কথা। ভাঙীরনামে বনমধ্যে এক উট্টু থাকে, সে জরাবন্ধাতে জীণ হইয়া ইতন্ততো ভূমণ করিয়া লভা পল্লব শাখা তৃণাদি আহার করণে থেনাম্থিত হইয়া মনে চিন্তা করিল, যে ঈশ্ব আমাদের জাতিকে লখা মুখ দিয়াছেন বটে, কিন্তু একণে তাহাতে আমার কিছু হইতে পারে না। সম্পুতি আমাকে দীনহীন জানিয়া অনুগৃহ করিয়া অতিবত্ত লখায়মান বদন যদি দেন, তবে আমি শুয়িয়াং আনায়াদে মুখ বাড়াইয়া চরাই করি। উট এইরপ মনে ভাবিতেছে, ইতিমধ্যে সর্ব্য বাক্সিদ্ধ এক থ্রি দেই শ্বানে উপস্থিত হইয়া উট্টের সক্ষণ জানিয়া ভাহাকে কহিলেন, ওরে পশ্ব, প্রমেশব্রেছ্যানিয়মিতের অবিকাকাঙ্কী ভূই হইয়াছিস, তথান্ত। ইহা শুনিয়া ঐ উট্টু মনে ২ আন্দিত হইল ৪

কহিল, বড় ভাল হইল, আমার শাপে বর হইল। এইরপে ঐ উঠ লছমান আমা পাইয়া বিদিয়াহ পাতে সমিতি নায়ে ভোজনানদে কিছু দিন থাকে। ইউমধ্যে দৈবাহ এক দিবস অভিবড় শিলাব্টি হইছে লাগিল, তাহাতে ঐ উটু করকাভিঘাতে অধ্যক্ত কাহর হইলা অন্যত্ত হকু সম্বর্গ করিতে না পারিয়া পর্বাধ্যক্ত মব্বে আমা প্রবেশ করাইল। দেই গুহাতে এক অজগর সর্প জিল, তাহার চলংশাক নাই, কখন আহার পাইতে পারে না, কেবল প্রনাত্ত ভোজনে কাল্যাপন করে। সেই দিন ঐ উট্টের বদন পাইয়া অভিশয় হার্য এই ইয়া, হে ঈশ্র, হুাম বন্য; এ স্থানেও আমার আহার আনিয়া দিলা, অজগতের দাধারাম, এই বাক্য সভ্য বটে, এইরপে ঈশ্রের বন্যবাদ করিয়া প্রমানদ্দে উট্টের ঐ মুখ ভোজন করিল।

আবিলীত শিক্টাচারপ্রসিদ্ধ যে তাহাই করিবে, লোক প্রসিদ্ধাতিক্রম করিয়া কিছু করিবে না, ইহার কথা। ধুমারণ্যে এক বুলিল থাকেন, তিনি হবিষ্যাশী মংসামাৎসাদি আমিষদুব্য কৰাচ্ ভক্ষণ করেন না। এ ব্লাহ্মণ এক দিবস বিবেচনা করিলেন, যেমন অপবিত্র দুব্য সংসপৃষ্ট পূত मামলী অথাদ্য হয়, তেমনি আমিষ্য মীন্দ্ৰপৃষ্ট যে সলিল সেও পেয় হইতে পারে না। অতএব আজি অববি আমি নদা নদ চুন পক্ষরিণী পল্লল প্রভৃতি জলাশয়ের জল আর পান করিবনা।তাহা করিলে নিরামিষ্য ভোজন বুডভল প্রদল হইবে, তবে এতংপর্যন্ত যে হইয়াছে, দে অজানতঃ। এইরূপ মনে করিয়া তদবপি নদ্যাদি পয়ঃ পান পরিতাাগ করিলেন, অভঃসলিলবাহিনী নদীর বারি পান করিতে লাগিলেন। দৈবাৎ এক দিবদ দে জলেতেও এক ক্দু সফরী মৎদ্যাকে বীক্ষণ করিয়া ওজ্জলপান বর্জন করিয়া কূপোদক পান করিতে লাগিলেন। কদাচিৎ একনা ভদষুতেও এক ক্ষু প্রোষ্ঠা দেখিতে পাইয়া দেজল খাওরা ছাড়িয়া নারিকেলোদক খাইতে খার্যু করিলেন। অন্তর সে জলের ভিতরেও ক্রমিকাট দর্শন করিয়া তংপান পরিত্যাগ করিয়া অতি-পিপাসাতে শুক্ষকণ্ঠ হইরা বর্ষোদক প্রত্যাশাতে উর্দ্ধে মুখব্যাদান করিয়া আছেন, এতদবস্বে এক বায়স পক্ষী তর্তুন্নস্যে শৌচ করিয়া দিল। পরে ঐ ব্রাহ্মণ একেতো ভৃজ্ঞাতে খ্যক্ষত ছিলেন, বিতারতঃ বকুনির্গত বায়স পূরীষদুর্গন্ধ প্রযুক্ত নাকার করিতে ২ গলা ফাটিয়া মরেন। ইত্য-বদরে ও জ্ঞ জ এক প্রমহৎদ স্থামী তথা আদিনা উপস্থিত হউলেন, এবৎ थे वुक्तिभटक जिल्लामिया मकल विषय मवित्यव গোচর চইয়া কহিলেন, ওরে মূর্থ কর্মজড় কুপমগুক উড়ুম্বরমশক, অসমুপদেশ দুরাগুতে দুর্দশা প্রাপ্ত হইয়াছিদ; আমার এই কমওলুহইতে জল লট্যা মুথপ্রকালন ও জলপান করিয়া প্রাণরক্ষা কর। সন্ন্যাসির এই বাক্যে তৎক্ষণে ঐ বিপ্রকর্মপানীয়েতে লপন ধাবন ও উদন্যা নিবৃত্তি করিয়া সুস্থ হইল।

পরে প্রমহৎস কহিলেন, ওরে বংস, আকর্ণন কর, বর্ত্তমান শরীরের জাবিরোধে যে ধর্ম হর সেই ধর্ম, যেছেতুক তাদৃশ ধর্ম ভরুবজানোৎপাদন দারা পর্মেখর প্রাপেক হয়। অতএব বেদান্তদর্শনে কহিয়াছেন, হিত্তমিত্তমেগাশন যে দেই তপ, উপবাদাদির প তপসা দদ্বার্থ হয়, ভরুবজানার্থ হয় না। গেছেতুক তাদৃশ তপসাতে আনাহারপ্রফুক ধাতুবৈষমাজনার্রোগেতে শরীর নাশাপত্তি হয়। অতএব জানিদের মতে অন্পানর্হিত তাদৃশ ধর্মাচরণ বর বিনাশার্থ কন্যাবিবাহন্যায় হয়; য়দ্যপি ভোমার দেহ বিঘাতক ধর্মানুষ্ঠানে ইন্ট্রাধন জান থাকে, তথাপি আত্মরক্ষার্থ ভদ্মাবিস্কন করণে প্রভাবায় হয়নে। আত্মাকে দর্বদারক্ষা করিবে, প্রাণ্য কণার্থ নিষ্কাচরণও করিবে, ইহার প্রমাণ বেদেতে কথাক্ষলে আছে কহি স্থন।

কুরুকেত্রে এক অযাচক বিপ্র ছিলেন, তিনি অযাচিতপ্রাপ্ত অন্নবস্থাদিতে যথাকথঞিজেপে গ্রামাত্রাদন ও পরিজান পরিপালন করত কালক্ষেপ করেন। দৈবাৎ ঐ কুরুকেত্রে পল্পাল পক্ষিতে তাবৎ শদ্য নট হওয়াতে অভান্ত দুর্ভিক হউল, ৬৭প্রযুক্ত ঐ অযাচক ব্রাক্ষণের বড় অপ্রভুল হউল, এবং পরিবার পরিপোষণে অনিকাহ হটল। টহাতে তাঁহার বুাক্ষণী অল্লাভাবে আজ্বদুংথ যেমন হউক, শিশু দদ্ধানেদের ক্ষুধাতে আর্তনাদা-কর্ণনে অতিশয় দুঃখিনী ও পরিপূর্ণাশ্রনেতা হইয়া স্বামির নিকটে সবিনয় নিবেদন করিলেন, হে বামিন্, অকালদকাশাৎ ভিক্ষা অতিদুর্লভ হইয়াছে, বালকদের অন্ধাভাবে ব্যাকুলতা অভিদুঃসহ, আমি ব্রীলোক, আমার সাধ্য কি? আমার কাটনা কাটাব্যতিরেকে আর কি শক্য?তণুলাদি ভোজা দুবা অতান্ত দুর্গুলা। আমার এক বন্তু, দেও শতরুদ্ধিযুক্ত ও অভিমলিন, অতএক পরিধেয় কমনাভাতে প্রাউকামিদিদের আবাদে গিয়া কিঞিং অব্যবহান্য সামনু যে আহরণ করি, ভাহাও পারি না। গৃহে অন্য কোন যোত্র নাই,উপযাচকেরা জনপদে যাজ্রা করিয়াও ভিক্ষা পায় না ; আপন-কার অঘাচক বৃত্তি; যদি দৈবাৎ প্রার্থনাবিরছে কদাচিৎ কিছু পাওয়া যায়, ভাষাও নিত্যাগ্নিহোত্রহোমার্থ হবিতে উপক্ষীণ হয়; অঙিশয় নিরুপায় হইল, কোন উপায় করা উচিত হয়। ব্রাক্ষণীর এই বাক্য আংবণ করিয়া ব্রাক্ষণ कहिएलन, रह नुष्क्रिन, देशी कत, अधीता इडेड ना, कामाहि एक मूथमूः र মানাপমানাদিৰত সহিত্ত হও। আগমাপায়ি স্থদুঃধ প্রাপ্তিতে হর্ষবিষাদ শুনা হও। সুধদুঃথাদি দ্বন্ধ পদার্থেতে যে মনোনুধাবন সেই হয়বিষা-দের উদ্দীপক হয়। অতএব দে সকলেতে অত্যন্ত মনোভিনিবেশ করি^৪ না। যিনি ময়ুর্দিগকে ঠিত্তিত, হৎসদিগকে ধবল, শুকপক্ষিদিগকে হরিত करतन, এবং ভোমার বালকদিগকে निर्माণ করিয়াছেন, ভিনি বিশ্বরু সকলের ভরণকর্তা। ভাবনা কি? জীবেদের জীবনকাল প্রমেখরে ছা নিয়মিত, তাহার অন্যথা সর্বথা হয় না। "আহারোপি মনুষ্যাণাৎ লম্না

সহ স্লায়তে। আয়ু মমাণি রক্ষতি কা চিদ্ধা মর্পে র্ণে।" ইত্যালি শারও আছে, হে প্রিয়ে, এডদ্বিয়ক কথা শ্রুবণ করে।

এক ভিজজাতীয়া পরিণতগর্ত্তা কা কাষ্ঠাছরণার্থ নিবিজ্ কানন মধ্যে গিয়াছিল, এক ভয়কর বর্ধর বাালু ঘোরতর গজ্জন করিয়া জ্ঞিনুমুথাগত হঠাৎ দেখিতে পাইয়া পলায়নাসমর্থা হইয়া জুমিতে ঐ ব্রুথিজন, তাহাতে তদুদরহইতে বালক ভূমিষ্ঠ হইল, শার্ল সদ্যংপ্রসূত্রা ঐ ব্রীকে আকর্ষণ করিয়া খাইয়া গেল, বালক একাকী ভূতলে পাড়িয়া ক্রন্দন করিতে লাগিল। অনন্তর পর্মকারণিক প্রমেগরানুকম্পাতে বে বিউপিমূলে পোত পতিত ছিল, দেই বৃক্কের এক শাথাতে মধ্ম কিকারা আদিয়া তৎক্ষণে মধুর চাক করিল, দেই মধুতক্রহইতে বালকবননে মধু বিলুহ পড়িতে লাগিল, এতজ্বপে দে বালক মধুপানেতে প্রাণধার্থ করিয়া বাঁচিল।

আর এক কথা কহি, শ্বন। চির্জীব নামে এক বাক্তি অর্ণব্যানারোহণ করিয়া সমুদ্দু যাতা করিয়াছিল, সাগরে প্রচণ্ডর কঞ্বা বায়ুতে অর্ণব্রোলিয় সমুদ্দু যাতা করিয়াছিল, সাগরে প্রচণ্ডর কঞ্বা বায়ুতে অর্ণব্রোলিয় প্রালিব মধ্যন্তি অর্ণব্যানের এক ফলকাবলম্বনে ভাদিতে ২ আদিয়া পরোনিধি মধ্যন্তি শৈলসমিধানে লাগিল, ঐ পর্বতে লম্মান এক সর্প পড়িয়াছিল। চির্জীব সমুদুকলোলে অভ্যন্ত ব্যাকুল হইয়া পর্বতোপরি জিগমিষাতে লম্মায়নান পতিত ঐ ফণিকে লহান্ত্রম অবলম্বন করিয়া আলম্মাকৃত তকাকে ত্যাগ করিল। অনম্বর পুচ্ছ প্রদেশে সপ্রট্যাত্র বিমধ্ব রোষাহিত হইয়া মুধ্বাদান করিয়া ঐ ব্যক্তিকে দংশন করিতে উন্যতহ হয়ামাত্রে ইয়র্বেছাতে তৎক্ষণে দংশাজারীয় প্রায় এক কুনু জন্ত তৎফণিফণোপরি উপবিকী হওয়াতে জলৌকামুখে লবণ প্রদান মাত্রে জোঁক গেমন হয়, তম্বং দে সর্পুত্রইয়া অন্থিমাত্রাবশেষ থাকিল, ভাহাতে চির্জীব জীবন পাইল।

আত্তর ছে ব্রাহ্মণি, যিনি স্থিকি র্যা তিনি রক্ষাকর্ত্তা, তাঁহার মনে যাহা আছে ভাহাই ছইবে, আমার উপায় চিন্তাতে কি ফল? ব্রাহ্মণের এতাদৃশ সাস্থ্যতে আর্যাসিতা, ব্রাহ্মণী নিরুত্র হইলে পর তৎপুত্র বচনোপন্যাদ করিলেন, ছে মানক, আপনি আমার মহাপ্তরু হন; পিতা, মাতা, আচাহাত্ত, অর্থাৎ শাব্রোপদেশক এই তিন পুরুষমারের মহাপ্তরু, অর্থাৎ এত প্রক্রার হার্পার, অর্থাৎ এত প্রক্রার করিবেক। অবৎ প্রক্রাক্ষাকরে সাহ্মাতে প্রক্রার উর্বাহ্ম উপাক্তর, তবে যে কিঞ্জিরিবেদন করি সোনকার ইচ্ছানুবর্তি হওয়াই উপাস্ক, তবে যে কিঞ্জিরিবেদন করি সে আত্রতাপ্রযুক্ত, আপনি অধ্যাপনা মনন নিদিধ্যাসন অর্থাৎ ধ্যানপ্রায়ণ হইয়া থাকেন, বিষয়বিশ্বণ সম্ভাবনা, আপনকার এই কারণে ইইছে পারে। অত্যর আমার সমাবেদন কেবল শ্বরণার্থ, শিক্ষাপ্রস্ক, অপরাধ মার্জনা করিবেন। আমার উপনয়ন কালাভিক্রম ছইতেছে,

যথাকালে পিতা পুত্রের যদি যজোপতীত না দেন, কালাভিপাত হয়, ভবে পিতা বৃদ্ধহা হন, ইহা আমি আপনকার ছাত্রদের পাঠনাসময়ে এবণ করিয়াছি। আমি দংপ্রতি অউবর্ষসমুক্ত চ্ইয়াছি, মৌশ্বীবন্ধনের অফ্র বর্ষ মুখ্যকাল; দকল কর্ম ব্যয়ায়াস্যাধ্য অর্থাৎ ধনবায় শারীরিক চেফীাদাধা। আমি শুনিতে পাই মিথিলা নগরে জনক রাজা বড় যজদমা-রোছ করিয়াছেন, অনেক ব্রহ্মণ পণ্ডিত সে স্থানে গমন করিতেছেন, আ পনি তথা গিয়া সভাতে পণ্ডিমণ্ডলীমধ্যে থক্ যজুং সাম অথবাধা চতুরেদ ও শিক্ষা কম্প ব্যাকরণ নির্ফুল জ্যোতিষ ছদ্দঃশান্ত মনু অতি বিজ্ হারীত যাজ্রবলক্য উশনা অঙ্গিরা যম আপদ্ভব সম্বর্ত কাত্যায়ন বৃহসপতি প্রাস্র ব্যাস শঙা লিখিত দক্ষ গোতম বশিষ্ঠাদি বুকার্ষি মহর্ষি রাজ্যি প্রণীত কৃতিশাস্ত্র ও বেদার সাংখ্য পাতঞ্জল মীমাৎসা ন্যায় বৈশেষিক ষড়দর্শনাদি নানাশাস্ত্র বিচার ও সন্দিগ্ধ প্রশন নিরূপণাদি করিয়া যাজা ব্যতিরেকে জাভাদপদ কার্ত্তি পাইতে পারিবেন। পুজের এই বাক্য প্রবণ করিয়া বাুন্সাণ কহিলেন, হে পুত্র, মিথিলাধিরাজ জনক রাজর্ষি অধ্যাত্ম-বিদ্যার পারদুশী, তত্তজ্ঞানিদের এক নিদুর্শনস্থান। তাঁহার নিকটে আমি সমাদর অংবশ্য পাইব, যেতেত্ক গুণবানদেরই গুণবল্পতে প্রীতি হয়, নিওর্ণের ওণিতে প্রেম হয় না। ইহার এই দৃষ্টাম্ব, মধুপেরা বনহইতে আমানমন করিয়াপন্মেতে প্রণয় করে; পদ্মসহবাদী মণুক করে না।

আর উত্তেমরা উত্তেমর সমিপেই ঘাইবেন, কেননা অধ্যের নিকটে গেলে উপহাসাদপদ হন। ইহার কথা; এক স্থানে আনেক বক বিদ্যাছিল, অক্ষাৎ দেই স্থানে মানস সরোবরনিবাদী এক রাজহৎস আদিয়া উপস্থিত হইল। বকেরা ঐ হংসকে দেখিয়া অভ্যন্ত চমৎকৃত হইবা লোহিত লোচন লপন চরণ ধবলশরীর তুমি কেছে? হংস কহিল, আমি রাজহংস। বকেরা কহিল, ওছে, তুমিই রাজহংস, বটে? ভাল, একংগে কোথাহইতে আইলা? মানস কাসারহইতে। সে স্থানে কি আছে? সুবর্ণ রাজাবরাজী, পীযুষতুল্য জল, নানারভেনতে নিবন্ধ আলবাল যাদের এভাদুশ পাদপপংকি, প্রতীরেতে বহুবিধ মণিশ্রতি ইর্ঝায় সোপানাবলি, এই সকল তথা আছে। এভজপ উত্তর প্রভাবরানন্তর ক্রুঞ্রো কহিল, সেখানে শামুক আতে? হংস কহিল, না। এই কথা প্রবণ্যাত্রে ক্ষের্গ হংসকে হাই। করিয়া উপহাস করিল।

অভএব করি, ছে পুত্র, অপকৃষ্ট লোকের নিকটে যাইবে না, উৎকৃষ্ট বিশিষ্ট স্থানেই যাইবে। জনকরাজ পরমধার্মিক সতৈ।কনিকেনন জীবস্কুল, সংপ্রতি ক্রতুদীক্ষা পুহণ করিয়াছেন, ওাঁছার সঙ্গে আমার সাক্ষাৎকার হওয়া বড় সুথের বিষয়। অভএব আমি অদাই মিখিলা নগরী যাত্রা করিব, পাথেয়ের সঙ্গতি কর। পিতার এই আজা পাইয়া পুত্র হওল শক্কে তামুকাদি কিছু পথখরচের সংযোগ করিয়া দিলেন। নুক্ষণ মিথিলা প্রস্থান করিলেন, পরে পথে আদিতে ২ পাথেয় ক্রাইল।
দিনত্র জলমাত্র পান করিয়া চতুর্থ দিবদে অত্যন্ত কুধার হইয়া মিথিলাতে পৌছিলেন। শাখানগরপ্রান্তে স্লেজজাতি হদ্ধিপতের। করিনিকর আহারার্থে মাযকুল্যাদি দিদ্ধ করিয়া শীতল ছওয়ার নিমিত্রে প্রদারিত করিয়া রাখিয়াছিল। ঐ ব্যাহ্মণ অসহা নুভূক্ষাতে অব্র হইয়া নিষাদিদিগকে কাইলেন, ওরে ছস্তিপালকেরা, এ সিদ্ধান্তইতে ভক্ষণোপযুক্ত আমাকে কিছু দে, আমি ক্ষ্পাতে অত্যন্ত বাধিত ছইয়াছি, আছার করিব; ক্ষ্পাতে আমার প্রাণ যায়। ছদ্ধিপকেরা কহিল, আ সর্করাশ! এ কি? আমরা স্লেছ এ অন্ধ পাক করিয়াছি, আপনি ব্রহ্মণ, কি মতে আমাদের সিদ্ধোন খাইবেন? ব্রহ্মণ কহিলেন, ওরে, আমি যদি কিছু এক্ষণে ভোজন না করি, তবে আমার প্রাণপ্রমণ হয়। প্রাণাত্রায়ে নিষ্কাল ভোজন করিতে পারে, এমত উপদেশ আছে, এবং বেদাস্কাতে বেদব্যাসও সম্মত করিয়াছেন।

মেছেরা কহিল, বাপু, আমরা শাস্ত্রফার কিছু বৃথি না; থাইতে চাছ, আপনি হাতে উঠাইয়া লইয়া থাও, আমরা মানা করে না, কিন্তু হাতে তুলিয়া দিতে আমরা পারিব না। মৈথিলাধিপ দোর্মগুপ্রাপশালা তীবু-শাসন, তাঁহার কর্ণগোচর হইলে আমাদিগকে সবংশে একগাড় করিবেন। অনস্তর বুল্লণ ঐ ফ্রেছপক কলায় কুলথ বহুদ্ধে লইয়া উদরপূর্বি করিয়া ভক্ষণ করিলেন। পরে এক ফ্লেছ সৃদ্ধি নির্মাল সলিলসম্পূর্ণ মৃদ্ধাও আনিয়া বুল্লাণের সমুখে রাখিয়া কহিল, মহাশয় জল পান করেন। বুল্লাণ কহিলেন, তুই ফ্লেছ্ক, ভারে সপৃথ্টোদক পান আমি করেব? ফ্লেছ্ব বলিল, মহাশয়, এ কি? আমাদের পাক করা অয় খাইতে পারিলেন, ছোয়া জল খাইতে কি? বুল্লাণ কহিলেন, ওরে, তথন যদি আমি আহার না করিতাম, তবে আমার জীবন থাকিত না, এক্ষণে আমার প্রাণরক্ষা হইয়াছে, তবে কেন হোর সপৃথ্টা জল পান করিব? প্রাণরক্ষাথেই প্রতিধিছার ভোজন শাস্ত্রান্মত। এইরপ ফ্লেছদিগকে কহিয়া ঐ শ্রোকিয় বুল্লাণ জনক ভূপালযাণ্ড্রিমতে গেলেন।

পরে প্রমহৎস ঐ ব্রাক্ষণকে কহিলেন, হে ব্রাক্ষণ, আমার কমণলুছ জলপানে ভোমার যদি নিরামিয়া ভোজন বুঙ্চদ্ধ শকা হইরা থাকে, তবে এই বেদপ্রসিদ্ধোপাখ্যান প্রামাণে দে সন্দেহ দূর করে। বস্তুতঃ ভোমার এ নিরম ক্ষতিস্তিপ্রাণবহির্ভূত ধ্বুদ্ধিমাত্রকণিপত আভান্তিক, সর্বমতান্ত গর্হিৎ, আভান্তিক কিঞ্জিলাত্রও তদু নহে; শিক্তপ্রশারা প্রসিদ্ধ যে ভাষ্টিতৎ, আভান্তিক কিঞ্জিলাত্রও তদু নহে; শিক্তপ্রশারা প্রসিদ্ধ যে ভাষ্টিকর্বা। এ বিষয়ে এক কথা ভান। ভর্মান্ত নামে এক মুনিপুত্র ছিলেন, জিনি মনুষ্যলোকতেত যাবৎ শান্তের প্রচার আছে, ভাবৎ শান্ত্র মান্তিপাঠ করিয়া মনে করিলেন, আমি মনুষ্যলোকীয় সকল শান্ত্র অধ্যয়ন করিলাম, সংপ্রতি পৃথিবীতে এমন কেছ নাই যে আমাকে অধ্যয়ন

করায়। অতএব মর্গে দূর্য্যের নিকটে গিয়া মর্গলোক প্রচারিত দর্মশান্ত অধ্যয়ন করি। এইরূপ মনোর্থার্ড় হইয়া তপোবনহইতে মধ্যাক্ষময়ে দিবাকরের নিকটে গিয়া অনভিদুরে থাকিয়া আদিত্যকে সংস্থাধন করিয়া কহিলেন। হে ভাস্কর, ভূমি সর্কশান্ত্রাকর, আমি ভোমার সমীপে দেব-**লোকীয় দর্মশান্তা**ধ্যয়ন করিতে আদিয়াছি, আমাকে পাঠ করাও। প্রভাকর কহিলেন, আমি এক দিমেষার্চে দুই হাজার দুই শত দুই যোজন গমন করি, এবং আমার তেজ অভিদুঃসহ, আমি মধ্যা হুকালান্তি-বিক ক্ষণমাত্র স্থির নহি, ভোমার অধ্যয়ন আমার নিকটে কিরুপে হইবে? আরু ভোমারি বা অধায়নের আবশাক কি ৈ ভোমার যে অধ্যেতবা ভাহা অধীত হইয়াছে। ঈপর্ভিলের দর্মশাস্ত্রজানবাদনা দ্র্মাদনামাত্র, দে ফলোপধায়ক হয় না। অভএব এ দূরাগুহ ত্যাগ কর, বস্থানে গমন কর। স্ফোর এ বাকা খনিয়া ভর্দ্ধার কহিলেন, তুমি যেমন গমন করিবা আমিও ভোমার সহিত ভেমনি গমন করিব, আরু তোমার তেজেতে আমার কি করিতে পারিবে? বহিং কি বহিংকে দথ্য করে? যে তপোবলে ভোমার এতাদৃশ সামর্থ্য ও তেজ হইরাছে, তাদৃশ তপোবল কি অনোর নাই? এটরূপ ভরদ্বাজের দাহস্কার বাক্য শুবণ করিয়া দূর্য্য নারায়ণদেব মনে করিলেন, যে ইহার ওতবজ্ঞান নাই, কেবল বহুশাঝাধ্যয়নজনিত বিদ্যামদোন্মত হইয়া আরুড়াহস্কার হইয়াছে, ইহার সমুচিত ফল হওয়া উপযুক্ত হয়। এইরূপ মনে কুরিয়া মুনিতনয়কে কহিলেন, ভাল, তবে

বিদ্যামদোশত হইয়া আর্ডাহস্কার হইয়াছে, ইহার সমুচিত ফল হওয়া উপযুক্ত হয়। এইরপ মনে কারিয়া মুনিতনয়কে কহিলেন, ভাল, তবে পড়। ইহা কহিয়া বেদোচারণ করামাত্রে দূর্যের পূর্বহুইতে অধিক তেজোবৃদ্ধি হইল, তাহাতে মুনিপুজের ক্ষজটাভারদমেত মুখ দগ হইল। এইরপে হয়ৎ দগ্ধানন হইয়া অধঃপতিত হইলেন, কিন্তু প্রাণাষ্ট্র হইল না। পরিবালক কহিলেন, হে বুলাণ, অতএব কহি, আত্যন্তিক কিছুই ভাল নয়। এই রূপে বুলাগতে উপদেশ করিয়া সন্ধ্যাসী প্রস্থান করিলেন।

From the Manifestation of the Truth.

তথ্যপ্রকাশ।

1 .- An address to Idolaters on the folly of idolatry.

প্রমেখবের উপাসনাহইতে বিমুগ হইরা পুত্লিকার আরাধনাতে তংপর যে সকল পণ্ডিতেরা, ওাঁহাদিগকে এবং ওাঁহাদের প্রিয়পাএদিগকে জিলাসা করি, চেতনর্হিত সাক্ষর্হিত বাকার্হিত এরপে যে অতাস্ত সঙ্প পুত্লিকা তাহাকে সর্বল্জ সর্ববাপী সর্বশিক্ষিনান্ প্রমেখর জান করিয়া তাবং প্রজাকের নিকটে কেন আপনাদের হাস্যাসপদক্ত স্থাও থৈ আর বিজ্ঞাতীয় মুখবাদা কক্ষবাদা অসুলিধ্বনি ও ভূমিতে পদাঘাত আর কর্তালী এবং অতাস্থ নিন্দিত ও অপ্রায় গাঁহ গান আর নানা কুংসিত অক্সভাকে প্রমার্থান স্থানির তাবং মনুষ্রের বাক্স বিদ্ধেপর আলয় কেন হইতেছ থাদি বল, পুত্লিকার আরাধনা বিষয়ে শাপ্রপ্রাণ আছে, অত্তর সেই প্রমাণে ইহা করিয়া থাকি; শাত্রে লিখেন, যথা।

"যে ব্যক্তি দেবতার প্রতিমাতে প্রস্তুর বৃদ্ধি করে দে নরকে যায়"। "আর প্রতিমা উত্তমরূপে নির্মিত হউলে দেবতার সন্ধিবান হয়"। উত্তম সমূল প্রায়েশ্য প্রতিমাপকার অনুমতি দেখাইলা, সেইরুপ

উত্তর। যেমন পুরাণেতে প্রতিমাপুলার অনুমতি দেখাইলা, দেইরূপ ঐ পুরাণাদিতে প্রতিমাপুলার নিন্দাও প্রত্যক্ষ দেখিতেছি, যথা।

"যে সকল মূঢ় ব্যক্তি মৃত্তিকা ধাতু প্রস্তর কাষ্ঠাদি রচিত মৃত্তিতে ঈর্বর বৃদ্ধি করে, তাহারা কেবল শারীরিক ক্লেশ পার, মুক্তিপ্রাও হয় না।"

"যে ব্যক্তি মূদ্তাপ্রযুক্ত সর্প্রভ্রব্যাপি আত্মা যে আমি আমাকে পরিত্যাগ করিয়া প্রতিমার ভজনা করে, সে কেবল ভক্ষে হোম করে।" অতএব শাত্রের পর্মপার বিবাদ দেখিতেছি, ঐ বিবাদ ভঞ্জনের দৃই পথ, এক এই যে প্রদার বিক্ষু বাত্যকে অধিকারভেদে দ্বীকার করা অর্থাৎ পুত্তশিকাপুলার যে অনুমতি দেখা যায় দে মুদ্দের প্রতি হয়; আর

মাছার বোধাধিকার আছে, সুতরাৎ তাহার প্রতি প্রলিকাপৃকার নিষেধ ও প্রমেখরের উপাদনার বিধি নিশ্চয় হইয়াছে। এবৎ পূর্বে ২ গুশ্বকারেরাও এইরপ বিরোধ ভঞ্জন করিয়াছেন, তাহার কিঞিৎ লিখিতেছি। যথা।

''কাষ্ঠলোস্ট্রেডে মূর্থেরাই দেববুদ্ধি করে, কিন্তু জ্ঞানি ব্যক্তির! পর-মান্ধাতে দেববুদ্ধি করেন''।

আরে বিরোধ ভঞ্চনের দিতীয় পথ এই, যে শান্তের প্রকার বি-রোধ ছইলে যে পক্ষ যুক্তিনিদ্ধ হয় তাহার গুছাতা ছইয়া থাকে। এ স্থলে পুরালিকার ঈশর্জ আছে, প্রাণপ্রতিষ্ঠাধীন তাহার শিলাজ্য আর থাকে না, ইহা এক স্থানে কহেন; আর অন্য স্থানে কহেন, তাহার ঈশর্জ নাই। ইহাতে যুক্তিনিদ্ধ কোন্ পক্ষ হয়, তাহা পুরালিকার দেবজ পরীক্ষা করিলেই অনায়ানে নিশ্য হইবেক; অর্থাৎ যদি পুরালিকার পূর্ববং মৃত্তিকা পাষাণাদির ধর্ম প্রাণপ্রতিষ্ঠার দারা পরিবর্ত ইয়া ঈশর্র ধর্ম তাহাতে উপস্থিত হয়, তবে পুরালিকার ঈশর্জ নিষ্ধে শান্তের স্থাকীয়া অগ্নিদাহে দথা হয়, তবে পুরালিকার ঈশর্জ নিষ্ধ শান্তের স্ক্রিপ্রকারে বলবন্ধা মানিতে হইবেক।

যদি বল, গুক্তিৰারা শান্তের বিরোধ ভঞ্জনের যে ৰিডীয় পথ কছিলা, ভাছাতে আমরা সমাত নহি; মেহেতুক যে দেবপ্রতিমাকে আমরা অত্যন্ত মান্য করিয়া জানি, সে কি জানি তগ্ন কিম্বা দথা ছইয়া যায়, অত্যব অধিকারতেদে বিরোধ ভঞ্জনের যে প্রথম পথ কছিলা, তাছাই সর্বসমূত বটে। আমরা সর্বব্যাপি প্রমেখরেতে চিত্তনিবেশ করিতে অসমর্থ ছই, সূত্রাৎ প্রতিমাদিতে ঈখরবুদ্ধি করিয়া উপাসনা করি; ইছাতে শান্তে কিম্বা লোকে আমাদিগকে মূর্থ কিছে, তাছাতে ছানি নাই।

উত্তর। পুতলিকা যে ভোমাদের অভিশন্ন প্রির, তাহা অতি যথার্থ, নচেৎ আপনাকে মূর্থ ও মূঢ় অঙ্গীকার করির। পুতলিকার আরোধনা সংস্থাপন করিতে প্রবৃত্ত হইতা না; কিন্তু মূর্থ ব্যক্তির শাত্রে কি রূপ নিন্দা লিখিয়াছেন, তাহা জাত থাকিবা, যথা।

"বেদোক জিয়াহান ও মুর্থ এবং মহারোগগুল্প আর আপন ইছান্তর আচার যে ব্যক্তি করে,এ সকলের যাবজ্ঞীবন অশৌচ কহিয়াছেন"। অভএব প্রমেশরেতে চিত্তের অভিনিবেশ করিবার বৃদ্ধি থাকিতেও কেন ইছাপুর্যাক পুত্রলিকার প্রীউতে আপনাকে মুর্থ কহাও? আর বিশেষ আশ্চর্যা এই, শাস্ত্রবিবেচনা বিষয়ে কিখা রাজকর্মো অথবা অন্য কোন বিষয়ে ভোমাদিগকে যদি কেহ মুর্থ কহে; ভবে ভাহার প্রাণ হরণে উদ্যত হইবা, যেত্তেক আপনাকে অন্য সকলহইতে সকল বিষয়ে বৃদ্ধিনান জানিয়াথাকহ; কিন্তু পর্মেশরের উপাসনা বিষয়ে প্রবৃদ্ধি দিলে কহিতেছ, আম্বা অম্পবৃদ্ধি দুর্গ্ধ অধিকারী, অভএব সর্ব্রাপি প্রমেশরের উপাসনাতে

আসমর্থ ছই, যে ছেতুক সে অভ্যন্ত দুক্ষর ছয়। কিন্ত বিবেচনা করিয়া দেখিলে পুতলিকার যে উপাসনা ভোমরা করিয়া থাকছ, ইছাছইতে অধিক দুক্ষর অন্য কোন কর্মা নাই, যেহেতু ক্সড়পিওকে সচেত্রনরূপে জান কর, আর যাছার খাইবার শক্তি নাই ভাছার নিকটে আয়াদি প্রদান কর, যাছার আয়াল করিবার শক্তি নাই ভাছার নিকটে নানা প্রকার স্থান্তি পৃষ্পাদি দিয়া সে তুট্ট ছইল এমত অভিপ্রায় কর, এবং সেই মৃত্তিকা পাষাণ-পিতেতে ঈশরক্রবোধ করিয়া থাক; অথচ শীতকালে কি ক্সানি শীতে দুংথ পায়, এ নিমিত্ত ভাছাকে শীতবত্ত দিয়া বেটিত কর; গ্রীফ্মকালে বায়ু বাজন কর, ও মশার ভারে লীয়াবে জিতি করা; গ্রীফ্মকালে বায়ু বাজন কর, ও মশার ভারে ভালিকে রাজিতে মশারির মধ্যে রাখহ, অভএব এক বন্ধতে এক কালে ঈশর জান করা ও অনীশর জান করা, ইছাছইতে সংসারের অন্য কোন বিষয় কঠিন এবং দুক্ষর বোধ হয় না, যেমন নটেরা বাল্যাবধি অভ্যাসবলেতে অভিদুক্ষর যে অনেক জুরি ও অনেক ভাটা এক কালে লোফা ভাছা অনায়াসে করে।

যদি বল, প্রাণপ্রতিষ্ঠার পরেতে প্রতিমাতে দেবতার আবির্ভাব প্রত্যক্ষ-সিদ্ধ, অভএব প্রভাক্ষসিদ্ধ বন্দ্র অমান্য হইতে পারেন না; উত্তর। ভোমরা এবৎ আমরা উভয়েই প্রত্যক্ষ দেখিতেছি,প্রাণপ্রতিষ্ঠার পূর্বের প্রচলিকার যে পাষাণতা ও মৃতিকাতা অথবা কাছতা ছিল,পরেও তাহাই আছে। মক্ষি-কা মশকাদি পুত্তলিকার শ্রীরে প্রতিষ্ঠার পূর্বের আপাদমন্তকে যেরূপ বিহার করিত, প্রতিষ্ঠার পরেও সেইরূপ বিলাস করে; পূর্ব্বে যেমন ভূম্যা-দিতে পতিত হইলে এও২ হইত, সেই রূপ প্রাণপ্রতিষ্ঠার পরেও হয়; স্মা-ছার নিদা দপদ্নের কোন শক্তি পূর্মেও ছিল না, পরেও দে সকল নাট; ওবে দেবতার আবির্ভাব হইয়াছে,ইহা কি রূপে নিশ্চর হয় ≀ বস্তঃ বাল্য-কালাবধি নানাপ্রকার আবিভাবের জনঞ্ডিলারা কোন সময়ে ঐ প্রাল-কাকে হাস্যবদন দেখা, কখন ২ ম্লানবদন উপলন্ধি কর, এই রূপ সংস্কার ছইয়া যায় ; যেমন গারো এক জাতি, তাহারা বাল্যকাল অবধি বিড়ালকে बन्रक्षािका स्वरं कितिया बीकात करतः; डाहाता ও विजाला बनाना **প্রকার চমৎকার দেখিতে পায়। সূত্রাৎ জন**ঞ্জিবারা বৃদ্ধি ম**লিন হইলেই** মনুবোর এরপ ভূম জান হইয়া থাকে ; কিন্তু আশ্চর্য্য এই আছে, অন্যা২ ভাবিৎ বন্ধর প্রভাকে ভোমাসকলের সহিত্ত আমাদের ঐকাই থাকে; কিন্ত পুরলিকার হাস্যবদনের প্রতাকে অনৈকা হয়। আর যাহার অবলোকন শক্তি চলংশক্তি চেডনাদি কিছুনাই, তাহার স্থানে যে মনুষ্যের হিডাহিত জান আছে, দে কিরুপে পুত্রের প্রার্থনা কিষাধনের ও আরোগ্যের यांका करत, अवर अहे मकरलत शालित निमिरत महे चाराउन वस्तरक উৎকোচ অর্থাৎ ঘৃষ দেয়? ইহাহইতে অধিক আর লক্ষার কারণ কি আছে। বিশেষতঃ প্রত্যক্ষ দেখিতেছ, এরপ ঘূষ দানের বারা অনেকের কোনহ কার্য সিদ্ধ হয় না, অথচ অনেক বায় ও আয়াস করিয়া ঐ পূজাদিরপ যুষ দিতে পুন:২ স্বীকার করছ।

যদি বল, যে সকল লোক প্তলিকার নিকটে এইরপ প্রার্থনা করে, ভাছাদের মধ্যে অনেকেরি কার্য্য দিন্ধ হয়; এবং যাহারা প্রধানং নামলব্ধ পুত্রলিকার হুচ্ছতা করিয়াছে, তাহাদেরি সমুচিত দমনও হইয়াছে; উত্তর। যেমন কাহার ২ পুতলিকার আরোধনা করত কার্য্যসিদ্ধি হয়, সেই ক্পেডে অনেক পুতলিকার নিকট কদাপি প্রার্থনা করেন না, কিন্ত ভাছাদেরও মনোভিলাষ মধ্যে ২ পরিপূণ হয়; অতএব মনোভিলাষ পূর্ণ হওয়া কিলা না হওয়া ইহা ঈখরাধীন বটে; কিন্তু লোকে কারণসত্তে হয়, কারণের অভাবে হয় না; অতএব ইহার সভিত পুতলিকার কি সম্বন্ধ আছে? আর প্তলিকার হস্ত পাদ কি জানি কখন ভগ্ন হয়, এই আশক্ষায় পূজকেরা সর্মানা বাস্কুট থাকে, ভাহা প্রহাক্ষ দেখিতেছি। অতএব দেবতার আবি-র্ভাবে তাহাদের সমাক্প্রকারে নিশ্চয় থাকিলে পুজকেরা পুতলিকার রক্ষার নিমিত্ত এ পর্যাও সভক হইত না। আর অন্যকে দমন করিবাতে প্রদান ২ প্তলিকার শক্তি আছে, এ যে কহিলা, তাহাতে তবেই আমরা বিখাস করিতাম, যদি উন্দুরু তৈলপায়িকা প্রভৃতি পুতলেকার অঙ্গরাগকে নফ্ট করিতে ও হাহার শ্রীরে গর্ত করিতে উদাত হইলে হাহাকে তৎক্ষণাৎ শাস্তি দিত, এবং মহ্লিকানানা অন্তচি দুব্যে বসিয়া পুতলিকার শরীরে যথন বৈদে, তথনি যদি ভাহারও বারণ শাস্তি করিছ। সে যাহা ছউক, প্তলিকার কত শক্তি আছে, আর কিবা শক্তি নাই, তাহার প্রীকা অনায়াদেই হইতে পারে; অর্থাৎ আমাদের হল্তে পুত্রলিকাকে রাথিয়া দেখা, কে কাহার সমুচিত দও করিতে পারে?

যদি বল, পুত্লিকার দেবতা এবং কোন ক্ষমতা যদি নাই, ভবে শান্তে জাজানির প্রতিই বা ইহার আরাধনার অনুমতি করিবার কি প্রয়োজন ছিল? উত্তর। দে সকল অজান লোক বিখের অদ্ধুত ও নিয়মিত রচনা এবং শরীরের বিচিত্র নির্মাণাদি অবলোকনদ্বারা বিশের কারণ ও জাণতের নিয়মকতা যে সর্প্রজাল পরমেশ্বর, ওঁছোতে নিশ্চয় করিয়া ধর্ম এবং ব্যবহার নির্পাহ করিতে সমর্থ হয় না, ভাহারা নাজিভাবে কাল হরণ করিয়া লোকের উংপাতজ্ঞানক হইবেক, এই আশক্ষায় ঐ সকল অবোধ ব্যক্তিকে ভাহাদের পৃথক্থ ফাতির অনুসারে বালকের নায় মগু রাখিবার নিমিতে নানাবিধ পুতলিকার, এবং যে পশ্ব পক্ষি বৃক্ষনদী প্রভৃতি প্রত্যক্ষ এবং অনায়াদে প্রাপ্ত হয়, ভাহারো আরাধনাতে ফলের লোভ দেখাইয়া অনুমতি করিয়াছেন, যথা।

"ফলাসক যে সকল মূঢ় লোকদের আত্মার এবং অনাত্মার বিবে-চনাশক্তি নাই, ভাছাদের প্রবৃত্তির এবং অধিকারের নিমিত্ত শাস্ত্রে ফলের কথন করিয়াছেন"। এ সকল অভানেরা বাল্যকালে কুদু ২ পুত্লিকা

এবং ধূলার নৈবেদা ও ছোট ২ পাত্রালি এ সকলের ছারা খেলা করিয়া চিত্তর-এনে করিড, সেই রূপে যুবাকালে ও বৃদ্ধ সময়ে বৃহৎ ২ পুভুলাও তপুলাদির বৃহৎ২ নৈবেদ্য এবং প্রশন্ত পাত্রাদিবারা নানা প্রকার খেলাতে চিত্তের সম্ভোষ জন্মায়। ঐ সকল বালকের ন্যায় খেলা ভাছাদের निडा किया, अव- डिथि विल्लास्त्र डेश्मत्व वाक्ट चाट्छ, श्राह्युक ব্রাণেক্রিরবেটিত শিলাদিকে উত্তম পুষ্পের আব্রাণ করাইব, এই উদ্দেশে वामरकत नाम शुक्राहर करत, अव अवरविद्यमत्रिहरह निकछ নানাবিধ বাদ্যধ্বনি করে; আর যাহার আবাদনের শক্তি নাই ভাহাকে নানাবিধ উত্তম খাদ্য দুব্য অপুণ করিয়া অবোধ বালকের ন্যায় গ্রাস-মুদুা দেখায়, এবং ্দশনেতে অসমর্থ যে বক্ত তাহার সমূধে আর্ডি করে, ও তিথিবিশেষে কর্মনে পতিত হইয়া প্রদার হরাছন্তি মৃষ্টামৃষ্টি পুরলিকার সন্থে করিয়া থাকে; কোন ২ ডিখিতে পুরলিকার নিকটে পিতা পুর ও ভাুতা এবং অন্য ধর্ষত্ব লোক একত্র মিলিয়া অকথ্য कथन भूक्तक नाना कृश्मित প्रकात भहीरतत सकी कतिहा नृत्रा करत; দে ছানে আপনার ও অন্য ২ প্রতিবাসির ব্রীলোক পরস্পারা থাকিলেও ঐ রূপ অকথ্য কথনে ও শ্রীর্ভলীতে নিবৃত্ত হয় না; কোন বা সময়ে নৌকার উপরি পুরলিকাকে লইয়া যথেফীচার করে। অতএব প্রমে-খরের আরোধনাতে কেন এ সকল অবোধের শ্রন্ধা **ছইবেক** ৷ সুতরাৎ এ সকল খেলা না থাকিলে তাহাদের কাল হরণের কোন উপায় ছিল না।

এককেও বুজা কৰা শাস্ত্ৰ এবং গুজিবিক্ষা হয়; গেহেছু গেমন ঐ একজে কিপোনা করিয়া পুরাণাদিতে বুজা কহিয়াছেন, সেই রূপ অন্য অন্যকেও স্থান স্থানাত্রে কিপোনা করিয়া পূজা কহেন। অভএব কিপোনাকে এক স্থান সহ্য জ্ঞান করা, অন্য স্থানে সহ্য জ্ঞানানা করা, এ সক্ষথা জ্ঞানিছ হয়।

আর যদি বল, চঁহারা সকলে পুথক্ নচেন, কল্ডঃ এক, কিল্পুথন শরীরে দৃষ্ট হয়েন। উত্তর। এ বে সকল দিশেষ ২ দেবতার পৃথক্ ২ শরার হয় ও পৃথক্ ২ বাসন্থান ও পৃথক্ ই প্রাপ্ত থাকে এবং পৃথক্ ২ গেটা ও কামজোধাদি ভাব থাকে ও প্রকার মুদ্ধ এবং সদ্ধ হইয়া থাকে, তাঁহারা যদি এক হইতে পারিলেন, তবে ঘটপট মনুব্য পশ্ম প্রভৃতি তাং জাওই এক কেন না হউক ? অতএব আকারভেদ বর্গভেদ ও নাভেদ চেটাভেদ ক্রিয়াভেদ থাকিতেও অনেক বছকে এক করিয়া কহা চন্দ্র কর্প প্রতৃতি তাবং ই প্রিয়াভেদ থাকিতেও অনেক বছকে এক করিয়া কহা চন্দ্র কর্প প্রতৃতি তাবং ই প্রিয়াক জলাঞ্চলি না দিলে হইতে পারে না; বদ্ধঃ ঐ সকল দেবতার জন্ম মরণ আছে, এবং তাহারা ও আমরা ও পশ্বপঞ্চী প্রভৃতি সকলেই অনিত্য হই; প্রভেদ এই যে আমাদের জন্ম মৃত্যু অরুয়ে হয়, ভাঁহাদের কিঞিৎ কাল বিলম্বে হইয়া থাকে, যথা, "বুদ্ধা বিশ্বু শিব প্রভৃতি দেবতা ও প্রাণি সকল নাশকে পাইবেক; অতএব যাহাতে প্রেয় এমন করিবে"।

আর ভাহারা কাম ক্রোপ লোভ মোহ এবং প্রদার নুদ্ধ বিগুহাদিও স্কান ব্যান্ত ছিল। সেইরপ মনুষ্য প্যাদিও কামক্রোপাদিতে বিবৃত হয়, আর্থচ পৌত্তলিকের মান্য কোন এক কিপিত বুজের জন্ম মমনে মস্ক ছিল হয়, পরে সুদ্ধলালে দত্ত তাই ইয়া যায়; কোন বুজের মুদ্ধে রক্পাত এবং মূর্জা হয়; এবং কোন বুজের ব্যাবহুত্তের দারণ শ্রাঘাও প্রাভাগ হয়; কোন বুজের চপেটাঘাতে দত্ত তাই হয়; অদ্যাপিও গ্রাক্তি দত্তহান জানিয়া পিটালির নৈবেদ্য দিয়া থাক; কাহারো বা শাপেও শোকে প্রাভ্যাগ হয়। ইহার প্রমাণ মহাভারত ও প্রণাদি শান্ত আছে। মনুষ্যকেও এ প্রকার নানাবিধ দুর্দশাগুদ্ধ হইতে দেখিতেছি। আর যেরপ দেবতাতে বুজা শব্দের প্রয়োগ আছে, দেইরপ মনুষ্যাদিতেও বুজা শব্দের প্রয়োগ আছে, দেইরপ মনুষ্যাদিতেও

"দকল এই দংসার বুজ হয়েন; যথার্থ জানে জগৎ এক হয়। এই প্রমাণের দারা কি দেবতা কি মনুষ্যাদি দকলেরি বুজাত প্রতিপন্ন হউল। তবে কেবল দেবতাদিগকে কেন বুজা কৃহ? আরু মনুষ্যাদি জগংকে কেন বুজা না কছ?

যদি বল দেবতাদের জন্ম মরণ কাম ক্রোধ রাগ দেব মূর্চ্ছা মোহ উত্যানি লীলামাত্র, বন্দুতঃ তাঁহারা নির্লিপ্ত হয়েন। উত্তর। কি মনুষ্যাদি কি দেব ডাদি সকলের আন্মাই নির্লিপ্ত, কিন্তু দেহের জন্ম মরণ ও ক্রিয়া ল^{ই হা} আন্মাতে আব্রোপমাত হয়; অতেএব দেবতা সকল অন্য হ জনুর না^ত দেহ বিশিষ্ট ও দেহের ব্যাপার বিশিষ্ট হট্যাছেন; তথাপি যদি দেবতাদের প্রভাক্ষিদ্ধ জ্বা মরণ ও মন্ত্রকাজেন ও রাগ নেয় ইত্যাদিকে লীলামাত্র প্রীকার করহ, তবে মনুষ্য পশু পক্ষী ইত্যাদি দকলের জন্ম মরণ কাম ক্রোধ ইত্যাদিকে লীলা করিয়া থীকার করিতে কে বারণ করে। যেহেছু সন্ধ বিবেচনায় ভাবং সংশার মাঘিক লীলামাত্র হয়। অভএব এক শ্রীরের চেষ্টা ও দুঃখ শোকাদিকে লীলা করিয়া জানা, আরে অন্যংশ্রীরের দুঃখাদিকে বাস্ত্রিক করিয়া মানা স্বপ্রকারে অসিদ্ধ হয়।

যদি বল, দেবতাদের হউতে যে সকল অলোকিক ব্যাপার হউরাছে, সে সকল মনুবাইউতে অসন্তর, অভএব কেবল দেবতাদের জাম মর্ণ লীলামাত্র হয়। উত্তর। প্রথমতঃ জ্ঞাদগুরে বচনহউতে এই বোধ হয়, এ গকল দেবতাদের নাম রূপের কম্পানা করিয়া শাস্ত্রে যেমন লিখিয়াছেন, সেইরুপ বিশেষ স্নীতি ও ধর্ম ও ধর্মের প্রভাব কম্পানা করিয়া করি-য়তেন। যথা।

''রূপ বিশিফী দেবতাদিগের যে পুংস্তাংশাদি কথা যে কল্পিত বাক্য মাত্র হয়''।

ষেহেছু কপে যদি কাশ্পনিক হইল, তবে দে ক্পের ক্রিয়াও দুছরাৎ কাশ্পনিক হইবেক। বিভীয়তঃ, যেমন দেবতাদের আলোকিক কর্মা করিবার কথন আছে, দেই ক্রপ আগস্তা জহু বশিষ্ট জনক প্রভৃতি ইহাঁর। সকলে দেবতাদের ন্যায় আলোকিক ক্রিয়া করিবাছেন, এমত পুরাণাদিতে নিখিয়াছেন, আতএব ইহাঁদেরও জন্ম মরণ কি মিথায়া? এবং ইহাঁরাও কি সহলু বুলা হইবেন?

যদি বল, ঐ দকল দেবতাদের উপাসনা করিয়া মুনিরা ওরাজারা পরম পদ প্রাপ্ত হইয়াছেন; অতএব তদনুসারে দেবতাদের আরাধনা আমরাও করি। উত্তর। দেবতারা ও মুনিরা ও রাজারা পূর্বাং মুগে কেবল পরমেগরেরই উপাসনা ও সমাবি করিছেন, দেবতাদের সহিত ও মুনিদের সহিত সমভাব ছিল, যজাদিবারা ভাহারা দেবতাদের উপকার করিছেন, দেবতারাও পূজাদি প্রদানবারা ভাহারো দেবতাদের উপকার করিছেন, দেবতারাও পূজাদি প্রদানবারা ভাহাদের ভুটি জ্মাইতেন; কখন সেবতাদের সহিত ভাহাদের প্রথাকিত, কখন আপ্রথাইতেন; কখন সেবতাদের সহিত ভাহাদের প্রথাকিত, কখন আপ্রথাই উত্তর পদাসাত ও বিদ্বর প্রতি ভূপর পদাসাত ও যদুবংশের নাশ ও কৃষ্ণের লগাভাহার ও বিদ্বর প্রতি ভূপর পদাসাত ও যদুবংশের নাশ ও কৃষ্ণের নাগাতে সূত্য এবং শিবের ঘোলপ্রাপি, এ সকল করিয়া জানিতেন, তবে অভ্যাপে জোধে দেৱতক্ষ পদাসাত বংশনাশ ইত্যাদি শাসন করিতেন না; বন্ধতঃ যখন যে দেবতাকে কিয়া অন্য কোন ক্ষতে পুরাণে পুলরেশে বর্মাছেন, অর্থাং তাহাকে স্থিতি প্রতি প্রলারে কর্তা

এবং সকল দেবতা ও রাজা ও থিষিদের আরোধ্য করিয়া কহিয়াছেন পুনরায় প্রাণাভরে দেই দেবতাকে অন্য দেবতার জনিত ও দেবক ে অধীন করিয়া কহিয়াছেন, এবং ঐ অনা দেবতাতে তথন সুক্ষ ধর্মেব আবোপ করিয়াছেন। প্রহাক্ষ দেখ বশিষ্টাদি থ্যিকে শিবপ্রধানক গুড়ে শৈব করিয়া লিখেন, আর শক্তিপ্রধানক গুল্তে শাক্ত করিয়া কছেন, এবং বিজু প্রধানক গুলে বৈদ্ধবরূপে বর্ণন করেন, হত্তে বামাচারিরূপে ভাঁহা দিগকে লিখেন; বন্ধঃ: গাঁহারা দেবতাদের ন্যায় কেবল এক প্রমেখরের উপাসনা করিতেন, দেবতার সহিত তাঁহাদের সমরূপে বাবহার ছিল, এবৎ পরদপর পূজাপূজকভাব ছিল, তুষ্ট হইলে বর প্রদান করিতেন. ক্রোধ হউলে অভিসম্পাত দিতেন, উহা তাঁহাদের গুরেই ব্যক্ত আছে: আর লৌকিক দৃষ্টীতে কেন না দেখ? যদি তোমাদের ন্যায় ঐ থাবিকঃ ও রাজ্যিরা জন্ম মর্ণবিশিষ্ট অবয়বির উপাসনা করিতেন, তবে ডো মাদের ন্যায় ওঁহোদের ও আনেকের উপাদ্য দেবতার নামে নাম হউত, কিন্তু তাঁহাদের কাহারোনাম হরিচরণ কৃষ্ণচরণ রাইচরণ পেয়ারিমোহন নিতাইদাস চৈতন্যতর্ণ ইত্যাদি আধুনিক নামের ন্যায় দেখিতে পাই না, সেহেতু ভারতাদি গুল বিদ্যমান এবং থবিদের ও রাজাদের নাম তাহাতে লিখিত আছে; বশিষ্ট শক্তি প্রাশ্র ব্যাস শুক ধৌমাণগ গোভিল দুর্ঝাসাঃ শাণ্ডিল্য কশ্যপ অগন্ত্য পুলস্ত্য কুরু পুরু যজাতি মান্ধায়' ভরত রঘু পাওু মুধি জিরাদি যে সহসু ২ নাম আছে, তাহাতে দেবপুতলি-কার সহিত্সম্বন্ধ নাই।

যদি বল, ঐ সকল প্রতিমার প্রদাদাৎ ও তাহার ২ মূলীভূত দেবতাব আবাধনাতে অনেকে সিদ্ধ হইয়া মারণোচ্চাটনবশীকরণে সমর্থ হইয়াছেন, এবং আপন ২ বাকাবলে মৃতকে জীবন ও অপুত্রকে পুত্র এবং নির্বনকে ধন প্রদান করিয়াছেন ও করিতেছেন, অতএব তাঁহাদের ঈশবুতের কি সন্দেহ আছে? উত্তর। যে ব্যক্তি পাষাণ মৃত্তিকার লোড়াকে এবং বনের বৃক্ষকে ঈশ্বর করিয়া বোধ করিতে পারে, এমন অবোধের নিকট কোন এক মনুষ্য প্রভারণা ক্রমে বৃহৎ জটা ও দীর্ঘ ফোটাও বিজাভীয় চকু ভলিমা ও হস্ত পাদাদি ভলিমা রাখিয়া, সেই মনুষ্য সিদ্ধ ইহা বলাইবেক, তাহাতে আশ্চর্য্য কি? ঐ সকল প্রহারকেরা অনোধদিনের নিকট আ প্রাকে বাক্সিয় এবং ভূচ ভবিষ্যতের জ্ঞানবিশিষ্ট জানায়, অথচ ট অজ্ঞানেরা প্রত্যক্ষ দেখে, ঐ সকল প্রতারকের বাটীতেই এবং অতি স্মিকটেই যে২ ব্যাপার হয়, তাহার অনেক জানিতে পারে না; আব তাহারা আপনারা অথবা তাহাদের অমাতারণ কিলা আত্মীয়রণ ে: গেতে ও দরিদুভাতে কথন ২ অভিক্লেশ পায়; অথচ ভাহাদিগকে বাক্যবার ও ষস্তায়নবার। অরোগী ও আদরিদু করিতে পারে না। কিন্তু যথন জানবানের সহিত ঐ সকল পূর্তবের কর্ম পড়িয়াজে, ভংক্ষণাৎ ভাবং

বৃত্তা প্রকাশ পাওয়াতে সম্চিত ফল হইয়াতে। প্রতাক্ষ কেন নাদেগ ? কলিকাতা ও ইহার নিকটবৃত্তি স্থান সকলেতে অন্য স্থান অপেক্ষা করিয়। অনেক সুবোধ মনুষ্য আতেন, অতএব ঐ সকল প্রতারকের প্রতারণা এই সকল স্থানে বাহুল্যরূপে চলে না। ঐ রূপ ডাইনের রোজা ও ভূতের রোজা কলিকাতার নিকট অত্যাপ দেখিতে পাইবা, কিন্তু যে বনবিন্দুপর ও বল্পদেশ ও কামাখ্যাদিদেশ অজানে পরিপূণ আছে, দেই > দেশে ঐ সকল প্রতারকের অত্যন্ত সন্মান এব \ ভূতের ও ডাইনের মাহাল্য প্রতি ঘরে প্রিক্ষি হয়। কিন্তু পৌতলিকের সিদ্ধতার প্রক্রি অনামানে হইতে পারে; অর্থাং ঐ এক জন সিদ্ধকে আমাদের নিকট ভাচাব সিদ্ধতা প্রকাশ করিতে কহ, তথান এ বিবাদের সিদ্ধান্ত এক কালেই হইবেক। আর ভোম্বা আপনারাই কহিয়া থাক।

"বুদ্ধা বিষয় শিব এহাঁর। কথন কাহারো কর্তৃক বাধ্য নছেন, অর্থাং উহাদের যে নিয়ম যে নিবারিত হয় ন।"।

অথচ বিখাদ কর, অমৃক দিদ্ধ বাজি নিজীবকে স্কাব করিলেন, ও
স্যাকে উদয় হইতে দিলেন না ইত্যাদি। ঈখর তোমাদিগকে মনুদাদেচ
দিয়াজেন, মনুষ্যের ন্যায় বোধ ও ব্যবহার কর নাকেন বিশ্বরের নিসমিত
বিষয়কে মনুষ্যে উল্পুলন করে, এমত বিখাদ মনুষ্যের হওয়া অভি
দুংথের বিষয় হয়। বিশেষতঃ এ অনুভব কেন নাকর বোমাদের মধ্যে
সাহারা অধিক নির্দ্ধোধ হয়, তাহারা ভোমাদের অপেক্ষা করিয়াও নানা
প্রকার পুত্লিকার আরাধনাতে তৎপর হয়; এবং ভোমরা মাহাকে
অমান্য কর, ঐ দকল পুত্লিকার নিকট প্রতি কর্মেই বর প্রাথনা করে,
যেমন জীলোক ও ইত্র জাতি। ভাহারা ভোমাদের নামলব্ধ পুতিলিকাকে মুত্রাং মান্য করিয়া থাকে। অধিকন্ত স্থা মারাল কাল্রায়
দক্ষিণ্রায় ওলাবিবী প্রভৃতিকেও মান্য করে, অথচ ভোমরা তাহানের
মান্য করক পুতুলাকে উপহাদ করে। দেইরূপ কিঞিং বিবেচনা করিলেই
এখন যে দকল পুতুলাকে স্কাবরূপে জ্যান করিতেছ ভাহাকেও উপহাদ
করিবা।

মদি বল, শাস্ত্রে গণেশাদি পাঁচকে বুজা করিয়া কহেন, অতএব ঐ পাঁচকে আমরা বুজা জানিয়া উপাসনা করি। উত্তর। শাস্ত্রে বুজারে আবাপো গণেশাদি পাঁচকে এবং অনা আনেককে বর্ঞ সমুনায় বিখকে বুজা করিয়া কহেন, যেমন বাযুকে বুজা কহিয়াছেন শতি যথা।

"হে বায়ুভুমিই বুকা"।

মনকে বুক্ত এবং উপাদ্য কহিলাছেন। আলকে বুক্ত কছেন। দাদকে এবং ধৃত্তিক বুক্ত কছেন। এবং আদিপধে গ্ৰুছকে অধ্যক এবং বুক্ত কছেন।

আর সর্মতীমাহাল্যে ভোমরাই পড়িরা থাকহ, যথং,

''বে সরস্বতী বুজাদি দেবতার সর্মদা বন্ধনীয়া হয়েন''। অতএব বুজা সর্মব্যাপক এই দৃক্তিতে ভোমাদের কি গণেশাদি পাঁচকে কি পঞ্চাশংকে কি সমুদায় জগংকে বুজা শব্দে কহিয়াছেন?

যদি বল, মুক্তিমিদ্ধ অথবা শান্তমিদ্ধ হউক অথবা না হউক, পিতু-পিতামহ যাহা করিয়া আদিয়াছেন, ভাহাই করিব। উত্তর। তোমবা পুতলিকা লইয়া থেলাইবার নিমিত পিতৃপিতামহের নাম উল্লেখ করহ, নঙুল কি লৌকিক কি পারমার্থিক কোন বিষয়ে আপন> পিড়পিডাুমহের ত্যুবহারানুসারে অতি অপপ কর্ম করিয়া থাক; এ অতি আশ্চর্যা। তোমাদের মধ্যে ঘাঁহাদের পিতৃপিতামহ সংকর্মান্তিত এবং বিদ্যাব্যব্সায়ী ছিলেন, এমন সহস্ সহস্কে দেখিতেছি, তথাপি তাহারা পিতৃপিতামহের ধর্মকে উল্লেখন করিয়া ঘোর বিষয়ী হট্যা स्मिष्णत नागळ कतिरङ्खन। छोडारमत मरका यनि काहात धनवता हम. তবে সে বংশের তিলক কছায়; এখন অনেকে দুর্গোৎসবাদিতে ঘরনীর ন্তা ও স্লেড। দির নিমন্ত্রণ ও তাহাদের ভোজন করাইয়া প্রশংস্মীয় হউতেছেন, কিন্তু পিতৃপিতামহ কবে এ দকল করাইতেন? ঝোলনা যাতার ও নলোৎসবেতে কেছ ২ যবনী নৃত্য করাইতেছেন; ইহা কোন্পিড় পিতামহের ব্যবহারে ছিল? কাহারো পিতৃপিতামহেরা দেবল ক্রিয়া করিতেন, তাহার সম্ভানের। অশুদুপ্রতিগ্রাহী হইয়াছেন। যাহার পিড়-পিতামহ শাক্ত বর্ঞ বামাচারী ছিলেন, তাহার সন্তানেরা বৈক্ষর বর্ঞ চৈতন্যসম্পুদায়ী হইয়াছেন। অনেকের পিতৃপিতামহ বৈষ্ণৱ ছিলেন, তাহার সভানেরা শাক্ত হইয়াছেন। আর আনেকের পিতৃপিতামহ দুর্গো-ৎসব করিতেন না, কিন্তু তাহার সন্তানেরা কোন উৎসব ও বুত করিতে অুটি করেন না। অনেকের পিতৃপিতামহ কন্যা বিক্রর করিতেন, সন্তানদের ধনবতা হইবাতে কুলীনকে কন্যা দিয়া গোষ্ঠীপতি কহাইতেছেন। অতএব পিতৃপিতামহের রীতির অন্যথা দর্মদা কর, কেবল প্রমেখরের উপাদন করিতে কহিলে পিতৃপিভামহের নামশ্বরূপ ঢালকে আবলম্বন কর।

যদি বল, ষাহার পিতৃপিভামহ কন্যা বিক্রেয় করিত, সে যদি কন্যা বিক্রিয় না করিয়া উত্তম পাতে দান করে; এবং যাহার পিতৃপিভামহ দুর্নোংশব করে নাই সে যদি দুর্নোংশব করে, ভবে ভাহার। প্রশংসনীয় হয়, যেতেই শাস্ত্রবিহিত কর্মা ভাঁহারা করিলেন, পিতৃপিভামহ যদ্যপিও করেন নাই. ভাহাতে কি হানি আছে / উত্তর। তুমি আপনিই ধীকার করিতেছ পিতৃপ্তিয়হ যদি শাস্ত্রনিধিদ্ধ কর্মা করে, পুত্তে ভাহার উল্লেখন করিয়া দংকন্ম করিলে প্রশংসনীয় হয়। অথচ কহ, পিতৃপিভামহ যাহা করিয়াছেন ভাহ ই

কেওবা; হাহার উল্পোন করা অকঠো হয়। অভএব যখান শুমি আপনি নি ধীকার করিভেচ, শাস্তাবিহিত কম পিড়াপিচামত না করিলেও কেইবা, ১খান আপনকার প্রাক্তি কহিবার অধিকাব হউল। সর্কাশাস্ত্রবিহিত যে বুজোনি পাসনা যদাপি পিড়াপিচামহ করেন নাউ, হাহা কেন না কর? অথাং বেলে প্রাণে স্কৃতিতে ভল্লেভে স্কৃতি যে বুজোপোমনার হিধি হাহা পরিভাগি ক্রিয়া কেন পুত্লিকার উপাসনাতে মিথাা কলক্ষেপ কর?

ষদি বল, আত্মোপাসনার বিধি সর্বশাস্ত্রে আছে; ভাষা না করিলে মদ্রতি হয় না। এমত যদি চইল, তবে যে পিতৃপিতামতাদি পর্বুকের উপাসনা করেন নাই, ওাঁহাদের কি সদ্গতি হয় নাই? উত্তর। গাঁহাদের পুত্তলিকা লইয়া থেলা করাতে দুর্গতি হউতে পারে না, যেতে হু স্বার্থ-পর পণ্ডিতেরা পুতলিকার আরাধনার প্রচারে আপনাদের যথেট লাভ দেখিয়া ঐ পুত্লিকাপূজাতেই স্ধানা তাঁহাদিগকে প্রণৃতি লওমা-ইতেন; আর উপনিষদাদি মোকশাস্ত্র সকলের প্রকাশ না করিয়া পুত্রি-কার আরাধনাতেই সক্ষমিদ্ধি হইবেক,ভাহাদিগকে এই জানাইতেন; বন্ধতঃ উাহাদের আনেকের শাল্পে অভিনিবেশ ছিল না, মুডরাৎ ঐ মকল পণ্ডিতের কথাতে বিখাদ করিয়া গাঁহাদের উপদেশানুদারে ধর্মানুষ্ঠানে কুটি করিতেন না। অতএব ভাঁহারা প্রতারিত ছিলেন, তাঁহাদের দোষ কি 7 প্রতারকদের ইহাতে অসশ্য অতিশয় পাপ আছে। সে দাহা হউক, কিন্দ ঘাঁহারা উপনিষ্ক প্রভৃতি শান্তের পাইদারা অথবা ভাষা বিবর্ণদারা এবং বিচার্দারা স্কাদা জানিতেছেন, প্রমেখরের উপাদ্না ব্যতিরেক আর নিস্তারপথ নাই, আর পৃত্লিকার উপাসনা খেলামাত্র, কেপল অত্যন্ত মুটুের জন্যেই শাস্ত্রে লিখিয়াছেন ; তাঁতারা যদি দেখিয়া জানিয়াও প্রমেখবের উপাসনা না করিয়া পুঞ্লিকা লইয়া পুঞ্লিকার খেলা দোলাতে রত হইয়া যাবজ্জীবন থাকেন, ঠাহাদের ঐহিকে এবং পার্ত্তিকে যথেষ্ট হানি হইতে পারে।

ষদি বল, প্রতিমার আরাগনা মহাজনপরস্পারার হইবা আদিতেছে; অতএব মহাজনেরা যাহা করিয়া আদিতেছেন তাহাই কর্ত্রা। উত্তর। কৌলেরা আগমবাগীশ বিরুপাক্ষ প্রভৃতিকে মহাজন শব্দে কহিয়া আদিতেছেন; আর তাহারা হরিদাস ও গৌরাঙ্গদাস ও নিতাইদাস প্রভৃতি কৈ মহাজন হরিদাস প্রভৃতি কৈ মহাজন দিগকে অবহেলা করেন। ঐ রূপ কৈষ্ণেরে হরিদাস ও গৌরাঙ্গদাস ও নিতাইদাস প্রভৃতিকে মহাজন জানিয়া আগমবাগাশ প্রভৃতির নিলা করেন। আর উদাসী প্রভৃতি সকলে ওক্ নানককে মহাজন কহিয়া থাকেন। এই প্রকাব নানা পথের লোক সকল পৃথক ২ ব্যক্তিকে মহাজন কহিয়া থাকেন; কিন্তু ঐ মহাজন সকলের প্রস্পার মতের অত্যন্ত অনৈক্য। এখন সকলকে কি মহাজন জানিয়া সকলের মত গুহণ করিতে হইবেক? কি শান্তানুসারে ধর্মানুষ্ঠান করা ঘাইবেক? বজ্বঃ মহাজন পদ

বাচ্য মনু যাজবলকা বশিকী গোতম ব্যাস প্রভৃতি হয়েন; তাঁহারা কেবল প্রমেখনের উপাদনাদারা কৃতার্থ হইয়াছেন, ইহার প্রমাণ পুরেট লিখিয়াছি, এবং তোমরা কেন না বিবেচনা করছ? ব্যাস প্রভৃতি যদি कान इस भागामिविशिक्षे (प्रवर्श सेभामना कतिएत, एत्व भ्वांशामित স্থানে ২ ঐ দেবতাকে অত্যন্ত ক্ষুদু এবং অধীন ও পরাস্ত হয়েন, এম ১ রূপে বর্ণন করিতে কলাপি সাহস করিতে পারিতেন না। ভাঁহারা পর-মেখরের উপাদনা করিতেন, অতএব কেবল দেই প্রমেখরের আরাধনা কর্ত্রা হয়। অথ গড়্ডালিক। প্রতাহে যেমন এক মেষ সোত জলে অথবা কুপেতে পড়িলে অন্য মেষ মকল মেই জলে অথবা কুপে পড়িয়া তৎক্ষণাৎ প্রাণত্যার করে, ইহার কারণ ঐ মেব সকলকে জিজাদা করিলে তাহাদের यम তাৎপর্য্য বোধের এবং বাক্য প্রয়োগের শক্তি থাকিত, उटत এই উত্তর দিত, ঈখর আমাদের ভদাভদু বিবেচনার শক্তি দেন নাই, দূতরাৎ এক অগ্গামি মেষকে কলে পড়িতে দেখিলাম, আমরাও তদনুসারে জলে পড়িলাম, ইহাতে দৃঃখই পাই আর প্রাণই বা ঘাউক, কি করিব? এইরূপ উটের বৎস কণ্টক ভোজন করিয়া মুখে যখন অভিশ্য র্কপাত করে, দে কালে ভাহাকে জিজাসা করিলে তাহার ভাৎপর্যাবো ধের এবৎ বাকাপ্রয়োগের শক্তি থাকিলে এইমাত্র কহিত, আমার পিড়-পিতামহকে কণ্টক ভোজন করিয়া মুখে রক্তপাত করিতে দেখিয়াছি, আমিও সূতরাৎ তদনুসারে কণ্টক ভোজন করি; যেহেতু ঈখর আমাকে সং অসং বিবেচনার শক্তি দেন নাই। কিন্তু যাহাকে ঈখুর ভদাভদ ও সদ্অসদ্ বিবেচনার শক্তি দিয়াছেন সে মনুষ্যের সন্থান যথন লৌকিফে অত্যন্ত হাদ্যাদপদ ও প্রমার্থে অত্যন্ত হানিজনক এমত কর্মা দকল করিতে প্রবৃত্ত হয়, অর্থাৎ তুড়ি দেওয়া নৃত্য করা মুখবাদ্য কক্ষবাদ্য এবং উৎসবেতে প্রস্প্র লজ্যালজ্যি ও কুৎদিত এবং অ্যাব্য ভাষাতে গান, এ সকল ক্রিয়াকে প্রমার্থদাধন জানিয়া করে, এবং ঈশ্বরকে পার-দারিক চোর কপটী কামী ক্রোধী লোভী ইত্যাদি অপবাদ দেয়,তখন ইহার কারণ তাহাকে জিজাদা করিলে দে আপনি কোন হেতু কহিতে না পারিয়া কেবল ঐ মেষ ও উট প্রভৃতি পর্র নাায় উত্তর যদি করে, অর্থাং "পিতৃপিতামহ প্রস্প্রায় এই রূপ ক্রিয়া আসিতেছেন, এ নিমিত আমরাও করি," ইহাহইতে অধিক দৃ:খ কি আছে? যেহেত এরূপ কথ-নেতে মনুষ্যবালকে আর পশুর বংদে কি প্রভেদ রহিল?

যদি বল, আমরা পুরলিকা আরাধনার সংস্থাপনের নিমিত্ত শাব্র প্রমাণ দিন, অতএব গড়ড়ালিকা প্রবাহ কহিতে পারিবে না। উত্তর। এ বিষয়ের উত্তর পুর্বেই দিয়াছি, ফলতঃ শাব্রে পুরলিকা আরাধনার বিধি মৃচ অবোধের প্রতি দিয়াছেন। অতএব ডোমরা শাব্রপাঠে ও বিষয়কর্মে সর্ব্বেধ হও, কেবল পুরলিকা আরাধনার সময় আন পনাকে অবোধ কছ, এ রূপ বাক্যকৌশলে ধর্মকে বঞ্চনা করিছে পারিবানা।

II.—The duty of forsaking Idolatry enforced.

যদি বল, আমরা যাতা উচ্ছা ভাতাউ করিদ, ভোমাদের উহাতে দৃঃ**খ** পা-ইবার কি কারণ ব এব৲ পুনঃ ২ নিষেধ করিবারই বা কি আবশাক ব উত্তর। প্রথম কারণ এই, ডানে)র দুঃথ দেখিলে দুঃথ উপ্যুত্ত হয় এ এক প্রকার স্বভাবসিদ্ধ, সুত্রাৎ ভোমাদের কিছাতীয় উচ্ছাপুর্দ্ধক দ্রবস্থা দে-পিতে > দয়াজনেম, এব৲ দয়াড়িমিলেই বার্ণ করিতে হয়; যেতে হুকথন ২ আমরা ভোষাদের বৃদ্ধ এবং যুবাকে বালকের ন্যায় ব্যবহার করিতে ৰেখি, অর্থাৎ যেমন তালক পৃত্তলিকাকে আহার শয়াদি প্রদান করে, দেই রূপ ঐ বৃদ্ধ এবং যুবারা পুত্রিকাকে ভোগ দিয়া মে ভোগ তাতার উৰ্জ্বিট জান কৰিয়া প্ৰমাহলাদে ভোজন করে। আৰু পুরুষ প্রলিকার দহিত জ্ঞীপুতলিকার বিবাহ দেয়; বৃদ্ধ মুবা তাকিদের এরপ বালকের চবিত্র দেখিলে কাহার না দয়া জিমিতে পারে? দিতীয় কারণ এট, কখন ২ এক জন স্বুদ্ধি ব্যক্তিকে উন্মাদগুদ্ধ ক্লিপ্রে ন্যায় চেন্টা করিতে দেখিতে পাই, দে একাকী ঘরের মদ্যে কথন > আপন বাম পাদকে ভূমিতে আঘাত করে, কথন বা মস্তকের চতুর্লিকে বেটিয়া ভূড়ি দিতে थांक, कथन ता অভিবেশে निश्राम প্রশাস ভাগা করে কথন বা বলেতে কক্ষদেশে বাহুর আঘাত করে, কখন ২ আপন গালে চপেটাগাত করিয়া থাকে, কখন বা অঞ্জিভঙ্গী হস্তুভঞ্গী দেহভঙ্গী বিদিধ প্রকারে करतः मुख्ता याहास्तत ताथाधिकात आरष्ठः समकल वाक्तिस्य अक्रभ উমতের ক্রিয়া করিতে দেখিলে কাহার নাদ্যা উপস্থিত হয় ? তুহায়তঃ কখন ২ পান দেহেয়ে মগুচিত যে সকল লোক, ভাহাদের ন্যায় যাবহার করিতে অত্যন্ত শ্বদ্ধাচার ব্যক্তি সকলকে দেখি, অর্থাং যে দেবতাকে মাতৃসবোধন করিয়া স্থাপন করেন, ভাচার স্থাপে স্কার বকার উচ্চারণ **थर९ (य मिनिट अङ्ग छङ्गी अद्याद मरोक्षर हिंद मिक्टे कहिएट ९ ल**ङ्जा साम्य তাহা করিয়া থাকেন, এবং অন্য অন্যকে ধন প্রদানদারা দেই আপন প্রমারাধ্য দেবতাকে এবং তাবং স্থী প্রথম পরিবারকে অতার নিশিত मुक्ताका खनान, এटर से कविनिशास जाभनात अवर जानात खी भतस्भवात নিকট উল্লিয়ের চাঞ্জাজনক নানাবিধ অঞ্ভন্ন করিতে অনুমতি দেন, অতএর মভারম্ব লোকহউতে এরপ অবোগ্য কর্ম কদাপি হয় না, সুতরাৎ জানবানকে এরপ মতের ন্যায় কর্মা করিতে দেখিলে কাহার দ্যানা ^{ক্লব্যে}? চতুর্থ কারণ এই, তোমরা নলেনাৎসবে দোলদাতাতে ও মহানসমীতে म्ब इस अवर मर्साञ्चरक कामा किया काथ ज्ञाबना तक्काता विदर्भ कृतिया প্রস্পর যেরপে রাজ্যুদ্ধ ও মৃষ্টিপ্রহার এবং নানাবিধ উৎপাতজিয়া

ও লম্ফরাম্ফ প্রমার্থ বোধ করিয়া দেবতার সমূখে করিয়া থাকহ, তাহ: মনুষাহউতে প্রায় সন্তব হয় না, সুত্রাৎ এরূপ অমনুষ্যের বাবহার মনুষ্যে দেখিলে কাহার না দয়াহয় / পঞ্চম কারণ এই, ভোমরা যে ইফট দেস তাকে পিতাহইতে মহদু রূপে গুরুত্র জান, তাঁহার দং অন্যকে কম্পনা করিয়া আপনার সমূথে দেই ব্যক্তিকে নৃত্য করাও, এবং বাসুদেব কাস্-দেব ইত্যাদি অন্য ২ ছণ্ডের দারা তাঁহাকে ব্যঙ্গবিজ্ঞপ করাইয়া আহ্লা-দিত হও, ইহা সকল ভক্তির কর্ম কি উপহাসের কর্ম হয়, ইহা বিবেচনা কেন্না করহ≀ অতএব পর্মাথ বিষয়ে এরপ বিজেপ ও ভাঁড়ামী দে-থিয়া কাহার দুঃখ না উপস্থিত হয় ? ষষ্ঠ এই, কখন গন্ধাপ্রাপ্তির নিমিত রোগগুস্ত বৃদ্ধ পিতা মাতাকে পৌষ মাদের দুই প্রহর রাত্রে জলে ডুবাইয়া হতা৷ করহ, যেহেছুদে সময় অত্যস্ত শীত এবং উৎকট বাতাস হয়, জট প্ট স্বাকেও চারি দও জলেতে মগুকরিয়া রাখিলে তাহার মৃত্যু হওনে কোন বিচিত্র নাই। আরু যুবঙী অথবা বৃদ্ধা ভগিনী কিস্তা মাতা পিতামহী কন্যা বধু ইত্যাদিকে ৰগ্পলোভ দেখাইয়া রজ্জু ও বাদ দিয়া বন্ধনপূর্মক দাহ করিয়া থাকহ, এরূপ পিতৃমাতৃহত্যা স্ত্রীহত্যা নর্হত্যা সর্বদা অন্যকে করিতে দেখিলে স্বভাবদিদ্ধ বারণ করিতে অবশাই হয়। আরু সপ্তম কারণ এট, গঙ্গাকে পাপমোচনী জান করিয়া রাতিশেষে এবং দিবদে জ্রীলো-কের যাতায়াতের দ্বারা মধ্যে ২ কিরুপ কদর্য্য ব্যবহার নাহয়, অনেক ' পৃরুষের মধ্যে একবন্তর পরিধান করিয়া জ্রীলোক অঙ্গ মার্জ্জনপূর্ব্বক য়ান করিয়া পার্থিব লিক্ষ পূজা করিতে থাকে, ইহাহইতে কি লজ্জাসপদ আর আছে? এবং তীর্থঘাতা ছলে দ্রদেশে সহসু ২ অন্য পুরুষের সহিত खीरलारकत भग्रत्न कि २ प्लाय रुष्टेतात मञ्जातना ना रुग्न ? स्थाय या कानः প্তলিকার নানা শক্তি বর্ণন করহ, এবং যাহার আগমনের ছারা গৃহস্থের ঐখর্য হইয়াছে, এবং নানা প্রকার বিপদ্হইতে ঐ ভক্ত গৃহস্ব রক্ষা পাইরাছে, এমত জনরব আছে, তাহাকে চোরে অপহরণ করিয়া কখন বিক্রম করে, কখন বা দেই প্তলিকা ধাতুময়ী হইলে তাহাকে গলাইয়া স্বর্জপ্যাদি পুহণ করে; কিন্তু ঐ পুত্তলিকার ভক্ত তাহার ঈশ্বর চুরি অথবা গলান গিয়াছে, ইহার প্রকাশে অতিশয় লজ্জিত হয়, এবং চোরের নির-কিন্তু এইরূপ অকুতাপরাধে লোকের দণ্ডকরিয়া লোকতঃ এবং ধর্মাতঃ অতান্ত নিন্দিত হয়। অতএব পুত্রনিকার আরাধনাতে কেবল পরলোকে দ্রবস্থা হয় এমত নহে, কিন্তু লৌকিকেও সর্বাথা হাস্যাসপদতর হয়।

্যদি বল, এরপ প্রতিমার অবলম্বন না করিয়া ঈশরের উপাদন।
ইশ্বপুটিটেরা করিয়া থাকে, অতএব তোমার ধর্ম তাহাদেরি ধর্মের তুলা
হয়; আমরা হিন্দু, সূত্রাৎ প্রতিমার অবলম্বন করিয়া উপাদনা করি।
উত্তর। যীশু পুটিটের মতাবলম্বিরা দৃই প্রকার হয়েন, এক ইৎরাজ

প্রভৃতি যাহার। আপনাদের আরাধনার স্থানে পুরলিকাকে কদাপি রাথে না; দিহীর ফিরিন্সী প্রভৃতি যাহাদের সংখ্যা ইংরাজ প্রভৃতি হটতে অধিক হয়, হাহারা আপন ২ ভজনস্থানকে প্রতিমাদারা পরিপূর্ণ রাখে। অতএব পুরলিকার পরিহ্যাগদাবা হোমার বিবেচনায় যদি ইংরাজের ধর্মের সদৃশ আমাদের ধর্ম হইল, হবে পুরলিকার পুরণদারা হোমাদের ধর্ম ফিরিন্সীর ধর্মের সদৃশ অংশাদের হইতে পারে। ইহা হইলে হোমাদের ধর্মই বা কোন্প্রশংসিত হয়?

यमि वल, जनराइव कादन दुक्त हराम, हेशार श्रमान कि? डेहता बेभवरक जनए इत कार्न करिया कि ए। मना कि आमरा उच्छर वे किया থাকি, এবং সকল শাস্ত্রে কহিয়া থাকেন। জগতের কারণ যে ঈপর ब्द्यम, मास्त्रिक वा जिद्युदक देशांड विवास काबाद्या माहे; आध्यव उँख्य সমাত যে কথা তাহাকে প্রমাণ করিবার প্রয়োজন রাখে না, যেমন বিশেষ জানবন্ত দ্বিপদ জন্তকে মনুষ্যশধে কহা উভয়স্মত হয়, সুত্রাৎ ইহার প্রমাণ করিবার কি প্রয়োজন আছে? কিন্তু অধিকের ভাগ থুমি যাহা কছ, কৃষ্ণ শিব অথবা কোন দেবতান্ত্র ঐ জগতের কারণ শ্বন্থ ঈগর হযেন, ভাহা আমাদের সমাত নতে; সুত্রাৎ শান্তের দারা এসৎ যুক্তির দারা তোমাদের ইহার প্রমাণ দেওয়া উচিত হয় ইহাতে যুক্তি-দারা এক জন হস্তপদাদিবিশিষ্টকে জগতের কারণ প্রমাণ করা কোন-মতে সম্ভব নছে, যেছেতু প্রতাক্ষের দারা এবং প্রতাক্ষমূলক অনুমানের দারা যে কফ হস্তপাদাদিবিশিষ্ট, তাহার নাশ অবশ্যহয়, ইহা প্রমাণ হউতেছে; এবং বিনাশি বদ্ভ ঈশব হউতে পারে না। আর শাস্ত্রের দারা যদি প্রমাণ কবিতে চাহ তবে শ্রীভাগৰতে কৃফাকে বুকা কহি-য়াছেন, ইহা কহিবা, তথ্ন আমরা কহিতে পারি দেমন আঁভাগবঙে কৃষ্ণকে বুন্ধ কহিয়াছেন, দেই রূপ কালীপুরাণে কার্লাকে এবং শিস-প্রাণে শিবকে এবং শান্তপ্রাণে সূর্যাকে এবং ডান্তে দশ মহাবিদ্যাকে বুজ কহিয়াছেন। আব বেমন এভিাগততে কৃষ্ণের মহস্প প্রকাশক বাক্য দেখি। ভেছি সেই রূপ ঐ সকল পুরেতে দেই সকল দেবতার মহজাসূচক বাক্য দেখিতে পাই; তবে কৃষ্ণ সুক্র আছে; আর সকলে পৃথক > ঋংস্প ঈপর হয়েন ইহা শান্তবারা এব৲ যুক্তিবারা অসিদ্ধ হয়, যেহেডু সকলের কর্তা এক বিনা অনেক হউতে পারেন না, আরে যদি দকলকে এক কল, তবে ইহার উত্তর আমহা পূর্বেং লিথিয়াছি ফলতঃ স্থানভেদ বর্ণভেদ আকারভেদ ইত্যাদি প্রভেদ থাকিলেও ওঁছোৱা যদি এক হয়েন, এবে ঘট পট অখ গজ প্রভৃতি কেন এক না হয়?

্যদি বল, হরিহর প্রভৃতিকে শাস্ত্রে এক করিয়া কহিয়াছেন, ভদনু্্নারে আমরা এক করিয়া জানি। উত্তর। শাস্ত্রে তাবৎ জগৎকেট এক করিয়া কহিয়াছেন। যথা, "বিবেকি মনুষোরা ভাবং সুক্ষাগুকে এক করিয়া দেখে।" অভএব এরপ ঐক্য কহিবার ভাংপর্য এইমাত্র, এক প্রমেশরকে অবলম্বন করিয়া ভাবং সংসার অবস্থিত আছে, দেমন এই এক সূর্যাকে অব-লম্বন করিয়া নানা প্রতিবিদ্ধ উৎপদ্ধ হয়, দেই রূপ প্রমেশরের এক-ভবকে আথ্য করিয়া ভাবং প্রভিবিদ্ধর্কপ সংসারকে এক করিয়া কহিয়াছেন।

যদি বল দেবতার। এক না হইলে নানা শাস্ত্রে নানা দেবতাকে বুকা কহিবার কি প্রেয়োজন আছে? উত্র ।ইচার বিশেষ উত্র পূর্বেং দেওরা গিয়াছে, কেবল দেবতাকে বুকা শব্দে কহিরাছেন, এমত নহে, বর্গং আম মন পশু পক্ষী প্রভৃতি তাবৎ সংমারকে বুকা করিয়া কহিয়াছেন, ইহালারা বুকা সক্ষরাপী হয়েন,ইহাই প্রমাণ করেন; কিন্তু ইহার প্রিডোকে বুকা হয়েনইহা প্রতিধান করেন না।

যদি বল, কৃষ্ণপ্রধানক গুদ্ধ সকল সাজিক হয়, অতএব দেই গুদ্ধের কথাই মানা। উত্তর। যে রূপ শিবপ্রধানক শাস্ত্রে শিবপ্রধানক গুদ্ধের উত্তমতা কহিরাছেন, সেইরূপ যে শাস্ত্রে বিষ্ণুকে প্রধানরূপে বর্ণন করেন তাহাতে বিষ্ণুপ্রধানক শাস্ত্রেকে উত্তম কহেন; পুরাণে পুরাণকে উত্তম কহেন, তল্পে তন্ত্রকে উত্তম কহেন, বর্ণ্ধ প্রতিপুরাণের শেষে কহেন, এ পুরাণ অনা সকল পুরাণহইতে উত্তম হয়েন, কিন্তু এ সকল স্থতিবাদ্মাত্র জানিবা। সকল পুরাণহর উত্তম হয়েন, কিন্তু এ সকল স্থতিবাদ্মাত্র জানিবা। সকল পুরাণের বকা এক জন, অতএব সকল পুরাণই সমান; যদি সেই এক বকার বাকা এক স্থলে মিথা হয়, তবে অনা স্থলে যে সভা হয়, ইহার প্রমাণ কি আছে? অতএব কোন পুরাণকে অমানা করা ও কোন পুরাণকে মানা করা,ইহা অতিশয় অধ্যাক্ষের কারণ হয়।

নিত্যানন্দ হৈতন্য সম্পুলায়ের মতকে অবলম্বন করিয়া যদি বল পর মেশর আকারর ভিত হয়েন, তাঁহারি জানদাধন মুক্তির করিণ হয়, ইগা শঙ্করাচার্য্য কহিয়াছেন বটে, কিন্ত বৈষ্ণবদের সম্পুলায়ে শঙ্করাশুর লোকের মোহ নিমিত্ত কাম্পানিক ভাষ্য কহিয়াছেন, এই সিদ্ধান্ত শ্বির আছে। উত্তর । পুরাণে এবং হয়ে প্রসিদ্ধ আছে, চারি শিষ্যের সাইগ্র্মান্তার্য্য অবভার হইয়া বেদ ও বেদান্তের ভাষ্য করিয়া লোক সকলকে নিস্তার করিবেন; ইহার অন্যথা করিয়া জগতের মান্য ভগান ভাষ্যকারকে মোহের কারণ কহ, আর ইহা প্রতিপন্ন নিমিত্ত আপনাদের কম্পিত বাক্যকে প্রমাণ করিয়া কহিয়া থাক; হবে ইহার উন্তির শাক্তেরা যাহা কহিয়া থাকেন, সূত্রাং ভাষ্য আমানিগেরও ভাষাদের প্রতি কহিছে হইল, ফল শঙ্করাচার্য্যের সম্পুলায়ের শিষ্য যে কেশ্বভারতী ওাঁহার শিষ্য হৈত্বন্য ভেঁহ গুরুদ্বেহী হইয়া আচার্যাকে মোহের কারণ জানাইয়া লোকের ইহলোক পরলোক নম্ট করিয়াছিলন, এই নিমিত্ত বিরপাছের নিক্ট নানা প্রকার শাস্তি পাইয়া

পশ্চাৎ ভক্তব্যুহণপূর্মক নিস্তার পান, এ বিষয়ে শাক্তেরা অনেক প্রমাণ দিয়া থাকেন, অতএব ভগবান আচার্য্যের নিন্দার প্রতি ধরু-দোহির বাক্য করে গাহ্য হউতে পারে? আমাদের দেশের ভাবৎ গন্ধ-কারেরা ও আচার্যোরা যে দাক্ষাৎ শক্ষরমূরপ শক্ষরাচাঘ্যকে প্রক্রিয়া মানেন, ভাঁহার নিন্দা ভাঁতি কৈবত ও তত্প্য লোক যাহারা করে, তা-হারা কেবল পাতকী হয়। কিন্তু তাঁহার নিন্দা করিবেক এমত লোক কলিকালে জনিবেক, ইহা তন্ত্রকাকরে প্রসিদ্ধ আছে। যথন দক্ষের শিবনিন্দাতে ছাগমুখ হইল, সেই কালে দক্ষের ক্রোধের উপশ্য হয় নাই; পরে যথন মহাদেব শক্ষরাচাব্যক্রপে অবভার হইয়াভিলেন, তখন দক্ষ সেই ক্লোধবশে রামানুজরপে জন্ম লইয়া শিবধর্মের নিনা এবং শিবাবতার ভগবান শঙ্করাচার্যে)র মত দ্বণ ও ভাঁহার নিন্দা করি-য়াভে, এই নিমিত তাহার মৃত্যকালে ছাগম্থ হটয়াছিল, এবং এিপু-রাসুর মহাদেবের হয়েও নিপাত হইয়াছিল। পঞ্চে থিন পুরের য়ানে নিতানিক চৈতনা অবৈত এই তিন কুপে জন্ম লট্যা মহাদেবের মতের বিরুদ্ধ মতকে সংস্থাপন করিয়া আপন সম্পুদায়ে মহাদেবের নিন্দা অদ্যাপি প্রচুর রূপে করাইতেছে, কিন্তু দাক্ষাৎ ভৈর্বারভার বিরূপা-ক্ষেব দ্বারা সেই ব্যক্তিরা আপন ২ শান্তি পাইয়াছে। অতএব এখনো শিবম্বরূপ শঙ্করাচার্য্যের নিন্দক লোকদের ছাগমুথ হউবার ও নানা প্রকার দুর্গতি হইবার কোন অসম্ভাবনা আছে ?

যদি বল, শিবের কৃত শান্তে বিশাস করিয়া সকল লোক কলিকালে মদ্যাদি পান করিয়া সর্বাধ্য বহিষ্কৃত হইয়াছে। উত্তর। কলিতে আগমোক্ত বিধিতে তাবং ব্যবহার করিবেক, ইহা আগমে ও অন্য হ শান্তে কহিয়াছেন। অতএব কলিতে আগমোক্ত বিধানে আহারাদি করিলে যদি পাপগুন্ধ হয়, তবে সত্যাদি মুগে বেদাদি শান্তের মতেও আহারাদি করিয়া লোক সকল পাপগুন্ধ হইয়া থাকিবেন; যেহেতু সত্য তেওা দাপর যুগে কি দেবতারা কি থাবরা কি অবভারেরা কি রাজারা সকলেই মদ্যাদি পান করিতেন, ইহা ভারতাদি গুদ্ধেই প্রচার আছে। অত-এব খাদ্যাখাদ্য ও কর্ত্ববাক্তবিয়ের নিয়ামক শান্তেই হইয়াছেন, সূত্রাৎ শান্তানুদারে আহারাদি করিলে অধ্যাহ ইউতে পারে না, কিন্তু যাহারা ইহাতে অধ্যা জান করে, তাহারা অধ্যাই হউবেক।

যদি বল, যে সকল আগমেতে মদিরাদি পানের বিধি লিখিরাছেন, এবং রামানুজ ও টৈডনা প্রভৃতির ঐ রূপ চরিত্র লিখিরাছেন, দে সকল আগম কেবল লোকের মোহের নিমিত্ত রচিত হইরাছে, উহা পুরাণে প্রদিদ্ধ আছে, অতএব ঐ সকল শাল্প গ্লাহ্য নহে। উত্তর। পুরাণ এবং তত্ত্ব দুল্লেডই লিখিত আছে, কাশীতে যখন ব্যাদের অপমান হউল, তথ্ব তেইছ দেই জ্লোধে ব্যাসকাশীর রচনাতে প্রত্ত ইইলেন, এবং

তৎকালীন মহাদেবের শান্ত খণ্ডনের নিমিত্ত এবং মহাদেবের মহিমার হানি করিবার নিমিত্ত নানাবিধ কম্পিত বাক্য প্রাণে লিখেন, দেউ সকল বাক্যের মধ্যে ভোমার ঐ পূর্ব প্রস্তাবের কথা সকল আছে, मङ्बार नामकासीत नाम्नास स्म मकल कथा ख्याना हत्न, এवर लामस्वर ঐ সকল,বর্ণন করাতে মহাদেবের নিকট সাপ্রাধ হইলে অপ্রাধ মা-জ্জন ভেঁহ করিয়াছেন, ইহাও প্রাণেও ওয়ে বর্ণিত আছে। অতএব এ তোমার বাক্য অতি অল্লাচ্য, যেচেড়ু প্রম কার্যণিক যে মহাদেব, ওঁড় লোকের মোহ নিমিত্নিথ্যাশাস্ত্র্চনা করেন, ইহা শাস্ত্রতং স্কিবি-কৃদ্ধ হয়। আরু আশুর্যা এই, বৈষ্ণবেরা লোকেতে প্রসিদ্ধ্যে দশোপনিষং বেদ ও বেদারও নাায় প্রভৃতিদর্শন ও প্রদিদ্ধ যে মনুপ্রভৃতি আঠার **অৃতি এবং অতি বিখ্যাত যে মহাভারত, তাহারি বচনকে আপন মতের** প্রমাণের নিমিত্ত কখন কছেন না, লেছেতু ঐ সকল গুল্ভে ভাছাদের যুগল ভয়ন, ও দুটি ভাইয়ের কথা নাই। আরে যে২ প্রাণেও যে> ত্ত্রের তদ্র পাওয়া যায় না, এবং লোকেত্তেও প্রসিদ্ধ নহে ও যাহাব টীকা নাই, তাহার নাম করিয়া কম্পিতব্যন স্কল আপনার মত স্থাপনের জনো উদাহরণ দেন: কিন্তুযাহার মৃত্পুদিয়া শান্ত্রস্মতে না হয়, দে মতের মান্যতা বিজ্ঞ লোকের নিকট কদাপি হয় না।

यिन वन, व्यवनयन वाजिद्यक वृक्षवानिवा कि क्रां वावायना कहिए। পারেন? উত্তর। জগতের এবং শ্রীরের নানাবিধ অলৌকিক নিয়ম-পুরুকে যুক্তি দিয়া রচনাকে দেখিয়া ইহার কারণ সর্বাজ অতি বিচক্ষণ এক প্রমেশ্র আছেন, ইহাতে নিশ্চয় করিয়া তাঁহার শ্বণ মননৱারাই আমরা কৃতার্থ হউ, যেহেতু এই রূপ প্রদপ্র সম্ভ্র বিশিষ্ট যে জগ-ভেব এবং শরীরের যন্ত ভাহার প্রভাকে খণ্ড ও প্রভাক অবয়ব এক > প্রোজনের নিমিত হইয়াছে, অতএব তাহার নিয়মপুর্বক রচনা বিচক্ষণ কতা বিনা কদাপি হউতে পারে নাই, ইহার দৃষ্টাত লোকেতে দেখ। অন্তত নিয়মপুর্বকে নির্মিত যে কোন ঘটিকাযন্ত্র প্রভৃতি বন্ধ, তালা অক স্থাৎ অথবা কোন অটেডনা কারণহইতে করাপি হয় না, এইহেডু আ মরা প্রত্যক্ষসিদ্ধ কার্য্যের মহত্র দেখিয়াকারণের অতিমহত্রের নিশ্চয় করি,। কিন্ত ভোমাদের ন্যায় মনেতে হস্তপদাদি দিয়া এক মূর্তি ক^{ল্পানা} করিয়া, অথবা হস্তের দারা এক প্তলিকা কণ্পিত করিয়া হস্তপদাদি শরীর ভঙ্গী এবং নাচা গাওয়া লম্ফ্রমফ্ করিয়া কালক্ষেপ করি না এবং এই মনের কল্পিত কিলা হল্পের নির্মিত মূর্ত্তির তুঞ্চির উদ্দেশে বালকের ন্যায় ক্রীড়াও করি না।

যদি বল, জগতের এবং শরীরের রচনাবারা জগতের কারণ আছেন, টহা দিয় হয়, কিন্ত ভেঁহ কি প্রকার টহা যদি জানা না যায়, ভবে ভাহাতে নিশ্চয় কিরুপে হইবেক? উত্তর। শরীরের সপান্দন ও চেন্টার বারা শরীরের দর্মজ্বরাপক হট্যা যে জীব আছেন, তাহাতে নিশ্চম হট্তেছে, কিন্তু দেই দে জীবহুট্তে "আমি ও আমার" এই আছেনমান হট্তেছে, এবং তাবং বন্ধুর জান জিমতেছে, দে জীব কি প্রকার হয় ইহা জানা যায় না, দেই কপ বিশেব রুচনা ও নিযমের প্রত্যক্ষরারা বিশ্বযাপী এক জগতের কারণ আছেন, তাহাতে নিশ্চয় হয়, কিন্তু তেঁহ কি প্রকার হয়েন, ইহা জানা যায় না। এই কপ খনেক বংগু আছে, দেমন কাল গগণ প্রভৃতি; ইহাতে নিশ্চয় আছে, তাহা গোমরাও স্থাকার করিতেছে, কিন্তু কি প্রকার হয়, ইহা কেহ নিপারিত করিছে পারে না, দেই কপ এ স্থলেও জানিবা; অথাৎ প্রমেশ্ব আছেন, ইহাতে নিশ্চয় হইয়া ভাঁহার শ্বক্পকে তর্ম জ্মকপে অলেষণ করিলে তেঁহ বাক্যমনের অগোচর হয়েন, ইহাইমার ভিব হয়।

যদি বল প্রমেশর বাক্য মনের অণোচর, ইহা আমরাও ধীকার করি, কিন্তু যে বন্ধ বাক্য মনের অণোচর হয়, তাহার উপাসনা হইওে পারে না, এ নিমিতে আমরা দাকার দেবতাকে ঈথর পোপ করিয়া উপাসনা করি। উত্তর। যদি এক জন অতি বালককালে দস্যুহস্তে পতি ইহয় কোন ভিন্ন দেশে গমন করে দেই ব্যক্তি আপন পিতার নিগর করিতে না পারিয়া ও পিতার উদ্দেশে কোন শুদ্ধাদি করিবার সময়ে পশ্ব পিছিকে পিতৃসন্ধোধন করিয়া শুদ্ধ কদাপি করিবেক না, কিন্তু আপন জন্মদারা এই শন্ধ প্রয়োগ করিয়া জিয়া দম্পন্ন করিসেক। দেইরূপ এ স্থলেও জানিবা। প্রমেশর কি প্রকার হয়েন, তাঁহার উদ্দেশ পারয়া যায় না, কিন্তু তাঁহাকে জগতের কারণ ও বিশের নিয়য়া ইত্যাদি প্রকার ভাবনা করিয়া উপাসনা করিয়া হয়, মুহরাৎ এই রূপ প্রবণ মননকেই তাঁহার উপাসনা জানিবা। কিন্তু আইম, তুমি বইম, তুমি বয় ও অফুরী প্রভৃতি গুহণ কর, প্রফার আসুগণ লও, আহার কর, পশ্চাং বিদায় হও, এইরূপ যে খেলাকে ভোমরা উপাসনা কহ, দে পুতুলার উপাসনা বটে, কিন্তু উল্লেয়াতীত প্রমেশরের উপাসনা নহে।

যদি বল, সর্ক্রাণি প্রমেখরের উপাসনা বেদাধ সমাত চয়, কিন্তু ইহার অধিকার গৃহদ্বের প্রতিনহে। উত্তর। ভোমার এ কথা অতাষ্ট্র শাস্ত্রবিক্ষা এবং যুক্তিবিক্ষা হয়, যেহেতুবেদে ও মনু যাজবলক্য প্রদৃতি স্থাতিতে এবং তল্পাদি শাস্ত্রে গৃহদ্বের প্রতি প্রমেখরের উপাসনার বিধি সর্ক্রপ্রকারে আছে; সিদ্ধা প্রশারা কেন না দেখা, বৃহদারণাক্ত উপনিষ্দে ইন্দ্র ও বিরোচন বুকার নিকট আন শিক্ষা করিলেন। এবং মন্ত্রেপাপনিষ্দে দেখা মহাগৃহ্য যে শৌনক ওঁই অন্নিরার নিকট বুক্তানপ্রাপ্ত হয়েন ও ভালোগ্যে জানশত রাজা ও পেত্রকত ও জনক প্রস্তুতি এ সকলেই গৃহ্য হয়য়া প্রমেখরের উপাসনাতে তৎপর ভিলেন। এবং যুক্তিবারাতেও অনুভ্র করহ, অন্য ২ আশ্বাম যেমন সুবাধ এবং

নিৰ্বোধ আছে, সেইকুপ গৃহস্থের মধোও বৃদ্ধিমান এবং জড়বৃদ্ধি আছে, ঐ সকল জডবুদ্ধিকে দুফকর্ম হউতেনিবৃত্ত করিবার নিমিত পুতুলা থে-লার অনুমতি দিয়াছেন, আর বুদ্ধিমানের জন্যে প্রমেশরের উপাসনার বিপি দিয়াছেন। আহএক গৃহস্থ সকল বিশেষ মতে প্রমেশবের উপা-সনাতে অধিকার রাখেন। তবে এ ঘথার্থ বটে, প্রমেখরের উপাসনাতে গৃহত্তের অধিকার নাই, লাভার্থি ব্যক্তি দকল একথা কহিয়া থাকেন। ইহার কারণ দপ্দটই উপলব্ধি হয়, গৃহস্থেরা প্রায়ধনবান হন্যা থা-কেন, অত্এব তাহাদের পুড়লার উপাসনা করাতে ঐ সকল পণ্ডিতেবের অধিক লাভ আছে, প্রমেখবের উপাদনায় দে লাভ নাই, যেহেডু পুড়লার অলস্কার বস্ত্রাদি প্রদান ও আহাত্বের নৈবেদা ও বৈকালি শী-্ল ও বালাভোগ ইত্যাদি থাহাদের লাভের জন্যে হইয়া থাকে, এবং উৎসবাদি দিবদে পুত্তলিকার উদ্দেশে বিশেষ উপচার দিতে হয়, এবং বৃত মহোংসৰ যাত্ৰা এৰং স্বস্তায়ন পুরশ্চরণ প্রভৃতি কর্মেতে পুতলি-কাসৎক্রান্ত অনেক বায় হয়, ঐসকল হাবৎ সামগ্রী ঐ লাভার্থি পদিতে পর্যাপ্ত হইয়া থাকে, সুতরাৎ গৃহয়েরা যত পুত্রলিকার উপাসনাতে মগু থাকে, ভাহাদের তওঁই লাভের আধিকা হয়। মনুষা আপনার লাভের জন্যে ডাকাইতি এবং হতাা ও চুরি করিয়া থাকে, অতএব ঐ লাভার্থি পণিতেরা আপন লাভের নিমিত গৃহস্থদিগকে প্রহারণা করেন, ইহাতে কি বিচিত্র আছে ?

যদি বল, চিত্তমন্ধি না হউলে প্রমেশবের ভ্তাকে জানিতে পারে না, তবে যাহারা প্রমেশবের তত্তকে জানিতে বাদনা করে, এ দকলের কি চিত্তম্বি হইয়াছে । উত্তর। চিত্তম্বি যদি না হইত তবে প্রমেগ-রের উপাদনাতে ভাহাদের প্রবৃতিই হইত না, যেহেতু প্রমেখরের উপাসনাতে প্রবৃত্তির কারণ চিত্তম্বনিকে শাস্ত্রে কহিয়াছেন, অতএর পর-মেখরের উপাদনাতে প্রবৃত্তি দেখিলে নিশ্চয় হইবেক এ ব্যক্তির চিত্ত-গুদ্ধি অবশ্যই হইয়াছে,আর প্রমেগ্রের উপাদনা করাতেই বিশেষক্পে চিত্তক্ষি হয়, এই হেতু ডাঁহার দাধনে প্রবৃত্ত হওয়া নিয়াছে। কিড চিত্ত স্থিমি না হইলে উপাদনাকরা অকর্ত্ব্য, এ কথা তোমাদের মুখে শুনা অতি আশ্চর্যা, যেহেতু তোমাদের তাদ্রিক মতে পুতলিকার উপা-সনাতে লিখিয়াছেন, যথা,

"যে বাজি জিতেজিয় হয়, এবং বিনয়ী হয়, সর্বদা শুচি হয়, শুদ্ধাযুক্ত হয়, ধারণেতে পটুও শক্তিমান ও আচারাদিবিশিষ্ট ও সুন্দর বুদ্ধিমান্ও मफ़र्तिज ও म॰ घड हम्, इंडामि छेनिनिस्ट हरेल मीकात अधिकाती हम, ইহার অন্যথা নাই।'' অতএব জিজাদা করি, ভোমাদের কোন্তালি এতাদৃশ লক্ষণাক্রান্ত হইয়া পুতলিকার উপাসনাতে প্রকৃত হইয়াছে?

যদি বল, তোমাদের বুলোপাদনার কোন ধর্ম হইতেছে না, কেবল

ভোমরা আপনাদিগকে মিথাা করিয়া বুজাবাদী বলাই তেছ। উত্তর। আমানের এই এক ধর্মা, প্রমেখরকে একমাত্র দর্মব্যাপী দর্মাক্ষী করিয়া জান করা, এবং ইল্রিয়ের দ্বারা অন্যের এবং আপনার অপকার না হয় এমত যক্তন করা, এই দুই যথামাধ্য আমাদের হইতে হয়, এবং অভ্যাম ও যক্তনারা ক্রমশ সংপূর্ণমত হইতে পারে; কিন্তু ভোমাদের কর্মানুষ্ঠানে এবং পুতলিকার উপাসনায় যে হ বিবি আছে, ভাষার কোটি অংশের এক অংশ ডোমাদের হয় না, অগ্রিহোত্র করা ডোমাদের নিত্যধর্মা, ভাষা কোন্ করিয়া থাকহ বৈলি বৈধ্বদের প্রাভগ্রান নিত্য প্রাদ্ধ ও সক্ষা এবং অথের সহিত গায়এজিপ ও বুত উপবাস আঘারাদির নিম্ম ও স্থেছ অন্যাজর সংস্থিতাগ, এ সকলের কি হ করিয়া থাকহ এছিম্ব শান্ত শৈব কৈজ্বাদির যে পৃথক হ ধর্মা ও নিয়মের ইয়তা নাই, ভাষারই বা কোন্ব্যক্তি কি করিয়া থাকে? অত্যের ধর্মানুষ্ঠানে অটি হয়, ইহা দেশমাত্র ভোমাদের হয় না, অথচ অন্যের ধর্মানুষ্ঠানে অটি হয়, ইহা দ্বেপ্ত আশক্ষা করিয়া কিন্তু করে।

यि वल, ভোমরা এক প্রকারে প্রমেখরের উপাসনা করিছেছ, আ-মরাও এক প্রকারে ভাঁহার উপাসনা করিতেছি, অতএর উভয় প্রকার উপাদনা যথার্থ হউলে আমরা উভয়েই চরিচাণ হউব, আরে এক মথাথ এক অযথার্থ ইহার প্রমাণ কি ? উত্তর। আমরা জগতের কারণ কঠিয়া ঈখরের উপাসনা করি, অতএব এই অসাধারণ গুণ ঘাঁচাতে থাকিবেক ভাহার ই উপাদনা হইবেক, সুত্রাৎ আমরা কৃতার্থ হইব। ভোমাদেব মভানুসারেও আমাদের হানি নাই যেহেতৃ যদি কালী জগতের কারণ হলেন, কিয়া বিজ্ঞ কিয়া শিব জগতের কারণ হলেন, অথবা অন্য নে কেহ জগতের কারণ হয়েন, ভাহাতে আমাদের উপাদনা কদাপি সাথ ^{হউবে} না। যেমন কাশীর রাজার নিকট ডাকে পত্রপাঠাইতে হউ*লে* गिमि পত्रि निथ, এ পত্র কাশীর রাজার নিকট পৌছিবেক, তবে মে কোন ব্যক্তি কাশীর রাজা হউন, তাঁহার নিকটে দেই পত্র পৌলিবেক কিন্ত যদি কাহারো বিশেষ নাম করিয়া লিখ, আর দে ব্যক্তি কাশার রাজা না হয়, তবে পত্র তাহার নিকট পৌছিবেক না, বর্ঞ ফিরিয়া আ• শিবেক। দেই রূপ এন্থলেও জানিবা; নানামতে নানা ব্যক্তিকে জগতের কারণ কহিয়াভেন, এমত সন্দেহস্থলে যে এক বিশেষ ব্যক্তিকে তোমবা জগতের কারণ করিয়া উপাসনা করহ, সে যদি জগতের কারণ না হয়. उत्त रहामारमत छेलामना नितृश्क इटैराक, किन्छ आमारमत छेलामना ক্ষাপি বার্থ হইবেক না।

যদি বল, আমরা যে কোন নাকার দেবতার উপাদনা করি,ওঁই জগতের কারণ হউন কিলা না হউন, আমরা বিখাদপূর্পক যাহার উপাদনা করিব, উহাতেই আমরা কৃতার্থ হইব, যেহেহু বিখাদই দকলের মূল হয়। উত্তর। এ অত্যন্ত অযথার্থ, নেহেতু বিধাসধর্ম বিধাসকর্তাতেই থাকে, দে তান্য নদ্ধর শক্তিকে অনাথা করিতে পারে না, নেমন বিষমিশ্রিত দুগ্ধকে দুগ্ধ বিধাস করিয়া থাইলে দে দুগ্ধের ওণ করিবেক এমত নহে, বর্ঞ বিষের কার্য্য করিয়া নে পান করে তাহাকে নফ করিবেক। মেমন এক শিশু কিলা পভঙ্গ অগ্নিকে অভিপ্রিয় জান করিয়া তাহাকে সপার্শ করে, কিন্তু অগ্নি তাহার বিধাসের বিপরীতে অবশাই দাহ করিবেক। এই রূপ সহসুহ উদাহরণস্থল আছে। অতএব একের বিধাসদারা বস্তুর শক্তিকাপি অনাথা হয় না, সেইরপ কোন নামরূপ ন্থরকে জগতের কার্ণ বিধাস করিয়া উপাসনা করিলে তাহার কারণজ্বও সিদ্ধ হইবেক না, গেকেরল ভূমমাত্র।

নদি বল, যাহার ওক যাহা উপদেশ করিরাছেন তাহাই সভা, সেই উপদেশানুসারে অনুষ্ঠান করিলেই কৃষার্থ হইবেক। উত্তর। যিনি শাং স্মত সদুপদেশ দেন ভাছাকেই ওক কহি, যেহেছু গুকুলফ্ণেও ও ওকর প্রণামে কহিরাছেন। যথা।

''জানরূপ অঞ্চনের শলাকার দার। অজানরূপ অন্ধকারকে নউ করিয়। বিনি চন্দুর প্রকাশ করেন তেঁহ গুড় হয়েন, তাঁহাকেই প্রণাম''।

অভএব প্রথমে শাস্ত্রমিদ্ধ গুরু হউন, পশ্চাৎ তাঁহার উপদেশের ছার।
কার্য্য দশিবেক, কিন্তু যে ব্যক্তি জান কাহাকে বলে তাহার লেশও জানে
না, কেবল পার্স্বণী ও শীহুড়ীর ছলে ধন গুছণ করিবার জন্যে শিষ্য করে, তাহার উপদেশ কেবল দুঃশ ও দুর্গতির কারণ হয়, অভএব মহাদেব কহিয়াছেন। যথা।

"শিষোর বিতাপহরণ করে এমত ওকু অনেক আছে, কিন্তু শিষোর মনের মন্তাপ দুর করেন যে ওকু, তেঁহ অভিদূর্লভ হয়েন।

অতএর শান্ত্রসমাত প্রমেখরের পথকে উপদেশ করেন যে ওর, ভাঁহার বাক্টো বিশ্বাস করিলে কৃতার্থ ইইতে পারে, নতুবা এক অঞ্জন্ম অন্তর্জকে পথ দেখাইলে উভয়েরই দুর্গতি হয়, ইহা মণ্ডুকোপনিবরে কৃতিয়াছেন।। যথা।।

''অজান গুরু যে শিব্যকে উপদেশ করেন দে অন্ধকর্ক নীয়মান থাকের ন্যায় হয়, মূভরাৎ উভয়েই অন্ধ হয়েন''।

আর শান্তে লিখিরাছেন, গুরু জান দিয়া একবার গুরুদক্ষিণা ল^{ড়} বেন, কিন্তু আশ্চর্য্য এ দেখা যায়, গুরু কখন পার্ম্বণী দাবিবার উপলক্ষে, কখন পুত্রের উপনয়ন ও বিবাহাদির উপলক্ষে আদিয়া বংশরের মধ্যে বার্ম্বার শিব্যের মোষণ ও বিত্তাপহরণ করেন, আর শিব্যের মনোরঞ্জনের নিমিত্ত কহেন, পুত্রের প্রিয়াক দেন ইহা কখন দেখিলাম না, কিন্তু শিব্যের ধন লাইর প্রুক্ত সর্ম্বাই দিয়ে দেখিতেছি।

যদি বল, সপ্তণ উপাসনা করিলে পাপক্ষয় এবং চিত্তশৃদ্ধি হয়, আভ এর দপ্তণ উপাদনা বিফল নহে, দুত্রাৎ আমরা করিয়া থাকি। উত্তর। যে সপ্রণোপাসনা করিলে চিত্তপদ্ধি হয়, সে সকল উপাসনা পাপক্ষয় করে এবৎ চিত্তখন্ধি জন্মায়, যেমন হৃদয়স্থ করিয়া প্রমেখরের উপাসনা করিতে হয়, আরু স্যামখলস্থ করিয়া উপাদনা করিতে হয়, এবং চক্ষর ও ওঁকাবের প্রতিপাদ্য করিয়া প্রমেখরের উপাদনা করিতে হয়, কিন্তু যে উপাদনা তোমরা কর, অর্থাৎ এক স্ত্রীকে ও এক প্রুযকে মনেতে কিলা হস্তেতে নির্মাণ কর, ও গাঁহাদের গ্রীপ্রবের সন্দোগ নর্মদা ধ্যান কর্ছ, এবং কথন স্ত্রীর মানভন্স ক্রিতে পুরুষ্দেবতাকে নাপিতের বেশ-গার্ণ করাও, কখন গোগির বেশধারণ করাও, কখন দেই স্ত্রীপ্রয়য়কে নৌকাতে আরোহণ করাও, কথন ২ একের উচ্ছিট ভাষল অন্যকে চর্মণ করাও কথন ২ একের দারা অন্যকে দ্যাঘাত করাও, এ সকল ধানের রারা উপাসনা করিলে চিত্রখন্ধি হওয়াদুরে থাকুক, কেবল অভঃকরণ কামাদিতে পরিপূর্ণ হওয়াতে চিত্তের অধৃদ্ধি জন্মে 🕏 হা প্রহাক্ষ কটে একং গীতাতেও লিখেন,, যে যাহার সর্বাদা ভাষনা করে তাহার সেই ২ কথ্মেট প্রবৃত্তি হয়। আরু দেবতার নামে। চোরণ ও হীর্থমান করিলে জানকৃত কিয়া অভানকৃত পাপক্ষয় হয়, এই সকল শুতিবাদ ও রোচনার্থ ফল-শ্ভিতে বিখাস করিয়া নিঃশঙ্কাতে আপন ২ উপাসনার বঙ্গে পাপ করিয়া থাক, অতএব তোমাদের একপ সপ্তণোপাসনাতে চিত্ত সর্মদা মলিন হয়. এবং পাপে সর্বাদা উৎসাহ জন্মে, আরু আপনারাই কহিয়া থাক, দধি-হির ভলে মিথ্যা কহিরাছিলেন, তাহার পর যদ্যপিও নিত্য গঙ্গামান ও দেবতার নামোচ্চারণ ও অখ্যমধাদি যজ করিলেন, তথাপিও দেই পাপ ভোগের নিমিত নরকদর্শন করিতে হ^ইল।

যদি বল, যদ্যপিও জানের অনুষ্ঠান প্রমাথ্যাধন বটে, কিন্তু ইহার সাধনে লোকাচার বিরুদ্ধ হয়। উত্তর। আমরা দর্শশান্ত্রদিদ্ধ জগতের কারণ ঈশরকে ঈশর কহিয়া, ঠাহার যথাদাধ্য শুরণ মনন করিয়া থাকি, ইহাতে লোকাচারবিরুদ্ধ হয়, তোমরা এ নে কহিতেছ দে অভি আশ্চর্যা, যেহেছু ভোমরা মৃত্তিকার পুতুলাকে নানাপ্রকার ব্যভিচারের ভঙ্গীজনে রচনা করিয়া ভাহাকে ঈশরবোধ করে, এবং ভাহার যে মন্দিরে ভোমাদের ব্রীলোক প্রস্পরা যভায়াত করেন, ভাহাতে নানাপ্রকার প্রাপ্রথঘটিত অদৃশ্য মূর্তি সকল রচনা করিয়া রাথ, ইহার সাক্ষী জগনাথের মন্দিরেই আছে, এবং ভোমাদের রথেতেও নানা অদৃশ্য মূর্তি সকল রচনা করিয়া রাথ, ইহার সাক্ষী জগনাথের মন্দিরেই আছে, এবং ভোমাদের রথেতেও নানা অদৃশ্য মূর্তি সকল রচনা করিয়া ভাহার করে, এবং প্রভিমান্তির করিয়া ভাহাকে দেবতা বোধ করিয়া ভাহার নিকট নানাপ্রকার কটুবাক্য ও অপ্রার্গ গাও এবং সর্ক্রাধারণকে শ্বনাও, এবং আপেন ইটা দেবতার সং বানাইয়া বাতা দেথিয়া থাক, এবং এক ঘাটে পুণ্যের

উদ্দেশ করিয়া সহসু ২ ব্রী পুরুষ একত্র প্রদার গাত্র সংসাশ পূর্কক বান কর্ছ, এবং অপ্রাব্য গাত্ত সকল ও অপ্রাব্য কথা সকল কথ কের দ্বারা শুনাও, এবং ডাবং জাত্তির অরপঙ্গতে ভোজন কর্ছ, এবং যুবঙী ব্রীলোককে যুবা পুরুষের নিকট জান শিক্ষা করিছে নিমুক্ত কর্ছ, এ সকল করিয়াও ভোমরা কি লোকাচার বিরুদ্ধ করিলানা? কিন্তু প্রমেশবের উপাদনা ক্রিছে কহিলে ভবেই বল, লোকবিরুদ্ধ কর্মা কিরণে করি?

যদি বিল, পুরাণেতে এ সকল উপাসনার বিধি দিয়াছেন, এই নিমিত্তি আমারা ঐ উপাসনা করি । উত্তর । পুরাণেতে ঘেমন এ সকল উপাসনার বিধি দিয়াছেন, সেই রূপ উহাকে কাম্পানিকও করিয়া ঐ পুরাণে কহিয়াছেন, আহএব কম্পানকৈ সহ্য জানিয়া কেনে ইহলোক প্রলোক-হইতে পরিভুফ হও? ইহা বিভারে রূপে প্রথম প্রকরণে লিভিয়াছি।

যদি বল, ভোমরা জগৎকে বুজাময় করিয়া জান, তবে ভোমাদের খা-দ্যাখাদ্য ও গম্যাগম্যের বিবেচনা বৃথা হয়। উত্তর। প্রমার্থতঃ এক বুদ্ধা স্বাত্ত ব্যাপক হয়েন, ভাঁহারই সতাকে অবলম্বন করিয়া জগতের সতা হয়; অতএব যে পর্যান্ত উপাধিতে আমরা আছি, অর্থাৎ ঘটকে ঘটরুপে দেখি, এবং পটকে পটরুপে দেখিয়া থাকি, আর এক ইত্রি-য়ের কর্মা আনা ই ল্রিয়হইতে নির্মাহ হইতে পারে না, দে পর্যান্ত ঘটের কর্ম ঘটের দারা লইতে হইবেক, এবং পটের কর্মা পটের দারা করিছে হয়, এবং গুনিবার সময় কর্ণিয়া গুনিতে ও দেখিবার সময় চক্দিয়া দেখিতে হয়, এবং খালাখালা ও গমাাগমাের নিয়ম শান্তানুসারে এবং পৃথক ২ দেশ নিয়মানুদারে নির্বাহ করা যায়। যেমন এক প্রভূর পাঁচ বালক বাথাল খেলাইবার সময় এক জনকে রাজা, এক জনকে পাত্র, এক জনকে কোটাল, এক জনকে প্রজা, এক জনকে পুরোহিঃ কবিয়া সংস্থাপন করে, এবং যে পর্যান্ত দেই খেলাতে থাকে দে প্রাঙ ঐ রূপ প্রস্পার মান্যমানকতা ব্যবহার করে; কিন্তু মনেতে নির্দ্ধারিট জানে, আমরা এক প্রভুর সমান ভৃত্য হ'ই; সেইরূপ এম্বলেও জানিবা,এক প্রমেশবের সভাতে আম্বা সকলেই দ্বিতি করি, প্রমার্থতঃ এই নিশ্য আছে; তথাপি লোকের নিয়মানুদারে ব্যবহার করা যায়, পূর্কাপর চারি যুগেই বুল্লবাদিদের এই রূপ ব্যবহার আছে। তাহার উদাহরণ, মনু, যাজবল্কা, বাাস, বশিষ্ঠ, পরাশর, অথর্ক, অঞ্চরস্প্রভৃতি মহ-র্ষিরা, এবং জনক, শৌনক, রৈকক প্রস্তৃতি সকলে বুক্লপরায়ণ ছিলেন, এবং গার্হস্থা করিয়াছেন, ও রাজ্য করিয়াছেন, কিন্তু আশ্চর্যা এই, ভোমরা আপন ২ দেবভাকে পর্বতের কিলা বনের এক পার্ম্পে রাখিয়া জনংকে বুদ্ধভাবে না জানিয়া পঙ্গতে একত হইয়াসকল জাতি আ^{হার} कत, अवर थान्ताथाना वित्वहना छान कत, अवर सानवित्मत्य उ उँला

দনা বিশেষে তোমাদের গমাাগমোর বিবেচনাথাকে না। আরু ডোমরা দকলোকহ। যথা।

''সমুদয় জগৎ বিফুময়''।। অথ্য কোন্সর্বত সমানভাব করিয়া থাকহ ? এবং " मकन স্ত্রী ভগবতী হয়েন"। কিন্তু এ প্রমাণের অনুসারে তোমরা কোন্ব্যবহার করিয়া থাকহ কৈথচ প্রবুদ্ধের উপাসনাহটতে মনু-ষ্যকে নিবৃত্ত করিবার নিমিত বুক্ষ সর্ক্ষয় এ জান করিলে খাদ্যাখাদ্য গমাাগমোর বিবেচনা বৃথা হয়, এইরূপ বিতখাবাদ করহ। আরু জগতের কারণ যে ঈশর ভাঁহাকে ঈশর কহিব না, এই প্রতিজা যে করিয়াছ, আর মৃত্তিকা, পাষাণ, জল, ও কোন ২ বৃক্ষ, ও চিল প্রভৃতি পক্ষী, ও শৃগালাদি পশ্ব এ সকলকে ঈশর কহিছে এবং আরাধনা কবিছে যে প্রস্কুত আছি, এবং অন্যকে উৎসাহ দিতে যে সর্বাদা উদ্যোগী হও, এ মহাথেদের বিষয় বটে। আরু যদি কৈছ ভোমাদের এই রূপ মহাঅজানতা দেথিয়া শান্ত্রের দারা অথবা যুক্তির দারা ঈশরকে ঈশর বোধ করিছে এবং তাঁহার আরাধনা করিছে ভোমাদিগকে কহে, ভবে তাহার উপকারেছে উপকৃত না হইয়া বর্ঞ্জ শঅুতা ও নানা কুৎসা কর্ছ, যেমন ইদানীখন এক ব্যক্তি তোমাদের বূঝিবার সুগমের নিমিত্ত বেদায়াদি শাস্ত্রকে এতদেশীয় ভাষাতে বিবরণ করেন; তাহাতে কেহ ২ দেই শান্তের অর্থকে ঐ ভাষা বিবর্ণের দারা বোধ করিয়া সেই বেদান্ত মতকে উত্তম জানিয়া তদনুসারে প্রমার্থ সাধন করিতে যখন প্রবৃত্ত হয়েন, তখন দেই ২ ব্যক্তিকে ভাহাহইতে নিবৃত্ত করিবার নিমিত্তে কহিয়া থাকহ, আঃ অমু-কের মতকে তোমরা আশ্রে করিয়াছ? অথচ ভোমরা দর্মদা জান ঐ মত বেদ বেদান্তাদি দর্শন ও মন্তাদি কৃতি এবং সর্ক্রশান্ত্রসিদ্ধ হয়, কিন্ত ভোমাদের এরপ কথনের প্রয়োজন এই দেই ২ ব্যক্তি ঐ উপাদনাকে এক আধুনিক ব্যক্তির মত করিয়া জানিলে তাহারা অবিখাস করিয়া সেই মতের গ্রানি ও ত্যাগ করিবেক, কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে যে২ ব্যক্তি মুবোধ আছেন, ভাঁহারা অবশাই বিবেচনা করিবেন, মহাভারতকে কিম্বা রামায়ণকে যদি কেহ ভাষাতে বিবরণ করে, তবে দেই মহাভারত ও রামায়ণ ঐ ভাষা বিবর্ণকর্তার মত হয় এমত নহে।

যদি বলা, বুজোপাসনার প্রথম সোপান কর্ম হয়, ভাহা না করিলো কি রূপে বুজাজান সাধন হউতে পারে? যেমন কথ না লিখিয়া কি রূপে ব্যাকরণ পাঠের অধিকারী হইতে পারে? উত্তর। যে ব্যক্তি ক থ লিখে ভাহার উদ্দেশ এই হয়, উহা সাঙ্গ করিয়া ব্যাকরণ আরম্ভ করিব, এবং কথ সাঙ্গ হইয়া ব্যাকরণ পড়িবার যোগ্য হউলে কথ লিখিবার প্রতি আর যাতন করে না। সোপানের দারা উপরে মনুষ্য উঠে, কিন্তু সোপানে কেহলগু হইয়া থাকে না। কিন্তু ভোমাদের ইহার বিপরীত দেখি; যেহেতু যে কাম্পানক উপাসনাকে সোপান এবং কথা লিখা কহ, ভাহাকে দশ

সর্য বর্ষে আর্ড্ড করিয়া অশীতিবর্ষ মৃত্যুকাল পর্যান্ত ত্যাগ কর না, এবং প্রমেখনের ভাজকে ব্ঝিবার শক্তি হউলেও তাহাতে প্রবৃত্ত হও না, বর্ঞ সন্য কোন স্যাক্তি প্রবৃত হউতে বাসনা করিলে তাহার প্রতি দ্বেষ করেছ। আর পঞ্ম বর্ষ অব্যি পুরলিকা লউরা যে থেলা আর্ড কর, মৃহু। প্র্যান্ত ভাষাতে মগ্ল থাকিয়া মনুষ্য জন্ম বিফলে যাপন করে। যে পুত্রলিক। আপন মুখের মজিকাকে দূর করিতে পারে না, এবৎ চোরে লইন। গলাইলে ভাহাতইতে আপনাকে রক্ষা করিতে পারে না, এবং কোন এক আঘাত পাউলে খণ্ড হউয়া যায়, দে তোমাদিপের নিস্তার করি-বেক ইহা নিশ্চয় করিয়াকালহরণ করিতেছ, এবং মন্তকে নানা প্রকার গাঁকা ও মোজা ভিলকমুদুা, ও শরীরে ভাপামুদুা, ও গলাতে কাজিভার, এ সকল যমের শাসনংইতে তোমাদিগকে নিস্তার করিবেক ইহা বিখাস করিয়া রহিয়াছ। এ কেবল অতাত অজানতার কারণ হয়, অতএব পুনঃ > বিনয় পূর্ণেক কহিভেছি, জনতের কারণ সর্ব্বব্যাপি পর্বুন্দেতে শ্রন্ধা কর, এবৎ ভাঁহাকে প্রত্যক্ষ সকলের সাক্ষী জানিয়া দুফক্র্মাহইতে নিবৃত্ত হও, এবং আপনার লাভের জন্যে যাহারা পুত্রলিকাথেলাতে তোমাদিগকে প্রবৃত করাইতেছে, তাহাদের বাক্যে বিখাদ করিয়া ইহলোকে হাদ্যাদপদ, এসং প্রলোকে অভ্যন্ত দুঃখান্তিত হ'ইও না, এখনো দাবধান হও।

যদি বল আমরা দেবতা দকলকে পর্বুক্সবোধ করি এমত নহে, কিড পর্বুক্ষ প্রাপ্তির ছার জানিরা ইহাঁদিগের উপাদনা করি, যেমন রাজার নিকট ঘাইবার নিমিত ছারির অনুসৃতি করিতে হয়। উত্তর। রাজার নিকট ঘাইবার নিমিত যাহারা জারির উপাদনা করে, তাহারা ঐ লারিকে দাক্ষাৎ রাজা করিয়া জানে না, কিন্তু হোমাদের ইহার বিপ রীত দেখিতেছি, যাহার ২ উপাদনা কর, তাহাকে দাক্ষাৎ বুক্ষ করিয়া জান। আর রাজার নিকট ঘাইবার নিমিত ছারির উপাদনা করা উচিত্রটে, যেহেতু রাজাহইতে ছারী নিকটস্থ হয়, অতএব দে দুর্ম্থ রাজার নিকট প্রাপ্ত করাইবেক; কিন্তু এখানে দে দুন্টান্ত কোনমতে হইতে পারে না, যেহেতু পর্মেশ্বর দর্মব্যাপী দকলের অন্তর্যামি আত্মান্থর প্রয়েন, অতএব ভাঁহাইত কে নিকটস্থ আছে? এবৎ ভাঁহার প্রাপ্তির ছার করিয়া কাহাকে ছাকার করিয়া

যদি বল, এক প্রমেখর সকলের প্রাপ্তব্য হইরাছেন, তাহাতে কেই জানের দারা, কেই বা কর্মের দ্বারা, আর কেই দেবতার উপাসনাদার! জাঁহাকে প্রাপ্ত হয়েন, যেমন এক রাজার বাটী তাহাতে নানা প্রদার! লোক পৌছিত্ততে। উত্তর। নানা প্রথের দ্বারা প্রমেখর যে প্রাপ্তেই ইয়েন, এ সর্ব্বথা অশান্ত, যেতেছু জান ব্যতিরেকে প্রমেখর কোন মতে প্রপ্তিব্য হয়েন না, উহা বেদে এবং বেদান্তাদি শাল্পে সর্বাদাই দৃত্ত করিয়া কহিয়াছেন। শ্রুভিতে সেখেন।

ে ' কেবেল সেই প্রমায়াকেই ছান্যি। জীব মৃত হয়, মৃণ্ডির নিমিও অন্য পথ আর্নাই"।

তবে যে কম বিশেষ ও উপাসনা বিশেষ শান্তে কহিয়াছেন, তাহার প্রয়োজন আছে, চিত্তমুদ্ধি হইরা যাবৎ জান মাবনে প্রকৃতি না হয়, হাবৎ পর্যান্ত কর্তব্য বটো। কিন্তু ভোমরা সেরপ উপাসনা করিয়া থাক, হাহাতে চিত্তমুদ্ধি হইবার বিষয় কি? বর্জ চিত্তকে মলিন করে, মৃহরাৎ হাহা প্রমেশরের প্রাপ্তিতে প্রতিবন্ধক হয়, যেমন কেবল দ্ফিণ দিনে দদি রাজবাটী থাকে, তবে কেবল পূর্দাম্য ইইয়া গমন করিলে কোটি বংমরেও ভাহার প্রাপ্তি হয়না।

यमि वल, वृक्ताकान माधन मानत् वाभित्, अव९ आमता माकात् प्रत-তার যে ধ্যান করি ভাহাও মান্য ব্যাপার হয়, অতএব বুন্ধজানের দারা যেমন কৃতার্থ হওয়া যায়, সেই রূপ দাকার উপাদনার দারাতেও কেন কৃতার্থ না হওয়া যায়? উত্তর। বুক্ষ জগতের কারণ হয়েন, ইহা আমাদের মনের ভাবনার অপেকা করে না, যেমন রজুর রজ্জুরপে ষ্তি, ইহা.আমরা ভাবনা করিলেই হউবেক এমত নহে, গেহে ছু সিদ্ধ বদ্ধ প্রুষের ভাবনার অপেক্ষা করে না; কিন্তু রজ্জুতে মর্প জান না হইয়া মথাথ জান হইলে ভুম জন্মিতে পারে না; অতএব তাকি চার্ডাথ হয়, দেইরূপ নুখুর জনতের কোন এক অংশকে জনতের কারণ নোধ করা এ ভ্রম জ্ঞান হয়, কিন্তু দেই জগতের কারণকে কারণরূপে নিশ্চয় করিলে পুরুষ কৃতার্থ হয়; কিন্তু তোমরা যেরূপ দেবভার ধ্যান করিয়া থাকহ, দে কেবল ভোমাদের মনের কল্পানামাত, গেছেহুক মনেতে দেই > দেবতার মন্তক রচনা করিতেছ, মুখ নাগিকাদি দিতেছ, হস্ত পাদাদি বিন্যাস করিতেজ, এবং বস্ত্র মাল্য আভরণ ইত্যাদি ভাহাতে সংলগ্ন कतिटङ्क, नाना उपाहात मदन वहना कविता छ। हाटक निटङ्क, व्य निवम কর্মে ব্যস্ত থাকহ, মে দিব্দ কোন অঙ্গ রচনা হয়, কোন অঞ্চরচনা হয় না, ইতিমধ্যে কোন লোক কথা কহিলে কিন্তাকোন অন্যকর্মো মনের সংযোগ হইলে সেই সকল কিম্পিত মুঠি এক্কালে ধ্বংস হইরা যায়, পুনরায় তাহাকে মনের দ্বারা কম্পনা করিয়া উপস্থিত করিতে হয়। এইরূপ দেই মনের কণ্পিত মুর্তিকে দিবদে কতনার ভাগিতেছ, কতনার গড়িতেছ? যেমন যে কোন মনুষ্য কিন্তা স্থাবর বস্ত প্রত্যক্ষে না থাকে, তাহাকেও মনেতে কণ্পনা করিয়া গড় আর অন্য দিকে মনঃস৲যোগ **ংউলে তাহাকে পুনরায় ভঙ্গ কর, অতএব ঐ দেবতার মুর্তির মনেতে** কম্পানা করা আরে ঐ মনুষ্য স্থাবরাদির আকারকে মনেতে কম্পানা করা এ উভয়ের কি প্রভেদ আছে। মনেতে এ দেবভার মূর্তি নির্মাণ করিয়া মনেতে ভঙ্গ করে, এবং হস্ত পাদাদিদারা নির্মাণ করিয়া হস্ত পাদাদির বার। হাহাকে ভঙ্গ কর, অভএব এ রূপ যে হোমাদের মান্স উপাসনা সে কেবল মান্য পৌলামাত্র; যখন যেকপে চাহ তখন সেইকপে উৎপন্ন করে. ভাবে সেই আপেনার উৎপন্ন করা নখর বঙ্গহইতে মুক্ত ও কৃতার্থ হইতে চাহ। অতএব মহানিকাণে লিখেন ।। যথা ।।

"মনের দারা কশিপত যে মৃতি সে যদি মনুষোর মুক্তির কারণ হয়, তবে স্বপ্লেরাজ্য পাইলে ব্যক্তি সকল রাজা কহাইতে পারে"।

এ ভূমের পর্যাবদান নাই, আপনি যাহাকে মনে গড়িতেছে, এবং ভাঙ্গিতেছে ভাহাকে আপনার ঈশ্বর জানিয়। ভাহাইউতে ধর্মার্থ কাম মোক্লের প্রার্থনাও করে। আর প্রত্যক্ষ দেখিতেছে, যাহার কথন বুকে সদিয়া, কখন বা যাহাকে পাদদারা গুহণ করিয়া নির্মাণ করে, এবং অস্তের দারা বিদার্থ করে, ও যাহাকে খোদে এবং চাঁছে, ও মক্ষিকাদি নানা অপবিত্র দুব্যেতে বিদ্যা ওই অপবিত্র দুব্যের মহিত গাহার মুখে ও শরীরে বসে, ভাহাকে জগতের ও আপনার ঈশ্বর জান করিয়া ভাহার নিকট বর প্রাথনা করে, অভএব এরুপ অজানকে জালুদব্যায় আনিতে পারে, এমন শক্তি কাহার আছে? পশ্ব সকলও স্থাবরকে স্থাবরজান ও পাযাণকে পারাণজান করে, জলকে জলবার ও পশ্বকে পশ্ববার হির্মা থাকে, কিন্তু যে ব্যক্তিকোন ২ কৃষ্ণকে দেবতা ও কোন ২ পাযুণকে প্রমদেবতা ও কোন ২ জলকে দর্মারাধ্য দেবতা ও শ্বানের প্রভৃতিকে দেবতার প্রতিনিধি জান করিয়া ভাহার আরাধনা করে, সে ব্যক্তি কি রূপে আপনাকে মনুষ্য বলাইতে ও পশ্বকে ভূজ্করিতে পারে?

যদি বল, আকারবিশিষ্ট দকল নখর হয়, ও প্রমেখর আকারর হিত হয়েন, তবে নিরাকার হউতে দাকার দৃটি কি প্রকারে ইউতে পারে বিবেহতু আকারর হিতের কিয়া দছব নহে। উত্তর। বায়ু অদৃশ্য হইয়া গমন ও উপানাদি ক্রিয়া নিফাল করে, ইহা প্রতাক্ষ দেখিতেছি, এবং মন জালুং অবস্থাতে বিবিধ প্রকার দৃটি করিতেছে, অথচ মন দর্মমতদিদ্ধ নিরাকার হয়, এবং জাব স্থাপ্ত করে, অহত মন দর্মমত্তি দৃটি করেন, অত্তব বিশুদ্ধ বে প্রমাশ্বা তেঁহ যে জগতের দৃটি করেন, ইহাতে কি বিচিত্র আছে? এবং বেদে লিখিয়াছেন। যথা।

"আকারহীন জীবেতে নানাপ্রকার সৃষ্টি করিবার শক্তি দেখিতেছি"। অভএব সর্মশক্তিমান নিফলে যে প্রমেখর ভেঁহ ইচ্ছামাত্রে ভগতের সৃষ্টি করিবেন, ইহাতে কোন্ আশ্চর্যা?

্যদি বল, বুলা সর্কাশকিমান ইজাধীন সকল করিতে পারেন, তবে তাঁছার ইজাধীন কোন বিশেষ কর্মের জন্যে দাকার হওয়াতে কি বিচিত্র আছে বৈত্তর। জগতের সৃষ্ট্যাদি বিষয়ে বুলা সর্কাশকিমান হয়েন, অর্থাং যাহা অন্যের অসাধ্য তাহা প্রমেখ্র করিতে পারেন, কিন্তু তাঁহার যে সকল বুলাধ্যা অর্থাং নিতাঅ সর্বজ্ঞ বিভাররাহিত্য নিফল্ল ও সমভাবে স্থায়িত ও বাস্কৃষিশ্নাত ইতাদি ধর্ম তাহার কথন অনাথা হইবার সন্থাননা নাই; অতএব ওঁছ সাকার হইলে এ সকল ধর্মের অনাথা হয়। যেহেতু সাকার বন্ধ অত্যন্তবৃহৎ হইলেও দিক কাল আকাশের ব্যাপ্য হয়, সূত্রাৎ ভাঁহার সর্ববাপকত্র থাকে না। এবং যে সাকার বন্ধ দৃষ্টিগোচর হয় ভাহার ধ্বংস আছে, সূত্রাৎ ভাহার নিভাতর থাকে না, এবং সমভাবে স্থায়িতা থাকে না,আর অনিতা ও ব্যাপ্য (অর্থাৎ পরিমেয়) বন্ধ সর্বত্য হইতে পারে না। আব ভূমি আপনিই কহিতেভ, ভেঁহ ইচ্ছাধীন সকল করিতে পারেন সূত্রাৎ অসুরব্ধ ও ভূমির ভারহর্ণ ভাঁহার ইচ্ছামতে হইতে পারে; ওবে ঐ সকল কার্য্যের সম্পন্ধ হওয়া ঈশ্রের আকার গুহ্ণ বিনা হইতে পারে না, ইং ধীকার কর্তে নির্থক গৌরব হয়।

যদি বল, পুরাণে লিথিয়াছেন দেবতাদের রূপ অপ্রাক্ত, কেবল শুক্ত জনের চক্ষুণোচর হয়। উত্তর। ঘাহার রূপ আছে সে প্রাকৃত হয়, সূত্রাৎ তাহার নানা অবস্থা হয় ; তবে পুরাণে অপ্রাকৃত বলিয়া যে লিখেন তাহার তাহপায় এই, সে সামান্য প্রাকৃত নহেন, যেমন।

"যে ব্যক্তি পাঁচ জনের প্রতিপালন করে দে প্রাকৃত মনুষ্য নছে"।

• यि वल, চৈতন্য সম্পুদামের বৈক্ষবের। কংহন,ক্ষের এবং গৌরাজের শরীরের আভা পর্বুক্ষ হয়েন। উত্তর। বুক্ষা অবধি কীটপর্যাধ সকলেই বুক্ষমর হয়েন, অতএব কি কীট কি কীটের শরীরের সফুতি, কি কৃষ্ণ কি কৃষ্ণবীরের আভা বুক্ষভিম নহে। কিন্তু হোমার কথার অনুদারে ভোমার প্রতি দোষ উপস্থিত হয়, যেহেতু তুমি কহিলা কৃষ্ণের আভা বুক্ষ হয়েন, কিন্তু কৃষ্ণ বুক্ষ নহেন; ভবে কৃষ্ণের উপাদনা বুধা হয়, যেহেতু শাদ্রে ইপাদনা ক্রীতে কহিয়াজেন, সূত্রাং দে ইপার নহে চাহার উপাদনা করা নিম্পুলোজন হয়।

যদি বলা, প্রভাছ সন্ধ্যা করিবেক, এই বিধি শাল্পে দিয়াছেন, এবং নিভা নৈমিত্তিক কর্মা করিবেক, ইহাও কহিয়াছেন, অথচ ভোষরা ভাহার অনুষ্ঠান কেন না কর । উওর। আমরা প্রণব ও গায়এীজপের ছারা বুক্সের উপাসনা করি, অথবা উপনিষদাদির প্রবণ মননছারা উপাসনা করি, ভাহা করিলে ভাবং নিভা নৈমিত্তিক কর্মের অনুষ্ঠান সিদ্ধ হয়। মঙ্কে যেমন কহিয়াছেন, যথা।

"কেবল সেই এক আহাকে জান, অন্য বাক্য ত্যাগ কর।"

আরু মনুও কহিয়াছেন। যথা।

''যিনি বিশিষ্ট ব্ৰহ্মণ তিনি শাজোক কর্ম পরিত্যাগ করিয়াও বুক্ষোপাদনা ও ইন্দ্রিয়নিগুছ ও বেদের উপনিষদাদির অত্যাদে যকল কবিকেন-''

এবং চিত্ত ছিত্ত নিমিতে নিফাম হইয়া বর্ণাঞাম বিহিত নিত্য নৈমিতিক

ক্রেল্ল অনুষ্ঠান নথাশক্তি করিছে আমাদের বাধানাই, কিন্তুভোগাকে জিজাসাকরি।

"হে মনুষ্য, প্রমাত্মাকেই দশন প্রবণ মনন ধ্যান করা ভোমার উচিত হয়?" আরে, "সর্প্রব্যাপি আত্মার উপাসনা করিবেক।" আরে, "আত্মাকে জানিয়া উপাসনা করে।" আরে "সেই এক আত্মাকে জান।" ইত্যাদি বিধিপ্রাপ্ত বে আত্মোপাসনা ভাহার অনুষ্ঠান তুমি কর না, ইহার কারণ কি?

যদি বল, বুজোপাসনার উপদেশে মারণ উচ্চাটনাদি ষট্ কর্মেব অনুষ্ঠান কিছুই নাই, সুত্রা৲ এ ধর্মে লোকের বিখান কি রূপে চইতে পারে? উত্তর। মত্য যে পর্বুক্ষের উপাসনা তাহার সহিত সর্বপ্রকরি মিথ্যা যে মারণ উচ্চাটন তাহার প্রয়োগের একতা হওয়া নিভান্ত অস-স্তাবিত হয়, সুত্রাৎ বুলোপাসনার উপদেশে মারণ উচ্চাটনাদি বিধানের কোন সম্পর্ক থাকে না। কিন্তু যে সকল বঞ্চকেরা ভোমাদিগকে পুত্রলিকার আবোধনাতে প্রবৃত করিয়া ভোমাদের ধন মোষণ করিয়া ইহলোক ও প্রলোকহটতে প্রিভূষ্ট করে, সেই সকল প্রভারকেরা অধিক লাভাগী হইয়া কথন ভোমাদের কামনা পরিপূর্ণ করিয়া দিবেক এই ছলে ষয়ায়-নের আড়েম্বর করে; আর কখন বা ভোমাদের অভ্যন্ম বিপৎকাল উপধিত হইলে ঐ সকল নির্দয় প্রতারকেরা বিপদ্হইতে উত্তীণ করিবার প্রত্যাশ। দিয়া ধনাপহরণ করে; কোন ব্যক্তির পূত্র মৃতপ্রায় হইলে দয়াকর: দেরে থাকুক, বর্ঞ উপাজ্জনের সময় পাইয়া স্বস্কায়নছলে ভাহাকে ধনে প্রাণে নম্ট করে; যদি দে পুছের কাল হয়, তবে শ্বস্তু)যনের প্রতি কি জানি যদি ভোহার অঞাদা হয়, এ আশক্ষায় কোন প্রহারক কহে, ক্রিয়াটে অফুবৈপ্রণা হইয়াছিল, এ নিমিত্ত রক্ষা পাইলেক না; আর কেহ কচে. ক্রিয়া বিফল হইবেক না, ঐ পুজের সদ্গতি হইবেক। আর যে কোন দরিদের ঔষধ পথোর নিমিত্ত বায় করিবার এক টাকারও সঙ্গতি ন।^ই। এমত লোকের যথন গৃহিণী কিমা পুলাদি পীড়িত হয়, তথন ভাচার জলপাত্র ভোজনপাত্র বিক্রুয় করাইয়া অপপ ব্যয় সাধ্য গুহপূজাদি শ্বস্তায়ন করে, কিন্তু মহা থেদের বিষয় এই, যে ব্যক্তি আপনি দুই টাকার নিমিত্ত লালায়িত হয় দে অন্যকে মন্ত্রদারা লক্ষপতি কর।ইয়া দিবেক. এরূপ প্রতিজ্ঞাতে অজ্ঞান পৌত্তলিক সকল বিশ্বাস করে। আর যে ভাপনার পুত্রকে কিলা অমাভাকে ৰম্ভায়নদারা বৃক্ষা করিতে অসমর্থ হয়, সে অনোর পুত্র ও অমাভাকে মৃত্যুহইতে রক্ষাকরে; ইহাতে পৌতলিকের বিখাস জ্বানে। কিন্তু রোগ হউলেই লোকের মৃত্যু হয় এমত নহে, ক^{ঝন} শান্তি হইয়া থাকে; যদি দৈবাধীন শান্তি হয়, তবে ঐ প্রভারকের উ^২-সাহবৃদ্ধি হয় ; ক্রিয়াতে অঙ্গবৈধণ্য হটয়াছে টহার নামও করে না, এ^{বং} কর্তার শুদ্ধাও আহোজনের অুটি ইছারও নাম করে না, কিন্তু মৃত্যু হ^{রলে}

নানা ছলে আপনার সমুমকে রাপে। আর দেখা, আপন ২ জয়ের নিমিও বাদী প্রতিবাদী উভয়েই স্বস্থামন করাইতেছে; এমত স্থলে থাছার জয় হয় তাহার এ প্রতারকের প্রতি অতিশুদ্ধা জলে। যাহার প্রজয় হয় তাহারও নানা ছল করিয়া শুদ্ধার অটি হইতে দেয় না। অজ্ঞান পৌত-লিকেরা কি শাস্ত্রের দ্বারা কি মুক্তিরাবা কোন মতে বিবেচনা করেনা, যেহেছু শাস্ত্রে লিখিয়াছেন। ও শাস্ত্রে ফল্লারা এ সকল কর্মে প্রত্ত করাইয়া দুফক্মাহইতে নিস্ত করে।

এবং মুক্তিতেও দেখিতে হয়, এক জন এক স্থানে সমিনা জিলা কিছা হন্ধ পাদাদি হেলাইলে দুর্শ্ব অন্য এক জনের শর্রিরে জর হার্ম ও আপদ্শানি ও বিবাদে জয় হইবেক, ইহা কি কুপে সদ্ধ হয় গৈহেতু কার্য কার্দের বিশেষ সন্ধ না হইলে কদাপি কার্যোৎপতি হয় না। যদি কেই আপনার সিদ্ধাই জানাইবার নিমিত্ব পর্মাথ ছলে সহসু প্রকার মিগ্যা কহে, তবে পৌত্তলিকেরা কি হাহার অমানা হা করিবেক? পর্ব্ধ অভিমান্য করিয়া জানে। এবং শাস্ত্র ও স্থার এ দুয়ের খছার বিরুদ্ধ যে ব্যভিচার ভাহাও দি কেই প্রমাথ ছল করিয়া করে, হবে ভাহার আনাদর পৌত্তলিকেরা কদাপি করিবেক না। সেই কুপে অভ্যান্থ মদিরা পানহইতে নানা প্রকার বিরুদ্ধ কর্মা ইইভে পারে, হাহাও যদি পর্মার্থ ছলে করে, এবং সেই পানদোবে নানা প্রকার উপদ্ব জন্মায়, তথাপিও ভাহাকে মহাপুরুষ করিয়া জানিবেক। ইহার কারণ এই, কাহার নাম সাগুক্ম, কাহার নাম অসাগুক্ম, পৌতলিকের এবং পানদোবে বৃদ্ধিনাশ ইহা কদাপি করেন না।

যদি বল, মহাপ্রসাদের ভক্ষণ এবং নির্মাল্য গুহণ ইচা বিশেষ নিয়ম পূরেক বুজাবাদিরা কেন না করেন? উত্তর। পূরেই ভোমাদিগকে কহিয়াটি, স্থিতিশাস্থানুসারে অথবা তল্পের অনুসারে ধাদ্যাখাদেয়র বিবেচনা করিয়া কেবল লৌকিক ব্যবহার নিম্পন্ন করিছে হয়, আমরা ভাহাই করিয়া থাকি। কেননা আহারের বিবরে বিশেষ নিয়ম কর্ণের কিছু প্রয়োজন নাই, মেহেতু কি মহাপ্রসাদ কি অন্য কোন বন্ধ হউক, ভোমরা যাহা অত্যস্ত পবিত্র কিছা নিষিদ্ধ কহ, দে এক প্রহর কাল উদর্খিত হউলে মল মুত্র কপে পরিণত্ত হয়। যদি মহাপ্রসাদ উদর্ভিত হইয়া আছার কপে নির্ভিত না হউত, ভবে ভাহার অন্য খান্যাখান্য বন্ধহইতে মান্যভা হউতে পারিত। অত্যব আহারের বিসরে মহাদেব কহিয়াজেন, নথা।

মৎদা মণ্ডুক জলকাট প্রভৃতিতে জল পরিপূর্ণ আছে, আর গোমাৎদ
চটতে দুস্ত প্রত্তেক নিঃস্তহয়; আর মণুকৈটতের মৃত শরীর নে পৃথিবী,

টাহাহটতে তাবৎ অল্লভনো, অভএব নিরামিষ দামগুলী অদদ্দ হয়।"

^{যদি} বল, ভোমরা বুলাজানি বলাইয়া অনোর নাায় বিষয়ের চেফী।

করিতেজ, এবং কাম ক্রোধাদিতে আচ্চন্ন আছ, ও উত্তম গাণার কর এবং উত্তম যানে আবোহণ কব, ও লোকেব সহিত্রাদানুরাদ কব. यथीर्थ दक्काकानी इकेटल शक्त हमारन महान कान इकेश उँखदा गाउँ শরীর থাকে তাবং কি জানী কি অজানী কি পশ্ব পক্ষী সকলেট শ্রীবের যে ধর্ম ও ই ল্রিয়ের যে ধর্মা, তদনুসারে চেষ্টা করিয়া থাকেন: কিন্তু জানি ও অজানিব প্রভেদ এই, অজানা ঐ সকল ক্রিয়া আয়াতে আবোপ কবিয়া বন্ধ হয়, আবু জানী ঐ সকল কাৰ্য্য ইন্দ্রিমের জানিসং আত্মাকে নির্ভিপ্ত করিয়া জান করেন। ইহা সহ্য ত্রেহা দাপর কলি চারি মূরের জানিদিরের ক্রিয়াতে নিদশন আছে। আমাদের প্রমারাল প্রক যে ভর্বান শঙ্করাচার্য্য, ট্রেড বৌদ্ধকে প্রোভর করিয়াছেন, এলং মণনমিশের সভিত বিচার করিয়াছেন, ও ভাষ্যাদি প্রকাশদাবা প্রবুজেব পথকে সংস্থাপন করিয়াছেন। আরু রেলাবের সত্র করিয়াছেন যে ভগবান বেদবাান, ডিনিও গাহস্থা এবং পৌরোহিতা এবং অধাাপন সম্দায় ব্যবহার করিয়াছেন, এবং ভুও বশিষ্ট নার্দ প্রশের প্রভৃতি সকল থিষিৱা লোকৰ)ৰহাৰ নিক্সন্ন কৰিয়াছেন, এব৲ জনকাদি মহাজানা রাজ্যের রক্ষাথে মৃদ্ধ বিগছ করিয়াছেন। বিষ্ঠা চন্দনকে এক করিয়া জানা ও ঘটপটকে এক করিয়া খাকার করা এবং মূত্তিকা পাষাণাদিতে দেববৃদ্ধি করা, এ উন্মাদগৃত্ধ পৌতলেকের কার্য্য হয়, জানির কাষ্য कमालि नरह; उरव ज्ञानि वा कि विका उन्मन कि वृक्ताविध कोंग्रे अर्घा व সকলকে সমান্ত্রপে প্রবুজের কার্য ও তাহার অধীন জানিয়া স্কাণ সমান রূপে প্রমেশ্বকে ব্যাপক জানেন? কিন্তু আশ্চর্য্য এই, ভোমবা প্রলাজানী হট্যা অর্থাৎ থেলিবার প্রলাকে ঈশ্বর জানিয়া উত্তম থান। খাইবা, এবং উভ্নন বানে চড়িবা, আরু আমরা ঈশরতে ঈশর্রুপে জানিয়া আহাবাদি সকল ত্যাগ কবিয়া জত্রপে কাল হরণ করিব, এই कुल रहाभारमुत् तामना : किन्तु निक्त्य ज्ञानिता लृत्यमुरुत्व लथातलाम्बरम्य উচলোকে ও প্রলোকে পৌত্তনিক অপেক্ষা সুথে কাল্যাপন অবশাই रुडेटरक। आत् डेस्पिएएत् मश्रास्य तस्त्र कता डेरा फानित कर्नता ठेरेसाएँ , সম্পূণ্রপে দমন করা অনেক অভ্যাস অপেক্ষা করে, ভবে ইন্দ্রিয দমনের যতন করেন না, বাহ্মণদের মধ্যে এমন কোন ২ ব্যক্তিকে নিদ^{শন} यमि मिरङ পার, ভাছাতে উপদেশের किसा উপদেশকর্তাদের দোষ হ^हে পারে না। যেমন বুলার নিকটে ইলু ও বিরোচন দুই জন এক জানেব উপদেশ পাইয়া ইলু তাহার অনুষ্ঠান করিয়া কৃতার্থ হউলেন, ^{আবি} যথাথ জানের অনুষ্ঠান না করিবাতে বিরোচনের কেবল আসুর মভাব বৃহিল। সেই রূপ আচার্যোর সম্পুদায়ে দশ জন শিষ্য এক জানেব উপদেশ পাইয়া তিন জনের যথাথ জান হইল, আর দাত জন যোগভূট হউলেন। অতএব জানোপদেশ সমান হউলেও গুহীতার যতেনর তার তথা

রারা ভাষার প্রকাশেরও হারওম। হয়। এপ্রকারে অনুষ্ঠানের হারওম। কেবল জানির মরোট পাওয়। বাব এমত নতে; সমান্ত্রপে কর্মেও উপাসনার উপদেশ পাইয়া কেচ হাহার অনুষ্ঠান করে, কেচ বা বিপরীত করে, ইচা ক্মিতে এবং উপায়কেতেও দোখাংছি।

্যদি বলা, ডোমরা পুট্রৈওন) ও মাঞাদির দোস কেন মানা না কর্ব উত্তর। আমরা কেবল প্রমেখনকে ভগ কবি, ফলাফলের দাতা করিষা হাহাকেট অঞ্চিকার ফবিয়া আনকি, এনা কাহাকে ফলাফলের দাধা ভানি না; যেমন শ্রতিতে কহিয়াকেন, ম্আা।

"আনন্ধরূপ প্রসুক্ষকে জানিলে অন্য কাচাকে ভ্র করে না।"

বিশেষতঃ সুমাদি গুহ সকল পুথক্ত ছানে থাকেন, টাহাবা ভ্যাওলে যে মকল ব্যক্তি থাকে কিন্তা যাতা করে এভানের ভুরুভিচ্বে কারণ হয়েন, ইহাতে যাহার দুদ্ধি দিচলিওনা হুম্য। আকে, যে বিশাস ক্রিডে भारत मा। कुक्रास्काञ सामें अक भारत धारत रमहे भारत होक किया रमहे পর্বাচন্দ্র হেলানকে ডোমার ভদাভনের কারণ করিয়া কেছ যদি কতে, ভবে মে ব্যক্তিকে সম্বাণা উপহাস করিবা। বন্ধঃ প্রভাবকেরা ভোমাদিগকে জানহান জানিয়। কথন পুতলিকার ভয় দেখাইয়া, কখন ভঃ প্রেতের ভর দেখাইযা, কথন বা পুহারির ভয় দেখাইয়া ধনমোষণ করে; মধ্যে ২ কহিয়া থাকে ডোমার অমুক পুত্রক্তইয়াজেন, অভএব হাঁহাকে সূত ভঞ্গ করাও, এই ছল করিয়া হোমানের কতক সূত আগুতে প্রক্রেপ করে, কতক বা হাত ঝাড়িবার ছলে ঘটে রাখিয়া খাপন ঘরে লট্যা যায়; আৰু এইদ্ভিল বস্তা ও দক্ষিণাদি পৃথক্ই লাভ আছে। কেছ বৃদ্ধি এ সকল অভাৱ অসম্বৰ কথাতে অবিখাস করিয়া কি জানি গুচ যাগাদিতে বায় না করে, আর পাড়ে কছে আমার পুচভয় নাই, এ প্রযুক্ত প্রথমতঃ ভয় প্রদশনের নিমিও গুড় সকল নীচলোককে ও বিজনাকে ফলপ্রদান করেন না, এরূপ বচন পড়িয়া থাকে; কিন্তু মে राकि यानि मुर्ताय इत्, उर्त अनातारम हेटा मिणा जानिएउ पातिरतक, (यटहरू तमहे প्रशत्क याम अधिनाटहत् । तम्माल्ट वृत्त स्वालां नित्य, ওবে তাহাতে মকল গুহের ভোগ মেই তাকিদের প্রতি লিখিয়া থাকে, এবং ভাহার পীড়া হউলে কতে, ভোমার ভামুক গুড় বক্রচইয়াছেন। এবং প্রত্যক্ষে কেন না দেখ; জৈচত মাদের মধ্যাফ কালের রোদে কোন অভিনীচকে কিলা দেশ্যাপ্তকে বদাইয়া বাখিলে ভাচাকে দকল গুছের প্রথম যে সুষ্টগৃহ উহ পাড়া অবশাই দেন। অতএব ইচা সকল েমিরা প্রত্যক্ষ দেখিয়াও যদি তাতাদের রঞ্জনা ও দাসল স্থাকার কর, এবং আপন গলাকে ভাছাদের হাউড়ের ভিতর প্রধেশ করাইয়া বন্ধ ^{रहे}या डाहारम्य कारभव उल्ल थाक, इटर अना ठाङि छामारम्य कि কপে একা করিতে পারে ?

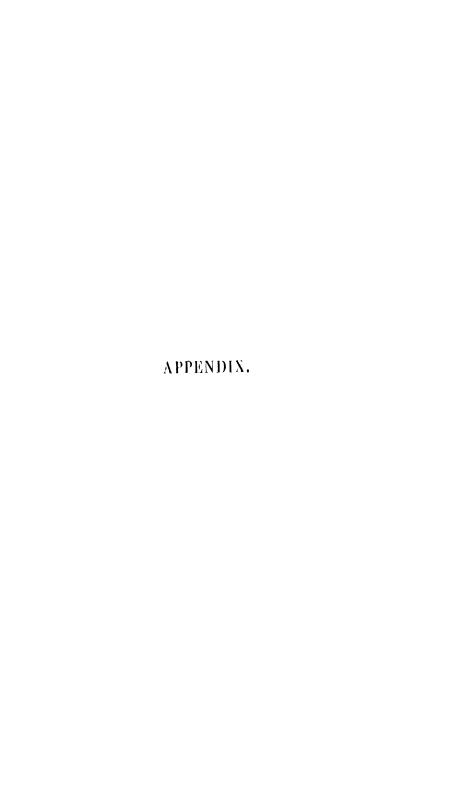
মদি জিলাদা কর, পৌতলিকের সহিত আমাদের এত অঞ্চকরণের এইনকা কেন? তাহার উত্তর আমরা সভাষ্কপ এই দিব, যাহার সহিত প্রমার্থে এবং লৌকিক সাসহারে উদয়াচল অস্তাহলের নায় প্রস্পার অস্ত্র হয়, ভাহার সহিত অঞ্চকরণের একা হইবার কোন সন্থাসনা থাকে না। তাহার বিব্রুণ এই, আমরা সাঁহাকে বিশুদ্ধ সক্ষয়াপক অবিনাশি প্রমেশ্র জানি, তাহাকে ভায়েরা কথন জন্মের অপ্যাদ, কথন মর্ণের অপ্যাদ, কথন বাভিচারের অপ্যাদ, কথন ভৌলোর অপ্যাদ, কথন দুজ এবং কাম জোধানির অপ্যাদ দিয়া থাক; ইহাতে ভোমানের সহিত কি রূপে অঞ্চলরণের প্রাতি জানিতে পারে? ইহা পুরুহইতেই ফ্রিসাকো বিদিত আছে।

''কলিকালে বিশ্বস্বস্থ্য প্রমায়াতে পাষ্ডি ব্যক্তি সকল জন্ম ও দুোহ ও মিথাকেখন ও কাম ক্রোধ চৌর্য প্রদারাভিগ্যন এবং মর্ণ ও ক্ষোভ উত্যাদি নানা প্রকার দুফ্রিয়া সকলের উল্লেখ ক্রিবেক।''

তোমাদের নানাবিধ দুঃখ দেখিয়া দয়া অবশাই হয়; অথাং আহারের মামণী থাকিং ওে আংহার না করিলে ঈশর তৃষ্ট হউবেন উহাবলিয়া আছার কর না: সময় থাকিতেও বার্বেলা কালবেলা ইত্যাদি বিজ্যনাতে ক্রেম নিসৃত্ত থাকিয়া স্থা কলেয়াপন কর; দানের পাত যে সংক্রিয়ারিঙ দরিদু ভাষাকে না দিয়া অত্যন অভিযানবিশিক্ট ধনবান প্রভারকদিগকে দেও; যাহাদের আছাণ শক্তি আছে তাহাদিনকে সুগন্ধি পৃষ্পাদি বদ সকল না দিয়া কখন ভাষ্কুণে কখন নদীতে কখন যা আচেতন বঙ্গে নিক্ষেপ করিয়া নট কর; শীতকালে জলঘটিত দুংখ গুলিমকালে আগ্নিদারা দৃঃখা উচ্ছাপুর্রাক গুছণ কর; দিবারাত্রি মনের কম্পিত ভয়েতে অথাং ভুগাদির ভয়েতে ভীতথাক; ঈশর এভানে নাই, অমুক স্থানে আছেন. এই ভূমে কখন নানা দেশ ভূমণদারা অতিক্রেশ পাও;কাহারও 🗥 গাহাতে মৃত্যু হয়; উত্য জল থাকিতেও কর্দম ও মল সহিত এবং ক্ষার্গুকু জল পান কর ও ভাহাতে অবগাহন কর; কখন ২ ভোমাদের এক ২ ব্যক্তি অনেক বিবাহ করিয়া সেই সকল জ্রীকে কেবল দুঃপেব ও অধ্যের এবং কল্পের ভাজন করে, এবং আপনারাও মনস্থাপ পায় যে বিশ পঁচিশ টাকা এক সামান্য গোড়ারো মূল্য নহে তাহার দারা পাষাণের কিমা মৃত্তিকার পিওকে ক্রয় করিয়া আপনার ঈখর কং আার যে অহকার্হইতে নিদিত কোন রিপুনাই তাহাতে ও মিথা ও প্রভারণাতে পরিপূর্ণ যে দান্তিক ব্যক্তি সকল ভাহাদিনকেই গুরু করিমা জান। আর দূর্যাসিদ্ধার প্রভৃতি যে জ্যোতিঃশারেতে পৃথিবীকে গোল এবং শুনাস্থারী কহিরাছেন, ও পৃথিবীর ছায়ার দারা চল্লের গুটণ হয়, এব৲ স্বেঁ)র উত্তাপের দারাজলাক্ষণ হট্য়া বৃষ্ট্যাদি হয়, ^{টুহ}ু বনন আছে সে সকল পুতের উপদেশ প্রকেন;দিয়াসে প্রাণাদিং

ইডিহাস জলে, ধর্ম ৪ নীতির কথন ভাৎপ্যা চুইয়াজে, ভাহার ইডিহাসকে মুকের ন্যায় উপদেশ দেও, অর্থাৎ কহু, পৃথিতী তিকোণা ও সপের মস্তকে আছেন, চল্লু দূর্ঘোর শত্রু হটয়া বাজ ভাচাদিগকে গুলি করে. এবং মেঘ ও মেঘের ক্সী ইহারা সকলে বাফী কবে, এবং মেঘের ঘষণ দাবা শব্দ হউলে কহ, দেবতারা গজিজিতিছেল, দৈবাধীন হাঁচি হউলে ও টিকটিকী শব্দ করিলে কহ, এ সময়ে কর্মে প্রবৃত হটলে অকলাণে হটকে। এই রূপ সহদু প্রকার অজ্ঞানতার ব্যবহার করিতে এবং তাহার প্রদপ্র উপদেশ করিতে তোমাদিগকে সর্বাদাই দেখি, সৃত্রাৎ মনু্য্যাকার ব্য-ক্তিকে এরপে জড়ের ব্যবহার করিতে দেখিলে মনস্কাপ হয়। আর ভো মাদের সহিত অন্তঃকরণের অনৈক্যের কারণ এই আছে, ভোমরা ঘাচাকে কর্ত্র ধর্মকর্ম জান, এবং ভোমাদের আরাধ্যের যে সকল ক্রিয়া ভাষাকে আমরা নিতাত্ত অধর্ম করিয়া জানি। ডাতার বিবরণ এই, ভোমরা মৃত্তিক। পাষাণ বৃক্ষ পশু পক্ষী প্রভৃতিকে ঈশর বোধ কর, আমরা ভাগা করি না। তোমরা হস্তপাদাদি ভঙ্গীকে ও নাচা ও খেলাকে এবং গলাতে काष्ठीमि धात्नदक ও उन्मनामित अलका डिलकारक पूर्वात कात्न आन. আমরা তাহা জানি না। তোমরা স্থান বিশেষের জলকে ওপলিকে ও কর্মকে পান ও দেহে ধারণ করিলে পুণাহয় কহ, আমরা ভাহা কহি না। ভোমাদের মধ্যে কেহ্ কোন স্থানবিশেষের অন্নকে অপবিক্ষার শ্বানে ও অপরিক্ষার হয়ে অতি পবিত্র ও পুণ্যজনক জানিয়া খায়, আমরা তাহা স্বীকার করি না। আরে ডোমাদের কোন মতাবললিরা কেবল মাদক সামগ্রীর ভোজন ও জীবহিৎসাকে ও রক্তোৎসককে প্রমার্থ দাপন জানে, আমরা তাহা জানি না। তোমাদের কোন মতাবলদ্বিরা শর্বিনিঃসূত অপবিত্র ভোজনকে পুণাজনক কছে, তাহা আমরাধর্মারূপে কহিনা। এবং ক্সীলোককে অগ্নিৰাৱা হত্যা করা ও বৃদ্ধ মাহাপিতাকে জলে মগু করিয়া পাষাণ ইক্টকাদিতে ঘৃষ্টি ঘর্ষণ করিয়া বধ করা ইহাকে ভোমরা ধর্ম কছ, ভাছাকে আমরা ধর্ম কহি না। অনেক লোকের সভা করিয়া যে দান করা ভাহাকে ভোমরা ধর্ম কছ, আমরা ভাহা বলি না। শঙ্খ এবৎ ঘণ্টার বাদ্য ও নৃত্য ভুড়ি ইত্যাদিকে তোমরা ধর্ম কহ, তাহা আমরা মানি না। কাল বিশেষে আপনার অনাহার করা এবৎ অনাকে অনাহারে রাখা ভোমরাধর্ম জান, গুচা আমরা ষীকার করে না। উপাদনা বিশেষে নানাবিধ ব্যক্তিচারকে ভোমরা পন্ম কহ, তাহা আমরা কহি না। অতএব এখনও বলিতেছি, ঈগর্কে দর্ম ব্যাপী ৪ সকলের কায়মনোবাকোর সাক্ষিরপে বিখাস করছ, আর ভাছার যে নিয়ম ভদনুসারে আজ্মোপকার ও পরোপকার করিয়াকৃতার্থ হও। আমাদের এরূপ উপদেশের ছারা ভোমরা উপকৃত না হট্যা যদি আমা-^{দের} প্রতি দ্বেষ ও কৃৎসা কর, তাহাকে আমর। তুল্ছ করিয়া জানিক।

মেতে হু যাহার মৃতিকা ও প্রস্তুর ও কাষ্ঠ ও ধাতুম্য দেবত। হয়, এবং মাহার আরাধ্য বানর ভালুক চীল শুগাল প্রভৃতি হয়, এমও দুর্দশাপন্ন অজ্ঞান লোকের কথায় কোন বিশেষ হানিলাভ নাই। অভএব ভোমরা আমাদের দ্যার পাত্র হও, কিন্তু বেষের মোধ্য নহ। পুনরায় কহিতেজি, পুতুলা খেলা ভাগে করিয়া প্রমেধরেতে এফ করে। ইতি।



APPENDIX.

FROM THE MAHABHARAT.

HISTORY OF NALA.

नलाशाय/ान।

1.—Introduction.

মুধিষ্ঠির বলেন্ মুনি কর অবধান। আমার দৃঃথের কথা নাহি পরিমাণ ।। কপটে সকল মম নিল বাজা ধন। জটা চীর প্রাইয়া পাঠাইল বন।। যত ক্লেশ দুঃখে আমি বঞ্জি যে এথায়। রাজপুত হুরে এত দুঃখ নাহি পার।। রাজার বচন শুনি হাসে মুনিবর। কত হৃদেশ করিল উত্র।। কি দৃঃখ ভোমার রাজা অর্ণ্যভিতর। ইন্দ্র চন্দ্রম ভোমাদকে সহোদর ॥ दुकात मन्ग विकाम*ः व* गठ२। দাস দাসী আরু ষত তব অনুগত।। এই হে হু দুঃ খ রাজানা দেখি ভোমার। ভোমাহইতে নল দুঃথ পাইয়াছে অপার ॥ এত श्री कि कारमन धर्मात् नलन। कर छनि भूनि य नरलत विवत्।। রাজপুত্র হয়ে আঘাসমান দুঃখিত। অবশ্য শ্বনিতে হয় তাহার চরিত।। কহ শুনি মনিরাজ ভাছার কথন।

জোন দেশে ঘর ভার কাহার নক্ষন।।

2 v 2

वृह्मभ तरल भुन धरमात् नकता ভোমাহৈতে বড় দুঃখী নিষধরাজন।। নল নামে নরপতি বীরদেনসূত। উদ্দের সদৃশ রাজা মহাওণিয়ত।। রূপেতে কন্দর্পুরুল্য অতি জিতেন্দ্রিয় । ষশন্বী ভেজন্বী ধীর অক্ষে বড় প্রিয়। নিষধ রাজ্যেতে নল মহাওণবান। বিদর্ভেতে ভীম রাজা তাঁহার সমান 🕩 বংশের কারণ রাজা বড় চিন্তা মন। কত দিনে আইল তথা মহযি দমন।। পুততেত্ভার্যাসহ ভাঁহারে পুজিল। क्रिके इरहा मूनि डाँद्र अहे उत मिला। क्र (পতে मर्मावनाती कवित्व म्यन। দময়ন্ত্রী কন্যা পাবা বড় সুলক্ষণ।। मम्प्रत्व वर्व कन्। रेश्न ममञ्जी। यक दक्क प्रिय नादत्र ना प्रिथि एम कावि।। নাহিক সমান রূপে ওলে লক্ষ্মীস্মা। নলের কারণে হৈল অতি নিরূপমা।। मशानवश्य मा मा मशीराव। मभव्योनिक एषे थाकरव अनुक्रण ।। मगग्रजीमाकार्ड घरङक मथीनन। নির্বধি বাঝানে নলের রূপ গুণ।। নলেব চবিত্র শুনি ভীমের নিদ্দী। কামদাবানজে দথল যেমন হরিণী॥ দময়ন্ত্রীপ্রণ নল শুনি লোকমৃৎে। সদাই অন্থির ক্সরেশর বাজে বুকে।। मग्रस्रोहिसाट नत्मत् ग्रामा কত দিনে দেখ তার দৈবের ঘটন ।। অন্তঃপূর উদ্যানে বিহরে দুঃপমতি। জলতটে হৎস এক দেখে নরপতি।। নিকটে পাইয়া হৎস ধরিল তথন। বাজাপ্রতি বলে হংস বিনয়বচন।। ছাড়ই আমারে রাজানা কর নিধন। করিব ভোমার প্রীতি চিত্ত যে কারণ।। ত্র অনুরপেরপা ভীমের নিদনী। ভার সহ মিলন করাব নৃপম্প।।

HISTORY OF NALA.

এতেক শ্রনিয়া রাজা হৎদেরে ছাড়িল। অন্তরীকে গতি পক্ষী বিদর্ভেতে গেল।। অমঃপর্মধ্যে যথা সরোবর ছিল। দেই খানে গিয়া হৎস খেলিতে লাগিল। এই कांट्र मगराश्ची महहती मत्न। পুক্ষ ভুলিবার ছলে আইল দেখানে।। সরোবর মধ্যে হৎস দেখি রূপবতী। ধরিবার মানসে চলিল শীঘূ গতি।। চত্দিলৈ বেড়ি হৎদে ধরিল জীগণে। रैतमर्जीदत ह९म कटह मनुषातहता। নিষধ রাজ্যেতে রাজা নল মহামতি। অখিনীকুমার রূপে নিন্দে রতিপতি।। नवरलारक ना प्रिश्व डाहात कर्प धरण। করাইব মিলন তোমার তার সনে।। যদি ভাগ্যে থাকে তব ভতা হবে নল। ভোমার যৌবন রূপ হউবে সফল।। সার্থিক হউক রূপ শুনহ বচন। নল নুপতিরে যদি কর্ছ বর্ণ।। শুনিয়া ভৈমীর মন অনকে পীড়িল। বিধাতা আমার হেতুনলেরে সৃঞ্জিল।। নল নুপতিরে আমি করিব বর্ণ। এত বলি হৎস পাঠাইল সেইক্ণ।। কহিল সকল কথা নলের গোচর। धनिया উषिध म रहेल नुभवत्।। যে হউতে হৎসভাষা বৈদৰ্ভী শুনিল। নলের ভাবনা করি সকল তাজিল। विवर्गवन्त खुदि मध्य नियाम। ত্যজ্ঞিল আহার হার সদা হাহা ভাষ।। मभव्छीमृः **थ प्रिस्थि मत मशी**त्रण। ন্তীম নরপভিরে করিল নিবেদন। শুনিয়া নৃপতি বড় হইল চিশ্তি। কোন হেতুদময়ন্তী হইল দুঃথিত। महारमतो तरम कि विश्वह नृभवत । घ वडी इडेल कना कत सम्मद्र ॥

শুনিয়া বিদর্ভপতি উদ্যোগা হ**ইল।** রাজ্যে ২ দৃত গিয়া নিময়ণ **দিল** ॥ দেশে ২ বার্তা পায় যত রাজ্ঞগণ।
বিদর্ভনগরে সতে করিল গমন ।
হয় হস্তী পদাতিকে পূরিল মেদিনী।
বার্তা পাইয়া আইল যতেক নূপমণি॥
বিদর্ভে আইল যত রাজ্যের ইখর।
যথাযোগ্য স্থানেতে বদিল নূপবর॥
মহাভারতের কথা অমৃত দ্যান।
কাশীদাস কতে সদা শুনে পণ্যান॥

11.—Damayanti's marriage.

অথ দময়ন্ত্রীর স্বয়সুর।

দৈবে দময়ভীর স্বায়ন্ত্র দময়।
পুরাতন থাবি আজিল অমর আলয়।

মথোচিত বিধানে পুজিল দুরেখর।
জিজাসিল কোথার আজিলা মুনিবর।।
থাবি বলে গিরাছিলাম্ পৃথিবীমওল।
আশ্চর্ম্য দেখিনু তথা শুন আখওল।।
বিদর্ভ রাজার কর্ম্যা দময়প্তী নামা।
দেব যক্ষ নাগ নরে দিতে নারে দীমা।।
ভার রূপে শোভিত ইইয়াছে ভূমওল।
চন্দ্র মগ্ন ইছল দেখি বদনক্মল।।
ভীম রাজা করিল কন্যার স্বয়ন্ত্র।
নিমন্ত্রিয়া আনিল যতেক নূপবর।।
দময়প্তীরূপ গুণ শুনিয়া প্রবেণ।
নিমন্ত্রণে আইল কেছ বিনা নিমন্ত্রণ।
নাবদেব বচন শুনিয়া দেবগণ।

নার্দের বচন আন্রা দেবগণ।
দময়ন্তীর্পে মগু হৈল সর্কজন।
দময়ন্তীপ্রান্তি বাঞ্চ করি দেবগণ।
ব্যুম্ব স্থানে সভে করিল গমন।।
পৃথিবীতে বৈদে যত রাজ্বাজেশর।
অহনিশি আসিতেছে বিদর্ভনগর।।
সংসন্তা চলিল নল পায়ে নিমন্ত্ৰ।।
পথে নলসহ ভেট হৈল দেবগণ।।

HISTORY OF NALA

দেখিয়ানলের রূপ বিষয়ে অষ্ঠ্র। দময়ন্তী বাশ্বা ত্যাগ করিল অমের ॥ ইছাদেখি অনেচন। বরিবে কদাচন। এছ চিন্তি নলপ্রতি বলে দেবগণ ।। সাধু সর্ফা ওণাতার তৃমি মহারাজ। সহায় হউয়া তুমি কর এক কায।। কুছাঞালি করি বলে নৈষধনদান। কে ভোমরা আমি কি করিব প্রয়োজন । ইন্দ্র বলে আমি ইন্দ্র ইনি বৈখানর। শমন বরুণ এই জলের ঈশর।। মতে আদিয়াছি দমর্ম্বী সভিবারে। সভাকার দৃত হয়ে যাহ তথাকারে।। কি বলে বৈদ্ভাঁজানি আইম সক্তরে। নলেরে এতেক বাক্য কচিল অম্বে।। রাজা বলে সভ্ররে যাইতেছি আমি। কেমনে ভেটিব কন্যা অগম্য সে ভূমি॥ রক্ষকেরা পুররক্ষা করয়ে যতনে। এ বেশে প্রুষ আমি যাইব কেমনে।। দেবগণ বঙ্গে আমাসভার প্রভাবে। না হবে বার্ণ তুমি অলক্ষেত্রে যাবে।। रमत्रभग वारका सन्न कतिया सीकात्। চলিয়া গেলেন দময়স্থীর আগার।। मथीनन मर्पा ममग्रहीरत (मशिल। দেখিয়া ভাহার রূপ অজান হটল ।৷ অতিসুকুমার রূপ। অনন্দমোহিনী। কৃশোদরা মনোহর। বিশাললোচনী।। পূর্কের হৎসমূথে রাজা মতেক শুনিস। সভা২ বলি রাজা সকল মানিল।। নল দেখি দময়ন্তী হৈল চমকিত। কেবা এ পুরুষবর এথা উপনীত।। ইন্তুকি বা কামদেব অধিনীকুমার। ধনা ধাতা হেন রূপ সৃজিল ইহার।। विमिष्ट जामन मिष्ट चन्द्र विठादन्। সাহস করিয়া কিছু কহিতে না পারে॥ কতক্ষণে মনৰ হাসি কতে সৃদ্ভাষে। কে ভূমি পোড়াহ মোরে ফলপ প্রভাগে।।

কেমনে আইলা এথা কেহ না দেখিল। লক্ষং রক্ষকেতে যে পুরী রাখিল॥ পবনাদি দেবে মম পিতা দণ্ড করে। এত দুর্নে কি রূপে আইলা এথাকারে॥

রাজা বলে আমি নল জান বরাননে।
এথা আইলাম দেবতার দূতপনে।
ইন্দ্রাগ্নি বরুণ যম পাঠায় আমারে।
সভাকার ইচ্ছা বড় তোমা লভিবারে।
এ চারি জনের মধ্যে যারে হয় মন।
আজা কর তারে গিয়া করি নিবেদন।।
এইহেতু তব পুরে করি আগমন।
দেবের প্রভাবে না দেখিল কোন জন॥

কন্যা বলে দেবগণ বন্দিত সন্তার।
বে কারণে তাসভায় মম নমস্করে।
নিক্ষাল এথায় আসিতেছে দেবগণ।
পূর্দে নল নুপতিরে করেছি বরণ।।
হংসমুখে পূর্দে আমি বরেছি ভোমায়।
কেমনে আমারে ত্যাগ কর নূপরায়।।
কায়মনোবাক্যে রাজা তুমি মম পতি।
ভোমাভিদ্ধ বিষ অগ্নি জলে মোর গতি।।

নল বলে যেই দেব পুজে সর্বজন।
তপায়া করিয়া বাঞ্ছে যার দরশন।
মুহুর্ত্তেক ভূমণ্ডল বিনাশিতে পারে।
হেন জন বাঞ্ছে তোমায় তাজ কেন ভাবে॥
ইন্দ্র দেবরাজ দৈতা দানবমর্দ্রন।
তৈলোকোর উপরে যাহারে প্রভূপন॥
শহীর সমানা হবা যাহারে বরিলে।
হেন দেব তাজি কেন মনুষ্য ইচ্ছিলে॥
দিকপাল বৈখানর সভাকার গতি।
যার জোধে মুহুর্ত্তেক ভারা হর জিতি॥
করণ যে জালেখর নর আংকারী।
কেমনে বরিবা আনো তাঁকে পরিহরি॥

কন্যা বলে অন্যে মোর নাই প্রয়োজন। চুমি ভর্তা তুমি কর্তা করিমুবরণ।। শুভকার্য্যে বিলয় না কর মহামতি। গলে মাল্য দিতে রাজা দেহ অনুমতি।।

নল বলে ইহা সম নাহিক অধর্ম। मृष्ठ देश्या कार्यस कत्तित हिन कम्म।। এত শুনি বৈদ্ভার বিষয়বদন। দুট চক্ষু অঞ্পূর্ণ করয়ে রোদন । পুনঃ বলে দময়ন্তী চিন্তিয়া উপায়। বরিব ভোমারে দোষ নহিবে ভাহায় !! দেবগণ মহ তুমি আইস স্বয়স্তরে। তাসভার মধ্যে আমি বরিব ভোমারে।। এত বলি নল রাজা করিল গমন। एमत्रार्थ मकल कृतिल निर्वप्तन ॥ কেছ মানা না করিল তব অনুপুছে। দেখিলাম সে কন্যারে অন্তঃপুর গুহে।। কহিলাম সভাকার যে সব সন্দেশ। প্রক্ষেতে রূপ গুণ বিভব বিশেষ।। কারে না চাহিয়া কন্যা আমারে উভিচল। আাসিবার কালে পুনঃ এমত বলিল।। দেবগণ সঙ্গে আইন বয়েরর স্থানে। তোমারে বরিব তাসভার বিদ্যমানে।। বৈদভারি চিত্ত বুঝি সব দেবগণ। नत्लत् मधान दिन रेहल मर्क्षजन।। এইরূপে দেবগণ নলের সংহতি। সম্মর্থানে চলি গেল শীমুগতি।। মহাভারতের কথা অমৃত সমান। কাশীরাম দাস কহে শ্বনে পুণ্যবান।।

সর্ম্বরে আইল যতেক দেবগণ।

যথাযোগ্য স্থানেতে বসিল সর্বজন।

কুলে শীলে রূপে প্রণে একই প্রকার।

বিবিধ রতন আঙ্গে শোভে সভাকার।

নিংহগুবি গজন্তন্ধ গমনে সিকুজ।

পঞ্চমুপ ভুজল সদৃশ ধরে ভুজ।

তবে বিদর্ভের রাজা শুভক্ষণ দিনে।

দমর্মী আনাইল সভাবিদ্যমানে।।

দেখিয়া মোহিত হৈল সব রাজগণ।

দৃষ্টিমাত্র হরিলেক সভাকার মন।।

যত ২ মহারাজ আছিল সভায়।

চিত্রের পুত্রলি প্রায় এক দৃংষ্টে চায়।।

১০



নল বিনা দময়ন্তীর অন্যে নাহি মন। কোথায় আছয়ে নল করে নিবীক্ষণ দ এক স্থানে দেখে তৈমী সভার ভিতর। নলের আকার পঞ্চ প্রুষ সন্দর।। ভিন্নবৰ্ নলের নাহিক কিছ ভেদ। দেখি দময়স্কীর চিত্তে করে বড় থেদ।। পঞ্বিধ নল দেখি বরিব কাহারে। क्रमरम् कतिम हिन्दा विक्षित्र आभारत्।। দেবলিকে ন্র্লিকে বিভেদ আছয়। (मत्रभाशा तरल किछ (मर तारू नशा। উপায় না দেখি ছৈমী বিচারিল মনে। कर्दाराष्ट्र खुरन कतिल (मरगर्ग। তোমরা যে অন্তর্যামি জানহ দকল। পুর্বের হৎসমুখে আমি বরিয়াছি নল ।৷ প্রমন্ত ইয়া মোরে সভে দেহ বর। জাত হয়ে পাই আমি আপন ঈশর।। সজোজে সংসার রকে আমি যদি সঙী। ভোষা সভাষধ্যেতে চিনিব নিজ পতি।। रिवम्डींव निर्शस जानिया (मदर्गण। আপনাদের চিহ্ন করান দর্শন।। অনিমিষ নয়ন ষেদাশ্হীনকায়া। অমান কৃষ্ম আছে নাই অল্ছায়া।। रेमवर्ची जानिम उटव এ ठाति अमत्। নল নরপতি দেখে ভূমির উপর।। হাটী হয়ে শীমুগতি মালা দিল গলে। মাধ্য দেবতা গভরে লোকে বলে।। তবে নল নরপতি প্রসন্ন হইয়া। দময়ন্ত্রী প্রতি বঙ্গে আখাদ করিয়া।। যাবৎ শরীরে মম থাকিবেক প্রাণ। তারৎ ধরির ভোষা প্রাণের সমান।। নলেরে বৈদন্তী ঘবে করিল বর্ণ। দেখিয়া সভ্ৰফ্ট হৈল যত দেবগণ।। ुक्छे इरम्न इक्टेय्य मिल ठांति अपना অলফিড বিদ্যা দিল সহসুলোচন॥ অমৃত দিলেন ভবে জলের ঈশর। বখায় চাহিবা জল পাবা নরবর।।

অগ্নি বলে যাহা ইচ্ছা করিবা রক্তন।
বিনা অগ্নিরজন হইবে ততক্ষণ।।
প্রাণিবধ বিদ্যা দিল সূর্য্যের নন্দন।
অন্ত তুণ ধনু দিয়া করিল গমন।।
নিবর্ত্তিয়া ধ্যুম্বর সভে গেল ঘর।
দময়ন্ত্রী লয়ে গেল নল নরবর।।
দময়ন্ত্রী বিনা রাজা অন্যে নাই মতি।
কুতুহলে ক্রীড়া করে যেন কাম রতি।।
বহু যজ করিল করিল বহু দান।।
পুণ্যবলে নাই কেহ নলের সমান।।
মহান্তারতের কথা প্রম প্রিত্ত।
আ্রণ্যকে অনুপ্য নলের চরিত্তা।

III .- Nala possessed by Kali.

অথ নল শরীরে কলিপ্রবেশ।

শ্বয়শার নিবর্তিয়া যায় দেবগণ। পথেতে ছাপর কলি ভেটে দুই জন॥ জিজাসিল দুই জনে যাহ কোথাকারে। किन वर्ष्ट का है देवस्थीत ब्राम्बद्धत्।। দে ক্রার রূপ গুণ শুনিরা এবণে। প্রাপ্তি ইচ্ছা করি তথা যাই দুই জনে।। হাসি ইন্দ্র বলে নিবর্তিল বয়বর। নলেকে বরিল ভৈমী সভার ভিতর।। এত তানি ক্রোধে কলি বলে আরবার। দেবভামী তাজিয়াবরিল নর ছার।। এইতেতুদও আমি করিব তাহারে। প্রতিজা করিবু আমি তোমার গোচরে ॥ দেবগণ বজে তার দোষ নাহি তিলে। আমা সভাকার বাক্যে বরিলেক নলে।। নলের চরিত্র কিছু কহনে না যায়। সংসারের যত ওপ বঞ্চে নলাশুর।। সমৃদু গভীর জিল স্থির ছিল মের। প্থিবীতে ক্ষমা ছিল চন্দ্ৰ ছিল চারু॥ 2 w 2

মভারে ছাড়িয়া নলে করিল আশুয়। যজ সভা তৃপ্ত দেব যাহার আসেয়। সভাবুতী দৃঢ়প্রীতি তপঃ শৌচ দানী। আমাসভাকার মাঝে নলেরে বাখানি।। হেন নলে দুঃথদাতা হবে যেই জন। বিপুল দুঃথেতে মজিবেক দেই জন।। এত বলি দেবগণ করিল গমন। কলি আর ছাপর চিন্তরে মনেমন।। যত ওণ নলের বলিল সুরপতি। হেন জনে দিবে দণ্ড কাহার শকতি।। কলি বলে তুমি মোর হইবা সহায়। যেমনে দণ্ডিব মনে করিব উপায়।। রাজ্যভূষী করাব বিচ্ছেদ দুই জনে। পাশায় করিয়া মত নৈষধ রাজনে।। অক্ষকাটি হবা তুমি সহায় আমার। कलितारका चाशव कविल अन्नोकाव।। এতেক বিচারি দোঁতে করিল গমন। নলের সহিত কলি থাকে অনুক্ষণ।। নৃপতির পাপছিদু খুজি নিরম্বর।

ट्रिमटेड शिल मिन बामण दरमेत्।। এক দিন নরপতি সন্ত্যার কারণে। অপ্প 👣 চ কৈল পদে ভূম হৈল মনে 🕫 ছিদু পায়ে প্রবেশ করিল কলি দেছে। নিজ বৃদ্ধিহীন হৈল রাজার হাদয়ে॥ পুষ্কর নামেতে ছিল রাজার সোদর। তাহার সদনে কলি চলিল সভরর 🛳 কলি বলে অবধান কর্ছ পুক্রর। বৈভব বাঞ্ছ যদি মম বাক্য ধর ॥ নলের সহিতপাশা থেল গিয়া ভূমি। সহায় হইয়াসব জিনাইব আমি।। কলির আখাদ পায়ে পৃষ্কর চলিল। (थनाव प्रवन विन नरन आहतिन।। এতেক শুনিয়া নল পৃষ্করের দ্ভা। ष्यरकारत करनक ना कतिल विलय। পণ করি খেলিতে লাগিল দুট জন। হির্ণ্য বিবিধ আরু রজত কাঞ্চন।।

পৃষ্করের সর অক্ষ দাপর প্রভাবে। নাহয় অন্যথাদে যাহা মাণেয়েবে। পুনঃ কোধে পণ করিলেন রাজা নল। মডিছেল হউল নাসুঝে মায়াবল ॥ স্হদ বাস্কৰ মন্ত্ৰী যত পৌর জান। কার শক্তি নহিল করিতে নিবার্ণ।। তবে যেত বস্ধাণ একতা হইয়া। দময়কী ভানে সতে জানাইল গিয়া।। মহাদৃঃধ উৎপাত আনেন নরপতি। কর গিয়া আপনি নিবর্তুমি সহী।। এত শুনি দময়তী বিষয়বদন। অতিশীঘু নৃপশ্বানে করিল গমন।। রাজারে বলয়ে ভৈমী বিনয় বচন। মল্লিসহ ভাবে আছে অমাত্যের গণ।। আজা কর মতে আসি করুক দশন। ত)জহ দেবন পাশা রাজ্যে দেহ মন।। কলিতে আচ্ছন্ন রাজা নাহি বুঝে রাণী। মাথাতৃলি ভৈমীরে না চাহে নৃপমণি।। পুন: ২ কচে ভৈমী বারিতে নারিল। জানহত হৈল রাজা নিশ্চয় জানিল।। নিজ ২ গৃহেছ তবে গেল পুরজন। অভঃপুরে গেল ভৈমী করিয়া রোদন।। হেন মতে নল রাজা খেলে বহু দিন। क्राय्य मकल रैं रखत रेहल ही न ॥ আক্র বিনা নলের নাহিক অন্যমন। সকল ভাজিয়া রাজা থেলে অনুকণ।। দেখিয়া বৈদভী মনে আতক্ষ পাইল। বৃহৎদেনা নামে ধাত্রীপ্রতি দে বলিল।। শীঘু আন বাধের সার্থিকে ডাকিয়া। আজামাত্র গেল ধাতী আর্তি বুঝিয়া।। সেইক্সংগ আইল সার্থি বিচক্ষণ। সার্থি দেখিয়া ভৈমী বলয়ে বচন।। সর্কনাশ হেডুপথ করিল রাজন। এই মহাপাপে তুমি করহ ভারণ।। ইন্দ্রদেন পুত্র আর কন্যা ইন্দ্রদেনা। মম জ্ঞাতিগৃহে রাখি আইস দই জনা৷৷

বিজয় না করে রথ আনে শীদুগতি।
আজামাত্র বথ নাজি আনিল সার্থি॥
রথে চড়াইল দুই কুমার কুমারী।
মুহ্রেকে উত্তরিল কুঞিন নগরী॥
রথ অখ দহিত থুইয়া রাজপুরে।
পুন গেল বার্ফেয়ে দেনিষধ নগরে॥

IV .- Nala forsakes Damayanti.

অথ নলের বনগমন ও দময়ন্তা ত্যাগ।

পৃক্ষরের মহ পাশা থেলে রাজা নল। ক্রমেং রাজ্য ধন হারিল সকল।। বসন ভূষণ আরে রক্তন অলক্ষার। সকল হারিল রাজা কিছু নাহি আরে॥ হাসিয়া পৃষ্কর ভবে বলিল বচন। থেলিব কি আছে আর শীঘু কর পণ।। অবশেষে তব কিছু নাহি দেখি আরে। রাণী দময়ন্তী পণ কর্ছ এবার।। এতেক শুনিয়া ক্রোধে লোহিতলোচন। নাহিক কহিতে শক্তি বিষয়বদন।। তবে রাজ। বস্তার্তন যে ছিল শরীরে। वाहित कतिया नव मिटलन शुक्करत्। এক বন্তু পরিধানে বাহির হইল। खास्तः श्रांकि उत्त रेतमञ्जे सनिल ॥ অক্রে ভূষণ যত ফেলিল খুলিয়া। **চिलेल** ताजात मर এकरखा रहेशा। আজা দিল পৃষ্কর আপন অনুচরে। এই কথা জ্ঞাত কর নগরে নগরে।। নল বাজা ঘাইবেক সন্নিকটে যার। নলেরে রাখিলে তার সবংশে সংহার। আজোমাত রাজোং জানাইল চর। রাজআজা শুনিয়া লোকের হৈল ভর। তিন দিন ছিল নল নগরভিতর। রাজার ভয়েতে কেহ না যায় নগর।।

কে করে জিজাসা তারে না যায় নিকটে। কুধায় ভৃষ্ণায় নল গেল নদীতটে।। তিন রাত্রি দিনায়তে করি জলপান। তারপর বনমধ্যে করিল প্রয়াণ।। পাছ্য দময়তী করিল গমন। অর্ণ্যের মধ্যে প্রবেশিল দুই জন।। বহুদিন কুধা তৃষ্ণা শ্রীর পীড়িত। বনমধ্যে মূর্ণ পক্ষী দেখে আচ্যাত্রিত।। পক্ষি দেখি আনন্দিত ভাবিল বাজন। মাৎস ভক্ষি পক্ষ বেচি পাব বহু ধন।। ধরিবার উপায় চিন্তিল মনে মন। পক্ষির উপর ফেলে পিন্ধন বসন।। বস্ত্র লয়ে উডিল মায়াবি বিহল্প। আকাশে উড়িয়া বলে যা রে মতিভূম।। সর্বনাশ কৈল অক্ষ ভ্রট করি জান। আমি কলি দ্বাপর বলিয়া এবে জান।। আমাসভা এডী ভৈমী বরিল ভোমারে। তাহার উচিত ফল দিলাম তাহারে॥ এত শুনি ন্বপতি ভৈমীপ্রতি বলে। যতেক কহিল পক্ষী প্রবণে খনিলে।। অকে যেই হাবাইল সেই বন্ত নিল। বিশ্বয়ে আমার প্রিয়ে জানহত হৈল।। এখন যে বলা ভান তাহার কারণ। এই যে দেখাত পথ যাইতে দক্ষিণে।। অবস্থি নগরে লোক যায় এই পথে। এই যে দেখহ পথ কোশলা যাইতে।। এই পথে যাহ প্রিয়ে বিদর্ভনগরে। শুনিয়া হটল ভৈমী কম্পিতা অন্তরে॥ রোদন করিয়া ভৈমী কহে রাজপ্রতি। তব বাকা শুনি মোর শ্বির নছে মতি।। রাজ্যনাশ বনবাস বিবস্তু হইলা। কুধা তৃষ্টা মহাদু: খ সাগরে ড্বিলা॥ দ্ব পাদরিব আমি থাকিলে সংহতি। আমারে তাজিতে কেন চাহ নরপতি।। ভার্য্যার বিহনে রাজা নাই সুখলেশ। আমারে ভাজিলে বনে পাবা বড় ক্লেশ।

নল বলে সভা ভূমি যভেক কহিলে। ভার্যাসম মিত্র আরু নাহি ক্ষিতিওলে।। ত্যজিবারে পারি আমি আপন জীবন। ভোমা ভাগে না করিব আমি কদাচন।। ভৈমী বলে মোরে যদি ত্যাগ না করিবা। বিদর্ভের পথ কেন দেখাইয়া দিবা॥ এইহেতৃশক্ষাম্ম হয়েছে রাজন। তোমা ছাড়ি গেলে মম নিশ্চয় মর্ণ।। এক বাক্য বলি রাজা যদি লয় মনে। বিদৰ্ভ নগরে চল যাই দুই জনে।। তোমারে দেখিলে পিতা হবে হর্ষিত। দেবতুল্য তোমারে পুজিবে নিত্য নিত।। নল বলে নতে দেবি যাবার সময়। এ সেশে কুটুম্বগৃহে উচিত না হয়।। আপনি জানহ তুমি ষয়মূর কালে। তব পিতৃন্হে নেলাম চতুরক্স দলে।। এখন এ বেশে গেলে হাসিবেক লোক। বৈরির হইবে হর্ষ সূহদের শোক।। পরম বন্ধুর গৃহে যায় যদি দীন। শক্রদম হইলেও হয় মানহীন।। অমাহারে থাকি তপ করিব কাননে। দুংখী হৈয়া বন্ধুগৃহে না যাব কখনে।। তবে পুনঃ ২ ভৈমী আনেক কহিল। না শুনিল নল রাজা নিশ্চয় জানিল।। যেই বস্তু ছিল ভৈমী করিয়া পিন্ধন। সেই বস্তু সারিয়া পরিল দুই জন।। ছাড়িয়া যাবেন স্বামী ভয় করি মনে। এক বন্ধ উভয়ে পরিল সে কারণে॥ বেগেতে চলিতে নারে যায় ধীরে ২। কুধা তৃদ্ধা হৈয়া দোঁহে দুর্কাল শরীরে।। দিব্য এক স্থান রাজা দেখিল কাননে। পরিশাস্ত হইয়া শুইল দুই জনে।। আঁকাড়ি করিয়া ভৈমী ধরিয়া রাজারে। পাছে ৰামী যায় ছাড়ি সভয় অন্তরে।) একে সুকুমারী বহু দিন নিরাছারা। শোবামাত্র দময়তী হৈল জ্ঞানহারা॥

দৃঃথে সম্ভাপিত নল নিদা নাই পায়। भटन विष्ठातिल द्य देवनडीं निमा यात्र ।। এ ঘোর অবর্ণো ভৈমী দক্ষে যদি থাকে। মম দৃঃথে নিভা২ মজিবেক শোকে।। আমারে না দেখি কোন পথিক সংহতি। ক্রমেং যাইবেক পিতাব বস্তি। এ দৃঃখসমৃদ্হৈতে হইবে মোচন। আমিহ একক হৈলে যাব যথা মন।। একাকী বাখিয়া যাব ঘোর বনষল। সেই ভয় নাহি কেহ করিবে না বল।। তপৰিনী পতিবৃতা ভকতি আমাতে। এরে কে করিবে বল নাহি ত্রিজগতে।। কলিতে আচ্ছন্ন রাজা হত নিজ জান। দময়ন্তী ত্যজিব করিল অনুমান।। এক বস্ত্র আচ্ছাদন দোহাকার কায়। মনে চিল্লি কি করিব ইহার উপায়॥ পাছে জাগে দময়ন্তী চিশ্বিত রাজন। ভাবিত হটল বড় কি করি এখন। কেমনে ভাজিব আমি এক বস্ত্রপরা। শবীরে আছিল কলি দৃষ্ট পরতরা॥ জানিয়া রাজার মন কলি খড়গ রূপ। সমথে হেরিয়া থড়গ হর্ষিত ভূপ।। তান্ত্র লয়ে পরা বস্ত্র ছেদন করিল। মায়াতে মোহিত রাজা আকুল হউল।। প্রীতে ২ ভথা হৈছে গমন করিল। কত দুরুহুইতে তবে বাহুড়ি আইল।। দেখিল বৈদ্ভী নিদু। নায় আচেতন। ন্যাকল হইয়া রাজা কর্য়ে ক্রন্দন।। মিংহ সাঘুলকং ২ এ ঘোর কাননে। कि शिं इंडेरन श्रिया आगात विद्रास ॥ হে সুষ্ঠা প্রম চন্দ্র বনের দেবতা। তোমরাট রহক। কর আমার বনিতা।। এত বলি নরপতি করিল গমন। পুনঃ কত দুরহইতে ফিরিল রাজন।। কলিতে আছের রাজা দুট দিগে মন। ভাষ্যায়েহ ছাড়িতে না পারে কদাচন।। 2 x

নমস্থী দুংখে দুংগী কবিছে অন্তরে।
তানাথ করিয়া প্রিয়ে যাই হে গোমারে।
পুনরপি বিধি যদি করায় ঘটন।
দেখিব ভোমারে নছে এই দর্শন।।
এই চিন্তি নরপতি আকুল হৃদয়।
পাছে দময়ন্তী জাগে পুন হৈল হয়।।
অতিবেগে চলিয়া যাইতে সেইছ্ব।
প্রেশ করিল গিয়া নির্জন কানন।
মহাভারতের কথা অমৃত সমান।
আবণে প্রম দুখ জ্যো দিবা জান।।
ঘোর দুংখে তরে লোক যাহার শুবং।।
আবণ্যক নানাখান কাশীদাস হলে।।

V.—Damayanti's sojourn at Subáhu.

অথ দময়ন্তীর দ্বাহু নগরে দৈরিক্টাবেশে ছিডি।

कठ ऋष मगरू ही निम् । अवस्थित । সজাগ হইয়া দেখে স্বামী নাহি পাশে॥ মূচ্ছিতা হইয়া ভৈমী ভূমিংলে পড়ি। পূলায় ধুসর হৈয়া যায় গড়াগড়ি।। উঠিয়া সঘনে চতুর্দিলে ধায় রড়ে। নাথ ২ বলি উচৈচঃ ধরে ডাক ছাড়ে।। ভানাথ ডাকয়ে কেন না দেহ উত্তর। কোন দিগে গেলা প্রভূ নিষ্ধঈশ্র ॥ কোন দোষে দোষী আমি নহি তব পায়। তবে কেন আমারে ভাজিলা মহাশয়।। ধার্মিক বলিয়া ভোমা কছে সর্বা লোকে। ভবে কেন নিশ্বিত ছাড়িয়া গেলা মোকে॥ লোকপালমধ্যে পূর্বে সভ্য কর প্রভু। শরীর থাকিতে তোমানা ছাড়িব কভু।। সভ্যবাদী হও সভ্য ছাড়কি কার্ণ। লুককায়িত আছু কোথা দেহ দর্শন।। দুঃখনিকুমধ্যে প্রভু কেন দেহ দুঃ । অভিশীমু আইস নাথ দেখি তব মুখা।

হ্নপার্ফ লের হেতৃ গিয়াছ কি বনে। তৃষ্ণার্ত হইয়া কি বা গেলে জলপানে।। এত বলি বনে ২ ভৈমী প্র্টিয়া। कर्त डिटरे कर्त देवरम कर्म यात्र थाहेगा।। রা। মুদি৲হ মহিষ শৃকর যত ছিল। লক্ষ্ঠ চত্দিলৈ তাহার। বেড়িল।। ষামী অম্বেষিয়া ভৈমী করে বন ভুম। অক্সাৎ সমূথে দেখিল ভুজক্ম।। বিকট দশন আর বিকট গঙ্জন। ভৈমীরে দেখিয়া অহি বিস্তারে বদন।। বিপরীত মূর্তি অহি দেখিয়া নিকটে। হা নাথ বলিয়া ডাকে পড়িয়া সকটে॥ আরে না দেখিব প্রভু ডোমার বদন। নিশ্চয় হইলাম অজগবের ভক্ষণ।। উচৈঃমূরে কান্দে দেবী কহিয়া হা নাথ। দুরেতে থাকিয়া তাহা খনে এক ব্যাধ। শাঘ্রতি আদি ব্যাধ দেখি অজগর। দুইখান করিল মারিয়া ভীক্ষ শ্র ।। দর্প মারি মৃগয়ু জিলাদে বৈদভীতে । কে তুমি একাকী ভূম এ কানন ঘোরে।। সকল বৃত্তান্ত ভারে বৈদ্দী কহিল। বৈদভারি রূপে ব্যাধ আকুল ছউল। मन्त्रुर्व हस्त्रमा मुख श्रीन श्रद्धादत्। বচন অমৃতে ব্যাপে বিদ্ধা মার্শর।। কামাতৃর হৈয়া যায় ভৈমী ধরিলারে। ব্যাধেরে দেখিয়া ভৈমা কহিছে অস্থরে।। মতাশীল নল রাজা যদি মোর পতি। নল দিনা আন্যে যদি নাহি থাকে মতি।। এ পাপিষ্ঠ পরশিতে না পারে আমান। এখনি হউক ভস্মরাশি দূরাশয়।। এতেক বলিতে ব্যাধ ভষা হৈয়া গেল। সামির উদ্দেশে সতী বৈদ্রতা চলিল। মহাঘোর বনে গিয়া করিল প্রবেশ। নানা জাতি পশ্ব তথা দেখারে বিশেষ।। সিংহ কোল বাা<u>ঘু</u> বিপ **শ**ড়িগ কৃষ্ণসার। মুল মূলী দেখে আরু মহিষ মাজ্জার। 2 x 2

শলকী নকুল গোধা মূষিক বান্র। নানা জাতি গগণে প্রশে ভরুবর।। শাল তাল পিয়াল যে অজ্জুন চক্ষন। শিমূল ঝর্জুর জাম কদম্ব কাঞ্চন।। আমাতক বিভীতক ফল আমলকী। পলাশ ডুম্বর ভলাতক হরীতকী।। খাদির পাওবি পিচুমদ্দ কোবিদার। শাকট কপিথ যে অখ্য বট আর্।। নোয়ারি বদরি বিঞ্চি বছেডা পর্কটি। অশোক চল্পক কেন্দু ডিম্ভিটক বাঁটি। বাণী সর তড়াগ সিল্পুর সম নদী। নানা থড়র্ম্য স্থান বহুর্তন নিধি।। যত ২ দেখে ভৈমী অন্যে নাহি মন। ষামী অক্ষেষণে ভ্মে গছন কানন।। याद्य मृष्टि कद्द रेडभी क्रिजारम डाहाद्य। দেখিয়াছ মম প্রভুগেল কোথাকারে।। সিৎহণীৰ প্ৰভূমম বিশাললোচন। দীর্ঘতর যুগা ভূজ অংক্রাঞ্চ বসন।। আহে দিৎহ মহাতেজা বনের ঈবর। বনের বৃত্তান্ত যত ভোমার গোচর।। সত্য কহ প্রাণনাথ গেল কোন দিগে। অনাথা ডোমার ভানে এই ভিক্ষা মাগে।। অনন্তরে এক মহা সরিত দেখিল। প্রণাম করিয়া তারে ভৈমী জিজাসিল। তর্জিণি কহিয়া স্থামির সমাচার। শীঙল করহ তুমি হৃদয় আমার।। কুধায় বিশেষ আনমে আনকুল শ্রীর। জলপানে আসিয়াছিলেন তব তীর্।। তথা হৈতে গেল ভৈমী না পায়ে উত্তর। ভাতিউচ্চতর এক দেখে গিরিবর।। তাহাকে জিজাদে ভৈমী করিয়া ক্রন্দন। অতিউচ্চতর শৃঙ্গ পরশে গগণ।। বহুদূর তব দৃষ্টি যায় শৈলবর। কছ মোরে কোথায় আছেন প্রাণেখর।। পক্তর কেশর অঙ্গ কর সপদের্ভানু। কর্ণান্তে নয়ন মৃধশোভা শীঙভানু॥

वीत्रामनम्ड अञ् नियथ हेर्रतः। দেখিলা কি প্রাণনাথে কছ গিরিবর।। এইমত নিরিপ্তেষ্ঠ ভ্রে কত দিন। ক্ৰা ভ্ৰাহডজান বদন মলিন। যুগল নয়নে বহে জলধর প্রায়। অজভাষা মুক্তকেশা ধূলি সকা গায।। তথাহৈতে চলি যায় উত্তর মু**ং**শতে। মুনির আ আমে যায় তৃহীয় দিনেছে।। অনাহারী বাতাহারী দীঘ গোঁপ দাডি। কর পদ সপ্রৎ নথ ধরে বেড়ি॥ দেখি দময়তী তাঁরে ভূমিষ্ঠ হইয়া। প্রণতি করিয়া রহে অগ্রে দাঁড়াইয়া। ভৈমীরে জিজাসে মূলি মপুর বচনে। কে হুমি কি হেতুকর ভূমণ কাননে।। দমর্ম্বী বলে আমি পতিবির্টিণী। এই বনে হারাইল মম পতিমণি।। অন্নেষণ করি তারে করি দেই ধান। হার। ধন পাই যদি তবে রতে প্রাণ।। আজা করুমূনিরায়ল কোন দেশে যাব। নিশ্চয় কি পুনর্পি দর্শন পাব।। এত শুনি মুনিরাজ আখাদ করিল। না কর রোদন তব দুঃখ শেষ হটল।। পাইবা স্বামিরে পুন পাবা রাজ্যভাব। পুত্র কন্যা সহ সুথে বঞ্চ অপার। এত বলী থ্যাগিণ আসুধান চউল विकास मानिसा उटव देवलकी उलिला। নদ নদী কণ্টক পর্বত ঘোর বনে। রাত্রি দিন চলি যায় নিরাতক্ষ মনে॥ ষাইতে ২ দেখে এক নদীকুলে। वस्पृता मक्त महा वस् लाक हरना। रेडिशीरक मिथिया लाक विकास मानिल। বিপরীত দেখে কেছ ভয়ে পলাউল। কেহ হাসে কেহ নাচে চিতের পুঙলি। রাক্ষনী পিচাশী কিবা মানুষী বাঙ্লী।। দয়াময় হইয়া জিজাদে কোন জন। কে তুমি একাকী ভূম নিজ্জন কানন।।

বৈদভাঁ বলিল নটি বাক্ষমী পিচাশী। যামি অকেষিয়া ভমি আমিত মানুষী।। অর্ণোর মধ্যে স্বামী ছাড়ি গেল মোরে। মতা কহ তোমবা কি দেখিয়াছ তাবে॥ এতেক শ্রনিয়া বলে বণিকের গণ। ভোমাভিল এ বনে না দেখি অনা জন।। চেদি সাজ্য যাই মোবা বাণিছা কাবণ। আইস আমাব সঙ্গে যদি লয় মন।। আখাদ পাইষা ভৈমী চলিল মংহও। দেই পথে অস্তেষিয়া যায় নিজপতি।। ছেন মতে কভপথে এক র্মাস্লে। একটী যে সরোবর শোভিত কমলে।। শ্রমসক্ত উত্তরিল বাণিজ্য কারণ। সেই নিশি তথায় বঞ্জিল স্কল্পান। নিশাকালে হয়িগণ জলপানে আইল। নিদিত আছিল পথে চর্ণে চাপিল।। দশনে চিরিল কারে শুঙে জড়াইল। বাণিজ্যের লোকমধ্যে মহারোল হৈল। প্ৰাণ্ড ষে কোন দিগে যায় কোন জন। मश्रासी क्रिट्सिम वृक्त्यादग्रम्।। বুকোপরি থাকিয়া করিছেন রোদন। ছায় বিধি মোব ভাগ্যে ছিল এ লিখন।। জন্মকালহৈতে আমি জানি নিজ মনে। এমন দফকত আমি না করি কথানে।। তবে কেন বিধি মোবে কৈল হেন গতি। অধিক সমাপ মোব উপজিল নিতি॥ মোর স্থান্তর এসেছিল দেবগণ। নিরাশ হইয়া জোধ কৈল সর্বজন।। সেই হেড়জামার না দেখি শে্য আরে। এত কফৌ পাপ আত্মা না যায় আমার ॥ বজনী প্রভাত হৈলে যে যেখানে ছিল। চারিদিগতৈতে আদি একত মিলিল। ভব পায়ে তথাহউতে য:য় শীঘুনতি। कड मित्न (छिन वास्त्रा उँहाविन मधी।। বিবর্ণবদ্দনা কৃশা অক্ষে অদ্ধ বাস। ধুলিতে পুসর কায় ঘন বহে খাস।।

तमरेहरा मनारहरा कहिल अरतम। চণ্দিলে ধায় লোক দেখি ভার বেশ। যুবা বৃদ্ধ নগরেছে যত নারীগণ। চত্দিলৈ বেড়িয়া চলিল সর্বজন। কেহ বা কর্ম দেয় কেহ দেয় ধূলা। বৈদভারে বেড়িয়া হইল লোক মেল।।। স্বাজ রাজার মাতা প্রামাদে আছিল। দময়ত্বী দেখিয়া ধাত্রীরে আছে। দিল।। হোব দেখ নাবী এক নগবে আইমে। মলিনা বিবৰ্জপা বেফিটি হা মানুষে।। শীঘূ গিয়া ভাহারে আনহ মোর খানে। আজামাত্র ভৈমীকে আনিল সেই ক্ষণে।। ভৈমীকে দেখিয়া জিজাসিল রাজমাতা। কহ নিজ প্রিচয় কাহার বনিহা।। দম্যন্থী বজে শুন কহি বাজ্মাই। জাতিতে মানুষী আমি দৈরিজ্রী বলাই।। দ্যতে হারী যামী মোর পশিল কাননে। অপ্রমিত ওণ তাঁর না যায় কথনে।। সলেতে ছিলাম আমি ছাড়িলেন মোরে। তাঁবে অবৈষিয়া আমি আইনুনগরে।। এত तलि मगरू ही कत्रश र्वामन। আখাসিয়া রাজমাতা বলয়ে বচন।। নাকান্দহ কন্যা ভূমি চিত্ত কর স্থির। তব দৃঃধ দেখি মম বিদরে শরীর।। পাইবা ছামির দেখা থাক মোর বাদে। লোক পাঠাইব ভব পতির উদ্দেশে।। ভৈমী বলে এত যদি ক্ষমিবা আমারে ৷ তবে সে থাকিতে পারি ভোমার মন্দিরে।। পরুষ সহিত মম নহিবে কথন। পুরুষের স্থানে না পাঠাবা কদাচন॥ ন। ছাইব উচ্ছিফী নাপদে দিব হাত। পুর্বাপর বুত মম কহি রাজমাত॥ বৃদ্ধ দিজ পাঠাইবা স্থামি অসেষণে। এতেক কহিলে রহি ভোমার সদনে॥ সেইকপ হইকে বলিয়া রাজ্যাতা। ডাকিল সুন্দানামে আপন দুহিতা।।

রাজমাতা বলে তবে তন্যার প্রতি।
স্থা কর তুমি এই সুন্দরী সংহতি॥
পুতাকথা ভারতের স্থানিলে পবিত্র।
অর্ণা পর্কোর কথা নলের চরিত্র।
অশেব প্রকারে আমি করিনুর্চন।
স্থানিলে প্রম মুখ বৈকুঠে গ্রন।
কাশীরাম বির্চিল করি গীত ছক্ষ।
সভ্জন র্সিক জন পীয়ে মকবন্দ।।

VI.—Nala's transformation.

অথ কর্ক্সেট নাগের দ॰ শনে নলের বিকৃতাকার।

লঘু ত্রিপদী।

চোতা তৈমী ছাড়ি পরি অর্কশাড়ি চলিল নুপতি নল। বাযুতেৰে ধায় পাভুনাহি চায় আকো বহে শুমজল।। তেনকালে শ্বনি দাবানলে ধ্বনি রাথ রাথ নলরাজ। অহে প্ণ্যশ্লোকে রক্ষা কর মোকে পুড়ি আমি অগ্নিমাঝ।। শুনি দরাময় ডাকেন নিভয় সার্ণ কে করে মোরে ৷ ভানি ফণিপতি কহে নলপ্রতি নিবেদি 🗫 তোমারে ॥ আমি নাগরাজ অনস্থ অনুজ করেকটিনাম ভূজক। নারদের শাপে সদা পুড়ি ভাপে অচল হটল অজ।। শেষ হটল দৃঃধা দেখি তব মুখা শাপান্ত করিল ম্নি। विलय ना कत मञ्जद उक्कात महरश मारू जाश्चिम ॥ পরতআকার শরীর আমার দেখি পাছে কর ভয়। ভূমি পরশিতে সম্রেরি হাতে নাহউবে শুম তায়।। ন্ত্রিনরপতি দয়াময় অতি আনিল অনলতৈতে। পাইয়া অভয় নগরাজ কয় স্থা হৈল তব সাতে।। ত্র শ্ম কাষ্ট্রন মহারাজ কোলে করি মোরে লহ। विश्ल गवरम श्री श्री १ कड मृद ला है या या है।। ভার বাক্য শুনি পদে ২ গণি দশ চরণ চলিল। দশ ডাক <mark>গুনি দৎশিলেক</mark> ফণি ছাড়িয়া অস্তর হৈল।। नल राल छाल मेथा थम्म देवल मेथाद्व प्रश्नेन कर्। নাহি দোষ তব জাতির যভাব উপকারি সোকে মার ॥ বলে নাগপতি নাভার দুর্গতি করিয়াছি উপকার। ুংসিত মৃত্তি হৈলা নরপতি আলে দেখা আপুনার ॥

দুংখের সময় কভু ভাল নয় ভূপতি লক্ষণ রূপ।
কেহ না লক্ষিবে যথায় ঘাইবে যে হেছু হৈলা বিরূপ।
যবে ইজা মনে আমার ফারণে আপন রূপ পাইবা।
রাজা য়তুপর্গ পালে চহুর্ক্ণ ভাহার সার্থি হবা।
বৈদ্ধী রূপসী ভোমার প্রেয়ানী আরো হন্য এনরা।
কুশলে ভেটিবা পুন রাজা হবা নিষধ রাজ্যেতে গিবা।।
এতের কহিরা বস্তু এক দিরা অন্তর্ধান হয়ে গেল।
নাগের বচন খনিয়া রাজন অযোধ্যাপুরী চলিল।।
ভারত ক্মল প্রবণ মঙ্গল সাধু দিলেন প্রকাশ।
কুস্নামানুজ ক্ষপেনামুজ বন্দি ক্হে কাশীনাস।।

VII.— Nata's sojourn at Ayodhyá. ভাগ অসোধ্যানগরে বাত্ক নামে নল রাজার স্থিতি। পরার।

> उटत नल नत्नशिक मणम मित्रम। . অযোধ্যায় প্রবেশ করিল পথ ক্লেশে।। রাজার দুয়ারে গিয়া **বলে নরপভি**। মম তুলা কৈহ নাহি অখশিকাকৃতী। পাহুক আমার নাম তান মহামতি। নিষধ রাজার আমি ছিলাম সার্থি।। আার এক মহাবিদ্যা জানি যে রাজন। বিনা অনলেতে পারি করিতে রক্ষন।। এত শ্বনি নরপতি করিল আখাস। নথোচিত চাহ দিব বৃহ মম পাশ।। মত অরপালের উপরে হবা পতি। মে বাঞ্জিবা ভাহা দিব থাকিবা সংহতি।। এত খনি নল রাজা রহিল তথায়। দিবস রজনি রাজা নিদু। নাহি যায় ।। আয়ু জল নাহি হংচে প্রসীরে ভাবিয়া। সদা ভাবে দময়তী কোথা গেল প্রিয়া।। না জানি সে কি করিল আমার বিহনে। নিরাহারে নীরাহারে আছে কোন স্থানে॥ কতেক কান্দিৰে প্রিয়া মোরে না দেখিয়া। কোন কমা করিলাম নিছুর হইয়া।।

ভরকর সিংহ ব্যাপু নিজ্ল কাননে।
একাকিনী বনে নারী বঞ্চিবে কেমদে।
পতিবুহা অনুরক্তা আমাতে সহত।
হেন প্রী ছাড়িয়া আমি বাঁচি মূহবত॥
বনপর্কে নলাখ্যান দেই জন শ্বনে।
অংশব দুংপেতে পার হয় মেই জনে॥
ব্যানের বচন ইথে নাহিক সংশ্র।
পাঁচালি প্রবেজে কাশারামদাস কয়॥

VIII.—Damayanti's return to her parents.

অথ দময়ন্ত্রীর পিতালয়ে আগমন ও নলের উদ্দেশ।

ভাষ্যাসহ গেল নল অর্ণ্যভিতর। দু১মুখে বাভা পাইল ভীম নূপবর্॥ ধুনিয়া শোকাত বড় ভীম নরপতি। মহস্ক দিজ আনি শীলগতি॥ রিজগণ প্রতি রাজা বলিল বচন। নল দময়তীর করহ অক্ষেমণ।। অবেষণ করিয়া কহিবা বার্তা আদি। মহমূহ গৰী দিব র্ক্তন ভ্ষি।। গাম দেশ ভূমি দিব নানা রক্তন ধন। দ্ই এন মধ্যে যে দেখিবে এক জন।। এত বলি বিজগণে মেলানি করিল। মেইক্ষণে দ্বিজ্পণ চত্দিগে গেল।। সুদের নামেতে দিজ ভুমি নানা দেশ। মুবাত রাজার গৃহে করিল প্রবেশ॥ বহু দিন থাকি তথা পাইল উদেশ। রাজগহে আছে নারী দৈরিক্দ্রীর বেশ।। রাজগৃহে গিয়া তবে দ্বিজ বিচক্ষণ। निकटि रेमितिक्वी छाकि करत नितीक्रण॥ চন্দ্ৰাননী বিশালাক্ষী দীঘঁ মূক্তকেশা। চারুপীনপয়োধরা স্নাদা সূভাবা॥ পদা যেন বিদলিত ছব্তিদবাঘাতে। চন্দ্র যেন বিদলিত দৈ৲হিকেয় দাঁতে॥

ক্ষিতিমধ্যে নাহিক ইহার রূপসীমা। এই মে সৈত্রিল্লী হবে বিদর্ভচন্দ্রমা॥ आशित विष्ट्रांत कथा विवश्वनशी। करणक विविद्या उदद दरल विषयि।। মোর দিগে বরাননি কর অবধান। স্দেব বাহ্মণ আমি ভাত্মথা জান। ভোমারে চাহিয়া ভূমি দেশ দেশানুর। চারি দিগে থিয়াছে বাহ্মণ বছাত্র ॥ কন্যা পুলু দুট তব আছে শুভত্রে। ত্র শোকে পিতা মাতা প্রাণ্যাত্র ধরে ॥ এड स्ति प्रशासी करण (वापन) শ্নিয়া আইল অৰংপ্ৰ নার্গিণ॥ र कार्यत् राका धनि मितिकी कास्तिल। বার্তা পামে রাজ্যাতা বিপ্রে জিলামিল। কালার ওন্যা এই কালার গভিনী। कि कात्रम स्थान चरो। देश প्रचारिगी ॥ যদি তুমি জানহ জানাহ জিজবরু। শুনিয়া স্দেব তারে করিল উত্র ॥ বিদর্ভ ঈথর ভীম ওঁহোর দভিতা। পণ্লোক নল রাজা তাঁহার বনিতা।। নিজভতা রাজ্য দেশ পাশায় হাবিল। অর্ণ্য পশিল গিয়া কেছ না দেখিল। এই হেতুমতমু> বিজাগণ। দেশ দেশান্তৰ থিয়া কৰে প্ৰাটন।। মম ভাগো তব গছে পাই দেখিবারে। জমধে।তে তিল দেখি চিনিন ইহারে॥ দিশেষ্টঃ জিতিমধ্যে নাছিক উপমা। মনিগণ বলে দোঁতে কাত্তকারামীমা।। এত খনি বাজমাতা আপনা পাদরে। দম্যুতী কোলে করি অঞ্জলভরে। এত কাল ভাজাত আছত মম দরে। কি কার্ণে পরিচয় না দিলা আমারে॥ তোমার জননী লো আমার সভোদরা। সদাম রাজার কন্যা ভগিনী আমরা।। নীবরাত মম পতি ভীম তব পিঙা। যে কারণে ভূমি মোর ভূগিনীদুহিতা।। 2 Y 2

এই রাজ্য ধন যে আপেন ুকরি জানঃ এত বলি বৈদভীর করিল সমান। छनि मशराधी उटव প्रभाभ कतिल। বিনয়পুর্বাক ভাবে কহিছে লাগিল।। পিতৃ মাতৃ বিহীন মুগল শিশু আছে। জনক জননী মোর দুঃখ পাইতেছে।। আজা কর আমারে গো করিতে গমন। শ্ৰনি বাজমাতা আজা দিল সেইক্ষণ॥ দিব্য বস্তালকার কবিয়া সুবেশ। भिवा वर्ष मिशा পाठ। हेल निकारमण।। স্দেব বাহ্মণ সঙ্গে চলিল তথান। নানা দেশ ভূমি আইল পিডার ভ্রম।। শুনিল ভীমের পতনী আইল তন্যা। উর্কুমুখে ধার রাণী মৃক্রকেশা হৈয়া।। তাত মাতৃ পুত্র কন্যা কৈল সভাষন। একেই মিলিলি মেডকে বন্জান। ভোজন করিয়া ভৈমী করিল শয়ন। একান্তে মায়েরে কহে করিয়া ক্রন্দন।। জায়ৰ আছি যে আমি না করিহ মনে। কেবল আছিয়ে তন নল দর্শনে।। নিশ্চয় নলের যদিনা পাই উদ্দেশ। অনলের মধ্যে আমি করিব প্রবেশ।। এত তুনি মহাদেবী রাজ্যানে গিয়া। কন্যার যতেক কথা কহিল কান্দিয়া। শ্বন ২ ভাপতি আমার নিবেদন। চতর্দ্ধিক প্রস্থার যাউক বিজ্ঞাণ।। नल्य विष्कृतम कना श्राप ना वाचिता কন্যার বিচ্ছেদে মম প্রাণ কিসে রবে॥ এত খনি নরপতি আনি দিজগণে। চতদিনে পাঠাইল নল অনেষণে।। गव विकाश एरव रेवमर्थी छ। किन। মভাকারে এইরূপে বচন বলিল।। একাকী নির্জনে চিরি লৈয়া অর্দ্ধ শাড়ী। কোন দেশ ছাড়ি গেল অনুরকা নারী।। যেই দেশে যেই গামে করিবা প্রয়াণ। এই কথা জিজাসিহ সভে সেই ভান॥

ইছার উত্তর যদি দেয় কোন জন।
শাগু আসি আমারে কহিবা সেইজ্ল ।
ইহার সন্থাদ মোরে দেই আসি দিবে।
নিশ্চয় জানিহ সেই উমীকে কিনিবে॥
এছ স্থানি চলিল যতেক বিজ্ঞান।
রাজ্যপুর পুমিপুর পণি লোটু বন।।
মহাভারতের কথা অমত সমান।
শুনিলে প্রম মুখ জ্বে দিব্য জান।।
হরির ভাবনা যেবা করে স্প্রক্ণ।
কাশীরাম দাস কহে নল বিব্রণ।।

IX.—Nala discovered.

অথ ঋতুপর্ণ রাজার বিদর্ভ দেশে যাতা এন ও নলের কলি ভ্যাগ।

তবে বহু দিনেতে প্রণাদ নাম্পর। प्रशासी निकार किस्ता विख्याता। ভূমিলাম বহু রাজ্য কত লব নাম। থতুপর্ণ নামে রাজা জ্বোধ্যার ধান ।। যেমত বলিলা তুমি শুনাউনু তায়। না করিল প্রতাত্র য়ড়পণ রায়। সভার বসিয়া যারা ফরিল তাবে।। জানিয়া না रेटल তারা রাজমন্ত্রিগণ।। বাহুক নামেতে এক রাজার সার্থি। বিনা অগ্নি পাক করে বিকৃতি আকৃতি।। শুনিয়া সে মৃত্র্ত করিল করণ। কৃশল ভোমার জিজাদিল পুনঃ ২॥ পশ্চাৎ আমারে সে করিল এ উত্তর। কলন্ত্রীর ধর্মা এই শুন দ্বিজবর ॥ মতী মাধবী পতিবুতা নারী বলি তারে। কদাস পতির দোষ প্রকাশ না করে।। মণ কিলা ধনহীন হয় যদি পতি। অধর্মা অসৎ কর্মা করে নিভি২॥ মতী নারী পতিদোষ কথন না ধরে। त्म त्माच इ.किशा श्रम धेन ताङ करत्।।

তাব ধর্ম হয় অতি এই সে বিধান। সামিহৈতে অভিকৃষ্ট নাবী যদি পান। তথাপি স্বামিক নিন্দা কদাচ না করে। নিজ কর্মা নিন্দে কিয়া নিন্দে আপনারে।। শ্নি তাঁর বাক্য আইলাম শীঘণতি। কর্হ উপায় দেই মনে লয় মতি॥ এত শ্বনি দমর্তী অঞ্পণ্মথী। কহিল সকল কথা জননীরে ডাকি॥ শ্ন গো জননি মোর যদি হিত চাও। সদের বান্ধণেরে অবোধ্যায় পাঠাও।। পণাদেরে কহে দিয়া বহু রহন গ্রাম। নিজগৃহে গিয়া বিজ কর্ছ বিশাম।। মে করিলা ভূমি তাহা কেহ নাহি করে। নল আইলে যাহা বাঞা দিব <mark>তা তো</mark>মাবে॥ প্রণাম করিয়া রিজে বিদায় করিল। मरमय नाकारण डाकि रेनमर्डी दलिल॥ যাহ বিপ্র অংগাগ্যা নগরে একবার। অসময়ে আমার করহ উপকার॥ এই পত্র দেহ গিয়া য়ত্পর্প প্রতি। বিশেষিয়া রাজারে করাহ অবগঙি॥ দম্যুতী ইজিল বিতীয় ধ্রুপুর। মতেক নপতি গেল বিদ্ভন্গর।। বত দিন হৈল স্বয়সরের আর্ড। যদি যাহ যাহ শীঘুনা কর বিলয়।। যদি রাজা বলে তার স্বামী নল ছিল। हें हा उदर करिया ना जानि कांथा ताल॥ জীয়ে বা না জীয়ে নল না পাইল বার্তা। रम कातरा रेत्रकी देखिल अभा खर्छी।। আজি রাত্রি প্রভাতে হইবে স্বয়ন্তব। পারিলে তথায় শীঘু যাহ নুপবর ॥ নল সম নাহি লোক চালাইতে বথ। নিমিষেতে যায় শত যোজনের পথ।। নিশ্চয় জানিব তথা যদি নল থাকে। তবে শীঘু বার্তা পাইলে আদিবে হেডাকে॥ এত শুনি চলিল স্দেব বিজবর। কত দিনে উপনীত অযোগ্যা নগ্ৰ ।।

ক্রিয়া ভৈমীর কথা প্রথানি দিল। পত্র পায়ে মৃত্পণ বাহুকে ডাকিল।। অশ্বত্র জান তমি সর্ব্য লোকে জানে। বিদ্রভ ঘাইতে কি পারিবা রাত্রি দিনে। আজি নিশা প্রভাতে উদয়ে তিমিবারে। ভীমপত্রী ভৈমী বরিবেক অন্য কারে॥ এত খনি নল রাজা হইল বিশিহে। দমর্থী করে হেন কর্ম কদাচিত।। ম্হতেতিক নিজ চিত্তে করিয়া ভাবনা। নিশ্বয় জানিল এই মিথ্যা প্রবঞ্চনা ।। কোন জ্রী এমন নাহি করে কোন দেশে। তনয় তন্য়। দুই আছেয়ে বিশেষে॥ মতী মাপনী দময়তী ভক্তা যে আমায়। আমার কারণ হেন করিছে উপায়।। অসংকর্ম দ্যতে আমি পশিলাম বনে। ওঁহ আমি মন ভাষা শ্রনিনু শুরণে॥ মিখা) কথা থতুপর্মতা করি জানে। মতা কিলা মিথা। গিয়া জানিব দেখানে ॥ এর গিডি নর্পতি•করিল উত্র। निশাকালে লব বথ বিদর্ভনগর॥ এত খনি কহে বাজা হইয়া উলাস। প্রদাদ যে চাহ লহ এ আমার পাশ। মল বলে কার্য্যসিদ্ধ করিয়া ভোমার। তবে রাজা মাগিব প্রদাদ আপনার।। এত শুনি অখশালা প্রবেশ করিল। একে ২ সকল ভুরঙ্গ নির্থিল।। (मश्रिटक ग्रेटित कुग मिन्नुटनगी शाखा। বাছিয়া বাহির কৈল নল পাঁচ বোড়া॥ ঘোড়া দেখি ঝতুপণ আরক্ত লোচন। বাহুকের প্রতি বলে কটিন বচন॥ সহস্থ মম আছে অশ্বণ। পদ্রতীয় ঘোড়া সব পর্বতগমন। তাহা ছাড়ি হীনশক্তি দুর্বলে আনিলা। কেমনে বহিবে রথ কিমত বুঝিলা॥ পরিহাদ কর মোরে বুঝি অনুমানে। পনঃ ২ কহে রাজা কঠিন বচনে॥

বাজক বলিল যদি যাইবা রাজন। আমার বচনে কর রথ আরোহণ।। ইহাভিল্ল অন্য ঘোড়া না পারে লইতে। এত বলি চারি ঘোড। মডিলেক রথো। त्थं रुकी भनाडि माजिल रैमनागर। থাতপূর্ণ রাজা কৈল রথে আরোহণ।। চালাইয়া দিল র্থ বাছক মার্থি। শন্যেতে উঠিল ঘোড়া বায়বেগ গতি।। কোথায় বৃহিল বুথ কোথা দৈনাগণ। বিশার মানিয়া রাজা ভাবে মনে মন।। এট কি মাঙলি যে মার্থি প্রুত্ত। অধিনীক্ষার কিয়া আপনি মরুছ।। হেন শক্তি নাহি কারো পৃথিবীমণ্ডলে। মানুষের মধে) শক্তি ধরে রাজা নলে।। নলরাজা বিনা আরু নহিবেক আন। रोगी रेवरी ভाষा धन नत्वय समान॥ কেবল দেখিতে পাই কৃৎসিত আকার। ছক্ষাবেশে হইয়াছে সার্থি আমার॥ এত মনে থাতপণ করিয়া বিচাব। বন সর পর্বতি আনেক হইল পার।। কেনকালে নুপতির পড়িল উত্রী। সাহুকে বলিল রুথ রাখ অখ ধরি॥ উওরি লইতে রাজা পাছ পানে চায়। বাছক বলিল হেখা উত্তরী কোথার॥ পঞ যোজনের পথ উত্তরী রহিল। তনি থতুপর্রাজা বিসার মানিল। রাজা বলে বাহুক শুন্হ মোর বাণী। আমি এক দ্বাসংখ্যাবিদ্যা ভাল জানি।। গণিতে দক্ষজ নাহি আমার দমান। এই বৃক্তে পত্ত ফল বুঝ পরিমাণ।। পঞ্কোটি পত্র আছে দুই কোটি ফল। এত শুনি বলিল নিষ্ধবাদা নল।। হেন বিদ্যা নাহি যাহা আমি নাহি জানি। প্রীক্ষিব তব বিদ্যা ফল পত্র গণি।। রাজা বলে চল শীঘু বিলয় না সয়। নিকট হউল মুয়ুম্বরের সময়॥

ষয়মূর্হইতে আসিব নিবর্ত্তিয়া। তবে মম বিদ্যা তুমি বুঝিবা গণিয়া॥ বাহুক বলিল যে কৃণ্ডিন অম্প পথ। না পোহাতে রজনী লইব আমি র্থ॥ মুহ্রেক রথ অংগ ধর নূপবর। ফল পত্র গণি আমি আসিব সতার্॥ এতেক বলিয়া গেল অখ্যের তল। গণিয়া ব্ঝিল যে হইল পত্ৰ ফল॥ বিষয়ে মানিয়া বলে নল নরপতি। এই বিদ্যা আমারে বিতর মহামতি॥ এমত শুনিয়া রাজা বাহুকবচন। হ্মণেক চিশ্তিয়া তবে বলিল রাজন। অশ্বিদ্যা মন্ত্র যদি শিক্ষাবা আমাবে। আমিও গণনা বিদ্যা শিক্ষাব তোমারে॥ স্থীকার করিল নল করাইব শিকা। তবে হাতুপণ কাছে কৈল মন্ত্রীকা।। মহামন্ত্র দীকা যদি করিলেন নল। শ্বীবে আছিল কলি হইল বিকল॥ একে ককোটের বিষ জর্থ দছে। অধিক রাজার মদ্রে কলি দ্রি নহে॥ সেই হাণে অফ্টেতে হটল বাহির। ম্থেতে গরল বহে কম্পিত শ্রীর॥ কলি দেখি নরপতি ক্রোধে কম্পকায় ! হাতে খড়গ করি রাজা কাটিবারে যায়॥ द्रांश्वलि कत् किल वरन मदिन्छ। মোরে না করিহ নাশ শুন মহাশয়॥ দমরস্থীশাপে মোর সদা পোড়ে অস। বিশেষ দহিল দংশি ককোট ভুজ ।। তোমাহৈতে দৃঃথ রাজা বিশেষ আমার। ব্রি ক্রোধ কর ক্ষমা না কর সংহার॥ আমারে না মার তবে হইবেক কাষ। এক কার্তি দিব বহু পৃথিবীর মাঝ॥ (यह सन उद को हिं क दिद प्यायन। তাছাবে আমার বাধা নাহি কদাচন॥ আরু এক কথা বলি শুন নরবর। ক্ত হৈতে ভোমার কীর্তি নাহি অবসর॥

ককোটক থড়পণ দমষ্টী নল। নাম নিলে নাহি আমি যাব দেই স্থল। এত শুনি কলিবে ছাড়িল নরবর। রথো চড়ি গেল দোঁতে বিদর্ভনগর॥

X.—Nala's arrival at Vidarbha. অথ ঋতুপর্ন রাজার সহিত নলের বিদর্ভ দেশে আগমন।

র্থ চালাইয়া দিল নিষ্ধ ঈশর। নিমিযেকে পাইল দে বিদর্ভ নগর॥ আकारण आहरम तथ प्रायत शक्रांता মেঘ ভারুমানে নৃত্য করে শিখিগণে॥ ভুদ্ধাতে চাতক সব করে কলরব। উদ্ধুম্থ করি চাহে জলাকাঞ্জী সব॥ বিদভেঁর লোক সব এক দৃষ্টে চায়। বথ শক ধনি ভৈনী উলাস্থদয়॥ বথ চালাইয়া এই জ্লায় বিষয়ে। নল বিনা হেন শক্তি অন্যের কি হয়। আজি যদি আমি নল প্রভুনা পাইব। ডবলন্ত অনলে তবে প্রবেশ করিব। পরনিন্দা পরদেষ কট্রাক্য লোকে। কথনহ যদি মোর ভাষে নাই মুখে॥ কভুনাহি কহি কটু প্রভুরে উত্তর। তবে আদি ভেটিব আপন প্রাণেশর। এত रनि দময়য়ी প্রাসাদে চডিয়া। বথব গৰাক্ষার চাহে নিব্ফিয়া॥ র্থহইতে নামে তবে ইক্ষাক্নদন। যথা ভাম নরপতি করিল গমন॥ না দেখিয়া ধর্মর বিষয় হইয়া। কি কর্মা করিনু আমি হেথায় আশিয়া। থতুপূর্বাজ্ঞা দেখি ভীম নরপৃতি। বসিতে আসন তারে দিল মহামতি॥ ভীম রাজা বলে শুন অযোধাার নাথ। হেথা আগমন কেন হৈল অক্সাৎ।

খনিয়া নুপতি মনে মানিল বিকায়। মিথা। স্বয়ন্ত্র হেন জানিল নিশ্চয়॥ স্থাস্ব হইলে আসিত বাজগণ। ভাবিয়া নুপতি তবে বলিল বচন॥ আসিয়াভিলাম অনা আভিল কারণ। আসিলাম কবিতে ভোমাব সন্থায়ণ॥ ভীম রাজা বলে শ্বন কি ভাগ্য আমার। মেকাবণে ভোমাব হেথার আওসার॥ প্রসমূক আছে আজি থাক মম নাম। এত বলি দিল বাদা অপুর্য আবাস॥ আবাদ ভিতরে উত্তরিল নরপতি। অশ্বশালে উত্তবিল বাত্তক সাব্যা। অ্থগণ পরিচর্যা করিয়া বান্ধিল। श्रामात উপরে থাকি নৈদর্ভা দেখিল। থত্পণ রাজা আরু মার্থি ভাহার। নল রাজা না দেখি যে কেমন বিচার॥ এত ভাবি পাঠাইল কেশিনী দ্ঠীরে। যাহ শীঘু কেশিনি জিজাস সার্থিরে॥ দেখিরা উহার মুখ জফী মম মন। শীঘু আমি কছ উচা বুঝিয়া কার্ণ॥ এত শুনি কেশিনী চলিল শীঘ্গতি। মধর বচনে কছে মার্থির প্রা১॥ রাজকন্যা দময়ন্ত্রী পাঠাইল হেথা কে তুমি কি হেছু আইলা জিলাগিতে কথা।। বাহুক বলিল মোব অমোধ্যায় ধিতি। থাতপণ নুপতির হট যে সার্থি।। এথাহৈতে গিয়াভিল এক দিজবর। শুনিজেন ভৈমীর বিতীয় স্বর্থব। বুজনী প্রভাতে বরিবেক আন্য স্থান। এই হেক ঝতুপৰ্তআইল শীঘুগামী॥ শতেক যোজনহৈতে আইল নরপতি। বাহুক আমার নাম তাঁহার সার্থি॥ প্ণালোক নল বীর্দেনের কুমার। পুর্বেতে ছিলাম আমি দার্থি উাহার্॥ তার ভাষ্যা ভৈমীর ভাদৃশ আচরণ। ন্ত্ৰিয়া উৰিয় বড হৈল মম মন॥ 2 z 2

দ্বিতীয় বয়েদে এই তৃতীয়ে কি হবে। দৈবে যাহা করে ভাহা কে অন্য করিবে।। এত শুনি কেশিনী বাছক প্রতি কয়। তুমি ঘদি সার্থি নৃপ্তি কোথা রয়। অর্দ্ধবাদা একাকিনী রাখি ঘোর বনে। অনুর্কুণ নারী ছাড়ি গেলেন কেমনে॥ সেই বন্ত্র পরিয়া আছিয়ে অন্যাপি। নাই কৃচে অর জল পুণালোক জপি॥ এত শুনি ব্যথিত হউল রাজা নল। চারি ধারা নয়নেতে বহে অঞ্জল॥ রাজা বলে যেই হয় কুলবতী নারী। স্বামির বিখাদ কথা রাথে গুপ্ত করি॥ আপন মরণ বাঞ্ছে ছামির কারণ। তথাপি স্বামির নিন্দা না করে কথন। বিবস্ত্র হটয়া সেই পশিল কানন। অপপ ভাগ্য নহে তার পাইল জীবন।। হেনজনে ক্রোধ করিবারে যোগ্য নয়। রাজ্যভূষ্ট জানভুষ্ট প্রাণমাত রয়॥ এত বলি শোকাকুল কান্দে নর্পতি। কেশিনী সকল জানাইল ভৈমীপ্রতি॥ ভৈমী বলে নল এই নহে অন্য জন। পুনরপি যাহ তুমি বুঝহ লক্ষণ।। কি আচার কি বিচার কোন কর্ম করে। ব্ঝিয়া আমারে আদি কহিবা সহরে॥ আজা পায়ে দাদী তবে করিল গমন। দেখিয়া সকল কর্ম আইল তথন। কেশিনী বলিল শুন রাজার নন্দিনি। বাহুকের যত কর্ম দেবমধ্যে গণি॥ রয়নে সামিগ্রী যত থাতুপণ নৃপো। মাৎস আদি পাঠাইয়াঁ দিল তব বাপে। সে সব সামিগ্রী দিল বাহুকের স্থান। দেখিয়া তাহার কর্মা হয়েছি আমজান॥ শুন্য কুন্তে কিঞ্জিৎ করিল দৃষ্টিপাত। পূৰ্ণ কৃদ্ভ তথানি হইল অকন্মাৎ॥ সেই জলে দব দুব্যজাত প্রকালিল। তৃণ কাষ্ঠ ছিল কিন্তু অনল না ছিল।

তৃণ মৃষ্টি হত্তে করি কাষ্ঠমধ্যে দিল। দৃষ্টিমাত্রে তুণ কাষ্ঠ আপনি জ্যলিল। क्रिकार्य भव मुदा कवित्र बन्ता ভৈমী বলে আরু কেন ব্রেছি কার্ণ॥ কেশিনি যদ্যপি তুমি যাহ আর্বার। ব্যশ্বন আনহ কিছু রক্ষন ভাহার॥ কেশিনী মাগিল গিয়া বাজকে বাঞান। मगरकी खारन शिहा मिल (महक्कि।। খাইয়া ত্যঞ্ন ভৈমী হর্ষিত মন। নিশ্যু জানিল এই নলের রক্ষন॥ তবে কন্যা পুত্র দিয়া কেশিনী সংহতি। কি বলে ব্নিয়া তুমি আইন শীঘুণতি॥ किनिनीत मक्त किथ नमन निर्मिती। শীঘূণতি উঠি কোলে করে নৃপন্ন। দোঁহা মুথ দেখি রাজা কালে উচ্চৈঃখবে। পুনঃ २ हुच निता आलिजन करत्॥ कटक्करण (किमिनीरत विलेल बाजन। দ্ই শিশ্ত দেখি মোর স্থির নহে মন। এই মত কন্যা পুত্র আছে যে আমার। वद्य मिन (मथा नाई मएम (माँहाकात ॥ মেই অনুতাপ চিত্তে হ^ইল রোদন। অপতা বিচ্ছেদে তাপ নহে সম্বরণ॥ পাছে কেহ দেখিয়া কহিবে কোন কথা। ला याह पृष्टे निष्य कार्या नाहि रहथा॥ এতেক শুনিয়া তবে কেশিনী চলিল। यटङक প্রস্তাব গিয়া ভৈমীরে কহিল॥ শুনিয়া বৈদ্ভী ব্যগ্রা হইল দশ্নে। শীঘু গিয়া জানাইল জননীর ভানে॥ আজা যদি কর য্রেই নল দেখিবারে। শুনিয়া বৃত্তান্ত রাণী আজা দিল তারে॥ তনয় তনয়া সংজ্প করিয়া কামিনী। পতি দরশনে যায় মরালগামিনী॥

XI.—The recognition.

অথ নলের সহিত দুমন্ত্রীর মিলন I

नीर्घ जिलानी।

অখশালে গিয়া তৈমী নিকটে দেখিয়া খামী জটিল মলিন জীণ বাস।
দুঃখানলে অঞ্চলতে চক্ষে অঞ্জল বহে সকল্পে কহে সৃদুভাষ॥
হেদে হে বাছক নাম এবা দেখি কোন ঠাম ধর্মিষ্ঠ পূর্ব এক জনে।
ক্বা তৃষ্যা পরিশুমে স্ত্রী কোলে আছিল স্মে একা ছাড়ি পলাইল বনে॥
বিনা নল পুণালোক পৃথিবীর অন্য লোক কে করিল কহ নাম ধরি।
সদাকাল অনুবুতা বিশেষ পুত্রের মাতা কোন দোষে নহে দোষকারী॥
যমাগ্রি বক্প ইল্র তাজিরা অমর বৃদ্দ করিল বর্ণ ঘেই জনে।
সদা বাস্ত্রা অনুবর্তি কি হেতু এমন বৃত্তি ত্যাগ করি নিজ্জন কাননে॥
সভার করিল স্ত্য রাখিব ভোষারে নিত্য করিরা প্রাণের স্মশ্র।
নল কেন স্তাবাদী এমন করিল যদি আর কি করিবে অন্য নর॥

দময় থা বাক্য শুনি লাজে কহে নুপ্মণি পারিলে কে ভাড়ে হেন রামা। রাজ্যভুক্ট লক্ষাভুক্ট করিলেক গেই দুফ্ট বিচ্ছেদ করায় গোমা আমা। তোমাকে ভাড়িয়া বনে কের দেশ বরাননে অস্থিচর্মা প্রাণমাত্র জাগে। ইহা না ভাবিয়া চিতে দেশিলা আমারে জীতে না ব্রিয়া মজ অনুযোগে। কলি ছাড়ি গেল আমা ভেঁই দেশিলাম ভোমা ভোগ মস্বর্হ শশিম্পি। যেই নারী পতিবুতা না ধরে স্থামির কথা স্থানিদাম নয়নে না দেশি। আর শুনিলাম বাভা বরিবা কি অন্য ভর্তা কহিল হোমার বিজ্ঞার। রাজ্যে দুত গেল সর্মলোকে বাভা দিল ভৈমীর বিতীয় স্থাম্বর। কৌশলে শুনিয়া কথা ভেঁই আইলাম হেথা কারে বর দেশেছ নয়নে। এমত কৃৎসিত কর্মা রাজকুলে লয়ে জন্ম কহ করিয়াছে কোন ভনে।

শুনিয়া সামির বাণী করিয়া মুগল পাণি নিতৰিনী কছে সবিনয়।
তব হেছু মহারাজ ত্যজিলাম কুললাজ ত্যজিলাম গুরুজন ভয়॥
পূর্বে তব অন্নেবণে পাটাইল বিজগণে পর্ণাদ কহিল সমাচার।
তেঁই এ উপায় করি পাটাই অবোধা পুরি কোন হানে নাহি ঘাই আর॥
কর্ত্তব্য বচন মনে তোমা বিনা অন্য জনে নাহি চাহি নয়নের কোণে।
যদি কর পাপ জান তোমার সাক্ষাতে প্রাণ বাহির হউক এইক্ষণে॥
চন্দ্র সূর্য্য বামু সাক্ষী এখনি বলিবে ডাকি যদি আমি হই পতিব্রা।

ভৈমী বলে উচৈঃঘবে পুষ্প বৃষ্ঠি দেবে করে ডাকে বলে পবন দেবতা॥ ভাজ রাজামনস্তাপ বৈদভাঁর নাইি পাপ স্বধর্মেতে হৈয়াছে রহ্নিতা। যাবং গিয়াছ তুমি রক্ষা করিয়াছি আমি ভোমাহেতুকেবল চিন্তি।॥ অক্সাং এই গাঁণী খনিল দুল্ভিগুনি গগণে হইল আচ্ছিত। দেখা মনে হৈল শাখি খাঙিল নলের ভাুডি ভৈমীর বুঝিয়া ধ্যামত॥ ধরিয়া মুগল করে বিধাইল উরপেরে আখাস করিল মৃদুভাষে। ক্যালাকান্তের সূত হেতুসূজনের প্রীত বির্চিল কাশীরাম দাসে॥

XII.—Nala reinstated.

অথ ঋতৃপর্ রাজার স্বদেশগমন ও নলের পুনর্কার রাজাপ্রান্তি। প্যার।

নিজ রূপে দেখি হামী আনন্দিত মন। বহু দিনে বৈদ্রভী করিল আলিগন॥ দেখা ঢারি বংশরে হইল দোঁহাকার। পনঃ ২ আলিঞ্চন পুনঃ শিফীচার॥ দোঁহে দোঁহাকার দুঃখ কহিল গুনিল। প্রভাতে উভয়ে ভীমন্পেরে ভেটিল॥ জামাতা দেখিয়া রাজা আনন্দ অপার। जालिक्रन पिशा वरल मकलि छामात्॥ থতপূর্ণ শুনিল এ সব সমাচার। জানিল যে নল বাজা বাত্তক আমার॥ দময়তী প্রতাশা ছাড়িল নূপবর। শীঘ্ণতি গেল যথা নিষধ ঈশর॥ থ্ডুপ্ণ বলে ভাগ্য আছিল আমার। ঠেই সে হটল এ মিলন দোঁহাকার॥ আ জাতের দোষ যত ক্ষমিরা আমারে। শুনিয়া নিষধরাজ বলিল তাহারে॥ কথনহ দোষী তুমি নহ মম স্থানে। হৈলে হয় দে ক্রোধ নাহিক মম মনে॥ ত্রাসিত কলির ত্রাসে বড় দুঃখ পেয়ে। ছিলাম ভোমার পাশে আনন্দিত হয়ে॥ ভোমার আশ্রয়ে থাকি বিপদসময়। সুখেতে ছিলাম যেন বাপন আলয়॥ विभान मधरस हाजा घाटत (यह हाट्य। ধর্মেতে বাড়য়ে সেই ধর্ম রাথে ভাকে।।

তাতএর শুন রায় করি নিবেদন।

এমন বিপদে স্থান দেয় কোন জন। হউলা পরম মথা আর কি বলিব। গাইব তোমার গুণ যত কাল জীব॥ যাহ স্থা নিজ রাজ্যে কর্হগমন। এত বলি উভয়ে করিল আলিঙ্গন॥ সার্থি করিয়া আরু কোশালার রায়। তাপনার রাজ্য গেল লইয়া বিদায়॥ তবে নল নরপতি খখরে কহিয়া। নিষধ রাজ্যেতে গেল কত দৈনা লৈয়া। এক রথ ফোল হাতী পঞাশ তুরঙ্গ। ছয় শত পদাতিক নৃপতির সহ।। নিজ রাজ্যে আইলেন নল নরপতি। পুষকরের নিকটে গেলেন শীঘুগতি॥ পৃফেরে বলিল হোরে মর্ম রাজ্য দিয়া। অর্থেয় গেলাম আমি দেবনে হারিয়া। পুনঃ তব সহিত খেলিব একহার। আপনার আত্মা পণ করিব এবার॥ জিনিলে তোমার আত্মা হইবে আমার। হারিলে আমার আত্মা হইবে ডোমার॥ দাতক্রীড়া করিব আনহ পাশা সারি। নহিলে উচহ শীঘু ধনুঃশর ধরি।। নলের বচন শুনি পুফকর হাসিয়া। বলে বড় ভাগা মানি ভোমারে নেথিয়া॥

দমরন্তী সহ তুমি প্রবেশিলা বনে।
এই তাপ অনুক্ষণ জাগে মোর মনে॥
দমরন্তী দেবনে না কৈলা রাজা পণ।
আমার বাঞ্চিত বিধি করিল ঘটন॥
এত বলি পুফর আনিল পাশা সারি।
দুই জনে বসিল আপনা পণ করি॥
জিনিল নৃপতি নল হারিল পুফরে।
পুফরে ভাবিল মনে জীবন দুফরে॥
হারিয়া নলের হাতে উদিল জীবন।
পুফরে কম্পিত ভুনু সজ্ল নয়ন॥
ধার্মিক অধ্মান্ডীর্দ দ্রার সাগর।
অনুজে চাহিয়া তবে বলে নৃপবর॥

না ডরিহ পুষকর নাহিক তব দোষ। যতেক করিলা ভাতে নাহি করি রোষ।। কলিতে করিল সব দৈব নিবন্ধন। পূৰ্কামত নিৰ্ভয় থাকহ হৃষ্ট মন॥ এত শুনি করপুটে বলিছে পুফার। उद की हिं घूषि दक दमव देम छ। नह ॥ বহু দোষে দোষী আমি ক্ষমিলা আমারে। তোমার সদৃশ ক্রমা নাহি চরাচরে।। এত বলি প্রণমিয়া পড়িল ধর্ণী। আখাস করিল তারে নল নৃপম্।। পাত্র মিত্রগণ আর নগরের প্রজা। সর্ব লোক আনন্দিত নল হৈল রাজা।। দ্বিজগণে পাঠাইয়া বৈদন্তী আনিল। দীর্ঘকাল মহাস্থে রাজতর করিল।। কত দিনে নরপতি চিন্তি মনে মন। ই দুদেনে রাজ্য ভার করিল অর্পণ।। নিজ পুতে করি রাজানল নরপতি। सर्गटलाटक राम प्रमामीत मरहित। तृहत्म तत्न ताला सनिना मकन। ভোমার অধিক দুঃথ পেয়েছিল নল।। সম্পদ কাহার কভুনাহি রহে চির । হৃদণমাত্র রহে যেন জোয়ারের নীর ॥ আসিতেনা হয় সুথ ঘাইতেনা দুঃখ। সদাকাল সমান ভূঞ্জিবা দুংখ সুখ ॥ পরমার্থ চিন্তা রাজা কর অনুক্ষণ। দৃঃথ দুথ হয় দব কর্মানিবন্ধন।। নলের চরিত্র আরু কলির শাসন। এক মন হইয়া শুনিবে যেই জন।। খণ্ডয়ে বিপদ ভয় স্বরাঞ্চিত পায়। বৎশকৃদ্ধি হয় তার সুখে কাল যায়।। কদাচ কলির বাধা নাহি হয় ভারে। ষতেক সঙ্কট ভয় তাহাহৈতে ভরে॥ ত্র দুঃখ নৃপতি খণিতে অম্প দিনে। এত বলি অক্ষবিদ্যা দিলেন রাজনে।। সভা সভাষিয়ামূনি করিল গমন। প্রণাম করেন তাঁরে ধর্মের নদ্দন।৷ 3 в

SPECIMENS OF HYMNS.

FROM RAM MOHAN RAY'S SELECTION.

কেন সৃজন লয় কারণে ভজ না, হবেনাং জনন মরণ যাহনা। দেখাং সাবধান, ধন জন অভিযান, কুপেতে পতিত হবে মজনা, অজ্ঞলাহতেতে শেষ, বাজিল আশা অশেষ, নির্ণ বিশেষ বোকানা।

> কেমনে ছউবে পার, সংসারপারাবার, বিনা জান তরণী বিবেক বণধার। শুন রে মম মানস, ধীয় কলুব কলশ, কর্ম প্রণে সদাবাধা কর্তেতে হোমার। ঘোরতর মায়াতম, আশা পানে বিষম, প্রাকৃতি তরজে রক্ষে উঠে বাবে বার। নানাভিমানের ধারা, বহে থ্রতর তারা, কাম কোধে লোভ জলচর দুর্নিবার।

আারে মম চিত, এত অনুচিত, নিজ হিতাহিত, বোঝ না। বিষয় আদব, পান দমুদ্বব, প্রমোদ নহে দে যাতনা। ধন জন দর্কা, ঘৌবনের গর্কা, ক্ষণে হবে থর্কা, জান না। আমি বল যাঁরে, না চেন তাঁহারে, মিছা অভিমান কর না।

বিনাশ অজ্ঞান রিপু প্রবোধ আমার।
জানোদয়ে স্থোদয় হইবে অপার।
দেহরথে করি দ্বিতি, জাবাদ্মা তাহাতে রথী, লক্ষ্য কর বাদি প্রতি,
ভয় কি ডোমার।
অখ দশেশ্রিয় ডাতে, মনোরাশ রজ্জু হাতে, নিবার বিষয় পথে,
আশা অনিবার।
বন্ধ বিচারণ বাণ, কর সদা সুসন্ধান, ইথে না পাইবে ত্রাণ,
রিপুকুল আরে।

মনে কর শেষের সে দিন ভয়কর।
আনো বাকা করে কিন্তু হুমিরেরে নিজ্পুর।
মার প্রতি যত মারা, কিবা পুঞ কিবা জামা,
ভার মুখ চায়ে তত চইবে কাতর।
গৃহে হায় হায় শদ, সম্পে যজন স্কর,
দৃষ্টিহীন নাড়ীক্ষীণ হিম কলেবর।
অতএব সাবধান, তাজ দদ অভিমান,
বৈরাগা অভাাস করে সহাতে নিভ্র।

মানিলাম হও তুমি পরম সুন্দর।
গৃহ পূণ ধনে আরে সকাপ্তণে প্রণাকর।
রাখা রাজ্য সুবিস্থার, নানাবিধ পরিবার, অখার্থ গজ লারে,
অতি শোভা কর।
কিন্তু দেবা মনে ভেবেট, কেহ সঙ্গে নাইি যাবে, অবশা ভাজিতে হবে,
কিন্তু দিনাকর।
অত্রব বলি শ্বন, ভাজ দদ্ভ ভ্যোপ্রণ, মনেতে বৈরাগ্য আন,
ভূদে গভা প্রাংপ্র।

্দভভাবে কত রবে হবে সাবধান।
কোন এত ভ্যোগুণ কেন এত অভিযান।
কাম জোব লোভ মোহে, পর্নিন্দা প্রপ্রোতে,
মুগ্ধ হর্যা লিজ দোঘ না কর সঞ্জান।
রোগেতে কাত্র অভি, শোকেতে ব্যাক্স মতি,
অথ্য অমর বলি মনে ভান।
অতএব নমুহও, স্বিন্য বাক্য কও,
অবশ্য মরিবে জানি সভা কর ধান।

কত আর সুখে মুখ নেখিবে নপণে,
এ মুখের পরিণাম বাবেক না ভাব মনে।
শ্যাম কেশ খেত হবে, ক্রমে সব দল সাবে,
গলিত কপোল কওঁ হবে কিছু দিনে।
লোল চর্মা কদাকার, কক কাশ দুর্নিবার,
হস্ত পদ শিরং কম্প ভুাবি কণে কণে।
আতএব ভাল গর্ম, আনিতা জানিবে সর্পা,
দরা জাবে নমুভাবে, ভাব সভা নির্দ্ধনে।
ব ৪ ৪

নির্শ্বন নিরাকার করহ করে।

কি জানি প্রাণ বিহল পলাবে কথান।
আবে অভাজন সূথো, কুপিত ফণি সমূথে, করেছ শায়ন।
সুথ মানিত্তেছ যারে সে সব সমুণা, সুধা ভূমে বিষ পান করোনাহ।
কৌমারে মতকরি তুলা মনে, ধৈয়া আদি সতা গণে, কর ছে বলান।
থোলাতে কাল করিলে যাপান, কাম রুসে রুসোলাসে ভূষিলে গৌবন।
জারাতে দুঃখা বিপুল, আবি ব্যাধি স্মাকুল, কোণা মত্যে মন।।

নানা পক্ষী এক স্কে, নিশিতে বিহরে দুখে, প্রভাত হউলে দবে দশ দিগে যান। তেমাউ জানিবে দব, অমাত্য বকু বারব, দমরে পলাবে ভারা কে করে বারণ।

নিজ গুামে পরগৃহে চোর প্রবেশিলে মন, লোক শুনে শভবনে দল ভয়ে ভীত হন। নবরার দেহপুরে, কালরূপী তন্তরে, প্রতিদিন আয়ু হরে, নাহি অন্থেষণ। মোহ রাত্রি তমঘন, মায়ানিদুা প্রাণিগণ, প্রহরী নাহিক কোন, কে করে বারণ। শুন মন অভঃপরে, জান অসি করে ধরে, জাণিয়া কৃতান্ত চোরে, কর নিবারণ।

চপল চঞ্চল আযু যায় প্রতিক্ষণ, পরাগুভাগ যেমন জলের গমন।
বিষয়ের সুথোদয়, দকলি অনিতাময়, যেমন বিবিধ রচনায়,
দেখে সুষপন।
ইহা দেখে মন আমার, তাজ আশা অহকার, দদা কর সুবিচার,
মন্ই শ্রিষ দমন।
বিবেক বৈরাগ্য দয়, আত্মজানের দহায়, ভাব চিদানক্ষয়,
দকল কারণ।

SPECIMENS

OI THE

PERIODICAL LITERATURE OF THE DAY.

I .- SECULAR.

(FROM THE PURNACHANDRODAY NEWSPAPER.)

April 19th, 1847.

আমরা আহ্লাদপুর্মক পাঠকনগকে জাপন করিছেছি যে এছয়গর্ম বছরাজার নিরামি অক্ষাদির প্রাচীন মিত্র বিজ্ঞার জিলুক বাবু হৈছন।চরণ অধিকারি মহাশার কর্তৃক সংবাদ জানাঞ্জন নামক ইংরাজা ও রাজালা উভয় ভাষায় ভাষিত পূর্ম প্রকাশিত রাজাল স্পেক্টেটরের নাায় অন্ট পৃষ্ঠ পরিমিত এক সাপ্তাহিক সমাচারপরের আদশ প্রকাশিত ইয়াছে। তদেক প্রস্তু আমংসমীপে প্রেরিত হইয়াছিল, তৎপাঠে আমরা পর্ম সন্তুষ্ট ইলাম, যেহেতুক উভয় ভাষার অনুবাদে যে প্রকার ঐক্য রাথিয়াছেন ইহা অপ্প পরিশ্রমের কর্মা নহে, প্রস্তাব এবং রচনাও উত্তম হইয়াছে। অতএব ভর্মা করি যে ইংরাজী বাঙ্গালার প্রকাশিত সমাচার দর্পণ, সংবাদ সার্মংগুহ, জানাম্বেণ, বিজ্ঞানসেবি, সংবাদ সামাচার দর্পণ, সংবাদ সার্মংগুহ, জানাম্বেণ, বিজ্ঞানসেবি, সংবাদ সামাচার, বাঙ্গাল স্পেক্টেটর এবং ইরেপ্রেলিই প্রভৃতি যে কএক পত্র প্রচলিত ছিল ভাষা সমুদ্রই রহিত হওয়াতে সেই সকল পত্রের অন্তাবজন্য অক্ষাদির অন্তক্ষেরণে যে ক্ষোভ ছিল, এক্ষণে সংবাদ জ্যানাঞ্জন প্রকাশ হওয়াতে সে ক্ষোভ নিবারণের সভাবনা।

এক্সনে অস্থাদেশীয়দিগের পক্ষে ইৎরাজী ও বাঙ্গালা ভাষায় ঐ প্রকার এক সমাচারপত্তের যে আবশ্যক ছিল ভাষা এই নবীন পত্তের দ্বারা সম্পন্ন হইতে পারে; অতএব কি ইৎলণীয় কি এতদেশীয় ধনেশ ও বিদেশস্থ মহাশয়দিগকে অনুরোধ করিতেছি যে সকলে ওণিগুছোঁ হইয়া উভয় ভাষায় ভাষিত এই নবীন পত্তের প্রতি য়েহ রাগিয়া আপন ২ সৌজনাতা প্রকাশ করিতে তুটিনা করেন, যেহেতুক এবস্পুকার সমাচার পত্ত প্রচলিত থাকিলে দেশের মহোপকার সন্থাবনা।

এতদেশের বাণিষ্কার্দ্ধিলনা বৃটিদ গবর্ণমেট বিভিত্রপ মতন প্রকাশ করাতে দাধারণের পক্ষে অশেষ প্রকার উপকারের দয়াবনা হট্যাতে, এ কথা অবশ্য দ্বীকার করিতে হইবেক,কার্ণ বাণিজ্যের প্রভ্রতাদ্বার।

দেশের মূখ সৌভাগ্য বৃদ্ধি হয় এবং তদুপলক্ষে নানাদিগ্দেশীয় আচার ন্যবহার অবগত হওয়াতে কুংদিত ও কদর্য্য রীজিনীতির পরিবন্তন পুর্মক সভ্যতা হউতে পারে, ইহার প্রমাণ বহুতর প্রাচীন নেশের ইভিহাস পাঠ করিলেই দপফীরূপে প্রতীতিগোচর হয়, অথাৎ টায়র কারথেজ ও কৃম ইতাদি দেশ সকল বাণিজোঁর দারা সৌভাগ্যান্তিত ও এখর্মশালী হইয়া-ছিল, এবং বর্ত্মান সময়েও ইংলও রাজ্য তদ্বারাই মহাসমৃদ্ধিযুক্ত হইয়া দেদীপ্রমান। ঐ স্থানের লোকেরা পুর্টেষ অসভ্যাবস্থায় মগ্ন ছিলেন, কেবল বন্য পশু বধ করিয়া ত্মাৎসাহারে জীবন ধারণ ও তচ্চর্মা পরিধান পুর্বক সামান্য তৃণাচ্ছাদিত গৃহে বাস করত কালক্ষেপ করিতেন; পরে তাঁহাদের সৌভাগ্য উদিত চউলে রুম দেশীয় লোকেরা বাহুবলে তদ্দেশ জয় করিলে দেখানে তাহাদের স্বদেশীয় শিপ্প ও পদাথি ও আর > বিদ্যা ক্রমশ ব্যাপ্ত হইতে লাগিল ; সূত্রা৲ ঐ অসভ্য দেশীয়েরাও ক্রমেং ভাষাতে শিক্ষিত হইয়া নানা প্রকার সন্তাবহার করাতে স্থাপন করিয়া জয়কারিদের দৃষ্টানুদারে মদেশে বাণিজ্য বিস্তুকরিলেন, এবৎ ক্রমে ২ অমত্য ব্যবহার পরিহারান্তর বিলক্ষণ সুমত্য হইলেন। এক্ষণে ঘাঁহারা বৃদ্ধি ও পরাক্রম কৌশলে পৃথিবীর অনেকা৲শের উঠারা রাজ্য অধিকার করিয়া একাধিপতা করিতেছেন এবং যাঁহাদিগের বাণিজ্যের জাহাজ পৃথিৱীর সকল দেশ পরিভূমণ করিতেছে, পূর্বে যে ইৎলও রাজ্য বনসম ছিল এক্ষণে দেই দেশ বাণিজ্যপ্রভাবে মর্গতুলা হইয়াছে, তত্তম্ প্রজারা এক স্থানে অবস্থান পূর্ব্বক সকল দেশীয় সকল প্রকার মনুষ্যের পরিপ্রম-জাত দুব্য অনায়াদে দদ্ভোগ করিতেছেন, এবৎ তথাকার রাজকার্য্যের অব্যক্ষ মহাশয়েরা বাণিজ্যের উরতিজন্য এমত যতনবান হটয়াছেন যে ২ উপায়দারা তাহার উপকার দর্শে তাহাতেই সম্পূর্ণরূপে মনোযোগ করিয়া থাকেন, এ নিমিত্তে দাধারণ লোকেরাও বাণিজ্য বিষয়ে দিন ২ অনুরাগ-যুক্ত হইতেছেন। তাঁহারা দূরস্থ দেশ সকলের বাণিজ্য ফলভোগ করিবার নিমিত্ত বাসপীয় জাহাজ প্রস্তুত করিয়া অত্যন্ত ব্যবহিত দেশকে নিকট্ড করিয়াছেন এবৎ বাদপীয় শক্ট গমনাগমন জন্য ছদেশের নানা স্থানে রেইলরোড অর্থাৎ লৌহময় বর্জ প্রশুত করিয়াছেন, তাহাতেই বা ক্ত উপকার দর্শিতেছে। এতদেশীয় লোকেরা প্রায় এক শত বৎসর গত হইল ইৎরাজদিগের রাজশাসনের অধীন হইয়া তাঁহাদিগের রাতিনীতি অবলোকন করিতেছেন, তথাচ এথানকার অত্যাপাৎশ লোক ব্যতীত অনেকে ঐ বাণিজ্যের মর্মা অবগত ছইতে পারিলেন না, যেহেতু প্রত্যক্ষ দেখা ঘাইতেছে যে অনেকে নিজ অর্থ দিয়াও অন্যের অধীনে কাম্য করিতে চাছেন, তথাচ স্বয়ৎ বাণিজ্যে প্রবৃত্ত হয়েন না, ফলতঃ বাণিজ্য বিষয়ে হস্তক্ষেপ করণ কালীন ওাঁহাদের অন্তঃকরণে অলাভের অণ্ডে আশক। হয়, সূতরা২ তাহাতে সাহদ করিতে পারেন না।ইৎলঙার

লোকের। এইজেশীয় মনুষ্যদিগের এই স্থভার সন্দশন করিয়াই আপেন ২ মৌভাগোর বিলক্ষণ সদুপায় নিরূপণ করিয়াছেন।

আমরা সদি স্কার্কপে স্বদেশীয় মনুষ্যদিবের স্থভাব বিবেচনা করি, ভবে আমাদিবের এতাবন্ধাত বোধ হইতে পারে যে এতদেশীয় মনুবেরার বহুকালাবি পরাধীনতাবন্ধায় অবস্থান করাতে এবং জাতি-ভুন্টাশল্পা প্রসূক্ত জাহাজারোচণ পুর্বক দ্বীপ দ্বীপান্থরে গমনের প্রথা দেশমধ্যে রহিত হওযাতে লতাকর বানিজ্যকায়ে এরূপ আনুরাগ বিনফ হইয়াছে অতএব যাহাতে এমগন্ত প্রতিষ্কৃক মনুলে নির্ভূল এমত সদুপায় নিরূপণ যব্বধি এতদেশের লোকেরা না করিবেন তদ্বধি বাণিজ্যদ্বারা অন্যান্য দেশের ন্যায় এখানকার সৌভাগ্য ও এখন্য বৃদ্ধির প্রত্যাশা করা যাইতে পারে না।

April 20th, 1817.

আমাদিগের গবর্ণমেণ্ট এত্দুাজ্যন্থ প্রজাপুঞ্জের হিতার্থ বিবিধ বিদ্যালয় স্থাপিত করাতে দেশের অধিকাৎশ লোক পূর্স্তন ঘবন রাজাধিকারের সময়াপেকলা বর্তমান কালে হাং মূখতার বিরহিত হইয়া জানদ্ফিটি লাভ করিতেছেন, ইহাতে আমরা দর্ঝদা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ পুরঃদর মহামহিম ইৎরাজ রাজাদিগের ধন্যবাদ করি। কিন্তু দুংখের বিষয় এই যে সৌ-किक विमा लोकिकार्थ्व माधन रहेटल 3 उँ। रापन मानीय विमा निकाय কাহারো লোক্যাতা নির্বাহের সাক্ষাৎ কার্ণ হইতে পারিল না, কেন্না বিদ্যাধ্যাপনীয় সমাজের অধীনে যত বিদ্যালয় ও পাঠশালা রহিয়াছে দে দকল স্থানে ব্যুৎপাদক বিদ্যা ও দর্শনবিদ্যা ব্যতীত অর্থকরী শিল্প বিদ্যা শিক্ষার কোন নিয়ম নাই, এই কারণে ইৎরার্জা বিদ্যালয়ে অতিদ্-শিক্ষিত হটয়া কটিন ২ পরীক্ষোতীর্ণ ব্যক্তিরাও জাবিকা করণে প্রবৃত্ত হইয়া শিক্ষকতা কার্য্য ভিন্ন অন্যান্য বৈষ্যিক ব্যাপারে প্রায় পার্গতা দেখাইতে পারেন না, এবং অনেকে জাবিকার উপায় সৃজনে মহাভার-গৃত্ত হয়েন, ফলে এদেশে এক্ষণে ইংরাজী বিদ্যাকে অর্থকরী দেখিয়া স প্রায় সর্বজাতীয় লোকেরি ঐ বিদ্যা শিক্ষা বিষয়ে মহাঅনুরাগ জন্মিয়াছে এবং অসংখ্যক লোকে তাহা শিক্ষাও করিতেছে, ইহারা যদি জীবিকা निकाटा भर्याति कान विमार अविठित ना इडेन उरव किवन गुर्शिह শাস্ত্র পণ্ডিত ও ক্ষেত্র তত্তাদি দর্শন বিদ্যায় পারদর্শা হাইয়া তাবতে কি উপায়াবলম্বনে জীবিকা নির্দ্রাহ করিবে ৈ গবর্ণমেণ্টের অথবা দাধারণ কর্মালয়ের কর্মকারী ছইয়া সকলে জীবিকা করিতে পারে না, অভএব বছকালাব্ধি প্রায় তাবং প্রকাশ্য পত্রে এ বিবয়ের আন্দোলন প্রদঙ্গে

কত বার কত প্রকার অনুরোধ প্রকাশ হইয়াছে যে বিদ্যাধ্যাপনীয় সমাজের বিদ্যালয়ে জীবিকা নির্দাহোপ্যোগি শিশ্পাদি বিদ্যা শিক্ষাদানে প্রথা হয়, কিন্তু তাহাতে এতাবৎ কালপ্য্যন্ত মনোযোগের কোন চিক্ষ্ প্রকাশ পাইল না। প্রন্তু গ্রণ্মেন্ট যদব্ধি তাহা না করিবেন তদবধি তাহাদের বিদ্যাদান প্রজাজনের পক্ষে সাক্ষাৎ উপকারি হইবেক না, অত্এব তাহায়া এতদ্বিয়ে দুক্পাত করিলে ভাল হয়।

আকুল রাজধানী।

অন্নদের কোন প্রামাণিক বরুদারাবগতি হইল যে গত ১৭৬৮ শাকীয় টেড্রীয় ৩১ দিবদে মহাবিধুব স৲ক্রমে রজনীযোগে আকুলাদ্যধিপতি জ্মিমহারাজ রাজনারায়ণ রায বাহাদুরীয় রাজধানী আন্দুলে নৃপনিকে-তনে পৃধা প্রতিষ্ঠি জীলী অন্নপূর্ণ। মহাদেতীর প্রতিষ্ঠা দিন নিবন্ধন তক্ম-হোৎসবীয় নৃত্য গীত বাদ্যীয় সভা হইয়াছিল। প্রথমতঃ আনন্দধাম নাম প্রাদাদ অতি মূচাক্তরপে আলোকময় পৃষ্টে দিদৃক্রণণের আনন্দৃদ্ হয়, এবং সুসজ্জী গৃত দখায়মান সিপাহী শ্রেণী তথা আশা সোটা বলম-ধারি রাজভ্তাগণে উক্ত প্রাদাদের নাট মন্দিরের চহুঃপার্শে অতি শোভা হইয়াছিল। ইহাতে আহ্বানিত এতদেশীয় প্রধান ২ ব্যক্তিগণ তথা ভিন্ন-দেশীয় এবৎ ইৎলণ্ডীয় প্রধান ২ সাহেবরণ অনেকে আগমন করত ভৌৰ্যাত্ৰিকীয় সভাসন্দশনে অত্যন্তম ভোজন গুৰুণে রাজ সম্ভাষণে প্রমোদ মনে স্থানিকেতনে গমন করেন, এবং গ্রীমন্মহারাজের কোমলস্বাভাবিক শিফীচারে তত্ততা আমত্রিত জনগণের সম্যোষদারা জীমন্পতি ধনাবাদিত হয়েন। কথিত আছে যে যদিন্যাৎ এই সভায় যাদৃশ বহুদৎখ্যক ব্যক্তি-গণের আগমনের প্রত্যাশা ছিল, তাদৃশ দৈব দুর্ঘোগ বৃষ্টি এবং প্রবল বাযুজন্য আগমন করিতে সক্ষম হয়েন নাই, ত্তাপি নাট্য মন্দির আহ্বা-নিত জনগণে পরিপুরিত ছিল।

April 21st, 1847.

এতদেশে যবনাধিকার হওয়া অবধি এখানকার প্রাচীন শান্ত সকলের যে উচ্ছেদ ঘটিয়াছে তাহার আর পুনরুদ্ধার হইল না, ইংরাজ গবর্ণমেণ্ট রাজনীতির প্রকৃত মর্য্যাদানুসারে বর্ত্তমান সময়ে এ দেশের শাসন করিতেছেন, তাহাতে প্রজাদের ধর্মবিষয়ে প্রকাশ্যরূপ রাজকৃত উপদোহ নাই, বর্থ ভাঁহারা বিদ্যানুরাগা ও সভ্য প্রসুক্ত প্রজাদের জাতীয় বিদ্যার প্রতি আদর প্রকাশ করাতে তদ্বিয়ে অনুকুল এমত বোধ হয়। এদেশের প্রাচীন

বিদার গুদ্দ দকল পুনকৃদ্ধ হইল না, কি অশুভক্ষণে শিক্ষা সমাজহইতে এখানকার শাস্ত্র ও প্রাচীন পৃদ্ধকাদি মুদ্দান্ধনের ভার আকৃষ্ট ইইয়া এমিয়াটীক সোদাইটীর প্রতি দত ইইয়াছে। যে তদবধি গবণ্মেণ্ট এদেশের প্রাচীন বিদ্যার বিবিধ পৃশ্বক মুদ্দান্ধনরার শ্বামিত্র করণার্থ মাদে ২ পঞ্চশত মুদ্দা প্রদান করিয়াও ভদ্বিয় সম্পন্ধ করিছে পারিলেন না। কএক বংসর গত ইইল উক্ত দোদাইটীর অধ্যক্ষদিগের বিদ্যানুরাগি কঙিপর মহায়া ঐ বিষয়ে উংসাহী ইইয়াছিলেন, এবং গবণ্মেণ্ট যে অভিপ্রায়ে উক্ত সমাজের সাহায়্য করিছেছেন ভাহার সম্পন্ধ করিছে উদ্দ্যাগি হয়েন; কিন্তু দেশের দুর্ভাগ্য সম্পন্ধ হয়ের উদ্দ্যাগি হয়েন; কিন্তু দেশের দুর্ভাগ্য সম্পন্ধ রাজাদের ত্রাহার এবাবংকালপায়ে কেবল সূচনাতেই রহিয়াছে। অভএব মথন রাজোদ্যোগের এদেশের প্রাচীন বিদ্যার পুনকৃদ্ধার ইইল না, তথন প্রজাদের ক্ষমতায় যে ভাহার দীপ্রি পূর্মবং প্রজনলিছ ইইয়া উঠিবে এমত সদ্দের সোধ হয় না। ওবে এসিয়াটীক সোসাইটীর অধ্যক্ষণ গ্রণমেণ্টইইছে সাহাধ্য প্রাপ্ত ইইয়া সমাজকে জ্বীবিত রাথিয়াছেন, ভাহারা যদি কালক্রমে আপনাদের মহল সফল করেন ভবে বলা যায় না।

April 22nd, 1847.

ত্রিপুরার পত্তে অবগতি হইল যে কুমিল্যা সহরে গত টৈতে মাধাবধি ওলাউটা রোগের অত্যত্থ প্রাদুভাব ছইয়াছে, হাছাতে প্রায় প্রতি দিবদ ত । ৪০ বাক্তির প্রাণবিরোগ হইতেছে, ইছাতে নগর্মধ্যে রোদনধ্বনি ভিন্ন আর কিছুই শতিগোচর হয় না, এবং তএও রাজক্মচারী ও অন্যান্য সাহেবেরা নগর পরিহ্যাগ করিয়া ময়নামতি নামক প্রতি গমন করিয়াছেন। তথাকার বায়ু অতি উত্তম, এনিমিত কুমিল্যাবাসী ইংরাজেরা পীড়িভ হইলেই ময়নামতিতে গিয়া বাস করেন, কিন্তু প্রজাদিগের ঐ রোগ নিবারণের নিমিত কোন উপায় করেন না। অতএব ঐ সংকীণ জিলাতে প্রতাহ ইয়ত সংখ্যা পরিমিত মনুষ্যের প্রাণহানি হইলে প্রায় মনুষ্য রহিতের সভাবনা।

রায় রাজা দীতানাথ বাহাদুর।

উক্ত রাজা বাহাদুর গত কুধবারে ওঁহোর মাতুলের আজোপলক্ষে ব্রাজাণ পণ্ডিছগণকে অনেক টাকা বিতরণ করিয়াছেন, এবং কাঞালি বিদায়ের বিষয়েও জুটি করেন নাই, ভাহাও উত্তম হইয়াছে। অতএব রাজা বাহা-দ্বের একপ্রদ্বায় দশনে সকলেই তাঁহার ধনাবাদ করিতেছেন।

April 23rd, 1847.

মৃত মেকনাটন সাহেবের স্মরণার্থে এক ঘাট নির্মাণ হইবার কম্পনা वस्कालाविध स्टेट्डस्, किन्छ अव्यक्तभीय महामग्रमित्तव से घाटित सान নিরপণে ভিরং মত প্রযুক্ত অদ্যাপি তাহা সিদ্ধ হইল না; যাঁহারা উক্ত মহাত্মার প্রান্তি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিবার নিমিত ৰ ২ শক্তানুসারে সাহায্য कतिशारक्षत, उाँचादा श्राप्त मर्यामा जे कार्याद व्यश्च प्रवासम्मित्रक সত্তর কর্ণ মানদে কালবিলম্বোপলক্ষে অত্যন্ত বৈর্ক্তি প্রকাশ করিয়া थाटकन, बत र बे खत्नीय की विंद्य अटमान्य अवनान दिन मुख्यादन उपाय হওয়াতে মহোপকার সম্ভাতনা হেতৃ প্রকাশ্য পত্রেও মধ্যে ২ ঐ বিষয়ের আন্দোলন হয়; তথাচ অধ্যক্ষণণের অরা দেখা যায় না, ফলতঃ সমুদায় প্রস্তুত হইলেও কৃতজ্ঞতা প্রাপণের যোগ্যপাত্তের চির্মার্ণার্থ দেশোপ-কারিণী না হওয়াতে সকল লোকে অপ্রসন্ধান সম্ভাব্য বটে। অভএব যাঁহারা ঐ কীর্ষিশাপনের ভার গৃহণ করিয়াছেন ভাঁহাদের স্থান নিণ্যে मीघ् बेक्यजातलयन कता উচिত। अहे नगरतत हिन्दू भली काछिनीघ, তথাকার যাবদীয় নারীগণের গঙ্গাল্লান ৫।৬ টা ঘাট ব্যভীত সুসম্পন্ন **इडेंट्ड शाद्य ना, प्रकनाउँन मार्ट्टिंग् अव्यक्ति को विश्वतं श**ार्टे जाहा निम्मान हहेतात महातमा, कि अधिका॰ म्यातमा **मिथियारे डाहा कतिरंड हरेराक। चाउंधर उंक विषयात जाराक्राश्रक** चानुरहाध कति डाँहाहा अविषया नीयु अकमछाविनम् करून।

আমাদিগের অরণ হয় টাকশালের পুর্বতন অধ্যক্ষ ক্রেম্ন প্রিপ্রকল সাহেব যৎকালীন ঐ স্থানের সল্লিখানে বসতি করিতেন তথান ওঁছার ধনবারী ধর্মিষ্ঠা বনিতা ভল্লিকট্ম গঙ্গাতীরে এখানকার বহু অবলার গঙ্গায়ানের সুবিধা নিমিষ্ট ঐ স্থানে এক ঘাট প্রস্তুত করিয়া দিয়াছিলেন, ভাহাতে ভলু লোকের অসংখ্য মারীগণ লান করিতেন। এক্ষণে গেই মহান্মার প্রলাক প্রয়াণে ভদীয় বনিতার বদেশ প্রস্থানন্দান ঐ ঘাটের ভাদৃক রক্ষণাবেক্ষণ হয় না, এবং তাহা সম্পূর্ণরূপে ইফুক নির্মিত্ত নহে, ইহাতে ঐ ঘাটে অবগাহনকারিণী অনেক প্রীলোকের পক্ষে এক্ষণে ভাদৃক বক্ষদ্ম মানের ব্যাঘাত হয়য়া থাকিবেক, অতএব ঐ খানের নিকট্বর্ধি প্রদেশে মেকনাটনের ক্ষরণার্থে প্রী লোকের মানীয় ঘাট করাই প্রাম্প্রিছ।

रेमनिक मश्वाम।

বিপদ ঘটনা। ১১ এপ্রেল দিবসীয় দিল্লী গেলেটের অভিরেক প^{রিকা} দারা অবগতি হইল যে লখুনৌ নগরে পুনর্কার আর এক ভয়কর ব্যা^{পার} घটना इडेशाएड, डिन्टिंग्य এই यে अड १ এপ্রেस প্রাতে सर्गतीत तान-শাহের বর্তমান মন্ত্রী নবাব আমিনোন্দৌলা শকটারোহণে নগর ভুমণে বাটীহউতে বহিন্ত হউয়াছিলেন, এমত কালে ছয় জন আফগানীয় পাঠানজাতি যাহারা ইতিপূর্কে বাদশাহের দৈনাদলে ভুক্ত ছিল, ভাহারা পথিমধ্যে তাহার প্রতি আক্রমণ করিয়া গুলি চালাইয়া প্রথমত উরুদেশ ভঙ্গ করিয়া দেয়, পরে গাড়িছ ইতে নামাইয়া পৃষ্ঠোপরি অক্সাঘাত করিয়া একটা কুঠীরের মধ্যে তাঁহাকে আটক রাখে; দুই ব্যক্তি তাঁহার উদর ও গলদেশের উপরে মুক্তকোষ কর্বাল ধরিয়া রহিল, ও দারে চারি জান আব্র লাইয়া দণ্ডায়মান থাকিল, এমত কালে দৎবাদ পাইয়া বৃটিদ রেসিডেণ্ট প্রীযুক্ত কর্ণেল রিচমণ্ড সাহের কএক জন ইৎরাজ সমভিব্যাহারে लहेशा के श्वात उनिश्चित रामन, श्रीवामिनाक नाहात्मत्रा कविन य उम्रीद्वत স্থানে পাঠান দৈন্যের পঞ্চাশ হাজার টাকা বেতন বাকী, আমরা ভাহারি নিমিত্ত গাঁহার পথ রোধ করাতে তিনি ও তাঁহার সংয়ারেরা আমাদিনকে অন্ত্রে অক্স আঘাত করিয়াছে, একারণ আমরাও উচিত ফলদান করিয়াও দয়া প্রবাক তাঁহাকে এপর্যান্ত জীবিত রাখিয়াছি, যদি বলক্রমে তাঁহাকে লইতে উপস্থিত হয়েন, তবে অন্তে তাঁহার প্রাণ নম্ট করিয়া পরে আপ-নারাও মরিব; কিন্তু যদি সম্প্রীতি রূপে লইতে চাহেন, তবে আমাদিগকে উक छाका मिवात ও প্রাণরক্ষা করিবার বিষয়ে নবাব ও রেসিডেণ্ট সাছেব সত্য অঙ্গাকার করুন। তদনম্বর আত্মপ্রাণ রক্ষার্থ নবাব শপথ পুর্ব্বক উক্ত উত্তয় বিষয় স্থাকার করিলেন, এবৎ বৃটিন রেনিডেণ্ট দাহেব নবাবের প্রতিভ্রমপ হইয়া তাঁহাকে আপন আলয়ে আনয়ন করিয়া চিকিৎসক নিযুক্ত করিয়া দিলেন, পরন্ত নবাব অবিলয়ে নিজালয়হইঙে পঞ্চাশ সহসু টাকা আনাইয়া ঘাতকদিগকে দিয়াছেন; তাহারা অর্থ সহিত रतिमारिक को नारत न सत्रवनित आरक्षः, अहे विवास न वास्त्रत पृष्टे अन ভূত্য বিন্ফ ছইয়াছে। ইতিপূর্বে এক জন রাজপুত জমীদার বাদশাহকে বিনাশার্থ ঋড়গহন্তে বাদশাহের দারে উপস্থিত হইয়া কএক জন ভৃত্যকে বিনাশ করিয়া পরিণামে আপনিও মরিয়াছে।

বছৰাক্সাৰে চুৱি। অবগতি হইল যে বড়বাজারন্থ এক জন মহাজনের গৃহছইতে ভদ্ধরেরা বিএশতি সহসু মূলুরে ব্যাক্ত নোট চুরি করিয়াছে। অনেকালুসভানেও ভদ্ধর পৃত হয় নাই, একারণ ঐ মহাজন ব্যাক্তে গমন পূর্বাক ঐ ক্ষত লোটের নশ্বর লেখাইয়া দিয়াছে, এবং গবর্ণমেণ্টে দর্শাক্ত করিয়া মফঃসল জিলার মধ্যে নোটের নশ্বর পাটাইবার উদ্যোগ করিবেতে

April 24th, 1847.

আমাদিনের গ্রহণ্মেণ্ট রাজ্ঞধানীর অবস্থা শোধন করিতে যে ২ উপায় দ্বি অথবা কম্পনা করিলেন কিছতেই দুফল ছইল না, নগরের শানি রক্ষার নিমিত্ত পোলিসের প্রাচীন প্রথা পরিবর্তিত হইয়া নতন বন্দোবস্ত হইল, ভাহাতে যথন ইউরোপীয় ইনদেশক্টর ও অম্বধারী প্রহরী নিযুক্ত হয়, তথন বোধ হইয়াছিল যে ইহাঁদিলের প্রবল শাসনে রাজধানী চৌর দসূরে উপদূব ও অন্যান্য উৎপাত্হইতে একেবারে নিফক্তি পাইলেন। কিন্ত ফলে পুর্রাপেক্ষা শান্তির আধিকা কিছুই দেখা যায় না। অপর পূর্বে এমত শুনা গিয়াছিল যে কি প্রকাশ্য অপ্রকাশ্য তাবৎ পথে বিশেষতঃ গলি ঘুঁজিতে প্রহরিরা অফী প্রহর কেবল দ্ঞায়মান হইরা ভাজাবধারণ পূর্বক ভূমণ করিয়া বেড়াইবে, পরন্ত এক্ষণে যদিও প্রকাশ্য वाक्षवरको अवश अन्यान्य स्थात मितरम विरमय পविष्क्षनथावि अकर सन প্রহরি দেখিতে পাওয়া যায়, অথাচ রজনী ভাগে ক্ষু অথবা দল্পীণ পথে তাহারা প্রায় দৃষ্টিগোচর হয় না, সূতরাৎ দুফ্কর্মকারিদের পরামশ বা উদ্যোগের স্থান পুরাবং অর্কিত অবস্থাতে থাকাতে যে অঞ্চল এরূপ গলি ঘঁলি অধিক দেখানে অহরহই অভ্যাচার ঘটিভেছে। অভএব চৌর দৃদ্য দুমন সংক্রান্ত শান্তি রক্ষার বিষয়ে কোন ফলই জালো নাই। ভবে প্রবাপেক্ষা এই বিষয়ে কিঞিৎ উপকার দেখা যায় যে অর্গে মাতালেরা মত চইয়া পথিমধ্যে পড়িয়া ক্লেশ পাইত, এক্লণে রাস্তায় পড়িলে প্রহরিরা সারজন সাহেবদের ফৌদন ঘরে লইয়া রাখে, কিন্ড মাতালদের ভারা যে দৌরাত্মা সম্ভব তাহার কিছুই নিবারণ হয় নাই। পাঁচ সাত জন মাতাল মদাপান করিয়া পথে না পড়িয়া যদি অত্যাচার করে, ভবে প্রহরিগণহটতে ভাহার কিছুই প্রতীকার হয় না; সূতরাৎ কি প্রকারে কহা ঘাইবে যে শান্তির বৃদ্ধি হইয়াছে? অপর নগর পরিফার ও রাজবর্জে জলদেচনাদি বারা ধূলি নিবারণ ও আলোক প্রদান দাবা অদ্ধকার নিশাভাগে পথিক জনের ক্লেশ বার্ণ ইত্যাদি কার্য্য বর্ত্তমান নিয়মাপেকা উত্যক্তপে করিবেন, এনিমিত রাজধানীস্থান বাহনাদির উপর কর যোজন প্রংসর তদিষয়ের সদৃপায় করিতে এক আইনের পাওলিপি প্রকাশ করিলেন, কিন্তু সে বিষয়ও প্রায় বৎসরাভীত কালপর্যান্ত কেবল কম্পনার অবস্থাতেই রহিয়াছে; অন্তএব কি প্রকারে কহিব যে রাজধানীর শান্তিও জীবৃদ্ধির নিমিত্ত গ্রণমেণ্টের ঘতন সম্যক্ ক্ৰে সফল হইল?

II .- PHILOSOPHICAL.

(From the Satyasancharini Patrika.)

1.—A Discourse on Death.

মৃত্যু, যাহা বলিলে আবোল বৃদ্ধ সকল মনুষ্ট বুঝিছে পারেন, কি জ মৃত্যু কি, ইহা জিজাদা করিলে প্রায় অনেকেই স্বরূপাথ প্রকাশ করিতে ক্ষমতাবান্ হয়েন না, শাস্ত্রে ইহাকে দুই প্রকারে বিভক্ত করেন, অর্থাৎ মৃত্যুকে নির্মাণ এবং প্রজ্জন, এই দুই প্রকার শাল্পে বলিয়াছেন, এবং মনুষ্য সকলকেও ঐ শান্তের মহানুষারে দুই প্রকার ভিন্ন ২ মহাবলন্দি দেশা যাইতেছে। আশ্চন্য এই যে বিষয় এক, ভাহাকে কি শ্বজাতীয় কি विखाडोश मकल भनुषाई, ও कि अंडि कि स्मृति, कि स्रकाडीश कि विजाडीश সকল শাস্ত্রেই ভিন্ন ২ মতে প্রচার করতঃ কেবল বিশিষ্টরূপে নিবানের হেডু হইয়া আদিতেছে, এজন্য দাধু ব্যক্তিরাও বথাথক্পে দেই বিষয়কে প্রচার করিবার নিমিত্ত শাস্ত্র সকল রচনা করিয়াজেন, তথাপি তাছার স্বরূপার্থ প্রকৃত প্রকারে দাধারণের বোধাপিলম হয় নাই। এক ২ বিষয়ে প্রাচীন প্রস্পরাক্রমে দাপু তাজিরা লেখনীকে স্ঞালনা কর্তঃ ভাষার দারা মর্মা প্রচার করিলেও যখন ভাহার স্বরূপাথ দাধারণের বিদিত হয় নাই, তথন তাহার প্রতি কারণ বোধ হয় কেবল ভাষার অনা-लाहमा, खाड अव माथात्व मूरताथ महा गर्मार्मरात्त निक हे প्राथना कर्ति, ভাঁছারা প্রস্পরে এক বাক্যভাতে ম্বকীয় ভাষার আলোচনা করুন্, ভাহা হইলেই সকল বিষয়ের মর্ম সম্যকরপে অবপৃত হইবেক। এইক্লে প্রস্তু-বিত বিষয়ের শাস্ত্রদম্ভ মীমাৎদা প্রকাশ করিতে প্রকৃত হউলাম।

প্রথমতঃ, নির্মাণ মৃত্যু অর্থাৎ পুনরায় জন্ম না হওয়াকেই নির্মাণ কহিয়া থাকেন। যে কোন মনুস্য হউন্মরণের পরে দেহ পরিপুহ না হইলেই ওাঁহাকে নির্মাণ মৃত্যু প্রাপ্ত কহা যাইতে পারে, এই নির্মাণ মৃত্যু কালকশতঃ সকল জীবই প্রাপ্ত হইবেক, কারণ জন্ম পূহণ করিলেই মৃত্যু হইবেক ইহা স্বভাবদারা বিলক্ষণরূপে প্রতীতি হইতেছে। যদি কোন ব্যক্তি ইহাতে বিচার করণ নিমিত্ত বিতর্ক করেন, তবে তাহার মীমাংসা করিতে আমরা কোন মতেই শক্ত হই না, কিন্তু শাত্রি যে প্রকারে সিদ্ধান্ত করিয়াছেন তাহাই যে কোন প্রকারে হউক বিবেচনার গোচর করিতে পারি। জনদীশর আমাদিগের সাগের সীমা এই পর্যান্ত প্রদান করিয়াছেন,এজন্য বিচারের মীমাংসা শাত্রের আলোচনা করিলে স্বভাব-

চইতেই হইবেক ইহা পূর্বেই প্রার্থনা ছলে কথিত হইয়াছে। তথাপি এট খানে বিচারের শিক্ষাত জানাইবার নিমিত্ত নবীন সভাধর্ম হরুপ জনদীখরের নির্মাল জানাম্বেষি ব্যক্তিব্যহের প্রতি অনুরোধ করি ওাঁহার। দকল যক্তনযোগে শান্তের আলোচনা করুন, কার্ণ শান্তালোচনা ব্যভীত কোন মতেই যথাথ ধর্মের মর্ম বিদিত হইতে পারে না। যদিও আমরা সংক্ষেপতঃ শান্ত্রের মামাৎসা বাক্য প্রকাশ করিতে পারি, তথাপি শান্ত্রের সমুদায় ভাব ব্যক্ত করণের সহিত সম্বন্ধ কি, অর্থাৎ আমাদিগের দারা যে কোন শাব্র হউক ভাহার সমুদায় মর্মা প্রচার কোন মতেই হইতে পারে না, অভএব সভাধমাবলন্দিনণ যত পরিমাণে শান্তের আলোচনা করিবেন, সেই পরিমাণে তাঁহাদিগের নির্মাল জ্যোতিঃম্বরূপ সভ্যজানের কৃদ্ধি হইতে থাকিবেক। এই ক্ষণে উল্লেখিত বিষয়ের শান্তকৃত মীমাৎসা ষকীয় বোধানুরূপ প্রকাশ করিতে প্রবৃত্ত ছইলাম, এই জন্ম মর্ণরূপ নির্বাণ মৃত্যুকেই ষথার্থতঃ মৃত্যু কহা ঘাইতে পারে, অর্থাৎ মরণের নিমিতই জাব সকলের জনা গৃহীত হইয়াছে, ইহার দৃষ্টাত্তে হিতোপদে-শের এক কবিতা ঝরণ হইল, যথা "কায়ঃ সল্লিহিতোহপায়ঃ সম্পদঃ পদমাপদা । সমাগমাঃ দাপগমা সর্ব্যুৎপাদি ভঙ্গুর । শরীর আসক্ত-মৃত্যু অর্থাৎ শরীর গুহণ করিলে অবশা মৃত্যু হয়, আর সম্পত্তিই বিপত্তির স্থান অর্থাৎ সম্পদ হইলে অবশ্য বিপত্তি হয়, আর ধনাদির সমাগমই অপগম অর্থাৎ ধন সঞ্চিত হইলেই অবশ্য নঠ হয়, এই প্রকার ষাবৎ জন্য বন্ধ দকল নখর।" অতএব এই নির্বাণ মৃত্যুকেই ঘথাথতে। মৃত্যু কহা যাইতে পারে।

বিভীয়তঃ পুনজর্জন অর্থাৎ মরিয়া পুনঃ দেছ ধারণকেই পুনজর্জন কিছিয়াছেন, এই মৃত্যুকে যাথার্থাতো মৃত্যুকছা যাইতে পারে না, শাল্ডেইছাকে তৃণজ্ঞলোকা নাায়েতে কহিয়াছেন, অর্থাৎ ছিনে জোঁক যেমন একটা তৃণ অবলদ্ধন না করিয়া পুর্বাশ্রিত তৃণকে পরিত্যাগ করিছে পারে না, তেমনি সাধারণ জীব সকল্প দেছ পরিবর্তনের নিমিত্ত মরণ ধর্মাবলদ্বী হয়েন, বস্তুজ্ঞ ভাছাকে মরণ কছা যাইতে পারে না, কারণ যখন দেছপরিবর্তের নিমিত্ত জীবের মৃত্যু দেখা যাইতেছে, তখন দিতীয় প্রকার মৃত্যুর প্রেরণা শাল্ডে কেবল সাধারণ বিজ্ঞান বিহীন লোক সকলের জানগম ছগুন নিমিত্ত কহিছাছেন, এবং পুনহুজ্ল যে হয় ইছার প্রমাণ মুখা কটোপনিমদে যাই শ্রুজিং "শস্মামির মর্জাই পাচাতে শস্মমিরাজায়তে পুনঃ। অর্থাৎ শস্মের নাায় এই মর্জাকোক জরা বিশিষ্ট ছইয়া মরে, এবং মরিয়ন্টি শংসার নাায় পুনরায় জন্মগুহণ করে।" এজনা ইছাকে পরিবর্ত্তি সংসার কহিয়া থাকেন, অন্তএব নিশ্রম ছইল যে মৃত্যু কোন মতেই দুই প্রকার নহে, মৃত্যু একই প্রকার, জন্ম মরণকেই অর্থাৎ পন-ছর্জন না হওয়াকেই যথাতথ্য মৃত্যু শক্ষে কহা যায়, এবং ইছাকেই

মতান্তরে মুক্তি শব্দে কহিয়াছেন, অংথাৎ দেহ নাশের পরেই মুক্তি হয় যে কহিয়াছেন, যে যথার্থ মৃত্যু অভিপ্রায়েই কহিয়াছেন।

মৃত্যুর নাম শুনিলে ভাবি পুনর্জন্মশালি লোক সকল অত্যন্ত ভীত চয়েন। যেমন দৃষ্ণপোষ্য বালক দকল অন্ধকারময় গৃহ দর্শন করিতে আতক্ষ প্রাপ্ত इश, उपनि मामाना मनुषा मकल मत्राव প্রাক্কালপর্যান্ত মৃত্যনাম অবেণে সশক্ষ হয়েন, কিন্তু যথার্থ জানি ব্যক্তি সকল মৃত্যুর প্রাত্তি কোন প্রকারেই ভীত হয়েন না, কারণ সাধু ব্যক্তি সকলের মত্যুর প্রতি নিখাস ছইয়া ধর্মাচরণে প্রবৃত্তি জন্মায়, অর্থাৎ স্বভাব সন্দর্শন করিয়া সাধ্ব)কি সকলের এমত নিশ্চয় হইয়াছে যে অব্শাই মরিতে চইবেক, অতএব কেন যে অভ্যত্পকাল জীবিত থাকি ভাহাতে অধর্মাচরণ করি ? এডজনপ মনে করিয়া সাধ্যোকদিগের সহবাদে গমন করতঃ যথার্থ সাধ্ পর ম্পরা-ক্রম প্রবাহিত সভাধর্মের আলোচনা করিয়া যথাতথ্য সদাচারের সহিত সময় সকলকে সম্বরণ করিয়া আসিতেছেন, ইছার প্রমাণ একটি ছিডো-পদেশের শ্লোক সার্ণ হইল, যথা " অজ্বামর্বৎ প্রাজ্যে বিদ্যামর্থ চিঙ্ঘেৰ। পৃহীত্টৰ কেশেষু মৃত্যনা ধর্মমাচরেৰ। প্রাজ ব্যক্তি অজ্ব ও অমরের নাায় হঈয়া বিদ্যা এবং অর্থ চিদ্তা করিবেক, আর যম কর্ত্ক কেশে গৃহীতের ন্যায় হইয়া ধর্মাচরণ করিবেক।" অভএব মৃত্যুর প্রতি প্রতীক্ষা করিয়া যথার্থক্রপে ধর্মাবলদ্বী হওয়াই বিশেষ প্রয়োজনীয় হইয়াছে, যেহেতৃ শাব্রেতেও ইহার ভুরি প্রয়োগ প্রাপ্ত হইয়াছে, যথা মূত মহাত্মা রাজা রামমোহন রায় কৃত্যুদ্ধের চুর্ণকে আর্তি ধৃত বিজ্ঞাচন, এট জগতে যাঁহারা সৃষ্টি সংহারের কর্তা এবং সমর্থ হয়েন, ওাঁহারাও কালে লীন হয়েন, অতএব কাল বড় বলবান, অতএব ইহা নিশ্চয় হইল र्घ मकरलाहे काल महकारत रिलग्न প्राप्त इहेरवक, अकारण मह्नरक निक हे रहिं जानिया পরম পরাৎপর পরমেখরের निर्माला उनन উপাজর্নে যতনবান্হওয়াই শ্রেয়স্তর হইয়াছে।

এই পরিবর্ত্তি সৎসারের ক্রমাগত অনিতাতা দর্শন করিয়াও যুঢ লোক সকল পরানিই চেষ্টাতে প্রবৃত্ত হউতেতে, কতমত মনুষ্য মহামোহেতে মোহিত হইয়া দুষ্ক্রিয়াতে অভিরত হউতেতে, তাহারা সকল প্রেয়: নাধ-নকে পরিভাগ করিয়া প্রেরে অনুবর্ত্তা হউতেতে, এই উল্লোলছরূপ জগতের আশ্চর্যা রচনার কৌশল দেখিয়া তাহার প্রবিউ মোহিত হউ-ভেছে, প্রত্যহঃ প্রতিক্ষণে প্রাণিজাতির প্রেতপতির আলয় প্রাণি প্রত্যক্ষ করিয়াও অবশিষ্ট লোক সকল আপনাদিগের স্থায়িতে ইচ্ছা করি-ভেছে, ইহার অপেক্ষা আর আশ্চর্যা কি আছে?

2.—A panegyric on ancient India.

অবনীর অন্যান্য দেশাপেক্ষা এই ভারতবর্ষ সাধারণ মুখোপযোগি সমহদবোর দ্বারা পরিপূর্ণ থাকিবায় অস্মদাদির বিলক্ষণ বোধ হইতেছে যে জগৎপিতা প্রমেশ্র সৃষ্টি রচনা সময়ে এই দেশীয় মনুষাদিগের প্রতি সম্পূর্ণ করণা বিস্কাণ করিয়াছেন, তাহা না হইলে ভারতভ্রমির এতা-দৃশ উর্বার শক্তি কদাত অবলোকন করা ঘাটত না, এবং ব্তনাকরে মুক্তাদি রক্তাত শিখারে হীরক, নদ নদীর জলবিদ্ধ সহিত স্বর্ণ, এবং মৃত্তিকার নিদ্দভাবে বিবিধ প্রকার ধাতৃ দুব্য অবশ্য অপ্রাপ্ত হইত। বিশেষতঃ পৃথিবীর তাবদেশীয় প্রাবৃত্ত পাঠে এরপ জান প্রাপ্ত হওয়া শাইতেতে যে সৃষ্টির প্রথম সময়ে ইউরোপাদি সকল ভানের মনুষ্যের। অসন্ত্যাবস্থায় পতিত থাকিয়া অজ্ঞানতা প্রযুক্ত পশুরৎ জীবন যাপন করিত, এবং জগদীখন যে যে মহৎ छेए।त फाता মনুষাকে স্কান করিয়া যে সমস্ত বিশেষ কার্য্য নির্মাহ জন্য ধরা সমাজে প্রেরণ করেন, তাহা তাহারা কিছুই জানিত না, কেবল প্যাদির ন্যায় কুধা তৃষ্ধা নিদ্লিস্য মৈথুনাদি ক্তিপয় ৰাভাবিক কাৰ্য্যে অভিভূত থাকিয়া অত্যন্ত হীনাবস্থায় নিমগু ছিল, কিন্তু এই দর্বোৎকৃষ্ট রাজ্যের পুরাণাদি ইতিহাস পুস্তুকে তদিপরীত প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া ঘাইতেছে, আমাদিগের আদিপ্রয় বুহ্না অভিশয় সুপঙিত ছিলেন, ওাঁহার বদনবিগলিত বচনদারা অবনীর আদি বিবরণ অতি বিশ্বাররূপে প্রচার হওয়াড়ে বিদ্যা বিশার্দ শান্ত্র প্রকাশক মহাত্মা-গণ জাঁহাকে দৃষ্টিকতা ও চতুর্থ বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। বুজার পূত্র মনু রাজনীতি ও অপরাপর বিষয়ে যে প্রকার মহৎজানী ছিলেন তাহার বিশেষ প্রমাণ তাঁহার লিখিত গুড়েই প্রাপ্ত হইতেছে, জনদীখরের সতা নিরূপণ ও তাঁহার আরোধনা ও উপাসনা বিষয়ে তিনি যে সমস্থ প্রমাণ ও যুক্তি প্রয়োগ করিয়াছেন ভাহা অদ্যাবধি দীপের ন্যায় জাজবল্যমান র্হিয়াছে। এমত কোন ব্যক্তি এই জাম ভূমিতে অবতীর্ণ হয়েন নাই যে তাঁহারা কোন অংশে কোন প্রকার আপত্তি উপস্থিত করিতে পারেন। বুক্ষা ও মনু ব্যতীত কত ২ মূনি ও মহর্ষিণণ জ্ঞানশাস্ত্রালোচনা বিষয়ে জুরি ২ গুন্ধ প্রকাশ করিয়া এই বিচিত্র ক্ষেত্রকে বিজ্ঞানালোকে পরিপূর্ণ করিয়াছেন ভাছার সংখ্যা করা যায় না। আমাদিগের আদিপ্রুষের। এইরপে সভ্য জানের আলোচনা বিষয়ে নিয়ত নিযুক্ত পরমেখরারাধনার নির্মাল দোপান পরিফ্রত করতঃ দাখাানুদারে ভাবৎ মনুষাকে ভৎপথে নীত করিবায় পৌরাণিক ইতিহাস প্রকাশক মহাশয়েরা ঐ সময়কে সভ্য য্গাখ্যায় বিখ্যাত করিয়াছেন।

এই মহৎ প্রমাণধারা আমাদিনের বিশেষ বিখাস হইতেছে যে অবনীর আদিসময়ে ভারতবর্ষবাসি মনুষ্যেরা অত্যন্ত জানবান্ত বিধান ও বৃদ্ধি- মান ছিলেন, ইউরোপাদি দ্বানের থেত মৃতিদিলের ন্যায় অজানাবভায় निमञ्ज जिल्लान ना, मराजानकाल ठाउर इंग्रेड बरदम्मी इ मनुषानित्वद घटन বারিবোনে বিলক্ষণ তেজোবিশিষ্ট হইয়া ধর্মা অথ কাম মোক্ষ এই চত-রিরধ ফলে এমত শোভিত চইয়াছেল যে আবাল বৃদ্ধ বনিতাদি তাবলো-কেই তাহার অমৃত রুমায়াননে পরিতৃপ হইন। মেই পর্মাপতা পর্মা-जात উপাসনা বিষয়ক निमानानन मधांश कविष्टन, कामरकावानि विभ् শাসন জন্য उँ। हाता तटकायक्षत कान श्रकात मुख्यात टाउहात कविए। না, ভেদজান বিবজির্ভ বেদজান তৎসাময়িক মনুষ্যদিগের শিরোধায়। ছিল, অতএব ইতিহাস পুস্তকের প্রমাণদারা নিশ্চিত প্রতীতি হউতেছে যে যে সময়ে এ দেশীয় মনুষ্যেষা সম্পূর্ণ শ্বানীন হায় পরিদেটি হ থাকিয়। বিজ্ঞানানদে মগু হটয়া প্রমার্থ সাধনায় নিষ্ক ছিলেন, সেট সময়ে অন্যান্য জাতিদিগের জান১ক্ষ্রেমীলন হয় নাই। পরে কালক্রমে হিন্দুজাতি ই ল্রিয়স্থ দ্সাধাননে অনুরাগাঁহইয়। পূর্ম প্রকাশিত নাতিব গ্ল এবরোধ করতঃ দ্বের ঈয়া ইত্যাদির অনুগামী হওয়াতে জান আলোক ভিশ্বতির রূপে অজানায়রে প্রজন্ন হউতে লাগিল, ও শাস্তানুশীলনের প্রয়াম প্রদীপ ঘতনতৈল বিরহে নির্মাণ হইয়া যায়, সুহরাৎ ঠাহারা জানের উচ্চ সোপান্হইতে একেবারে অসীম ক্লেশ্যাগরে পতিত হন, বোধান প্রযুক্ত দেউ মহা দৃঃখকে সম্হস্থ ভাবিয়া প্রসপার বিবাদের সূত্রপাত करत्न, अत्र देवहादेवह दिवादन हिरुद्धाः हिरु देहहना (भाषिध निसाध হুইয়া যায়। এইরূপে ভারতরাজ্য অজ্ঞান অন্তকারে আবৃত হুইলে এবং মার্থ তৎপর সভাবিনাশি অসাধুদিগের বোধাধিকারজন্য নানাবিধ কাম্প নিক ধর্মের সূচনা হউলে এই দেশ মুখ্তায় আছেল্প হয়। পরিশেষ মহাবল প্রাক্রান্ত মূবন দেনারা বাহুবল প্রকাশ পূষ্যক ক্রমে ২ এই দর্ম মুখা-কর ভারতব্যের সৌভাগ্য অপহরণে প্রবৃত্ত্য়, এবৎ কিয়ৎকাল পরেট এতদেশীয় মনুষ্ঠোরা প্রাধীনতা শৃগ্ধনে বন্ধ হইয়া পূক্ষসূথ ও ঋদ্দেওাদি একেবাবে বিশারণ হইয়াযান।

ভারতবর্ষায় মনুবোরা বুদ্ধির হানতাজনা নিন্দাবদ্ধার নিমগু হইলে আধুনিক ইংরাজ প্রভৃতি জাতিরা বিধিধ বিদ্যার অনুশাসন পূধিক দৌভাগাকে লক্ষ্য করিয়া বাণিজা প্রভৃতি সাধারণ হিতকাগোর অনুষ্ঠান করেন, এবং মিসর গ্রিদ ও ক্ষম দেশায় মনুবাদিগের নিক্টহইতে বছবিধ নীতি ও রাজকীয় বিদ্যার উপদেশ সূচক গুলু প্রাপ্ত হওয়াতে তাঁহাদিগোই আদিসভা বলিয়া প্রতিষ্ঠা করিতে থাকেন, কিন্তু পিলনি টলমি ও আরিফটল প্রভৃতি জানি ও ইতিহাসবেতা মনুবাদিগের লিখিত গুদ্ধের প্রতি বিখাস করিতে হইলে এওদেশীয় মনুবাদিগের আদিসভাত। অবশা প্রতিপন্ন হইতে পারে, বেহেতুক এই রাজাহইতে প্রথাক ভাতির। জানবীয় সংগুহ পূর্মক যে আপনাপন বেশে রোপণ করেন, তাহ।

ভাঁছার। দশফকুপে লিখিয়াছেন। নীতিবিদ্যা, রেখাগণিত বিদ্যা, ক্ষেত্র-পরিমাপক বিদ্যা, জ্যোতির্বিদ্যা এবং বিজ্ঞান প্রভৃতি জ্ঞান ও শিপ্প বিদ্যা প্রথমতঃ এই দেশেই জন্ম গুহণ করে,পরিশেষ মিদর ও গ্রিদদেশীয় মনুষ্যেরা বিবিধ কৌশলে ভাগার বিশেষ মর্মা সংগুছ করিয়া উউরোপ প্রভৃতি পৃথিবীথতে প্রতিষ্ঠাতাজন হন। সিদর ওগ্রিদ এবং রুমরাজ্ঞা মধ্যে অনেক জানি মনুষা জন্ম গুহণ করিয়াছিলেন, সজেটিস পেলটো উউকিলিড প্রভৃতি মহায়ার। বিবিধপ্রকার নীতি গণিত ও জানশাজ্র প্রকাশ করেন, এবং ভাঁহাদিগের সময়ে পূর্কোক রাজাত্তয়ের মনুষোরা বিদ্যানুশীলন পূর্কক রাজনীতি নিরূপণ এবং স্বাভাবিক বন্দ বিচার বিষয়ে বিলক্ষণ অনুবাগ এবং যতন করতঃ কৃতকাল্য হন, উহার বিশ্বর প্রমাণ আমরা ইতিহাসপুষ্ধকেই প্রাপ্ত হইয়াভি, কিন্ত ওাঁহারা যে অবনীমণ্ডলে হিলুছাতি অপেক্ষা আদি সভ্য ছিলেন, কি ভাঁহাদিগের নিকটহউতে এতদেশীয় লোকের৷ কোন প্রকার বিদ্যার অনুশীলন করিয়াছেন, কোন ইতিহাস পুষুকে তাহা প্রকাশ হল নাই। হিন্দুয়ান যে বিবিধ বিদ্যার আক্রম্থান এবং মনুস্যদিগের দুখভোগোপযোগি বিবিধ বস্তুতে পরিপূর্ণ, পূর্মভন জাতিমাত্রেই তাহা বিলক্ষণ ভাতে ছিলেন। ক্কম প্রভৃতি রাজে)র অধিপতিরা এই দেশের পুস্তকাদি সংগুহ নিমিত ও উত্তম দুবা সম্ভোগ জনা বিস্তুর যতন ও অর্থবায় স্বীকার করিয়াছিলেন। কার্থেজ রাজ্যের মনুষ্যেরা তরণি পরিচালনা কার্যেট বিশেষ পারদশী হুইয়া র্তনাক্র উল্জ্যনে ক্ষমতাবান হুইলে জাহাজযোগে এই রাজ্যে আগমন করণের উপায় অনুসন্ধান করিয়াছিলেন, কিন্ত ভুগোল বিদা পরিষকৃত মতে সুপ্রকাশিত না থাকিবায় ওাঁহাদিগের সমুদয় চেষ্টা বিফল হয়। পরিশেষ দেপানদেশীয় বিচক্ষণ নাবিকেরা ঐ মহৎ কার্য্যে প্রবৃত হইয়া সমূদু লঞ্চান পূর্কক আনেক উপদ্বীপ প্রকাশ করেন, এবং বিখ্যাত জাহাজী কর্ম পরিজাপক কৃষ্টফর কলম্বদ এই রাজ্যে আগমন নিমিত্ত পশ্চিমাভিমুথে জাহাজ চালাইয়া আমিরিকা নামক পৃথিবীথও প্রকাশ পূর্বকে সম্পূর্ণ যশোলাভ করেন। আমাদিনের জন্ম-ভূমি বিদ্যা ও ধন গৌরবে বিলক্ষণরূপে খ্যাভ্যাপন্ন না হউলে, এবং গ্রিস প্রভৃতি দেশীয় সুসভা ইতিহাসবেতারা এই দেশের সমূহ সুখ্যাতি না লিখিলে কার্থেজ দেশন ও অপরাপর দেশের মনুষ্যেরা আমাদিণের অনুসন্ধান নিমিত্ত এরপ যতন অনুরাগ ও অর্থতায় ধীকার করণে কদাচ আনুত্ইতেন না, কারণ অভোবতঃ মনুষ্যজাতির এরপ লক্ষণসক্ষন করিতেছি যে তাঁহারা উত্তম বন্ধ প্রাপ্তিষ্কন্য অধিক যক্তন ও অধিক পরিশ্রম স্বীকার করিয়া থাকেন। সামান্য বিষয়ের আকাঙকায় কোন ব্যক্তি অধিক যতন করেন না, অভএব পূর্কোক্ত জাতিদিগের ঐ সমন্ত অনুরাগ এবং যক্তনদার এই বৃহদুজোর সর্কোংকৃষ্টতা সম্পূর্ণরূপে সপ্রমাণ

इनेटडएफ, এवर এडएमगोग्न स्लाटकवा श्रृद्धकाटल रग वि**रम्थ** मन्त्र 8 বিশেষ বিভান ছিলেন তাচাবও প্ৰিদ্ৰান প্ৰাপ্ত ইয়াছি। স্বাধীনতা বিবজ্জিত চইয়া প্রাধীনতা শৃথালে বন্ধ চইলে জাতিমাত্রেরি চীনাবস্থা হটয়া থাকে। আম্বা ইতিহাদপ্রতক এমত প্রমাণ কিড্ট প্রাপ্ত ই না যে কোন জাতি অন্য জাতিব অধীনতা স্থাকার করিয়া দুখ দৌভাগ্য ता विका। मक्षत्र कतित्राष्ट्रक, कावन बन्नाचीत्र मक्त निधित मक्त लाटकडे যতন করিয়া থাকেন, সূত্রাৎ যে জাতি সাজসলে বা **অপর কোন কল**-কৌশলে অন্য জাতিকে অধীন করেন, ভাঁহারা তাহাদিগের মুখ সৌভাগ্য অপহরণ পৃক্ষক হলেশীয় মনুষ্যদিগকে মূখী করিছে মহনতান্ছন, मण्डाख निखात् जना मण्यूनं कोण्ड अवर अनुतान कति ए धारकन, अजना আমরা ক্রমে ২ পূকাতন উত্তম অবস্থাহইতে সভাজাতি সমাজে হীন্রপে গণ্য হট্যাছি, এবং হাঁহারা আমাদিগকে অসভা বলিযা আপনাপন প্রতিপত্তি প্রকাশ করিতেছেন, বিশেষতঃ অত্যাচারি মননেরা সম্পূর্ণ আহিতাচার প্রচার প্রকে বাহুবলে আমাদিনের মৌভাগ্য অপহরণ করিয়া পরিশেষ ধনলোভজন্য রাজকীয় ভার পুহণ করাতে আমরা অসীম ক্লেশ কূপে নিমগ্ন হউ, শাস্তানুশীলনের প্রণা একেবারে উচ্ছিন্ন হট্যা যায়, জানবান পণিতেরা যবন জাতির অধীনতা ভয়ে ওজরাট দু।বিড় প্রভৃতি স্থানে পলায়ন করেন, হাহাতে এদেশের অবস্থা অত্যন্ত অপকৃষ্ট হইতে থাকে। যবনেরা প্রথম সময়ে আমাদিগের শাসন ক্ষনা অতাও অপরিজিল্ল নিয়ম করিয়াছিলেন, শালানুশীলনের প্রতি দেয করিয়া অংশ্য প্রকারে ব্রাহ্মণদিগের প্রতিযোগী হন, সূত্রাৎ প্রজারা গুদাজ্ছাদন পাইবার উপায় নিমিত্ত পরিশেষ মদেশীয় শাস্ত্র পরিত্যার পূর্বক ভূপতির মনোর খন নিমিত্ত এবং রাজকার্য প্রত্যাশায় যাসনিক ভাষাশিক্ষায় যতন করেন। এইকপে আমরাদ্রুক্ষাগৃত্ত ইয়াছি, আন-মাদিনের জ্ঞানবর্ম অবরোধ হইয়া গিয়াছে। এই দেশের সৌভাগ্য অপ-हत्रत्। विरम्भोग्न मनुरयाता विना विवादम आख श्रीत्रामन ना कतिस्म আমরা বর্তমান সময়ে অবশা উত্মাব্ধা প্রাপ্ত ইউতাম, এই দুংখ अत्र हहेत्त्र आमानितात अनुकत्त्ता अमाम बाद्यम छेपिष्ट हम, এবৎ বিলাপ প্রবাহ বৃদ্ধি হইতে থাকে।

সম্পুতি আধুনিক সুসভা ইংবাজের। অবনামণলন্থ সকল জাতির রাজননীতি ও অপরাপর বিদ্যার অনুশালন পূর্বক অনেক বিষয়ে সভাকে পরিলক্ষা করেঃ যবনদিগকে পরাজয় করিয়। এই রাজা অধিকার করাতে আমরা অনেক বিষয়ে যাধীনতা প্রাপ হইয়াছি, এ কথা অবশা বীকার করি। তাঁহারা আমাদিগের শান্তানুশীলনের প্রতি বিশোষ প্রতিধানিতা কিছুই করেন না, বিশেষতঃ বাহুলারতে ইংবাজি বিদ্যার চচনা হওয়াতে অনেক বাতি ধাধীনাবছার সুধারসাধাদন প্রাপ্ত ইয়।

উত্যানুশীলনে গতন করিতেতেন, এবং প্রমালাবাধনার নির্মাল জান প্রকাশ নিমিত অনেকের অন্তঃকরণে বিজানশায় প্রচারের অনুরাগ जिमिशाएए। अञ्चन मधाकारलत् मृध्येत् नित्तृ सत् कतिरल तर्त्वान সময়কে আমাদিণের ভাভ দিন বলিতে হয়, যেহেত্ এই সময়ে আম্র। উত্তম বিষয়ের অনুষ্ঠান করিলে ভুপতিকর্তৃক অনাদর প্রাপ্ত হই না। কিন্ত বহুবিধ রাজকীয় ও অপ্রাপ্র বিদ্যোহদার: এই দেশের মন্যোর। এমত হীন অবস্থা প্রাপ্ত হট্যাতেন, যে স্বলেশীয় ভাষা ও স্বলেশীয় শাস্ত্র বিষয়ে কিছুমাত্র যতন করেন না। এই ক্লণে কতিপর লোকের অন্তঃকরণে উত্তম বিষয়ের অনুশীলন কপ্পে যদ্ধেপ অনুরাগের উদ্দুক इडेग्नाट्ट, माधात्व मनुद्याता यनि लाहाट्ट मरगुक हन, उदव अनाग्नादम আমাদিলের অবস্থা সংশোধন হইতে পারে, ফলতঃ সেই শুভ সংযোগ প্রবাচ রূপে আবিদ্ধ হইবার সময় এপর্যাত উপস্থিত হয় নাই। বহু যক্তন ও বহু চেফী এবং বহু পরিঅম সহকারে তৎকার্য্য স্মিদ্ধ নিমিত অনুরাগ না করিলে অভীষ্ট ফল প্রাপ্ত হইবার উপায় দেখি না। যাহ। হউক বহু দুর্দিনের পর এই শুভ দিন উপস্থিত হ'ইবার বর্তমান রাজ্ঞা-ধিপতি ইংরাজ জাতির নিকট আমাদিগের কৃতত্ত হইতে হয়। যদিও এতদেশীয় चाथीन রাজার। हिन्दुभाख অনুশीलन विचएয় घठन ও দাহায়্য করিতেন বর্তমান রাজ্যাধিকারি মহাশ্রেরা এপ্র্যুত্ত হাহাব শতাৎশের একাৎশ যতন অথবা সাহায্য দেখাইতে পারেন নাই, ওাঁহারা ইংরাল্লী বিদ্যার অনুশীলন জন্য मम्পুণ উদযোগ করিতেছেন,তথাচ ভাঁহাদিল্যে প্রতিষ্ঠা করিতে হয়, কারণ কোন ব্যক্তি ঋদেশীয় বিদ্যা অনুশীলনে প্রবৃত হইলে তাঁহাকে তাঁহারা অনুংসাহী করেন না।যে কোন ভাষায় হউক, দেশীয় লোকেরা জান শিক্ষা কর্ণে মনোঘোগ করিলেই আনন্দ প্রকাশ করেন। কিন্তু পূর্বতন সূশিক্ষা বিবজির্ভ হটয়া এদেশীয় মন্যাগণ এমত অজান অবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছেন, যে অতি অপ্প লোক বাতীত প্রায় তাবৎ লোকই বিদ্যা বিষয়ে প্রবেশ করিতে অনিজ্ঞ হন, সামান্য বিদ্যার জান প্রাপ্ত না হইতেই তাঁহারা অভিমান বশতঃ বড় বিভান হইয়া বদেন, এবং কথার কৌশলে আপনাকে বিদানরপে প্রতিপন্ন করান, সূতরাৎ শুভদিন সভ্তেও দেশের দূর্বস্থা দুরীকৃত 'হইবার উপায় করা যায় না। অতএব অবশ্য বলিতে হইবেক জগতের আদিকালে এই বঙ্গদেশীয় মনুষোরা ঘেমত উত্তম অবস্থায় অবস্থান করিভেছিলেন, এইক্লণে সেই রূপ হীন অবস্থায় পতিত হট্যা কেবল অনিষ্টলনক সংস্থারে অভিভূত হইয়াছেন, অজানভায় ভাঁহা-দিণের জানচক্ষ আবন্ধ হইবায় বিশিষ্ট্রপে বিদ্যান্শীলন ব্যতীত ভাঁহাদিগের অবস্থা পরিবর্ত্তন হইবেক না, অভএব বর্ত্তমান সময়ে স্বদেশ मजलाक मन्यामात्वति शक्त कर्त्ता रहा, शहाता अनुतान ও यस्न

পরায়ণ হটয়। মলাদি শাজের প্রমাণ প্রকাশ করেও এই রাজ্যের পূর্দ বিবরণ প্রচাব করেন, ভাহা হইলে উঁহোরা আদি পুরুষদিগের মরেপ অসম্বা ও এহদেশীয় আদিধ্যের মর্মা অবগত হইষা ভাহার অনুশীলন পূর্দ্ধক সহাকে অবলম্বন করিছে পারেন, এবং সভাস্থানুশীলনে অনুরাগ বৃদ্ধি হইতে পারে, ও বেদবিহিত বিধি প্রমাণে প্রমান্থার আর্ধনা কল্পে অবশ্য অনুরাগ বিশিষ্ট হন।

3.—A Discourse on gratitude.

আমাদিদের অভংকরণের অলস্কার্রূপে যে ক্তিপ্র মংসংস্কার সংখাপিত হটয়াছে তল্পো কৃতজ্ঞা অত্যন্ত আনন্দলনক হয়, ঘেছেত্ ঐ মহৎ সংস্থার্রারা আমেরা সৃষ্টিকতা জগদীধর ও জল্মদাতা জনক ও গর্রধারিণী জননী এবং হিদ্যাদাতা ও জ্ঞানদাতা ও'র এবং অন্যান্য সমদর উপকারকদিনের নিকট আত্রিক বাগ্যতা প্রকাশ করিয়া থাকি। যে শরীরে কৃষ্ডভার সঞার না থাকে দেই শরীর মিখা। বোধ হয়, নেছেতু অকৃতজ পুরুষ পরম পামর্রপে গণ্য হইয়া থাকে, সজ্জন সমাজে কোন প্রকার সমাদর প্রাপ্ত হয় না। জগদীমর যিনি এই বহু সাগর বেষ্টিত মহীমণ্ডল মধ্যে আমাদিল্যে মনুষ্যক্রপে দৃজন করিয়া বুদ্ধি বৃদ্ধি জান চৈত্ৰাৰারা সমুদ্য প্রাণি ও পদার্থের প্রতি কর্তুত করণের ক্ষমতা প্রদান করিয়াছেন, যাঁহার অনত করুণার দারা আমরা আহার ও ব্যবহার যোগ্য সমূদ্য বন্দ্র প্রাপ্ত হইডেছি, ভক্তিপূর্দ্ধক সেই প্রমান্ধার নাম করেণ ও আন্রাধনা না করিজো মামরা অবশ্য আক্রান্ত হীন বলিয়া ন্তর্মিত ও পরম পাতকীরূপে গণিত হউতে পারি। জনক জননী ঘাঁহা-দিনের প্রদারাৎ এই জন্ম চূমিতে আগমন করিয়াছি ভাঁহাদিলের নিকট বিধিমতে বাধ্যতা প্রকাশ না করিলে আমরা কি মনুষ্য বলিয়া অভিমান করিতে পারি? ও বিদ্যাদাতা ও জানদাতা ওরু প্রভৃতি উপকারকদিগ্যে ভুক্তিকরণে বির্ভ হইলে আমানিগের ন্যায় অজানি ও অকৃতজ কি অন্য কোন স্থানে প্রাপ্ত হওয়া যায় বৈঅতএব অবশ্য স্থাকার করিতে হুইবেক যে কৃতজভাই আমাদিনের মনুষ্য সন্মাপনের উপায় হুইয়াছে, এবৎ জনদীখর অতি স্বিবেচনা পূর্মক অভঃকরণের অন্তর্জনপে ভাহার मुख्य कृतिशाष्ट्रमः। উপকারকের বদনাবলোকন অথবা কীর্ত্তিসহকারে নাম স্মরণ করিলে স্বভাবতঃ মনোমধ্যে তাহার সঞ্চার হটরা থাকে, এবং ভক্তি ও প্রদার্দে শরীর্কে আর্দু করে। প্রমেশর যদাপি আমাদিনো ঐ মহৎ সৎস্কার প্রদান না করিতেন, তবে মান্র মণ্ডলীর বর্তমান অবস্থা কদাচ এরপে পরিচ্ছন হইত না, পরন্ত সূক্ষদর্শি পর্মজানি জ্ঞাদীখর জগ-

ভের মঞ্চলার্থ দিকল মনুষোর অনঃকরণে ঐ মহৎ দৎস্কার দৎস্থাপন করি-য়াভেন, এবৎ ওদ্ধারা আমিরা ঐহিক ও পার্ত্তিকের কার্যা অতি সুনির্মে নির্দাহ করিয়া আদিতেভি, এই পৃথিবীতে অদ্যাবধি এমত কোন ব্যক্তি জন্মপুহণ করেন নাই যিনি দম্পূর্ণ অক্তজ আখা)া গুহণ করিতে পারেন।

উপরি উক্ত অভিপ্রায়দারা সভাশ্ব মহশিয়েরা নিশ্চিত অবগত হইবেন যে প্রথমতঃ জাগদীসরের নিকট কৃতজতা দ্বীকার পূর্বক পরিশেষ সংসহ-কারে জনক জননী ও জানদাহা ও বিদ্যাদাহা ওরু প্রভৃতি সমুদয় উপ-কারকের নিকট সম্পূর্ণ বাধ্যতা প্রকাশ করা আমাদিগের কর্ত্ব্য হয়, তাহা না করিলে মনুষ্যতা রক্ষা হউতে পারে না, ফলতঃ বিশিফীরূপে বিবেচনা করিলে জানদাতা ও বিদ্যাদাতা মহাঝাদিগের নিকট কৃতজ্ঞতা শ্বীকার করা আদে উচিত বোধ হউতে পারে, কারণ যদবধি বিদ্যানু-শীলন পূর্প্তক জ্ঞানোপার্জন করিতে না পারি, তদবধি আমর। অজান অন্ধকারে আবৃত থাকি, আপনাপন কর্ত্তব্য কার্ম্যের কোন বিধান করিছে পারি না, কিন্তু বিদ্যাদাতা ও জানদাতার উপদেশক্রমে দেই অজানতা বিনাশ হইয়। অন্তঃকর্ণকে নির্মল করে, এবং বৃদ্ধি ও বিবেচনার হির্তা জন্মে, সকল বিষয়ের সূক্ষানুসকান পূর্পক সত্যাসতা বিচার করণে সমর্থ হই, সৃষ্টি রচনার তাৎপর্য্য বিবেচনা করিয়া সকল প্রাণি ও পদার্থের কারণরপ পর্মেখরকে জানিতে পারি। মদিও জগদীপর এই দেহের আদিকারণ বটেন, তাঁহার অন্তিক্ত বাতীত আমাদিগের শুায়িত্ত অসম্ভব, এবং জনক জননা আমাদিগ্যে এই জন্মভূমি দশনি করান, সম্পূর্ণ য়েছের সহিত প্রতিপালন করেন, জানানুশীলন নিমিত ওকর নিকট নিযুক্ত করিয়া থাকেন, ওঁাহাদিগের যক্তন ও অনুরাগ বাতীত আমাদিণের ভেকে রক্ষা ও জান শিক্ষা কিছুই হটতে পারে না, তথাচ কৃতজ্ঞতা মীকার বিধারে গুরুর গুরুত লব্ধ হইরা থাকে, মেছেতু ভাঁহার উপদেশ ব্যতীত আমরা জগদীখরের অন্তিক্ত নিরূপণ অথবা জনক জননীকৃত মহোপকার অবধারণ করণে অক্ষম হই । কিন্তু আমার ●এই উক্তির ছারা সভ্য মহাশয়ের। কদাচ এমত বিবেচনা করিবেন না যে জগৎপিতা প্রমাত্মা ও জন্মদাতা জনক এবং গর্ৱধারিণী জননী অপেক্ষা বিদ্যাদাতা ও জানদাতা প্রক্তে প্রধানরূপে গণনা করিতেছি, যেতেতু যে মহাশক্তি এই বিচিত্র দেহের সমুদয় শক্তির আদিকারণ এবং যাহাদিগের সহকারে ইহার সূজন হইয়াছে, উাহাদিগের অপেক্ষা গুরুর প্রাধান্যতা কোন রূপে সন্তব হউতে পারে না, বিশেষতঃ স্কর্গনী-খরের সহিত কোন হস্তপদ বিশিষ্ট মনুষোর তুলনাই অসম্ভব হয়, জনক জননী তুল্য জীবের হিতকারি অন্য কেহই হইভে পারেন না, এজন্য জান-বান্ শার প্রকাশক মহাঝারা ওঁাহাদিগো মহাওক বলিয়া বছৰ্লে বর্ণনা করিয়াছেন। কিন্ত বিদ্যাদাতার উপদেশক্রমে সর্কবিষয়ে বোধা-

বিকার হওয়াতেই তাঁহাদিগের নিকট আনৌ কৃষ্ডা হা ৰীকার কর। কর্ত্তা মানিতেছি। জাননাতা ও বিদ্যাদাতার উপদেশক্ষমে বৃদ্ধি সফুওি বিবেচনার আধিকা জড়তা বিনাশ না হইলে প্রমেশর যে প্রম কদ ও তাঁহার নিকট কি রূপে কৃত্তা ধীকার করা কর্ত্তা ও জনক জননী আমাদিগের কি রূপ উপকারক এতাবং জান আমবা কিছুই উপলব্ধি করিতে পারি না, কেবল অজানতায় নিমগ্ন থাকিয়া প্রাদির নায়ে ব্যক্তার করণে প্রত্ত হই।

প্রেরাক্ত কারণ দারা বিলক্ষণ প্রহীতি হউতেছে যে যে সকল বাকি সাध्योनुमादत् भाषातृ । तिमानुक्ति ও जानानुक्षीलदन यञ्चतान धन ভাঁহারা আমাদিগের বিশেষ কৃতজ্ঞতা অবশ্য প্রাপ হউতে পাবেন, ভাঁহাদিগের নাম কারণ হইলে অতঃকরণে সম্পূর্ণ প্রেম ও শ্রন্ধার উপধিতি হটর। থাকে, ও সদ্ধণসমূহ ঝরণ মার কৃংজভারসে ঠিক আদৃত্য। এই বঙ্করাজ্যের পরম হিতকারি বসুমূত ডেবিড হেযার সাহের আপনার সকল মতন সকল অনুবাগ এবং সকল অর্থ বাসদাবা বহু লোকের অজ্ঞানতা বিনাশপুৰ্বকে সভাতা ও স্বাবহাৰ সংস্থাপন কৰাতে মনুষ্য-মাত্রেই তাঁহার নিকট কৃতজভা স্বীকার করিতেছেন। যত দিবদ চত্র সর্ঘোর স্থিতি থাকিবেক, ভতকাল পর্যায় এট বিষ্ণুত রাজ্যের মনুষ্যেরা ভাঁহার ধণানুকীতনে নিযুক্ত থাকিবেন, যেহেতু ঐ মহাত্মা ভিন্ন দেশে জন্ম গৃহণ করিয়া আমাদিগের উপকারনিমিত্ত এমত সদনুবাগ এবং যতন করিয়াছেন, যে অদ্যাবধি কোন খদেশায় মনুষ্য ঠাহার সমহুলা হউতে পারেন নাই। ভাঁহার সুমনোবোণে কত ব্যক্তি কৃত্রিনা হইয়া মৌভাগ্য সঞ্জয় ও সদস্দিচারে সক্ষম হউয়াছেন তাহার সংখ্যা করা যায় না'। এই বঙ্গদেশের বহু পরিবার হেয়ার সাহেবের মহথ গুণে বাবিত আছেন, लिश्रेनीत कि माधा य डाहात वर्धना कतिएड शाति? या मकल পরিবার অজান অন্ধকারে মগ্ন থাকিয়া গ্রামাজাদন বিরহে হাহাকার করিতেছিলেন, ভেয়ার সাহেবের অনুগুহে ভাঁচাদিগের পুলগণ বিদানাথ)। গুহণপূর্বাক সমূহ সৌভাগ্যের সহিত কাল হরণ করিতেভেন, এবং অনে-কের আন্থেকরণে বিদ্যাবিষয়ের অনুরাগ বৃদ্ধি হউয়াজে। হেয়ার সাতের প্রলোক গমন ক্রিয়াছেন, কিন্তু এই দমস্তু মহতী কীতিবারা আমরা তাঁহাকে জীবিত মনুষ্যের ন্যায় সন্দর্শন করিতেছি। কত্থ বিধান লো-কের বদনাবলোকন করিলে হেয়ার সালেবের অবয়ব ঝরণ হয়, ভাছার মংখ্যা হইতে পারে না। সংস্কৃত কালেজের বৃহদাগারে প্রবেশপুর্বক ঐ মচাতাার চিত্র প্রতিষ্ত্তি অবলোকন করিলে অন্তঃকরণে যেরূপ আ হলাদের উদয় হয়, বাকে)র দারা তাহার বিশেষ করা অসম্ভব। কিন্ত প্রমেশর ঘদ্যপি আমাদিগের মনোমধ্যে কৃঙ্জতার স্থার না করি-एडन, उद्य अ प्रदालकातित मगुमग्र मम्ख्र विख्यत्। इंडेडांग. म्रश्रुः কালেজে গঁচার চিত্র প্রতিমূর্ত্তি কলাচ দৃশ্যমান ছইত না. এবং ভাষার প্রস্থার প্রথমিত্তি থাচা অভিজ্ঞরায় কলিকাছার আদিবার কম্পান আছে ভাষাও অদৃশ্য হইত, ঐ মহোপকারী মহায়ার সকল সদ্পণ একেবারে বিন্দু হইরা যাইত, আমরা ভাঁছার মহাদৃদীও প্রদর্শন-প্রক্ অন্য কোন হাজিকে সংকার্য্যে আহ্বান করিছে পারিতাম না। হেয়ার সাহেবের অনুগুহে বিদ্যার আহ্বানন গুহণ করিয়া অনেকে জনক জননীর প্রতি ভক্তি ও উচিত ব্যবহার করেণে নিযুক্ত ইইয়াছেন। ভাতএব আমি বোধ করি এই সভার মধ্যে এমত কোন হাকি উপন্থিত নাই লে হেয়ার সাহেবের নাম সর্গ্যাত্র কৃত্তা প্রকাশন। করেন।

আমি বিদ্যাদাথার দৃষ্টাস্কজনে মানাসর হেয়ার সাহেবের দৃষ্টাও যে কলে দশাইলাম, জানদাথা পলিয়া দেইকল মহাস্থাবর রাজা রাম-মোহন রায়ের দৃষ্টাও প্রয়োগ ফরা যুক্তিমিল বাবে হইল, দেহে হুল মহাস্থা মহীমস্যক্তি বক্ত দিবেদর পরে এই বল্পদেশ মধ্যে বেদ্বিহিও সত্য ধর্ম প্রকাশ করিয়া বুলজানের সুনির্মাল সোপান সকল পরিখনার করিয়াছেন, এবং এইক্ষণে ওাঁহার দৃষ্টাথের অনুগামা হইয়া বলুলোক স্বজাধীয় আদিধর্মের মন্ধাবধারণে সক্ষম হইয়াছেন। এই রাজ্য মধ্যে রামমোহন রায়ের জন্ম না হইলে ধর্মা বিষয়ের অলীক গোলগোগ সকল কদাচ নিবারণ হইত না, অদ্যাবধি সকল লোকেই অজ্যান অন্ধ-কারে মগু থাকিবেন। অতএব যে মহায়ার উপদেশক্রমে আমরা জগদীখরের নিকট কৃথজাতা প্রকাশ করণে বেদ্বিহিও নিয়ম প্রাথ হইয়াছি, ভাঁহার নিকট যাবজ্জীবনের জন্য কৃওজ হওয়া অবশ্য ফন্তব্য হয়।

4.—Influence of good company.

মনুষ্য মধান পৃথিবীতে জন্মগুহণ করেন, তথান জাতার ক্ষৃদানার বিশিষ্ট হন, বছিরিন্ত্রি সকল ক্ষৃদ্ধ করেশ পান্ট প্রকাশ থাকে, কিছুমাএ বৃদ্ধিক্চ্তি হয় না, আতা রক্ষার নিমিত্ত জনক জননীর মেহের প্রতি নির্ভ্তর করেন, কোন প্রকার অভিপ্রায় প্রকাশ করিতে পারেন না। পরে কাল সহকারে দেই ক্ষৃদু দেহ বৃদ্ধি হইলে বাক্যক্ষ্তি বৃদ্ধিক্চৃতি বিবেচনার আলোচনা ও বন্ধজান ইত্যাদি হইয়া থাকে, এবং তিনি মনুষ্য রূপে গণ্য হইয়া আপনার কর্ত্ব্য কাষ্যের বিধান ও বিবেচনা করিওে পারেন। বিদ্যানুশীলন পূর্ব্যক ষত জানানুশীলনে প্রত্ত হইতে থাকেন, ভক্তই বিবিধ বিষয়ের বোধাধিকার সহকারে প্রাংপর প্রমান্ধার নিত্যজান লব্ধ হয়, বিজ্ঞান শান্তের নির্মাল চল্লিকায় ছব্যাকাশ হিত অজ্ঞান লব্ধ প্রক্ষার্রাশি বিনাশ হইতে থাকে। কিন্তু এই মনুষ্য সন্যুপ্

বিদ্যানুশীলন ও জানসাধনায় প্রায়ুখ হট্যা কুপ্রবৃত্তির কৃহক জালে ঋড়িত হন, নিয়ত ক্যাগ পরিক্রমণ করেন, মৃগতৃষ্ণাবং বিষয় বাদনায মিথ্যা পরিশ্রমে নিযুক্ত প্রযুক্ত ও প্রবঞ্জনা প্রভারণা পক্ষপাত পর-দুোহ উত্যাদি পাপজনক সংস্থাবে প্রশক্তিহেত হীনাবস্থায় পতিত হন, তবে ওঁহোর মানবদেহ বিফল বোব হয়, তাহার কোন সাথকতা জামো না, জননী তাঁহাকে মিথ্যা স্তনপান করান, জনক তাঁহার মিথ্যা জন্ম দেন, ওঁহোর সহিত প্রাদির কোন বিভিন্নতা থাকে না, ফলতঃ মন্যোর এই উত্যাধম উভয় পথাবলরনের হেতৃ শহ্ষ দদসংদক্ষ পরিলুহণ ও ইন্টানিন্টজনক উপদেশ সকল অবধারণ ভিন্ন অন্য কিছুই বেবি হন না, কারণ তিনি জন্ম গুহণ পূর্মাক যদব্ধি মাতৃক্রোড়ে অবস্থান করেন ভদববি ভাঁহার অন্তঃকরণ অতান্ত কোমল ও নিমাল থাকে, পরে গে রূপ উপদেশ ও যেরূপ সঙ্গ প্রাপ্ত হন সেই রূপ সংখ্যার জন্মে, অভএন मদসৎসঙ্গ ও ইফানিফাজনক উপদেশের প্রতিই আমাদিগের উত্তমা ধম আবস্থা পরিণত হউতেছে, একারণ সকল মনুষেচ্য কত্রচ হয रंग डांचानिरंशद रवाधाविकाद इङ्ख्य डाँचादा मरमञ्ज उ मनुश्रामण গুহণ করেন, কারণ ভাহাতে দকল সং সংখার প্রকাশ হইয়া থাকে এবং সংকায়ে অনুরাগ অসংকার্যো বিরাগ সংপথে প্রবৃত্তি ও এসং পথে নিবৃত্তি হয়। পর্ক সংসঙ্গ কাছাকে বলা যায় এইছলে ভাছার ও নিদেশ করা আবশ্যক, আমি দেই সম্প্রেই সংসদ বলি যে সম্প্র কারে সংশ্বভাব সদুপদেশ ও সতাজান হইয়া থাকে। সেই ব্যক্তিকেই मरमभी तला यांकेटक পाद्य या ठालि भरकारगात आनुसीलन करतन, এবং সতত সৰিষয়ে প্রবৃত্ত করান, জানানুশীলনে যাঁহার যতন দেখিতে পাই তিনিই সংস্থা হন। কিন্তু এই অবনা মণ্ডলে এমত মনুষাও অনেক আছে নাহারা প্রহারণার আবরণ মধ্যে আপনাদিলের ঘূণিত অসং মভার সকল গোপন রাখিয়া সহতা সহকারে স্থাতা প্রকাশ করিয়া থাকে, বাক্যের দারা বিলক্ষণ রূপে দদিবরে উৎসাহ দেখায়, কিন্দ গোপনে কুকার্ন্যের প্রতি সম্পূর্ণ অনুরাগ করে, তাচার্দিগ্যে বিষক্তম পয়োমুথ বলা যাইতে পারে, গেমন বিষ পরিপূর্ণ কলদের মুখে পয়ঃ আবরণ থাকিলে অনবধানতা প্রয়ুক্ত তাহাকে পরঃকলম বোধ চন, দেইরূপ ঐ সকল ব্যক্তির মুখবিনিগত বাকালারা ভালাদিন্যে অভ্যন্ত সংখ্রভাব বোধ করা যায়, ভাহারা বাক্যের প্রলোভে মুগ্র করিয়া অনেক বাক্তিকে কুৎসিত কার্ঘ্যে প্রবৃত করান। বহুবুদ্ধি ও বহুপ্রকার বিবে-চনা বাহীত ঐ সমন্ত ভয়ানক মনুযোর কুছক জালতইতে নিদ্ধার প্রাপ হওয়া অত্যন্ত সুকটিন হয়। অতএব আমি সৎসন্নাম্বেষি সম্দয় ব্যক্তিকে সর্বাগ্রে সঙক করিতেছি যে উ।হারা কোন মনুষ্যকে সংস্থি বলিয়া গুহণ করিবার পূর্বের ভাঁহার আন্তরিক মন্তার ও গোপনীয় ব্যবহার

ইত্যাদির প্রীক্ষা করিবেন, ওাঁচার নিকট আপন অভিপ্রায়কে একেবারে প্রকাশ করিবেন না; এবং প্রীক্ষার দ্বারা যে ব্যক্তির উত্তম ব্যবহার ও উত্তম চরিত্র এবং উত্তমানুশীলন ও উত্তমজান ইত্যাদি সমূহ
উত্তমতার প্রমাণ প্রাপ্ত হইবেন ভাঁহাকেই সংসম্প্র জানিয়া ভাঁহার সহিত্
সংস্কু হইয়া সময় সম্বরণ করিবেন, সেম্বানে উত্তম বিষয়ের অনুশীলন
হয় সেই স্থানেই যাইবেন, সে সভায় জানি লোকের। সাধারণের উপকার
নিমিত্ত নীতি ও ধর্মা বিষয়ের উপদেশ করেন, সেই সভায় গমন করিতে
কদাচ আলস্যস্কু হইবেন না, কারণ সংসদ্ধ ও সদুপদেশদ্বারা আমাদিগের বিশেষ উপকার হইয়া থাকে, সকল নীতি ও ধর্মশাম্থেই
ইহার বিধি প্রাপ্ত হত্যা গাইতেছে।

মদ্যপি কোন ব্যক্তি উপরি উক্ত অভিপ্রায়ে দন্দির ইইয়া জিলাসুক্রপে একপ প্রশন করেন যে সর্ক বিষয়ে সং এবং সম্পূর্ণ উত্তম চরিত্র
সংস্ক্লি প্রায় কোন ফ্লেই প্রাপে হওয়া যায় না, কিন্তু ইহাতে আয়ি
এই উত্তর প্রদান করি, যে সম্পূর্তী যে সকল ব্যক্তি বিবিধ বিদ্যা
অনুশীলন পূর্বাক কৃত্রিদ্য ইইয়াছেন এবং অবঃকরণের সহিত সাধারণ মঙ্গলজনক বিষয়ে অনুরাগ করিতেছেন, বেদবিহিত নিয়মানুসারে জগদীশর আরাধনা বিষয়ে চিত্তাপণি করা আপনাদিগের কর্ত্রস
কার্য্য জানিয়াছেন, ওঁছাদিগের সহিত সংযুক্ত ইইলে অবশ্য অধিক
উপকার লক্স ইইতে পারে, নেতেতু বেদবিহিত নিয়মানুনারে ইনহিক
কার্য্য নির্মাহপুর্বাক মাহারা জগদীশরের আরাধনা করেন হাঁহারা আন্
পনার অথবা অপরের অনিউজনক কোন ঘৃণিত বিষয়ে অনুরাগ
ে অরেন না, সুত্রাং ওঁছাদিগের সহিত সংযুক্ত ইইতে পারিলে অবশা
উত্য পথের পথিক ইইয়া উত্তম বিষয়ে নিম্কুত্বরা গাইতে পারে

বেদ, উপনিষদাদি শাস্ত্রে রিপুশাসন করণের যে সকল বিধি
প্রাপ্ত হওয়া যাইতেডে, বৈদান্ত্রিক সকলের নিকট ভাষার উপদেশ
গুহণ করিলে অনায়াদে ভাষাতে কৃতকার্য্য হওয়া যায়, কারণ ঈশর
সাধনায় নিযুক্ত যে অস্তঃকরণ ভাষাতে কোন অনিউজনক বিষয়ের
আন্দোলন হইতে পারে না, এ কথা যুক্তি ও শাস্ত্রনারাই প্রতিপন্ন
হইতেছে। অতএব সভা মহাশয়েরা নিশ্তি অবগত হইতেন, সে জানি
সঙ্গকেই সংসক্ষ বলা যায় এবং জান উপদেশকেই উত্তম উপদেশ
বলা যাইতে পারে, যে সকল ব্যক্তি জানানুশীলন করেন ভায়ানিগের
সহবাদে সময় সশ্বণ করাই আমাদিগের উচিত বোধ হয়।

5.—Patriotism.

अपनत्मत मुर्ग मोलाग उ विका तृष्टि विषय विस्मयकर्भ मत्नारमान ও মতন করা সকল লোকেরি আবেশাক, মেহেত তদ্ধারা স্বজাতির গৌরব দৌরভ মহকারে অশেষ প্রকার উপকার হইবার মদ্যাবনা। এই পথিবী-মগুলে যে সকল ব্যক্তি রদেশের মঙ্গল কার্ম্যে নিমত নিম্কু থাকিয়া পরিশ্রম ও ষতনরারা ভাত্তলা জাতীয় রঞ্দীরের জান চক্র্মীলন করিয়াছেন, টাহাদিগের কীতি বিতীয় তপনের ন্যায় প্রকাশমান বৃত্তি-য়াছে; আমরা ইতিহাস পধুক পাঠ কবিলেই এ সকল ব্যক্তিকে প্রহ্য-ক্ষের নায় সন্দর্শন করিতেছি, জগদীখর মনুষ্টভাতিকে যে সমন্ত সদপ্রদারা ভূষিত করিয়াছেন, মদেশের উপকারাথে ভাহার বিহিত তাবহার না করিলে কদাচ মনুষাজারক্ষা ছউতে পাবে না। যেমন জলহীন খাতকে মরোকর ও পৃষ্পহান খানকে উন্যান বলা কোন রূপেই মন্তব হয় না, সেইরূপ অনেশায় উপকারে অনিজ্ক পুরুষকে মনুষ্য সলাও मण्य रुप्त मा। या ताकि चामान्य डेलकावाथ डेमरशान अ मञ्जलवायन হন এবং নিয়ত সাধারণের মঙ্গলাথ শুভানুষ্ঠান করেন, তিনিই অতি মহানুলোক, তাঁহার অভঃকরণ অভান নিমাল ও কোমল হয়, ক্রেডা পক্ষপাত প্রভৃতি কোন দোষ ভাঁচাকে দুস্প করিতে পারে না, তিনি माधावर्गत उपकात्कना नियुष्ठ ताकल थारकन। किन्तु रा मुकल वाकि ম্বদেশের উপকার করণে দিরত হট্যা কেবল আছার নিদা ও আলস্য तिहाद् कालगायन कद्वन, उ भवानिक अङ्डि महाभारम धीवदृश्ः মীনের ন্যায় বন্ধ হয়েন, ভাঁহাকে কোন মতেই মনুষ্য বলিয়া পণকা যায় না, কারণ মনুষাতর সংস্থাপনের যে প্রধানোপায় তিনি ভাগ। অবলম্বন করিতে পারেন না, কেবল অধ্যোপায়ের অনুগামী হইয়। ক্রমে অজানতায় মগু হইতে থাকেন।

ষদেশের প্রতি প্রতি ও ম্বজাহীর মনুষাদিগের উপকারার্থে প্রকাশর উৎসাহ প্রকাশ না করিলে কোন জাতি সন্তাহা মাধানহা ও সুথ সৌভাগ্য সন্দোগ করিছে পারেন না, গ্রিস ও ক্য রাজ্যের মনুষোরা প্রাণাপেক্ষা মদেশ ও ম্বজাহীর সন্মানকে অধিকরপে প্রিয়জান করাতে অবনীর সকল জাতি অপেক্ষা সন্মানমুক্ত হইরাছিলেন; তত্ত্ব বিচারপতিরা দেশের উপকার বর্দ্ধন কলেপ সন্থানের শির্দ্ধেন করিছে হউলেও খেনমুক্ত হউতেন না; মদেশীর মাধানহা রক্ষাথ বিপুল বিক্রম প্রকাশ পূর্বক র্বহ্মনে আরার হত হউলে জননী তংশ্রণে অভাব সন্থোগ প্রকাশ করিছেন। ঐ উভয় রাজ্যের মনুষোরা কোন প্রকার উত্য বিষয়ের অনুষ্ঠান করিলে অথবা কোন উপকার্জনক নৃত্নোপায় নির্পণ করেছে পার্ব হউলে সাধার্ণের শিক্ষার্থ তংক্ষণ হাহা প্রকাশ করিয়া দিতেন;

এইরপে অনুশালনের ভাধিকাছা হইবায় গ্রীস ও ক্য রাজ্য দিশেষ রূপে সাধারণের পূজ্য হইয়াছিল, কিন্তু কাল সহকারে ক্রমেন স্থানেশের প্রেটি অনুরাগের হুাসভা হওয়াতেই ঐ দেশের পাতন হইল। অধুনা ফুল্স ও ইৎলও দেশীয় মনুবাদিগেরও স্বদেশের প্রান্তি বিলক্ষণ অনুবাগ এবং যক্তন সন্দর্শন করিছেছি ভাঁছারা আপনাপন স্বাধীনতা ও সূথ সৌ-ভাগ্য কৃদ্ধি বিষয়ে বিলক্ষণ। সন্দর্শন করিতেছি ভাঁছারা বাহুবলে বহু জ্ঞাতিকে আপনাপন প্রাক্রমের অধীন করিয়া ভাহাদিগের প্রান্তি প্রভূপ প্রকাশ পুর্বাক বিপুল সৌভাগ্য সঞ্চর করিতেছেন।

পরন্ত আমাদিগের এই বঙ্গদেশের বভুমান অবস্থার প্রতি নয়নে। ন্যালন করিলে শোক্ষাগরে নিমগ্র হউতে হয়। বিবিধ হেতু বশতঃ প্রাধানত। শৃথালে বন্ধ হইয়া এডদেশীয় মনুষ্যাগণ ক্রমেং এমত দূর্বয়া প্রাপ ও অজ্ঞানতায় জড়িত হইয়াছেন যে শ্বাধীনতা কাহাকে বলে ও স্পেটেশ্র মঙ্গল করা মনুষ্যের কিরুপে আবশ্যক, কেহট ভাহা জানিতে পারেন না, কেবল মিথা৷ কলহ ও অপরাপর নিক্পয়োজনীয় বিষদের নির্থক আন্দোলনে কালক্ষেপণ করিতেছেন। বিশেষতঃ যে সকল স্যক্তি ইৎরাজী বিদ্যা অনুশীলন প্রাক আধুনিক সুমত্য ইৎবাল প্রভৃতি জাতিদিগের মরুপ অবদা জাত হইয়াছেন, ওাঁহারা মনেশের প্রতি প্রতি প্রকাশের আবেশ্যকতা জানিয়াও জাতীয় সংস্কার বশতঃ উচিত্রপ যতন ও অনুরাগ করিতে পারেন না। যদ্যপি কোন ব্যক্তি কোন প্রকার দেশমঙ্গলজনক বিষয়ের অনুষ্ঠান পর্বাক ভাঁহাদিগের সাহায্য প্রার্থনা করেন, ভবে প্রথ-মতঃ मुलिकात धन महकारत छाहार हिर्मिष घटन उ उत्माह राज्यान, ক্রীও জাহীয় **ষভাবের এম**ত বিপরীত জ্রম যে তাহা চিরস্থায়ি হয় না, শরৎকালের মেঘগর্জনের ন্যায় সকল উৎসাহ একেবারে বিফল হয়, অধিকন্ত ঐ সমস্ত কৃতবিদ্য মনুষ্যের বিদ্যাব বাবহার বিষয়ে কিছুমাত্র যক্তন দেখিতে পাই না, কোন উপায় অবলম্বনপূর্দ্ধক প্রতিমাদে কিঞিং ২ অর্থোপার্জন করিতে পারিলেই বিদ্যাশিক্ষার দার্থকতা বোধ করেন, এবং অনুশীলন বিষয়ে অনুংদাহী হন, কিন্তু ইংরাজ প্রভৃতি সুসভা জাতি যাঁহাদিগের মহদৃটান্তের অনুগামী হটয়া আমরা সভাতাকে লক্ষ্য করিতেছি, তাঁহারা ক্ষণকালের নিমিত্ত অনুশীলন কপ্পে বিরত হয়েন না, দেহের সহিত জীবনের বিচ্ছেদ সময় পর্যান্ত বিবিধ বিষয়ের অনুসন্ধান ও বিবিধ প্রকার বিদ্যাধ্যয়ন করেন। অত্তএব যে অবধি এতদেশীয় মন্যোরা শিক্ষানুরূপ ব্যবহার কর্ণে অন্রাগী না হন, তদব্ধি এই **प्राप्त** जावसा कताठ मर्गायन इडेटवक ना, जाधिकस डेजिशमश्रुक ও অপরাপর বিখ্যাত মদেশমঙ্গলপরায়ণ মনুষ্যদিগের জীবনবতাত্ত, পাইবারা বিলক্ষণ প্রতীতি হইতেছে, যে এ দকল মহায়ারা অজ্ঞান মন্যাদিগের দহিত দাক্ষাং হইলে অতার শ্বন্তদিন বোধ করিতেন, এবং

ভাছাদিগের প্রতি বিধিমত সদুপদেশ করণে বিশেষকপে অনুরাগী হট-তেন, কিন্তু এতদেশীয় কৃত্বিদ্য মনুষ্যদিগের সেইকপ স্বভাব কিছুই দেখিতে পাই না, তাঁথারা কোন জানহীন তাজিকে প্রাপ্তইলে তাছার প্রতি উপদেশ করা ও ভাছার দুঃখ সন্ধানে দুঃখিত হওয়া দুরে থাকুক, তংক্ষনাহ পরিহাস পুস্ক আমোদ বৃদ্ধি করেন।

এইকপ নানাবিধি হৈ চুবশতঃ বঞ্চদেশীয় মন্ব্যেষা অধ্যন্ত হীনাবস্থায় পতিও বৃহিয়াছেন। যদবনি বিদ্যানুৱাগি মনুষাগণ মথাও শিক্ষানুকপ কাষ্য করণে প্রবৃত্ত না হইবেন, এবং স্থানেশের প্রতি প্রতি প্রকাশে বিবৃত্ত থাকিবেন, হদবধি এই দেশের শুভোন্নতি কোন মতেই ইইবেনা।

জগদাধর আমাদিগের প্রতি অনুকুল হট্যা এই উপরা ভারতভূমিতে আবাদ দ্বান প্রদান করিয়াছেন। পৃথিবীর প্রথম সময়ে এই দেশাল লোকেরা অত্যন্ত সুমৃত্য ও সমান সৌভাগ্য ক্রুক থেকিও জিলেন, কিণ্ড কালক্ষে ছতাবং বিলয় হওয়াতে এই ক্লে আম্বা অত্যন্ত হানাবস্থায় প্রিত হট্যাজি, বিলক্ষণ ক্পে বিদ্যানুশালন পূপ্রক স্বাধীনতার র্ষান্ধানন প্রাপ্ত না হট্লে আমাদিগের অবস্থা সংশোধনের কোন সদুপায় হটতে পারে না।

6.—The condition of Hindu Females.

বন্ধদেশীয় অল্পনাগণের বর্তমান অবস্থা তিবেচনা করিলে জানবান মনবাদিগের অতঃকরণে যে রূপ দুংশ উপদ্বিত হয় খুহা বাকোর দারা ব্যক্ত করা যায় না। অবলারা পিঞ্রবদ্ধা কোকীলার নায়ি নক্ষপুরে অবস্থান পূর্ব্যক কেবল দাৎদারিক কার্ন্যে নিমুক্তা থাকে, বিদ্যান্শীলন অথবা জানশিকা কিছুই করিছে পারে না, জগদীধর প্রদাদাং মেপা-বৃদ্ধি অবধারণাদি সমূল্য মান্সিক শক্তি প্রাথ হুইয়াও ডাহারা দেশীয় অন্যায় প্রথাছন্য তত্তাবং চালনা কর্ণে অক্ষম হয়, ইচাকি নামান। দৃঃগ? ফলতঃ কোন্সময়ে এই রাজামধ্যে কামিনীদিগের এতাদৃশ দূর-বস্থা হওনের আদি সোপান প্রতিষ্ঠিত হউয়াছে আমরা উতিহাস অথসা কোন প্রকার নিরমপুস্তকে তাহার নিশিচত বিবরণ কিছুট দেখিতে পাট না। কোনুমহাপুরুষ তাহাদিগে; জান শিকা প্রদান করা অকর্বয় বলিয়া বতুমান ঘূণিত নির্ম নিরূপণ পূর্কক প্রচলিত করেন, আমেরা অন্যাবধি ভাঁহার নামমাত্র অবগত চউতে পারি নাউ। কিল্ত প্রাতন গৃত্তাদি পাঠবারা বিজ্ঞাণ প্রতীতি হউতেছে, যে পুর্ককালে এতকেশীয় কামিনীর মধেট অনেকেই বিদ্যাবতী ছিলেন; তাঁহাদিগের বির্চিত অনেক গুতু অন্যাবধি প্রাপ্ত হওয়া যাইতেছে। লীলাবতী কণাট রাজ-মহিষী ইত্যাদি কামিনীরা যে সকল গুস্থ রচনা করিয়াছেন তৎপাঠে

কোন্ ত্যক্তি না বিখাস করিবেন যে পুর্বাহন হিন্দু কামিনীরা বিদ্যান্-শীলন করিতেন? এবং কোন ব্যক্তির নিশ্চিত বোধ না জন্মিবে যে অবলাদিগের বিদ্যা শিক্ষার নিয়ম অতি অপপ দিবদ রহিত হইয়াছে? অত্এব গে নিয়ম অযক্তিক এবং আধনিক ভাহার উচ্ছেন নিমিত্ত বিহিত यक्त এवर উদ্যোগ কৰা অবশা কর্ত্তা। আমৰা যদি জগদীপবেৰ অনি-র্মাচনীয় সুলন কৌশলের বিবেচনা পর্মাক দ্রী পরুষ এই উভয় জাতির মান্সিক শক্তি ও সভাবোহির তলনা করি, তবে প্রায় তাবনিষয়েই পর-দশর এক্য দেখিতে পাই। অতএব প্রমন্তানি প্রমেশ্র যে জাতিকে দর্ম বিষয়ে আমাদিনের সমত্ল্য করিয়াছেন, সেই জাতিকে পশ্তবং জানিয়া অজান অন্ধকাৰে হন্ধ হাখিয়া কাৰ্য্যোদ্ধার করা কি আমাদিগের কর্ত্রস হয়? এবং ভাহাতে কি পাপ জন্মে না? কোন্ জানি ব্যক্তি এ কথা অत्रीकात कृतिरुवत स्त्रीकारि मम्पूर्ग कृर्प आधानिरगत मध्यूना वि-দ্যানুশীলন প্রাক আল্লানুশীলন ও প্রমেধর আরাধনা ইত্যাদি দকল বিষয়েই তাঁহাদিগের অধিকার আছে। যদিও ব্যক্তি বিশেষের অনি-য়ম ও সাধারণের অজ্ঞানতা জন্য তাহারা অত্যন হীনাবস্থায় প্রিতা হুইয়াছে, তথাত এইক্ষণে তাহাদিগের প্রতি বিবেচনা করা অতি আ-শাক বোধ হয়, যেহেতু এই ক্লণকার মনুষ্যের মধ্যে আনেকের জান-ठक्करूबीलन इडेटडर्ड, এव॰ अटनक वाङि अटनशीय प्रविड निव्यानि সংশোধন কর্ণে যতাবান হইয়াছেন। অত্ঞৰ এই উত্তম সময়ে জ্রীজাতির বিদ্যাশিকার প্রথা প্রচলিতা করিয়া তাহারিগোর জ্ঞান শিক্ষা প্রদান कतिता चारणा देवम हरेकि लाख, अवर क्राम १ अहे छात्उतार्यत ममान करनोठांना देशि हेश।

আমর। আদ্য যে প্রস্তাব উত্থাপন করিয়া পাঠক মহাশার্দিগের চিতাকর্ষণ করিছেছি, সংখাদ পত্রেও অপ্রশীর পুত্তকে ইহার বিশ্বর আন্দোলন হউয়াছে, ইংরাজী বিদ্যালয়ে অপ্পাধ্যায়ি বালকেরাও বক্তৃয়া ও রচনাশক্তি বৃদ্ধিজন্য জীজাতির বর্ত্মান দূরসন্থার কথা বিশ্বর আন্দোলন করিয়াছে, ও অদ্যাপিও করিতেছে, কিন্তু কি দুংখ, সাধারণে এই প্রয়োজনীয় বিষয়ে অদ্যাবধি স্থিরপ্রিজ হউয়া সুফল সিদ্ধ করিছে পারিলেন না। হায় কি চমংকার! বিবেচক বলিয়া বিখ্যাত যে সকল মনুষ্য ওঁহাদিগের নিকট জ্ঞীজাতির জান শিক্ষার প্রস্তাব উত্থাপন করিলেই ওঁহারা তৎক্ষণাৎ কর্ত্তব্য বলিয়া বিবিধ প্রকার যুক্তি অভিপ্রায় প্রকাশ পূর্বক আক্রেপ করিছে থাকেন, কিন্তু কোন ব্যক্তি এই মহতি বিষয়ে হস্কক্ষেপ পূর্বক আপনাপন কন্যাদিগ্যে শিক্ষাদান করিতে পারেন না, যে পর্যান্ত ব্যক্তি বিশেষের সহিত একত্র হউয়া বিবেচনা করিবেন সেই পর্যান্ত ভাহাদিগের অন্তঃকরণে প্রাশিক্ষা প্রভাব জাগক্ষক থাকে, কিন্তু আলোচনা শেষ হইলে তৎপ্রতি আর চিত্তাপণ

করেন না। আপুনিক বিদ্যানুরাতি ব্যক্তিনিগের এই মহতি দোষে আমাদিগের বিশ্বর ক্ষতি ইইন্ডেছে, উচারা বেরপে অভিপ্রায় প্রকাশ করেন ঘদ্যপি দেইরপ কার্য্য করণে অনুরাগী ইইন্ডে পারেন, ভবে অভি অশ্য দিনদের মধ্যে হিন্দু জাতির বর্তমান দুরবন্ধা দুরীভূতা হয়। এই ক্ষণকার বিদ্যানুরাতি ব্যক্তিদিগের মধ্যে প্রায় ভাবতেই উত্তম বিষয়ে মৌজিকোদ্যোগী ইইয়াছেন, অর্থাৎ ওাঁহারা বাক্যের ছারা কর্ত্যাক্তব্য বিষয়ের বিশেষ বিবেচনা করিছে পারেন, কিন্তু কোন উচিত কার্য্যে বিহিত্ত অনুরাগ ও যত্তন করিছে পারেন না। কত্ত নির্দার প্রত্তন্দেশ মধ্যে জ্রীবিদ্যার প্রস্তাব আন্দোলন হইন্ডেছে; শীঘু ভাহার নির্দেশ করা অসম্ভব হয়, কিন্তু নির্প্রশ্ব গোলবোগ বাতীত ভাহার বিশেষ ফল কিছুই দৃষ্টি করা যায় নাই। যদ্যপি এতদ্বেশীয় মন্য্যেরা শির্প প্রত্তিত ইইয়া শিক্ষানুর্ব্ব কার্যা দাধনে তৎপর ইইন্ডেন, তবে এত দিনে কত্ত জ্রীলোক যে বিদ্যানুশীলন পূর্বক প্রমেশ্ব আরাধনায় নিযুক্তা হইন্ডেন, বিজ্ব লোকেরাই ভাহার বিবেচনা করিবেন।

এই স্থলে কোন ব্যক্তি যদি এরপ আপতি উপস্থিত করেন যে কোন প্রকার দেশীয় প্রথা উদ্ভেদ ক্রা অভ্যন্ত কঠিন হয়, বহুলোকের মংগোগ ব্যতীত কোন রূপেই ভাষাতে কৃতকার্য হওয়া যায় না, কিন্দু ইহাতে আমরা এই মাত্র উত্তর প্রদান করি, যে কর্ত্রসা কার্য্য সাধনে স্থলেশ মঙ্গলেজ্গুদিগের কি কারণ অনৈক্য হয়? ঐক্যাবাক্য হইয়া কার্য্যবায়ণ হইলে যে বিষয় সিদ্ধ হইতে পারে, এবং যাহাতে সাধারণের সম্পূর্ণ উপকার হইবার প্রভীক্ষা থাকে ভাষাতে শৈথিলা ক্রা কোন মতেই কর্ত্রগ বোধ হয় না। অভএব প্রীজাতির জান শিক্ষ্য ক্রিয়ের প্রত্ম মনুষাকে ঐক্য হইতে অনুরোব করিলাম; ওাহারো আমাদিগের অনুরোধের ভাষপর্য্য বিবেচনা প্রক্র পর্ম বাধিও করিবনে।









491 44/Y \ T/R/2

